नमस्कार मेडिटेशन की प्रस्तुति

शब्दों की उत्पत्ति कैसे हुई ?

--- "ध्यानाचार्य"
ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

“यह मेरे विचार नहीं है,
यह परमात्मा की वाणी है।
इसे मेरे विचार समझकर,
मेरे मन का आंकलन मत लगाईएगा” ।

“मेडिटेशन करते रहने पर ही
शब्दों ने अपने रहस्य खोले।
जिससे शब्दों की उत्पत्ति पर
यह पुस्तक लिखी गयी है।"

--- "ध्यानाचार्य" ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

विचार का मूल्यांकन

जब विचार, वस्तु बन जाता है, तब वस्तु का मूल्यांकन होता है, विचार का नहीं। विचार जब पुस्तक का रूप ले लेता है, तब पुस्तक का मूल्यांकन होता है कि, "कितने की पुस्तक है" ? क्योंकि पुस्तक एक वस्तु है, किंतु, पुस्तक में लिखे गए, विचारों का कोई मूल्यांकन, नहीं होता है। पुस्तक के कागज, बाईन्डिंग का, मूल्यांकन होता है। अगर अच्छा कागज एवं Hard Binding है तो ऊँची कीमत होती है। अगर सादा कागज एवं Paperback Binding है तो कम कीमत होती है। पुस्तक के भीतर लिखे, विचारों की, कोई कीमत नहीं होती है। भले ही उसमें, "कितनी ही महत्त्वपूर्ण, बातें लिखी हो"। जबकि पुस्तक तो एक, विचारों को सुरक्षित रखने का, डिब्बा है। कीमत तो विचारों की होनी चाहिए, न की डिब्बे की। जिस दिन से विचारों का मूल्य, मिलने लगेगा। उस दिन से लेखकों का मूल्य, समाज में Automatic, बढ़ जाएगा। विचार, जिसे आजकल की, भाषा में Content कहते हैं। या, ख्याल कहते हैं। यह ख्याल मौलिक होते हैं। किसी की Copy नहीं होते हैं।

— ब्रह्मचारी प्रहलादानंद "ध्यानाचार्य"

शब्दों की उत्पत्ति कैसे हुई ?

--- “ध्यानाचार्य” ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

देवी माँ सरस्वती की कृपा से यह पुस्तक लिखी गई है

"ध्यानाचार्य" ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

परम पूजनीय परम आदरणीय श्री गुरुदेव महाराज जी को सादर समर्तित

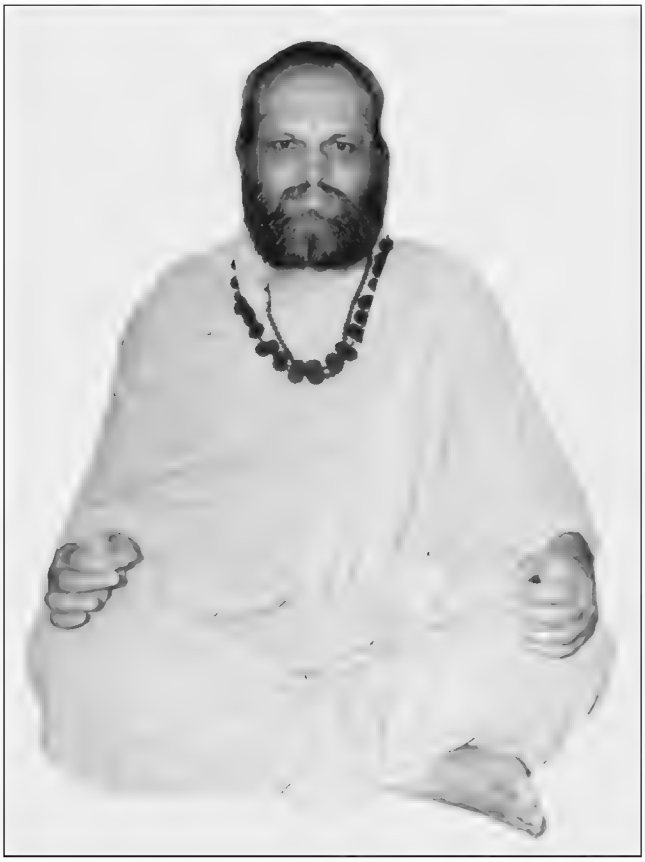

परम पूज्य परमादरणीय श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ
सुरतगिरि बंगला हरिद्वार पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर
एवं संन्यास आश्रम विलेपार्ले (पश्चिम) मुंबई के अध्यक्ष
श्री स्वामी विश्वेश्वरानंद गिरिजी महाराज

"ध्यानाचार्य" ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

“ऊर्जा आपके भीतर है, आपको मेडिटेशन करके इस ऊर्जा को जाग्रत करना चाहिए”

— “ध्यायायानाचार्य”
ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

प्रेरणास्त्रोत

श्री ध्यान माखीजा जी
(लेखक एवं पत्रकार, जनसत्ता, मुंबई)

“The energy is within you. You should awaken this energy by Meditating.”

— Dhyanacharya
Brahmachari Prahladanand

शब्दों की उत्पत्ति कैसे हुई ?

- "ध्यानाचार्य" ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

प्रकाशक -
ब्रह्मचारी प्रहलादानंद
संन्यास आश्रम, विलेपार्ले (पश्चिम),
मुंबई – 400056, महाराष्ट्र, भारत

प्रथम संस्करण – 10 फरवरी 2019, रविवार
तचौदहवाँ संस्करण - 3 फरवरी 2025, सोमवार (वसंत पंचमी)

सर्वाधिकार सुरक्षित © ब्रह्मचारी प्रहलादानंद
Copyright © Brahmachari Prahladanand

संपर्क-
namaskar.meditation@gmail.com

प्रस्तावना

हर शब्द के पीछे एक कहानी है। हर वाक्य के पीछे एक रवानी है। किसी भी भाषा का कोई भी शब्द अकेले उसी भाषा से नहीं बनता है, न ही उसी भाषा और संस्कृति से अर्थ रखता है, हर शब्द अपने पीछे एक कहानी कहता है, और वह कहानी कहीं की भी हो सकती है, वह शब्द किसी भी भाषा में हो सकता है, शब्द उसी भाषा के अक्षरों को मिलाकर बना हो ऐसा भी नहीं हो सकता है, उसके अक्षर भी कहीं न कहीं से आते हैं, और जुड़कर शब्द बन जाते हैं। शब्द दो प्रकार के होते हैं एक पुरुषात्मक दूसरे स्त्रत्यात्मक। स्त्रात्यात्मक शब्द एक ही स्थान के होते हैं, पुरुषात्मक शब्द अलग-अलग स्थान के होते हैं, यानि जब कोई पुरुष किसी प्रकार की रचना करता है, जो उसमें जो शब्द होते हैं, वह अलग-अलग प्रदेशों और अलग-अलग जातियों, समाज, समूह और भाषा के होते हैं, जब कोई स्त्री रचना करती है तो, वह शब्द उसी के स्थान के, एक ही परिवेश के, एक ही भाषा के होते हैं, और लिपियाँ भी एक होती हैं।

शब्दों का सफर सदियों से चला आ रहा है, और न जाने कितनी भाषाओं में से हो-होकर गुजरा है, परिवेश और वक्त के बदलते तेवरों ने शब्दों को बहुत से रुप और रंग दिये हैं, एक ही शब्द एक देश में अलग अर्थ में तथा दूसरे देश में अलग अर्थ में, रूप में जाने जाते हैं, शब्दों के सफर में आज शब्द यहाँ तक पहँचे हैं। स्त्रियों के शब्द जरुरतों तक सीमित हैं तथा पुरुष के शब्द शौक के लिए होते हैं।

अंग्रेजी पूरी तरह से हिन्दी पर निर्भर है। संपूर्ण अंग्रेजी हिन्दी के दो शब्दों को जोड़कर बनी है। अगर इस संधि को विच्छेद कर दिया जाए तो अंग्रेजी पूरी तरह से टूट जाएगी और उसमें से हिन्दी निकलकर बाहर आएगी। अंग्रेजों ने न केवल लोगों को गुलाम बनाया। उन्होंने हिन्दी को भी बांधकर अंग्रेजी बना लिया। आज अंग्रेजी पूरे विश्व की भाषा है और अंग्रेजी के टूट जाने पर हिन्दी ही सामने आएगी और हिन्दी स्वतः ही विश्व की भाषा बन जाएगी।

शब्द का सृजन किस भाषा में कब हुआ कुछ कह नहीं सकते। विज्ञान कितने शब्दों को अपने में लेकर उनका परिष्कृत रूप निकालता है, पता नहीं। सभी शब्दों में प्रत्यय धातु नहीं लगा सकते हैं। यास्काचार्य से लोग पूछते शब्दों के अर्थ। यास्काचार्य पहले नीर (पानी) पीते फिर उक्त यानि उत्तर देते थे। इस तरह निरुक्त बना, क्योंकि पानी पीने से दिमाग ठंडा होता है, फिर जो उत्तर निकलते हैं, वह बहुत सुंदर होते हैं।

संधि-विच्छेद के द्वारा शब्दों के अर्थ करने की पद्धति, शब्द-शास्त्र में एक नई क्रांतिकारी पहल है। यह संधि-विच्छेद पद्धति अवश्यमेव शब्दों को नये अर्थ एवं रचनाओं को नये वाक्य प्रदान करेगी। आपको अर्थ कैसे लगे ? देखिए शब्द एक ही भाषा के हों, यह नहीं हो सकता है। शब्द सदा गतिमान है। शब्द हर देश-प्रान्त में घूमते हैं, इन्हें पुस्तकों में समेट कर नहीं रखा जा सकता है। आवश्यकतानुसार कालान्तर के घटनाक्रम से इनके अर्थ परिवर्तित होते रहते हैं। एक शब्द कई भाषाओं की बोलियों से बनते हैं। इनके वर्ण एक भाषा के हो सकते, उच्चारण दूसरी भाषा के, और

अर्थ तीसरी भाषा के, फिर चौथी बार में व्यक्ति अपनी भाषा में समझता हैं। जैसे- अन्न जब Earth पर गिरता है, तो अनर्थ नहीं होता। उस Earth पर गिरे अन्न से और कई गुना अन्न पैदा होता है। अब Earth को पृथ्वी कहते हैं। अर्थ को धन भी कहते है। अगर अन्न से अर्थ भी कमाया तो वह भी अनर्थ नहीं है, अन्न से तो कहीं भी अनर्थ नहीं है। पुस्तकें प्रमाण होती हैं। किन्तु किसी चीज को पुष्ट करने, और किसी गन्तव्य तक पहुंचने के लिए पुस्तक लिखी जाती है। पुस्तक लिखने वाले के कालखण्ड से थोड़ा आगे-पीछे होती है। आज पुस्तक का ज्ञान इतना प्रभावी नहीं रहा क्योंकि काल खण्ड तेजी से बदल रहा है। इसलिए यह सब उपकरण आ गए हैं। प्रमाण की एक कहानी है - पर को मान देना ही प्रमाण है। पुरुरवा के यहाँ उर्वशी आती थी, उर्वशी अप्सरा थी, उसके पास पर (पंख) थे उड़ने के लिए, क्योंकि वह परी थी। जिसके पास पर हों वही परी है। अब वह पुरुरवा के पास से रूठकर चली गई। पुरुरवा सबको बताता फिरता मेरे पास उर्वशी आती थी। तो लोग कहते कि उसके पर दिखाओ तो हम तुम्हारी बात को मान देते हैं। यही पर को देखकर ही उसे मान दिया जाता है वह प्रमाण यानि परमान कहलाता है। जैसे Proof भी पहले पर से ही लिखे जाते थे। और यह पूछा जाता था कि किसके पंख से लिखा गया है। क्योंकि सब लिखने वालों के अपने-अपने पंख होते थे। वह पर ही Proof होते थे। और प्रमाण कहलाते थे।

--- ब्रह्मचारी प्रहलादानंद "ध्यानाचार्य"

शब्दों की उत्पत्ति कैसे हुई ?

A

1. आग + वाणी = आगवानी -
जिनके पास आग और वाणी होती, वही तो आगवानी करते हैं। रात को आग वाले, आग लेकर आगे चलते हैं और लोग उनके पीछे चलते हैं। दिन में जिनकी वाणी अच्छी होती है वह बोलते हैं कि, "सब लोग मेरे पीछे चलो"। तो इस तरह यह दो लोग आगवानी करते हैं।

2. अल्लाह + राम = Alarm -
एक आदमी बाहर के देश से, भारत देश में आया और वह रात को सोया। सुबह-सुबह उसके कानों में "अल्लाह-ओ-अकबर" की आवाज़ आई। उस आवाज़ को सुनकर उस व्यक्ति की नींद खुल गई, वह व्यक्ति जैसे-जैसे करके फिर सो गया, किन्तु थोड़ी ही देर के बाद, उसके कानों में फिर से उसकी गली से आवाज़ आई "राम राम सीता राम"। वह व्यक्ति फिर से उठ गया। अब उसे नींद ना आई। वह व्यक्ति जब तक भारत देश में रहा, तब तक इन्हीं आवाज़ों से परेशान रहा। तब कुछ दिन के बाद, वह व्यक्ति अपने देश वापिस लौट गया। उसके देश में घड़ी का अविष्कार हो चुका था, और घड़ी में बजनेवाली घंटी लगा दी गई थी। उस आदमी को पुनः भारत में आना पड़ा। तो वह व्यक्ति अपने देश से घड़ी लेता आया, और उस घड़ी में चर्च के घंटे की आवाज़ डलवी ली, क्योंकि उस व्यक्ति को, चर्च के घंटे की आवाज़ को सुनकर उठने की आदत थी। वह व्यक्ति भारत आया और अपने साथ वह घंटे वाली घड़ी भी लेता आया। उसने भारत में आकर, जिस जगह पर वह रहता था, वहाँ के रहनेवाले लोगों को एक जगह इकट्ठा किया और कहा कि, "देखिये ! हम लोग यहाँ पर एक बड़ा सा ऊँचा स्थान बनाते हैं, और उस स्थान में यह घड़ी लगा देते हैं, इस घड़ी में बजने वाले घंटे की आवाज़ से आप सब लोग सुबह पाँच बजे जाग जाईयेगा और आप लोग "अल्लाह-ओ-अकबर" की आवाज़ नहीं करियेगा तथा आप लोग गली में "राम राम सीताराम" की आवाज़ मत करियेगा"। लोगों ने थोड़ी सी ना नुकुर के बाद उस व्यक्ति की बात मान ली। किन्तु एक बात यह आई की इस घड़ी की आवाज़ का क्या नाम रखें ? तब उस आदमी ने कहा कि, "आप क्या बोलते हैं" ? लोगों ने कहा कि, "हम अल्लाह-ओ-अकबर" बोलते हैं। उस आदमी ने दूसरों से पूछा कि, "आप क्या बोलते हैं" ? उन लोगों ने कहा कि, "हम राम राम सीताराम बोलते हैं"। तब उस आदमी ने कहा तो कि, "आपके अल्लाह-ओ-अकबर से अल्लाह ले लेते हैं, और आपके राम राम सीताराम से राम ले लेते हैं, इस तरह से इन दोनों को जोड़कर, हम इसको "अल्लाह राम" यानी "Alram" यानी "अलार्म" यह नाम देते हैं"। अल्लाह + राम = Alarm. तो इस तरह से "Alarm" यह शब्द बना। इस तरह धीरे-धीरे, प्रभातफेरी तो बंद हो गई। किंतु अजान देना, फिर भी जारी रहा। और लोगों के पास निजी, घड़ी एवं

घड़ियाल भी थे। जिससे लोगों ने प्रभातफेरी में, जाना छोड़ दिया और, अजान की जगह, लोगों ने Alarm के बजने पर, नमाज़ में जाना शुरु किया। इस तरह लोग आलसी हो गए, और Alarm बजने पर, Alarm को बंद कर, वापिस सो जाते थे। देखा अंग्रेजों ने अपने, Christian Religion का, प्रचार-प्रसार ऐसे किया कि, कि लोग पालन भी करते हैं, और, लोगों को भान भी नहीं है। इस तरह अंग्रेजों ने, अल्लाह और राम शब्द को, गिरिजाघर के घंटे की आवाज़ में, डालकर एक नया शब्द, Alarm बनाकर। लोगों को Christian Religion में, परिवर्तित कर लिया और प्रभातफेरी एवं अजान से, निजात भी पा ली और प्रभातफेरी तो बंद ही हो गई, अजान की आवाज़ भी धीमी हो गई। यह अंग्रेजों के जमाने की बात है। जब अल्लाह राम ही लोगों को जगाते हैं और Alarm तो लोगों के Control में होता है। इसलिए बजते Alarm के, Button को दबा दिया जाता है, क्योंकि Alarm को लोगों ने बनाया है। किन्तु लोग तो, अल्लाह के एवं राम के Control में होते हैं। क्योंकि अल्लाह ने एवं राम ने लोगों को बनाया है। इसलिए अल्लाह ने एवं राम ने, मुर्गा तथा मोर लोगों को जगाने के लिए बनाए हैं।

3. अदा + लत = अदालत -

अदा और लत ही अदालत पहुँचाती है। अदा और लत एक ही शब्द के दो रूप हैं। बड़े लोगों की आदत को अदा और छोटे लोगों की आदत को लत कहते हैं।

4. आप + रोचक = Approach -

आपको जो रोचक लगता है, वही तो Approach है। पहले आप लोगों की रोचक वस्तु को जानो ओर फिर आप किसी से भी Approach कर सकते हो।

5. अभय + उदय = अभ्युदय -

अभय का उदय होना। रात्रि के आरंभ से लेकर रात्रि के अंत तक, सभी भय से ग्रसित हो जाते हैं। किंतु जब सूर्य का उदय होता है, तब सूर्य के प्रकाश के कारण, सभी में अभय का उदय होता है।

6. आर्तो जिज्ञासु रथ अर्थी =

चतुर लोगों ने मुझे भजने का विधान बनाया है -

आर्तो - यानि मेरी आरती करना।

जिज्ञासु - दूसरे के जी (मन) में क्या है ? यह पता करना, कि हे भगवान ! इसके मन मे क्या है, बस पता भर चल जाए।

रथ - किसी भी वाहन में बैठने और चलाने से पहले।

अर्थी - अर्थी उठाते एवं लेकर चलते समय "राम नाम सत्य है", ऐसा बोलकर। भगवान को याद करते हैं।

7. अर्थ + आत् = अर्थात् -

श्लोक का ऐसा अर्थ करना, जिससे अर्थ (रुपया) आता है।

8. अ + परि + ग्रह = अपरिग्रह -

पातञ्जली योगसूत्र के अनुसार योगी को दो चीजों से बचना चाहिए। एक परि दूसरी ग्रह। यानि

विश्वामित्र की तपस्या परि (अप्सरा) ने भंग की और दूसरों के ग्रह नहीं लेने चाहिए। यदि कोई सिर पर से ग्रह के दान घुमाकर दे। तब वह दान नहीं लेना चाहिए। नहीं तो उन ग्रहों को उतारने में ही समय व्यतीत हो जाएगा।

9. अ + तीत = अतीत -

तीत (कटु शब्द) को कोई अतीत नहीं करता है, या भूलता नहीं है। किसी को कड़वी बात बोलते हो तो वह कभी नहीं भूलता है।

10. अधिक + अंश = अधिकांश -

अधिक लोग यही चाहते हैं कि, अधिक अंश उन्हें ही मिले।

11. आ + ध्या + अ + तम = आध्यात्म -

आरंभ करो ध्यान का - जिससे अतम हो जाओ यानि बिना अंधेरे के हो जाओ। ध्यान करने से व्यक्ति के अंदर का अंधेरा दूर हो जाता है।

12. आजमा + ईश = आजमाईश - ईश्वर की आजमाईश लोग कर लेते हैं।

13. अंधविश्वास -

अंधविश्वास नहीं करते किंतु Positive Energy एवं Negative Energy में विश्वास करते हैं। भूत-प्रेत को नहीं मानते परंतु Good Elements और Bad Elements को मानते हैं। इनके लिए नदी में सिक्का फेंकना अंधविश्वास है और Fountain में सिक्का फेंकना Good Luck है।

14. अंत + ईम = अन्तिम –

अन्न का अन्तिम ही ईम है, यानि ईमान है। अन्न तब तन में लगता है, तब ईमान पैदा करता है।

15. **आ + चरण = आचरण -**

चरण से ही आचरण का पता चलता है। इसलिए लोग चरण छिपा लेते हैं और उच्च मूल्य के जूते पहन लेते हैं, ताकि वो उच्च आचरण वाले दिखाई दें। इसीलिए किसी का आचरण पहचानने के लिए उसके चरण छुए जाते हैं। कुछ लोग चरण नहीं छुने देते हैं, ताकि उनके आचरण का पता न चल जाए।

16. अति + रिक्त = अतिरिक्त -

अति करनेवाले (ज्यादा करनेवाले) और रिक्त (खाली) - इन दोनों को ही प्रत्येक वस्तु अतिरिक्त चाहिए। इनकी आशा यही रहती है, कि "थोड़ा ज्यादा मिल जाए"।

17. आलू + चना = आलोचना -

आलू को चना एवं चना को आलू करना ही आलोचना है।

18. अंत + रण = अंतरण -

या तो अंत होगा या रण में जाना पड़ेगा, दोनों से ही अंतरण होगा। जैसे रावण ने कहा मरीचि से कि, "या तो मैं तेरा यहीं अंत कर दूँगा, या फिर तुझे सोने का हिरण बनकर जाना पड़ेगा"।

19. आ + Crows = आक्रोश -

आते हैं क्रोश - जब Crows यानि जब बहुत सारे कोए गुस्से में इकट्ठे होते हैं, उसे आक्रोश कहते हैं।

20. अ + जाम + मिल = अजामिल –

जो जाम को पीने में, दूसरों के साथ न मिले, वह अजामिल।

21. अभि + मन + New = अभिमन्यु -

अभी जिसका मन New है। यानि नये मन वाला। जो अभी संसार के चक्रों को नहीं जानता है, वह नये मन वाला ही, चक्रव्यूह में फंस कर मर जाता है।

22. अन्न + जल = Angel -

अन्न और जल देने वाले ही तो Angel हैं। यानि जो हमें अन्न और जल देते हैं, वही Angel यानि देवदूत या फरिश्ते होते हैं।

23. अमर + ऊद = अमरूद -

अमर करना है, उद (पेट) को तो अमरूद खाओ। अमरूद को खाने से पेट अच्छा रहता है।

24. अंग + जरे = अंग्रेज -

अंग जिनके हो जरे। वह हैं अंग्रेज, अंग्रेजों के शरीर को देखने पर ऐसा लगता है कि इनके अंग जले हुए हैं।

25. अ + रंज = Arrange -

रंज को खतम करने के लिए Arrange Marriage की जाती है, भारत देश में एक परिवार का रंज दूसरे परिवार से बहुत वर्षों चलता है, तो उस रंज को समाप्त करने के लिए और परिवारों का प्यार बढ़ाने के लिए Arrange Marriage की जाती है।

26. अल्प + है + बात = Alphabet –

अल्प है बात यानि जब बात अल्प कहनी होती है, तो Alphabet में कही जाती है।

27. अक्छी + दँत = Accident –

अक्छी (छींक) आने पर दाँत टूट जाते हैं। छींक आने पर रुक जाना चाहिए क्योंकि छींक आने का मतलब है कि कोई Virus शरीर में घुसने की तैयारी कर रहा है। पुराने समय में पैदल ही यात्रा करनी पड़ती थी, अपने शरीर से ही यात्रा करनी पड़ती थी। तो अगर शरीर में Virus रहेगा, तो यात्रा करनेवाला बीमार हो जायेगा। तो रास्ते में उस समय उसका ईलाज कहाँ होगा ? क्योंकि कोई अस्पताल नहीं थे और सारा रास्ता पैदल काटना है। और जहाँ मंजिल पर पहुँचेगें, तो वहाँ पर उन लोगों के लिए भी बीमार व्यक्ति की सेवा करवाने वाले बन जाएगें। उनका समय भी नष्ट करेंगे। यहाँ पर भी लोगों को चिंता रहेगी। इसलिए छींक आने पर यात्रा टाल दी जाती थी और कुछ दिन रुककर यात्रा की जाती थी। यानि Virus का उपचार कर यात्रा की जाती थी।

28. अ + लक्ष + इन्द्र = Alexander –

अलक्षेन्द्र, जिसका कोई लक्ष्य न हो, वह है Alexander.

29. अ + Cover = अकबर –

जिसको कोई Cover नहीं कर सकता वह है अकबर। यानि जिसको कोई अपने काबू में नहीं ले सकता है।

30. Off + ऋण = आफरीन -

ऋण के Off हो जाने पर सब कुछ आफरीन लगता है। किसी पर कर्जा होता है, तो कर्जे का बोझ उसके सिर पर बहुत अधिक होता है, जब कर्जा उतर जाता है, तब उसके सिर पर चिंता का बोझ बहुत कम हो जाता है।

31. अन्न + जाम = अन्जाम -

हर अन्न का अन्जाम, जाम होता है। यानि हर प्रकार के अन्न से शराब बनाई जा सकती है, जो कि काँच के गिलास रूपी जाम में जाती है।

32. Eye + ना = आईना -

आईना में कभी Eye (आँख) न डालो, खुद को खुद की नजर लग जाती है।

33. Assets -

अपने बुजुर्गों की Ashes (राख, फूल) रखनेवाले ही तो अपने बुजुर्गों की Assets (सम्पत्ति) पाते हैं।

34. Ashes + वर्य = ऐश्वर्य –

पुरुखों की Ashes को रखनेवाले ही ऐश्वर्य को पा जाते हैं।

35. अ + हार = अहार -

हार से जो बचाए वह है आहार यानि हार नहीं चाहिए तो आहार कीजिए। यही आहार का अर्थ है। खाली पेट सेना ज्यादा दिन नहीं लड़ सकती है एवं हार जाताी है।

36. अल्लादीन का चिराग -

अल्लाह को दीन लोग मानते हैं। दीन के पेट की आग ही चिर आग होती है। जो कभी बुझती नहीं है। उस चिर आग को बुझाने के लिए दीन आदमी मेहनत करता है। जिससे उसके पास धन-दौलत, घर-मकान और स्त्री आ जाते हैं। यह मेहनत ही अल्लादीन का चिराग है।

37. आत्म + सात = आत्मसात -

वह आत्म कह लो या सातवें आसमान पर खुदा रहता है कह लो, दोनों बराबर ही हैं। सात चक्रों के भेदन के बाद, आत्म उपलब्धि होती है। चक्र का वह स्थान,जहाँ से भेदन किया जाता है, शून्य कहलाता है। शून्य ही खाली स्थान होता है, खाली स्थान को आकाश या आसमान कहते हैं। यही सात चक्र ही सात आसमान हैं, इन सात चक्रों के बाद आत्म है, इन्हीं सात आसमान के बाद खुदा है। आत्म ही खुदा है, खुदा ही आत्म है। जब आप खुद आते हैं तम (अंधेरे) में, तब आपको खुद के होने का पता चलता है। अंधेरा यानि अमावस्या की रात, किसी प्रकार का प्रकाश न हो, उस अंधेरे में रहने पर धीरे-धीरे, जो प्रकाश आएगा, वह आप हो, वह आत्म है, यानि कोई किसी के वह खुदा है, क्योंकि वह खुद आता है।

38. अंग + Raz = अंग्रेज -

जो अपने अंग पर Razor का उपयोग करते हैं वह अंग्रेज। भारतीय लोग उस्तरे का उपयोग करते हैं।

39. आखिरी -

आखिरी को ही खरी-खरी सुननी पड़ती है कि, "फिसड्डी कहीं का। तेज-तेज नहीं चल सकता।

दूसरे देख कहाँ से कहाँ निकल गए, तू अभी तक यहीं पड़ा है” आदि।

40. अमिट + आभा = अमिताभ -

अमिट आभा यानी जो मिट न सके ऐसी आभा। ध्यान में आभा के लिए ही बैठा जाता है। जो भोजन हमने किया है, उस भोजन को किस प्रकार ओज एवंआभा में बदला जाए ? यह कार्य ध्यान के द्वारा किया जाता है। नहीं तो वह उर्जा शरीर से बाहर, किसी भी रूप में जा सकती है | उस उर्जा को आभा में परिवर्तित करने के लिए ही अमिताभ ध्यान मुद्रा है। अमिताभ मुद्रा बड़े-बड़े ध्यानियों ने ध्यान करने के लिए उपयोग में ली है |

41. आ + सान = आसान -

सान ही तो आसान नहीं है। चाहे पानी के साथ आटा सानना हो, या भूसा के साथ पानी को सान कर सानी बनाना हो। तभी तो कहते हैं, इसके जैसा कोई दूसरा सानी नहीं है।

42. अ + दब = अदब -

जो दबे न, वही अदब है। या जिसे दबाया न जा सके, वही अदब है।

43. अ + युद्ध = अयोध्या –

जहाँ पर युद्ध नहीं होता वह है अयोध्या। यानि अयोध्या में युद्ध नहीं होता है।

44. अ + वध = अवध –

जहाँ पर किसी का वध नहीं होता है। यानि जब अयोध्या में युद्ध ही नहीं होता है, तो फिर वहाँ पर वध हो ही नहीं सकता है।

45. आ + सिर + वाद = आशीर्वाद –

आते हैं सिर में वाद। उस वाद को कम करने के लिए आशिर्वाद दिये जाते हैं। जब किसी के सिर में वाद आते हैं, यानि किसी के सिर में वाद-विवाद होते हैं, यानि वह जब स्वयं से ही बहस करने लगता है, और तब उसे किसी प्रकार से शांति नहीं मिलती है, उसके सिर में दर्द होने लगता है, तो उस वाद को खतम करने के लिए आशीर्वाद दिये जाते हैं।

46. अद् + भुत = अद्भुत -

भूत ही अद्भुत है। यह जो तन है, भू यानी जमीन से पैदा हुआ है। यही बात अद्भुत है।

47. अ + न + पढ़ = अनपढ़ - जो “अ” को नहीं पढ़ा, वो अनपढ़ है।

48. अ + Back = Aback –

जब कोई किसी को Back से यानि पीछे से हाथ लगाता है, तो जिसको हाथ लगाया है, वह एकदम चौंक जाता है या कोई पीछे चलते-चलते किसी चीज से अचानक टकरा जाता है, तो कहता है “अबे”, यही Aback है।

49. आ + राम = आराम

राम के वनवास से वापिस आने पर ही अयोध्यावासियों ने आराम किया था कि, “अब तो राम आ गए हैं, तो आराम कर लो”।

50. अ + बन्डॉन = Abandon –

दान के बन्धन से बाहर आ जाना, यानि जब किसी को दान देकर बन्दी बनाया जाता है, उससे जब वह बाहर आ जाता है, तब उसे Abandon कहते हैं। यही दान देने वाला तो Don (डॉन) है। जिसके दिये दान के बंन्धन से बाहर आ जाना ही तो Abandon है।

51. अ + Ward = Award –

जो Ward में नहीं जाते हैं, वही तो Award पाते हैं। जब युद्ध होता है, और जो सैनिक Hospital के Ward में भर्ती नहीं होते हैं, उन्हें ही Award दिया जाता है।

52. आँत + प्राण + Or = Entrepreneur –

जो आँत और प्राण की बात करता है वह है Entrepreneur.

53. अर्ज + उन = अर्जुन – जो अरज (प्रार्थना) करता है, उनसे उसे कहते हैं अर्जुन। अर्ज करनेवाले व्यक्ति को अर्जुन कहते हैं।

54. अश + थमा = Asthma –

आशाओं को जो थाम के रख लेते हैं, उसे कहते हैं Asthma. यानि जो अपनी आशाओं को सीने में छिपाकर रखते हैं, उनको पूरा नहीं करते या बाहर नहीं निकालते हैं, तो उनके सीने में भारीपन आ जाता है, इस कार्य के लिए, जो श्वास को रोकता है, उसे ही Asthma कहते हैं।

55. अ + Join = अजवाईन –

जो Wine पीने में Join नहीं करते हैं उन्हें अजवाईन देते हैं।

56. अ + Air = Affair –

जो Fair नहीं है, वह Affair है। Fair यानि फलों की हवा। फलों की हवा जब चलती Fair अच्छी हवा चलती है। फल + Air = Fair. जब वही फल सड़ जाते हैं तो, Affair यानि बुरी-सड़ी हुई हवा निकलती है, जो Affair कहलाती है। Off + Air = बंद हवा = Affair = बुरी हवा।

57. Associate –

Ass (गधे) को ही सभी साथी बनाते हैं। पहले जमाने में बुद्धिमान लोग यात्रा करते थे, तो यात्रा का साथी एक गधे को बनाते थे। जिस पर वह अपने बोझ को रख सकें। उसी तरह जीवन में भी एक गधे को हर कोई अपना साथी बनाता है, जिस पर वह अपने सारे बोझ डाल देता है।

58. अहम् + शान = अहसान –

अहम् यानि अहंकार की शान दिखाने के लिए लोग "अहसान" करते हैं। गाँव में जब कोई आदमी अपने पशुओं के लिए किसी दूसरे को सानी (पशुओं का भोजन) बनाने के लिए कहकर जाता है। तो दूसरा उसे हमेशा याद दिलाता है कि, "उसने उसकी सानी बनाकर उसपर अहसान किया है"।

59. अ + काल = अकाल –

काल का न होना ही अकाल है, जिस कारण वर्षा आदि नहीं होती है, जिससे वहाँ पर काल की गतिविधियाँ रुक जाती है, ऐसा लगता है, जैसे समय रुक गया है।

60. अरदास – दास लोग ही अरदास करते हैं। अर्ज + दास = अरजदास।

61. Ad +Dress = Address –

Dress से ही Ad (Advertisement) की जाती है। यानि जब कोई अपने कार्य का विज्ञापन करता है, तब वह Dress (कपड़े) ही ऐसे बनाता है, कि वह कपड़े ही उसके कार्य का विज्ञापन करते हैं और उस Dress पर ही उसका पता भी होता है, जो कि Address कहलाता है। पहले जमाने में भी Dress को देखकर पता चल जाता था कि इसका पता कहाँ पर है ? आज भी Dress पर पता लिखा रहता है।

62. अड्डा = Adda –

सबके जमा (Add) होने का एक Adda (अड्डा) होता है, सबको Add (जमा) करने के लिए ही Advertisement की जाती है।

63. आना + देश = आदेश –

"आना अपने देश में" यही तो आदेश है। आप अपने देश में किसी को भी आदेश दे सकते हैं, किन्तु दूसरे के देश में किसी को आदेश नहीं दे सकते हैं।

64. अन्न + नाज = अनाज – अन्न और नाज दोनों ही अनाज हैं।

65. Anywhere + मल = Animal –

जो कहीं पर भी अपने मल को कर दे उसे Animal कहते हैं।

66. अ + कौम + देश + अन्न = Accommodation –

जो कौम या देश का नहीं होता है, उसे अपने रहने और अन्न का प्रबन्ध खुद ही करना पड़ता है। यानि उसके Accommodation का इन्तजाम करना पड़ता है।

67. अभय + आस = अभ्यास –

अभय होने की आस ही अभ्यास है। प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता है कि वह अभय को जाए। बस इसी आस में वह अभ्यास करता है। आशा क्या है ? भगवान की प्राप्ति करना। भगवान की प्राप्ति करने से व्यक्ति अभयता को प्राप्त करता है। अभ्यास को अंग्रेजी में Practice कहते हैं। Practice करने से ईश्वर प्रकट होते है, उसे प्रकट ईश यानि Practice कहते हैं। Practice Makes Man Perfect. यानि अभ्यास करने से ही, ईश्वर प्रकट होते हैं। यानि Practice करने से, व्यक्ति नर से नारायण बन जाता है। यही अभ्यास और Practice का अर्थ है।

68. आला + तालीम = आला-तालीम -

आला (Doctor) बनने की तालीम ही आला तालीम है, यानि जिस तालीम से ताली बजे उसे, आला तालीम कहते हैं। आला = Stethoscope.

69. आवेश = आता है जो वेश से -

वेश में रहने वाला व्यक्ति हमेशा आवेश में रहता है। जो व्यक्ति किसी Dress में रहता है, उसे आवेश होता ही है।

70. अ + मृत = अमृत – जो मृत नहीं है, वही अमृत है।

71. At + Tension = Attention –

जो Tension में होता है, सभी का Attention उसी की तरफ होता है।

72. अ + Stay = अस्तेय –

जो Stay नहीं लेते हैं, वही अस्तेय हैं। अर्थात् जो लोग किसी के काम में रुकावट नहीं डालते हैं।

73. आशा + अन्न = आसन – अन्न की आशा में जिस पर बैठते हैं वही है आसन।

74. अ + Whale = अवहेलना – Whale की अवहेलना करनी चाहिए।

75. ओए + दिओ = Audio –

जब कोई किसी से ज्यादा जोर से माँगता है, तो जोर से कहता है, "ओए दिओ"। वही "ओए दिओ" ही Audio है।

76. अ + Rest = Arrest – जहाँ पर Rest नहीं कर सकते हैं, वह है Arrest.

77. अ + हम = अहम –

हम का न होना ही अहम है, यानि जब सब लोग मिलकर कार्य करते हैं, तब वह कहते हैं कि, "हमने किया है"। क्योंकि अकेले किया गया कार्य "अहम" कहलाता है, कि "यह काम मैंने किया" जो कि अहंकार को बढ़ावा देता है। इसीलिए कार्य मिलकर करना चाहिए, जिससे अहंकार नहीं होता है।

78. अंधा + धुन्ध = अंधाधुन्ध – अंधा हो जाता है, आदमी धुन्ध में।

79. अ + विष + कार्य = अविष्कार –

भारत देश में मादक पदार्थ देकर, किसी के कार्य को बिगाड़ना, प्रारंभ से ही रहा है। तब अंग्रेजों ने ऐसी वस्तुओं का, ईजाद किया, जिनपर विष और मादक वस्तुओं का प्रभाव न हो। यह वस्तुएँ लकड़ी, लोहे की बनी होती थीं। कोयले से चलती थीं। अंग्रेजों ने कहा कि, "पानी गरम करके लाना" किंतु पानी गरम करनेवाला मादक पदार्थ लेकर सो गया। तो अंग्रेजों ने गीजर बनाया, बिजली बनाई आदि-आदि ऐसी बहुत-सी वस्तुएँ बनाई। क्योंकि जो कार्य बिना विष दिये होता है, उसे अविष्कार कहते हैं। भारत में पहले विष देने का कार्य बहुत होता था, अंग्रेज इससे बहुत परेशान थे, तो उन्होंने ऐसे चीजों को बनाना शुरु किया जिन पर विष का असर न हो। जैसे अंग्रेजों को कहीं जाना है, किंतु किसी ने अंग्रेजों के घोड़े को विष दे दिया, घोड़ा बीमार पड़ा और मर गया। तो फिर अंग्रेजों ने अविष्कार किया और कहीं आने-जाने के लिए Car एवं Motorbike बना ली। अंग्रेजों ने ऐसे ही बहुत से अविष्कार किये।

80. आशा + टिक = आस्तिक –

आशा टिक जाए जिसकी जिस पर वह आस्तिक है।

81. अन्न + आस्था = अनास्था – अन्न पर आस्था रखना ही, अनास्था है।

82. अनादर –

Another का ही अनादर किया जाता है। व्यक्ति उसी का अनादर करता है, जो उसका नहीं है यानि जो उसे जानता नहीं है। तभी तो अनादरित व्यक्ति कहता है कि तू मुझे नहीं जानता मैं कौन हूँ ?

83. अन्न + आदर = अनादर -

अन्न माँगने के लिए, जब कोई आपके दर पर आता है, तब उसका सब कोई अनादर करते हैं। भले ही उसके सामने न करें, किंतु पीठ पीछे उसका अनादर शुरु हो जाता है। इसीलिए अन्न का आदर करते

हुए। किसी का भी अनादर न करें। भले ही वह कोई अन्न माँगने के लिए आया हुआ, Other ही हो।

84. अ + बला = अबला – जो बला नहीं होती हैं, वह अबला कहलाती हैं।

85. अ + जीर्ण = अजीर्ण –

जो भोजन हम करते हैं, वह जीर्ण होकर, जी यानि मन बन जाता है। जो भोजन जीर्ण न हो, वह अजीर्ण कहलाता है। यानि जिस भोजन से, जी नहीं बना है, उसे ही अजीर्ण कहते हैं।

86. अल्ला + दीन = अल्लादीन – दीन लोग होते हैं, जो अल्ला को मानते हैं।

87. अ + डिग = अडिग – जो डिगता नहीं है, वही अडिग रहता है।

88. आत्मा + ज = आत्मज – आत्मा से जो जन्म लेता है, वह है आत्मज।

89. अहम + काना = अहमकाना –

यह दोनों एक ही नजर से बात करते हैं, यानि एक ही पक्ष की बात कहते हैं, अहम केवल अपने अहंकार की बात है, और काना एक आँख से जितना दिखाई देता है, उतनी ही बात करता है, इसीलिए दोनों ही अहमकाना होते हैं।

90. अक्ष = अक्स –

दूसरे की आँखो (अक्ष) में जो चेहरा दिखाई देता है, उसे अक्स कहते हैं।

91. आश + ऋतु = आश्रित –

सभी लोग ऋतुओं पर आश्रित रहते हैं, ऋतुएँ सभी की आशाओं को पूरी करती हैं।

92. Ad + वन + चर = Adventure –

अपना Advertisement करना हो, या वन में चरना हो, यह ऐसे ही जैसे जब व्यक्ति अज्ञात जगह अपनी पहचान बनाता है, यही है Adventure.

93. अ + चम + भीत = अचम्भित –

किसी की चमड़ी और मकान की भीत देखकर ही व्यक्ति अचम्भित हो जाता है।

94. आशा + If = आशिफ – आशा होती है, अगर ऐसा हो जाए यही है आशिफ।

95. आशा + मान = आसमान –

आशाओं का मान जो रखता है, उसे आसमान कहते हैं। जब कहीं उसकी आशाऐं पूरी नहीं होती हैं, लोग कहते हैं कि, "आसमान से आस लगाओ, आसमान पर खुदा रहता है"। तो फिर वह आसमान से आश लगाता है, और आसमान उसकी आशाओं को मान लेता है। इसीलिए वह आसमान को मान देता है और आसमान को ही खुदा समझता है एवं हमेशा उसी आसमान से ही आस लगाता है।

96. आ + चरण = आचरण – जब व्यक्ति किसी के चरण पकड़ता है, तब कहते हैं कि, "इसका आचरण अच्छा है"।

97. अन्न + ध + विश्वास = अंध-विश्वास –

अन्न खिलाकर ही अंध-विश्वास कायम किया जाता है। यानि जब कोई किसी का अन्न खा लेता है, तो फिर वह उस पर विश्वास कर लेता है और वह सही है या गलत, इसकी परवाह नहीं करता है, क्योंकि यह उसकी नमक हरामी कहलाती है।

98. आता + दम = आदम –

आता है दम जिसमें वह है आदम। आदम में दम रहता है, इसीलिए उसे आदम कहते हैं। दम = शक्ति = ताकत = Power.

99. आश + शीष = आशीष -

आशा करनेवाले भगवान के आगे शीष नवाते हैं, और भगवान की आशीष पाते हैं। इसलिए, "आओ शीष नवाओ, आशीष पाओ"।

100. अन + आहत + नाद = अनाहत नाद -

अन्न जब गिरता है, पेट में, तो जो आवाज होती है, उसे अनाहत नाद कहते हैं। अन्न के आहत से जो आवाज होती है, उसे नाद कहते हैं।

101. अन्न + Earth = अनर्थ -

अन्न जब Earth (धरती) पर गिरता है, तो, अनर्थ नहीं होता है। गिरा हुआ अन्न ही, कई गुना होकर, वापस हमें प्राप्त होता है। अन्न Earth (धरती) से ही उत्पन्न होता है, इसीलिए उसे अनर्थ कहते हैं।

102. आह + हत = आहत -

आह ही तो आहत करती है। इसीलिए कहते हैं, कि किसी गरीब की आह नहीं लेनी चाहिए। यानि किसी गरीब को दुःख नहीं देना चाहिए। नहीं तो उसकी आह, आहत कर देती हैं, बड़े-बड़े साम्राज्यौं को भस्म कर देती।

103. आसाम -

आसाम में सामवेद का सामगान करनेवाले रहते हैं। आसाम वह प्रदेश है, जहाँ गाना गाने वाले लोग रहते हैं। आसाम के लोगों का गला बहुत सुरीला रहता है। संगीत अति उत्तम रहता है।

104. अ + तलाश = Atlas -

तलाश (खोज) का बंद हो जाना। जब व्यक्ति बने बनाए नक्शों का उपयोग करना शुरु कर देता है। तब उसकी स्वयं की खोज बंद हो जाती है।

105. "ऊँ" कार + झाड़नेवाला = ओझा -

"ऊँ" कार से झाड़नेवाला ही ओझा होता है। MRI Magnetic Resonance Imaging (चुम्बकीय अनुनाद इमेजिंग) MRI Scan इसलिए किया जाता है, जिसमें देखा जाता है कि कहाँ पर क्षति हुई है। फिर उस स्थान की चिकित्सा की जाती है। इसी प्रकार ओझा भी शरीर की चुंबकीय अनुनाद को चेक करता है और वह दो चीजों से चेक करता है। एक झाड़ू या दूसरी मोर के पंख से। फिर जिस स्थान पर चुंबकीय बिगाड़ होता हैं, वहाँ वह मोर के पंख मारकर "ऊँ" कार से झाड़ता है। "ऊँ" से झाड़नेवाला इसलिए उसे "ऊँ" झा से ओमझा फिर ओझा कहा जाने लगा।

106. अर्थ -

सारा आध्यात्मिक ज्ञान संस्कृत में है। संस्कृत से किसी भी भाषा में अर्थ करने पर उसके बदले में अर्थ (धन) मिलता है। जब यह आध्यात्मिक ज्ञान सभी भाषा में उपलब्ध हो जाएगा तब अर्थ (मिलना) बंद हो जाएगा, क्योंकि सभी को उपलब्ध हो जाएगा। सभी आसानी से समझ जाएंगे। कोई दक्षिणा

नहीं चढ़ायेगा। इसलिए इसे संस्कृत में ही रहने दीजिए। अर्थ (धन) के लिए इसका अर्थ मत कीजिए। जिसको समझना हो, उसको संस्कृत पढ़ाईये। संस्कृत भी बचेगी, संस्कार भी बचेंगे, संस्कृति भी बचेगी, आध्यात्मिक ज्ञान भी संस्कृत में, बिना मिलावट के सुरक्षित रहेगा। दूसरे किसी भाषा में नहीं जा पाएगा। आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त करने के लिए, सभी को संस्कृत पढ़नी पड़ेगी। सारी दुनिया में संस्कृत के विद्यालय होंगे और आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए, सभी संस्कृत सीखेंगे।

107. अधिक + कार्य = अधिकार - अधिक कार्य करनेवाले अधिकारी होते हैं।

108. Attitude - अटूट -

जो टूटे नहीं, वही Attitude होता है। तभी तो कहते हैं कि, "बड़ा अकड़ कर चलता है, इसका Attitude तो देखो, मैं इसका घमंड तोडूंगा"।

109. अड़चन = अर्चन -

जब किसी को कोई अड़चन आती है, तो वह अर्चन करता है। इसीलिए अड़चन को दूर करने के लिए, प्रसाद में चना-गुड़ दिया जाता है।

110. Up + मान = अपमान -

जब कोई यह कहे कि "आऔ मेरे सिर के ऊपर बैठ जाऔ" तो यह आपका मान है या Upमान है ? क्योंकि वह तो ऊपर बैठा रहा है। ऊपर बैठाना तो मान होता है।

111. आस + मान = आसमान -

हम उसी को मान देते हैं, जो हमारी आशाओं को पूरा करता है। आसमान पर रहने वाला परमात्मा हमारी आशाओं को पूरा करता है, इसलिए हम परमात्मा को मान देते हैं।

112. एक + क्षण = Action - एक क्षण में जो हो जाए वही तो Action है।

113. आर्ष विद्या -

अर्श ही आर्ष है। अर्श यानि आसमान। विद्या यानि ज्ञान। आसमान का ज्ञान ही तो आर्ष विद्या है। आसमान यानि आकाश। आकाश यानि परमात्मा। तो परमात्मा से संबंधित ज्ञान ही आर्ष विद्या है। जिसे आसमानी इल्म भी कहते हैं।

114. अन्न + जान = अनजान -

अन्न में ही जान होती है। यही पहला ज्ञान (जानकारी) आदमी को मिली। इसलिए अनजान होते हुए भी, अन्न से उसकी जान बची रहती है। यही सोचकर वह अनजाने अन्न को भी अपना लेता है।

115. आता + ज्ञान = आज्ञा -

आता है, ज्ञान जहाँ उस स्थान को आज्ञा कहते हैं। आज्ञा चक्र वह स्थान है कि, जब आज्ञा चक्र सक्रिय होता है, तब आपको ज्ञान आना प्रारंभ हो जाता है।

116. Up + ईच्छा = अपेक्षा -

ऊपर जाने की ईच्छा, सभी में होती है। चाहे वह कोई भी हो। भगवान सबसे ऊपर है, इसलिए सब भगवान से अपेक्षा करते हैं।

117. आलसी - Yes, I will see it on later -

यह कहने वाला व्यक्ति आलसी होता है। जो यह कहे की "हाँ मैं सब देख लूंगा" यानि कहे "All See" बस वही आलसी है, वह कुछ करता नहीं है, वह केवल देखता है। और देखता ही रहता है, चाहे वह सपने ही क्यों न हो।

118. अ + धुरा = अधुरा -

जिसमें धुरा नहीं है, वही अधुरा है। यानि जिसमें Axle नहीं है, वह अधुरा है। धुरा वह है जो दो को जोड़कर एक करता है। जब धुरा नहीं हो तो, अकेला ही होता है। बस धुरा की पहचान होनी चाहिए, जिससे जुड़ाव बना रहे। क्योंकि बिना Axle के दो पहिए, एक साथ नहीं चल सकते, जब व्यक्ति अपने जीवन में परमात्मा से जुड़ने का धुरा जान लेता है, तो वह परमात्मा से जुड़ जाता है और परमात्मा के साथ चलता है, बस यह धुरा पता होना चाहिए और फिर अधुरापन खत्म।

119. Add + Dumber = आडम्बर -

Add करना Dumb लोगों को। Dumb लोंगों को जोड़ने के लिए आडम्बर किया जाता है। Dumb लोग मूर्खों जैसा प्रदर्शन करते हैं, कि "लोग हमें मूर्ख समझे" यानि जो आड़ लेते हैं अम्बर की। जो काम तो लोगों को, बेवकूफ बनाने के लिए करते हैं। परन्तु वह यह कहते हुए करते हैं कि, "भगवान की तरफ से है, यह सब"। Dumb लोग भगवान के नाम पर, लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए, जो कुछ भी करते हैं, वह सब आडम्बर है।

120. अन्न + आय + आस = अनायास -

अन्न और आय की आस हर व्यक्ति लगाता है, कि उसे अन्न और आय को प्राप्त करने में कोई मेहनत न करनी पड़े और यह अनायास ही हो जाए।

121. आकर + क्षण = आकर्षण -

आकर किसी को क्षणभर देख लेना ही आकर्षण है।

122. अ + प्रितम = अप्रितम - जिसकी प्रतिमा न बनाई जा सके।

123. अ + लंकार = अलंकार –

लंका में सोना ही सोना था। इसलिए वहाँ के लोग अलंकार नहीं पहनते थे। वहाँ के लोग कार्य भी नहीं करते थे, क्योंकि वहाँ सोना ही सोना था। रावण ने जो पूरी लंका को सोने की बना रखा था। सभी लोग सोते थे, केवल रावण जागता था। दस सिर में से हर एक सिर से जागता रहता था। और बीस हाथ में से दो हाथों से दो-दो घंटे करके कुल 20 घंटे प्रतिदिन कार्य करता था। परन्तु पैर दो ही थे तो थक जाता था। लंका में सोना ही सोना था। सभी लंकावासी उसके अपने थे। उस समय लंका की जनसंख्या एक लाख पूत सवा लाख नाती यानि सवा दो लाख लोग थे। क्योंकि राजा ही प्रजा का सबकुछ होता है। सभी के लिए रावण ने समुद्र का पानी मीठा करने की सोची, जो आज कर भी लिया गया है। रावण ने स्वर्ग में सभी को सदेह भेजने के लिए सीढ़ी बनाने की भी सोची थी। कितनी ऊंची सोच थी रावण की। आज भी रावण द्वारा रचित शिवतांडव स्त्रोत गाया जाता है। आज भी रावण की लंका सम्मानित है, उसके आगे श्री लगता है और श्रीलंका कहलाती है।

124. अ + रब = अरब -

अरब में, नाम ही जब अ रब है। यानि रब को न मानने वाले। जो बहुत पैसे वाले होते हैं, वह रब यानि भगवान को नहीं मानते हैं। वह समझते हैं कि दुनिया तो हम अपने पैसे से चला रहे हैं। परन्तु जब उन्हें रब Rub कर देता है यानि मिटा देता है। तब उन्हें होश आता है कि रब भी कोई है, फिर वह रब को मानने वाले रब्बी की बात मानते हैं।

125. अन्तर + ईच्क्ष = अंतरिक्ष -

सभी व्यक्तियों में ईच्छाओं के कारण अन्तर आ जाता है। इसलिए आदमी कहता है कि "I Need Some Space".

126. अट + कल = अटकलें -

कल के अटकने की अटकलें लगाई जाती हैं कि "यह कल कैसे अटक गई"। कल यानि मशीन।

127. Alternative -

Native का कोई Alternative नहीं होता है। कोई भी अपना मूल स्थान परिवर्तित नहीं कर सकता है। Native यानि नातिव या नाता होता है, यानि "तुम्हारा नाता कहाँ से है?" जहाँ से जिसका नाता है, वहीं का वह Native है। इसलिए लोग पूँछते हैं, "What is your native place"

128. अन्न + ईच्छा = अनिच्छा -

अन्न की ईच्छा हो या न हो अन्न हमेशा अनिच्छा से ही लिया जाता है और अन्न की ईच्छा सभी को ही होती है।

129. अभी + व्यक्ति = अभिव्यक्ति -

जो व्यक्त करता है, वह व्यक्ति है, जो अभी भी व्यक्त कर रहा है, वह अभी व्यक्ति है।

130. ओ + ष + धि = औषधि -

ऊँ का षरण धीरे-धीरे। व्यक्ति जब ध्यान लगाता है, ध्यान में ऊँ धीरे-धीरे व्यक्ति के शरीर में उतरने लगता है और पूरे शरीर में फैल जाता है, पूरा शरीर ऊँ से भर जाता है, यह ऊँ तो फिर परमात्मा है, यानि परमात्मा से पूरा शरीर भर जाता है, यही ऊँ फिर ओषधि कहलाता है। इसलिए प्रतिदिन ढाई घड़ी यानि एक घंटा ध्यान करना चाहिए और ऊँ रूपी परमात्मा की ओषधि को प्राप्त करना चाहिए।

131. आका + आश = आकाश -

आका से सभी आश लगाते हैं। सभी का आका आकाश है। आकाश को परमात्मा कहा गया है, परमात्मा सभी की आशाएँ पूरी करता है। इसलिए परमात्मा सभी का आका है। आ + का = हिन्दी वर्णमाला के, अ यानि स्वर, क यानि व्यंजन, यह दोनों ही मिलकर "अक" हैं। स्वर ही आत्मा है, व्यंजन ही शरीर है, कोई भी व्यंजन बिना स्वर के पूरा नहीं होता है, व्यंजनों में स्वर लगते हैं, तभी व्यंजन क्रियावान होता है।

132. अहम् + शान = अहसान –

जब व्यक्ति में अहम् और शान आ जाए तो उसे अहसान कहते हैं। रमलु को एक दिन के लिए रिश्तेदारी में जाना पड़ गया। रमलु ने अपने दोस्त झमलु को कहा कि "झमलु! मैं एक दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ, क्या तुम मेरे पशुओं को सानी-पानी कर दोगे ?" झमलु ने बोला "हओ! कर दूँगा"।

दिन बीतते गए। एक दिन रमलु-झमलु में तनातनी हो गई। रमलु ने झमलु को किसी बात पर ताना दिया। झमलु ने भी ताना दिया। बात आगे बढ़ गई। तब झमलु ने कहा "भूल गए मेरा अहसान, तुम्हारे जानवरों के लिए सानी को साना था, पानी दिखाया था"। तुम्हीं ने कहा था कि, "सानी को सान देना, पानी को दिखा देना। अब ताने दे रहे हो"। रमलु चुप हो गया। रमलु ने कहा कि "वह तो मैं हँसी-ठठ्ठा कर रहा था, नाराज मत हो, आओ चलो चौपाल चलते हैं, वहाँ वखत काटेंगे, लोगों से बतयायेंगे"। बात दरअसल यह थी कि जबसे झमलु ने रमलु की सानी की थी, तबसे सानी को सानने से झमलु में अहम आ गया था और झमलु बड़ी शान से अहम् से भरकर पूरे गाँव में घूमता फिरता था। रमलु के सामने जब भी आता था, तो बड़े अहम् से और शान से पेश आता था। अब दोनों में वह पहलेवाली दोस्ती की बात नहीं रह गई थी। झमलु अब अहमतापूर्वक अपनी शान दिखाता। अपनी चाल-ढाल से रमलु पर अहसान जताता।

133. अ + न + पढ़ = अनपढ़ -

जिसने "अ" को नहीं पढ़ा, वह अनपढ़ है। अनपढ़ "अ आ इ ई उ ऊ" को नहीं पढ़ता है। अन + पढ़ = अन्न को पढ़नेवाला अनपढ़ होता है। अनपढ़ पढ़ता है कि, "कौन-सा कार्य करने से अन्न मिल जाएगा" ? अनपढ़ को अन्न का बड़ा ज्ञान होता है। अनपढ़ हमेशा ध्यान रखता है, कि कौन क्या-क्या खाता है ? कौन कितना-कितना खाता है ? अनपढ़ हमेशा व्यक्ति-पक्षी-पशु को अन्न से अपने कब्जे में कर लेता है। अनपढ़ की एक खास बात होती है, कि वह किसी के यहाँ खाता नहीं है, और अनपढ़ हमेशा किसी को भी अपने यहाँ पर खाने पर आमंत्रित करता है। कि "आप मेरे यहाँ आ जाईये, साथ में डिनर करेंगे, बातें भी होती रहेंगी"। अन्न व्यक्ति की सबसे बड़ी कमजोरी है। अन्न न खाए तो कमजोर हो जाए। अन्न खाए तो, अन्न की पसंद उसकी कमजोरी बन जाती है। तो अनपढ़ अन्न खिलाकर व्यक्ति की कमजोरी पकड़ लेता है कि, "इसको यह पसंद है, यह नापसंद है"। बस अनपढ़ के पास यही एक पढ़ाई होती है और अनपढ़ की स्मरणशक्ति पढ़े-लिखे से कहीं ज्यादा होती है। क्योंकि पढ़ी-लिखी गई पुस्तकें, पढ़े-लिखे व्यक्ति के दिमाग में घूमती रहती हैं और उसके दिमाग को भर देती हैं, जिससे उसका दिमाग बोझिल हो जाता है और कल्पनाओं में उलझ जाता है। Meditation इसी भरे हुए दिमाग को साफ करता है और दिमाग को कल्पनाओं से हटाकर, हकीकत से रूबरू करवाता है। इसलिए पढ़ी हुई विद्या का उपयोग, सही ढंग से करना है, तो Meditation कीजिए।

134. अन्न + आशा + ऋतु = अनाश्रित -

अन्न की आशा ऋतु में होती है। इसलिए सब अन्न के लिए ऋतु पर आश्रित हैं।

135. आत्मा का स्वरूप – स्वयं + रूप = स्वरूप -

आईने के सामने खड़े हो जाने पर स्वयं को जो रूप दिखलाई देता है, वही जीव का स्वरूप है या किसी की आखों में देखने पर स्वयं का जो रूप दिखलाई पड़ता है, वह ही जीव का स्वरूप है या फिर आखें बन्द कर लेने के बाद, मन के दर्पण में जो स्वयं का रूप दिखलाई पड़ता है। वह जीव का स्वरूप है। या जब प्राण संकट में हो और उस समय जो प्राण के साथ शरीर से उत्क्रमण कर रहा है, वह जीव का

स्वरूप है, या जब ध्यान में बैठे-बैठे परमात्मा में, लीन होने से जो इनकार करे, वह जीव का स्वरूप है। यानि स्वयं का रूप ही जीव का स्वरूप है। स्वयं + रूप = स्वरूप यानि जिससे आदमी जीवन को जीता है और जो जीव अन्न से जीवन को पाता है, वह जीव है। अब जीव अपने रूप को स्वयं तो नहीं देख सकता है, क्योंकि स्वयं के रूप को देखने के लिए आँख और दर्पण चाहिए। तब जाकर स्वयं का रूप स्वयं को दिखलाई पड़ता है। जिसे जीव का स्वरूप कहते हैं।

136. आत्म + पुरुष = आत्मपुरुष - At + Om = आत्म = Atom -

जो "ऊँ" में है। "ऊँ" यानि परमात्मा में। पुरुष - पुर + उष्म = पूरित है जो ऊष्मा से वह पुरुष है। आत्म की पहचान ऊष्मा के रूप में की जाती है। यही ऊष्मा व्यक्ति के शरीर में पूरित रहती है। जिससे शरीर ही पुरुष कहलाता है। ऊष्मा व्यक्ति के शरीर में "ऊँ" के नाद से गुंजायमान रहती है। Meditation में व्यक्ति इसी "ऊँ" की गूँज को सुनता है। इस तरह से, आत्म की ऊष्मा से पूरित व्यक्ति, आत्मपुरुष कहलाता है। यानि जो व्यक्ति "ऊँ" से प्राप्त ऊर्जा से भरा-पूरा रहता है, वह आत्मपुरुष कहलाता है। यहाँ व्यक्ति से तात्पर्य, पुरुष या स्त्री कोई भी ले सकते हैं। दोनों में "ऊँ" की ऊष्मा विद्यमान है।

137. अहम + कार्य = अहंकार -

अहम = मैं, कार्य = कार्य, मैं के द्वारा संपादित प्रत्येक कार्य "अहंकार्य" से "अहंकार" में परिणित हो जाता है। इसलिए मैं के द्वारा किये गए प्रत्येक कार्य को अहम् (महत्वपूर्ण) कार्य बतलाता है कि "यह कार्य मेरे लिए बहुत अहम् (महत्वपूर्ण) है"। कार्य को मैं से जोड़ देने पर कार्य फिर अहंकार में बदल जाता है और इस तरह व्यक्ति के अहंकार का प्रदर्शन करता है।

138. आकर + Shit =आकर्षित -

यहाँ आकर !!! कौन Shit कर गया ? यह Shit ही आकर्षित करती है। सामने रास्ते पर बहुत सारे नजारे हैं, किंतु व्यक्ति की निगाह Shit पर ही पड़ेगी। यानी व्यक्ति की निगाह को Shit ही आकर्षित करती है। आकर + Shit = आकर्षित अर्थात मनुष्य का स्वभाव किसी व्यक्ति के अवगुण पर ही नजर रखता है।

139. आन-अना =

आन और अना में बहुत फर्क है, आन के होने पर ज्ञान होता है। अ से ज्ञ तक की यात्रा का नाम ज्ञान है। ज्ञ तक आ जाना ही ज्ञान है। ज्ञ + आन = ज्ञान। आन यानी गौरव, Pride, Graces, Dignity. अ के न होने पर अना होता है। अभी अ से परिचय नहीं हुआ है, तो उसमें अना होती है। अ + ना = अना, अना यानी मैं, अहम, अभिमान, अहंकार, गर्व। आन में रहनेवाला व्यक्ति, अपशब्द, अनाज्ञा को सह लेता है और पलटकर बदला नहीं लेता है। सहनशील होता है। अनाज्ञा करनेवाले को समझ लेता है, कि इसे ज्ञान नहीं है। अनाज्ञा = आज्ञा को न माननेवाला। जबकि अना में रहनेवाला व्यक्ति, आहत हो जाता है। पलटकर बदला लेता है। क्योंकि उसकी आज्ञा न मानने पर, उसके अहंकार को चोट लगती है। यह आन और अना है।

140. अभी + नय = अभिनय -

अभी है और नया है, वही तो अभिनय है। अभी + नय = अभिनय। अभिनय करनेवाला, कितनी ही

बार Rehearsal कर ले। किन्तु जब वह मंच पर अभिनय करे, तो देखनेवाले को यह लगे कि, यह नाटक तो अभी पहली बार देखा है, और नया नया है। इसी प्रकार से, अभिनय करनेवाले को भी, अपना अभिनय करते हुए, लगना चाहिए कि, यह तो अभी भी नया है। यानी अभिनय करनेवाला, कितनी ही बार, उसी उसी अभिनय को, मंच पर कर ले, किन्तु वह अभिनय हमेशा, ऐसा लगना चाहिए कि, यह तो अभी अभी का है, और नया नया है। इसी से अभिनय को, देखने आनेवाले वाले लोग, उसी अभिनय को बार-बार, देखने को आयेंगे, और बोर नहीं होगें। क्योंकि जब अभिनय करनेवाला ही, अपने अभिनय से बोर होने लगता है, तो देखनेवाले भी बोर होने लगते हैं। क्योंकि मंच भी वही होता है, Script भी वही होती है, देखनेवाले भी वही होते हैं, अभिनेता भी वही होते हैं, किन्तु अभिनय करनेवाले यह अभिनेता, अपने अभिनय से, उस मंचन को ऐसा पेश करते हैं कि, अभिनय को देखनेवाले लोगों को, वह अभिनय ऐसा लगता है कि, यह तो अभी पहली बार देखा है, और नया नया भी है। जबकि उस नाटक का मंचन, बहुत बार हो चुका होता है और, देखनेवालों ने उस नाटक के मंचन को, बहुत बार पहले भी देखा है। किन्तु अभिनय की प्रस्तुति से वह नाटक अभी भी नया लगता है, यही अभिनय है।

141. अन्न + ईष्ट = अनिष्ट -

अन्न ही सभी का ईष्ट है। अतः अन्न से कभी, अनिष्ट नहीं हो सकता है।

142. आ + राम = आराम -

"अब आप आराम करेंगे" ? "हाँ ! अब आ राम करेंगे"। आ राम, आ राम, कहकर राम को बुलायेंगे। राम के आ जाने के बाद, आराम करेंगे।

143. Age + जंट = Agent -

जिनकी Age हो चुकी है, और जो जंट हैं, उन्हें ही Agent की जरूरत होती है। Age + जंट = Agent. जंट = ताकतवर।

144. Ad + dress = Address - Advertisement on dress.

145. अ + Dial =अड़ियल -

जो Dial नहीं होते हैं, वही अड़ियल होते हैं। अ + Dial = अड़ियल। पुराने जमाने के टेलीफोन को, Dial करना पड़ता था। कभी-कभी वह अड़ जाते और घूमते नहीं थे। तभी कहते थे कि, "यह Dial नहीं हो रहा है"।

146. अ से ज्ञ या A to Z -

बात एक ही है। ज्ञ को ध्यान से देखने पर, ज्ञ भी Z जैसा दिखाई देता है। और उच्चारण भी ज्ञ या ज़या या जड़ है। यानी, अ कहो या A कहो, ज्ञ कहो या Z कहो, बात एक ही है।

147. अन्न + गिनत = अनगिनत -

अन्न को गिना नहीं जाता है। गेहूं-चावल-दाल को गिना नहीं जाता है। अन्न को तौला जाता है। तौलकर तौलिए में लिया जाता है। क्योंकि जिस अन्न को तौल लिया जाता है, उसी को तौलिए में लिया जाता है। इसलिए जो आदमी तौलिया लिए हो, उसी से Toll लिया जाता है। इसिलए फिर

आदमी तौलिए की जगह, गमछा, Bag, थैला, बोरी, रुमाल का उपयोग करने लगा।

148. Off + गान = अफगान - जहाँ गाना बंद, वह है अफगान है।

149. Arts = कला = सरस्वती

Commerce = वाणिज्य = लक्ष्मी

Science = विज्ञान = काली

कल जो विद्युत से चलती है, काली कहलाती है। कल यानि मशीन। विद्युत यानि Electricity. वह Machine जो बिजली से चलती है, वह काली कहलाती है।

कल + E = काली। E = Electricity. कल = Machine.

काली के उपासक को तांत्रिक कहते हैं। काली की व्यवस्था को तंत्र कहते हैं। तो यह कलयुग है, कालीयुग भी कह सकते हैं, यानि वह युग जिसमें सभी मशीनें विद्युत से चलती हैं। इसे ही घोर कलयुग कहा गया है। यानी यह युग पूर्णतः विद्युत पर चलेगा।

Arts = कला = सरस्वती,

Commerce = वाणिज्य = लक्ष्मी,

Science = विज्ञान = काली,

सरस्वती की पूजा शरद पूर्णिमा को की जाती है, लक्ष्मी की पूजा अमावस्या को दीपक जलाकर कर लेते हैं। काली की पूजा तो सभी प्रतिदिन करते हैं। लेकिन किसी को पता न चले इस तरह करते हैं, क्योंकि काली तन्त्र की देवी हैं। और कोई यह नहीं चाहता कि, कोई उसे काली की पूजा करते हुए देखे, यानि तान्त्रिक बनते हुए देखे। किंतु सभी कुछ सरस्वती पर ही आधारित है, सरस्वती की वर्णमाला एवं अंक ही लक्ष्मी एवं काली को साधते हैं। बिना अंकों के लक्ष्मी को गिन नहीं सकते हैं, और बिना वर्णमाला तथा अंकों के काली को Install नहीं कर सकते हैं। सरस्वती एवं लक्ष्मी के बारे में, सभी जानते हैं। किंतु काली के बारे में, ज्ञान अधूरा-अधूरा है। Science यानी काली, Commerce यानी लक्ष्मी, दोनों ही Arts यानी सरस्वती पर जीवित रहती हैं। Commerce को लक्ष्मी के रूप में, चित्रांकित किया गया, तब Commerce भी जी उठा। चित्र बनाना Art है। मोबाइल में जब Movies चलने लगीं, तब मोबाइल को भी जीवन मिल गया। Movies बनाना Art की एक किस्म हैं। Art ही सरस्वती है। यानी एक Artist के कार्य से न जाने कितने Commerce वालों को, और बहुत सारे Science के Technicians को भी कार्य मिलता है। Arts Faculty सबसे प्रमुख है। सबका आधार है। इसीलिए किसी भी, कार्य से पहले, उस कार्य की रूपरेखा, किसी लेखक के द्वारा, ही बनाई जाती है, जिस पर संपूर्ण कार्य चलता है। इसे ही Script कहते हैं। या फिर Minute To Minute का, Work Execution कहते हैं। इस सारे कार्य को, देवी सरस्वती संभालती हैं, इसीलिए कहते हैं कि, "जिसकी सरस्वती सिद्ध हो गई, उसके लिए सब सिद्ध हो गया।" यानी जो पढ़-लिख गया, वह सब कुछ सिद्ध कर लेता है।

Arts = कला = सरस्वती = कला की देवी, सरस्वती की, वर्णमाला, अ आ इ ई उ ऊ, क च ट त प य त्र और अंक 1 2 3 4 5 6 0 पर, वाणिज्य की देवी लक्ष्मी, और, Science की देवी काली, निर्भर हैं।

Science = तंत्रिकी = काली

Commerce = वाणिज्य = लक्ष्मी

Arts = कला = सरस्वती

इसलिए Arts यानी, कला की विभिन्न विधाएँ, Science एवं वाणिज्य को, कार्य में लगाए रखती हैं। इसलिए सरस्वती देवी, जब एक बार सध जाती हैं, तब लक्ष्मी एवं काली, यानी, धन एवं यांत्रिक वस्तुएं, अपने आप प्राप्त हो जाती हैं। Science यानी तंत्रिकी, तंत्रिकी यानी मशीन, मशीन यानी कल, तो यह कल का युग है, कल यानी मशीन, बिजली यानी Electricity से, चलती है, अतः यह, कल + E = कलियुग है। कलियुग यानी मशीन का युग। जिस युग में, मशीन Electricity से, चलती है। प्रत्येक कल एक, Key से खुलती है। इसलिए इसे, कल्कि कहते हैं। कल + Key = कल्कि। कल = मशीन। इस को ही, Password कहते हैं। मशीनें Password से, खुलती हैं। यह Password, जिस पर बनते हैं, उसे Keyboard कहते हैं। इसी Keyboard पर, वर्णमाला एवं अंक होते हैं। यही Keyboard तो, सरस्वती देवी हैं।

150. Anti + क्यों = Antique -

किसी के घर में, रखी वस्तु के बारे में, जब कोई पूछता है, कि "यह आपने यहाँ क्यों रखी है ? यह तो आपके Anti की वस्तु है।" Anti + क्यों = Antique. अपने Anti को जीतकर, जो वस्तु उस Anti से, प्राप्त की जाती है, वह Antique कहलाती है। तब वह घरवाला, बड़े ही गर्व के साथ कहता है, कि "यह मैंने अपने Anti से, जीती थी। यह मुझे मेरी जीत की, याद दिलाती है, जिससे मुझे गर्व होता है।" और फिर वह घरवाला, उस Anti से जीती गई, Antique Peace की पूरी, कहानी सुनाता है। और फिर घरवाला कहता है, कि "इस Antique से ही मुझे, Peace भी मिलती है, इसलिए यह मेरे लिए, Antique Peace है।"

151. आत्मोस + फेरे = Atmosphere -

आत्माओं के फेरे, जहाँ लगते हैं, उसे Atmosphere, कहते हैं। पृथ्वी के वातावरण में, आत्माएं घूमती रहती हैं। फेरे लगाती रहतीं हैं, इसलिए वातावरण को, Atoms Phere कहते हैं। इन्हीं आत्माओं फिरने के, Atmosphere से आगे, आकाश है, अंतरिक्ष है, Space है। जिस Space को सभी, चाहते हैं। और, कहते हैं "I need some space". इसी Space के आगे, ब्रह्मांड है, Universe है, जब व्यक्ति Universe पर, पहुँचता है। तब व्यक्ति Verse कहने, लगता है। इन्हीं Verse को, ब्रह्म के मंत्र "वेद" कहा जाता है। रहते हम भूमि पर हैं, आए हम Universe से हैं, भूमि से Universe तक, जाने के लिए, सात परतों से होकर, आत्मा को गुजरना पड़ता है। इन सात परतों से, गुजरने के बाद ही, आत्मा वापस, ब्रह्म के अण्ड में पहुँचकर, ब्रह्मलीन हो जाता है। इसे ही आत्मा एवं ब्रह्म का, योग कहते हैं। इसी का ज्ञान, उपनिषद में कहा गया है।

152. Oak + काट = औकात -

Oak से ही, किसी की औकात, नापी जाती है। Oak की लकड़ी, मँहगी होती है, और, सभी लोग Oak की लकड़ी, काट भी नहीं सकते हैं। इसलिए जो लोग Oak की लकड़ी काट लेते हैं, उनकी

औकात ही, सबसे अच्छी होती है।

153. ओस + धि = औषधि -

खेत से जब फसल, कटकर खलिहान में, आती थी, तब फसल एक पूर्णिमा तक, खलिहान में ही, पड़ी रहती थी। जिससे सूखी हुई फसल, पूर्णिमा के चांद की किरणों को, पूरी तरह सोख लेती थी। तब फसल औषधि, कहलाती थी। क्योंकि फसल एक पखवाड़े तक, खलिहान में, ओस की बूंदों को पीती थी, जिससे यह फसल औषधि कहलाती थी। ओस + धि = औषधि। ओस की बूंदों से, सिंची हुई फसल को खाने से मनुष्य में धि की, उत्पत्ति एवं स्थिरता रहती थी। धी = Wisdom = बुद्धिमत्ता। क्योंकि ओस व्यक्ति में, धि को उत्पन्न एवं स्थिर रखती है। इसीलिए सूखे हुए अनाज, पौधौं, फूलों, पत्तियों को, रात भर छप्पर पर, डाल कर रखते हैं। जिससे उसमें ओस के, गुण समाहित हो जाएँ, और सामान्य अनाज से, औषधि बन जाए। इसीलिए अनाज को, औषधि कहा गया है।

154. अनु + भव = अनुभव -

जिसके पीछे आप चलते हैं और उसके जैसे आप होना चाहते हैं। इसे ही अनुभव कहते हैं। इसमें आप कुछ भी, अनुभव नहीं कर पाते हैं, क्योंकि आपके आगे चलनेवाला ही, सब कुछ अनुभव करता है। पीछे चलनेवाले को तो, सब कुछ बना बनाया मिलता है।

155. Author + रिती = Authority -

Author ही किसी रीति को, करने की Authority देते हैं। Author + रीति = Authority. जब भी कोई अफवाह फैलती है तो, तब उस अफवाह का, सच जानने के लिए सभी लोग, किसी Author के पास ही जाते हैं। जब Author हाँ कह देता है, तब वह अफवाह रीति बन जाती है। जब Author ना कह देता है, तो वह अफवाह ऐसी ही फुस्स हो जाती है। इसीलिए Author के द्वारा लिखी बात ही, सत्य बात मानी जाती है, और Authority कहलाती है। अतः जो भी शास्त्र Authority देनेवाले लिख गए हैं, उन शास्त्रों का प्रारंभ "अथ" शब्द से किया गया है। उन शास्त्रों को लिखने वाले शास्त्रज्ञ, अपनी लिखी गई पुस्तक के पत्तों को, एक के ऊपर एक तह लगाकर रखते थे, जिसे "थर" बोला जाता है। अथ + थर = Author. अतः अथ एवं थर को जोड़कर, जो शब्द बना, उस शब्द को "ऑथर" कहा गया। इस तरह से "Authority" शब्द बना है।

156. आँच + मन = आचमन -

जो आँच देता है, मन को, इसलिए उसे आचमन, कहते हैं। आँच + मन = आचमन। जब मन घोर निराशा में होता है, तब आचमन का जल, मन को आँच देता है। मन पुनः दीप्तिमान हो जाता है। निराशा से भरा हुआ मन, आँच मिलते ही, आशा रूपी प्रकाश से, भर हो जाता है।

157. आका + काँक्षा = आकाँक्षा -

आका से काँक्षा करना ही, आकाँक्षा कहलाता है। आका + काँक्षा = आकाँक्षा। अ = वर्णमाला के स्वर। क = वर्णमाला के व्यंजन। अ एवं क, यानी पढ़ाई से ही, ईच्छाओं की पूर्ति होती है। यानी शिक्षित होने पर ही आकांक्षा की पूर्ति होती है।

158. आग + गाज = आग़ाज़ -

आग एवं गाज से ही, आगाज़ किया जाता है। Olympic का प्रारंभ, मशाल से आग को जलाकर किया जाता है। नये वर्ष का आगमन, बिजली को जलाकर, किया जाता है।

159. आचरण + आर्य = आचार्य -

जो श्रेष्ठ आचरण करते हैं, और दूसरों से भी करवाते हैं, वह "आचार्य" कहलाते हैं। आचरण + आर्य = आचार्य। आर्य = श्रेष्ठ। आर्यों के गुरु को आचार्य कहते हैं, जो आर्यों को श्रेष्ठ आचरण सिखलाते हैं। जो आर्यों को यह कहे कि, "घर में प्रवेश करते समय, अपने जूते उतार कर, Shoe Rack में रख दो, उसके बाद अपने चरण, हाथ, मुंह को, धोकर साफ करो, तब घर में प्रवेश करो"। इसलिए आर्यों के घर के दरवाजे पर, Shoe Rack होता है, और पानी रखा रहता है।

160. आज + माना = आजमाना -

"देखते हैं, आज मानता है कि नहीं।" बस यही आज का मानना ही, आजमाना है। आज + माना = आजमाना। किसी को आजमाने के लिए, यह कहा जाता है कि, "बस आज मान ले। आगे से तुझे नहीं कहूँगा।" आज + मान = आजमाने। यह भी कहा जाता है कि, "आज भर मेरा मान रख ले, आज भर मेरी बात मान ले।" फिर जमाने की दुहाई भी, दी जाती है कि, "आजकल जमाने में, ऐसा ही हो रहा है। आज + जमाने = आजमाने। आज का जमाना ही, ऐसा है। हम कौन-से जमाने से, अलग हैं। आज का जमाना ही, ऐसा है। आज + जमाना = आजमाना। इस तरह कोशिश यही, रहती है कि, आज यह मान ही ले। इसीलिए पूछा जाता है कि, "आज माना कि नहीं।" जब मान जाता है, तब कहा जाता है कि, "वो ! तो मैं तुम्हें, आजमा रहा था। आजमाने वाले लोग, लोगों को आजमाने के लिए, हमेशा कहते हैं कि, "आज महफिल जमा लेते हैं।" इस तरह महफिल जमाकर, दूसरों को आजमा लेते हैं।

161. Advertisement + Via + Sorry = Advisory -

क्षमा के माध्यम से विज्ञापन। जब किसी की सहायता के लिए, देर से पहुँचते हैं, तब उससे कहते हैं कि, "क्षमा करना ! आने में थोड़ी देर हो गई।" वह व्यक्ति सहायता करने में, इसीलिए देर करता है, क्योंकि सहायता प्राप्त करनेवाले सभी उसके बारे में, पूछते हैं कि, हमारी सहायता करने के लिए, कौन आ रहा है ? इसीलिए सहायता करनेवाले, Vice लोग, सहायता करने से पहले, Advertisement करते हैं कि, "हम लोग इनकी सहायता करने के लिए जा रहे हैं।" और सबसे पहले, Advice देते हैं। Advertisement + Vice = Advice. किंतु जहाँ पर, असलहा का उपयोग किया जा रहा है, वहाँ पर सलाह, न दी जाती है और न ली जाती है। अ + सलाह = असलहा।

162. ओ + रति = औरत –

ओ ! रति से औरत बन गया। जो रति क्रिया करती है, वह औरत कहलाती है।

163. आब + रूह = आबरू -

आब रूह का आबरू कहलाती है। बहुत बार कहते सुना होगा, "मैं इसका पानी उतारता हूँ"। यह जो पानी है, यही तो आब है रूह का। इसीलिए जब कोई घर पर आता है, तो उसकी आबरू करने के लिए उसे पानी पेश किया जाता है। पानी पीते ही उसकी रूह प्रसन्न हो जाती है, इस तरह से उसकी

और आपकी आबरू बढ़ जाती है, क्योंकि लोग कहते हैं, “अरे ! उसने तो मुझे पानी तक नहीं पूछा”। यानी पानी ना पूछना, यहाँ पर यह दर्शाता है कि, “उसने तो मेरी इज्जत ही नहीं करी”। इसीलिए पानी का पिलाना जारी रखिये, सभी की इज्जत करते रहिए। इसी रूह के आब से, आदमी रुआब में चलता है। रूह + आब = रुआब। पानी से ही प्राण बनता है, प्राण ही आत्मा का भोजन है, आत्मा को रूह कहते हैं।

164. आती + खीर = आखिर –

आती है जब खीर तब उसे आखिर कहते हैं। खीर को आखिर में परोसा जाता है। तभी तो आदमी कहता है, "आ... हा खीर आ गई"। जब खीर परोस दी जाए तब समझो आखिरी पकवान आ गया।

165. अनु + भव = अनुभव -

अनुभव व्यक्ति को छोटा बना देता है, पीछे चलनेवाला बना देता है। यानी अनु हो जाता है। अनु + भव = अनुभव। जबकि सबसे आगे चलनेवाला व्यक्ति रास्ता बनाता चलता है, पीछे चलनेवाले उस रास्ते पर चलते हैं, तो आगे चलनेवाला जो अनुभव करता है, वह अनुभव तो पीछे चलनेवाला कभी नहीं कर पाता है। तो क्या किसी भी कार्य में सबसे आगे रहनेवाला व्यक्ति अनु हो जाता है।

166. Addition + Vice = Advice -

कुछ लोग अपने साथ Addition करते हैं, Vice को। जो उनको Advise देते हैं कि, "Vise से कैसे बचते हैं, या Vise में कैसे फंसाते हैं" । Addition + Vise = Advise. एक तीसरा होता है, जो Addition करता है, अपने साथ Wise लोगों को। Addition + Wise = Adwise. Wise लोग यह सलाह देते हैं कि, "कभी भी अपने साथ Vice का Addition मत करो"। यानी कभी भी अपना उप मत बनाओ। किंतु लोग अपने आपको Wise मानते हैं। इसीलिए अपने साथ Wise लोगों का Addition नहीं करते हैं। हाँ अपने आसपास बहुत सारे Vice लोगों को Addition करके रखते हैं। उन लोगों की Advice पर चलते हैं। और कहते हैं, "तुम सबकी बातें सुन सुनकर मेरा माथा गर्म हो गया है। जाओ Ice लेकर आओ और मेरे माथे पर मलो"। और Wise लोगों की बातें सुनकर कहते हैं, "आपकी वाणी सुनने से मुझे ईश्वर की अनुभूति होती है। ऐसा लगता है कि, आपकी वाणी सुनता रहूँ"।

167. आका + कांक्षा = आकांक्षा - आका ही आकांक्षा को पूरी करते हैं।

168. आ + दर = आदर

दर का आदर किया जाता है। दर यानी मूल्य। मूल्य यानी Value. इसीलिए आदमी अपना आदर करवाने के लिए कहता है कि, “अपनी Value बढ़ाओ, जिससे लोग तुम्हारा आदर करें”। व्यक्ति की दर पता चलती है कि, वह व्यक्ति कितनी मंहगी वस्तुओं का इस्तेमाल करता है, कितनी मंहगी वस्तुओं को खरीदता है। इसीलिए जब भी वह किसी से बात करेगा तो, यही करता है, “यह मैंने अमेरीका से खरीदी थी, इसकी कीमत इतनी ज्यादा है, यह मैंने पैरिस से खरीदी थी, इसकी कीमत का तो तुम अन्दाजा ही नहीं लगा सकते हो”। इसीलिए व्यक्ति अपनी दर को बढ़ाने के लिए कम कीमत की वस्तुओं को भी ऊँची कीमत पर खरीद लेता है। और बेचनेवाला इसी का फायदा उठाता है।

किन्तु जब दर से आदर नहीं किया जाता है तब आदमी डर दिखाता है और अपना आदर करवाता है। तब आदमी कहता है, "तुझे ! पता नहीं है, अच्छे-अच्छे इनके सामने झुकते हैं, इनका आदर करते हैं, बड़े-बड़े इनसे डरते हैं, चल इनका तू भी इनका आदर कर। अगर आदर नहीं करेगा तो, तेरे साथ क्या-क्या होगा, तुझे भी पता नहीं है"। इसी प्रकार दर और डर दो भावों से आदर करवाया जाता है।

169. आला + कमान = आलाकमान -

जिस प्रकार आला के द्वारा दिल की धड़कन को सुन सकते हैं। उसी प्रकार, आवाज जहां से आ रही है, उसी जगह पर, कमान से तीर चला सकते हैं। जिसे की शब्द भेदी बाण कहा जाता है। आला + कमान = आलाकमान। आला = Stethoscope. शब्द भेदी बाण चलाने वाले के कान, दूर की आवाज को, बड़ी ही स्पष्टता से सुन सकते हैं, और उस सुनी गई आवाज पर, तीर चला देते हैं, जो ठीक उसी स्थान पर लगता है। इसीलिए जिसके कान सुस्पष्ट सुन सकते हैं, उसी को आला एवं कमान दी जाती है। दूर क्या खुसफुसर हो रही है, यह आलाकमान को सुनाई दे जाती है।

170. आमंत्रण – निमंत्रण -

आम को आमंत्रण दिया जाता है। निम्न को निमंत्रण दिया जाता है। आम को आम का पत्ता देकर, आमंत्रित किया जाता है। निम्न को नीम का पत्ता देकर, निमंत्रित किया जाता है। कार्यक्रम के आयोजन स्थल पर, दो प्रकार के तोरण लगाए गए होते हैं। एक तोरण आम के पत्तों का होता है, जिसमें से आम के पत्ते वाले लोग, आम का पत्ता दिखाकर प्रवेश करते हैं। जिनके गले में आम के पत्तों की, माला पहनाकर स्वागत किया जाता है। दूसरा तोरण नीम के पत्तों का होता है, जिसमें से नीम के पत्ते वाले लोग, नीम का पत्ता दिखाकर प्रवेश करते हैं। जिनके बाएँ हाथ की कलाई पर, नीम की पत्तियों का धागा पहनाकर, स्वागत किया जाता है। आमंत्रित किये गए व्यक्तियों को, आम के पत्तों की पत्तल में, विभिन्न प्रकार के पकवानों के साथ आम की चटनी को परोसा जाता है। निमंत्रित किये गए व्यक्तियों को, नीम के पत्तों की पत्तल में, केवल एक मिठाई के साथ, एक सब्जी और चार पूड़ी के साथ, नीम की चटनी परोसी जाती है। आमंत्रित व्यक्ति आम होते हैं, जो धनवान होते हैं, निमंत्रित व्यक्ति निम्न धनवाले लोग होते हैं। आजकल भी धनवान को बड़े-बडे आमंत्रण पत्र देकर आमंत्रित किया जाता है। एवं निम्न लोगों को, एक छोटी पर्ची पकड़ा दी जाती है, जिसे निमंत्रण की पर्ची बोला जाता है, इसी पर्ची को दिखाकर, निम्न को स्थल में प्रवेश मिलता है। बड़े-बड़े आमंत्रण पत्र जिनके पास होते हैं, उनका स्वागत फूल गुच्छा देकर एवं माला आदि पहनाकर किया जाता है। निम्न का तो स्वागत ही, नहीं किया जाता है, बस हलका-सा सुगंधित द्रव्य छिड़क दिया जाता है, जो निम्न के शरीर एवं कपड़ों की, गंध को दूर करने के लिए होता है। आम के लिए चांदी आदि धातुओं की थाली होती है, जिसमें बड़े-बड़े पकवान होते हैं, जिनको दूसरों के द्वारा परोसा जाता है। कार्यक्रम स्थल पर ही, आम के खाने का स्थल भिन्न होता है, जहाँ पर निम्न, प्रवेश ही नहीं कर सकते हैं। निम्न के लिए तो, सामान्य बर्तन होते हैं, निम्न के खाने के लिए, बहुत कम प्रकार के पकवान होते हैं. जो स्वंय निम्न के द्वारा, स्वयं ही उठाकर खाये जाते हैं, आम उसे माना जाता है, जिसके पास धन एवं शक्ति अधिक होती है, जिससे कोई भी वैर नहीं लेना चाहाता है। निम्न उसे बोला जाता है, जिसके

पास धन एवं शक्ति कम होती है, जिससे सभी मौका पाकर, वैर लेने को हमेशा तैयार रहते हैं। अक्सर आम के द्वारा, निम्न के प्रति, कड़वेपन का व्यवहार किया जाता है, इसीलिए निम्न को, नीम का पत्ता भेजकर कार्यक्रम का बुलावा भेजा जाता है। और कहा जाता है, "आना है तो आओ, नहीं तो, आपके ना आने पर भी चलेगा"। किंतु आम को, जब बुलावा भेजा जाता है, तब यह बार-बार कहा जाता है, "आपके आये बिना तो काम चलेगा नहीं, आपको तो अवश्य ही आना होगा"। इस तरह से यह आमंत्रण एवं निमंत्रण है। हाँ एक बात और, आमंत्रण हो या निमंत्रण, केवल तीन व्यक्तियों के लिए ही होता है, क्योंकि इसमें आखिर में "त्रण" लिखा होता है, इसीलिए आमंत्रण में तीन आम के पत्ते, एवं निमंत्रण में तीन नीम के पत्ते ही, दिए जाते हैं। जो व्यक्तियों के द्वारा तोरण द्वार पर, दिखाये जाते हैं। आम + मन + त्रण = आमंत्रण। जिसे आम के मन से बुलाया जाता है। यानी आम जैसे मिठास वाले मन से, जिसे बुलाया जाता है। नीम + मन + त्रण = निमंत्रण। जिसे नीम के मन से बुलाया जाता है। यानी नीम जैसी कड़वाहट वाले मन से, जिसे बुलाया जाता है। जिसे बुलाने का मन नहीं है, किंतु फिर भी बुलाया जाता है। 'आओ महाशय' ! को आम कहा जाता है। आओ + महाशय = आम। आओ महाशय! कहकर महाशय लोगों को, आमंत्रित किया जाता है। महाशय लोगों को उच्च श्रेणी का भोजन, थाली में परोसा जाता है। नीच मनवाले को निम्न कहा जाता है। नीच + मन = निम्न। नीच मनवालों को निमंत्रण दिया जाता है। निम्न लोगों को नीच श्रेणी का भोजन, पत्तल में परोसा जाता है। New आता को न्योता दिया जाता है। New + आता = न्योता। जब कोई व्यक्ति Transfer होकर, दूसरी जगह पर जाता है, तब दूसरी जगह पर रहनेवाले लोग, उस New आए व्यक्ति को, अपने यहां पर भोजन करने के लिए, न्योता देते हैं। क्योंकि वह व्यक्ति वहां पर, New आता है। क्योंकि उस व्यक्ति ने अभी तक, अपने Packing को खोला नहीं है। और भोजन बनाने की व्यवस्था, उस New आए व्यक्ति के यहां पर नहीं है। इसलिए लोग कहते हैं कि, 'आप ! अपनी Packing को, कल खोलिएगा, आज आपका न्योता हमारे यहां पर है'। इस तरह से New आते को, न्योता देते हैं। जब अपने पूरे परिवार को, भोजन पर बुलाते हैं, तब उसे 'चूल' से बुलाना कहते हैं। यानि आज चूल्हा नहीं जलाना, आज पूरा परिवार हमारे यहां पर, भोजन के लिए आ जाना। चूल = चूल्हा। जब कोई व्यक्ति दांव में नहीं आ रहा है, तब उस व्यक्ति को दांव में लेने के लिए, दावत दी जाती है। दावत खाने लेने के बाद, उस व्यक्ति से बात की जाती है कि, 'अब ! बताओ तुम्हारी क्या मांग है ? तुम क्या चाहते हो' ? दांव + बात = दावत। अब दावत खाया हुआ व्यक्ति, नमकहरामी नहीं कर सकता है, और जिस थाली में खाना खाया है, उस थाली में छेद नहीं कर सकता है। इसलिए व्यक्ति को अपने दांव में, लेने के लिए व्यक्ति को दावत दी जाती है।

171. आश + सिर + वाद = आशिर्वाद -

आश मिलने पर, सिर में चलनेवाले वाद, अपने आप समाप्त हो जाते हैं। आश + सिर + वाद = आशिर्वाद। लोगों के सिर में बहस चलती है, "यह करूं कि वह करूं, कौन-सा करूं" ? बस इसी बहस को जब आप किसी को बताते हैं, और वह कहता है, "यह ठीक रहेगा, यह कर ले, बाकी कुछ पूछना हुआ तो, मैं हूं न, मेरे से पूंछ लिओ, मैंने भी ऐसे ही किया था"। बस यही दूसरे के द्वारा दी गई

आश, "चिंता मत कर, मैं हूं ना, तू तो बस काम शुरू कर दें"। यह आश ही व्यक्ति के भीतर चल रहे, वाद को समाप्त कर देती है।

172. आरंभ + ध्यान + आत्मा = आध्यात्म -

आध्यात्म का पालन करना कठिन है, इसीलिए मनुष्य धर्म का पालन करता है, धर्म का पालन करना आसान है। आत्मा के द्वारा परमात्मा का ध्यान लगाना ही आध्यात्म है। आरंभ + ध्यान + आत्मा = आध्यात्म। ध्यान कोई लगाना ही नहीं चाहता है, क्योंकि परमात्मा निराकार है, और वह प्रश्न पूछते हैं कि, "निराकार का ध्यान कैसे करें" ? किसी को भगवान मानकर, उसपर या उसके प्रतीक चिन्ह पर, फूल चढ़ाकर हाथ जोड़कर, कुछ मांग लेना आसान है। लोगों ने इसे ही धर्म समझा है। आध्यात्म के शास्त्रानुसार सभी प्राणी-अप्राणी ब्रह्म हैं। और सभी प्राणी-अप्राणी को ब्रह्म जान लेना मनुष्य के समझ से परे है। क्योंकि इससे मनुष्य के ऊंच-नीच का ढांचा धाराशाई हो जाता है। धर्म मनुष्य को विभागों में बांटता है, इसीलिए मनुष्य को धर्म पसंद है। धर्म के साथ संस्कृति तो और विभागों में बांटती है। इसीलिए मनुष्य धर्म के साथ-साथ संस्कृति को बहुत जोर देकर मानता है। इसीलिए धार्मिक कृत्यों एवं कर्मकांडों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों को मनाने पर जोर देता है। और ध्यान करनेवालों के विरोध में हमेशा रहता है। और धर्म की बातों को आध्यात्म की बातें बोलता रहता है। इस तरह आध्यात्म के नाम का उपयोग, अपने धर्म एवं संस्कृति के संरक्षण के लिए करता रहता है।

173. अन्दर + रूह + Knee = अन्दरुनी -

अन्दर रूह में जो चोट लगती है, उसे अन्दरुनी चोट कहते हैं। अन्दर + रूह + Knee = अन्दरुनी। अन्दरूनी चोट जब लगती है, तब रूह से आंसू निकलते हैं, जिसे रूआंसू बोलते हैं। रूह + आंसू = रूआंसू। आंसुओं को पलकों से दबाकर, आंखों को मीच मीच कर, आंसुओं को पोंछने की, कोशिश करते हुए, तब आदमी यह कहता है, "अरे ! मेरे घुटनों में दर्द है, मैं तो नहीं आ पाऊंगा"। इस तरह अन्दर रूह में हुए दर्द को, घुटनों का दर्द बताकर, अपनी जात से निजात पाने की, कोशिश करता है। Knee + जात = निजात। निजी जात में व्यक्ति नित्य जाता है, किन्तु Knee में दर्द होने पर, नहीं जा पाता है।

174. आब + बादी = आबादी -

जहाँ पर आब एवं बादी अच्छी होती है, वहीं पर आबादी होती है। आब + बादी = आबादी। आब = जल। बादी = वायु।

175. अप्रिय + See + At = Appreciate -

जब कोई यह कहता है कि, "I don't want to see you at here". तो उसे कहते हैं, Appreciate. अप्रिय + See + At = Appreciate. व्यक्ति उसी की सराहना करता है, जो उसे अप्रिय लगता है। सराहना में व्यक्ति अपनी, अप्रियता को छिपा लेता है। अगर उसको पता लग गया, कि यह मुझे अप्रिय समझते हैं, तो उसके सिर से आह ना निकले। सिर + आह + ना = सराहना।

176. आत्मा + विश्वास = आत्मविश्वास -

जो आत्मा पर विश्वास करते हैं, उनमें ही आत्मविश्वास होता है। आत्मा + विश्वास = आत्मविश्वास।

Soul का Use करेंगे तो, Solution अवश्य मिलेगा। Soul + Use = Solution.

177. अनार + कली = अनारकली -

"नार" "ओ ! नार !" "यहाँ तो आ"। नार बाहर बैठी कपड़े सीं रही थी। आवाज सुनते ही भीतर चली गई। नार और उसकी माँ इस गाँव में पाँच-छः साल से रह रहीं थीं। इसी गाँव के एक भले आदमी ने नार से शादी कर ली और नार तथा उसकी माँ को अपने गाँव ले आया था। नार को इसी गाँव में एक मकान और बारह एकड़ जमीन दे दी थी। वह भला आदमी अपने दूसरे घर में अपनी पहली पत्नी और बच्चों के साथ रहता था। कभी-कभी यहाँ रहने भी आ जाता था। नार की एक बच्ची भी थी। जिसका नाम लीक था। नार की एक सहेली थी। जो नार के घर से तीन घर छोड़कर रहती थी। जिसका नाम खेतल था। नार और खेतल दोनों ही सुबह और शाम लोटा लेकर शौच को जाया करती थीं। इसी दौरान वह दोनों अपनी अपनी बातें कर लिया करती थीं। खेतल के मन में नार की पिछली जिन्दगी की कहानी जानने की उत्सुकता थी। किन्तु वह संकोचवश सीधे-सीधे पूँछ नहीं रही थी। खेतल की एक भाँजी थी नूर। वह कभी-कभी खेतल के पास आकर रहती थी। नूर का गाँव पास में ही था। नूर और नार की भी अच्छी दोस्ती थी। नूर विवाह के लायक हो गई थी। वही नूर आज आई हुई थी। नूर ने सोचा चलो नार से मिलकर आती हूँ। नार घर के भीतर अपनी संदूकची खोलकर बैठी थी। और नार के हाथ में एक पंख था। नार हाथ में पंख को लिए न जाने किन ख्यालों में खोई हुई थी। तभी नूर पीछे से आ गई और चुपचाप नार को देखने लगी। नार को भान भी नहीं हुआ की कोई उसे देख रहा है। तब तक अम्मी की आवाज आई नार ! ओ ! नार ! तब जाकर नार पंख के सम्मोहन से बाहर निकली। नार पीछे घूमी, तो पीछे नूर खड़ी थी। शाम के समय तीनों लोटा लेकर शौच के लिए निकलीं। वहाँ नूर ने पंख वाली बात उठाई। और न चाहते हुए नार ने अपनी सारी पिछली दास्ताँ सुना डाली। नूर वापस अपने गाँव चली गयी। नूर के गाँव के खेतों में बादशाह के खेमे लगे। बादशाह और शहजादा तफरी के लिए कुछ दिन यहाँ रहेंगे। ऐसी मुनादी की गई। इसलिए उस तरफ कोई गाँववाला न जाए। किन्तु नार की कहानी ने नूर के मन में एक अलग ही खुराफात को जन्म दे दिया था। और कायनात भी उसका साथ दे रही थी। दो-चार दिन बाद शहजादा को आसपास का क्षेत्र देखने की ललक उठी। अब खेमे में तो ऐसा कोई नहीं था जो आसपास के क्षेत्र के बारे में जानता हो। तो शहजादा के खानसामे ने सब्जी लानेवाले को कहा कि "वही शहजादे को आसपास का क्षेत्र दिखा दे"। सब्जी लानेवाले ने कहा, "कि वह बहुत मसरूफ रहता है, वह नहीं कर पाएगा"। तो खानसामे ने कहा, "फिर किसी और को देख लो अगर कोई और मिल जाता है तो"। वह सब्जीवाला जिसका नाम नूरम था। वह नूर का भाई था। उसने घर पर बात बतलाई। नूर ने कहा, "कि वह शहजादे को आसपास की सैर करवा देगी"। किन्तु बात यह थी कि सैर करानेवाला मर्द होना चाहिए। तो फिर नूर ने कहा, "उसकी सहेली का भाई है, उसको कह देगी"। तो नूरम ने कहा, "वह खेमे में सहेली के भाई को भेज दे, कहना नूरम ने भेजा है, खानसामे से मिलना है"। नूर ने मर्द का वेष बनाया और पहुँच गई खेमे में। शहजादे को चार-पाँच दिन खूब सैर कराई। शहजादा को शक हो गया था कि यह मर्द नहीं है, यह एक औरत है। परन्तु शहजादा शान्त रहा। अब बादशाह के गाँव से जाने का समय आ गया। तो

गाँव में मुनादी हुई, "बादशाह और शहजादे को जो रूबरू देखना चाहता है, वह खेमे में आ जाए"। नूर भी गई। क्योंकि नूर ने शहजादे को सैर कराई थी। तो नूर मर्द के वेष में गई। नूर ने शहजादे को वैसा ही पंख भेंट किया। जैसा नूर ने नार के पास देखा था। पंख देखते ही शहजादे के जहन में वो यादें हिलोरे लेने लगी। जब शहजादा इसी पंख से किसी के लिए शेर-ओ-शायरी लिखा करता था। परन्तु शाहजादे ने उस वक्त अपने आपको रोका और शान्त रहा। कार्यक्रम समाप्त होने के बाद शहजादे ने नूर को बुलवाया। नूर उसी मर्द वेष में गई। शहजादे ने नूर को पगड़ी उतारने को कहा। नूर ने पगड़ी उतार दी। शहजादे ने पूछा, "वह कहाँ है ? तुम्हें यह पंख कहाँ से मिला"। नूर ने कहा, "उसकी शादी हो गई है, उसका पति है, उसके बच्चे हैं"। शहजादे ने कहा, "नहीं !!! मुझे उसे एक बार देखना है, तुम मुझे उसे एक बार दिखा दो, जो तुम चाहोगी वह तुम मिल जाएगा"। नूर ने कहा, "मैं आपको चाहती हूँ, आप मुझसे शादी कर लो। मैं उसे आपको दिखला दूँगी"। शहजादे की शादी नूर से हो गई। आसपास के गाँववालों के लिए शहजादा और शहजादे की बेगम को देखने के लिए एक कार्यक्रम रखा गया। बात इतनी गुप्त रखी गई की खेतल को भी नहीं पता चला कि नूर की शादी शहजादे से हुई है। उन दोनों को देखने के लिए खेतल अपने साथ नार और लीक को भी ले गई। रास्ते के दोनों तरफ लोग खड़े थे। शहजादा और नूर पैदल ही चल रहे थे। नूर के हाथ में वही पंख था। नूर की नजर दोनों तरफ थी। तभी लीक चिल्लाई, "अरे ! यह तो नूर बाजी हैं"। नूर ने लीक को देखा और रुक गई। नूर ने अपने हाथ का पंख लीक के हाथ में थमा दिया। नूर ने लीक को गोद में ले लिया। और शहजादे से कहा, "यह लीक है, और यह इसकी अम्मी नार है"। शहजादे ने कहा, "नहीं ! यह लीक नहीं, यह "कली" है, वह नार नहीं, वह तो "अनार" है। यह दोनों ही "अनारकली" हैं। नूर ने लीक को नार की गोद में दिया। इस तरह नूर ने अपना वचन पूरा किया। लीक को लिए खड़ी नार ने शहजादे से आँख मिलाई और चुपचाप मुँह ढके खड़ी रही। नूर और शहजादा आगे बढ़ गए। नूर ने शहजादे से कहा, "अब वह दूसरे की लाज़ है, उसे परदे में ही रहने दो, अब आप उसे देख न पाओगे"। यहाँ राजमहल में शहजादे के हुक्म से नूर के लिए पूरा महल सजाया गया। नूर महल में पहुँची तो शाही काजी का फरमान आया कि, "शाही काजी नूर और शहजादे का निकाह करवायेंगे"। जब नूर के वालिद का नाम पूँछा गया। तो नूर ने अपने वालिद का नाम "जहाँ" बताया। तो इस तरह से "नूर वल्द जहाँ" से वह नूरजहाँ हो गई। जहाँ का गीर (जमाई) होने से शहजादा जहाँगीर हो गया। नार को जब, सारी हकीकत पता चली तो वह रोने लगी। तो नाथ की अम्मी ने कहा, "ना रो नार दीवारों से आवाज बाहर जाती है" तो वह नारोवाल हो गया। नूरजहाँ ने जहाँगीर को पाया। जहाँगीर से शाहजहाँ को पाया। शाहजहाँ की शादी लीक से करवाई। लीक अपने साथ नार को महल में ले आई। नार जिस महल में रही वह "नूरमहल" कहलाया। इस तरह से एक पंख से नूर ने कितनी ऊँची उड़ान भरी। वक्त और सरमाया तथा किस्मत एवं खुदा और खुदा का नूर सभी ने नूर का साथ दिया। नूर ने अपने वालिद "जहाँ" का नाम अपनाया और जो आज जहाँ में "नूरजहाँ" के नाम से मशहूर है। अपने वालिद के नाम से "जहाँनाबाद" बसाया। अब यह हकीकत है या अफसाना।

178. अलग + गांव = अलगाव -

जो अलगाव चाहते हैं, वह अलग गांव बसा लेते हैं। अलग + गांव = अलगाव। जो लगाव नहीं रखना चाहते हैं, वह अलगाव रखते हैं। अ + लगाव = अलगाव। जिन्हें लगाव रहता है, वह लगकर गांव में रहते हैं। लगकर + गांव = लगाव। इसका पता तब चलता है, जब अलाव तापने बैठे लोग, किस प्रकार एक दूसरे से, लगकर बैठे रहते हैं। और जिनको अलाव तापने को, Allow नहीं किया जाता है, वह अपना अलाव अलग जला लेते हैं। जैसे कि कोई कहे, "ऐ ! दूर बैठो, हमसे लगकर न बैठो"। इसे ही अलगाव कहते हैं।

179. अंतिम + काम = इंतकाम -

अंतिम काम ही इंतकाम है। व्यक्ति जब यह कहता है कि, "बस उसे एक अंतिम काम करना है"। तब समझ लो वह व्यक्ति इंतकाम लेने जा रहा है, क्योंकि इंतकाम लेना ही उसका अंतिम काम होता है।

180. आशा + ताना = आस्ताना -

व्यक्ति किसी के आस्ताने पर, पहले आशा लेकर जाता है, और जब आशा पूरी नहीं होती है, तब ताना सुनाने जाता है।

181. अन्न + Limited = Unlimited - अन्न Limited ही खाना चाहिए।

182. अध्ययन + पाक = अध्यापक -

अध्ययन करवाये जो "पाक" का, वह "अध्यापक" कहलाता है। अध्ययन + पाक = अध्यापक। पाक = पवित्रता। यानी जो पवित्र रहने का ज्ञान देता है, वह अध्यापक होता है। पवित्रता = साफ सफाई। मन एवं शरीर दोनों की साफ सफाई, करना जो सिखाता है, वह अध्यापक होता है।

183. अन्न + तर = अन्तर -

अन्न और तर से व्यक्ति में अन्तर आता है। अन्न + तर = अन्तर। तर = पानी, जल। अन्न को खाने से मन बनता है, इसे ही अन्तर्मन कहते हैं, अन्न + तर + मन = अन्तर्मन। और पानी को पीने से स्वप्न आते हैं। स्वयं + पानी = स्वप्न। तो व्यक्ति का जब अन्न बदल जाता है, तब व्यक्ति का मन बदल जाता है, और व्यक्ति का पानी बदल जाने पर, व्यक्ति के स्वप्न बदल जाते हैं। इस तरह से व्यक्ति बदल जाता है। अगर मन को एक सा रखना है और स्वप्न को एक सा रखना है, तो अन्न एवं पानी को एक-सा रखिए। इसलिए, जब व्यक्ति का अन्न एवं तर, बदल जाता है, तब व्यक्ति के अन्तर में द्वंद चलता है। जिसे अन्तर्द्वन्द कहते हैं। अन्न + तर + द्वन्द = अन्तर्द्वन्द। इसलिए अन्न एवं तर के अनुसार, राष्ट्र में अन्तर आ जाता है, इसलिए उनको "अन्तराष्ट्र" कहा जाता है। अन्न + तर + राष्ट्र = अन्तराष्ट्र। इसलिए सभी राष्ट्रों की पहचान, उनके खान-पान से होती है। कि वह राष्ट्र क्या अन्न खाता है ? एवं वह राष्ट्र क्या पानी पीता है ?

184. अ + ज़र = अज़र -

आत्मा बिना ज़र की है। अ + ज़र = अज़र। आत्मा बिना जड़ की है। अ + जड़ = अजड़।

185. अनु + बन्ध = अनुबन्ध –

अनु लोगों से किया गया बन्ध ही, अनुबन्ध होता है। अनु + बन्ध = अनुबन्ध। पीछेवाले लोगों को अनु कहते हैं, तो जब पीछेवाले लोगों को, आगे चलनेवाले लोगों के साथ जोड़ा जाता है, उसे

अनुबन्ध कहते हैं। इस अनुबन्ध से, पीछे चलनेवाले लोग भी, आगे चलनेवाले लोगों के पीछे चलते हैं। इसे ही अणुबन्ध भी कहते हैं। अणु कहते हैं आत्मा को, आत्मा को परमात्मा के साथ, जब बन्ध किया जाता है, उसे अणुबन्ध कहते हैं। परमात्मा के साथ अणु को, जोड़ देने से, यह परमाणु हो जाता है और, परमात्मा के पीछे आत्मा चलते हुए, आत्मा भी परमात्मा का अनुगमन करता है।

186. आध्यात्म + धुन + इक = आधुनिक -

आध्यात्म की धुन इक है। आध्यात्म + धुन + इक = आधुनिक। आध्यात्म की धुन "ॐ" है। आध्यात्म की धुन हमेशा यही "ॐ" रही है। "ॐ" की धुन का ना आदि है और ना ही अंत है। इसलिए "ॐ" हमेशा आधुनिक है। तभी तो "ॐ" बोलकर ही किसी कार्य को प्रारंभ किया जाता है। ॐ + कार्य = ॐकार। सुनते हैं जब "ॐ" को तन से, तब उसे "सुनातन" बोलते हैं। सुना + तन = सुनातन। यही "सुनातन" कालांतर में अपभ्रंश, होकर "सनातन" बन गया। क्योंकि जो भी व्यक्ति "ॐ" की, ध्वनि को सुनता है, सना आ जाती है, उस व्यक्ति के तन में। सना + तन = सनातन। सना = चमक, आभा। यह "ॐ" की ध्वनि ही सनातन है। यह "ॐ" की ध्वनि हमेशा रहती है।

187. अनु + गम + मन = अनुगमन –

पीछे जो चलते है, वह गम से भरे हुए मन होते हैं। इसलिए अनुगमन जो करते हैं, वही पिछले कहलाते हैं। किसी के पीछे चलते-चलते, व्यक्ति पिछल ही जाते हैं। क्योंकि आगे चलनेवाले, बहुत आगे निकल जाते हैं। जो अनुगमन करनेवाले, डर के कारण आगे-आगे नहीं चलते हैं। क्योंकि आगे क्या है ? उस अज्ञात भय के कारण, वह आगे नहीं चलते हैं। किन्तु जब मार्ग बन जाता है, तब पीछे चलनेवाले, आगे चलनेवाले को पीछे धकेलकर, आगे बढ़ने में तत्पर हो जाते हैं। किन्तु आगे चलनेवाला और, दूसरे कार्य करने लग जाता है, और उस मार्ग पर, आना जाना छोड़ देता है। परन्तु पीछे चलनेवाले उसी मार्ग पर, चलते रहते हैं। और उस मार्ग पर, भीड़ ही भीड़ हो जाती है। क्योंकि आगे चलनेवाले वालों ने, कार्यों को आसान बना दिया है। और आगे चलनेवाले के पीछे नहीं जाते हैं।

188. आत्मा + मोहित = आत्म-मोहित -

जब जब व्यक्ति अपने शरीर की छवि को, दर्पण में देखता है, या अपने शरीर की Photo देखता है। तब तब उसकी आत्मा, अपने शरीर की छवि को देखकर, मोहित हो हो जाती है। इसे ही आत्म-मोहित कहते हैं।

189. अर्थ + शास्त्र = अर्थशास्त्र -

अर्थ की व्यवस्था करने का शास्त्र, "अर्थशास्त्र" है। अर्थ + शास्त्र = अर्थशास्त्र। अर्थशास्त्र कहता है कि, अर्थ की व्यवस्था "Tax के Law" से होती है। यानी जब किसी राजा ने, अपने वित्त मंत्री से पूछा कि, "अब इस कार्य के लिए, अर्थ की व्यवस्था कैसे और, कहां से की जाए" ? तब उस वित्त मंत्री ने, हाथ जोड़कर उत्तर दिया कि, "महाराज ! अर्थशास्त्र के नियम के अनुसार, "Tax का Law" लगा देना चाहिए और इस नियम को प्रजा में, अनिवार्य कर देना चाहिए। इससे राज्य के सभी कार्यों के लिए, अर्थ की व्यवस्था हो जाएगी"। Tax के Law की यह विद्या, "तक्षशिला विश्वविद्यालय" में

पढ़ाई जाती थी। Tax + का + Law = तक्षशिला। इसी तक्षशिला विश्वविद्यालय में, आचार्य चाणक्य ने अर्थशास्त्र के, Tax के Law सीखे थे और, तब पुस्तक लिखी थी "अर्थशास्त्र"। इस तक्षशिला विश्वविद्यालय की स्थापना, "नागराज तक्षक" के द्वारा की गई थी। तक्षक की शिला से इसका नाम, "तक्षशिला" पड़ा था। तक्षक + शिला = तक्षशिला। "खाण्डव प्रस्थ" से प्रस्थान करने के बाद, नागराज तक्षक ने, एक शिला पर बैठकर चिंतन किया, और तत्पश्चात यहां पर, "तक्षशिला" नगर की स्थापना की।

190. आह + हत = आहत -

जब किसी को किसी की, आह लगती है, तब उसका हत होता है। इसे ही आहत होना कहते हैं। आह + हत = आहत। जब किसी को कोई बोलता है कि, "हट यहां से, यहां क्यों खड़ा है, यह तेरे खड़े होने की जगह नहीं है"। इतना सुनते ही, उस आदमी के मुंह से, आह निकलती है, और यह आह, उस कहनेवाले को हत करती है, इसे ही"आहत" करना कहते हैं। आह = व्यक्ति के मुंह से निकलने वाली, गरम हवा।

191. आवाहन + ग्रह = आग्रह -

आवाहन करते हैं जब ग्रह का, उसे आग्रह कहते हैं। आवाहन + ग्रह = आग्रह। निवारण करते हैं जब ग्रह का, उसे निग्रह कहते हैं। निवारण + ग्रह = निग्रह।

192. Axis + Om = Axiom – Axis and Om are called Axiom.

193. अना + आदर = अनादर -

जो व्यक्ति किसी की अना का, आदर करना जान जाता है, वह व्यक्ति किसी का भी, अनादर नहीं करता है। अना + आदर = अनादर। अना = अहम, Ego. यानी जो व्यक्ति किसी की, अना को जान लेता है, वह व्यक्ति उसकी, अना का आदर करता है। यानी व्यक्ति उसकी Ego को बढ़ावा देता है, व्यक्ति उसके अहम को बढ़ावा देता है। किन्तु व्यक्ति तो हमेशा से ही, Another का अनादर करता आ रहा है। यानी दूसरे का अनादर करता आ रहा है। क्योंकि वह दूसरे की अना को नहीं जानता है। इसलिए व्यक्ति आदर को, प्राप्त करने के लिए Ego को हमेशा, सबसे ऊपर रखता है। क्योंकि अना का ही आदर होता है। इसलिए लोगों की अना का आदर कीजिए।

194. अनु + बंध = अनुबंध -

जिस तरह से Train के, Engine के साथ पीछे बंधे हुए डिब्बे, Train के Engine को ऊंचाई पर, चढ़ने पर अपनी तरफ खींच लेते हैं। उसी तरह से योग्य व्यक्ति के पीछे बंधे लोग योग्य व्यक्ति को ऊपर चढ़ने से, पीछे खींच लेते हैं। इसे ही अनुबंध कहते हैं। अनुबंध कहते हैं। अनु + बंध = अनुबंध।

195. अ + रिश्त = अरिष्ट -

जो रिश्त नहीं होते हैं, वही अरिष्ट होते हैं। अ + रिश्त = अरिष्ट। यानी जो आपके रिश्तेदार नहीं होते हैं, वही आपके अरिष्ट होते हैं। जो अरिष्ट होते हैं, वही Rest नहीं करने देते हैं। अ + Rest = Arrest. और व्यक्ति को Arrest करवा देते हैं, जहाँ पर व्यक्ति को Rest करने को नहीं मिलता है। इसलिए रिश्तों को वित देकर बनाए रखो, जिसे रिश्वत कहते हैं, ताकि कोई अरिष्ट नहीं बने। रिश्त + वित =

रिश्वत।

196. अ + लिख = अलिख -

जिसे लिखा ना जा सके, उसे अलिख कहते हैं। अ + लिख = अलिख। अलिख का अपभ्रंश अलख है। अलिख = अलख। इन तीन चीजों को, लिखा नहीं जा सकता है, "नीर अन्न जन"। नीर + अन्न + जन = निरंजन। दुनिया में कितना नीर है, यह लिख नहीं सकते हैं। दुनिया में कितना अन्न है, यह लिख नहीं सकते हैं। दुनिया में कितने जन हैं, यह लिख नहीं सकते हैं। इसलिए इसे "अलख निरंजन" कहते हैं।

197. अना + पान + सती = आनापान सती -

अना को पान करो, तो सती हो जाती है। अना + पान + सती = आनापान सती। अपनी अना का पान करने पर, व्यक्ति का अहंकार भस्म हो जाता है। बाईं नासिका में स्थित, ठंडे श्वास को, दाईं नासिका में स्थित, गर्म श्वास से मिलाने पर, जिसकी अनुभूति होती है, उसे आनापानसती योग कहते हैं।

198. Off + ईमान = अफीम -

Off कर देता है जो ईमान को, उसे "अफीम" कहते हैं। Off + ईमान = अफीम। अफीम को खाने से, व्यक्ति का ईमान Off हो जाता है। और व्यक्ति सो जाता है।

199. आग + गाज़ = आगाज़ -

आग और गाज से आगाज़ होता है। आग + गाज़ = आगाज़। गाज़ = विद्युत। दीपक प्रज्वलित करके, किसी कार्यक्रम का आगाज़ करते हैं। गाज़ (विद्युत) को On करके, Machine को चलाने का आगाज़ करते हैं।

200. Up + मान = अपमान -

किसी का अपमान तभी होता है, जब उस व्यक्ति से नीचे वाले व्यक्ति को, ऊपर बैठाकर मान दिया जाता है। Up + मान = अपमान। यानी Junior को Senior से, ऊपर की Post दे देने से, Senior का अपमान होता है। जैसे युधिष्ठिर को युवराज बना देने से, दुर्योधन का अपमान हो गया। जैसे भरत को राजा बना देने से, राम का अपमान हो गया। Junior कितना ही Capable हो, किन्तु Junior को Senior से, ऊपर का ओहदा देने से, उस महकमे में Dispute आ जाते हैं, और लोग कार्य पर ध्यान ना देकर, Gossip में जुट जाते हैं तथा, निर्णायकों की चापलूसी करने लगते हैं। और वह महकमा निकम्मा है जाता है। जो लोग उस Promotion को प्राप्त, Junior की बात नहीं मानते हैं, वह Junior अपनी दहशत फैलाने के लिए, उनको निकलवा देता है, मरवा देता है, और अन्य तरह से उनको परेशान करता है। इसलिए जिन महकमों में, या इस तरह Junior को, Senior से ऊपर का पद दिया जाता है, वह महकमा ज्यादा दिन नहीं, चल पाता है और, जल्दी ही समाप्त हो जाता है।

201. एड़ = Ad -

जिस प्रकार से एड़ लगाकर, घोड़े को तेजी से भगाया जाता है। उसी प्रकार से व्यापार को, Ad से प्रचारित करके, व्यापार को तेजी से फैलाया जाता है। एड़ = Ad. Ad = Advertisement.

202. अ + क्षर = अक्षर -

"ऊं" अक्षर है। अ + क्षर = अक्षर। यानी "ऊं" का क्षर नहीं होता है। "अ" से "ज्ञ" तक सब वर्ण हैं, इन्हीं वर्णों को मिलाकर, शब्द बनाए जाते हैं। और शब्दों को मिलाकर वाक्य, बनाए जाते हैं। पाणिनि अष्टाध्यायी के अनुसार, "अ" से "ज्ञ" को "अल" प्रत्याहार कहते हैं। और "अल" प्रत्याहार में, सभी वर्ण आ जाते हैं। इसलिए "अल" को "ALL" भी कहते हैं। इसी "अल" को जब बोला जाता है, उसे "आह" कहा जाता है। इससे "अल" के साथ में, "आह" को जोड़ देने से, "अल्लाह" बनता है। अल + आह = अल्लाह। "ऊं" अक्षर से सभी वर्णों की, उत्पत्ति हुई है। इसलिए "अल्लाह" की उत्पत्ति भी, "ऊं" से हुई है।

203. अभि + षेक = अभिषेक -

काबा में स्थित शिवलिंग का, जो लोग अभिषेक करते थे, वही लोग कालांतर में, "शेख" कहलाये गए। अभि + षेक = अभिषेक > अभिशेख > शेख।

204. आदि + तय = आदित्य -

आदि में जिसने तय किया है, वही तो "आदित्य" है। आदि + तय = आदित्य। आदित्य से जो वार (दिन) प्रारंभ होता है, वही तो "आदित्यवार" है। आदि + तय + वार = आदित्यवार। दिनों का पहला दिन, आदित्यवार कहलाता है। आदित्यवार का ही अपभ्रंश "इतवार"। आदित्यवार > आदितवार > दितवार > इतवार। इस तरह से "इतवार" शब्द बना है। सृष्टि के आरंभ में सबसे पहले, सूर्य का उद्भव होता है। इसलिए सूर्य को आदित्य कहा जाता है। यानी जिससे इस सृष्टि का आदि हुआ। सूर्य के बाद से ही बाकी सृष्टि का, धीरे-धीरे विस्तार होता रहता है। किन्तु सूर्य आदि है, और सूर्य सबकुछ तय करता है। इसलिए सूर्य ही आदित्य है और, सूर्य का पहला दिन ही आदित्यवार है। जो ऊर से जलनेवाला है, वही तो "सूर्य" है। स + ऊर + ज = सूर्य। ऊर = ऊर्जा। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति ऊर्जा को, प्राप्त करना चाहता है, ताकि वह व्यक्ति भी किसी कार्य का, आदि कर सके।

205. अर्थ + शास्त्र = अर्थशास्त्र –

अर्थ की व्यवस्था करने का शास्त्र, "अर्थशास्त्र" है। अर्थ + शास्त्र = अर्थशास्त्र। अर्थशास्त्र कहता है कि, अर्थ की व्यवस्था "Tax के Law" से होती है। यानी जब किसी राजा ने, अपने वित्त मंत्री से पूछा कि, "अब इस कार्य के लिए, अर्थ की व्यवस्था कैसे और, कहां से की जाए" ? तब उस वित्त मंत्री ने, हाथ जोड़कर उत्तर दिया कि, "महाराज ! अर्थशास्त्र के नियम के अनुसार, "Tax का Law" लगा देना चाहिए और, इस नियम को प्रजा में, अनिवार्य कर देना चाहिए। इससे राज्य के सभी कार्यों के लिए, अर्थ की व्यवस्था हो जाएगी"।

Tax + का + Law = तक्षशिला –

Tax के Law की यह विद्या, "तक्षशिला विश्वविद्यालय" में पढ़ाई जाती थी। Tax + का + Law = तक्षशिला। इसी तक्षशिला विश्वविद्यालय में, आचार्य चाणक्य ने अर्थशास्त्र के, Tax के Law सीखे थे और, तब पुस्तक लिखी थी "अर्थशास्त्र"। इस तक्षशिला विश्वविद्यालय की स्थापना, "नागराज तक्षक" के द्वारा की गई थी।

तक्षक + शिला = तक्षशिला –

तक्षक की शिला से इसका नाम, "तक्षशिला" पड़ा था। तक्षक + शिला = तक्षशिला। "खाण्डव प्रस्थ" से प्रस्थान करने के बाद, नागराज तक्षक ने, एक शिला पर बैठकर चिंतन किया, और तत्पश्चात यहां पर, "तक्षशिला" नगर की स्थापना की। खाण्डव प्रस्थ के विध्वंस के बाद, नागराज तक्षक ने गांधार नरेश शकुनि से मुलाकात की, और गांधार नरेश शकुनि को, सारा वृत्तान्त सुनाया। गांधार नरेश शकुनि ने, नागराज रक्षक को अपने देश, गांधार के एक स्थान पर शरण दी। उसी स्थान का नाम आगे चलकर, तक्षक के नाम से तक्षकशिला पड़ा। जो कालांतर में क्षशिला के, नाम से प्रसिद्ध हो गया।

तक्षक + शिला = तक्षशिला –

क्योंकि इसी स्थान पर रहकर, तक्षक ने अपने ऊपर हुए, अत्याचार का सिला लेने का, पूरा Plan बनाया था। और आखिर में अपना सिला, पूरा किया था। इसलिए तक्षक के सिला से भी, इसका नाम तक्षकसिला पड़ा।

तक्षक + सिला = तक्षकसिला - तक्षकसिला > तक्षकशिला > तक्षशिला

इसी खाण्डव प्रस्थ पर अधिकार, करने के लिए, पश्चिम से बार-बार आक्रमण होते रहे हैं। नागवंशियों का यह खाण्डव प्रस्थ, आज 'दिल्ली' के नाम से प्रसिद्ध है। और तब से लेकर आज तक, यह नागवंशी इस खाण्डव प्रस्थ को, प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हैं। इसलिए दिल्ली का नाम पुनः एक बार, खाण्डव प्रस्थ हो जाए तो, नागवंशियों के लिए एक प्रकार का उपहार होगा। और खाण्डव प्रस्थ का नाम, भारत देश की प्राचीनतम संस्कृति-सभ्यता को, संपूर्ण विश्व में गौरवान्वित करवाएग। "कि भारत का इतिहास पांच हजार से भी, अधिक वर्षों से पुराना है। और खाण्डव प्रस्थ नाम के द्वारा, नागवंशी नागराज तक्षक का भी, स्मरण हो जाएगा।

206. अनु + Cool = अनुकूल –

किसी के पीछे चलनेवाला, हमेशा Cool रहता है। अनु + Cool = अनुकूल। आगे चलनेवाला तो तपिश में, तपता रहता है और, तपिश से तपस्या करता रहता है। जबकि उसके अनु चलने वाले, हमेशा उसकी छाया में रहते हैं, और उस छाया में Cool रहते हैं। इसलिए इन अनुचरों को, तपिश का अनुभव नहीं होता है। और यह अनुचर हमेशा, आगे चलने वाले के पीछे हो लेते हैं। और कहते हैं कि, "फलाने तुम ! संघर्ष करो, हम तुम्हारे साथ हैं"। आगे चलने वाला तो Sun घर्षण करता है। यानी सूर्य की गर्मी को सहता है, जबकि उसके पीछे चलने वाले, उसकी छाया में Cool रहते हैं, और ठंडक का अनुभव करते हैं। और इन्हीं Cool लोगों की एक, लता बनती जाती है, जो अनुकूलता कहलाती है।

अनु + Cool + लता = अनुकूलता –

जिस प्रकार से लता, बिना जड़ के होती है और, पेड़ के पत्तों की छाया में, पेड़ पर चढ़ती जाती है और, अपने आपको Cool रखती है। इसी तरह से ठंडक को, पसंद करनेवाले लोग, "अनुकूलता" की प्राप्ति के लिए, किसी के भी अनुचर बन जाते हैं, और उसके अनुकूल हो जाते हैं। तथा अपने आपको को Cool रखते हैं। इसलिए जब कोई गर्म होता है तो, तो यही अनुचर लोग, उस गर्म हुए व्यक्ति को

कहते हैं कि, "Cool Dude Cool". यानी यह अनुचर लोग, उस गर्म हुए व्यक्ति को भी, Cool बनाकर अपने अनुकूल बना लेते हैं। इसलिए अगर Cool रहना है, तो अनुचर बनकर अनुकूल हो जाओ, और लता कि तरह पूरे पेड़ पर छा जाओ। और अनुकूलता के Cool का आनंद उठाओ।

207. अमीर + Rica = America –

अमीर लोगों का देश "अमेरिका"। और स्वादिष्ट भोजन करने वाले, लोगों का देश "अमेरिका"। अमीर + Rica = America. Rica is a Spanish word. **Rica = स्वादिष्ट**।

इस्लाम के आने के बाद, अरब के बहुत से अमीर लोग, युरोप में आकर बस गए। किन्तु युरोप में इन अमीरों को स्वीकार नहीं किया गया। तब यह अरब के अमीर लोग, अमेरीगो विचपुते के द्वारा खोजे गए, नये महाद्वीप में आकर बस गए। और इन्होंने इस महाद्वीप का नाम, अमेरीगो और अमीर को मिलाकर, "अमेरिका" रख लिया। चूंकि यह अरब के अमीर लोग मूर्ति पूजक थे, इसलिए इन्होंने सबसे पहले, अमेरिका में अमेरिका की रक्षा करने वाली, देवी "Statue of Liberty" को, समुद्र के तट पर स्थापित किया। जिससे अमेरिका की रक्षा होती रहे, और अमेरिकियों में ज्ञान की मशाल, प्रज्वलित करके रखे। तथा जो भी अमेरिका में प्रवेश करे, वह व्यक्ति Statue of Liberty को, प्रणाम अवश्य करे।

208. अड़चन = अर्चन = अर्चना –

जब अड़चन हो तो अर्चन करो। अड़चन = अर्चन = अर्चना। अर्चन को ही अर्चना कहा गया है।

209. आह + हत = आहत –

आह से ही तो हत हो जाता है। आह + हत = आहत। इसलिए कहते हैं कि, 'गरीब की आह नहीं लेनी चाहिए, गरीब की आह बड़े-बड़े महलों को, भस्म कर देती है'। आह यानि गरीब के भीतर से, निकलनेवाली गर्म हवा।

210. आब + रूह = आबरू –

जो तुम्हारी इज़्ज़त करता है, वह आब देगा तुम्हारी रूह को। आब + रूह = आबरू। यानि जब तुम किसी के द्वार पर जाते हो, तब घरवाला तुमको सबसे पहले, आब पेश करेगा और कहेगा कि, 'लीजिए पानी पी लीजिए, लगता है कहीं दूर से आ रहे हैं, पहले सुस्ता लीजिए फिर बात करेंगे'। इस तरह से पहले पानी पीने को, दिया जाता है और, आराम करने को कहा जाता है। इस तरह से पीने का पानी देकर, तुम्हारी इज़्ज़त की जाती है। यानि पानी देना इज़्ज़त देने का प्रतीक था। तभी तो हम सुबह-सुबह, सूर्य को अर्घ्य देते हैं, अर्घ्य देकर सूर्य को इज़्ज़त देकर कहते हैं कि, 'हे सूर्य भगवान ! आप रातभर चलकर, सुबह-सुबह मेरे घर पर आएं हैं, लीजिए जल को ग्रहण कीजिए'। इसी तरह से प्रातःकाल जल को, भगवान शिव के पिंड पर चढ़ाया जाता है, और इसी तरह से, अपने पूर्वजों को जल दे करके, अपने पूर्वजों को याद किया जाता है, और सम्मान कर पूजन किया जाता है। इस तरह से पानी पीने को देना, किसी का सम्मान करना होता है। हम पानी उस व्यक्ति की आत्मा को पिलाते हैं, इसलिए इसे आबरूह कहते हैं, और कालांतर में आबरूह का उच्चारण, आबरू हो गया है। इसलिए व्यक्ति भी सुबह-सुबह, गुनगुना जल पीता है, जिससे व्यक्ति की रातभर सोई हुई, आत्मा

जाग जाती है। इस तरह से व्यक्ति, स्वयं के शरीर में जल को डालकर, स्वयं की आत्मा की इज़्ज़त करता है। इसलिए पानी पिलाना, सम्मान देना होता है। इसलिए हम जल का सम्मान करते हैं, और लोटा, कुंभ, कुंआ, बावड़ी, तालाब, पोखर, जलाशय, सरोवर, नदी, खाड़ी, समुद्र में स्थित जल की पूजा करते हैं।

211. आस + Stick = आस्तिक -

आशा से Stick हुआं व्यक्ति, आस्तिक होता है। आस + Stick = आस्तिक। Stick = जुड़ा। यानि व्यक्ति को जब किसी से, कुछ प्राप्त होने की आशा होती है, वह व्यक्ति तब उससे जुड़ जाता है। इसलिए आस्तिक का अपभ्रंश आशिक हो गया है। जो आशा से Stick नहीं है, वह व्यक्ति नास्तिक है। ना + आशा + Stick = नास्तिक। जब व्यक्ति को किसी से, कुछ नहीं लेना होता है, तब व्यक्ति किसी से नहीं जुड़ता है।

212. अन्य + अहित = अन्यअहित = अनाहत -

सुनने के लिए शून्य होना पड़ता है। तभी भीतर भर सकता है। अगर भीतर पहले से ही भरा हुआ, तो सुनना नहीं हो पाएगा और, कहा गया शब्द, ऊपर-ऊपर से निकल जाएगा। इसलिए शून्य हो जाओ, ताकि सुन सको। नहीं तो लोग यही कहेंगे कि, 'यह ! तो किसी की सुनता नहीं है'। और शून्य में आवाज़ गूंजेगी, जो भी बोलोगे वह गूंजेगा। क्योंकि खाली कमरे में भी, कुछ बोलने पर आवाज़ गूंजती है। उस गूंज को अनाहत नाद मत समझ लेना, क्योंकि वह गूंज, तुम्हारी ही आवाज़ की प्रतिध्वनि है, तुम्हारे द्वारा किए जा रहे, ऊं के जप की ध्वनि है। जो दीवारों, छतों से टकराकर, वापस तुम्हें सुनाई पड़ रही है। ऐसे ही तुम जो मन में मन्त्र जप रहे हो, जपा जा रहा वही मन्त्र, तुम्हारी खोपड़ी से टकराकर, वापस आकर तुमको ही सुनाई दे रहा है। इस जपते हुए ऊं की गूंज को, अनाहत नाद मत समझ लेना। क्योंकि वह अनाहत नाद है। क्योंकि वह किसी अन्य का, अहित नहीं करता है। अन्य + अहित = अन्यअहित = अनाहत। यानि किसी अन्य को आहत नहीं करता है। क्योंकि वहां अन्य कोई है ही नहीं, तो जो बिना किसी को आहत किए, गूंज रहा है वह है अनाहत नाद। तो शून्य हो जाने पर, वह अनाहत नाद सुनाई पड़ता है। जिसकी ध्वनि 'ऊं' की जैसी होती है।

213. अणु + रूप = अनुरूप -

जैसा अणु होता वैसा ही रूप होता है। अणु का अपभ्रंश अनु है। इसलिए अणुरूप को अनुरूप कहते हैं। अणुरूप = अनुरूप।

214. आस + स्थान = आस्था -

किसी की आस, किसी विशेष स्थान पर होती है, उसे ही आस्था कहते हैं। आस + स्थान = आस्था। 'अरे ! मेरी आस तो उस स्थान पर बहुत है, मेरी तो सभी आशाएं, उस स्थान पर जाने पर पूरी हो जाती हैं, तुम भी एक बार उस स्थान पर जाकर देखो, तुम्हारी भी आशा पूरी हो जाएगी' एक बार जाने में क्या हर्जा है'। अतः व्यक्ति की आशा, जिस स्थान से पूरी होती है, व्यक्ति की आस्था, उस स्थान पर होती है।

215. अलगाव + ऋतम् = Algorithm –

अलगाव होनेवाले की ऋतम् पहचानना ही Algorithm होता है । अलगाव + ऋतम् = Algorithm. जब चलती हुई पृथ्वी की ऋतु में, अलगाव आने लगता है, तब पृथ्वी की Rhythm बदलने लगती है। यानि काफी सारे मनुष्य, एक Rhythm में चल रहे हैं। और तभी एक मनुष्य उनमें से, अलग होने लगता है। तब उस अलग होनेवाले मनुष्य की चाल के, Rhythm में परिवर्तन होने लगता है। इस तरह प्रत्येक मनुष्य की चाल के, Rhythm को जानकर, उस व्यक्ति का Algorithm जाना जाता है। अलग + गो + Rhythm = Algorithm. गो = गाय। Algorithm का पता झुण्ड में, चलती गायों के खुरों की चाल को, देखकर भी ऋतु का पता, लगाया जा सकता है। क्योंकि प्रत्येक ऋतु में, गायों की चाल अलग-अलग होती है। उसी प्रकार से मनुष्य की इन्द्रियों को भी, गो कहा गया है। गो = इन्द्रियां। मनुष्य में बारह इन्द्रियां होती हैं, प्रत्येक इन्द्रि का अपना-अपना स्वभाव होता है, इसलिए जो इन्द्रि ज्यादा ताकतवर होती है, उस इन्द्रि के द्वारा मन को, अपनी तरफ खींच लिया जाता है। इसे ही इन्द्रियों का अलगाव कहते हैं। इन्हीं बारह इन्द्रियों के अलगाव का, पता चल जाने पर, अब उस व्यक्ति के मन को अपनी, तरफ खींचने के लिए, उस-उस इन्द्रि को पसंद आनेवाली वस्तु, और पसंद आनेवाली भाषा के शब्दों, और वाक्यों को इस्तेमाल किया जाता है। इस तरह से इन्द्रियों की पसंद से, इन्द्रियों के अलगाव का पता लगाकर, मन के Rhythm का पता लगाया जाता है। इसे ही Algorithm कहते हैं।

216. यज्ञ + निष्पन्न = यज्ञनि= अग्नि –

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, यज्ञ से उत्पन्न होने के कारण, अग्निवंशी कहलाते हैं। यज्ञ से उत्पन्न होने के कारण, द्रौपदी और धृष्टद्युम्न भी, अग्निवंशी कहलाते हैं। परिहार, परमार, सोलंकी, चौहान भी, अग्नि से उत्पन्न होने के कारण, अग्निवंशी कहलाते हैं। अग्नि का स्वभाव होता है कि, अग्नि बुझ तो जाती है, किन्तु अग्नि अपना स्थान नहीं छोड़ती है। और अग्नि बेतरतीब फैलती जाती है। यज्ञनि का अपभ्रंश शब्द अग्नि है। यज्ञ + निष्पन्न = यज्ञनि= अग्नि। यानि यज्ञ से निष्पन्न होनेवाली, को अग्नि कहते हैं। और अग्नि बुझने के बाद, अपना निशान छोड़ जाती है। आग + निशान = अग्नि।

217. अनु + भव = अनु -

जब कोई किसी को छोटा दिखाना चाहता है, तब वह उसको 'अनुभव' करने को कहता है। अनु + भव = अनु। अनु = छोटा। भव = हो जाओ। तब जो अनुभव करने लगता है, और छोटा होता जाता है।

218. Anti + इक = Antique –

Anti लोगों की इक-इक वस्तु का संकलन, Antique कहलाता है। Anti + इक = Antique. व्यक्ति अपने Anti को जीतने के बाद, अपने Anti की वस्तुओं को इकट्ठा कर लेता है। और उन इकट्ठा की गई वस्तुओं को, एक-एक कर सजाकर रखता है। फिर लोगों को दिखाता है कि, 'देखो ! यह मेरे उस Anti का है, और यह मैंने उस Anti से जीता है'। इस तरह से व्यक्ति अपने Antique का, प्रदर्शन करता है।

219. अ + हद = Ahead -

हद के पार जाने को Ahead कहते हैं। अ + हद = Ahead. जब व्यक्ति अपनी हद पर खड़ा होता है, तब व्यक्ति रुक जाता है, कि हद के आगे जाने पर खतरा है। किन्तु जब व्यक्ति का बड़ा कहता है, 'Go Ahead' तब व्यक्ति अपने Head कि सुनता नहीं है। और हद को पार कर जाता है। यानि व्यक्ति अपने Head (दिमाग) की, सुनता नहीं है। और दूसरे की बात को सुनकर हद से, पार चला जाता है। इसलिए जब कोई व्यक्ति यह कहता है कि, 'हद से पार जाने पर ऐसा-ऐसा होगा'। तब Go Ahead कहने वाला कहता है, 'कि जो कहा गया है, उसको करो, अपना दिमाग मत लगाओ'। इसे ही Ahead कहा जाता है। और अपने दिमाग का इस्तेमाल किए बिना, हद को पार कर जाता है। हद को पार करते ही, हद के पार के लोग, उसके सिर को काट देते हैं। इस तरह से वह व्यक्ति, बिना सिर का हो जाता है। इसे ही Ahead कहते हैं।

220. आदि + तय + वार = आदित्यवार -

आदि में तय किया गया वार। आदि + तय + वार = आदित्यवार। वार = दिन। किस वार को आदि कहा जाए ? उसका निर्णय आदित्यवार से किया गया है। आरंभ + का दिन = आदि। यानि सात दिनों में से प्रारंभ करने का, पहला दिन कौन-सा होगा ? इसका निर्धारण जिस दिन से होता है, उसे आदित्यवार कहते हैं। आदि में सूर्य आया है। क्योंकि प्रत्येक कल्प का एक सूर्य होता है। प्रत्येक कल्प के प्रारंभ में सूर्य आता है, इसलिए आदि में जो तय है, उसे ही आदित्य कहते हैं। इसलिए सूर्य का एक नाम आदित्य है। सूर्य को Sun कहा गया है। इसलिए इसको संकल्प कहा गया है। Sun + कल्प = संकल्प। एक कल्प की आयु, एक Sun तक रहती है। यानि जब-तक एक सूर्य रहता है, तब उसको एक कल्प कहते हैं।

221. अन्न + एक = अनेक –

अन्न सबको एक करता है। अन्न + एक = अनेक। जब अन्न ग्रहण करने का समय आता है, तब सब एक स्थान पर एकत्रित हो जाते हैं। और अन्न को खाने के लिए एक हो जाते हैं।

222. अभि + मन + New = अभिमन्यु -

यानि नये मन वाला। जो अभी संसार के चक्रों को नहीं जानता है, वह नये मन वाला ही, संसार के चक्रव्यूह में फंस तो जाता है, किन्तु संसार के चक्रव्यूह से निकल नहीं पाता है। इसलिए कोई भी विद्या पूरी सीखिए। उस विद्या को जो सिखाता है, उस सिखानेवाले से पूरी की पूरी विद्या सीखिए। क्योंकि आधी-अधूरी सीखी गई विद्या, कभी-भी सफलता प्रदान नहीं करती है, और हानिकारक प्रदान करती है। इसलिए अपने नये मन में, विधिपूर्वक विद्या को ग्रहण कीजिए। और उस विद्या का सदुपयोग करके, सफलता को प्राप्त कीजिए।

223. आ + Crows = आक्रोश -

आते हैं जब Crows तब उसे कहते हैं, आक्रोश। आ + Crows = आक्रोश। यानि बहुत सारे कऊए गुस्से में एक स्थान पर इकट्ठे होते हैं और जोर-जोर से काँव-काँव करते हैं, उसे आक्रोश कहते हैं।

224. असर + Fee = अशरफ़ी -

आदमी बिना सिर के ना हो, इसके लिए आदमी Fee देता था, जिसे अशरफ़ी कहते थे। असर + Fee

= अशरफ़ी। असर = बिना सिर के। शासक लोग पहले के समय में, हर एक आदमी के सिर पर, Tax लगाते थे कि, "प्रत्येक आदमी को अगर, बिना सिर के नहीं होना है, तो प्रत्येक आदमी को, अपने सिर को बचाने के लिए, सोने के एक सिक्के की Fee देनी पड़ेगी" इसलिए जो सोने का एक सिक्का, आदमी अपने सिर को, बचाने के लिए Tax देता था, उस सोने के सिक्के को "अशरफ़ी", कहा जाने लगा। और जो आदमी अशरफ़ी नहीं दे पाता था, तो शासक उस आदमी का सिर, कटवा कर मंगवा लेता था। इसलिए लोग अपने सिर की कीमत अदा कर देते थे और ज़िन्दा रहते थे। इसलिए लोग अशरफ़ी देते समय, अपना सिर झुकाकर, अशरफ़ी को डाल देते थे और, इस तरह अपना सिर बचा लेते थे। हां यह अशरफ़ी एक तोला की होती थी, और एक तोला में बारह ग्राम होते थे। एक महिना का एक ग्राम के हिसाब से, बारह महीने का बारह तोला सोना Tax होता था। अशरफ़ी केवल आदमी के, सिर को बचाने का Tax होती थी, और बारह ग्राम स्वर्ण की होती थी। जिसे बारह आना कहते थे। यानि एक ग्राम का एक आना होता था। बाकी वस्तुओं की खरीद-फरोख्त के लिए, सोलह ग्राम के स्वर्ण की, सोलह आने की स्वर्ण-मुद्रा होती थी। यानि अशरफ़ी से बाजार की वस्तुओं को, खरीद-फरोख्त नहीं कर सकते थे। किन्तु कालांतर में अशरफ़ी भी, वस्तुओं के खरीद-फरोख्त का माध्यम बन गई। क्योंकि अशरफ़ी पर किसी राजा की, मोहर नहीं होती थी, इसलिए अशरफ़ी सभी जगह स्वीकार्य थी। बाद में जब शासकों ने अपने नाम को, अशरफ़ी में ढाल कर बनाया, तो वह अशरफ़ी भी सिक्का कहलाई। और यह सिक्का उसी शासक के, राज्य में चलता था, जिस शासक का राज्य होता था। अशरफ़ी को बसूलना, बढ़ती जनसंख्या को रोकने का उपाय था। क्योंकि कुनबे में जितने लोग होंगे, उतनी अशरफ़ी देनी होती थी। और अशरफ़ी को देने से, जनसंख्या की गिनती भी हो जाती थी। यानि अशरफ़ी के Tax से, जनसंख्या नियंत्रण में रहती थी। इसलिए पहले समय में, जनसंख्या कम होती थी। और लोग अपने आपको संयम में रखते थे, यही संयमित लोग तंदुरुस्त रहते थे।

B

1. भय + रव = भैरव -
भय से रक्षा करनेवाला। काल के भय से रक्षा करनेवाले को काल भैरव कहते हैं। काल यानि मृत्यु। इन्हीं काल भैरव ने ध्यान की 112 विधियों के महान ग्रन्थ "विज्ञान भैरव तन्त्र" की रचना की है। इन्हीं ध्यान की विधियों से ही आजकल की सारी ध्यान की विधियाँ निकली हैं। ध्यान करने से काल का भय दूर हो जाता है, मनुष्य काल की सीमा से परे हो जाता है, इसलिए 112 ध्यान की विधियों में से कोई एक विधि का अभ्यास करो और काल के भय पर विजय पाओ।

2. बार + बे + क्यु = Barbeque -
किसी ने पूछा यह क्यु रखा है, दूसरे ने कहा बार बे (जलाने) के लिए रखा है। मरे हुए आदमी को जलाने के लिए जिस पर रखा जाता था, अंग्रेजों ने समझा कि यही Barbeque है। इसीलिए वह मरे हुए जानवर को Barbeque में भून कर खाते हैं।

3. Bar -
Bar में आदमी खुद को बारने (जलाने) जाता है। बार में बैठकर शराब पीता है, शराब आदमी को भीतर से जलाती है।

4. Bar + ऊद = बारूद -
Bar में जो Wine मिलती है, वह ऊद (पेट) में जाकर बारूद का काम करती है। जिस तरह से बारूद बाहर विस्फोट करती है और आग लगा देती है। उसी तरह से शराब पेट में जाकर विस्फोट करती है, और आग लगा देती है। शराब व्यक्ति को अन्दर से जब जलाना शुरू करती है। व्यक्ति में ईर्ष्या उत्पन्न होती है वह दूसरों से जलने लग जाता है। यही ईर्ष्या की जलन उसे अन्दर ही अन्दर जला देती है।

5. Budget - बजट – बचत -
Budget यानि बजट, हिन्दी के शब्द बचत का अपभ्रंश है। बचत का मतलब तो सभी जानते हैं कि आय को खर्च इस तरह से किया जाए कि उसमें से कुछ बच जाए। जिसे बचत कहा जाता है। क्योंकि यही छोटी-छोटी बचत, एक दिन बड़ी बचत बन जाती है। यही Budget - बजट या बचत है।

6. Bell -
बैल के गले में घंटी बंधी होती है, जिसके बजने पर पता चल जाता है कि बैल आ गया। इसलिए अंग्रेजों ने बैल को ही Bell मान लिया।

7. Belly -
पेट को Belly कहते हैं, क्योंकि छोटे बच्चों के पेट पर घंटी (Bell) बंधी होती है।

8. Battle = बाँटले -
बाँटले ही Battle है। जब लोगों में यह तय होता है कि आजा बाँटले, तो उसका मतलब अंग्रेजों ने Battle लगाया। क्योंकि बाँटना बिना जंग के हो नहीं सकता।

9. बाहु + बली = बाहुबली -

जिसके बाहु (बाजू) में बल होता है, उसे ही बली देने का कार्य दिया जाता है, वही बाहुबली होता है ।

10. Wish + तर = बिस्तर -

Wish से जो तर है, वही तो बिस्तर है। बिस्तर पर लेटते ही लोग Wish के सपनों में खो जाते हैं।

11. Bandage - बंदेज -

तंत्र की प्रक्रिया में किसी बस्तु को न लेने की बात की जाती है, उसे बंदेज कहते हैं।

12. Back + Wash = बकवास -

अंग्रेज रोज सोचते कि Indian लोग लोटा लेकर कहाँ और क्या करने जाते हैं ? एक दिन एक अंग्रेज अफसर ने अपने Junior को लोटे वाले के पीछे भेज दिया। Junior ने Reporting की "He is doing Back Wash". तो उस दिन के बाद Back Wash ही बकवास बन गया, क्योंकि अंग्रेज Back Wash नहीं करते हैं और Indian की स्वच्छता को बकवास कहते है।

13. बेरी + काँटे = Barricade -

बेर के कांटे - बैरी के लिए, बेरी के काँटों से बेरीकेटिंग की जाती है। दुश्मन के रास्ते में कांटे बिछाये जाते हैं।

14. बेचैन + लोग = Blog -

बैचेन लोगों की बेलगाम बातें बेलॉग बातें ही "Blog" होती हैं। "B" Category के लोगों की बातें जो A Category में नहीं आ सके।

15. वक्ष + शीश = बक्षीश -

स्त्रियाँ अपने वक्ष दिखाकर अपना शीश बचा लेती हैं। कहीं पर जब भी कोई दूसरी सत्ता काबिज होती है, तो पहली सत्ता वालों की स्त्रियाँ, अपने वक्ष को आक्रमणकारियों को दिखाकर, अपने परिवार के लोगों का, शीश बचा लेती हैं। यानि वह अपना समर्पण कर देती हैं और अपने परिवार को मरने से बचा लेती हैं, यही बक्षीश कहलाती है।

16. Book = काबू -

काबू करने के लिए Book है। किसी को काबू करना है, तो यह जान लो कि वह कौन-सी Book को मानता है, बस उसी Book के अनुसार उसे काबू कर लो। इसीलिए अनपढ़ लोग किसी के काबू में नहीं आते हैं, किंतु जो किसी Book को मानते हैं, वो जल्दी से काबू में आ-जाते हैं।

17. बिन बुलाया मेहमान –

बीन बजती है बारात में, नागिन Dance होता है, तो बीन की आवाज से जो चले आते हैं वह हैं बिन बुलाये मेहमान। बीन ही तो उनके लिए निमंत्रण है। यानि सर्प चले आते हैं।

18. भोज + अन्न = भोजन –

राजा भोज के द्वारा दिया जानेवाला अन्न। राजा भोज हर किसी को अपना अन्न आमन्त्रण कर खिलाते थे, इसी से अन्न का नाम भोजन हो गया।

19. बँट + War = बँटवारा -

बाँटने के लिए जो War होती है, उसे बँटवारा कहते हैं।

20. बानी + सुर = बाँसुरी - बान (वाणी) को जो सुर दे, वह बाँसुरी है।

21. भर + Rum = भ्रम – भर जाती है जब Rum भीतर, तब भ्रम हो जाता है।

22. बुनकर + देओल = बुन्देलखण्ड -

बुनकरों एवं देऔल (चने की दाल) खानेवाले लोगों का खण्ड। बुन्देलखण्ड में बुनकर एवं चने की दाल खाने वाले लोग रहते हैं।

23. भगवान + अटक = भटक -

भगवान् में अटकना। भगवान् में जो अटक जाता है, वही भटक जाता है।

24. भगवान + इछुक = भिक्षुक -

भगवान् को पाने का जो इक्षुक होता है वह भिक्षुक होता है।

25. भू + ना = भूना –

जिसको भून दिया जाता है, वह भू की नहीं रहती है, यानि जिन बीजों को भून दिया जाता है, फिर वह भू के लायक नहीं रहते हैं, यानि उनसे फसल नहीं उग सकती है।

26. भूत-भविष्य -

भू = भूमि यानि मिट्टी, त = तय। सबका भूमि यानि मिट्टी बनना तय है। कोई भी हो अंत में सभी को देर-सबेर मिट्टी ही बनना है। यही मिट्टी बनना ही भूत है। उसी भूत यानि मिट्टी से फिर भविष्य बनेगा। यानि उसी मिट्टी से फिर नया जीव बनेगा। यही भूत-भविष्य है। भविष्य = भव + ईष्य। भव = हो, ईष्य = ईश्वर। जो ईश्वर के अनुसार हो, यही भविष्य है।

27. बंध + धन = बंधन -

बंधन केवल धन के होते हैं। धन से ही आदमी बंधा होता है। धन के लिए ही वह ब अंध यानी अँधा होता है। देख लो सारी दुनिया धन के पीछे अंधी है।

28. बाल + ही + बाल = बालीबाल -

क्रिकेट के खेल का प्रारंभ सैनिकों की आरामगाह से हुआ। जब युद्ध समाप्त होता था तो एक पक्ष के सैनिक दूसरे पक्ष के सैनिकों की कटी हुई लाशों के सिरों के बाल पकड़कर एक-दुसरे के पास फेंकते थे, उसी को लोग बालीबाल कहते थे।

29. Butt = Bat -

उसी सिर को जब यह सैनिक अपने बदूक के बट से मारते थे, तो उस बट का नाम आगे चल कर बैट पड़ गया।

30. Ball = बाल -

और जिस सिर के बाल पकड़ कर सैनिक लोग खेलते थे, वह Ball नाम से प्रसिद्ध हो गयी।

31. बुनी + याद = बुनियाद –

बुनी हुई यादें ही बुनियाद है। व्यक्ति यादों को बुनकर बुनियाद बनाता है।

32. Bail = बेल -

पुराने समय में महाजन का कर्जा जब किसान नहीं चुका पाता था। तो महाजन अपने साथ, उस

किसान के बैल ले जाता था। यानि जमानत के तौर पर बैल ले जाता था। यही बैल ही तो Bail.

33. बल + अंश = Balance – बल का अंश ही Balance है।

34. बाँस + Kit = Basket - बाँस की Kit ही Basket है।

35. भ्रम + मित = भ्रमित - मित (मीठा) बोलने वाले ही भ्रमित करते हैं।

36. बाल + Egg = बालिग -

जिस लड़के के बाल उग आए हैं, जिस लड़की में Egg आ गए हैं, दोनों बालिग हैं।

37. भय + अंक + कर = भयंकर –

भय दिखाया जाता है, अंक दिखा कर के कर (Tax) के यानि कर ही भयंकर होता है।

38. Body + ILL = Bill –

Body जब ILL हो जाती है, तो उसको ठीक करने के लिए, उसका तो Bill बनता ही है। यह बिल लम्बा ही होता जाता है, जैसे चूहे का बिल।

39. Big + अड़ = बिगड़ –

Big ही अड़ जाता है। जब भी जीवन में कोई अड़ता है, तो समझो वह Big यानि बड़ा है। वह अड़ता इसलिए है, क्योंकि वह बिगड़ गया है, यानि उसे सही तरीके से गढ़ा नहीं गया है।

40. Beauty + फूल = Beautiful –

फूल और फूल ही Beautiful बनाते हैं। फूलों से जब किसी का श्रृंगार कर दिया जाता है, तो वह सुंदर यानि Beautiful हो जाता है। बूटियों के Paste एवं Powder बनाकर, किसी के चेहरे पर, लगा दिया जाता है, तो वह Beautiful हो जाता है।

41. बेच + शर्म = बेशर्म –

बेच देता है जो अपनी शर्म वह बेशर्म हो जाता है। आदमी दो ही परिस्थिति में अपनी शर्म बेचता है, एक Wish और दूसरी Rum. यानि जब किसी को कोई ईच्छा होती है, और वह पूरी नहीं होती है तो वह अपनी शर्म को बेच कर दूसरे के यहाँ काम करने को तैयार हो जाता है और पैसा कमाता है। और दूसरी जब किसी के शरीर में Rum (शराब) जाती है, तो वह अपने आप बेशर्म हो जाता है, और जब उसे पीने को Rum नहीं मिलती है, तो वह शर्म के साथ-साथ सब कुछ बेच देता है।

42. भव्यता + वन = भवन –

वन में बनाया गया भव्य घर ही भवन होता है, सभी सुविधाओं से सम्पन्न होता है, उसे भवन कहते हैं।

43. बस + सूली = बसूली –

जब कोई बस में हो जाता है, तो फिर उससे बसूली करना आसान होता है और जो बस में नहीं होता है, वह सूली पर चढ़ा दिया जाता है।

44. बूटी + टहनी = Botany –

जड़ी-बूटी और टहनी का जो विज्ञान होता है, वह Botany कहलाता है।

45. Bank –

पहले जमाने में नदियों और समुद्रों से जहाज के द्वारा यात्रा कि जाती थी, जब जहाज किनारे (Bank)

पर पहुँचता था, तो वहाँ पर एक जगह होती थी, जहाँ पर जहाज वाले लोग अपने पैसे जमा कर सकते थे और और बाद में आकर ले सकते थे, वही Bank फिर Bank हो गया।

46. बाग + डोर = बागडोर –

बाग में जानवर को ले जाते समय उसकी बागडोर पकड़ कर रखनी पड़ती है, नहीं तो वह बगीचे को नष्ट कर देता है।

47. भ्रम + मर = भ्रमर – भ्रम में मरने वाले ही भ्रमर होते हैं, जैसे भँवरा भ्रम में मर जाता है।

48. बर + एक = Break – बर (जलाकर) सबको एक कर देना ही, Break है।

49. Bad + दौ + लत = बदौलत –

दो प्रकार की Bad लत ही, बदौलत होती है। इसीलिए इससे दो लत लगती हैं एक जुआ की और दूसरी वैश्या के पास जाने की, यही है Bad दौलत।

50. बुन – ऊन को ही बुना जाता है।

51. भाँप –

भाप से ही तो भाँप लिया जाता है। यानि जिसे Ora कहते हैं, वही तो भाप है। वह सबके पास है, उस भाप से पता चल जाता है, कि यह कैसा इन्सान है ?

52. बन्दर + गाह = बन्दरगाह –

बन्दर के रहने का स्थान। जब रामेश्वरम् में सभी बन्दर एकत्रित हुए, तो रावण ने कहा कि यह तो बन्दरों की गाह है।

53. Barrier – बैरी लोग ही Barrier लगाते हैं।

54. भाव + ना = भावना – भाव का ना होना ही भावना है।

55. Blue Print –

नील की खेती से कार्बन बनाया जाता है, तो तब कोई कुछ काम करता है, तो उसके किये काम को चुराने के लिए, नील से बना कार्बन नीचे रख दिया जाता था, जो नीचे छप जाता था, जिसका उपयोग दूसरा कर लेता था, जिससे दूसरे के कार्य को चुराकर अपना कार्य किया जाता था, इसीलिए कहते हैं, कि यह Blue Print है।

56. भगवान + आड़ = भाड़ –

जो भगवान की आड़ में जाते हैं, वह भाड़ में चले जाते हैं।

57. Base = बासी -

किसी के Base Camp का पता उसके बासी अन्न से चलता है, क्योंकि वह Base Camp में बासी अन्न छोड़ जाता है, बस यही Base है।

58. बल + आता + कार्य = बलात्कार –

बल के आने पर जो कार्य किया जाता है, उसे बालत्कार कहते हैं यानि जो भी कार्य बलपूर्वक किया जाता है, उसे बलात्कार कहते हैं।

59. Bill = बिल –

पहले बिल नहीं दिये जाते थे, पहले बिल भरे जाते थे, चुहे से लोग बहुत परेशान रहते थे और उसका बिल भरते थे, किंतु फिर वह कहीं और से बिल बना लेता था। तो फिर उस बिल को भरते थे, तो थक-हार कर आदमी ने बिल्ली पाल ली, अब बिल्ली उन चूहों को पकड़ती और खा जाती, किंतु अब नई समस्या थी, बिल्ली के मारे दूध नहीं बचता था, तो आदमी ने कुत्ता पाल लिया और कुत्ते के कारण बिल्ली दूर रहती थी, किंतु कुत्ते के लिए मांस चाहिए, तो उसने मुर्गीपालन किया, कुत्ता मुर्गी के पीछे भागता रहता, तो आदमी मुर्गे को खाकर उसकी हड्डी कुत्ते के लिए डाल देता कुत्ता उसी में उलझा रहता। किंतु आदमी को सभी के लिए Bill अभी-भी भरना पड़ता है।

60. बल + Gum = बलगम –

आदमी का Gum (वीर्य) ही उसका बल है, जब वह बल बाहर निकल जाता है, तो उसे गम (दुःख) हो जाता है। तो फिर वह अपने बल की बातें दूसरे लोगों को बताता है, कि "मैंने यह किया, मैंने वह किया"। तो लोग उसकी बातें सुनकर उक्ता जाते हैं और उसे खाने को Bubble-Gum देते हैं। जिसे वह चबाता रहता है और अपने बल के जाने का गम, किसी को सुना नहीं पा पाता है।

61. बस्ता –

किसी को बस में करने के लिए बस्ता दिया जाता है। स्कूल जाने के लिए एक बस्ता दिया जाता है, उसमें किताबें होती, किताबें पढ़ने पर वह किताबों के बस में आ जाएगा, इस तरह वह बस में कर लिया जाएगा।

62. बैशाखी –

वय (शरीर) के बूढ़े होने पर लकड़ी (शाख) पकड़ कर चलते हैं, उसे बैशाखी कहते हैं।

63. बहाना –

जब किसी को पेशाब आती है, तो वह कोई-न-कोई बहाना करता है और पेशाब करने जाता है।

64. बला + Lack = Black –

जब किसी का बल Lack किया जाता है, उसे किसी बला के हवाले कर दिया जाता है, वह बला उसके बल को कम कर देती है और उसकी उसकी जिन्दगी को Black (काला) कर देती है।

65. भाँगड़ा – भाँग पीकर ही, भाँगड़ा किया जाता है।

66. Bill + कुल = बिल्कुल –

Bill देखकर ही किसी के कुल का पता किया जाता है।

67. भेंट – भय से ही आदमी किसी को भेंट देता है।

68. Billiards – बिल में गेंद को डालने का खेल ही Billiards.

69. बिजली – बीज जिसका ले लिया जाए उसे बिजली कहते हैं।

70. बंगला + Low = Bungalow –

बंगाल में Low Category के लोग जहाँ रहते हैं, उसे ही Bungalow कहते हैं। अंग्रेजों ने देखा कि बंगाल में लोग इस तरह रहते हैं, तो उन्होंने भी इसी तरह मकान बनाए और उनका नाम Bungalow रख दिया।

71. बदला – औरतें जब बदला लेती हैं, तो वह सब बदल देती हैं।

72. बेच + चैन = बेचैन –

बेचनेवाला हमेशा बेचैन रहता है, कि यह जल्दी से जल्दी बिक जाए।

73. Bone Marrow –

Bone Marrow रीड की हड्डी यानि कि, मैरु पर्वत से लिया गया है, जो कि मज्जा कहलाता है।

74. Bull + आवा = बुलावा –

Bull को भेज कर ही बुलावा भेजा जाता है। किसी को लाने के लिए पहले बैलों की बैलगाड़ी भेजी जाती थी, जिसे बुलावा कहते हैं, तो कहा जाता था Bull आवा है।

75. बेहतर + ऋण = बेहतरीन – ऋण ही बेहतर होता है।

76. भाव + ना = भावना – जिसे आप भाव नहीं देते हैं, उसे भावना देते हैं।

77. भर + अष्ट + अचार = भ्रष्टाचार –

पहले जमाने में चार लोग किसी की मरी हुई देह को घर लाते थे, तो उसे जलाते-दफनाते नहीं थे। उस मरी हुई देह में, आठ प्रकार के मसाले भरे जाते थे, जिससे वह अचार बन जाता था। अगर किसी को भ्रष्ट करना हो तो, उसे वह अचार खिलाया जाता था। बस तभी से अचार और भ्रष्टाचार शुरु हो गया। जब आदमी तपस्या में बैठता है, तो अष्ट चक्रों का भेदन करता है और अगर उसे उन अष्ट चक्रों से पहले गिरा दें, तो उसे भ्रष्ट करना कहते हैं। किसी को भ्रष्ट, अचार खिलाकर ही किया जाता है, क्योंकि अचार खाने से वह अपनी तपस्या से नीचे गिर जाता है और बाहर के स्वाद में फंस जाता है। इसीलिए तपस्या करनेवाले संत-महात्मा अचार नहीं खाते हैं।

78. Bureau – जहाँ हर चीज का ब्योरा रखा जाता है, वह Bureau है।

79. भान + डर = भान्ड -

भान जाते हैं जो डर को वह भान्ड हो जाते हैं। यानि जो डर को पहचान जाते हैं।

80. भर + रत = भरत – भरने में रत रहता है, उसे भरत कहते हैं।

81. भार्या –

जिसका भार अपने सिर पर हो उसे भार्या कहते हैं, पत्नी का भार सभी के सिर पर होता है।

82. भिन्न –

जब व्यक्ति किसी से भिन्न होता है, तो वह भिन्न-भिनाता रहता है, कि वह सबसे भिन्न है।

83. वाणी + झरना = बांझ –

जैसे-जैसे स्त्री की वाणी झरने लगती है, वह बांझ होने लगती यानि जो स्त्री ज्यादा बोलती है, वह स्त्री बांझ होती है।

84. बाण + धसना = बाँध –

जब भीष्म के गंगा नदी में बाँणों को धंसाकर, पहला बाँध बनाया था। तभी से नदी के पानी को रोककर, कोई इस प्रकार का कार्य करता है, उसे बाँध कहते हैं।

85. बहू –

वह परदादार थी, पास से निकली तो, "पूछा कौन की बहू है" ? तो बहू ही Who हो गया और "कौन" शब्द के स्थान पर, अंग्रेजों ने Who का प्रयोग किया।

86. भू + ख = भूख –

भू जिसको खाती है, वह भूख है। भू यानि धरती सबको खा जाती है, उसकी भूख कभी खतम नहीं होती है।

87. भरतन = भटन = भटा -

भरकर जिसके तन को, उसे भटन यानी भटा कहते हैं। भरतन = भटन = भटा। जिसको भूनकर खाते हैं, उसको भुर्तन यानी भुर्ता, या भरता कहते हैं। भुर्तन = भुर्ता = भरता। भटा से ही भट्टा शब्द बना। जिस भट्टे में ईंटे पकाई जाती हैं। भट्टा से भुट्टा शब्द बना, जिसमें मकाई के दानों को, भूना जाता है।

88. ब + हस = बहस – बंद हो जाता है जहाँ हँसना वह होती है बहस।

89. बिल + आन्त = बिलान्त – बिल और आन्त कभी न छोटे होते हैं।

90. बीमा + मार = बीमार –

जो लोग बीमार होकर मरते हैं, उनका बीमा कर के उन्हें मार दिया जाता है। वह बीमा की मार मरते हैं। जो बीमा करवाते हैं, वह अक्सर बीमार रहते हैं, क्योंकि उनका ईलाज बीमा के हो जाता है।

Beem + मार = बीमार -

व्यक्ति दो ही तरह से "बीमार" होता है। पहला व्यक्ति Beem की मार से, बीमार होता है। Beem + मार = बीमार। Beem = डर, भय। डर या भय के कारण जो, व्यक्ति बीमार होता है। दूसरा Beam की मार से "बीमार" होता है। Beam = Ray. जैसे कि ठंड लग जाने पर बोलते हैं कि, "इसे तो हवा लग गई है"। या "यह तो Sunstroke से बीमार हो गया है।

91. बाग –

बागी लोगों को बगीचे के काम में लगाया जाता है। जहाँ पर वह Bug तैयार कर के रखते हैं, और राजा के यहाँ भेजते हैं। बागी लोगों के पास हमेशा अपना एक Bag होता है, जिसमें वह अपना सारा सामान रखते हैं, क्योंकि उनके रहने का कोई एक स्थान होता नहीं है।

92. Beach = बीच – समुद्र और धरती के बीच का स्थान Beach है।

93. Boot = बूट –

खेतों में कटाई के बाद, पोधों के जो अंश, जमीन में गड़े रह जाते हैं, वह बूट कहलाते हैं। इसी बूट से बचने के लिए अंग्रेजों ने पैरों में पहनने वाले Boot (मोटे चमड़े के जूते) बनाए थे।

94. बर + गलाया = बरगलाया –

बर यानि जलाकर उसे गलाना ही बरगलाया होता है, फिर उसे किसी चीज में भी ढाल लो।

95. Bad + शाह = बादशाह –

जो बुरे (Bad) शाह होते हैं, वही तो बादशाह होते हैं।

96. Bill + कुल = बिल्कुल - Bill देखकर ही किसी के कुल पता किया जाता है।

97. बाल + Luck = बालक -

बालपन में ही, बालक की किस्मत (जन्मकुंडली) देखी जाती है कि, "इस बालक का Luck क्या होगा" ?

98. बिजली + गुल = बिगुल -

युद्ध के समय जब सायरन बजता था, और तब बिजली गुल हो जाती थी। इसलिए उस समय बजने वाले सायरन का नाम बिगुल रखा गया।

99. भू + गत = भुगत -

भू में जाना ही सबकी गत है। जमीन में मिल जाना ही सबकी गति है।

100. भूमि + लय = भूल -

भूमि के साथ लय हो जाना। भूमि में पुनः मिल जाना। इन्सान यही तो भूल जाता है, कि उसे भूमि में लय हो जाना है।

101. बीच + आरा = बेचारा - बिचारा -

जो आरे के बीच में आ जाए वह बेचारा ही होता है। जो दो लोगों के बीच में आ जाए, वह बेचारा होता है। यानि कभी किसी के बीच में से नहीं जाना चाहिए। या जिसे आरा बीच से चीर देता है, वह बेचारा होता है। या जहाँ आरा चल रहा हो वहाँ पर बीच में से निकलना नहीं चाहिए।

102. Budget = बचत -

जो बचत कराये, उसे ही Budget कहते हैं। Budget = बचत। इसीलिए, कार्य पूर्ण होने के पश्चात्, पूछा जाता है, हमारे पास कितना बचा है ? या, कार्य प्रारंभ करने से पहले, पूछा जाता है कि, "और तो सब ठीक है, पर ये बताओ ! हमारे पास बचेगा कितना ?" इसीलिए, भारत देश में, बचाने का बड़ा महत्त्व है। प्रत्येक व्यक्ति यही, चाहता है कि, इसमें से कुछ न कुछ, बचा लिए जाए। इसी बचत की प्रक्रिया को, अपभ्रंश के रूप में, Budget कहा गया है। भारत देश में, यह Budget हमेशा, बाजट पर ही बनाया जाता था। यानी, खाता-बही की पुस्तक, हमेशा से ही, दिवाली के दिन, बाजट पर रखकर, पूजी जाती थी। खाता-बही को, बाजट पर रखने से, ही बाजट का अपभ्रंश, Budget हो गया। बाजट = Budget. इसी बाजट को, चौकी भी कहते हैं। इस चौकी की, रक्षा करनेवाले को, चौकीदार कहते हैं। क्योंकि चौकी पर, खाता-बही रखी है, उस खाता-बही में, आय से अधिक, व्यय तो नहीं हो रहा है, यह देखना ही, चौकीदार का काम होता है, साथ ही चौकीदार का कार्य, यह भी होता था कि, खाता-बही में आया-व्यय का लेखा जो दर्ज किया जा रहा है, वह ठीक से दर्ज किया, जा रहा है कि नहीं। जब कोई, फिजूलखर्ची करता है, तब उससे कहा जाता है कि, "तू फिजूलखर्ची से अभी तक बाज नहीं आया"। इसीलिए कहते हैं कि, "कुछ बचाकर भी रखना, यू हीं सब चट मत कर जाना।" बच + चट = बचत। बच = बचाकर। Budget के अनुसार व्यक्ति अपना Budget बनाता है कि, वह बचत कर सके। परन्तु सरकार उसे हर तरफ से घेरकर ऐसा Budget देती है कि, वह बचत करने की सोच ही नहीं सकता है। यहाँ सरकार अपनी चालाकी दिखाती है, वहाँ व्यक्ति अपनी चालाकी दिखाता है। न सरकार व्यक्ति को राष्ट्र का आदमी समझती है। न व्यक्ति सरकार को राष्ट्र समझता है। सरकार Tax इकट्ठा करना चाहती है, किंतु व्यक्ति Tax बचाना चाहता है। न सरकार को

राष्ट्र के व्यक्ति की पड़ी है और न व्यक्ति को राष्ट्र की सरकार की पड़ी है।

103. ब्रह्म + मण = ब्राह्मण -

जिसका मन ब्रह्म में लग गया। वह ब्राह्मण है। ब्रह्म से उसके मन का संपर्क हो गया। वह ब्रह्म से उर्जा प्राप्त करता है। उसकी शक्ति ब्रह्म से आती है। वह ब्रह्म के संपर्क में रहता है।

104. Bar + रात = बारात - रात में जो Bar ढूंढ़े वह बारात और बाराती।

105. वाक् + इल्म = वकील -

जो बोलकर अपने इल्म को कहता है, वह वकील है।

106. भेद-भाव =

किसी के भेद जानने के लिए, दूसरे को भाव दो - जैसे रावण के भेद जानने के लिए, राम ने विभीषण को भाव दिया। रावण के जिंदा रहते हुए, राम ने विभीषण का राज्याभिषेक कर दिया। तो विभीषण ने राम को रावण का भेद बता दिया

107. भूला-भटका -

जो भूल जाता है, वही भटक जाता है। इसीलिए याद रखना बहुत जरुरी है। याद वही रखता है जो होश में हैं। जो नशे में है, वही भूल जाता है। इसलिए भूला-भटका कहलाता है। आदमी यही भूल जाता है कि, उसे भूमि के साथ लय करना है। आदमी भगवान के साथ अटक जाता है। भूमि में मिलना है, यही भूल जाता है। जो भगवान के साथ अटक जाता है वही आदमी भटक जाता है। क्योंकि हर आदमी यही प्रमाण देता है कि, वह जमीन से जुड़ा हुआ है। जमीन से जुड़ा है, किंतु बात आसमान की करता है। आसमान यानि परमात्मा। परन्तु वह यह भूल जाता है, आखिर में उसे भूमि में ही मिल जाना है। फिर वह शरीर आत्मा की बात करता है। यानि भेद की बात करता। शरीर और आत्मा को अलग समझता है। परन्तु किसी से भेदभाव पूर्ण व्यवहार करने के लिए मना करता है। वह शरीर के भेद जानना चाहता है और परमात्मा के लिए कहता है कि, "परमात्मा तो भाव का भूखा है"। बस यही भूल है और यहीं वह भटक जाता है और भूला-भटका कहलाता है।

108. भूमि + खाना = भूख -

आदमी भूमि को खाता है। भूमि आदमी को खाती है। आदमी भूमि पर उगे साग-सब्जी खाता है और जब आदमी मर जाता है, तो भूमि आदमी को खा जाती है। अब पता नहीं हम भूमि को खाते हैं या भूमि हमें खाती है। परन्तु भूमि की भूख हमसे ज्यादा है, न जाने कितनों को कब से खाती आ रही है।

109. भगवा + न = भगवान -

जो भगवा नहीं पहनता वही भगवान है। भग कहते हैं योनि को। वान कहते हैं उस योनि के मालिक को। भग स्त्री के पास होती है। उस स्त्री का पति उसका मालिक होता है। भगवा वस्त्र जो पहनता है। उनकी कोई स्त्री नहीं होती है। वह किसी भग के वान नहीं होते हैं। क्योंकि भगवान सृष्टिकर्ता है और जिसके पास स्त्री है, वही उस स्त्री से सृष्टि का निर्माण करता है। भगवाधारी के पास स्त्री नहीं है। इसलिए वह सृष्टि का निर्माण नहीं कर सकता है। इसलिए भगवा पहननेवाला भगवान नहीं है।

110. भू + लक्कड़ = भुलक्कड़ -

आदमी यह भूल ही जाता है कि, उसे एक दिन, भू या लक्कड़ में जाना है। भू + लक्कड़ = भुलक्कड़। भू यानी जमीन में गड़ना है। लक्कड़ यानी अग्नि में दाह होना है।

111. बास - Wash करने से बास नहीं आती है।

112. वीरता + आनी = बिरयानी -

बीर लोग ही बिरयानी खाते हैं। बिरयानी योद्धाओं का भोजन है, युद्ध के समय सारी वस्तुएँ एक ही पात्र में रखकर, एक ही चूल्हे पर डालकर पकाई जाती थीं। फिर सारे सैनिकों में बाँट दी जाती थी। इसीलिए इसे तो वीरों का भोजन कहते हैं, क्योंकि बिरयानी खाने से वीरता आती है।

113. भूत-जिन्न-God -

भू + तय = भूत

जी + अन्न = जिन्न

भू यानि जमीन में मिलना सभी का तय है। यानि सभी को एक दिन भूमि में मिल जाना है। यही भूत है। जीते सभी अन्न से हैं। अन्न को खाने से सभी जीवित रहते हैं, इसलिए सभी जिन्न हैं। यह जमीन ही देवी है, क्योंकि यही अन्न देती है सभी को अपने में मिला भी लेती है। इसी जमीन की गोद में सभी सो जाते हैं। इसीलिए जमीन को God भी कहते। सुबह-सुबह उठकर सबसे पहले जमीन के गोड़ (पैर) छूकर प्रणाम करते हो, इसीलिए वह God है। फिर जिस-जिस के भी गोड़ (चरण) छूकर प्रणाम करते हो वह सब God हैं। इसीलिए गोड़ मोर्निंग बोला जाता है। जिसे Good Morning कर.दिया गया। क्योंकि सुबह-सुबह गोड़ छूकर आशीर्वाद लेते हो और सुबह-सुबह ही मोर बोलते हैं। इसलिए गोड़ मोर्निंग होता है।

114. War + डर = Border -

बॉर्डर यानि War के डर से तो बॉर्डर बनाया जाता है।

115. Bull + का = Bulk -

बल अधिक होने पर आप Bulk में वस्तुएं उठा सकते हैं, ढो सकते हैं। अधिक बल केवल Bull में होता है। जब अधिक मात्रा में वस्तुएं ले जानी हैं, तो गाड़ी में रखी जाती हैं और बैल से खींची जाती हैं, क्योंकि बैल ही Bull है, बैल में ही बल होता है, इसलिए वस्तुएं Bulk में ढोई जा सकती हैं।

116. बल + Key = बल्कि -

आपके पास बल होना चाहिए। या आपके पास Key होनी चाहिए। आप बल से दरवाजा तोड़ सकते हैं। आप Key से दरवाजा खोल सकते हैं।

117. Big + आड़ = बिगाड़ -

आदमी जब यह समझता है कि वह तो किसी Big की आड़ में है, तो कोई उसका क्या बिगाड़ लेगा ? बस यहीं से वह बिगड़ना शुरु हो जाता है। दूसरों से उलझना शुरु कर देता है। आदमी कहता है कि, "तुम मेरा क्या बिगाड़ लोगे, मेरी बड़े-बड़ो से पहचान है"। तभी आदमी इसी जुगाड़ में रहता है, कि किसी बड़े की आड़ मिल जाए तो अपना काम बन जाए।

118. बाग + डोर = बागडोर -

एक बाग था, उसके Door की डोर किसी के पास थी। वह डोर खींचता तो Door खुल जाता। बस यही बागडोर है। बाग के पौधे-फूल की रक्षा करनी है, तो बाग के Door की डोर, किसके हाथ में देनी है ? यह महत्वपूर्ण होता है। डोर तो Door से जुड़ी रहनी चाहिए। बाग के द्वार को ही Door कहते हैं। Do Or यानि दु ओर ही तो द्वार है। Bug जहाँ रहते हैं, उसे बाग कहते हैं। बाग में कीट-पतंगे ही तो रहते हैं, यही कीट-पतंगे तो Bugs कहलाते हैं। इसलिए जहाँ Bug हैं, वह बाग है, उस बाग में Door है, और Door में एक डोर लगी है, जिससे बाग का द्वार खुलता है, बंद होता है। बस यही बागडोर है।

119. Birthday -

आदमी जन्म लेता है तो Earth पर गिरता है। इसलिए उसे Birth कहते हैं। यानि Earth पर गिरने का दिन Birthday.

120. बेकार -

एक आदमी बेकार बैठा था। किसी ने पूँछ लिया "बेकार क्यों बैठे हो"? बैठे हुए आदमी ने कहा "म्हारे पासे बे कार छे, हुँ बेसीने विचारुं छुं, कई गाड़ीमां बेसवुं" ? यानि जब व्यक्ति के पास दो कार्य होते हैं और व्यक्ति यह सोचता है कि, "यह करुँ कि वह करुँ" ? तब लोग सोचते हैं कि, "वह बेकार बैठा है"। सोचने को लोग कार्य नहीं मानते हैं। किन्तु फिर भी लोग कहते हैं, "कोई भी कार्य सोच-समझकर करो" थोड़ी दूर पर एक दूसरा आदमी बेकार बैठा था ? उससे पूछा, "तुम क्यों बेकार बैठे हो" ? उस आदमी ने कहा, "मैं बेकरी चलाता हूँ, मेरा बेक करने का कार्य है, मैंने चीजों को ओवन में, बेक करने के लिए डाल दिया है, अब बैठकर उनके बेक होने का इंतजार कर रहा हूँ।" जब व्यक्ति एक कार्य को चुनकर उस कार्य को प्रक्रिया में डाल देता है, तो कार्य पूर्ण होने तक उस व्यक्ति को, इंतजार करना पड़ता है। तो लोगों को लगता है, यह आदमी तो बेकार बैठा है। इस संसार में दो कार्य हैं, एक कार्य किया जाता है, जीविका चलाने के लिए किया जाता है, और सभी लोग यह कार्य करते हैं। दूसरा कार्य परमात्मा की प्राप्ति के लिए किया जाता है। लेकिन परमात्मा की प्राप्ति का कार्य, कोई-कोई कार्य करता है। एक तो जीवोपार्जन के कार्य से, फुरसत नहीं मिलती, दूसरा परमात्मा की प्राप्ति के लिए, कौन-सा कार्य किया जाए, इसका पता नहीं होता है। जीविकोपार्जन के लिए कार्य करते हुए, परमात्मा की प्राप्ति का कार्य करना, सर्वोत्तम है। किन्तु परमात्मा की प्राप्ति के लिए कौन-सा कार्य है ? इसका स्पष्टीकरण कोई नहीं कर पाया है। अब परमात्मा की प्राप्ति के लिए, ध्यान में बैठना सबको बेकार लगता है। एक तो ध्यान में बैठने वाले को ही विश्वास नहीं होता कि ध्यान से परमात्मा मिलेगा। दूसरा, जो अन्य लोग उसे ध्यान में, बैठा हुए देखते हैं, तो कहते हैं कि, "क्यों बेकार बैठा है, ऐसे बैठने से कुछ नहीं मिलेगा, कुछ काम-धाम कर", तो व्यक्ति जिन्दगीभर काम करता, और फिर धाम भी कर लेता है, उसे लगता है, धाम को कर लेने से परमात्मा मिल गया। किन्तु यहाँ पर ऐसा है कि, अगर आपको काम से छुटकारा पाना है, तो धाम करो, क्योंकि धाम करनेवाले के लिए, पहली शर्त है, "ब्रह्मचर्य" यानि जिसको धाम पर जाना है, उसको ब्रह्मचर्य का पालन करना है। फिर दूसरी शर्त है, "भिक्षा" यानि जीविका - उसे कार्य करके नहीं, भिक्षा करके प्राप्त करनी है। तीसरी शर्त है, "एक स्थान पर एक रात्रि का श्यन" चौथी शर्त है, "धाम की पूरी यात्रा पैदल ही करनी है" पाँचवी शर्त है,

"केवल दो जोड़ी वस्त्र रखने हैं पास में" इन शर्तों के साथ धाम की यात्रा करनी है। अब धाम की यात्रा करनेवाला भी, कोई कार्य नहीं करेगा, जिससे वह बेकार है। या तो काम करो या फिर धाम करो, किन्तु बेकार मत बैठो। यानि दो में से किसी एक को चुन लो। और रही बात ध्यान करने की, वह आप काम में भी कर सकते हैं, और धाम में भी कर सकते हैं। केवल ढाई घड़ी ही ध्यान करना है। यानि एक घंटा। इसी ढाई घड़ी को, "ढाई आखर प्रेम के" कहा गया है। एक घंटे में ढाई घड़ी का मेडिटेशन ही, व्यक्ति को परमात्मा से, रोज मिला देता है। इसलिए एक घंटे प्रतिदिन मेडिटेशन करो।

121. बुरो + कन = Broken -

कान में किसी के लिए बुरा कहना। बुराई इसी को नाम दिया गया है। अगर किसी की मान्यता तोड़नी है, तो उसके बारे में बुरा कहो, किसी के कान में, और बात कान-ओ-कान फैल जाएगी, फिर उसकी सारी मान्यता टूट जायेगी। बात किसी पर न आएगी, सब यही कहेंगे एक-दूसरे के कान में, "अरे! तुमने सुना !!! उसके बारे में लोग ऐसा कह रहे हैं, वैसा कह रहे हैं" और बात इसी तरह फैलती जाएगी, किसी की मान्यता Broken हो जाएगी।

122. भन्न + डार = भण्डार -

मधुमक्खियों के भन्न की आवाज़ जिस डार (पेड़ की डाल) से आती है। उसे ही भण्डार कहते हैं, क्योंकि वहाँ मधुमक्खियों ने शहद जमा करके रखा होता है।

123. भरोसे + मंद = भरोसेमंद -

भरोसा करनेवाले मंद हो जाते हैं। जब भरोसा कर लिया जाता है, तो खोज़ने की ललक मंद पड़ जाती है। भरोसा व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा को धीमा कर देता है। सांसारिक कार्यों में तो ठीक है कि भरोसे पर ही कार्य होता है, किन्तु आध्यात्मिक जीवन में भरोसा व्यक्ति को मंद कर देता है। जैसे कोई आध्यात्मिक पुस्तक पढ़कर उस पर भरोसा करके कि अब तो इस पुस्तक के अनुसार चलेंगे और परमात्मा को प्राप्त कर लेंगे। बस यही भरोसा व्यक्ति को मंद कर देता है। न व्यक्ति पुस्तक पढ़ता है और जब पढ़ता ही नहीं है, तो पुस्तक के अनुसार चलेगा कैसे ? हाँ पुस्तक व्यक्ति के पास रखी जरूर रहती है। और अगर पढ़ भी लेता है, तो पुस्तक में लिखे का अर्थ कुछ का कुछ निकाल लेता है। इस तरह से व्यक्ति का भरोसा, व्यक्ति को मंद कर देता है, क्योंकि आध्यात्मिक क्षेत्र में भरोसे से ज्यादा मेहनत की आवश्यकता होती है। वह मेहनत होती है मेडिटेशन में बैठना। मेडिटेशन में जितना बैठो, उतना ही आध्यात्मिकता में तेजी आती है। इसलिए मेडिटेशन पर भरोसा करो तो कभी-भी मंद नहीं होओगे।

124. भगवान + उत्पन्न = भु - भगवान से उत्पन्न है, इसलिए "भु" है।

125. भ + कति = भक्ति -

भगवान के बारे में कहना,भगवान का गुणगान करना। भगवान की महिमा का बखान करना। यही भक्ति है।

126. Bake + करारी = बेकरारी -

ऐसी Bake करो की करारी हो। किसी वस्तु को Bake करने के लिए रखो। फिर उसके Bake होने

तक इंतजार करो। इसी का नाम बेकरारी है। वस्तु Bake हो जाएगी तो करारी हो जाएगी। खाने में करारी लगेगी।

127. भूमि + तन = भूत -

भूमि का तन बनना ही भूत है। यानि ऐसा क्या है जो इस मिट्टी को जीता-जागता तन बना देता है। इसलिए यह अद्भुत है। आश्चर्य है, कि भूमि एक शरीर के रूप में परिवर्तित हो जाती है। फिर यही तन वापस भूमि बन जाता है। यही भूमि का तन हो जाना और तन का भूमि हो जाना ही तो फिर भूत है।

128. भाती + जी = भाजी -

भाती है जो जी को उसे भाजी कहते हैं। सबकी भाजी अपनी अपनी होती है। किसी को कोई भाजी भाती है, तो किसी को कोई भाजी भाती है।

129. बे + Shoe + मार = बेशुमार - दो जूतों से मारने को, बेशुमार कहते हैं।

130. बक + कौल = बकौल -

जब कोई बकता है, या जब कोई कौल उठाता है। इसे ही बकौल कहा जाता है। दोनों को ही संदर्भ के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। कि " बकौल उनके द्वारा ऐसा कहा गया था।" यानी " According to him that was said." इसलिए बकना या कौल उठाना दोनों को ही महत्त्व दिया जाता है। किंतु आजकल आदमी Mobile पर किसी की Call आने पर इतना बकता है, कि उस बक बक को बनाए रखने के लिए हर महीने बकासुर की तरह खूब सारी खुराक देनी पड़ती है। यह खुराक साल दर साल बढ़ती ही जाती है, बकासुर की तरह। Mobile के Call पर की गई बक बक ही कौल के तौर पर मानी जाती है। क्योंकि Call करनेवाला या Call को सुननेवाला यह दोनों ही या दोनों में से कोई एक इस Call को Record करके रख लेते हैं। और फिर कभी जरूरत पड़ने पर यह Record किया हुआ, Mobile Call सुनाकर कहते हैं, " देखो इसने ऐसा कहा था।" इसलिए अपनी बक बक को बकासुर नहीं बनाईये और Call पर कोई कौल मत उठाईए। कि " मैं वचन देता हूँ। मैं यह काम जरूर कर दूँगा।" कौल = संकल्प लेना, प्रतिज्ञा करना, कुलीन वचन बोलना, वचन देना।

131. महान् + भारत = महाभारत -

दुष्यंत और शकुंतला के पुत्र भरत के वंशजों को, "भारत" नाम से पुकारा जाता है। भरत से लेकर जनमेजय तक, भरत के वंशज भारत कहलाते हैं। इन वंशजों के "भारत" के आगे, विशेषण के रूप में "महान्" लगाया जाता है। "महान् भारत" यह इस तरह से है, यानी महान् भरत के वंशज। भरत महान् थे। भरत ने आज के पूरे भारतदेश, पर शासन किया था। इसलिए इसे भरतखण्ड भी कहते हैं, उन्हीं महान भरत के महान भारतों की वंशावली एवं गाथा है, महान भारत या महाभारत।

132. भर + अष्ट + चार = भ्रष्टाचार -

भर जाती हैं आठ चीजें ,जब चार में, उसे भ्रष्टाचार कहते हैं। आठ चीजें - काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, राग, द्वेष, अहंकार। इन चार में - शरीर, अंतःकरण, Prana, आत्मा। भर + अष्ट + चार = भ्रष्टाचार। शरीर में काम एवं ईर्ष्या भर जाती है। अंतःकरण में क्रोध एवं राग भर जाता है। प्राण में लोभ एवं द्वेष भर जाता है। आत्मा में मोह एवं अहंकार भर जाता है। इस तरह यह आठ चीजें इन चार चीजों

को भ्रष्ट कर देतीं हैं। जैसे किसी वस्तु का अचार बनाने के लिए पहले उस वस्तु को भ्रष्ट किया जाता है, फिर उसका अचार बनाया जाता है। अचार से स्वादहीन भोजन भी स्वादिष्ट लगने लगता है। किंतु फिर अचार का बुरा प्रभाव शरीर, मन, प्राण, आत्मा को जो कष्ट देता है। उसके निवारण के लिए, आगे बिना स्वादवाला एवं फीका भोजन करना पड़ता है और फिर जीवन किसी और की सलाह पर चलने लगता है। भ्रष्टाचार का प्रारंभ Lust से होता है। Lust का प्रारंभ शराब से होता है। शरीर के भीतर मदिरा के जाते ही वासना उत्पन्न होती है। वासना आगे अहंकार तक जाती है। अहंकार फिर पश्चाताप में बदल जाता है। यह पछतावे का ताप फिर सबकुछ भस्म कर देता है।

133. भारत =

भारत चारागाहों से भरपूर देश था। भारत में हरेभरे पहाड़, चारे और पौधों से भरपूर मैदान, फलवाले हों या बिना फलवाले पेड़ों की भरमार, पानी से भरी नदियां, तालाब एवं झीलें। प्रकृति का पूरा आशीर्वाद, भारत देश पर था। भारत के प्राकृतिक संपदा से, आकर्षित होकर दुनियाभर के, चरवाहे अपने पशुओं के रेवड़ों को, लेकर प्रत्येक वर्ष भारत आते थे। भारत के लोग, प्रकृति को नुकसान न, पहुँचाते हुए, प्रकृति के संसाधनों का, उपयोग करते थे। इसलिए भारत के लोग, वर्षभर की ऋतु के अनुसार, ऋतुअल यानी ऋचुअल यानी Ritual मनाते थे। इन Ritual में, प्रकृति की पूजा की जाती थी। क्योंकि यही प्रकृति, हमें जीवित रहने के, सभी साधन प्रदान करती थी।

134. भगवान + जन = भजन =

भगवान से जन को, जो जोड़ता है। उसे भजन कहते हैं। भगवान + जन = भजन।

135. भर + Anti = भ्रांति -

भर जाता है, Anti से, वह भ्रांति से भर जाता है। राजनीति का नियम है कि, जब किसी से मित्रता करनी है, तो सबसे पहले यह पता करो, कि इसके विरुद्ध कौन-कौन हैं ? जब उसके विरोधियों का पता चल जाए, तब उसके कान, उसके विरोधियों के, कारनामों से, भरना शुरु कर दो। उसके भीतर इतनी, विरुद्धता भर दो, उसके Anti के बारे में, कि वह पूरी तरह से भ्रांति में जीने लगे। यही भ्रांति है। यही कार्य शकुनि ने दुर्योधन के साथ किया।

136. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र -

जीवन के प्रारंभ में, मनुष्य, ब्राह्मण होता है। ब्रह्म की स्थिति का होता है। किसी से भेदभाव, नहीं करता है। इसलिए तो कहते हैं, बच्चे भगवान का रूप होते हैं। जीवन के जवानी में, मनुष्य, क्षत्रिय होता है। छत बनकर, अपनी स्त्री की, रक्षा करता है। छत + त्रिय = क्षत्रिय, त्रिया = स्त्री। जीवन के तीसरे पड़ाव में, मनुष्य, वैश्य होता है। अपनी वय को, विश्राम देने के लिए, शय्या पर सो जाता है। वय + श्य = वैश्य वय = शरीर, श्य = श्यन। जवानी में इतना कार्य, करता है, कि थक जाता है। उसी थकान को, दूर करने के लिए, बिस्तर पर सो सोकर, अपनी थकान मिटाता है। जिसे Retired हो, जाना कहते हैं। जीवन के चौथे मुकाम पर, मनुष्य, सुधर जाता है। जीवन में किए गए, विचारों, कर्मों की, स्मृतियों के बोझ से, हल्का होने के लिए, मन ही मन, परमात्मा का ध्यान करता है। कि इस जन्म के, विचारों, संस्कारों, आदतों, Habits को, ढोकर अगले जन्म में, न ले जाना पड़े। इसे ही सुधरना

कहते हैं। जिससे मनुष्य की चेतना, पुनः अगले जन्म के लिए, ब्रह्म की तरह, शुद्ध हो जाती है। और, उस चेतना को, शुद्ध होने के लिए, नरक नाम की, सफाई से नहीं, गुजरना पड़ता है। इस सुधर को ही शूद्र कहते हैं, सु + धर = शूद्र। इस शुद्धता की प्रक्रिया को, ही शूद्र कहते हैं। क्योंकि अंतःकरण की, सफाई की जाती है। अंतःकरण को शुद्ध किया जाता है। शुद्ध होने के लिए, जब मनुष्य, ध्यान करने बैठ जाता है। तब वह अपने, Shoe अपने दरवाजे पर, रख देता है। Shoe + दर = शूद्र। दर = दरवाजा। क्योंकि ध्यान करनेवाला, किसी प्रकार के, Shoe नहीं पहनता है। तो उसके ध्यान में, बैठ जाने के बाद, उसके घरवाले, उसके Shoe को, उसकी स्मृति मानकर, अपने पास रख लेते हैं। और, फिर आनेवाली पीढियों को, प्रत्येक Shoe की कहानी, सुनाते हैं। और, नई पीढियों को, उन पूर्वजों के Shoe को, नमस्कार करने को कहते हैं। इसलिए पहले जमाने में, घर के दरवाजे के पास, Rack में Shoes रखे जाते थे। घर में आनेवाला, प्रत्येक व्यक्ति, चाहे घरवाला हो या बाहरवाला, उन Rack में रखे Shoes को, सबसे पहले नमस्कार करता था, फिर अंदर जाता था। और, वह अपना जूता तो, घर के बाहर ही, उतारता था। Rack में कोई भी, घरवाला या बाहरवाला, अपने, Shoes को नहीं रखता था। पहले जमाने में, Shoes के रूप में, खड़ाऊँ पहनते थे। तो उन छोड़े गए, खड़ाऊँ को नमस्कार करना, आज भी, कहीं-कहीं प्रचलन में है। इस तरह से, सभी के यहाँ Shoe Rack होते थे, सभी लोग, Rack में रखे Shoe को, नमस्कार करते थे। इस तरह से यह जीवन की, चार अवस्थाएं, मनुष्य के चार वर्णों को, दर्शाती हैं। और मनुष्य जन्म को, सफल और सार्थक, बनाती हैं।

137. भाव + ना = भावना -

भाव का ना होना ही, भावना है। भाव + ना = भावना। जब किसी के पास, कोई वस्तु लेने जाते हैं, तब उससे पूछते हैं कि, "क्या भाव है इसका ?" तब वस्तु देनेवाला कहता है, "अरे ! आपसे कुछ नहीं लेना, आप तो ऐसे ही ले जाओ।" बस यही भावना है। जहाँ पर भाव नहीं रहता है, व्यक्ति भावना को प्राप्त, करता है।

138. बदल + Love = बदलाव -

बदल देना किसी को, Love से, यही बदलाव है। बदल + Love = बदलाव। जब आप प्रेम के द्वारा, प्यार के द्वारा, Love के द्वारा, किसी को बदल देते हैं, उसे ही बदलाव कहते हैं।

139. बलात् + कार्य = बलात्कार -

बलात किया गया, कोई भी कार्य, बलात्कार कहलाता है। बलात् + कार्य = बलात्कार। जब कोई बलवान व्यक्ति, किसी कमजोर व्यक्ति से, कोई भी कार्य, बलात करने के लिए, मजबूर करता है, वह कार्य ही, बलात्कार कहलाता है। यानी जब किसी का, मन कार्य करने का नहीं है, किंतु बलवान व्यक्ति, उस व्यक्ति पर Pressure, डलवाता है। बस यही Pressure ही, बलात कहलाता है। और जब किसी पर, दबाव का बल डाला जाता है, तब वह कमजोर व्यक्ति, टूट जाता है। वह इस Pressure को, झेल नहीं पाता है।

140. बल + Key = बल्कि -

मनुष्य के द्वारा, बल का उपयोग, किया जाता है, या फिर मनुष्य Key का, उपयोग करता है। बल +

Key = बल्कि। जिसके पास न बल होता है, न ही Key होती है। वह व्यक्ति बल्कि का, उपयोग करता है।

141. बेहतर + ऋण = बेहतरीन -

बेहतर करने के चक्कर में, आदमी ऋण लेता जाता है। तभी वह व्यक्ति बेहतरीन, कर पाता है। लोग तारीफ करते, "वाह ! क्या बेहतरीन काम, किया है।" बेहतर + ऋण = बेहतरीन। यानी जहाँ भी बेहतर काम दिखे, समझ लेना चाहिए कि, यह बेहतर काम, ऋण ले करके किया गया है। जैसे कि, "वाह ! क्या बेहतरीन Car है।" "वाह ! क्या बेहतरीन घर है।"

142. वध + य = बाध्य -

वध करने की धमकी देकर, किसी को बाध्य किया जाता है। वध + य = बाध्य। वध की धमकी किसी के लिए भी हो सकती है। स्वयं की, दूसरे की या किसी अन्य के लिए किसी की। जब भी यह धमकी दी जाती है कि, "मेरा काम कर दो, नहीं तो मैं इसका वध कर दूँगा" यही बाध्य करना होता है।

143. बात + चित्त = बातचीत -

आदमी दूसरे के चित्त को, समझने के लिए, बात करना चाहता है कि, "पता तो चले इसके मन में, क्या चल रहा है ?" इसे ही बातचीत कहते हैं। बात + चित्त = बातचीत। किंतु जब व्यक्ति दूसरे के, चित्त की बात जान जाता है, तब व्यक्ति बात करने में, Cheat करता है, बात + Cheat = बातचीत इसलिए बात करने में, जो पहले, दूसरे के चित्त को, समझ जाता है। वह तुरंत Cheat कर, जाता है। इसीलिए चालाक लोग कहते हैं कि, "इसे तो मैं दो मिनट में, अपनी बातों से चित्त कर दूँगा।"

144. बदल + Low = बदला -

जब किसी को बदल देते हैं, Low करने के लिए, उसे बदला कहते हैं। बदल + Low = बदला। यानी जब आप किसी को, इसलिए बदल देते हैं, ताकि वह नीचा हो जाए, तो उसे बदला कहते हैं।

145. Bad + Law = बदला -

जब किसी का, Bad करने के लिए, जो Law लगाया जाता है, तब उसे बदला कहते हैं। Bad + Law = बदला। यानी किसी का Bad हो जाए, इसके लिए Bad Law, लागू किया जाता है, उसे ही बदला कहते हैं।

146. बोना + ध्यान = बोध –

जिस तरह से धरती में बीज को बोने से फल की प्राप्ति होती है। उसी तरह बोना पड़ता है, ध्यान को ध्यान को बोने से बोध की प्राप्ति होती है।

147. भगवान + जन = भजन -

भगवान एवं जन में एकत्व स्थापित करने का कार्य भजन के द्वारा होता है।

148. बोना + ध्यान = बोध

जिस तरह से धरती में बीज को बोने से फल की प्राप्ति होती है। उसी तरह बोना पड़ता है, ध्यान को। ध्यान को बोने से बोध की प्राप्ति होती है। बोना + ध्यान = बोध। Meditation करने पर Wisdom की प्राप्ति कहते हैं।

149. बोल + ना = बोलना -

बोलना साध लो, मौन अपने आप सध जायेगा। बोल + ना = बोलना। चालना साध लो, चाल अपने आप सध जायेगी। चाल + ना = चालना। इस तरह बोलचाल सध चायेगी। आपकी पहचान बन जायेगी।

150 Big + अड़ = बिगड़ -

Big लोग हमेशा अड़ जाते हैं। Big लोगों के साथ रहनेवाले, हमेशा बिगड़ जाते हैं। Big लोगों की आड़ पाकर व्यक्ति अड़ जाता है, इस तरह आदमी बिगड़ जाता है। जो लोग बिगड़ना चाहते हैं, वह लोग हमेशा Big लोगों की आड़ ले लेते हैं। बिगड़नेवाले लोग अड़कर कहते हैं, "तू ! जानता नहीं मेरा संबंध किससे है"। इस तरह Big की आड़ में व्यक्ति बिगड़कर बात करता है। तब सुननेवाला व्यक्ति कहता है, "ओह तो ! इसीलिए हम पर बिगड़ रहे हो"। Big + अड़ = बिगड़।

151. भूत + काल = भूतकाल -

हम भूतकाल में जीते हैं, यानी भूत के काल में, यानी जो समय बीत गया है, उसकी यादों को अपने मष्तिष्क में, रखकर जीते हैं। बीती हुई बातों की यादों को ही, भूत कहा जाता है। भूत + काल = भूतकाल। हम यह थे, हमारे लोग ऐसे थे, हमने यह किया। इस तरह से न जाने कितने, भूतों को हम अपने में समाए रहते है। इस तरह हम भूतों को याद करते हुए, भूतकाल में जीते हैं। जिनका तन भूमि में मिल गया है, उन्हें भूत कहते हैं। भूमि + तन = भूत। हम अपनी Wish को पूरा करने के लिए, भविष्यकाल में भी जीते हैं। हम यह चाहते हैं कि, हमारी Wish पूरी हो। भव + Wish = भविष्य। भव = होना। हमको अपने तन से श्रेष्ठ कार्य को मान देना चाहिए। यह हमारा वर्तमानकाल होता है। वर + त + मान = वर्तमान। वर = श्रेष्ठ। त = तन। संग को ईंट से मारो, संग से संगीत निकलता है। संग + ईंट = संगीत। संग = पत्थर। पत्थर पर ईंट से मारने पर, जो ध्वनि निकलती है, उसे संगीत कहते हैं। भव + Wish = भविष्य। भव = होना। भविष्य होने के लिए, Wish का होना आवश्यक है। भगवान भी जब वरदान देते हैं, तब पूँछते हैं, "बताओ तुम्हारी ईच्छा क्या है" ? क्योंकि व्यक्ति का भविष्य, व्यक्ति की Wish तय करती है। व्यक्ति जैसी Wish माँगता है, उस व्यक्ति का वैसा भविष्य तय हो जाता है। इसीलिए भगवान से Wish माँगते समय सावधान रहना चाहिए, अन्यथा ऐसा हो जाएगा, जैसा कुंभकर्ण के साथ हुआ था।

152. Bad + दौलत = बदौलत -

Bad दौलत ही बदौलत होती है। दौलत चाहे Bad ही क्यों न हो, अगर किसी को आप, Bad दौलत भी देते हैं, तो आपको वह कहता है, "आपकी बदौलत यह हुआ है" ?

153. बलि + दान = बलिदान -

राजा बलि बहुत दान देते थे, कोई भी दान माँगनेवाला, राजा बलि के यहाँ से दान लेकर ही जाता था। एक बार वामन भगवान दान माँगने आए। तब बलि ने अपने आपको ही दान कर दिया। इससे लोगों में फैल गया कि, "दान देनेवाला हो तो बलि के जैसा"। "सुना तुमने ! बलि ने अपने आपको दान कर दिया"। तो तबसे दान शब्द राजा बलि के साथ ही जुड़ गया। और शब्द बन गया "बलिदान"। बलि

+ दान = बलिदान। राजा बलि बहुत बलवान था। जिसे नाम दिया गया "महाबली"। महान + बलि = महाबली। जिसके पास बल होता है, उसको "बलि" कहते हैं। जिसके बाहु में बल होता है, उसे कहते हैं "बाहुबली"। बाहु + बलि = बाहुबली। राजा बलि के पिता का नाम विरोचन था। विरोचन के पिता का नाम भक्त प्रहलाद था। भक्त प्रहलाद के पिता का नाम हिरण्यकशिपु था। हिरण्यकशिपु के पिता का नाम महर्षि कश्यप था।

154. भूमि + तन = भूत -

समाधि तो शरीर को दी जाती है। आत्मा तो कब की निकल चुकी होती है। आखिर सम्मान तो, मृत शरीर को ही मिलता है। परमात्मा से मिली हुई आत्मा को, तो कभी सम्मान नहीं मिलता है। क्योंकि पहचान ही नहीं पाते कि, जीते जी किसकी आत्मा को परमात्मा का सान्निध्य मिल गया है। और अगर आत्मा को परमात्मा का सान्निध्य मिल भी गया हो तो, उसको मानते नहीं हैं। यानी भूमि में जब तन मिल जाता है, तब भूत कहलाता है। भूमि + तन = भूत। आत्मा तो रेतस् बनकर परम के पास चली जाती है। यानी प्रेत कहलाती है। परम + रेतस् = प्रेत।

155. बिल्ली + Near = Billionaire –

बिल्लियाँ वही पालते हैं, जो Billionaire होते हैं। जो बिल्लियों को अपने Near रखते हैं। बिल्ली + Near = Billionaire. Billionaire की खासियत होती है, वह अपने पास Bills रखता है, और दूसरों को अपने Bills दिखाता रहता है। Bills से जिसकी सम्पत्ति को, मापा जाता है, वह Billionaire होता है। पुराने जमाने में, किसी भी देश के राजा की सभा में, Billionaire की नियुक्ति की जाती थी। यही Billionaire लोग अपने अपने Bill को, राजा की सभा में Pass करवा लेते थे। इन Billionaires की बिल्ली, जिस रास्ते से निकल रही है, उस बिल्ली को रास्ता देने के लिए, राहगीरों को रुक जाना पड़ता था। बिल्ली के निकल जाने के, कुछ देर के बाद, वह राहगीर उस रास्ते से, निकल सकते थे। पुरानी फिल्मों में बिल्लियों को अपने हाथों में रखने वाले लोग दिखाए जाते थे। जो अपने हाथों से बिल्ली के, बालों को सहलाते रहते थे।

156. ब्रह्म मुहूर्त -

ब्रह्म का आना ही तो ब्रह्म मुहूर्त में होता है। ब्रह्म के दर्शन जिनको करने हैं, उनको ब्रह्म मुहूर्त से पहले, उठ जाना चाहिए। तत्पश्चात् नित्य क्रिया से निवृत होकर, ध्यान में बैठ जाना चाहिए। जब ब्रह्म मुहूर्त आएगा, तब ध्यान में बैठे-बैठे ही, ब्रह्म के दर्शन हो जाएंगे। इसीलिए इस समय को ब्रह्म मुहूर्त कहा गया है। चाहे कितने से भी कितना बड़ा नास्तिक हो, वह इस प्रातः काल के समय से पहले उठने की बात का पालन अवश्य करता है। इसीलिए ब्रह्म के दर्शन करने हैं तो, ब्रह्म मुहूर्त से पहले उठकर, तैयार होकर ध्यान में बैठ जाओ, और ब्रह्म मुहूर्त का समय ध्यान में लगाओ।

157. वाग + दान = वचन का दान -

विवाह में सबसे पहले दोनों पक्षों की तरफ से वाग्दान होता है। वाग + दान = वचन का दान। वाग्दान = सगाई, Engagement. तत्पश्चात् वधु पक्ष की तरफ से कन्यादान किया जाता है कि, "मैं अमुक नाम के व्यक्ति को अपनी कन्या का दान करता हूं"। वाग्दान की गई कन्या को वाग्दत्ता कहते हैं।

कन्या + दान = कन्यादान। वाग्दत्ता = Fiancée. तत्पश्चात् वर पक्ष की तरफ से पुत्रदान किया जाता है कि, "मैं अमुक नाम की कन्या को उसके वर का दान करता हूं"। वाग्दान किए गए वर को वाग्दत्त कहते हैं। वर + दान = वरदान। वाग्दत्त = Fiancé. इस तरह से दोनों पक्षों की ओर से आदान-प्रदान किया जाता है।

158. भर + भरा = भरभरा -

इसमें और भर देना और भर देना। भरा की नहीं भरा। बार-बार भरने के कारण, और बार यह पूछने के कारण, कि भरा की नहीं भरा, भर हुई वस्तु भरभरा कर, गिर जाती है।

159. Beauty + Fool = Beautiful -

अक्सर लोग Beauty को देखकर Fool बन ही जाते हैं।

160. भय + रों = भैरों -

भय से रोता है, इसलिए भयरों है।

161. बेटा बेटी = Bet -

गर्भवती स्त्री को देखकर, ही तो आदमी आपस में, Bet लगाते हैं कि, "बताओ बेटा होगी कि बेटी"।

162. भ्रम + Anti = भ्रांति -

Anti लोगों को भ्रम में रखना ही, भ्रांति होती है। भ्रम + Anti = भ्रांति। अच्छा राजनीतिज्ञ वही होता है, जो अपने Anti को भ्रम में रखे, और अपने बारे में भ्रांति फैलाकर रखें। Anti = विरोधी। आप क्या करते हैं, आप क्या कर रहे हैं, आप क्या करना चाहते हैं, इस बारे में, आपके Anti के पास, जो भी सूचनाएं जानी चाहिए, वह भ्रम वाली जानी चाहिए। भ्रम = संदेह, संशय। जिससे आपके Anti को संशय रहेगा, और संशय होने पर तो, आत्मा का भी विनाश हो जाता है। इसलिए राजनीति करने वाले लोग, भांति भांति के उपक्रम करते हैं, भांति भांति के बयान देते हैं। यह भ्रांति का ही अपभ्रंश भांति है। इसलिए जहां आपको लगे, भांति भांति के लोग हैं, भांति भांति के कार्य हो रहे हैं, भांति भांति की बयानबाजी चल रही है, समझ जाइए, आपके लिए, आपके Anti के द्वारा भ्रांति फैलाई गई है। ताकि आप भ्रम में आ जाओ, और आपका विरोधी, आपका विनाश कर दे। तो किसी को भी भ्रम में फंसाने के लिए, सबसे पहले उसकी बुद्धि, उसी के विपरीत की जाती है। और Rum को पीने से, किसी की भी बुद्धि, उसके विपरीत हो जाती है, तो सबसे पहले, किसी पेय पदार्थ में मिलाकर, किसी न किसी प्रकार से, आपको Rum पिलाई जाएगी। जब Rum आपके भीतर भर जाएगी, तब आप भ्रम में हो जाएंगे। भर + Rum = भ्रम। आपकी बुद्धि भ्रमित हो जाएगी, और आपके विपरीत हो जाएगी। विपरीत यानी आपके Control से, बाहर हो जाएगी। तभी इस भ्रम की स्थिति में आपका Anti, आपको भ्रांति में रखकर, आपकी आत्मा तक का विनाश कर देगा। कोई Win करता है, तो किसी का नाश होता है। यही विनाश होता है। Win + नाश = विनाश। इसलिए पहले भारत देश में, किसी के यहां का पानी तक नहीं पीते थे। क्योंकि पानी में नशा हो, और वह नशा बुद्धि में भ्रम उत्पन्न करें। और व्यक्ति के शरीर के साथ साथ, व्यक्ति की आत्मा का भी विनाश हो जाए। यह बात अंग्रेजों ने पहले ही, भांप ली थी, इसलिए अंग्रेज सबको Anti, कहकर बुलाते थे। दुश्मन

अक्सर दोस्त बनकर आते हैं, और दारु ज़रूर पिलाते हैं। दारु पीने से बुद्धि विपरीत हो जाती है, और व्यक्ति दु:ख में चला जाता है। क्योंकि दारु दु:ख देती है। किन्तु व्यक्ति यही समझता है, दारु पीने से दु:ख दूर हो जाता है, जबकि असलियत यह है कि, दारु पीने से दु:ख का अहसास नहीं होता है। दु:ख तो रहता है, और दारु उतरने के बाद, पुनः दर्द होता है, दर्द से फिर आदमी दु:खी होता है। इसलिए दर्द को दूर करने के लिए, पुनः दारु पीता है, इसलिए कहताकहता भी है, "दारुन दु:ख न देही"। यानी दारु पीने से, देह में दु:ख नहीं होता है। इसी भ्रांति में आदमी रहता है, और अपने Anti से, हारता रहता है। अगर भ्रांति को दूर करना है तो, ज्ञान को प्राप्त करो।

163. भूमि + कंपन = भूकंप -

भूमि का कंपन ही, भूकंप कहलाता है। भूमि + कंपन = भूकंप। भूमि के भीतर जहां जहां पर, पानी कम होता जाता है, तब वहां वहां पर भूमि के धंसने पर, भूकंप आता है। उस भूमि के धंसने पर, भूमि में कंपन होता है, जिसे भूकंप कहते हैं। तो भूमि में पर्याप्त मात्रा में, पानी रहना चाहिए। जिससे भूमि का धंसना ना हो, और भूमि में कंपन होकर, भूकंप ना आए।

भू + कम + पानी = भूकंप -

जिसकी गणना की गई है, उसी का Prediction किया जा सकता है। जिसकी गणना उपलब्ध नहीं है, उसका Prediction नहीं किया जा सकता है। जैसे कि, "भूकंप की गणना उपलब्ध नहीं है, इसलिए भूकंप का, Prediction नहीं किया जा सकता है"। भू + कम + पानी = भूकंप। भू में जहाँ पर कम पानी होता है, वहीँ पर भूकंप होता है। क्योंकि सारे Predictions, गणना पर आधारित हैं। और गणित का उपयोग करके किए जाते हैं। इसलिए सभी लोग Information चाहते हैं, उस Information का Data बनाते हैं, उसके बाद Data Analysis करते हैं, और तब जाकर Prediction करते हैं। और क्योंकि पृथ्वी की भूगर्भीय, घटनाओं का कोई Data उपलब्ध नहीं है, इसलिए भूकंप का Prediction नहीं, कर सकते हैं।

164. बाल + Luck = बालक –

आदमी के बालपन में, उसका Luck देखा जाता है, उसे ही बालक कहते हैं। बालपन में ही तो भविष्य देखा जाता है।

165. बला + Lock = Block –

बला को Lock करना ही, Block कहलाता है। बला + Lock = Block. तंत्र में बला को बोतल में, बंद कर दिया जाता है। या बला को एक कमरे में बंद करके, उस कमरे पर मंत्र वाला, ताला लगा दिया जाता है। इस तरह बला को, Block कर दिया जाता है। बला वह होती है, जो आपके ना चाहने पर भी, आपकी ज़िन्दगी में बलपूर्वक आए। बल + आए = बला। जब किसी में बल आ जाता है, तब वह खामखां किसी की भी ज़िंदगी में, बलपूर्वक आने की कोशिश करता है। बस इसे ही बला कहते हैं। सभी इस बला से दूर भागते हैं, यह कहते हुए कि, "अरे ! यह बला कहां से आ गई"।

166. बला + आहत + कार्य = बलात्कार -

जब बला की बात ना मानो, तो बला आहतपूर्वक कार्य करती है, जिसे बलात्कार कहते हैं। बला +

आहत + कार्य = बलात्कार। यानी जब किसी की इच्छा, किसी कार्य को करने की ना होने पर भी, बला उसको आहत करके अपना, कार्य करती है, तब वह बलात्कार कहलाता है। यह कार्य किसी भी प्रकार का हो सकता है। जो किसी की असहमति के बावजूद, उसे बलपूर्वक आहत करके किया जाए। इसलिए जिनके पास बल आए, ऐसे लोगों को Block कर दीजिए। नहीं तो वह लोग बलपूर्वक आहत करके, कार्य करवा लेंगे। जिसे आज की भाषा में Pressure डलवाकर, कार्य करवाना कहते हैं। इसलिए बल की बला को, Block करके रखिए।

167. भारतीय संस्कृति -

पहले रोज़ लोटा लेकर, सुबह शाम दो तीन मील चल लेते थे, साथ में अपनी वाक् से, वाक्य बोलकर वाकया भी जान लेते थे। Walk की Walk हो जाती थी, साथ ही किसी को ताक कर, उसके बारे में Talk भी हो जाती थी। बैठे बैठे शरीर का "गु" भी बाहर आता था, और Talk करते करते, मन का गुबार भी बाहर निकल जाता था। जमीन को भी अगली फसल के लिए, खाद मिल जाता था, क्योंकि दो चार दिन में ही, "मल" ही मिट्टी बन जाता था। साथ में दातौन भी कर ली जाती थी, दातौन व्यक्ति के दांत को, तो स्वच्छ करती ही थी, साथ में व्यक्ति की Tone को भी, अच्छा बना देती थी। क्योंकि दातौन के दोनों फलकों से, जीभ की खखार भी साफ की जाती थी। लोटा मांजते मांजते शरीर को भी, स्नान करवा लिया जाता था। इस तरह से बिना कुछ खर्च किए, केवल एक लोटे पानी में, अन्दर बाहर से अपने आपको, शुद्ध कर लिया जाता था। तब फिर कलेवा किया जाता था। रोटी में चुपड़े हुए घी को ही, हाथ-पैरों के साथ साथ, बालों एवं मुंह पर लगा लिया जाता था। कंघी से फिर मांग काड़ ली जाती थी, कंघी से ही कानों के पीछे लगा घी, बालों में अच्छी तरह से, मिला दिया जाता था और जिस सिर में सरसों का तेल, लगा होता था, तब उसी सिर पर हाथ रखकर सों खाई जाती थी। यही तो भारतीय संस्कृति कहलाती थी। आजकल जो लोग बड़े बड़े, Farm में House बनाकर रहते हैं, वह अपने Farm में स्थित, House से दूर शौचालय बनवाते हैं। फिर उस House से धीरे धीरे, अपने Farm में ही दो चार मील घूमते घाम लेते हैं, तब अपने Farm बने शौचालय में जाते हैं। वहीं दातून भी करते हैं, वहीं स्नान भी करते हैं, और Farm में स्थित गाय का, दूध, दही, मक्खन, मट्ठा, लस्सी, छास, घी खाते पीते हैं। तथा Farm में उगी सब्जियां, अनाज, दालें आदि खाते हैं। इस तरह से प्रकृति में, प्राकृतिक जीवन का आनंद लेते हैं।

168. बद + दल = बदल -

बद हुए दल को ही, बदल कहते हैं। बद + दल = बदल। बद = Bad . इसलिए बद हुए दल को ही, बदल देना चाहिए, नहीं तो दलदल हो जाता है।

169. भय + अंक + कर = भयंकर -

जिस प्रकार से, जमीन में गये बीज में, अंधेरे के भय के कारण, अंकुर आ जाते हैं। उसी प्रकार से, लोग यह समझते हैं कि, अपने बच्चों को भय दिखाओ, तो उनके बच्चे भी, अंक लेकर आ जाएगें, और उनमें भी अंकुर आ जायेंगे। भय + अंक + कर = भयंकर। किन्तु भय के कारण, बच्चे कुढ़ जाते हैं। किसी को भी अंकुरित करना है तो, ऋतु पर करिए। अंक + ऊर्जा + ऋतु = अंकुरित। जैसी ऋतु

आती है, उसी प्रकार के बीज जमीन में, बो दिए जाते हैं, और वह बोए गए बीज, उस ऋतु में उत्पन्न होनेवाली, ऊर्जा से अंकुरित हो जाते हैं। इसी प्रकार से बच्चों के भीतर की, ऊर्जा की ऋतु कब आती है, उसी अनुसार बच्चों में, अध्ययन के बीज बोए जाते हैं, और बच्चे अच्छे अंक लाते हैं। इसलिए इस देश को, ऋतुओं से भरपूर देश "भारत" कहते हैं। भरपूर + ऋतुएं = भरत = भारत। भर + ऋत = भरत। "भरत" का अपभ्रंश "भारत" है। ऐसा देश जो ऋतुओं से भरा हुआ है, और जहां पर ऋतुएं रीत जाती हैं। इन्हीं ऋतुओं के रीतने पर, यहां पर रीति बन जाती है। इसलिए यहाँ पर भी, लोगों को भय दिखाया जाता है, ताकि लोग इन रीतियों से लोग प्रीति करें। ऐसी ही एक ऋतु है "बसन्त", इसी बसन्त की एक रीति है, जिसे "बसन्त पंचमी" कहते हैं। बसंत ऋतु के प्रारंभ होते ही, सब पेड़, पौधों, जड़ी-बूटियों मनुष्यों, पशुओं, पक्षियों में, सर सर करता हुआ, रस बहने लगता है। सब रस वाले हो जाते हैं। इसलिए इनको "सरस्वती"। सब + रस + वती = सरस्वती। "वती" प्रत्यय का उपयोग, "वाली" के लिए किया जाता है, "सरस्वती" यानी "वह रस वाली"। स = वह। रस = रस। वती = वाली। सरस्वती = वह रस वाली। इसलिए इस दिन को, "सरस्वती" के दिन से, याद किया जाता है और, कालांतर में यह एक रीति बन जाती है। तो प्रकृति की इस "बसन्त ऋतु" के आने पर, सभी में बहने वाले रस को, "देवी" मानकर "सरस्वती" के नाम से, पूजन किया जाता है। ताकि यह ऋतु लोगों में, रीति बनकर रहे और, इस ऋतु को प्रदान करने के लिए, पृथ्वी को प्रतिवर्ष धन्यवाद दे सकें। इस बसन्त ऋतु में सबमें, रस बहने लगता है, तो इसलिए बच्चों में भी, रस बहने लगता है। तब यही बसन्त ऋतु का सही, समय होता है जब बच्चों को, अध्ययन में लगाया जाता है। यह समय बच्चों के विद्या के बीज को, अंक में बदलने वाला होता है, इस बसन्त ऋतु में बच्चों में, ऊर्जा का संचार होता है, इस ऊर्जा को विद्याध्ययन में लगाने से, बच्चे निस्संदेह अच्छे अंक प्राप्त करेंगे। इसलिए इस ऋतु को बच्चों में, एक रीति बनाने के लिए, सरस्वती के रूप की मूर्ति बनाकर, सरस्वती की पूजा करवायी जाती है। कि इस रीति से बच्चे प्रीति करें, और सरस्वती की सौम्य मूर्ति, बनाई जाती है। जिससे बच्चों में भय नहीं हो, और बच्चों में अच्छी तरह से, विद्या की फसल अंकुरित होकर लहलहाए।

170. भगवान + क्त = भक्त -

भगवान में क्त ही भक्त है। भगवान + क्त = भक्त। क्तक्तवतू निष्ठा (१.१.२६ ब्रह्मर्षि पाणिनि अष्टाध्यायी)। "क्त" प्रत्यय का प्रयोग, किसी के लिए, किसी की निष्ठा को, बताने के लिए किया जाता है। जैसे - भगवान के लिए निष्ठा, बताने पर "भक्त" शब्द बना है।

171. बुद्ध = बुत -

आम्रपाली और चित्रलेखा - दो कहानियां, किन्तु कालखण्ड एक। आम्रपाली की कहानी में, बुद्ध की शांति है। चित्रलेखा की कहानी में, कुमारगिरि की अशांति है। आम्रपाली की कहानी में, आम्रपाली ने बुद्ध की शरण प्राप्त की, और शांति को अनुभव किया। चित्रलेखा की कहानी में, चित्रलेखा ने कुमारगिरि की, तपस्या भंग कर दी और, कुमारगिरि को अशांत करके, स्वयं चित्रलेखा भी अशांति को प्राप्त हुई। आम्रपाली की रचना "वैशाली की नगरवधु" के, उपन्यासकार "आचार्य चतुरसेन जी" हैं। "चित्रलेखा" की रचना "चित्रलेखा" के, उपन्यासकार "भगवतीचरण वर्मा जी" हैं।

बूद्ध के ध्यान और कुमारगिरि के ध्यान में, क्या अंतर हो सकता है ? बुद्ध के महापरिनिर्वाण से पहले, बुद्ध की कोई मूर्ति नहीं थी, किन्तु बुद्ध इतने शांत थे कि, जब बुद्ध की मूर्ति बनी, तब मूर्ति भी "बुत" नाम से प्रसिद्ध हो गई। बुद्ध = बुत। बुद्ध को माननेवाले "बुत-परस्त" हुए, बुद्ध को ना माननेवाले लोग "बुत-शिकन" हुए। कुमारगिरि की मूर्ति, कुमारगिरि की तपस्या के समय ही, कुमारगिरि के शिष्य, विशालदेव के द्वारा बनाई जा रही थी। कुमारगिरि की इस बन रही मूर्ति को, स्वयं कुमारगिरि ने ही, अपनी तपस्या भंग होने के बाद, स्वयं ही खण्डित कर दिया था। आज तो कुमारगिरि का नाम, कोई जानता तक नहीं है। और बुद्ध के कितने ही बुत, बुत-शिकनों के द्वारा, शिकस्त कर दिए गए, परन्तु बुद्ध के द्वारा दिए गए, ध्यान से आज भी, संपूर्ण विश्व के साधक, ध्यान करना सीख रहे हैं। और बुद्ध के बुत से अपने, Wisdom को प्राप्त कर रहे हैं। ध्यान को करके, बुद्ध इतने शांत हुए कि, जो भी बुद्ध को देखता था, उस देखनेवाले की, समस्त कामनाएँ स्वतः ही, तिरोहित हो जाती थीं और, उसको भी, अपार शांति की अनुभूति होती थी। ध्यान की तरंगें, बुद्ध की परिधि में फैली हुई थी, जो भी बुद्ध की परिधि में, प्रवेश करता था, वह व्यक्ति भी ध्यान को, उपलब्ध हो जाता था। शरीर, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, प्राण, आत्मा, उस व्यक्ति के यह सात तत्त्व, एकत्त्व को उपलब्ध हो जाते थे, और परमात्मा से जुड़ जाते थे, जिससे वह व्यक्ति परम निर्वाण का, अनुभव पाता था। क्योंकि निरंतर ध्यान के अभ्यास से, कल्पना का तिरोहन हो जाता है, व्यक्ति के मन में, कल्पना नहीं आती है, और ना ही व्यक्ति अपने, मन में कल्पना का निर्माण कर पाता है। और ना ही व्यक्ति, दूसरों की कल्पना को देखता है, ना सुनता है, ना पढ़ता है। यानी ध्यान की उपलब्धता, कल्पनाहीनता है। कल्पना का ना होना ही, शांति की उपलब्धि है।

बुत कहाँ से लाएँ, जो सबूत बनें।
बुत तो शिकन होकर, ज़मींदोज़ हो गए॥
ज़मीं से कभी-कभी, कुछ बुत निकल आते हैं।
ज़मीं में गाड़ दिए गये थे, शिकन होने से पहले जो॥
उन्हें ही सबूत मान लो, बुत परस्ती कर लेने दो।
बुत से बुद्ध बन लेने दो, बुद्ध से बुद्धि लेने दो॥
बेतहाशा हुई बुत शिकनी, सबूत यह टूटे हुए बुत देते हैं।
बुत को साबुत कब छोड़ा था, साबुत बुत ही तो सबूत होता है।

172. भाजी + Eat + Able = Vegetable -

भाजी Eat Able ही "Vegetable" है। भाजी + Eat + Able = Vegetable. यानी भाजी खाने योग्य है। भाजी से अपभ्रंश होते हुए, शब्द बना "Vegi". भाती है जो "जी" को, उसको कहते हैं "भाजी"। भाती + जी = भाजी। आप वही भाजी खाते हैं, जो आपके जी को भाती है, इसलिए लोग यह पता लगाते हैं कि, "इनको कौन कौन सी भाजी पसंद है, जिससे इनकी पसंद के अनुसार, वही वही भाजी बनाई जाए"। जहां पर Eat Able वस्तुओं को, रखा जाता है, तो Eat Able से, मिलाकर शब्द बना "Table". Eat + Able = Table. तो जो जो वस्तुएं, खाने के योग्य होती थीं, उन्हीं

वस्तुओं को, Table पर रखा जाता था। "सब्ज़" को खाने से "जी" बनता है। सब्ज़ + जी = सब्ज़ी। सब्ज़ी खाने से "जी" हरा-भरा रहता है।

173. भास + कर = भास्कर -

जब व्यक्ति को भास होने लगे, अपने कर का, तब उसे भास्कर कहते हैं। भास + कर = भास्कर। कर = हाथ। क्योंकि लोग कहते हैं कि, "अरे ! इतना घना अंधेरा था कि, हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था" और जब हाथ को हाथ का, भास होने लगे, तो उसे कहते हैं, "भास्कर"।

174. बहुत + रुपया = बहुरूपिया -

जिसके पास बहुत रुपया होता है, उसे बहुरूपिया बन जाना पड़ता है। बहुत + रुपया = बहुरूपिया। क्योंकि जिसके पास बहुत रुपया है, अगर लोगों ने उसे पहचान लिया तो, उससे रुपया निकालने के लिए, बहुत कुछ कर सकते हैं। इसलिए बहुत रुपयों वाला व्यक्ति, बहुत सारे रूप बनाकर, अपने बहुत से रुपयों को बचा लेता है। अपने भीतर के डर को, कभी किसी को भान भी नहीं, होने देता है, इसलिए उसे भाण्ड भी कहते हैं। यह भाण्ड ही भिन्न-भिन्न रूपों को, धारण करके बहुरूपिया बनता है और, अधिक रुपयों का उपार्जन करता है।

175. Boy + Cotton = Boycott -

एक जमाने में, जो Boy Cotton पहनकर आता था, उस Cotton पहने हुए Boy का, Boycott किया जाता था। Boy + Cotton = Boycott. और तब Cotton के सूत को, तकली एवं चरखे से कातकर, इतना सम्मानजनक बना दिया गया कि, सभी लोग Cotton पहनने लगे। और Cotton के Suite बनने लगे, जो सब पर Suite करते थे और, सूत से बने हुए Suite को पहनकर, लोग Able हो गए और, Suitable कहलाते थे। Suite + Able = Suitable. सूत को Cotton कहते हैं। सूत से सूती बनता है और, सूती को Suite लिखा जाता है, जिसमें "E" को Silent रखा है। सूती > सूटी > Suite. क्योंकि पुराने से भी पुराने समय में, जो सूत का कपड़ा पहनता था, उसे "सूत" कहा जाता था। उस सूत के कपड़े पहनने वाले का भी, उस समय "Boycott" किया जाता था। इसलिए सूत का कपड़ा पहनने वाले, कर्ण का Boycott भी बहुत स्थान पर, "सूतपुत्र" बोलकर किया गया था। क्योंकि सूत से बने हुए सूती कपड़े, गरीब लोग ही पहनते थे। इसलिए सूत यानी Cotton को पहने हुए, "कर्ण" नामक "Boy" का "Boycott" किया गया था।

176. भगवान + भूत = भभूत -

भगवान से जब भूत भी मिल जाता है, तब भूत भी "भभूत" बन जाता है। और लोगों के द्वारा तन पर, लगा लिया जाता है, यह भभूत ही लोगों की रक्षा करता है। भगवान + भूत = भभूत। "Telcom Powder" तो, भभूत का ही एक रूप है। जिस तरह से Telcom Powder चेहरे पर, लगा लिया जाता है, उसी तरह से भभूत भी तो, माथे पर लगा लिया जाता है। आखिर हैं तो दोनों Powder ही।

177. ब्रह्म + अण = ब्राह्मण -

ब्रह्म एवं अण का ज्ञान रखनेवाला ही "ब्राह्मण" है। ब्रह्म + अण = ब्राह्मण।

ब्रह्म = जो विस्तारित होता हुआ Biggest Particle है। जिसे "Cosmos" कहते हैं। जो कोष एवं

मोक्ष दोनों देता है। Cosmos को ही "योगक्षेम" कहा जाता है। कोष + मोक्ष = Cosmos. इसी Cosmos के पास हम अर्जी भेजते हैं कि, "हमें Energy दे। इसलिए इसे Cosmos Energy कहते हैं।

अण = सबसे छोटा Particle, जिसे Atom कहते हैं। Atom > ऑटोम > आतोम > आत्म > आत्मा । जो ऊँ के पास रहता है। इसलिए उसे Atom कहा जाता है। At + Om = Atom. जिसे अणु भी कहा जाता है। जिसे "Un" भी कहा जाता है। जैसे – Unlimited यानी असीमित।

ब्रह्म एवं अण के मिलन से, प्रकृति का निर्माण होता है। पुरुष के पास ब्रह्म रहता है, स्त्री के पास अण रहता है। इसलिए पुरुष के द्वारा ब्रह्मचर्य व्रत किया जाता है और स्त्री के द्वारा अण व्रत किया जाता है। ब्राह्मण के द्वारा आत्मा की कुंडली बनाकर, उस आत्मा का संपूर्ण ज्ञान, प्राप्त कर लिया जाता है। इसलिए ब्राह्मण उस आत्मा के, गुण-दोष बता देता है। ब्राह्मण पंचांग बनाकर, संपूर्ण ब्रह्माण्ड का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। इसलिए ब्राह्मण ग्रह-नक्षत्रों की, बातें बताता है। यानी जो आत्मा एवं ब्रह्म, दोनों का ज्ञान रखता है, वह है "ब्राह्मण" । ब्राह्मण स्नान के द्वारा, अपने शरीर को साफ रखता है। ब्राह्मण योग आसन प्राणायाम के द्वारा, अपने भीतर के शरीर को साफ रखता है, ब्राह्मण जप के द्वारा अपने, मन-अंतःकरण को साफ रखता है। ब्राह्मण त्रिकाल संध्या में, धारणा-ध्यान के द्वारा, अपनी आत्मा को साफ रखता है। ब्राह्मण प्रतिदिन समाधि में अपनी आत्मा को परम से मिलाता है, और परमात्मा का आनंद पाता है। इस तरह से ब्राह्मण अपने, शरीर, अंतःकरण, आत्मा को, स्वच्छ एवं स्वस्थ रखता है। ब्राह्मण दो प्रकार के होते हैं, एक ब्राह्मण वह होते हैं, जो पंचांग को बनाने में लगे रहते हैं, और ब्राह्मण्ड में हो रही, खगोलीय घटनाओं पर दृष्टि रखते हैं। तथा दूसरे ब्राह्मण वह होते हैं, जो लोगों की जन्म-कुंडली बनाते हैं, और लोगों के जीवन पर दृष्टि रखते हैं। इसी दृष्टि को ही "ज्योतिष" कहते हैं, जो कि "ईश्वर की ज्योत" होती है। ज्योत + ईश्वर = ज्योतिष। इस प्रकार की विद्या को प्राप्त करने के लिए, ब्राह्मण लहसुन-प्याज, मांस, मछली, मदिरा, आदि स्वादिष्ट, भोजन की वस्तुओं का त्याग कर देते हैं। तथा मुद्रा (धन) का संग्रह नहीं करते हैं, केवल मात्र दक्षिणा लेते हैं क्योंकि वह अपनी विद्या में दक्ष होते हैं। इसलिए उस विद्या को बताने की, Fees (दक्षिणा) लेते हैं। ब्राह्मण अधिकतर ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, क्योंकि अपनी शक्ति एवं स्मृति दोनों को, बचाए रखने के लिए, ब्राह्मण मैथुन से लगभग दूर ही रहते हैं। इन सब को त्यागकर, ब्राह्मणों में आलस्य एवं प्रमाद नहीं आता है। और कैसा भी मौसम हो, ब्राह्मण ब्रह्म मुहूर्त से पहले उठकर, स्नान करके, संध्या पूजन करके, अपने शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन में लग जाते हैं। तनिक भी आलस एवं प्रमाद नहीं दिखाते हैं। ब्रह्म एवं अण के जोड़ को ब्राह्मण कहते हैं, तो ब्राह्मण में ब्रह्म की विस्तारिता भी होती है, और अण का संकुचितपन भी होता है। ब्राह्मण सदा से ही, ब्रह्माण्ड में होने वाली घटनाओं से, लोगों को पहले से ही अवगत करवाकर, लोगों की रक्षा एवं, लोगों का संवर्धन ही करता आया है। भले ही ब्राह्मण ने अपना जीवनयापन, भिक्षा मांगकर किया है, किन्तु कभी भी अपने ज्ञान एवं, ज्ञान प्रदान करनेवाले शास्त्रों का, दुरुपयोग नहीं होने दिया है। चाहे इसके लिए ब्राह्मणों ने, शास्त्रों को याद कर लिया एवं, अपने कंठ में कंठस्थ कर लिया। किन्तु कभी भी अपने शास्त्रों को, नष्ट नहीं होने दिया।

इसलिए यह शास्त्र आज भी सुरक्षित हैं, और संपूर्ण विश्व में, भारत के ज्ञान के द्वारा, भारत की प्रतिष्ठा करवा रहे हैं। भारत के शास्त्रों को पढ़कर, आज संपूर्ण विश्व में, भारत का सम्मान यह बोलकर, किया जाता है कि, "जिस ज्ञान को आज हम जान रहे हैं, वह ज्ञान तो भारत में, वर्षों पहले ही प्राप्त कर लिया गया था" । इसलिए भारत के पाणिनी, कणाद, पातञ्जली, वेव्यास, कपिल, जैमिनी, गौतम, विश्वामित्र, वशिष्ठ, गर्ग, अत्रि, श्रृंगी, दुर्वासा, गार्गी, याज्ञवल्क्य, उद्दालक, जाबालि, चरक, सुश्रुत आदि, ब्रह्रर्षि का पद सम्मान एवं प्रतिष्ठा पाते हैं, तथा ब्राह्मण कहलाते हैं। इन ब्रह्मर्षियों के लिखे शास्त्रों के कारण ही, सम्पूर्ण विश्व में, भारत को सम्मान प्राप्त होता है। एवं सम्पूर्ण विश्व आज भी, इनके सिद्धान्तों पर पुनर्शोध कर रहा है। और उस पुनर्शोध से, सभी पृथ्वीवासियों का भला हो रहा है।

178. Break + Fast = Breakfast –

जो Fast करते हैं, वह जब Fast को Break करते हैं, तब उसे ही Breakfast कहते हैं। Break + Fast = Breakfast. Fast में खाया जानेवाला Food ही, Fast-food कहलाता है।

179. भगवान + यह = भय -

"भगवान यह कब हटेगा" ? भगवान और यह को मिलाकर ही, "भय" शब्द बनता है।

180. भू + चाल = भूचाल –

और सब ग्रहों की चाल तो, बदली जा सकती है, किन्तु "भू" की चाल नहीं, बदली जा सकती है। क्योंकि "भू" अपनी चाल, स्वयं बदलती है। और "भू" के द्वारा अपनी, चाल बदलने पर, "भूचाल" आ जाता है। भू + चाल = भूचाल। और "भूचाल" की कोई गणना भी नहीं है। इसलिए भूचाल का Prediction, नहीं किया जा सकता है। और सब ग्रहों का तो Prediction, किया जाता है। क्योंकि सब ग्रहों की गणना उपलब्ध है। भूचाल का प्रभाव नहीं पड़े, इसके लिए मकान का निर्माण करते समय, वास्तु पुरुष को नीचे रखा जाता है। वास्तु पुरुष कांसे का बनाया जाता है। भूचाल की उठने वाली तरंगों को, वह कांसे का वास्तु पुरुष अपने में सोख लेता है। इस तरह से वह मकान, भूचाल से होने वाले नुकसान से बच जाता है। साथ ही यह वास्तु पुरुष, पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण से आनेवाली तरंगों को भी, अपने में सोख लेता है, और आकाश में चमकनेवाली बिजली की किरणों को, अपने में समाहित कर लेता है। इस तरह से भूचाल की चाल को, वास्तु पुरुष से Control किया जाता है।

181. भय + रव = भैरव -

वर का उल्टा रव होता है, रव का अर्थ उजाला होता है, उजाला सूर्य की किरण से होता है। किरण को रवी कहा गया है, रव के होने पर भय दूर हो जाता है। इसलिए इसे भैरव कहते हैं। भय + रव = भैरव। रवी के होने पर, भय दूर हो जाता है, इसलिए इसे भैरवी कहते हैं। भय + रवी = भैरवी। सूर्य की किरण वाले दिन को, रवीवार कहते हैं। बाकी छः दिनों को, उनके ग्रहों के उजाले के नाम से, जाना जाता है। रव प्रातःकाल होता है, क्योंकि रवी प्रातःकाल को आती है। इसलिए प्रातःकाल को, भैरव-भैरवी का समय कहते हैं। यानी सूर्य की किरण के पृथ्वी पर आने का समय। जिसे "ब्रह्म मुहूर्त" भी कहते हैं। वन के रव को रावण कहते हैं।

182. बौद्ध + इक = बौद्धिक –

बुद्धत्त्व को उपलब्ध, बहुत सारे लोग ही बौद्ध कहलाते हैं। यह बौद्ध लोग जब एक हो जाते हैं, तब उन्हें "बौद्धिक" कहते हैं। बौद्ध + इक = बौद्धिक। बौद्धिक = Intellectual. ध्यान (Meditation) करने से बोध होता है। बो + ध्यान = बोध। बोध को प्राप्त हुए को, बुद्ध कहा जाता है। इसलिए बुद्ध बनने के लिए, ध्यान (Meditation) करना चाहिए और बुद्ध बनने पर बुद्धि की प्राप्ति होती है, बुद्धि वाले को मान मिलता है, और बुद्धि वाला सभी को मान देता है। इसलिए बुद्धिमान कहलाता है। बुद्धि + मान = बुद्धिमान। बुद्धिमान की बात मानी जाती है, उसे बुद्धिमानी कहते हैं। बुद्धि + मानी = बुद्धिमानी। और बुद्धिमानी इसी में है कि, बौद्ध लोग इक होकर रहें और, बौद्धिक कहलाएं। बौद्धिक होना ही आजकल, सम्पदा माना जाता है। बौद्धिक सम्पदा = Intellectual Property. इसलिए Computer के बौद्धिकत्त्व को भी, "Intel Lectual" कहते हैं। और Computer के Intel Lectual की, Power से सभी वाकिफ हैं। क्योंकि आज का विश्व, Intel पर ही चल रहा है। Intel + Lectual = Intellectual. इसलिए Computer का Intel, पूरे Computer को इक करके रखता है। और बौद्ध भी सभी को, इक करके रखते हैं। इसलिए बौद्धिक लोग हमेशा, इक होकर रहते हैं। बौद्धिक = Intellectual.

183. विद् + ध्यान = विद्या –

विद् हमेशा ध्यान से उपलब्ध होता है। विद् + ध्यान = विद्या। विद् = ज्ञान। विद् को ज्ञान कहते है। और ध्यान करने पर, ज्ञान की उपलब्धि होती है, इसी ज्ञान को विद्या कहते हैं।

184. भव + Wish = भविष्य -

आपकी भावी इच्छा पूरी हो। भव + Wish = भविष्य। आपकी भावी इच्छा पर, आपका भविष्य टिका है। जैसी आपकी भावी इच्छा होगी, वैसा ही आपका भविष्य होगा। इसलिए इच्छाओं को नियंत्रित करो, और इच्छाओं को सम्पादित करो। इच्छाओं को एक क्रम में रखो। वर देते समय में भी, यही कहा जाता है कि, "जैसी तुम्हारी इच्छा होगी, वैसा ही होगा"। इसलिए सभी का भविष्य, सभी की इच्छाओं पर निर्भर करता है। जिसे आजकल की भाषा में कहते हैं कि, "जैसा सोचेंगे, वैसा हो जाएंगे"। इसलिए अपनी सोच को नियंत्रित करो।

185. Busy + Ness = Business -

व्यक्ति को अगर अपने आपको, Busy रखना है, तो व्यक्ति को Ness के साथ जुड़कर रहना चाहिए। Busy + Ness = Business. Ness = सत्ता। इससे व्यक्ति Busy भी रहता है, और व्यक्ति का Business भी, चलता रहता है। Business चलाने का सबसे कारगर, और सरल तरीका यही है। इसलिए व्यक्ति "सत" से आनेवाली, सत्ता से जुड़कर रहता है और, और Business करता रहता है। सत + आनेवाली = सत्ता। सत से ही सत्ता आती है। सत = परमात्मा। इसलिए Business चलाने वाला परमात्मा से, जुड़ा रहता है और Busy रहता है, तथा अपना Business चलाता रहता है। और कहता है कि, "मैं तो इतना Busy हूं कि, मुझे परमात्मा का नाम लेने की भी, फ़ुरसत नहीं है"।

186. बूंद + डराई = Boundary –

पहली - यह बूंद जहां Dry हो जाएगी, वही हमारी Boundary हो जाएगी। दूसरी - डराई देने तक।

जैसे किसी को डरा कर कहा जाता है कि, "देख ! बस वहीं तक जा सकता है, उससे आगे मत जाना, उससे आगे हमारे दुश्मनों की सरहदें हैं" । और भी कई तरह से डरा दिया जाता है । इस तरह से दो प्रकार से, Boundary का अर्थ है।

187. Brain Wash = चित्त शुद्धि, निर्मल मन –

चित्त जब शुद्ध हो जाता है, तब उस शुद्ध चित्त को, Brain Wash कहा जाता है । शुद्ध चित्त में ही निराकार ब्रह्म का, ज्ञान होता है। और अद्वैत ब्रह्म का अनुभव होता है। सारे के सारे शास्त्र, चित्त शुद्धि के लिए ही लिखे गए हैं। जो साधना, तपस्या, ध्यान, आदि के द्वारा मलिन मन को, साफ-सुथरा कर देते हैं। जिससे मन निर्मल हो जाता है। इसी निर्मल मन को ही, Brain Wash कहा गया है। तभी तो कहा गया है कि, 'निर्मल मन जन सो मोहि पावा' । यानि जिसका Brain, Wash होकर के शुद्ध हो जाता है, वही साधक निराकार ब्रह्म को, प्राप्त कर लेता है। Brain = मन, चित्त, अंतःकरण। Wash = साफ-सुथरा, शुद्ध। अतः निराकार ब्रह्म की प्राप्ति के लिए Brain का Wash होना अत्यावश्यक है, यानि निराकार ब्रह्म की प्राप्ति के लिए, मन का शुद्ध होना अत्यावश्यक । यानि चित्त शुद्धि परमावश्यक है । यज्ञ, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान करवाकर, सबसे पहले अंत:करण की शुद्धि की जाती है। ध्यान करने के बाद समाधि में, निराकार ब्रह्म की अनुभूति होती है। और समाधि में ही निराकार ब्रह्म के द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाता है। निराकार ब्रह्म के द्वारा प्रदत्त यह ज्ञान ही, नये आनेवाले साधकों को, साधना करने के बारे में, Information (जानकारी) देता है। एवं नये साधकों के लिए 'शास्त्र' कहलाता है। शास्त्र से केवल Information (जानकारी), मिलती है। किन्तु ज्ञान की प्राप्ति के लिए तो, अंत:करण को शुद्ध करना पड़ता है। यानि 'Brain Wash' करना ही पड़ता है।

188. भार + रीता = भारत –

भार जहाँ पर रीता हो जाए, वह है "भारत" । भार + रीता = भारत। रीता = खाली। रीता से रीत शब्द बना है, और रीत को ही ऋत कहा गया है। इसी ऋत को ही ऋतु कहा गया है। भार + ऋत = भारत। भारत में छः ऋतुएँ होती हैं। इन छः ऋतुओं में, प्रकृति अपने भार को, जिस भूमि पर रीता करती है, उस भूमि को "भारत" कहते। क्योंकि जब वर्षा आती है, तब वर्षा को रीता करती है। जब सर्दी आती है, तब सर्दी को रीता करती है। इसी तरह से गर्मी, बसंत, शरद, शिशिर ऋतुएँ आती हैं, और अपने अन्दर के भार को, रीता करती हैं। इसी रीता से रीत शब्द बना है। यानी उस रीतने से एक रीत बन जाती है। और इसी रीत को ऋत भी कहा गया है। ऋत से ही इसे "ऋतु" नाम दिया गया है। तो रीतने शब्द को ऋतु कहा गया, इसी ऋतु के आने और जाने के समय को, याद रखने के लिए रीत बनाई गई हैं। रीत से ही रीति बनी है। इसे ही रीति-रिवाज़ कहते हैं।

Revive + वाज़ = रिवाज़ –

अपने आपको पुनः प्रकट करना। यानी अपने आपको पुनः नया बनाना। यानि ऋतु के आने पर, प्रकृति अपने आप पुर्निजीवित होकर, प्रकट हो जाती है। और मनुष्य भी उसी प्रकार की, रीत या रीति को करके, पुनःउर्जावान हो जाता है। इसीलिए अपने आपको Revive करके, वाज़ करने के लिए

ही, यह रीति-रिवाज़ बने हैं। यानी जब कोई पुरानी ऋतु जाती है, और नई ऋतु आती है तो, उस समय एक रीत मनाई जाती है, जिसे तीज़-त्योहार या Festival, या उत्सव का नाम दिया गया।

फल + ईष्ट = Feast –

यानी उस ऋतु के फल को, सबसे पहले अपने ईष्ट को चढ़ाया जाता है। उसके बाद उस ऋतु में पैदा होने वाली, वस्तुओं को सबको खिलाया जाता था। यानी नई ऋतु के स्वागत में, Feast दी जाती थी। यानी उस ऋतु के फल को, सबको खिलाया जाता था। जिसे Festival कहा जाता है। यह Festival भारत में वर्ष में, बहुत बार आते हैं। इसीलिए भारत को त्योहारों का देश कहा गया है। ईष्ट को ही East कहा जाता है।

ईष्ट = East –

इसलिए पूर्व दिशा को East कहा जाता है। क्योंकि पूर्व दिशा में आनेवाला सूर्य ही, सबका ईष्ट होता है। इसलिए सूर्य ही सबका ईष्ट होता है। सूर्य के चारों तरफ घूमने के कारण ही, पृथ्वी पर ऋतुएँ आती हैं। इन्हीं ऋतुओं के कारण पृथ्वी पर, जीवन का चक्र चलता है। इसलिए सूर्य को ईष्ट कहा जाता है। भारत में ही वर्षा अपने समय से आती है, इसलिए इसे भारतवर्ष कहते हैं।

भारत + वर्षा = भारतवर्ष –

क्योंकि वर्षा के आने और जाने से ही, भारत में वर्ष का निर्धारण होता है। इसलिए भारत में छः-छः महिने के, Semester होते हैं।

Same + स्तर = Semester –

इस भूमि पर अपने भार को, रीता करने से, इस भूमि का नाम "भारत" है।

189. भला + Lie = भलाई -

किसी के भला करने के लिए, भले ही Lie बोलना पड़े, तो Lie बोल दो, इससे किसी की भलाई ही होती है। भला + Lie = भलाई।

190. बुद्ध = बुत -

बुत के बुते ही किया जाता है। बुत तो बुद्ध का ही अपभ्रंश है। बुद्ध = बुत। ध्यान में बैठे हुए बुद्ध को, कालान्तर में बोलते-बोलते बुत बोला गया। जब व्यक्ति कोई कार्य करता था, तो बुद्ध के भरोसे करता था। इसलिए बुद्ध का भरोसा ही आगे चलकर, बुत से बुते हो गया कि, 'किसके बुते करोगे' ?

191. भूला-भटका -

जो भूल जाता है, वही भटक जाता है। इसे ही कहते हैं 'भूले-भटके'। आदमी यह भूल जाता है कि, उसे भूमि में लय होना है। भूमि + लय = भूल। और आदमी भगवान और टके में, भटक जाता है। भगवान + टका = भटक। यानि आदमी ज़िन्दगी भर, टका कमाने में अपने आपको, व्यस्त कर लेता है। और जब टका काम नहीं आता है, तब आदमी अपने आपको, भगवान में अटका लेता है कि, भगवान की धरती पर ही रहना है, तो भगवान को पकड़े रहो।

192. Brahamic Religion और Abrahamic Religion -

ब्राह्मण का धर्म है वह है Brahamic Religion. जो ब्राह्मण का धर्म नहीं है, वह है Abrahamic

Religion.

193. बास + अन्न = बासन -

जिसमें से बास आती है अन्न की, उसे बासन कहते हैं। बास + अन्न = बासन। इन्हीं बासन को मांझना होता है। बासन को मांझने से व्यक्ति का, मान झर जाता है। मान + झर = मांझना।

194. भगवान + क्त = भक्त -

भगवान में निष्ठा रखनेवाला व्यक्ति, भक्त कहलाता है। भगवान भक्त की रक्षा करता है, इसलिए भक्त भगवान में निष्ठा रखता है। भगवान + क्त = भक्त।

॥ क्तक्तावतु निष्ठा ॥ ॥ पाणिनि अष्टाध्यायी १.१.२६ ॥

और भगवान भक्त की कठिनाइयों को, आदि से लेकर अंत तक सहता है।

॥ आदिरन्त्येन सहेता ॥ ॥ पाणिनि अष्टाध्यायी १.१.७१ ॥

195. भान + डर = भांड - जो भान लेता है, वही डर फैलाता है, इसलिए उसे भांड कहा जाता है।

196. भाव + ईश्वर = भविष्य -

भाव और ईश्वर से भविष्य निर्धारित होता है। भाव + ईश्वर = भविष्य। व्यक्ति का भविष्य दो बातों पर, निर्भर करता है। एक व्यक्ति के भावों पर, इसलिए कहते हैं कि, जैसा सोचेंगे वैसा हो जाएंगे, इसलिए दूसरों के भावों को समझनेवाले उस व्यक्ति का भविष्य जान लेते हैं, इसलिए कुशल लोग अपने भावों को प्रकट नहीं करते हैं बल्कि छुपा लेते हैं। ईश्वर वाले में लोग कहते हैं कि, जैसी ईश्वर की इच्छा होगी, वैसा हमारा भविष्य निर्धारित होगा।

197. बुर + आए = बुरा –

साधु और गृहस्थी में बस एक ही फर्क है, गृहस्थी जिस क्षणिक आनंद के लिए, अपनी ऊर्जा को गंवा देता है, साधु उसी आनंद के लिए, अपनी ऊर्जा को बचा लेता है। गृहस्थी अपनी ऊर्जा को खर्च करके, उस आनंद का अनुभव लेता है। गृहस्थी जिसे प्रेम कहता है। साधु अपनी ऊर्जा को बचाकर, उस आनंद का अनुभव करता है। साधु जिसे साधना कहता है। बस इतना ही फर्क है, साधु और गृहस्थी में। इसलिए साधु बुरा नहीं सुनता है, साधु बुरा नहीं सूंघता है, साधु बुरा नहीं देखता है, साधु बुरा नहीं खाता है, साधु बुरा नहीं छूता है। साधु बुरा नहीं सोचता है। साधु बुरी जगह नहीं जाता है, साधु बुरा कार्य नहीं करता है, साथ बुरा नहीं बोलता है, यानि साधु उन कार्यों को नहीं करता है, जिन कार्यों को करने से, बुर में जाया जाता है। बुर + आए = बुरा। जो कार्य बुर की तरफ जाने का, विचार मन में उठाए, उस कार्य को सोचना नहीं है, और ना ही उस कार्य को करना है। किन्तु गृहस्थी उसी कार्य को, करने की सोचता है, और उसी कार्य को करता है, जो कार्य बुर की तरफ ले जाता है। इसलिए गृहस्थी के प्रत्येक कार्य, स्त्री को लुभाने के लिए होते हैं। यानि गृहस्थी येन-केन प्रकारेण, स्त्री को प्रसन्न करना चाहता है। क्योंकि स्त्री की बुर ही उसे, क्षणिक आनंद देने का काम करती है। इसलिए गृहस्थी के कार्य को, काम कहा जाता है। गृहस्थी इस क्षणिक आनंद के लिए, बुरे से बुरा काम करने को तैयार हो जाता है। क्योंकि इस काम को करने के बाद, जो धन प्राप्त होगा, उस धन को स्त्री को देकर, स्त्री की बुर से, क्षणिक आनंद की प्राप्ति करेगा। इसलिए गृहस्थी काम को, उद्दीप्त

करनेवाले वाले, भोज्यपदार्थों को खाता है। और साधु ऐसे भोज्यपदार्थों को खाता है, जिनको खाने से काम की उत्पत्ति नहीं होती है। इस तरह से यह गृहस्थी और, साधु में फर्क होता है।

198. बताया + धाई + ने = बधाई -

धाई के द्वारा बताई गई बात को, बधाई कहते हैं। जब लोग यह जानने को उत्सुक रहते हैं, कि क्या हुआ है ? तब धाई बाहर निकलकर बताती है कि, 'यह हुआ है'। तब जो बताया धाई ने, उसे ही बधाई कहते हैं। बताया + धाई + ने = बधाई। तब लोग यह कहने लगते हैं कि, 'यह बताया धाई ने, सुनकर अच्छा लगा' तब कालांतर में 'बताया धाई ने' का, अपभ्रंश होकर 'बधाई' शब्द हो गया।

199. भार + यह = भार्या -

जिसका भार व्यक्ति के ऊपर होता है, उसको भार्या कहते हैं। भार + यह = भार्या। इसलिए व्यक्ति कहता है कि, 'अब ! यह भार भी है मेरे ऊपर, इस बार को मुझे ही उठाना है'।

200. बचे = बच्चे -

'और ! कितने बचे', पिछले जमाने में बहुत से, बालक पैदा होते थे। तो जब कोई, काफी समय के बाद आता था, तो वह पूछता था कि, 'और ! कितने बचे हैं'। क्योंकि उस जमाने में बहुत से बालक, पैदा होकर मर जाते थे। यही बचे शब्द आगे चलकर बच्चे बन गया। बचे = बच्चे।

201. बीड़ा उठाना -

पहले जमाने में, किसी भी कार्य को करने के लिए, पान के बीड़े रख दिये जाते थे। तब यह कहा जाता था कि, "जिस-जिस को यह कार्य करना है, वह-वह यह पान का बीड़ा उठा ले"। तो जो लोग उस कार्य को, करना स्वीकार करते थे, वह लोग पान का बीड़ा उठा लेते थे, वही कार्य को करने का बीड़ा उठाते थे। उन्हीं के मुंह में पान शोभा पाता था। इसलिए यह कहावत भी बन गई कि, 'इस काम का बीड़ा कौन उठाएगा' ? इसलिए पान का महत्त्व बहुत है, इसलिए प्रत्येक संकल्प में पान रखा जाता है।

202. भव + Wish = भविष्य –

भव कह लो या Wish कह लो, एक ही बात है। व्यक्ति चाहता है कि, 'ऐसा ही हो'। इसलिए वर भी दिया जाता है कि, 'ऐसा ही हो'। यानि व्यक्ति यही चाहता है कि, 'उसकी Wish पूरी हो'। भव से भाव बन जाता है, और जैसा भाव होता है, वैसा ही भविष्य हो जाता है। Wish के करने के लिए, वेष वैसा पहनना प्रारंभ हो जाता है, और Wish पूरी हो जाती है।

203. भीतर का संगीत -

भीतर का संगीत, ध्यान में सुनाई देता है, इस संगीत की अभिव्यक्ति, जब बाहर आती है, तब नृत्य खुद-ब-खुद होता। और इसे ही कहते हैं, ऐसी लागी लगन, मीरा हो गई मगन। बस भीतर का संगीत सुनो और मगन हो जाओ। फिर अभिव्यक्ति जो भी हो, नृत्य के रूप में, कविता के रूप में, गीत के रूप में, किसी भी रूप में। वह भीतर परमात्मा के संगीत को सुनने के बाद, ऐसा ही होता। ऐसे दर्शन कभी-कभी ही होते हैं, इसलिए इन्हें परमात्मा के संगीत पर, नृत्य करते हुए देखकर, आपने परमात्मा के दर्शन कर लिए, ऐसा अनुभव इस क्षण आपको हो रहा।

204. बुद्धि + मान =बुद्धिमान –

बुद्धि की जो मानकर चलता है। वह ही बुद्धिमान होता है। बुद्धि + मान =बुद्धिमान। इसलिए जिसको मान चाहिए, उसे बुद्धि की माननी चाहिए। क्योंकि बुद्धि तो बुद्ध की धि होती है।

C

1. काल + लोरी = Calorie –

लोरी ही काल से बचाती है। लोरी गाने से Calorie Control में आ जाती है।

2. Chill + मन = चिलमन - Chill (ठंडा) मन ही चिलमन है।

3. कम्पन + शेष + अन्न = Compensation -

शेष नाग के हिलने-डुलने से पृथ्वी में कम्पन होता है, जो बचा हुआ अन्न होता है, उसे सभी में बाँटने को Compensation कहते हैं।

4. कला + पसंद = Clap -

कला पसंद आने पर, सभी लोग Clap करते हैं। कला + पसंद = Clap. Cla + P = Clap. जब किसी को कोई, कला पसंद आ जाती है, तब वह ताली बजाता है। इसीलिए कलाकार कहते हैं कि, "आपको कला पसंद आये तो, ताली बजाईये" और दर्शकों से बार-बार, ताली बजाने के लिए कहते रहते हैं।

5. Counter Attack =

बैंक में जब डाकू डाका, डालते थे। तब बैंक में डाकुओं की, गोलीबारी का जबाव देने के लिए, जो फाईरिंग होती थी। उसे Counter Attack कहते थे। क्योंकि बैंक में, केवल Counter पर बैठनेवाले, व्यक्ति के पास ही, बंदूक होती थी। और वही व्यक्ति जब, डाकुओं पर गोली चलाता था। तब उसे Counter Attack कहते थे।

6. छान + नल = Channel -

पानी को छानने के लिए, नल का पूरा Channel बिछाया जाता है।

7. कौन + व्रत = Convert -

व्रत किसी को भी, Convert कर देता है। कौन + व्रत = Convert. इसीलिए सोच-समझकर, व्रत करना चाहिए। क्योंकि व्रत करने के बाद, आपके शरीर, मन, आत्मा में, परिवर्तन आ जाता है। यह परिवर्तन ही, Conversion कहलाता है। कौन + Version = Conversion. जैसे कि हम पूछते हैं कि, कौन-से Version का है ? जैसे Version पर Version, नये-नये परिवर्तन के साथ, आते-जाते हैं, उसी प्रकार नये-नये Version, व्यक्ति के जीवन में, आते-जाते हैं और व्यक्ति Upgrade एवं, Update होता जाता है। व्रत को व्यक्तिगत रूप से, करने पर, केवल उसी व्यक्ति में, Conversion आयेगा, जो व्यक्ति व्रत करेगा और इससे उसके साथ वाले, Update एवं Upgrade, नहीं होंगे और व्रत करनेवाला व्यक्ति, उन व्रत न करनेवालों से, अपने आपको श्रेष्ठ एवं, ऊँचा समझेगा। इस तरह दोनों के आचार-विचार में भिन्नता आ जाएगी और लाख कोशिश करने पर भी, एकता नहीं आ पाएगी। व्रत को सामूहिक तौर पर, करनेवाले सभी व्यक्ति, एक साथ Update एवं, Upgrade हो जाएंगे। सामूहिक रूप से व्रत, करनेवाले व्यक्तियों के, आचार-विचार एक से रहते हैं, इससे उनमें एकता रहती है। इसीलिए व्रत करने से पहले, यह सोच लीजिए कि, अगर आपको Convert होना

है, तो व्रत कीजिए।

8. कष्ट तो दिया = Custodian -

जब कोई व्यक्ति किसी को सुधारता है, तब वह व्यक्ति कहता है कि, "थोड़ा कष्ट तो देंगे, पर तुम अच्छे हो जाओगे"।

9. चकमा देना –

Cheque में देना ही चकमा देना होता है। अक्सर इसी तरह से चकमा दिया जाता है।

10. Com + Fort = Comfort -

दो ही जगह Comfort मिलती है। एक कौम में दूसरी Fort में।

11. Crow + रोष = Cross -

जहाँ Crow के द्वारा रोष को प्रकट किया जाए, उसे Cross कहते हैं।

12. चक (खेत) + कर (Tax) = चक्कर -

कोई खेत के चक्कर लगाता है। कोई कर (Tax) के चक्कर में चक्कर लगाता है।

13. कुश + न = Cushion - तकिये में कुश (काँटे) का न होना ही Cushion है।

14. Clean + Ear = Clear -

Clean your ear, is called Clear. Clean + Ear = Clear.

15. चैन = Chain -

जब तक चयन नहीं होता तब तक चैन नहीं होता है। जब तक बैग में Chain न लगा लो तब तक चैन से सो नहीं सकते।

16. चर्म = Charm - चर्म को ही Charm कहते हैं।

17. कलाई + Entry = Client -

कलाई को पकड़कर Entry करना। इसलिए कलाई पर धागा बाँधकर उसे अपना Client (यजमान) बना लेते हैं।

18. कलाई + Mate = Climate -

कलाई पकड़ना या Mate करना, यह एक ही बात है। यही Climate है।

19. कोण + Fix + Dent = Confident -

कोण (Angle) को Fix करनेवाले पर कभी भी Dent नहीं पड़ता है। कोण को फिक्स करनेवाला बन्दर डाल से नहीं चूकता है। कोण को फिक्स करनेवाले ड्राईवर की कार पर Dent नहीं पड़ता है। कोण को फिक्स करनेवाले के दाँत नहीं टूटते हैं। कोण यानि कानों को भी अपनी बात न बताने वाले ही Confident होते हैं।

20. चुनाव - चुनना नाव को यानि नाव का ही तो चुनाव करना है।

21. कंस + Tuition = Constitution -

कंस की Tuition ही, Constitution है। कंस के द्वारा ही पहला Constitution बनाया गया।

22. कंस + पाय + ऋषि = Conspiracy –

ऋषि लोगों ने कंस के साथ ही तो Conspiracy की थी। जब कंस को किसी तरह न मार पाये तो उसके दिमाग में भर दिया कि जिसे तू इतना प्यार कर रहा है, उसी बहन का आठवाँ बेटा तुझे मारेगा। बस यही Conspiracy में कंस फंस गया और गुनाह करने लगा।

23. काल + कुल + Later = Calculator -

काल, कुल और Later (बाद) में क्या हुआ। इसकी गणना के लिए Calculator होता है।

24. केश = Case -

स्त्री ने पति की कमीज पर केश (बाल) देखा जो किसी अन्य स्त्री का उसे लगा। इस बिनाह पर उस स्त्री ने अपने पति पर Case कर दिया।

25. चूना -

पानी अगर कहीं पर चूता है तो फिर वहाँ चूना लगा दो, पानी नहीं चुयेगा।

26. Cat + अ + रस्त = Cataract -

Cat के द्वारा Track को पार करने पर Cataract हो जाता है। बिल्ली के रास्ते में नहीं आना चाहिए। जब बिल्ली रास्ता काटती है, तो उसके बाद चलने पर Cataract हो जाता है।

27. केश + उल्टी = Casualty -

खाने में जब केश (बाल) आ जाते हैं, तब आदमी को उल्टी होती है।

28. 24 Carrot - 24 घण्टे तक जिसकी चमक बनी रहे।

29. चुनना + नाव = चुनाव - नाव का चुनाव करना है।

30. सीने + मा = Cinema -

सीने में क्या है? हनुमानजी ने सीना चीरकर, पहला सिनेमा दिखाया। उनके फटे सीने में भगवान राम माता सीता का Projection हुआ।

31. चाह + अर्ज = Charge -

चाह में अर्ज करता है और Charge हो जाता है। व्यक्ति में किसी वस्तु को प्राप्त करने की चाह (ईच्छा) उत्पन्न होती है। उस वस्तु को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति अर्ज (प्रार्थना) करता है। प्रार्थना करने से वह Charge (पुनर्जावान) हो जाता है. क्योंकि प्रार्थना में वह परम उर्जावान से जुड़ जाता है, जैसे मोबाइल Charge करने के लिए Socket में लगा दिया जाता है, जिससे मोबाइल सारी उर्जा को सोख लेता है। उसी प्रकार से और अपनी चाह को प्राप्त कर लेता है। Socket में लगे हुए मोबाइल से हम कोई कार्य नहीं करते हैं कि, जब तक वह Charge न हो जाए। उसी प्रकार प्रार्थना (पूजा या पाठ या ध्यान) में बैठे मनुष्य कोई भी मानसिक या शारीरिक कार्य नहीं करना चाहिए। नहीं तो Short-Circuit होकर वह पागल हो जाएगा। और दूसरे किसी अन्य व्यक्ति को भी उसे परेशान नहीं करना चाहिए। क्योंकि इससे परम उर्जावान से आनेवाला उर्जा का प्रवाह प्रभावित होता है। यह ऐसे भी है जैसे Oven में रखा खाना या Fridge में रखी Ice-Cream बार-बार खोल कर देखना।

32. कमान + डर = Commander -

कमान उसी को सौंपी जाती है, जिसका डर सभी में हो। कमान + डर = Commander. ऐसा डर जो,

Common People में हो, Common लोग उससे डरकर रहें। Common + डर = Commander. जिस व्यक्ति का, कौम के मन में, डर बैठा हुआ हो, वह व्यक्ति Commander होता है। कौम + मन + डर = Commander. कौम = देश, जाति।

33. चार + कान = चौकन्ना -

इसी को चौकन्ना होना कहते हैं, भीतर के दो कान, और बाहर के दो कान, दोनों को मिलाकर, चार कान होते हैं। चार + कान = चौकन्ना। चौ = चार। कन्ना = कान। जब चौके में पति, भोजन कर रहा होता है, तब पत्नी चूल्हे से, गरम-गरम रोटी, निकालकर देती जाती है, साथ ही, अपनी बात भी कहती जाती है। किंतु पति उस समय, हाँ हुँ बोलता रहता है। एक तो मुँह में कौर होता है, दूसरा खाते समय वह, अपने मन की सुन रहा होता है। तो भोजन करते समय, न वह पत्नी की बात, ठीक से सुन पाता है, और न ही, अपने मन की बात ठीक से, सुन पाता है। इसी समय तो पति को, चौकन्ना रहना चाहिए। चौक पर अन्न खाने के समय, चारों कान खोलकर, सुनना चाहिए। चौक + अन्न = चौकन्ना। चौक में इसीलिए, भोजन चौकी पर परोसा जाता है, और पति आसन पर बैठकर, भोजन करता है। चौक = भोजन बनाने एवं भोजन करने का स्थान।

34. Clock - काल को Lock कर दे वह Clock है।

35. Camp = कंप -

पृथ्वी पर जब कंपन होता है, तो उस कंपन में मकान न गिरे, इसके लिए Tent के Camp लगाए जाते हैं।

36. काल + अस्त्र + राल = Cholesterol -

काल का अस्त्र (हथियार) है राल। मुँह से जब लार (राल) निकलती है, सुबह सोते हुए या दिन में सोते हुए, तो समझ जाना चाहिए कि काल (मृत्यु) का अस्त्र आ गया। राल का निकलना ही Cholesterol है।

37. कोन + Troll = Control -

कान से ही Control किया जाता है। किसी के कान में कोई बात कह दो, तो वह Control हो जाता है। आजकल कौन चर्चित है, कौन आजकल Troll किया जा रहा है। आप किसी को भी Troll करके उसे Control कर सकते हैं। जहाँ तक Mind की बात है, तो उसे भी फुसलाया जा सकता है। अगर आप किसी बात को Mind कर गए तो आप उसके Control में हैं। और अगर किसी ने आपकी बात को Mind किया तो वह आपके Control में है। इसलिए लोग कहते हैं, "Mind your language". या फिर कहते हैं, "Mind मत करना यार, यह तो मैंने ऐसे ही कह दिया था"। इसलिए Mind को Control करना है, तो उसे एक कोने में फुसलाकर रखो। जैसे लोग कहते हैं कि "तू अपना दिमाग एक कोने में रख फिर मेरी बात सुन", क्योंकि व्यक्ति के अपने Mind का शोर इतना है, कि वह दूसरे की बात सुनता ही नहीं है। वह अपनी बातों से दूसरे के दिमाग को Control करना यानि बहलाना-फुसलाना चाहता है।

38. चिन्ह + Hit = चिन्हित –

जहाँ पर Hit करना होता है, उस स्थान पर एक चिन्ह लगा दिया जाता है। जैसे अलीबाबा चालीस चोर में अलीबाबा के घर को Hit करने के लिए इस "X" चिन्ह से चिन्हित किया गया था।

39. कड़ी + कुलम् = Curriculum -

कुल की पहचान कड़ी से होती है। पहले काल में गुरुकुल होते थे। जहाँ पर गाय होती थी, गाय के दूध से दही और दही से मट्ठा, और मट्ठा से कड़ी बनती थी। बस वही कड़ी पहचान होती थी, कि आप किस गुरुकुल के हैं ? कड़ी यानि गुरुकुल में कड़ी मेहनत कराई जाती थी। तो जब वह गुरुकुल से निकल कर नौकरी की तलाश में जाता था, तो उससे कड़ी बनवाई जाती थी, जिससे पता चल जाता था कि, वह किस गुरुकुल से आया है।

40. चमकती + चाम = चमचा -

चमकती है, जिसकी चाम, चमकाता है जो, दूसरों की चाम, Lucky Charm है, जो दूसरों के लिए, उसे ही चमचा, बनाया जाता है, चमकती + चाम = चमचा। चाम = Charm = चर्म।

41. Com + Unity = Community -

Com में Unity बनी रहे इसलिए Community बनाई जाती है। जिससे कौम की उन्नति होती रहे।

42. चाक + कर = चक्कर - चाक पर जब हाथ चलते हैं, तो वह चक्कर खाता है।

43. Chin + तक = चिंतक –

Chin (ठोड़ी) के नीचे हाथ रखकर तकना ही चिंतक है। चिंतक अपनी Chin के नीचे हाथ रखता है और किसी को तकता है, यही चिंतक है। इसी अवस्था को चिंतन करना भी कहते हैं।

44. चट + Knee = चटनी –

Knee (घुटने) को चट कर जाए वह है चटनी। चटनी खाने से घुटने में दर्द होता है। क्योंकि चटनी खट्टी होती है, और खट्टी चटनी से घुटने में दर्द होता है।

45. Cat + च + Up = Catch Up – Cat चड़ती है ऊपर –

बिल्ली से गाँव में दूध-दही को बचाने के लिए छींके पर रखा जाता था। बिल्ली उस दूध-दही को पकड़ने के लिए छींके के ऊपर चड़ती थी, उछलती थी, कूदती थी। उसी से Catch Up बना है।

46. चम्पी + On = Champion –

Champion की चम्पी की जाती है, जिससे Champion का दिमाग ठण्डा कर दिया जाता है।

47. कण्डी + शनर = Conditioner –

अंग्रेजों के देश में जब ठण्डी पड़ती थी, तो वहाँ पर ठण्ड को दूर करने के लिए, कण्डी (उपलों) को जलाते थे, उसे ही कण्डीशनर कहते हैं।

48. कला + अर्क = Clerk – कला आती है जिसको, अर्क निकालने की, उसे कहते हैं Clerk.

49. कम + प + उत्तर = Computer – कम परिश्रम करने पर जो उत्तर दे, वह है Computer.

50. कौम + बन्ध = Comb –

कौम को एक रखने के लिए एक ही Comb का इस्तेमाल किया जाता है। यानि जब सारी कौम एक ही कंघे का इस्तेमाल करते हैं, तो उनमें एकता रहती है।

51. कलह + ऊब = Club – घर की कलह से जो लोग ऊब जाते हैं, वह Club में जाते हैं।

52. Clean + Ear = Clear – Clean करो Ear को तो सबकुछ Clear सुनाई देगा।

53. कब + ई + Net = Cabinet –

इस Net (जाल) से कब निकलेंगे, यही Plan बनाते रहते हैं, वही Cabinet है।

54. कपट + In = Captain –

जिनके अन्दर कपट होता है, उसे ही Captain बनाया जाता है। वह Captain ही Cap पहनता है, वही उसकी पहचान होती है। ऐसे ही जो कपट करता है, उसको ही मुकुट पहनाकर राजा बनाया जाता है।

55. क्रियेत = Create – क्रिया की Create है।

56. Cutter = कुतर –

चूहे ही कपड़े कुतर एवं काट जाते हैं, उसी कुतरने से Cutter एवं Cut शब्द बना है।

57. Character = चरित्र - चरित्र ही Character है।

58. कुल + चर = Culture -

यह Culture नहीं, यह कुल चर है। आदमी के कुल एवं, चरने से, उसके Culture का, पता चल जाता है। यानी यह मनुष्य, किस कुल (परिवार) से, या किस गुरुकुल से, आया है। दूसरा यह मनुष्य, चरता कैसे है ? चरता = भोजन करता। तो आदमी का परिवार, और, आदमी के भोजन, करने का तरीका, यह बता देता है कि, "यह किस Culture का है"।

59. क्रय + जी = Crazy – जिनका क्रय करने में जी लगता है, उन्हें Crazy कहते हैं।

60. Chau + हान = Chauhan –

Chau और हान वंश वालों को Chauhan कहते हैं। चीन में Chau और Haan वंश थे। जब यह दोनों मिल गए, तब चौहान हो गये। यह चौगान खेलते थे।

61. सिर + कल = Circle –

सिर को जब कलम किया जाता है, तो सिर Circle की तरह दिखाई देता है।

62. कौन + शर्त = Concert –

कौन जीतेगा? जब यह शर्त लोग लगाते हैं, उसे Concert कहते हैं।

63. Close + Lip = Clip –

Close करना Lip को वही तो Clip है, यानि औंठों को बंद करना ही, Clip है।

64. छीं + Ink = छींक – आदमी के नाक से Ink निकलती है, जिसको छींक कहते हैं।

65. Chant = चंट - चंट लोग ही Chant करते हैं।

66. Chess + का = चसका – Chess खेलने का चसका सभी को लगता है।

67. कपट + चतुर = Captcha –

कपटी और चतुर लोगों से बचने के लिए Captcha लगाया जाता है।

68. Crow + Owl = Crawl –

Crow और Owl की तरह चलना ही Crawl कहलाता है।

69. Can + दिल = Candle = कंदील -

कंदील ही Candle है। जब किसी का दिल जीतना होता है, तब उसे Candle Dinner खिलाते हैं। यानी उस समय कहते हैं कि, "क्या मैं अपना दिल पेश कर सकता हूँ" ?

70. Cattle = काटले – जिसको काटने के लिए पालते हैं उसे ही Cattle कहते हैं।

71. कान + फंस = Confession –

कान में बात कहकर किसी को फंसाना ही Confession होता है।

72. कान + वंश = Convince –

किसी के कान में, अपने वंश की आवाज कहो, और उसको Convince कर लो। कान + वंश = Convince. कि, "तुम तो हमारे वंश के हो, तुम हमारे साथ आ जाओ"। इसलिए लोग किसी से भी, जब पहली बार मिलते हैं, तो पूछते हैं कि, "आपका पूरा नाम क्या है" ? और पूरा नाम सुनने के बाद कहते हैं कि, "अरे ! आप तो हमारे ही वंश के हैं, हम और आप तो एक ही वंश के हैं"। इस तरह से लोग "कौन से वंश के हो" ? यह पूछकर एक दूसरे को, Convince कर लेते हैं। कौन + वंश = Convince. कुंती ने कर्ण को अपने वंश की बात कहकर, Convince करने की कोशिश की थी, किन्तु कर्ण अपने वंश की बात सुनकर, भी Convince नहीं हुआ था। इसलिए किसी भी वंश की कहानी, हमेशा "Once upon a time" से, प्रारंभ होती है। यानी "एक बार हमारे वंश में ऐसा हुआ था"। ऐसा कहकर भी, वंश की कहानी सुनाई जाती है। Once = वंश। क्योंकि वह कहानी उस वंश की होती है। वंश की यह कहानियां, पीढ़ी दर पीढ़ी वंश में कहते सुनते, अवलियां बन जाती हैं। जिससे वंशावली बन जाती है। वंश + अवली = वंशावली।

73. Cap + शूल = Capsule –

जब किसी को काँटा खिलाना होता था। तो खाने में उसे Capsule में रखकर खिला दिया जाता था। Capsule तो पिघल जाता था, परंतु काँटा उसकी आँतों को काट देता था और जख्म कर देता था। बाद में वह काँटा भी पिघल जाता था। इससे जो दर्द उठता था, उसे ही शूल कहते थे।

74. Cunning = कानिंग -

हर जगह अपने कान डालते हैं, वह Cunning हो जाते हैं। चालाक व्यक्ति हर किसी की बात को सुनना चाहता है।

75. चटपट + Eat = Cheat –

Eat (खाने) में कुछ भी मिलाकर व्यक्ति Cheat करता है। यानि जब कोई पहलवान किसी और पहलवान से तगड़ा होता है, तो दूसरे पहलवान के लोग उसके खाने में ऐसी वस्तु मिला देते हैं, जिससे वह जल्दी थक जाता और चित्त हो जाता है, यही Cheat है। इसीलिए भारत में लोग किसी के यहाँ खाते-पीते नहीं थे। जब व्यक्ति यह कहे कि, "चटपटा है, और झटपट खा लो, नहीं तो इसका स्वाद चला जाएगा।" तब समझ लो वह कुछ न कुछ Cheat कर रहा है।

76. Sin + डर = Cinderella – जो Sin (पाप) से डरती है, वह है Cinderella.

77. कान + Troll = Control –
कान के द्वारा ही किसी बात को Troll कर Control किया जाता है।
78. चूर्ण = Churn - चूर्ण ही Churn है।
79. Chick + नाई = चिकनाई –
नाई जब Chick (गाल) के बाल यानि दाड़ी बनाता है, तो गालों पर चिकनाई आ जाती है।
80. कैद + देते = Cadet – जिन्हें कैद देते हैं, उन्हें Cadet कहते हैं।
81. Cooker = कुकुर - कुकुर (कुत्ते) को Cooker में पकाते हैं।
82. कोल + Our = Colour -
कोल (पास) उसी को बुलाते हैं, जो हमारा (Our) है। यानि जो हमारे रंग (Colour) का होता है, उसे ही हम अपने पास बुलाते हैं।
83. Creative = क्रियेतिव - क्रियात्मक ही Creative है।
84. Cake = सेक – Cake को ही सेक कर तैयार किया जाता है।
85. Caller ID = कॉलर ID –
पहले धोबी कपड़ा धोने के लिए ले जाता था, तो कॉलर पर एक निशान होता था, जो कपड़े के मालिक का नाम बताता था। जिसे देखकर धोबी उस कपड़े के मालिक की पहचान कर, उसका कपड़ा उसके घर पहुँचाता था।
86. Clone –
Lone लेने वाला ही Clone बनाता है, कि जब कर्जा वसूली के लिए कोई आये तो वह न मिले, उसका Clone मिले।
87. कर + रोप = Crop – कर (हाथ) से जिसे रोपा जाए, उसे Crop कहते हैं।
88. Curtain = करतन - कतरनों से ही Curtain बनते हैं।
89. चैन –
जब-तक आदमी का चयन नहीं हो जाता है, तब-तक उसे चैन नहीं आता है। फिर वह Chain से बाँधकर सो जाता है।
90. कौन + Test = Contest –
किसी के बारे में पता करने के लिए, दो ही तरीके हैं कि, "पूछ लो कौन हो" ? या फिर उसका Test ले लो। यह दोनों तरीकों को मिलाकर Contest बनता है।
91. कौन + Tent = Content –
Tent में कौन-कौन है ? यही तो Tent के बाहर लिखकर लटका दिया जाता है, जिसे Content कहते हैं।
92. चुन + OT = चुनौती –
चुनना पड़ता है, O T में यही तो चुनौती है। यानि Operation Theatre में चुनना पड़ता है, कि यह चाहिए कि वह। यही तो चुनौती है।

93. Conservative – कंजर लोग ही Conservative होते हैं।

94. कौम + Pact = Compact –

कौम को एक करने के लिए जो Pact बनाया जाता है, उसे ही Compact कहते हैं।

95. Cheap +Cheap + Hut = चिपचिपाहट –

Cheap लोग चिप-चिपे होते हैं, और वह Hut (झोपड़ी) में रहते हैं। इसीलिए ऐसे चिपचिपे लोगों को लोग दूर हटा देते हैं।

96. कान + Not = Cannot – जब कान नहीं सुनते हैं, तो वह कहता है, I cannot hear it.

97. Can = कान – जब उसके कान सुन लेते हैं, तो वह कहता है, Yes I Can do it.

98. कोड़ = Code – जो ज्यादा Code रखते हैं, उन्हें कोड़ हो जाता है।

99. कली + न = Clean –

पहले काँसे के बर्तन को साफ करने के लिए कली करवायी जाती थी। तो गन्दे बर्तन देखकर लोग कहते थे कि, "कली न करवायी आपने"। यही कली न करवाना Clean है।

100. Chin + तन = चिंतन –

Chin (ठोड़ी) के नीचे हाथ रखा व्यक्ति, जब चिंता में होता है, तो उसका शरीर तन जाता है, यही चिंतन है।

101. काल + कुल + ऐश + अन्न = Calculation –

काल, कुल, ऐश और अन्न इनकी Calculation की जाती है।

102. कार्य + पेट = Carpet –

पेट को भरने के लिए जो कार्य किया जाता है, उसे Carpet कहते हैं। पहले जमाने में सोने के लिए चटाई बनाने का काम बहुत होता था, तो अंग्रेजों ने पूछा की, "यह क्यों करते हो" ? तो जबाव दिया गया किया कि, "हम लोग यह कार्य पेट को पालने के लिए करते हैं"। तो जो कार्य पेट को पालने के लिए हो, वह Carpet है।

103. काल + End + डर = Calendar –

काल के End होने का डर सबको है, इसलिए सब Calendar रखते हैं।

104. कोयला + Near = Colony –

अंग्रेजों के समय कोयले की खदानों का काम होता था, कोयले की खदानों के पास मजदूरों के रहने के लिए, जो बस्ती बनाई गई, वह Colony कहलाती है।

105. चार + टर्ड = Chartered –

जब कोई बाहर घायल हो जाता है या मर जाता है, जो उसे चार लोग उठाकर लाते हैं, जिसे Chartered कहते हैं।

106. कौन + ऊँट = Count –

ऊँटों के काफिले में, यह गिनकर रखा जाता है कि, कितने ऊँट हैं, यही से Counting की व्यवस्था प्रारंभ हुई कि, "गिनो कौन-कौन से ऊँट तुम्हारे हैं"।

107. क्रय + दित = Credit –

क्रय जो करता है जो बार-बार, उसी को Credit दिया जाता है। जो व्यक्ति ज्यादा समान बार-बार किसी दुकानदार से खरीदता है, दुकानदार उसी को Credit देता है।

108. चौकन्ना – चार कान वाला –

व्यक्ति के चार कान होते हैं, दो अन्दर और दो बाहर। उसे इन चारो कानों से सुनाई देता है और जो इन चारों कानों को ही, खुला रखना होता है, तभी वह चौकन्ना हो पाता है।

109. चित्त + थी = चिट्ठी –

जो चित्त में होता है, वही चिट्ठी में होता है। आदमी के चित्त में जो बातें होती हैं, वही बातें वह चिट्ठी में लिखवाता है या लिखता है।

110. कौन + क्रीयेत = Concrete – किसने बनाया है, यही Concrete है।

111. Cross = Crows –

जब किसी को सजा के तौर पर Cross पर लटका दिया जाता था, तो वहाँ पर उसे खाने के लिए बहुत सारे Crows (कौए) इकट्ठे हो जाते हैं, उसे ही Cross कहते हैं।

112. चू + Ice = Choice – चूसा जाता है Ice को, नहीं तो वह चू जाती है।

113. Crowed –

Crow (कौआ) की ही Crowed होती है। कौअ जब क्रोध के मारे इकट्ठे हो जाते हैं, तो वह Crowed हो जाता है।

114. छाँव + Knee = छावनी -

दो बातों के कारण छावनी बनती है। एक तो छाँव के कारण, दूसरा Knee के कारण। पहले सेनाएँ पैदल और घोडों पर चलती थीं, जब चलते-चलते, कहीं छाँव मिल जाती थी, तब वहाँ बैठकर सुस्ता लेती थीं और जब चलते-चलते, Knee में दर्द होने लगता था, तब Knee को, आराम देने के लिए, तब वहाँ बैठकर सुस्ता लेती थीं। जिस स्थान पर बैठकर सेना सुस्ता लेती थी, उसे छावनी कहा जाने लगा।

115. Crop + Ration = Corporation –

Crop और Ration के लिए ही, Corporation बनाया जाता है।

116. कल + एक + क्षण = Collection -

आप कल के एक क्षण का, Collection नहीं कर सकते हैं। कल + एक + क्षण = Collection. आप वस्तु का Collection कर सकते हैं, किन्तु आप बीते हुए कल, या बीत रहे पल, या आनेवाले कल का एक क्षण भी, Collection करके नहीं रख सकते हो। आप कल पर Lecture दे सकते हो, किन्तु आप कल को Collect नहीं, कर सकते हो। कल + Lecture = Collect. कोल = Col. सारी कहानियां, बीते हुए कल के तो Lecture हैं। जिसे लीक चर से Lecture बोला जाता है। क्योंकि सभी लोग, बीते हुए कल की लीक पर ही तो चलते हैं। लीक + चर = Lecture. चर = पशु के घास चरने पर, जो खाली स्थान बन जाता है, उसे लीक कहते हैं। मनुष्य उसी लीक पर चलता है।

इसी से शब्द बना "लीक चर" या "Lecture". इसलिए लोग पुरानी कहानियां सुनाकर, लोगों को पुरानी लीक पर, चलने की नसीहत देते हैं कि, "हमारे ज़माने में तो ऐसे होता था"। उनकी कोशिश यही रहती है कि, यह नये लोग भी, उनकी बात को मानकर, बनी बनाई लीक पर चलें। इसी Lecture को आज की भाषा में, "Motivational Speech" कहा जाता है। Motivational Speech में भी, पुरानी कहानियां सुनाकर लोगों के, अहंकार को जगाया जाता है कि, "उसने ऐसा किया था, तुम भी कर सकते हो, जागो जागो सोए मत रहो"। किन्तु लोग अपने Ego को, दिखाने के लिए कहते हैं कि, "हम तो लीक पर नहीं चलते हैं"। इस तरह से लीक पर चलकर लोग, अपने बीते हुए कल के क्षणों को, Collect करके रखना चाहते हैं, और अपना Collection बढ़ाना चाहते हैं। जिसे वह इतिहास कहते हैं। और इसी इतिहास पर गर्व करते हैं।

117. चाप + Loose = चापलूस –

जब कोई ढीला छोड़ देता है, उसे वह चाँप लेता है, यानि जोर से पकड़ लेता है। चापलूस का काम ही है, पकड़ना और छोड़ना।

118. चलती + Air = Chair –

चलती है जहाँ पर Air उसे कहते हैं Chair. Chair वहीं पर रखी जाती है, जहाँ पर Air चलती है।

119. चोंख + लेत = Chocolate – जिसे चोंख लेते हैं, वही है Chocolate.

120. कुल + Egg = Colleague – कुलीग –

एक ही गुरुकुल में पढ़नेवाले और एक ही Egg से निकलनेवाले आगे जाकर Colleague होते हैं।

121. सिर + का = Circa –

सिर का ही, Circa बनाया जाता है। किसी के सिर को, जब उबालकर Soup बनाया जाता है, उसे Circa कहते हैं।

122. सर + कल = Circle –

सिर को कलम किया जाता है, कलम करने के बाद सिर ही तो, Circle की तरह गोल दिखाई देता है।

123. चाप + तीर = Chapter – चाप पर तीर चढ़ाया जाता है।

124. कर + Rent = Current – कर एवं Rent ही तो Current होते हैं।

125. City + जन = Citizen – City में रहनेवाले जन ही Citizen हैं।

126. चिली – चिली देश Chilli की तरह दिखाई देता है, तभी उसका नाम चिली है।

127. चरम - Rum = चरम -

आदमी के शरीर की चमड़ी उसका चर्म है। शरीर के भीतर रहने वाली आत्मा का चरम Rum है। जब Rum शरीर के भीतर जाती है, तो आत्मा अपने चरम पर होती है।

128. कला + Ass = Class –

कला सिखाई जाती है, जहाँ गधों (Ass) को वही Class है। जबकि Class में उन्हें यही सिखाया जाता है, कि उन्हें गधे से इन्सान बनाया जा रहा है। परंतु जब उनको पढ़ा-लिखाकर उनसे काम लिया जाता है, फिर वह कहते हैं कि हमसे तो गधों की तरह काम लिया जाता है।

129. चर + इत्र = चरित्र -

चर - चरने से - किस प्रकार भोजन कर रहा है।

रच - रचने से - किस प्रकार की रचना कर रहा है।

इत्र - किस प्रकार का इत्र लगा रहा है। इन तीन से चरित्र को पहचाना जाता है।

130. Create - क्रियेट - क्रियेत -

Create शब्द दरअसल संस्कृत का शब्द है, यानी क्रिया करना।

131. कमी + कल = Chemical -

जिस प्रकार से एक मशीन Chemical से चलती है, उसी प्रकार शरीर भी एक कल है, यानि शरीर भी तो एक मशीन है। तो शरीर भी Chemical से चलता है। Chemical की विद्या Chemistry है, Chemistry में सीधे पत्थरों, मिट्टी, रत्नों, धातुओं, द्रव्यों आदि से सार तत्त्व निकाल लिया जाता है, और प्रयोग में लाया जाता है। जिससे Chemical के प्रभाव की तीव्रता अधिक तेज होती है, Chemical जल्दी असर करता है। उसी प्रकार आयुर्वेद में, जड़ी-बूटियाँ जमीन से, पत्थर से, पानी से, द्रव्यों से, रत्नों से, खनिजों से रस प्राप्त कर लेती हैं, इस रस को ही Chemical कहते हैं, इस Chemical से, अपने को पोषित करती हैं, फिर इन जड़ी-बूटियों का रस-गोली बनाकर, खिलाया जाता है, इससे यह देर से असर करती हैं। किन्तु है दोनों में Chemical ही है, जो कि इस शरीर रूपी कल की कमी को दूर करता है। कल (मशीन) में आई कमी को दूर करने के लिए, उसमें Chemical डाला जाता है। उसी प्रकार मनुष्य को भी, जब मशीन की तरह, उपयोग करना होता है, तो मनुष्य के अन्दर भी Chemical डाला जाता है। यह Chemical फिर मनुष्य को मशीन बना देता है। मशीन का मतलब - "मशीन का खुद पर काबू नहीं होता है। मशीन दूसरे के इशारे पर चलती है"। मशीन को चलाने वाला उस पर पूरा Control रखता है। यह Control वह Chemical से रखता है। उसी प्रकार Chemical से मनुष्य को Control किया जाता है। तभी तो आदमी कहता है कि, "अब आदमी भी मशीन हो गया है"। क्योंकि उसका खुद पर कोई Control नहीं होता है। वह मशीन की तरह काम करता है। यही तो Chemical का अर्थ है। मशीन की तरह कार्य करने को ही वृत्ति कहा गया है। यानि मनुष्य होश में नहीं है, वह कार्य कर रहा है, बस इसी वृत्ति को दूर करने का नाम योग है। योग यानि होश, अर्थात् होश में रहने पर मशीन की तरह कार्य नहीं करेगा। जो निरंतर कार्य कर रहा, विश्राम भी नहीं ले रहा है, वह होश में नहीं है, वह Chemical ले रहा, और मशीन बना हुआ है। मशीन की भी एक आयु है, मशीन से निरंतर कार्य लेने से वह भी जल्दी जबाब दे देती है।

132. कौन + व्रत = Convert -

व्रत से ही आप Convert होते हैं। जब कोई व्रत करता है, तो उसमें बदलाव आ जाता है। अब यह निर्भर करता है, कि कौन-सा व्रत कर रहा है ? जौन-सा व्रत कर रहा है। उसी में वह बदल रहा है, यानी Convert हो रहा है।

133. Chill + चिल्लाती = चिलचिलाती -

जब ठंडा पानी पीने के लिए, चिल्लाने लगे कि, "ठंडा लेकर आओ" तो उसे चिलचिलाती गर्मी

कहते हैं।

134. चुनना + नाव (नाम) = चुनाव -

इतने सारे नामों में से किसी एक नाम को चुनना ही चुनाव है। यानि नावें तो बहुत सारी हैं, किन्तु एक ऐसी नाव को चुनना, जो चुएँ नहीं।

135. चमकती + श्मा = चश्मा -

पहले रात को दिखाई नहीं देता था तो पढ़ने के लिए श्मा जलाई जाती थी। अब दिन में पढ़ने के लिए चश्मा लगा लगाया जाता है। यानि रात को बाहर की रोशनी कम होती है। इसलिए रोशनी को बढ़ाने के लिए श्मा जलाई जाती है। अब दिन में व्यक्ति के भीतर की रोशनी कम है। इसलिए उसको बढ़ाने के लिये चश्मा पहनाया जाता है। जो व्यक्ति के अंदर श्मा फैलाने का काम करती है।

136. चम्पी -

चंपा के फूल के तेल से चम्पी की जाती है। जिसकी चम्पी की जाती है, उसे Champion कहते हैं। किसी और तेल से चम्पी नहीं की जाती है, केवल मात्र चम्पा के फूल के तेल से चम्पी की जाती है।

137. च + बुत + रहा = चबूतरा -

बीच में जिसके बूत रहा। चबूतरे के बीच में पहले एक बुत (मूर्ति) रहता था। जिसके चारों तरफ़ लोग बैठते थे। जिसको बाद में तोड़ दिया गया। फिर बाद में केवल चबूतरा रहा। बुत चला गया।

138. कृति + टिक = Critic -

कृति टिक पाएगी के नहीं, यह Critic बताते हैं। कृति + टिक = Critic. जब कोई कृति, निर्मित की जाती है, तब जो लोग उस कृति को, लेकर बहस करते हैं, कि यह कृति टिक पाएगी की नहीं, वही लोग Critic कहलाते हैं।

139. शैली + व्रती = Celebrity -

Celebrity बनने के लिए आपके पास शैली (Style) होनी चाहिए। दूसरा आपको कोई व्रत लेना होगा। तभी आप Celebrity बन सकते हैं। केवल Style मारने से आप अभिनेता बन जाओगे। केवल व्रत करने पर आप संत बन जाओगे। परन्तु आप Style से रहते हैं, और व्रत भी करते हैं, तो आप Celebrity बन जाएंगे। परन्तु इन सबमें एक बात है, जो सरस्वती की तरह छुपी हुई है, वह है, आपको शैली और व्रत का पालन करने के लिए, आपको Celibacy का पालन करना होगा। तभी आप पूर्णतः Celebrity बन जाओगे।

140. कौम + मिट = Commit -

जो अपनी कौम के लिए मिट जाए, वही Commitment होती है।

141. चरना + आग = चराग -

चरने से ही जो अन्दर की चिर आग है, वह जली रहती है, जिसे चराग या चिराग कहते हैं। आदमी के अन्दर भूख की आग ही, चराग होती है। यह भूख की आग, चरने यानी खाना खाने से ही, जली रहती है। यह आग हमेशा जली रहती है, इसीलिए इसे चिर आग भी कहते हैं।

142. Common –

जो कोम, मौन हो जाती है, वह Common कहलाती है।

143. Crow + ना = Corona -

जिस मरे हुए शरीर को Crow भी न खाने को आए, उसे Corona कहते हैं। पहले जब किसी का भी शरीर छूट जाता था, चाहे जानवर हो या इन्सान का, उस मरे हुए शरीर को खाने के लिए सबसे पहले कोए आते थे, फिर कोई दूसरे गिद्ध आदि खाते थे। तो Corona आज का नहीं है। यह वर्षों पुराना है। इसी लिए पिंडदान का पिंड सबसे पहले कोए को खिलाया जाता है। अगर कोए ने खा लिया तो इनके घर में सब खा सकते हैं, कोए ने नहीं खाया तो, इनके यहाँ अभी भी कीटाणु हैं। जब तक कोए पिंड को नहीं खाते, तब तक इनके घर में सूतक लगा रहेगा। पिंड आदमी के मरे हुए शरीर को भी कहते हैं। इसलिए पिंड का दान किया जाता है, जैसे Dead Body को Hospital में ही, Donate कर दिया जाता है। तो यह चेक करो Corona के मरे हुए की Body को कोए खाते हैं कि नहीं।

144. चप्प + Ate = चपेट –

चप्प-चप्प खाकर पेट भरने को ही, चपेट कहते हैं। यानि चप्प-चप्प Ate. Crona चप्प-चप्प खाकर, अपना पेट भर रहा है और सबको अपनी चपेट में ले रहा है।

145. चालीसा = चालीसवाँ –

जब किसी पुरुष की स्त्री, गर्भवती हो जाती है। तब पुरुष को, चालीस सप्ताह तक, ब्रह्मचर्य का पालन, करना होता है। इस चालीस सप्ताह के, समय को बिताने के लिए पुरुष को स्त्री के, सभी कार्य एवं घर के सारे कार्य करने होते हैं। ताकि गर्भवती स्त्री पर कार्यों का बोझ नहीं रहे। पुरुष किसी अन्य स्त्री को, भी अपनी स्त्री की सेवा में, लगा नहीं सकता है। अन्यथा पुरुष को धृतराष्ट्र की तरह युयुत्सु की भाँति संतान की प्राप्ति होगी। यानी पुरुष को अपने मन का हनन करते हुए चालीस सप्ताह बिताने हैं, क्योंकि काम का प्रवेश मन में होता है। इसलिए पुरुष, मन को परमात्मा में रमा कर अपने चालीस सप्ताह व्यतीत करे।

146. Cover + Age = Coverage -

Age को हर कोई Cover करना चाहता है। कोई सफेद बालों को काला करके Cover करता है। तो कोई नकली बत्तीसी लगवाता है। कोई झुर्रियों को Cover करवाता है। कोई मूँछों को मुड़वाता है। कोई चश्मे की जगह लेन्स लगाता है। कोई कसरत करता, कोई योग-आसन-प्राणायाम करता है। सभी कुछ न कुछ करते हैं, कि Age Cover रहे। एक तो पता न चले कि हमारी Age कितनी है। दूसरा Cover एक कवच का काम करे, जो हमारी बढ़ती उम्र को रोके। किन्तु Age तो लगातार बढ़ रही है। Age को कौन Cover कर पाया है ? कितने ही Cover लगा लो, परन्तु Age कभी भी Cover नहीं हो सकती है, Age लगातार बढ़ती रहती है। जबकि हम कितने ही मुग़ालते में रहें, कि Age को हमने Cover कर लिया है। बढ़ती उम्र को कौन रोक पाया है ?

147. Corona + Logy = कोरोना + लोजी = Chronology -

भारत में कोरोना की बात बहुत पहले ही कही गई थी, कि लो जी ! अब कोरोना भारत में भी आ गया। परन्तु इसको Chronology समझा गया। सही ही समझा गया, काल का ही तो क्रम होता है। जब

काल क्रम-क्रम से अपना कार्य करता है। तभी तो वह कालक्रम होता है। 30 दिसम्बर 2019 को Chronology शब्द भारत में बोला गया। फिर भी समझ नहीं आया किसी को।

148. छल + Long = छलाँग -

जब किसी को लम्बा कार्य करना पड़ता है तो वह छल करता है, यही छलाँग है। छल का उल्टा लछ। यानि जब व्यक्ति लच्छेदार बातें करने लगे, तो समझ लो वह छल कर रहा है। उसको कोई लम्बा कार्य करना है। यानि जो व्यक्ति लम्बी यात्राओं पर जाते हैं, वह साथ चलनेवालों को अपनी मंजिल नहीं बताते हैं। वह सिर्फ अगला पड़ाव बताते हैं और इधर-उधर की बातें करते हैं। इस तरह समय काटते हैं, और छल करके Long रास्ते को तय करते हुए अपने गंतव्य तक पहुँच जाते हैं। इसलिए छलाँग लगाते।

149. कथा + सिस = Catharsis -

कथा सुनाना सिसकियाँ लेकर। जो अपनी कथा सिसकियाँ लेकर सुनाये, उसे Catharsis कहते हैं। यानि रो-धोकर अपनी कथा सुनाना। Catharsis एक तरह का रेचन है। Catharsis में सिसकियाँ लेने से उसके आँसू भी बाहर आ जाते हैं और कथा को सुनाने से भीतर का गुबार भी निकल जाता है। जिससे व्यक्ति दोनों और से हलका हो जाता है। इसलिए कथा और सिसकियों का इतना महत्त्व है।

150. Crow + ध्यान = क्रोध -

Crow का क्रोध ध्यान से देखो। जब एक कउए को कोई थोड़ा भी छेड़ देता है, तो वह कउआ काँव-काँव करके बहुत सारे कउओं को इकट्ठा कर लेता है, फिर सारे के सारे कउए काँव-काँव करते हैं। इसे ही क्रोध कहते हैं। क्योंकि Crow काँव-काँव करके सबका ध्यान अपनी तरफ खीँचना चाहते हैं। यही तब भी होता है, जब कोई क्रोध करता है, वह क्रोध कर, अपनी तरफ सबका ध्यान खीँचना चाहता है। इसलिए Crow के काँव-काँव पर, ध्यान देना ही क्रोध है, क्योंकि Crow की काँव-काँव ध्यान से देखने-सुनने पर, उसका असर सुननेवाले पर भी होता है, और फिर वह भी कउए की तरह, काँव-काँव करने लग जाता है, और यही क्रोध है।

151. कन + नेक + सुन = Connection -

सब चाहते हैं कि कान नेक सुनें। किन्तु कान न एक की सुनता है। कान तो अनेक की सुनता है। जब तक कान नेक नहीं सुनेगा, तब तक Connection ही नहीं बनेगा। तो फिर कान को नेक की सुनने में लगाईये, और Connection बनाईये।

152. Clay + I am = Claim -

आखिर में Clay ही Claim करती है, कि "यह मैं हूँ"। मनुष्य जिन्दगी भर Clay को अन्न बनाकर खाता जाता है। Clay भी थोड़ा-थोड़ा Premium भरती जाती है और आखिर में मनुष्य की Clay फिर Clay में मिल जाती है। Clay ही Claim करती है, कि "हाँ मैं ही इस Clay की Nomination हूँ" और जिन्दगीभर की इकट्ठी की गई शरीर रूपी मिट्टी, वापिस Clay द्वारा Claim कर ली जाती है। मिट्टी वापिस मिट्टी में मिल जाती है। फिर यही मिट्टी वापिस कल अन्न बन जाती है। इस तरह मिट्टी लोगों का कल्याण कर जाती है। कल + य + अन = कल्याण। इसलिए मिट्टी को नमन करो। रोज

सुबह सोकर उठकर इसलिए शायद सबसे पहले धरती को माथा टेककर प्रणाम करते हैं, क्योंकि धरती ही सभी वस्तुओं को हमें प्रदान कर हमारा Take Care करती है।

153. चीख + कान = Chicken -

चीख कान में पड़ना। सुबह-सुबह मुर्गे की चीख कान में पड़ती है, इसलिए उसे Chicken नाम दिया। Morning + गा = मुर्गा - जो Morning में गाता है, जो Morning में मुर्गी के लिए गाना गाता है, इसलिए मुर्गा कहलाता है। Cook + कड़ा = कुक्कड़ - Cook करने पर जो कड़ा हो जाता है। मुर्गे को जब भून दिया जाता है, जिससे मुर्गा कड़ा हो जाता है, तो कुक्कड़ बोला जाता है। Morning + गीत = मुर्गी - Morning में जिसके लिए गीत गाया जाता है, उसे मुर्गी कहते हैं। Hen = हीन = जो हमेशा हीन ही दिखाई दे, उसे ही तो Hen बोलते हैं। Cook + Cut = कुक्कुट - जिसको काटकर Cook किया जाता है, उसे कुक्कुट कहते हैं। Cock = कोक - जो मुँह से कोक-कोक की आवाज़ निकालता है, उसे Cock कहते हैं।

154. कान + See + Us = Conscious -

कौन हमें देख तो नहीं रहा है? यह Conscious लोगों की पहचान होती है, इनके कान हमेशा चौकन्ने रहते हैं। यह बाहर की भी सुनते हैं, और भीतर की भी सुनते हैं। इसलिए अगर Conscious की पहचान, करनी हो तो उसके कान Check करो। Conscious के कान हमेशा गरम मिलेंगे।

155. कौन + See + डर = Consider -

डर के कारण व्यक्ति Consider करता है कि कहीं बाद में नुकसान न हो जाए। नुकसान होने का डर। अपनी हँसी उड़ने का डर। जैसे लोग कहते हैं, कि ऐसा कौन-सा डर है, जिसके चलते इतना सोच-विचार कर रहा है। डर यही है कि कौन देख रहा है। आदमी को यह डर हमेशा लगा रहता है कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है। बस इसी देखने के डर से Consider करता है। इसी डर के कारण व्यक्ति सोच-विचार करता है। जिसमें यह देखने का डर खत्म हो जाता है, वह सोच-विचार नहीं करता। सीधा कार्य कर देता है। इसलिए व्यक्ति को Consider करना चाहिए, फिर कार्य करना चाहिए।

156. छान + दो + योग्य = छान्दोग्य –

छान दो योग्य को। जब हम किसी को छान देते हैं। उसमें से योग्य को रख लेते हैं, और अयोग्य को छोड़ देते हैं। वही तो छान्दोग्य होता है।

157. चल + लेंगे = Challenge -

जब कोई किसी से पूछता है कि, "आप कहाँ जा रहे हो" ? वह बोलता है, "मैं वहाँ पर जा रहा हूँ"। दूसरा बोलता है, "कि मुझे भी ले चलो !" तब दूसरे की स्थिति को देखकर पहला बोलता है कि "आप चल लेंगे" ? चल + लेंगे = Challenge. यह चल लेना ही, एक Challenge होता है। किसी के साथ चलना ही, एक Challenge होता है। जैसे कि, "अरे ! थोड़ा सा वहाँ तक चल लोगे" बस यही चलना ही, सबसे बड़ा Challenge है। इसलिए आदमी कहता है कि, "एक बार दोस्ती करके तो देखो, सारी जिन्दगी साथ चलकर दिखाऊंगा"।

158. चद्दर -

जब कोई व्यक्ति किसी, बड़े पद पर आसीन होता है। तो उसको सम्मानित, करने के लिए, चद्दर चढ़ाई जाती है, जैसे की कोई महंत, मण्डलेश्वर आदि बनता है। जिस महात्मा का शरीर, छूट गया है, तो यह माना जाता है, कि वह संत को परमात्मा के साथ, एक्य हो गया है, परमपद प्राप्त हुआ है। इसलिए शरीर छूटे, महात्मा के शरीर पर, चद्दर चढ़ाई जाती। जिसे चद्दर पोशी कहते हैं। सामान्य भाषा में, इसे कफ़न कहते हैं। क्योंकि सामान्य जन, मृतक के शरीर को नग्न नहीं देख सकते हैं, इसलिए बिना सिले हुए वस्त्र का, कफ़न पहनाते हैं। जो कि सफेद होता है। इसलिए संत तो पहले से ही, बिना सिला हुआ वस्त्र पहनते हैं, क्योंकि संत अपनी, उत्तर क्रिया पहले ही कर चुके होते हैं और संत मृतक के समान होते हैं। सदा परमात्मा में, लीन रहते हैं। इसलिए संत के कपड़े, अग्नि के रंग के होते हैं। जिस तरह कुमारिल भट्ट, शनैः शनैः अग्नि में, अपने शरीर को समर्पित करते हैं। इसी तरह संत भी अग्नि के, वस्त्र पहनकर, साधना की अग्नि में अपने शरीर को समर्पित, करते हैं। क्योंकि संत पहले ही, अपने शरीर को, साधना की अग्नि में, समर्पित कर चुके होते हैं, यह तो मात्र भस्म बचती है। तो इसलिए संतो के शरीर को, फूल मानकर गंगा जी में, प्रवाहित कर दिया जाता है। जिस संत के शरीर को, गंगा जी में नहीं प्रवाहित, किया जाता है। उस संत को धरती में, गाड़ कर समाधि बना दी जाती है, और जो लोग बाद में आते हैं, वह समाधि पर चद्दर चढ़ाते हैं, इस चद्दर का बड़ा महत्त्व है। गुरु के द्वारा ओढ़ी गई चद्दर, जिस शिष्य के पास होती है, वही अगला गुरु होता है, बाकी सब शिष्य होते हैं, भले ही वह एक गुरु के, शिष्य क्यों न हों। इसलिए गुरु बनाने का निर्णय, चद्दर विधि से होता है। और गुरु की चद्दर शिष्य को, ओढ़ाई जाती है। फिर सभी लोग उसको चद्दर, उढ़ाकर गुरु होने की मान्यता देते हैं। इसके बाद वह गुरु हमेशा अपने ऊपर चद्दर ओढ़े रहता है। बाकी किसी और के कंधों पर चद्दर नहीं होती है। यह चद्दर का रहस्य है।

159. Calendar of 13 Months -

सबसे पहले की गई गणना के अनुसार 28 नक्षत्र के हिसाब से 28 दिन का महीना होता था। 28 दिन का महीना स्त्रियों का भी होता है। महीने का हिसाब रखने की शुरुआत स्त्री ने की थी। स्त्रियों ने ही समय की गणना करना प्रारंभ किया और इसके लिए स्त्रियों ने आकाश के नक्षत्रों का सहारा लिया तथा चंद्रमा का भी इस्तेमाल किया और ऋतुओं की भी सहायता ली। इस तरह से स्त्रियों ने गणना करने के लिए भिन्न-भिन्न तरीकों का सहारा लिया। फिर इन्हें दिन, महीने और वर्ष में बाँट दिया। पहले 10 महीने का वर्ष होता था, जिसमें प्रत्येक महीने में 28 दिन होते थे यानी 280 दिन का एक वर्ष होता था। इसकी गणना करने का तरीका यह था कि, स्त्री के गर्भवती होने के 10 महीने यानी 28 दिन के हिसाब से 280 दिन। यही 280 दिन 10 महीने हैं यानी यह 9 महीने नहीं हैं। पुरुष ने जब खेती करना प्रारंभ किया तो उसने वर्षा के हिसाब से वर्ष की गणना करना प्रारंभ किया। जिससे मौसम का सही-सही पता लग सके। पुरुष की यह गणना सूर्य के द्वारा पृथ्वी की परिक्रमा पर आधारित थी। क्योंकि वह समझता था कि, "पृथ्वी स्थिर है और सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करता है"। तो इस तरह पुरुष ने वर्ष की गणना करना प्रारंभ की। साथ ही पुरुष ने स्त्री की गणना के साथ में अपनी गणना को मिला दिया, जिससे एक Calendar का जन्म हुआ। स्त्री की गणना में 5 दिन का जुड़ाव है। जो

मिलाकर 9 दिन होते हैं। यह 9 दिन स्त्री के जीवन में प्रत्येक महीने में आते हैं। यह 9 दिन छुट्टी के दिन होते हैं। इसलिए इन 4 दिनों को लाल रंग से लिखा जाता है और 5 दिनों को पीले रंग से तथा बाकी 19 दिनों को सफेद रंग से लिखा जाता था। यह बाकी 19 दिन कार्य के होते थे। स्त्री के गर्भवती होने पर आगे के 10 महीनों के 280 दिन हरे रंग से दिखाए जाते थे। जिसे की गोद हरी होना कहते हैं तथा गर्भवती होने पर अगले 9 दिन 10वें महीने में आते हैं। इन 10 महीनों को एक वर्ष कहा जाता है। फिर बच्चा पैदा होने के बाद आनेवाले 9 दिन स्त्री के लिए खुशी के दिन होते हैं। किंतु पुरुष ने इन 9 दिनों को घटाकर 7 दिन कर दिया और सप्ताह बना दिया। जो स्त्री के गर्भवती होने से लेकर, संतान के पैदा होने के तक के समय को, इन 280 दिनों को सप्ताह के 7 दिनों से भाग देने पर 40 सप्ताह प्राप्त होते हैं। यानी अब पुरुष को इन 40 सप्ताह तक स्त्री का संग नहीं करना है और ब्रह्मचर्य का पालन करना है। पुरुष को इन बातों का ध्यान रखना पड़ता था। जो पुरुष स्त्री की इस व्यवस्था को भलीभाँति जानता था। इसलिए वह पुरुष राजदार कहलाता था एवं उसे राजा कहा जाता था। जैसा की पुरुष की गणना मौसम पर आधारित थी, तो उसने मौसम के हिसाब से Calendar बनाया। पुरुष की यह गणना वर्ष कहलाती है क्योंकि यह वर्षा पर आधारित है और वर्षा के दिनों के हिसाब से वर्ष बनाया गया। किंतु पुरुषों के Calendar अपने-अपने देश के भौगोलिक वातावरण के अनुसार अलग-अलग गणना दिखाते हैं। परंतु स्त्रियों के Calendar आज भी 28 दिन के हैं और जिसमें 9 दिन छुट्टी के हैं। इन 9 दिनों में स्त्री का स्वभाव प्रतिदिन भिन्न होता है। इसलिए इन 9 दिनों और 9 के अंक का महत्व है। बाकी बचे हुए 19 दिनों में स्त्री का स्वभाव एक-सा रहता है। इसलिए एक कहावत भी है कि "19 या 20 का फर्क है"। यह कहावत इसलिए है, क्योंकि पुरुष स्त्री के स्वभाव की गणना करके रखता है किंतु जब पुरुष यह गणना भूल जाता है, तो यह 19 या 20 बीस का फर्क कहता है। फिर जिस दिन स्त्री गर्भवती हो जाती है उसके बाद 10 महीने तक स्त्री का स्वभाव ठीक रहता है। इसलिए पुरुष स्त्री को गर्भवती बनाए रखना चाहता है और बच्चों में उलझाए रखना चाहता है जिससे स्त्री फिर पुरुष के आधीन रहे। किंतु आजकल स्त्री गर्भनिरोधक का उपयोग करके गर्भवती होने से बच जाती है और पुरुष को अपने आधीन रखती है। पुरुष की अपेक्षा स्त्री आज अधिक स्वतंत्र एवं प्रसन्न है। तो इस तरह से Calendar की व्यवस्था स्त्रियों की बनाई हुई है, किंतु पुरुषों ने कालांतर में इसमें संशोधन करके इसे अपना बताया है। अब चूंकि स्त्रियों का समय है, तो क्यों न स्त्रियों का Calendar पूरे विश्व में लागू किया जाए। जिससे स्त्रियों को लाभ मिले।

160. कोढ़ = Code – जो लोग ज्यादा Code रखते हैं, उन्हें कोढ़ हो जाता है।

161. चाह + आतुर + मास = चातुर्मास -

जिस मास में चाह आतुर हो जाए उसे चातुर्मास कहते हैं।

162. Cook + King = Cooking -

हर King अपने साथ एक Cook रखता था। यह Cook केवल King के लिए ही Cooking करता था। Cook + King = Cooking. हर खान अपने साथ, एक सामा रखता था, यह सामा केवल खान के लिए खाना पकाता था। खान + सामा = खानसामा। मंगोलिया में खान का मतलब कबीले

का सरदार होता है।

163. चु + ना + चे = चुनाँचे - चु करें ना चें करें।

164. छी + ना = छीना -

किसी से कोई वस्तु तभी छीन सकते हैं, जब उस वस्तु का मालिक यह कह दे, "छी ! ना ! यह तो गंदी हो गई, यह अब तो मुझे नहीं चाहिए"। उस वस्तु को इतना कहकर फेंक दे। तब उस वस्तु को उठाकर, दूसरा व्यक्ति अपने पास रख लेता है। इस तरह इसे छीना कहते हैं। छी + ना = छीना। इसीलिए चतुर व्यक्ति को जब कोई वस्तु चाहिए होती है, तो वह उस वस्तु को गन्दा कर देता है। यानी उस वस्तु की निंदा करता है। तब उस वस्तु का मालिक उसे, छी-छी कहकर ना ना कर, फेंक देता है। तब उस वस्तु को चाहनेवाला, उस वस्तु को उठा लेता है और स्वच्छ करके अपने पास रख लेता है। इस तरह उस वस्तु को छीना जाता है। इसीलिए अच्छी वस्तुओं को गन्दा किया जाता है और बुरी वस्तुओं को अच्छा कहा जाता है। ताकि बुरी वस्तु वह अपने पास रखे ओर अच्छी वस्तु फेंक दे।

165. Crush + क्षण = कृष्ण -

भगवान श्रीकृष्ण पर सभी का Crush है। कोई भी, क्षणभर को देखता है, तो देखते ही, भगवान श्रीकृष्ण पर उसको, Crush हो जाता है। Crush + क्षण = कृष्ण। इसे ही मोहित हो जाना भी कहते हैं। इसीलिए भगवान श्रीकृष्ण को मोहन भी कहते हैं, क्योंकि कृष्ण सभी का मन मोह लेते हैं।

166. चर + चित = चर्चित -

जो चरने में चित लगाता है, और जो Church में चित लगाता है, वह चर्चित होता है।

167. कुल + चर = Culture -

व्यक्ति के चरने से, व्यक्ति के कुल का पता लगाता है। इसे ही Culture कहते हैं। कुल + चर = Culture. चरना यानी भोजन करना। लोगों के कुल के बारे में, जानने के लिए ही, व्यक्ति किसी को कुछ खिलाता है। तब खानेवाला कहता है, "हमारे यहां तो यह नहीं खाते हैं, और ऐसे नहीं ऐसे खाते हैं"। इस प्रकार से उसके कुल का, पता लग जाता है और उसके Culture को दर्शाता है।

168. क़ौम + Promise = Compromise -

क़ौम से किया गया Promise, व्यक्ति को Compromise करने पर, मजबूर कर देता है। व्यक्ति की क़ौम का पता चल जाए, तो किसी भी व्यक्ति से, Compromise करने का Promise, लिया जा सकता है। क़ौम + Promise = Compromise. व्यक्ति केवल अपनी क़ौम के भले के लिए, Promise मिलते ही, Compromise कर लेता है। क़ौम = जाति। क़ौम को राष्ट्र भी कहा जाता है, यानी व्यक्ति जब कहीं, Compromise नहीं करता है, तब उसे राष्ट्र की बेहतरी का, वादा दिया जाता है, राष्ट्र की बेहरती के वादे में आकर, व्यक्ति Compromise कर लेता है। Compromise को समझौता कहा जाता है, यानी समझ होता तो, समझौता कर लेता। समझ + होता = समझौता। इसलिए क़ौम में जब, समझदारी की बात की जाती है, तब यह कहा जाता है कि, “इसको समझ तब ही आयेगी, जब इसको दार मिल जायेगी”। तब उस व्यक्ति की, शादी कर दी जाती है, शादी के बाद, दार ही व्यक्ति को, समझदार बना देती है। इस तरह से व्यक्ति को, समझदारी आ जाती है। समझ +

दार = समझदारी। दार = पत्नी। और क़ौम के कार्यों को, सिर नवा कर मान लेता है, किसी प्रकार के सवाल नहीं उठाता है। तथा राष्ट्र के कार्यों के लिए, भी खुशी खुशी, Compromise कर लेता है। इस तरह से व्यक्ति, दो ही परिस्थितियों में Compromise करता है। पहली - जब उस व्यक्ति की कौम के लिए, Promise दिया जाता है कि, "हम आपकी कौम के लिए, यह यह कर देंगे"। दूसरी - जब व्यक्ति को उसके राष्ट्र के लिए, वादा किया जाता है कि, "अपना राष्ट्र तरक्की करेगा"। किन्तु इसके अलावा तीसरी बात और है, जिस पर व्यक्ति Compromise कर लेता है। जब व्यक्ति से यह कहा जाता है कि, "समझदारी इसी में है कि, अपनी कौम में ही शादी कर लो, इससे अपनी कौम की संख्या बढ़ जायेगी"। इसलिए व्यक्ति समझदारी दिखाते हुए, अपनी कौम की रक्षा के लिए, अपनी कौम में शादी करने का, Compromise कर लेता है।

169. Cook + कड़ी = कुकड़ी -

Cook किया जाता है, जिसको कड़ी में, उसे कुकड़ी कहते हैं। Cook + कड़ी = कुकड़ी। कड़ी को Cook करने के लिए, Cookery का उपयोग किया जाता है। Cook + कड़ी = Cookery.

170. कौम + Pare = Compare -

जब किसी को Pare करना होता है, तो उसको कौम से Compare, किया जाता है। तभी तो पता चलता है कि, वह अपनी कौम का है। फिर उनकी कौम में उनकी Pair बना दी जाती थी।

171. Climb + Axe = Climax -

Climb on the Axe, is called Climax. Climb + Axe = Climax. Axe की धार पर चढ़ना ही, Climax होता है। यानी पहाड़ की चढ़ाई इतनी पतली है, जितनी पतली Axe की धार होती है।

172. चुप्प + पीना = चुप्पी -

अक्सर बच्चों को दूध पिलाते समय, यह जरूर बोला जाता है कि, "चुप्प, पीले"। चुपचाप होकर पीना ही, चुप्पी कहलाता है।

173. Crack -

जो Crack होते हैं, वही किसी परीक्षा को, Crack करते हैं। तभी तो कहने वाले कहते हैं, "यह तो रात दिन, कलेक्टर बनने के पीछे पागल है"। और यह भी कहते हैं, "तुम्हारा! दिमाग क्या Crack हो गया है"। तो सफलता को Crack करने के लिए, Crack तो होना ही पड़ता है। तभी तो किसी की सफलता पर, Crackers फोड़े जाते हैं।

174. चंद्रमा + दान = चंदा -

जब पूर्णिमा की रात आती थी, तब यह कहा जाता था कि, "जिस जिस को पूर्णिमा के चंद्रमा की आभा लेनी है, वह वह व्यक्ति "दान" देगा'। यानी पूर्णिमा के चंद्रमा को देखने का दान। तथा आज भी लोग पूर्णिमा को, दान करके पुरानी परम्परा को निभाते हैं। चंद्रमा + दान = चंदा। तो जो जो व्यक्ति चंदा देता था, उसी उसी व्यक्ति को, पूर्णिमा की रात को घर से, बाहर निकलने की आज्ञा थी। इसलिए चंद लोग ही, चंद्रमा की पूर्णिमा का लाभ लेते थे। जो लोग पूर्णिमा का, चंद्रमा देखने के लिए जाते थे, वह लोग दिन मे भोजन नहीं लेते थे। और रात्रि को चंद्रमा को दखने के, बाद ही भोजन ग्रहण करते थे।

किन्तु आजकल तो पूर्णिमा की रात में, लोग सभाएं एवं पार्टियां करते हैं। जिसे "Full Moon Party" कहा जाता है। और व्यक्तियों ने कालांतर में, ऐसे घर बना लिए, जिसमें चारों तरफ घर थे, तथा बीच में एक खाली स्थान था। इसी बीच के खाली स्थान में, पूर्णिमा की रात को, लोग अपने अपने घर में ही, चंद्रमा की आभा का आनंद लेते थे।

175. Cast -

जब Film के किसी Role में, किसी कलाकार को लेते हैं, तो उसे Cast करना कहते हैं। यानी उस कलाकार की, शारीरिक एवं मानसिक क्षमता के, आधार पर उस कलाकार को, किसी Role के लिए, Cast किया जाता है, तब यह कहा जाता है कि, "इस कलाकार को, यह वाली भूमिका प्रदान करो, वह इसे अच्छी तरह से निभा लेगा"। Film में बहुत सी भूमिकाएं होती हैं, जो की सामाजिक संरचना की, Cast के अनुसार होती हैं। यानी समाज में जैसी जैसी Cast होती है, वैसी वैसी भूमिका में, किस किस कलाकार को Cast करना है, इसका निर्धारण Casting Director के द्वारा, किया जाता है।

176. Clever = कलेवर -

Clever लोग अपना कलेवर अच्छा रखते हैं। Clever = कलेवर। Clever लोगों को पहचाना है, तो उनका कलेवर देखो।

177. कौम + मौन = Common -

जो कौम मौन हो जाती है, वह Common कहलाती है। कौम + मौन = Common. Common = सामान्य = General. जो कौम मौन नहीं होती है, वह पीपल पर मटके में लटकी, नजर आती है। इसे ही Common People कहते हैं। Common + पीपल = Common People. जो चुप नहीं होता है, उसे चुपचाप से, Chop कर दिया जाता है। चुप + Chop = चुपचाप। इसलिए Chop होने से बचने के लिए लोग, चुप हो जाते हैं, उनकी पदचाप भी नहीं आती है, और चुपचाप जीने लगते हैं। इसलिए कहते हैं कि, "तुम ! चुपचाप बैठे रहो, तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं है, बस तुम चुप बैठो और, अपना मुंहभर मत खोलना"। जो चुप हो जाते हैं, वह छुप जाते हैं, और तब पन्नों पर अपनी बात को छापकर, चुपचाप जगह-जगह बिखेर देते हैं। छुप + छाप = चुपचाप। लोग पन्नों पर लिखी बातों को, पढ़ न सकें, इसलिए लोगों को अनपढ़ रखा जाता है। स्कूल आदि में, शिक्षा का स्तर गिरा दिया जाता है। लोग वर्णमाला ही न सीख सकें, ऐसी शिक्षा व्यवस्था कर दी जाती है। तब लोग पन्नों पर चित्र बनाकर, अपनी बात कहते हैं, जिसे कार्टून कहते हैं। जब कार्टून भी Banned हो जाते हैं, तब लोग रंग-बिरंगे होकर, Joker बनकर लोगों को, इशारों में अपनी बात कहते हैं, और लोग उनके इशारों पर हंसते हैं। लोग Joker के इशारों की गंभीरता को, जब समझ लेते हैं, तब वह भी जोकरों की तरह, इशारों में अपनी बात को कहने लगते हैं। इस तरह सारी कौम Joker बन जाती है।

178. छत + त्रिय = क्षत्रिय -

छत बन जाता है जो, तीन के लिए वह है "क्षत्रिय"। छत + त्रिय = क्षत्रिय। जिस तरह से छत, गर्मी, बरसात, सर्दी को सहन करती हुई, अपने नीचे रहने वालों की, सर्दी, गर्मी, बरसात से रक्षा करती है,

उसी तरह से क्षत्रिय, अपने नीचे रहनेवाले तीन की, रक्षा करता है। इसलिए "रक्षत्रिय" कहलाता है। रक्षा + त्रिय = रक्षत्रिय। जो रक्षा करता है तीन की, वह है "रक्षत्रिय"। रक्षत्रिय से अपभ्रंश होकर, क्षत्रिय बन गया। क्षमा करते हैं जो तीन को, वही क्षत्रिय होते हैं। क्षमा + त्रिय = क्षत्रिय।

179. चुनना + OT = चुनौती -

जब किसी को OT में, ले जाया जाता है, तब उसे कहा जाता है कि, "तुम एक को चुन सकते हो, क्योंकि यह अंग तुम्हारे शरीर से, निकालना पड़ेगा, तभी तुम्हारी जान बचेगी"। चुनना + OT = चुनौती। OT = Operation Theatre. तो व्यक्ति के लिए, यह एक चुनौती होती है कि, वह दोनों में से OT में क्या चुने। अपना "अंग" या अपनी "जान"। अगर इस चुनौती को चुनने में, देर हो गई, या OT में कुछ गड़बड़ हो गई, तो यही चुनौती व्यक्ति के लिए, ऊपर जाने की Opportunity बन जाती है। ऊपर + चुनौती = Opportunity. और ऊपर वाले को, कोई चुनौती नहीं दे सकता है।

180. Cheque + आता + Cheque. = चकाचक -

जब Cheque पर Cheque आता है, तब सब चकाचक हो जाता है।

181. ची + तन = चेतन -

ची रहता है तन में तो व्यक्ति चेतन रहता है और उसे ही चैतन्य कहते हैं। ची + तन = चेतन। ची = आत्मा।

182. चिन्ह + तीत = चिंतित -

चिन्ह जो तीत के होते हैं, वही चिंतित होते हैं। चिन्ह + तीत = चिंतित। तीता बोलने बाद, व्यक्ति जब बैठता है, तब उसके चेहरे पर जो चिन्ह आते हैं, उसे चिंतित कहते हैं।

183. चम + गाद + अड़ = चमगादड़ -

चमड़े में जिसके गाद होती है और जिससे वह अड़ जाती है। चम + गाद + अड़ = चमगादड़। गाद = गोंद। चमगादड़ के चमड़े में गाद होती है, जिससे चमगादड़ कहीं पर भी, चिपककर अड़ जाती है।

184. चाल + Luck = चालक -

चाल एवं Luck से व्यक्ति, चालक बनता है। चाल + Luck = चालक। व्यक्ति की चाल कैसी है, यानी व्यक्ति वाहन को कैसे चलाता है। तथा जब व्यक्ति वाहन को, चला रहा होता है, तब उसकी Luck कैसी है। यह दो योग्यताएं ही व्यक्ति को, चालक बनाती हैं। तभी तो कहते हैं कि, "तुम Driver तो अच्छे हो, पर तुम्हारी किस्मत है कि, तुम वहां से गाड़ी निकाल लाए"। चालक ही चालाक होता है, क्योंकि ऐसी चाल से चालक गाड़ी में, Lock लगाकर रखता है, जिसको कोई नहीं जानता कि, इस गाड़ी का Lock कहां पर लगा है। चाल + Lock = चालाक।

चाल + Lock + Key = चालाकी -

चालाकी और बुद्धिमानी में, यही फर्क है कि, कोई भी चाल चलकर Lock की, Key प्राप्त करना ही चालाकी है। चाल + Lock + Key = चालाकी।

बुद्धि + मान + Knee = बुद्धिमानी –

बुद्धि से व्यवहार करके, मान को प्राप्त करके, अपने Knee से नेऊर जाना ही बुद्धिमानी है। बुद्धि +

मान + Knee = बुद्धिमानी।

185. कौम + मिट्टी = Committee -

एक कौम एवं एक मिट्टी के लोग, जब किसी दूसरे देश में रहते हुए, एक-दूसरे से मिलते हैं, उसे "Committee" कहते हैं। कौम + मिट्टी = Committee. एक जैसी मिट्टी के लोग, जब किसी दूसरे देश में रहते हुए, एक-दूसरे से मिलते हैं, उसे "समिति" कहते हैं। सम + मिट्टी = समिति। एक जैसी मिट्टी के लोग, जब किसी दूसरे देश में रहते हुए, एक-दूसरे से मिलने के लिए, एक जैसी दिनांक तय करते हैं, उसे समिति कहते हैं। सम + मिति = समिति।

186. कोप + पी = Copy -

जब कोई आपकी Copy करे, तब आप उस कोप को पी जाओ। कोप + पी = Copy. Copy वही करते हैं, जो आपके जैसा होना चाहते हैं। वह आपके हाव-भाव की, Copy करके Actor तो बन जाएंगे, किन्तु आपकी आत्मा को, वह Copy नहीं कर सकते हैं। क्योंकि जैसे ही वह, Acting करना छोड़ देंगे, वापिस अपने असली रूप में आ जाएंगे। इसलिए जो लोग जीवन को, आत्मा से जीते हैं, उनकी Copy नहीं की जा सकती है। क्योंकि उनकी आत्मा तक, Copy करनेवालों की नज़र नहीं, पहुंच पाती है। क्योंकि किसी की Copy, तभी की जाती है, जब उसका मज़ाक उड़ाना होता है। जैसे कि Hitler की Copy, Charlie Chaplin ने की थी। क्योंकि Hitler पर तो क्रोधित नहीं हो सकते हैं, तो Hitler की Copy करके, Hitler की Image को, हल्का कर सकते हैं। इसलिए लोग जिन पर गुस्सा होते हैं, उन लोगो के किरदारों की Copy करके उनके किरदार को हलका करते हैं और, इस तरह से Copy करनेवाले, अपने कोप को पी जाते हैं। उसको Copy करते हुए देखकर, लोग भी हंसते हंसते, अपने कोप को भूल जाते हैं और, उनके मन भी हल्के हो जाते हैं। इसलिए पहले लिखने के लिए, Copy दी जाती थी कि, "जितना भी कोप भीतर है, उस कोप को Copy पर लिख दो, तो भीतर का सारा कोप, बाहर निकल जाएगा"। इसलिए लोगों ने अपने कोप को, Copy पर लिख लिखकर, अपना कोप बाहर निकाल दिया। इसलिए जितना कुछ भी लिखा गया है, वह सब का सब किसी न किसी का, भीतर का कोप है, जो वह भीतर पी नहीं सका और Copy में लिख दिया गया है। इसी कोप के लिए, पहले कोप भवन बनाए जाते थे। जहां पर बैठकर व्यक्ति, अपने कोप का अवलोकन करता था। कोप का अर्थ होता है, क्रोध और पश्चाताप। क्रोध + पश्चाताप = कोप। इसलिए जब व्यक्ति को, कोप आता था तो, तब व्यक्ति कोप भवन में, चला जाता था।

187. Cup + पात्र = कुपात्र -

कुपात्र को Cup में, पेय पदार्थ दिया जाता है। Cup + पात्र = कुपात्र। सुपात्र को Soup में, पेय पदार्थ दिया जाता है। Soup + पात्र = सुपात्र। Cup में चाय डालकर ली जाती है। Soup Bowl में, Soup डालकर दिया जाता है। चाय पीने के बाद भूख नहीं लगती है। Soup तो भूख बढ़ाने के लिए, दिया जाता है।

188. कुछ शर्तें = Certain -

जब कोई कहता है कि, "बाकि तो सब ठीक है, लेकिन हमारी कुछ शर्तें हैं"। तो "कुछ शर्तें" ही "Certain" बन गया। कुछ शर्तें = Certain.

189. ची + हरा = चेहरा - ची हरा है तो चेहरा है।

190. चित + रण = चित्रण -

व्यक्ति के चित्त में जो रण होता है, व्यक्ति उसी का चित्रण करता है। चित + रण = चित्रण। व्यक्ति के चित्र में रण का चित्रण होता है। चित्र + रण = चित्रण। व्यक्ति उपरोक्त दो परिस्थितियों में ही, व्यक्ति चित्रण करता है।

चीत्कार = चित्रकार – व्यक्ति का चित्त जब चीत्कार करता है, तब व्यक्ति चित्रकार बनता है।

चित्त + कार्य = चित्रकार -

व्यक्ति जब चित्र बनाने का कार्य करता है, तब व्यक्ति चित्रकार बनता है। व्यक्ति का चित्त जब कार्य करने लगता है, तब व्यक्ति चित्रकार बनता है। व्यक्ति उपरोक्त तीन परिस्थितियों में ही, व्यक्ति चित्रकार बनता है।

191. Calf + लेकर = क़ाफिले – Calf लेकर जो चलते थे, वह काफिले कहलाते थे।

क़ाफी + Law = क़ाफिला – काफिला में क़ाफी Law होते हैं।

Coffee + लेकर - Coffee लेकर जाते हैं।

क़ाफी + लोग = काफी लोगों को लेकर जिसमें जाते हैं, उसे क़ाफिला कहते हैं।

192. कौम + Unity + निष्ठा = Communist -

क़ौम की Unity में निष्ठा रखनेवाले को, Communist कहते हैं। क़ौम + Unity + निष्ठा = Communist. क़ौम = देश, Country, राष्ट्र। Communist की एक ही, निष्ठा होती है कि, "क़ौम की Unity बनी रहे"। क़ौम + Unity = Community. क्योंकि क़ौम में Unity रहेगी तो, राष्ट्र में उन्नति होगी। Unity = उन्नति। और Unity के लिए पूरे राष्ट्र को, एक Union की नीति अपनानी पड़ेगी। Union + नीति = Unity. एक Union की नीति अपनाने के लिए, राष्ट्र को एक Unit बनना पड़ेगा। जब पूरा राष्ट्र एक Unit बन जाएगा, तब राष्ट्र United हो जाएगा, और राष्ट्र में उन्नति आ जाएगी।

193. Clay + I + Am = Claim – Clay I am is called Claim. "मैं मिट्टी हूं"।

194. कौम + Unity + मुनि + निष्ठा = Communist -

कौम में Unity करने की मुनि की निष्ठा ही, मुनि को "Communist" बनाती है। कौम + Unity + मुनि + निष्ठा = Communist. कौम = देश, Country, राष्ट्र। Community + Monist = Communist. इसलिए जो जो आश्रम मुनि के द्वारा, बनाए गए हैं, वहां सबमें Communism है। कौम में Unity बनाए रखने के लिए, Community बनाई जाती है। कौम + Unity = Community. मुनि का ईष्ट ही Monist है। मुनि + ईष्ट = Monist. Monist = अद्वैतवाद। मुनि को जब अपना इष्ट मिल जाता है, तब मुनि मौन हो जाता है, क्योंकि वह मुनि अपने ईष्ट का, वर्णन नहीं कर पाता है। इसी से वह मुनि "अद्वैतवाद" के, सिद्धांत को सिद्ध कर लेता है। अद्वैतवाद का सिद्धांत

सभी को, ब्रह्म कहता है। यानी अद्वैतवाद के सिद्धांत के अनुसार, सभी ब्रह्म हैं। तब वह मुनि के द्वारा कौम में, Unity की बात की जाती है, जिसे Communist कहते हैं।

195. चरित + Able = Charitable -

चरित ही Able बनाता है। चरित + Able = Charitable. Able = योग्य। इसलिए लोग Able होने के लिए, Charity करते हैं। चाह और रीति का जोड़ ही, Charity कहलाता है। चाह + रीति = Charity. जब व्यक्ति के अन्दर, किसी को प्राप्त करने की चाह होती है, तब व्यक्ति को कहा जाता है कि, "तुम्हारी चाह तभी पूरी होगी, जब तुम इस रीति का पालन करोगे"। तब व्यक्ति अपनी चाह को, पूरी करने के लिए, उस रीति का पालन करने लगता है। इसलिए लोगों ने प्रत्येक चाह को, पूरी करने के लिए, उस चाह के साथ एक रीति जोड़ दी है। इस तरह लोगों से, रीतियों का पालन करवा लिया जाता है। चाह और रीति ही "चरित" बनाती हैं, और व्यक्ति "Able" हो जाता है। इस तरह Charitable हो जाता है।

196. ची + वर = चीवर -

ची को वर करने के लिए, चीवर पहना जाता है। ची + वर = चीवर। जो व्यक्ति अपने भीतर की, ची ऊर्जा को जगाना चाहता है, वह व्यक्ति चीवर को पहनता है। ची = भीतर की ऊर्जा। Tei और ची एक ही बात है। जो व्यक्ति Tei ऊर्जा को, जगाना चाहता है, वह व्यक्ति Tai पहनता है। Tei = Tai. Tei ऊर्जा या ची ऊर्जा को कुण्डलिनी शक्ति कहा जाता है, कुण्डलिनी शक्ति को "Kung" कहते हैं। इसी से इसे "Tai Chi Kung" कहते हैं। Tai Chi Kung के Meditation में, श्वास को देखते समय, नाक से "फूं" "फूं" की आवाज सुनाई देती है। इसलिए इसे "Kung Fu" बोला जाता है। अतः Tai Chi Kung Fu और, कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करने के लिए, Meditation करते समय, एक विशेष प्रकार का वस्त्र पहना जाता है, जिस वस्त्र को "चीवर" कहते हैं। क्योंकि Tai Chi Kung Fu या, कुण्डलिनी शक्ति का अभ्यास करने वाले साधकों में से एक विशेष प्रकार की, ऊर्जा निकलने लगती है। और इस ऊर्जा के संपर्क में जो भी आता है, उसके शरीर और मन में, परिवर्तन होने लगता है। इसलिए साधकों की पहचान करने के लिए, साधकों को चीवर पहनाए जाते हैं।

197. Com + भी + Nation = Combination -

जब किसी की बुरी दशा को देखकर, उपरोक्त लिखा हुआ वाक्य बोला जाता है, तो उससे "हादसा" शब्द बनता है। कौम भी Nation है। Com + भी + Nation = Combination. कौम या Nation एक ही बात है। हर कौम का एक Nation होता है, और हर Nation में एक कौम रहती है। Comb में लगे हुए i, जिस तरह से Comb को, combine करके रखते हैं। उसी तरह से सभी i Nation को, Combination में रखती हैं। Comb + i + Nation = Combination. सारी कौम के बाल, जिससे काढ़े जाते हैं, उसे Comb कहते हैं। कौम + बाल = Comb.

198. चढ़ाई + आदर = चादर -

जो चढाई जाती है आदर के साथ, उसे चादर कहते हैं। चढ़ाई + आदर = चादर। मंच पर अतिथि को आदर देने के लिए, सबसे पहले अतिथि को, माला पहनाई जाती है। फिर अतिथि को नारियल दिया

जाता है। फिर अतिथि को चादर ओढ़ाई जाती है। इसी तरह से, अतिथि के आने पर, अतिथि के लिए खाट पर, दरी बिछाई जाती है, फिर दरी के ऊपर चादर बिछाई जाती है। फिर उस खटिया पर, अतिथि को बैठाया जाता है। यानी आदर देने के लिए, चादर चढ़ाई जाती है।

199. चित्र = चैत्र -

बसंत में तो पीला रंग प्रकट करती है "प्रकृति" किन्तु होली में तो सभी रंग प्रकट कर देती है "प्रकृति"। और, इस सभी रंगों से, प्रकृति में जो प्रकट होता है, उसे "चित्र" कहते हैं। इसी चित्र का ही अपभ्रंश है "चैत्र"। चित्र = चैत्र। क्योंकि प्रकृति में प्रकट हुए, इन सब रंगों को देखकर, व्यक्ति का चित तर हो जाता है। और व्यक्ति चित्र बनाता है। चित्त + तर = चित्र। इसलिए होली के अगले दिन से, चैत्र मास प्रारंभ हो जाता है। मुरुगन स्वामी के दो दिन, होलाष्टक के आठ दिन, चैत्र नवरात्रि के नौ दिन, ही अष्ट सिद्धि नव निधि हैं। 2 + 8 + 15 + 9 + 6 = 40. मुरुगन स्वामी की षष्ठी तिथि से, प्रारंभ होकर, हनुमान जयंती की पूर्णिमा तक, यह चालीस दिन, ब्रह्मचर्य में रहने के होते हैं। जिसमें आठ सिद्धियां और, नवनिधियों की प्राप्ति होती है। इसलिए यह चालीस दिन, चालीसा कहलाते हैं। एक हनुमान चालीसा के पाठ में, नौ मिनट लगते हैं। एक दिन में चालीस बार, हनुमान चालीसा पाठ करने में, तीन सौ साठ मिनट यानी नौ घंटे लगते हैं। प्रतिदिन दिन चालीस बार, पाठ करने से, चालीस दिन में एक हजार छ: सौ बार पाठ हो जाता है और चालीस दिन में कुल तीन सौ साठ घंटे का पाठ हो जाता है। हनुमान चालीसा का पाठ मुरुगन स्वामी के दिन से प्रारंभ करके हनुमान जयंती तक करना होता है। हनुमान चालीसा का पाठ करते समय चालीस दिन तक व्यक्ति को ब्रह्मचर्य का पालन करना होता है। तब जाकर अष्ट सिद्धि और, नव निधि की प्राप्ति होती है।

200. चर + चाह = चर्चा -

दो ही चीजों की चर्चा होती है, चरने की और चाह की। चर + चाह = चर्चा। पशु कितना चर गए और, मनुष्य की क्या चाह है ? बस इन दो की ही चर्चा होती है।

201. चु + ना = चुना -

किसी भी कार्य के लिए, उसी को चुना जाता है, जो "चु" "ना" करते हैं। चु + ना = चुना। क्योंकि कार्य की सफलता, कार्य की गोपनीयता में होती है, और जो "चु" तक नहीं करते हैं, उन्हें ही उस कार्य को, सफल करने के लिए "चुना" जाता है। तभी तो कहते हैं कि, "देख ! तू चु भी ना करियो, सारी बात मैं करूंगा, तेरा काम बन जाएगा"। इसलिए किसी भी कार्य में, उसी को लिया जाता है, जो चुप रहता है और बोलता नहीं है। और ज्यादा Socialize नहीं होता है। किसी से घुलता मिलता नहीं है। और कार्य की गोपनीयता को, बनाए रखता है। जिस प्रकार से चूना लगाने से, पानी रिसता नहीं है। उसी प्रकार से चु ना करने वाला व्यक्ति, कार्य की किसी भी बात को, Leak नहीं करता है। चु ना करने वाले को, Introvert कहा जाता है।

202. चमकती + अर्चना = चर्च -

गिरजा देवी मंदिर में स्त्रियाँ पूजा करने जाती थीं। यही गिरजा देवी मंदिर गिरजाघर कैसे बन गए ? यह एक शोध का विषय है। क्योंकि Christianity में गिरजा नाम का कोई, औचित्य नहीं है।

Christianity में तो चर्च है। तो क्या जितने भी चर्च हैं, पहले वह गिरजा देवी के मंदिर थे ? जहाँ पर गिरजा देवी की, अर्चना की जाती थी। चमकती है जहाँ अर्चना, उसे कहते हैं "चर्च"। चमकती + अर्चना = चर्च। क्योंकि गिरजा देवी के मंदिर में, अखण्ड दीपक की प्रज्वलित ज्वाला, चमकती रहती है और प्रत्येक देवी के मंदिर में, अखण्ड दीपक को प्रज्वलित करना ही, अर्चना माना जाता है। इसलिए सभी देवियों के मंदिर में, अखण्ड दीपक प्रज्वलित रहता है। इसी अखण्ड दीपक की तरह ही, चर्च में Candle को प्रज्वलित किया गया। मोमबत्ती को प्रज्वलित किया गया। क्योंकि Candle को भी कंदील कहते हैं। Candle = कंदील। यानी उस समय युरोप में, जितने भी गिरजाघर थे, उन सभी गिरजाघर में, गिरजा देवी की अर्चना, दीपक को प्रज्वलित करके होती थी। तो यह गिरजाघर बाद में चर्च बन गए, किन्तु अखण्ड दीपक के रूप में, Candle आज भी प्रज्वलित किए जाते हैं। और जो भी इन चर्च में जाता है, वह जाकर एक Candle अवश्य जलाता है। यानी गिरजाघर में गिरजा देवी की, मूर्ति की जगह, जीसस की मूर्ति तो आ गई, किन्तु Candle के रूप में, दीपक को प्रज्वलित करना आज भी जारी है। गिरजा देवी के मंदिर में प्रसाद के रूप में, गुड़ और चरणामृत दिया जाता था, जो चर्च में आकर के Wine और, Sacramental Bread हो गया। किन्तु अब चर्च में प्रसाद का क्या काम ? चर्च में अभी भी गिरजा देवी का दर्पण रखा हुआ है। जिसे Eucharistic Adoration कहा जाता है। गिरजा देवी मंदिर में, पूजा करनेवाली कुँवारी कन्याओं को, युरोप में चुड़ैल-Witches कहकर, जिन्दा जला दिया जाता गया। और गिरजा देवी मंदिर को, गिरजाघर तथा चर्च में बदल दिया गया। तथा गिरजा देवी मंदिर में स्थित, गिरजा देवी की मूर्ति की जगह, जीसस की मूर्ति रखी गई। किन्तु कुछ जगह पर, इन कुँवारी कन्याओं को रखा गया। ताकि गिरजा देवी की पूजा होती रहे। इन कुँवारी कन्याओं को Nun कहा गया। अभी भी चर्च एवं गिरजाघर में, एक गुप्त स्थान पर, गिरजा देवी की मूर्ति रखी गई हैं। इन गिरजा देवी की मूर्ति की पूजा, बहुत ही गुप्त रूप से की जाती है। इसी पूजा को करने के लिए, Nuns को छुपाकर रखा जाता है। जब पुरुषों ने गिरिजा देवी के मंदिरों पर कब्जा किया, तब उन पुरुषों ने, देवताओं की मूर्ति स्थापित की, और गिरिजा देवी मंदिर में आनेवाली कुँवारी कन्याओँ को देवदासी बनाकर, मंदिर में रखा। देवी रुक्मिणी भी गिरजा देवी के मंदिर में, पूजा करने गई थीं। यानी उस समय गिरजा देवी के मंदिर, सब जगह थे और, कुँवारी कन्याएँ ही गिरजा देवी के मंदिर में, अर्चना करने जाती थीं। कालांतर में यही गिरजा देवी के मंदिर, गिरजाघर और चर्च बन गए। और आज भी इन गिरजाघर और चर्च में, अखण्ड Candle प्रज्वलित किये जाते हैं। तथा प्रसाद दिया जाता है। आज भी कुँवारी कन्याएँ शादी से पहले, इन गिरजाघर में पूजा करने जाती हैं और Candle जलाती हैं। और चर्च एवं गिरजाघर में शादियाँ होती हैं। क्योंकि देवी रुक्मिणी ने, भगवान श्रीकृष्ण को गिरजा देवी के मंदिर में, ही बुलवाया था। इस तरह से गिरजा देवी के मंदिर, कब गिरजाघर बन गए ? और गिरजाघर से कब चर्च बन गए ? यह प्रश्न आज भी प्रश्न ही है। गिरजा देवी मंदिर को गार्जिया देवी भी कहा जाता है, और गार्जिया से ही गार्जियन शब्द बना है। यानी कुँवारी कन्याओं को पूछा जाता था कि, "तुम्हारा गार्जियन कौन है" ? गार्जियन = Gurdian. आज भी भारत के मंदिरों में, बताशा एवं चरणामृत प्रसाद के रूप में दिया

जाता है, यह वही गिरजा देवी का प्रसाद है। इसी से ज्ञात होता है कि, पुराने समय में केवल गिरजा देवी के मंदिर थे, और गिरजा देवी के इन मंदिरों में, केवल कुँवारी कन्याएँ ही पूजा करने जाती थीं। यह सारे गिरजा देवी के मंदिर ही, बाद में अलग-अलग मंदिर बन गए। इसलिए शिवलिंग के सामने जो एक, स्त्री की मूर्ति होती है, वह मूर्ति ही गिरजा देवी की है। और लक्ष्मी नारायण मंदिर में भी, लक्ष्मी की मूर्ति के स्थान पर, पहले गिरजा देवी की मूर्ति थी। तथा हनुमान जी के मंदिर में, हनुमान जी की मूर्ति के पैरों के नीचे, जो एक लेटी हुई स्त्री की मूर्ति है, वह मूर्ति भी गिरजा देवी की मूर्ति है। यानी जितने भी मंदिर हैं, चाहे वह दुनिया के किसी भी कोने में हैं, वह सब मंदिर पहले, गिरजा देवी के मंदिर थे। गिरजा देवी की मूर्ति को, जमीन के नीचे दबाकर, मजार बना दी गई। और ऊपर से कपड़े उड़ाये जाते हैं। यानी गिरजा देवी के मंदिरों को, किस प्रकार से अन्य पूजा स्थलों में, परिवर्तित कर दिया गया। यह आज का समय बताता है। क्योंकि पुरुष यह सहन नहीं कर सका कि, किसी स्त्री की इतनी पूजा हो। कहीं-कहीं इन्हीं गिरजा देवी को, अम्बा देवी, दुर्गा देवी, काली देवी, महालक्ष्मी देवी और त्रिदेवियाँ, आदि भिन्न-भिन्न देवियाँ, बनाकर भी पूजा गया। यानी गिरजा देवी के मंदिर कालांतर में, भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं के मंदिर बन गए, और गिरजा देवी को लोग भूल गए, तथा स्त्रियों को मंदिर में आने से, मना कर दिया गया। जबकि गिरजा देवी का मंदिर तो, स्त्रियों के लिए ही बना था। क्योंकि जब कुँवारी कन्याएँ, रजस्वला होती थीं, तो उन कुँवारी कन्याओं को, गिरजा देवी के मंदिर में, उन पाँच दिनों के लिए रख दिया जाता था। गिरजा देवी के मंदिर में, एक बूढ़ी स्त्री होती थी, जो उन कुँवारी कन्याओं की देखभाल करती थी। और रजस्वला के दिनों में, कैसे रहना है, यह बताती थी। तो जब उन कुँवारी कन्याओं के, विवाह का समय आता था, तो वह कन्याएँ उन बूढ़ी स्त्री से मिलने आती थीं। तथा उनको अपने विवाह में, आमंत्रित करती और आशीर्वाद लेती थीं। इसी से केवल कुँवारी और रजस्वला कन्याओं के लिए, गिरजा देवी के मंदिर बने थे। इन गिरजा देवी के मंदिर में, कुँवारी और रजस्वला कन्याएँ ही जाती थीं। और आज रजस्वला कन्याओं को, मंदिर में आने नहीं दिया जाता है, और कहा जाता है कि, "मंदिर अपवित्र होता है"। जबकि गिरजा देवी मंदिर बना ही, रजस्वला स्त्रियों के लिए था। गिरि जा घर से यह गिरजाघर बन गया। गिरि + जा + घर = गिरजाघर। रजस्वला समाप्त होने के बाद, गिरि नाम की कन्या को, यह कहा गया कि, "गिरि ! जा अब अपने घर"। इस तरह से गिरि वह पहली, कन्या थी जिसके नाम पर, गिरजा देवी मंदिर बनाया गया।

203. चम + चा = चमचा –

चमड़ी को चाटनेवाला चमचा होता है। चम + चा = चमचा। जिस प्रकार व्यक्ति के साथ रहनेवाला कुकुर, व्यक्ति को चाटता है। उसी प्रकार चम्मच को व्यक्ति चाटता है। और चमचा कहलाता है। क्योंकि चाटने से चमक आती है।

204. छी + Ink = छींक -

जब व्यक्ति छी को देखता है, तब व्यक्ति के नाक से Ink निकलती है, जिसे छींक कहते हैं।

205. कष्टों + में = Custom -

जब किसी व्यक्ति से, किसी व्यक्ति ने पूछा, 'आजकल कहां हो ? क्या कर रहे हो' ? तब उस व्यक्ति ने

कहा कि, 'कष्टों में हूं' | कष्टों + में = Custom. यही कष्टों में से शब्द बना 'Custom'. अपने समाज में पैदा हुए व्यक्ति को, समाज के लोग, समाज के Custom को करवाकर, अपने लिए Customise कर लेते हैं। और समाज के Custom को, करते हुए व्यक्ति को कष्ट होता है। कष्ट का अनुभव करनेवाला व्यक्ति, ऊं का भी अनुभव करता है। कष्ट + ऊं = Custom. Custom को करता हुआ व्यक्ति, जब मर जाता था तो उसे, Customer कहते थे। Custom + मर = Customer. जब एक देश का व्यक्ति, दूसरे देश में जाता था, तब दूसरे देश के लोग, उसके Custom की जांच करके, उसके देश का पता लगा लेते थे। आजकल उस जांच विभाग को, Custom कहा जाता है।

206. छि + प = छिप -

छी को पर्देमें छिपा कर रखा जाता है। तभी तो कहते हैं कि, 'छि ! जा पर्दे के पीछे छिप जा'।

207. ची + तन = चेतन –

ची जब तन में रहती है, तब उस तन को चेतन कहते हैं। ची + तन = चेतन। ची = आत्मा। चीन में आत्मा को ची कहते। ची + In = चीन। ची जिसमें है, उसे चीन कहते हैं। यानि आत्मा वाला देश ही, चीन कहलाता है। इसी ची के कारण तन को चेतन कहते हैं।

208. कुल + चर = Culture -

कुल के अनुसार जो चरता है, उसे Culture कहते हैं। कुल + चर = Culture. चरना = खाना, भोजन। व्यक्ति के भोजन से, व्यक्ति का Culture, पता लग जाता है कि, 'यह किस 'कुल' का है'। क्योंकि पहले समय में, व्यक्ति की शिक्षा-दीक्षा, गुरुकुल में होती थी। तो प्रत्येक गुरुकुल में भोजन करने का, अपना-अपना तरीका होता था। और भोजन करने के तरीके से, पता लग जाता था कि, यह किस गुरुकुल का है ? इसलिए भारत देश में सबसे पहले, अतिथि को जलपान कराया जाता है, जिससे उसके कुल का पता लग जाता था। यही कुल चर को, Roman लिपि में 'Culture' लिखा गया। किन्तु 'कलचर' पढ़ा गया।

209. छुए + दर = छुद्र -

जो छुए दर को देखकर, उसे छुद्र कहते हैं। छुए + दर = छुद्र। इसलिए आजकल प्रत्येक वस्तु पर, दर लिख दी जाती है कि, 'पहले वस्तु की दर देख लो, उसके बाद वस्तु को छुओ'। इसे ही छुद्र कहते हैं। यही छुद्र कालांतर में अपभ्रंश होकर, शूद्र हो गया। कि 'यह कार्य करना है तो, पहले नहाकर आओ, मांस, मछली, मदिरा छोड़कर आओ, तब यह कार्य कर सकते हो'। जो इन शर्तों को नहीं पूरा कर पाता था, उसे छुद्र कहा गया। कि 'इसको छूना नहीं, क्योंकि यह छुद्र है, इसने नहाया नहीं है, इसने शौचालय जाने के बाद, हाथ नहीं धोया है, यह मांस, मछली खाता है, और मदिरा पीता है। इसलिए यह छुद्र है, इसको छूना नहीं है। क्योंकि यह Hygiene का, ध्यान नहीं रखता है। इसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, राग, द्वेष, अहंकार है। जो हमको भी हो जाएगा। इसलिए इससे दूर से बात करो।

D

1. Demo + Critic = Democratic -

Demo देतें हैं, Critic करते हैं। यही सब Democracy में होता है।

2. दानी + ईश्वर = दानेश्वर - दान देनेवाला ईश्वर है।

3. दीपक + लेकर = Deeply -

जब आप गहराई में जाते हैं, तो दीपक लेकर जाते हैं। जो रोशनी करता है, जिसमें आप गहराई में भी देख सकते हैं। उसी प्रकार जब आप, ध्यान की गहराई में जाते हैं, तब आप की रोशनी से आप देख सकते हैं। आप यानि आत्मा, जो सदा प्रकाशित है। जैसे-जैसे ध्यान गहराता जाएगा। आपका प्रकाश वैसे-वैसे बढ़ता जाता है। फिर आपको समाधान मिलने लगते हैं, जो समाधि कहलाते हैं।

4. दौ + बत = Doubt - जब कोई दो तरह की बात करता है तो Doubt होता ही है।

5. दीप + परेशान = Depression -

परेशान शब्द Press से बना है। Press यानि दबाव। जब किसी पर ज्यादा दबाव डाला जाता है। तो वह परेशान हो जाता है। तो पुराने समय में जब किसी पर ज्यादा दबाव डाला जाता था। और उस दबाव से वह परेशान होता था, तो कहते थे की जाकर पुरुखों के स्थल पर, या मंदिर में एक घी का दीप (दीपक, दिया) जलाकर आओ। जिससे तुम्हारा दबाव कम हो जायेगा। या घर पर भी घी का दीपक जलाकर रखो तो परेशानी दूर हो जायेगी। इस तरह से घी का दीपक जलाना परेशानी यानि दबाव को कम करने का उपाय था। आज भी दक्षिण के मंदिरों में हजारों सालों से घी का ही दीपक जल रहा है और वहाँ पर बिजली का उपयोग नहीं होता है और उस दीपक के सान्निध्य से ही लोगों की परेशानी दूर हो जाती है। और वह मंदिर किसी भी अक्रांता द्वारा तोड़ा नहीं गया है क्योंकि घी के दीपक जलने से उस स्थान की पवित्रता बनी रहती है और वह स्थान दूषित नहीं होता है। इस तरह से Depression का यह उपाय, न जाने कब से उपयोग में लाया जा रहा है।

6. धर्म + मर्म + इक = धार्मिक -

धर्म का मर्म इक है। इसीलिए धार्मिक हैं। धर्म + मर्म + इक = धार्मिक।

7. दर्शन -

किसी के दर्शन करने हो तो उसकी दर (कीमत) तो देनी पड़ती है। इसलिए हर दर्शन की एक दर होती है। जब Sun (सूर्य) आता है, तभी किसी के दर्शन कर सकते हैं। दर चुकाकर दर्शन करने से शन (शांति) मिलती है। इसलिए नदी के दर्शन करते हैं तो सिक्का नदी में डालते हैं। मंदिर में भगवान के दर्शन करते हैं, तो मूर्ति के चरणों में भेंट चढ़ाते हैं। संत के दर्शन करते हैं, तो संत को दक्षिणा देते हैं। जिसके भी दर्शन करने से (शन) शांति मिलती है, उसका दर (मूल्य) आवश्यक चुकाना चाहिए।

8. दधीची -

दही (दधी) खाने से मनुष्य की हड्डियाँ दधीचि ऋषि की तरह मजबूत हो जाती हैं। जिससे वज्र

बनाया फिर ईन्द्र ने।

9. डर + राम = Drama -

डर राम का बैठाने के लिए ही Drama किया जाता है, जिसे राम लीला कहते हैं।

10. दो + विधा = दुविधा -

दो विधा सीखनेवाला व्यक्ति ही, दुविधा में आ जाता है। इसीलिए, व्यक्ति को एक ही, विधा सीखनी चाहिए। दो + विधा = दुविधा। व्यक्ति का समय, इसी विचार में, गुजर जाता है कि, इस विधा का उपयोग करे, या, इस विधा का उपयोग करे। और, जो व्यक्ति, बहुत सारी विधाओं को, सीख लेता है, वह व्यक्ति, बहुधा कहलाता है। बहुत + विधा = बहुधा। बहुत विधाओं की, जानकार को बहु कहते हैं। बहु ही परिवार के, बहुत से कार्य कर लेती है। बहु यानी परिवार की बहु। सभी परिवारों में, बहु, बहुधा से पाई जाती हैं। दुविधा और बहुधा में, स्थित व्यक्ति, फिर सुविधा को ढूँढ़ता है। और, वह व्यक्ति अपने हाथ की, सबसे छोटी उँगली, दिखाकर कहता है, "यह कहाँ है ?" या कहता है कि, "इसकी सुविधा कहाँ है ?" यानी, फिर व्यक्ति दुविधा, एवं बहुधा में से, सुविधा को ढूँढ़ लेता है। अर्थात्, वह व्यक्ति किसी, विधा का उपयोग नहीं करता है और, बार-बार सुविधा की तरफ ही, जाता है और लोगों को लगता है कि, इसको कोई रोग हो गया है, किंतु इस रोग का, राज क्या है ? यह किसी को, पता नहीं होता है। राज + रोग = राजरोग। राजा भी जब किसी, दुविधा या बहुधा में, असमंजस में, आ जाता था, तब राजा भी, बार-बार सुविधा की, तरफ जाता था। तब दरबार में उपस्थित, दरबारियों ने इसे राजरोग, कहना प्रारंभ कर दिया। इसी तरह से हर विधा में, सुविधा ढूँढ़नेवाला व्यक्ति, बहुत मीठा बोलता है कि, "आपकी मेहर होगी, अगर आप मुझे, जाने दें। मुझे बहुत जोर से लगी है।" बहुत मीठा बोलने के कारण और मेहरबानी माँगने के कारण इसका नाम, मधुमेह हो गया। मधु + मेहर = मधुमेह। मधु = मीठा। इस प्रकार दुविधा, बहुधा से, व्यक्ति सुविधा की तरफ, जाता है। किंतु एक विधा को, जाननेवाला व्यक्ति, अपना कार्य पूर्ण कर देता है। इसीलिए व्यक्ति को, एक ही विधा का, ज्ञान होना चाहिए।

11. ढाल -

अगर कोई व्यक्ति, किसी अन्य व्यक्ति को, किसी चीज में ढाल रहा है। समझो वह उसे अपनी ढाल बना रहा है। ढाल बन जाने पर, तीर-तलवार की मार ढाल बना व्यक्ति सहेगा। ढालने वाला सुरक्षित रहेगा।

12. दोष + स्तर = दोस्त -

जो आपके दोषों के साथ आपको अपना ले वही दोस्त है। गुण के साथ तो सब अपना लेते हैं।

13. दिया + ग्राम = Diagram -

रात को दिया पूरे ग्राम के सभी धरों में जलता था। जिसके अनुसार अंग्रेज पूरे ग्राम का Diagram बना लेते थे।

14. दस्त-अ-Veg = दस्तावेज -

किसी के दस्त से पता चलता है कि वो Veg है या अवेज (Non-Veg). इसलिए अंग्रेज कागज से

पोछते हैं। जिसे दस्तावेज कहते हैं। जिसकी चाँच करने पर सब पता चल जाता है।

15. डर + काला = Dark -

जहाँ डर का अहसास होता है, काले में, तो उसे ही Dark कहते हैं। आदमी को डर, Dark से ही होता है। अंधेरा काला होता है, अंधेरे में जाने पर डर लगता है। इसीलिए तो, डर और काले को मिलाकर Dark शब्द बना है।

16. Duck + कार्य = डकार -

व्यक्ति भोजन करता है। भोजन करने के बाद, व्यक्ति के नाभि में स्थित, शून्य जब भर जाता है। तब व्यक्ति के नाभि से, आवाज निकलती है। जिसे डकार कहते हैं। Duck = शून्य। Cricket में जब कोई खिलाड़ी, शून्य पर Out होता है। तब उसे Duck पर, Out होना कहते हैं।

17. दृढ़ता -

रीढ़ ही दृढ़ता दिलाती, जिसकी रीढ़ सीधी रहती है, वही दृढ़ (कट्टर) होता है, बज्र आसन में रीढ़ सीधी रहती है। जिससे दृढ़ता बनी रहती है।

18. दिशा + Close = Disclose -

आप किस दिशा में जा रहे हैं, यह आपको Disclose ही रखना है।

19. दर + पण (पन) = दर्पण -

पहले समय में घर के दर पर पण यानि पानी भर कर रख दिया जाता था। जिसमें खुद की छवि देखकर सभी को दर्प अपने आप आ जाता था। फिर बाद में इसी कार्य के लिए घर के बाहर शीशा लटका कर रखा जाने लगा, जिसमें चेहरा देखकर दर्प आ जाता है।

20. देव + डरन्त = Deodorant -

डरते हैं जिससे देवता उसे Deodorant कहते हैं। देवताओं को पसीना नहीं आता है, क्योंकि पसीने की बदबू से देवता डरते हैं, इसलिए देवता पसीने की बदबू से बचने के लिए Deodorant लगाते हैं। परियाँ Perfume लगाती हैं, ताकि परी बनी रहें।

21. दूर + गम = दुर्गम - गम को दूर करने के लिए दूर तो जाना ही पड़ता है।

22. दम + रूह = डमरू - रूह का दम ही तो डमरू है।

23. Die + लोग = Dialogue - लोग Die करते हैं, और वो Dialogue करते है।

24. Do + शमन = दुश्मन -

शमन (शांत) न हो मन, तो मन फिर दुश्मन है। मन को शांत रखना चाहिए, अशांत मन ही व्यक्ति का दुश्मन होता है। इसलिए व्यक्ति अपने मन की शान्ति के लिए, शान्ति क्रिया करवाता है। किसी दूसरे की आत्मा की शान्ति के लिए नहीं।

25. Date of Birth -

जब कोई Date पर, जाता है। तब ही कोई Birth लेता है। इसे ही Date of Birth, कहते हैं। यानी इसमें दो Date हैं, Date पर जानेवाली Date. एवं Earth पर आनेवाली Date. पैदा होनेवाला, पेट में आता है, वह पहली Date. फिर पैदा होकर Earth पर, गिरता है, जिसे Birth कहते हैं। वह दूसरी

Date. भारतवासियों की दो, Date of Birth होती हैं। एक तिथि अनुसार, दूसरी दिनांक अनुसार।

26. द्वेष = वेष ही द्वेष है -

जब किसी की तरह का वेष कोई दूसरा पहनता है, तो उसे द्वेष कहते हैं, क्योंकि दूसरा उससे द्वेष करता है।

27. द्व + आर = द्वार - जिससे आने-जाने का कार्य एक साथ हो, वह द्वार है।

28. Discussion + नारियों का = Dictionary -

नारियाँ जब बैठकर आपस में Discussion करती हैं। उस Discussion में प्रयोग किये गये, शब्दों से Dictionary बनती हैं।

29. दाव + वत = दावत –

किसी को जब अपने दाव में लेना होता है, तो पहले उसे दावत पर बुलाया जाता है। दावत पर बुलाकर उससे वत यानि बात की जाती है, उसकी औकात दिखाई जाती है और उसका मनोबल नीचे गिराया जाता है।

30. Dean - जो दीन है, वही तो Dean है।

31. दिश + पूत = Dispute -

दिशा के लिए पूत से Dispute होता ही है। पिता इस दिशा में जाने के लिए कहते हैं, पूत उस दिशा में जाने के लिए कहता है, यही तो Dispute होता है।

32. Detail -

Tail की Detail पूँछ-पूँछ कर निकाली जाती है, कि यह किसकी Tail है। इसलिए आदमी कहता यार हमारी तो कोई पूँछ ही नहीं है।

33. Deserve - Serve करनेवाले ही Deserve करते हैं।

34. दिश् + Turb = Disturb –

Dish के द्वारा दिशा को मोड़ देना ही Disturb कहलाता है। यानि अगर किसी को रास्ते से भटकाना हो तो उसे एक मोड़ दिया जाता है। यह मोड़ दिया जाता है, Dish के द्वारा, यानि खाने की एक Dish रख दो उस Dish में रखे खाने की खुशबू से वह व्यक्ति अपने रास्ते से भटक जाता है यानि Disturb होता है।

35. देश + तई + Nation = Destination – देश तेंई Nation बोला जाता है।

36. Dance = डान्स = दँश –

Dance करते समय नागिन द्वारा डँसा नहीं लिया जाना चाहिए, वही Dance है। नागिन उचट-उचट कर डँसती है, बस उसकी उस उचट से बचना ही तो Dance है। यही आगे चलकर नागिन Dance हो गया।

37. दबाते + खल = दखल –

खल ही दखल करते हैं, यानि खल ही किसी के कार्य को दबाने का काम करते हैं।

38. दखल-अंदाजी – अन्दाज लगाने वाले हमेशा दखल करते हैं।

39. दिश + Tract = Distract –
Dish के द्वारा ही Track से Distract किया जाता है। आदमी तो Track पर चलता है, परंतु Dish (भोजन की थाली) की खुशबू से Track (रास्ते) से Distract किया जाता है।

40. देह + ली = देहली –
देह को लेना ही देहली है। पहले जमाने में घर की चौखट के निचले हिस्से को थोड़ा ऊपर उठा हुआ बनाते थे। दरअसल यह देह होती थी, जो नीचे रखी जाती थी। यानि पहले लोग कहते थे कि, "मेरी मरी हुई देह के ऊपर से जाना पड़ेगा"। तो वह मरी हुई देह ही, वहाँ पर रखी जाती थी। जिसके ऊपर से निकलकर सभी जाते थे, वह देह ही तो देहली कहलाती है।

41. डरा + Wing = Drawing –
जब कोई डरा हुआ होता है, तो वह Drawing बनाता है, यानि वह चाहता है कि वह इस परिस्थिति से निकलना चाहता है, तो वह चाहता है कि उसको पंख लग जाए और वह उड़ जाए। तो इसके लिए वह Drawing बनाता है, यानि अपने मन की बात को पंख लगाकर बाहर उड़ना चाहता है।

42. दमन + फूल = Damn Fool –
जिसका दम फूल जाता है, वह Damn Fool है। यानि दमित मानसिकता वाला व्यक्ति, Damn Fool होता है।

43. दाव + बल = Double –
दाव लगाने से व्यक्ति का बल Double हो जाता है, यानि दुगुना हो जाता है।

44. दाय + री = Dairy –
स्त्री जब अपने बच्चे को दूध नहीं पिलाती है, तब दाई को रखा जाता है, दूध पिलाने के लिए, तो दाई जिस जगह पर यह हिसाब रखती है, कि कितना दूध और कब पिलाया, तो उस किताब को Dairy कहा जाता है और जब वह बच्चा बढ़ा हो जाता है, तो उस Dairy को पढ़कर जब पता चलता है कि, उसे तो दाई का दूध पिलाकर बढ़ा किया गया, उसकी माँ ने उसे दूध नहीं पिलाया है, तो वह फिर दाई की खोज करता है और दाई का सम्मान करता है।

45. Dad – जिसको दाद दी जाती वह है Dad.

46. Dim + आग = दिमाग – Dim होती है आग जिसमें वह है दिमाग।

47. देश + Troy = Destroy –
देश जिसको Troy के द्वारा Destroy किया गया वह है Destroy.

48. Dermatologist –
डर के कारण जो अपनी शरीर का ध्यान रखते हैं, उसे Dermatologist कहते हैं।

49. धन + वाद = धन्यवाद –
किसी भी प्रकार के वाद को धन देकर समाप्त किया जा सकता है और धन लेनेवाला धन्यवाद देता है।

50. Dull = दल –
जो लोग Dull होते हैं, वह दल बना लेते हैं, यही दल वाले फिर अपनी बात मनवा लेते हैं, बात चाहे

उचित हो या अनुचित हो, फिर और दल बन जाते हैं, दल ही दल मिलकर दलदल बन जाते हैं। अगर कोई स्वच्छ इसमें जाता है, सब दल वाले उससे अपना काम करवाते हैं, जब वह दल का काम नहीं करता है, तो दल वाले दलदल में फंसाकर उसमें उसे समा लेते हैं।

51. दया = याद – जब किसी पर दया करो तो वह हमेशा याद रखता है।

52. Dow = दाव –

Dow को आटा कहते हैं, आटे को जिस तरह से गूँथा जाता है। तो उसी तरह कुश्ती में दाव लगाया जाता है। और जो दाव नहीं लगा पाता है, वह Down यानि नीचे गिर जाता है और चित्त हो जाता है।

53. Dual – द्वल ही तो Dual है।

54. Dirty = डरती – जिससे सब डरते हैं, उसे Dirty कहते हैं।

55. दूत + कार्य = दुत्कार –

दूत का कार्य हमेशा दुत्कार वाला ही होता है, उसे दोनों तरफ से दुत्कार मिलती है।

56. दिश + पू + जल = Disposal –

दिशा मैदान (संडास) के लिए जो जल (लोटाभर पानी) लेकर जाया जाता है, उसे Disposal कहते हैं।

57. दीपक + पर = Dipper –

रात में जब कोई चलता था तो, वह दीपक जलाकर चलता था। जिससे पीछे चलनेवाले को पता चल जाता था, कि आगे कोई जा रहा है।

58. दूर + रुष्ट = दुरुस्त – जो दूर रहते हैं, रुष्ट हो जाते हैं, वही दुरुस्त होते हैं।

59. दर्द – दर-दर भटकना ही दर्द है।

60. Dish –

जो दिशा बताती है, उसे Dish कहते हैं। जब आदमी रास्ता भटक जाता है, तो फिर वह उस दिशा में चलता है, जहाँ से भोजन की खुशबू आती है, वह भोजन किसी Dish में ही रखा होता है।

61. डाँटा = Data –

किसी के बारे उसका Data पता होने पर हम उसे डाँट सकते हैं, क्योंकि हम उसके बारे में सब कुछ जानते हैं।

62. Do + Nation = Donation –

Do something for Nation is called Donation. अपने देश के लिए जो कुछ भी आप करते हैं, वह Donation कहलाता है।

63. देखो + Ration = Decoration –

बनिया अपनी दुकान में Ration को सजा कर रखता है, वही है Decoration.

64. Drop –

डर के कारण ही कोई किसी वस्तु को छोड़कर यानि Drop कर के भाग जाता है। या जब किसी का डर होता है, तो वह किसी का साथ लेता है, और कहता है, मुझे वहाँ पर Drop कर देना।

65. दीपक + लौ + मा = Diploma –
दीपक की लौ में जो अपनी पढ़ाई पूरी करता है, उसे Diploma कहते हैं। एक चाय पतीले में उबाल-उबाल कर बनती है। एक चाय में पानी उबाल कर रख दिया जाता है, फिर उसमें दूध, चीनी, चायपत्ती अलग से Dip-Dip की जाती है, वस यही Diploma है
66. दमक – दम की ही तो दमक होती है।
67. दास + तान = दास्तान –
दासता को झेले हुए, दास, जब अपनी दास्तान सुनाते हैं, तो बड़ी ऊँची तान में सुनाते हैं, जिससे कि सब उसे सुन लें, कि उनके साथ क्या-क्या बीता है।
दास + सताया + तान = दास्तान -
सताया गया दास, जब अपनी दास्तान सुनाता है, तब बड़ी अच्छी तान में सुनाता है। दास + सताया + तान = दास्तान। उस सताए गए दास की तान में, अजीब सी कशिश होती है। क्योंकि उस दास की दास्तान में, कष्ट की सिसक होती हैं। कष्ट + सिसक = कशिश। जो भी उस दास की दास्तान सुनता है, वह भी सतानेवाले को ताना देने लगता है कि, सता + ताना = सताना। "छी छी ! देखो तो किस तरह सताया है, भला इस तरह भी कोई किसी को सताता है"। और लोग उस सतानेवाले को बद्दुआ देने लगते हैं। लोगों के द्वारा दी गईं, बद्दुआओं की आह से, सतानेवाला हत हो जाता है। और सतानेवाले का सत, आहत हो जाता है। क्योंकि सत से ही किसी को, सताया जाता है। सत + आया = सताया। क्योंकि कोई भी अपनी सत्य बात को, सार्वजनिक नहीं होने देना चाहता है। और उसकी सत्य बात को, केवल उसका दास जानता है, तो जब दास के द्वारा वह सत्य बात, सार्वजनिक कर दी जाती है, तब उसको सताया जाता है। तब दास अपनी दास्तान सुनाता है।
थर + iLL + लड़ = Thriller -
जिसको सुनकर व्यक्ति, थर थर कांपने लगे और iLL हो जाए, और व्यक्ति में लड़ने की इच्छा आने लगे, वह Thriller होता है। थर + iLL + लड़ = Thriller.
परी + संग = प्रसंग - परी के संग बिताई बात को, बताने को परीसंग से प्रसंग कहते हैं।
Kiss + सा = किस्सा - Kiss करने की बात को, बताने को किस्सा कहते हैं।
मिथ्या + Logical = Mythological -
अपने थकने के बारे में, मिथ्या बात को Logical तरीके से, कहने को Mythological कहते हैं। मिथ्या + Logical = Mythological. यानी व्यक्ति जब यह नहीं, दिखाना चाहता है कि, वह व्यक्ति थक गया है। तब अपनी थकान को छिपाने के लिए, वह व्यक्ति मिथ्या बात को, Logical तरीके से करेगा कि, "लो जी यह तो कल की ही बात है, मैंने तो इतना काम किया, पर मैं थका नहीं"। "लो जी बात कर लो, भला ऐसा भी कहीं होता है, मैंने तो नहीं सुना कि, ऐसा भी कहीं होता है"।
फंस + आना = फ़साना - किसी को फसाने के लिए, जो किया जाता है, उसको फ़साना कहते हैं।
अ + फ़साना = अफ़साना - जब कोई फ़साने में नहीं आता है, तब उसको अफ़साना कहते हैं।
कह + हानि = कहानी - किसी की हानि के बारे में, बात करना ही कहानी कहलाता है।

थका = कथा - थका हुआ व्यक्ति कथा सुनता है, कथा सुनने पर उसमें ताज़गी आ जाती है।

व्यय + कथा = व्यथा –

व्यय की कथा को व्यथा कहते हैं। व्यय + कथा = व्यथा। जब कोई कहता है कि, "मैंने वहां इतना व्यय किया था, मैंने यहां इतना व्यय किया था"। बस यही व्यथा है। तब सुननेवाले लोग भी कहते हैं कि, "हूं! कौन सुने इसकी व्यथा, इससे अच्छा हम अपना काम ना कर लें"।

कथा + नाक = कथानक - कथा जब नाक की कही जाती है, वह "कथानक" कहलाती है।

Store + तोरी = Story -

Store में रखी प्रत्येक वस्तु की, एक Story होती है। Store + तोरी = Story. जब कभी घर में बने Store में, घुसते हैं तो यह कहते हैं कि, "अरे ! Store में रखी, यह वस्तु तो तोरी है"। बस तभी से उस वस्तु की, एक Story शुरु हो जाती है। वस्तु के खरीदने या मिलने से लेकर के, वस्तु के उपयोग करने से लेकर वस्तु के एक ओर में रखने से लेकर उस वस्तु के Store तक पहुँचने की एक Story होती है।

High + Story = History - High लोगों की Story ही History होती है।

ऊपर + न्यास = उपन्यास –

किसी के ऊपर न्यास करना ही उपन्यास है। यानी किसी के ऊपर, Trust करना ही उपन्यास है।

नाविक + Well = Novel -

नाविक के द्वारा एवं कुएं पर आए, लोगों के द्वारा जो सुनाया जाता है, वह Novel कहलाता है। नाविक + Well = Novel. क्योंकि नाव से जब कोई, बड़ा सफर तय करके आता है, पूछा जाता है कि, "और बताओ सफ़र कैसा रहा" ? तो नाविक उसको जो बताता है, वह Novel है। इसी तरह से जब कोई गांव में, बाहर से आता है, और Well पर पानी भरने जाता है, तब उससे पूछा जाता है कि, "और बताओ कैसा रहा" ? तब वह व्यक्ति Well पर जो बताता है, वह Novel कहलाता है।

68. दीप + लो + मत = Diplomat –

दीप (दिया) लेकर नहीं चलना चाहिए, यानि जब आप Diplomat बनते हैं, तो आप किसी का दिया मत लो, किसी की रोशनी मत लो, किसी भी चीज में ज्यादा Deep मत जाओ।

69. दुश्मन + वार = दुश्वार –

दुश्मन का वार ही दुश्वार है। जब दुश्मन से War होती है, तब उसे ही दुश्वार कहते हैं। जब दुश्मन से War चलती है, तब दोनों तरफ के लोगों के जीवन में दुश्वारियों भर जाती हैं।

70. Destiny – देश ही तो Destiny है।

71. डाँगर – Dung (गोबर) करनेवाला ही तो, डाँगर होता है।

72. दाल + अन्न = दालान -

दाल और अन्न जहाँ, डाल कर रखा जाता है। उसे दालान कहते हैं। दाल + अन्न = दालान।

दल + Lawn = दालान -

दल के बैठने के लिए, बनाया गया Lawn, दालान कहलाता है। दल + Lawn = दालान। दल = बहुत सारे लोग।

73. Dynasty –
दाई जब किसी राज्य में बड़ी हस्ती बन जाती और राजा को उसने अगर पाला है, अपना दूध पिलाया है, तो फिर राजा उसी की बात मानकर शासन करता है, और वह शासन व्यवस्था ही Dynasty कहलाती है।

74. Divide – Divine लोग ही Divide करते हैं।

75. दम + बल = Dumbbel – जिसमें दम और बल दोनों ही होते हैं, वही Dumbbel उठाता है।

76. देशी + जन = Decision – देशी जन ही Decision लेते हैं, उसे ही चुनाव कहते हैं।

77. दे + माँद = Demand –
माँद (गुफा) में रहनेवाले लोग, हमेशा Demand करते हैं। माँद यानि पेट जो हमेशा Demand करता है।

78. दीप + Ration = Depression –
दीप और Ration ही की चिंता ही Depression कहलाती है।

79. देखो + Rate = Decorate – Decorate करके रखी गयी चीजों के Rate देखे जाते हैं।

80. दासी – जो हमेशा सीदा रहती है, उसे ही दासी कहते हैं।

81. ढक + कोश + Law = ढकोशला –
कोश को ढकने के लिए हमेशा जो Law (कानून) बनाया जाता है, वही तो ढकोशला है, यानि कोई उस कोश (धन) को न देख सके, धन हमेशा से धार्मिक जगहों पर सुरक्षित छिपा कर रखा जाता है, और कोई उसे न देख सके इसके लिए ही नियम-कानून (धार्मिक) बनाये जाते हैं।

82. डर + पोंक = डरपोक –
डर से ही आदमी पोंक (दस्त) कर देता है, उसे ही डरपोक कहते हैं, डरा हुआ आदमी ही Poke करता है।

83. दर्जा – दर से ही दर्जा तय किया जाता है।

84. दायरा – दाई के लिए एक दायरा होता है।

85. दुष्ट + अंत = दुष्यन्त – दुष्ट लोग जिसका अंत करना चाहते हैं, उसको दुष्यंत कहते हैं।

86. धन + ऊष = धनुष –
धन की ऊष्मा से ही वाणी से बाण निकलता है, यानि पैसे की गर्मी से ही हर कोई अपने मुँह से कुछ निकालता है, यही धनुष की ऊष्मा ही धनुष है।

87. द्वैत – Duet ही तो द्वैत है।

88. दान + जर = Danger –
दान और जर (पैसा) दोनों ही Danger है। न किसी का दान लेना चाहिए और न किसी के जर पर नजर रखनी चाहिए। Danger – दान + जर = दान में मिला हुआ जर ही Danger होता है।

89. दिल + कश = दिलकश –
जब कोई चीज दिल को अच्छी लगती है, तो व्यक्ति कश लेकर कहता है कि, "बहुत दिलकश चीज

है"।

90. धरा + तल = धरातल – धरा ही तल है, इसीलिए धरातल है।

91. दर + जी = दर्जी –

दर को स्थापित किया जाता है, किसी के जी (मन) के अनुसार, यानि जब दुकानदार यह देख लेता है कि, ग्राहक का जी किस पर आ गया है, तो फिर वह उसकी दर बढ़ा देता है, यही दर्जी करता है, यानि जब वह आपके मन के अनुसार कपड़े बना लेता है, तो फिर वह दर्जी कहलाता है। दर्जी ही सबके जी की दर को जानता है।

92. ढाबा – ढाब से ढका होता है, इसीलिए ढाबा कहते हैं।

93. दिशा + पर + Line = Discipline –

एक दिशा पर चलनेवाला या एक Line पर चलने वाले ही Discipline से रहते हैं।

94. ढक – ढाक के पत्ते से ही ढका जाता है, ढाक के पत्ते से ही ढाका बना।

95. दाई + त्त्व = दायित्त्व –

दाई का ही तो दायित्त्व है, कि वह अपने बच्चे का दूध दूसरे किसी और के बच्चे को पिलाती है, क्योंकि उसे अपना पेट भरना है, और जो अपने बच्चे को अपना दूध नहीं पिलाती है, उसे अपना Figure Maintain करना है।

96. देव + लोप = Develop –

देवता लोग Develop करके लोप हो जाते हैं, यानि देवता आते हैं, विकास करते हैं और गायब हो जाते हैं। इसीलिए भक्तजन अपने से कुछ नहीं करते हैं, वह केवल विकास का आनन्द लेते हैं। विकास जब खराब हो जाता है, तो फिर देवताओं की आराधना करते हैं कि, "आओ विकास करो और लोप हो जाओ और उस विकास का आनन्द हम लेगें"।

97. ढक्क + कान = ढक्कन –

कानों को ढकने के लिए ही सबसे पहले ढक्कन बनाये गये, क्योंकि आदमी जब रात में जमीन पर सोता था, तो कान में कीड़ा घुस जाता था। ठण्ड के समय कान से ही ठण्ड अंदर घुसती थी, तो उसने कान को ढकने के लिए ढक्कन बनाया।

98. देवों + शन = Devotion –

देवताओं को शांत करने के लिए Devotion किया जाता है, यानि देवताओं की शांति के लिए उनकी भक्ति की जाती है, जिससे देवता शांत रहते हैं और अपना कार्य करते रहते हैं। मनुष्यों को भी शांति मिलती है।

99. दीवार – War को रोकने के लिए दीवार बनाई जाती है।

100. दिश + को = Disco –

किस दिशा दो जाएँ यही तो Disco में बाताया जाता है। जैसे चौराहे पर खड़ा Traffic Police Man हाथ से ईधर-उधर रास्ता बताता और वहाँ पर लाल-हरि-पीली बिजली की बत्तियाँ भी जलती-बुझती रहती है, बस इसी से दिशा को दिखाने वाला ही तो Disco बन गया।

101. D + Ice = Dice –
चौपड़ की गोटियाँ D आकार की होती हैं, और अंग्रेज Fridge में बर्फ जमाते हैं, जो भी D के आकार में होती है, इसीलिए अंग्रेजों ने उसे D भी कहा और Ice भी कहा इससे वह Dice हो गया।

102. दे + Sign = Design –
जिस पर होता है कि, यह किसने बनाया, वही Design होता है। उत्पाद को बनानेवाला हर कलाकार, अपनी पहचान बताने के लिए, अपने उत्पाद पर एक Sign बना देता है। जिससे पता चल जाता है कि, यह Design किसने बनाया है।

103. दाव + बल = Double – दाव में ही दो लोगों का बल होता है।

104. Die + जल = Diesel – मरा हुआ जल ही Diesel है।

105. डर + ईम = Dream –
डर जब होता है, ईमानदारी से तो उसे Dream आता है। यानि जब कोई बदमाश किसी ईमानदार आदमी से उलझ जाता है और जब वह सोता है, तो उसे Dream आता है।

106. दौड़ + आ = दौरा –
अंग्रेज लोग जब किसी को दौड़ाते थे, तो उसे वह दौरे पर भेज देते थे। जिसका मतलब होता था कि, "आप थोड़ा दौड़ आओ"।

107. दिशा + ऋण = Disprin –
आदमी को दो ही सूरतों में सिरदर्द होता है, जब वह दिशा भूल जाता है, और दूसरा जब उसके सिर पर ऋण का बोझ होता है। बस इन्हीं दोनों के सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए Disprin लेता है।

108. डर + रावण = डरावना –
डर और रावण एक ही बात है, रावण ही डरावना बनाया जाता है। परंतु रावण बहुत ही सुंदर था।

109. देन + गु = Dengue –
देन है जो गु की वह है Dengue. गू पर जो मच्छर बैठते हैं, फिर वही मच्छर जब काटते हैं, तब उस मच्छर के काटने से, जो बीमारी होती है, वह है Dengue.

110. दिश + गुस्त = Disgust –
गाँव में गु जाने को, दिशा-मैदान जाना कहते हैं। तो जिस दिशा में गु ही गु होता है, वह जगह दिश गुस्त यानी Disgust ही होती है।

111. Dental = दाँतुल –
दाँत को जिससे साफ किया जाता है। उसे Dental (दातुन) कहते हैं।

112. Dolly = डोली –
जिसे डोली में उठाकर लाते हैं, वही डोलती है, उसे ही Doll और Dolly कहते हैं।

113. **डोले** – जो लोग डोली उठाते हैं, उनके डोले अच्छे होने चाहिए।

114. Day + र = डेरा –
जहाँ पर आदमी Day में रहता है, उसे डेरा कहते हैं। यानि जब आदमी कहते हैं कि, "एक दिन

ठहरकर, फिर आगे बढ़ जाना है" यही एक दिन के ठहरने की जगह का नाम "डेरा" है।

115. डर + कुल = Dracula –

डर फैलाया जाता है, कुल में जिससे उसे कहते हैं, Dracula. कुल में यह डर फैलाया जाता है कि, "जो खून चूसने वाला है, वही Dracula है"। फिर उसी कुल का डर सब जगह फैलाया जाता है, कि यह कुल तो खून चूसने वालों का कुल है।

116. Duty = दूती –

दूत की ही Duty होती है – दूत को पता है कि दुश्मन देश में जाकर अपनी बात कहनी है, और कुछ गड़बढ़ हुई तो वे उसे मार डालेंगे। किन्तु यह उसकी Duty होती है, इसीलिए उसे करनी ही होती है।

117. धर्म-कर्म =

धर्म के लक्षणवाला व्यक्ति, कर्म करता है, इसलिए ही, इसे धर्म-कर्म कहते हैं। धर्म-कर्म। काम करनेवाला व्यक्ति, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, राग, द्वेष, अहंकार तक पहुँच जाता है। अपने अहंकार को, मिटाने के लिए, तब वह व्यक्ति, धाम की यात्रा पर, निकल जाता है, इस तरह से, काम करनेवाला व्यक्ति, धाम तक पहुँच जाता है। काम-धाम। Work करनेवाला व्यक्ति, अपने Work को शानदार, तरीके से पेश करता है, इसलिए वह व्यक्ति, अपने Work पर, सोने-चाँदी के बर्क लगाता है। Work = बर्क। कार्य करनेवाला व्यक्ति, कार (Car) को लेना, पसंद करता है, एवं अपनी जय कहलवाना, पसंद करता है। इसलिए कार्य को काज़्र्य, भी कहते हैं। क्योंकि कहीं-कहीं, य का उच्चारण ज़, भी होता है। कार्य = काय्र्ज़। जो करने के लिए, तय किया जाता है, उसे उतना ही करना, कृत्य कहा जाता है। कर + तय = कृत्य। इसे आम बोलचाल की भाषा में, कहा जाता है कि, जिसको करने के लिए, जितना कर (Tax) तय, किया जाता है, उसको वह उतना ही करता है।

118. देवों + तीस = Devotees –

देवताओं की जो तीस दिन पूजा करते हैं, वह Devotees होते हैं।

119. देवो + शन = Devotional –

देवताओं के कारण जिनको शान्ति मिलती है, वह देवताओं के लिए Devotional होते हैं।

120. Done + थल = डन्थल -

जो Done (पूरा) हो जाता है,वह स्वतः ही, थल पर गिर जाता है। इसलिए पके हुए फल के डन्थल पकड़ते हैं।

121. Down To अर्थ -

जमीन पर गिरे हुए अर्थ (पैसे) को उठाने के लिए सभी Down To Earth हो ही जाते हैं, यानि जमीन से जुड़ जाते हैं।

122. धुँआ + ना = धूना -

धुएँ का ना होना। नागा साधु धूना जलाते हैं। वह धूना ऐसे जलता है, जिसमें से लकड़ी जलने पर धुआँ नहीं निकलता है। क्योंकि लकड़ी पूरी तरह सूखी होती है। उसमें पानी तनिक भी नहीं होता है। उसी तरह नागा साधु की साधना होती है, जिसमें साधना की धूनी तो जलती परंतु कोई धुआँ नहीं

होता। क्योंकि वहाँ में कोई वासना-इच्छा नहीं होती है।

123. धन + राशि = धनराशि -

व्यक्ति को अपने धन और राशि का स्रोत नहीं बताना चाहिए। यानि कोई व्यक्ति धन से चलता है। कोई राशि (जन्मकुंडली) के अनुसार चलता है। यानि व्यक्ति धन से चलता और सितारों (राशि) से चलता है। कोई व्यक्ति धन से चमकता है। कोई व्यक्ति सितारों (भाग्य) से चमकता है। इसलिये व्यक्ति का धन और राशि दोनों देखे जाते हैं।

124. दूर + उपयोग = दुरपयोग - दूर जाने के लिए दुरपयोग किया जाता है।

125. Dream Project -

Dream में जो Projection में दिखाई पड़ता है। उसी को Dream Project कहते हैं, जैसे किसी को सपने में दिखाई दिया कि, "यहाँ एक देवता की मूर्ति गड़ी है, उसे निकालो और उनका एक भव्य मंदिर बनाओ"। यही तो Dream Project है।

126. ध्व + Knee = ध्वनि -

दोड़ते समय धावक के घुटने से जो आवाज आती है, वही तो ध्वनि है। कहावत भी है कि "मेरे तो घुटने चटक गए" यही चटकने की आवाज ही तो ध्वनि है। "चट" जैसी आवाज आती है घुटने से।

127. देवता 33 कोटि -

यह 33 कोटि नहीं है, यह 33 कोठी है, यहाँ पर कोटि नहीं कोठी है, जो कि मेरुदण्ड (Spinal Cord) में होती हैं। Spinal Cord में 33 Verberatei होती हैं। यह Verberatei ही कोठी हैं। यह Cerebrospinal Fluid से भरी होती हैं, यह Cerebrospinal Fluid (मेरुरज्जु) ही शक्ति है। जो पूरे शरीर को चलाती है, पूरे शरीर को ताकत देती है, अतः इन्हीं 33 कोठी देवता का ध्यान करना चाहिए।

128. दर + राज = दराज -

हर राज की एक दर होती है। दर = कीमत। एक टेबल में दो दराज होते हैं। एक दराज में राज होते हैं। दूसरे दराज में, रुपये होते हैं। राज = Information. जब कोई व्यक्ति, किसी के राज लेकर आता है, तब दूसरा व्यक्ति, वह राज, रुपये देकर खरीद लेता है। खरीदनेवाला व्यक्ति, एक दराज में, खरीद-खरीद कर, राज रखता जाता है। और, दूसरे दराज से, उस राज की दर चुकाता जाता है। दर + राज = दराज। यही राज, तय करते हैं, किसी के बल को, कि इसमें कितना, बल है। इसलिए इसे Table कहते हैं। तय + बल = Table. इसलिए लोग यह बोलते हैं, कि चलो फिर, Table पर बैठकर, तय कर लेते हैं। इसी से लोग, Table पर ही, पंजा लड़ाकर, तय करते हैं, एक-दूसरे के बल को। जब राज का दर, बढ़ता जाता है, तब व्यक्ति में, डर बढ़ता जाता है। एक दिन जब, राज का दर चुकाने का, रुपया खत्म हो जाता है, तब दर से डरा हुआ व्यक्ति, अपनी Cabinet में, राजदार को शामिल, कर लेता है। इसी दराजवाली Table को, Cabinet के नाम से, जाना जाता है। राज ही रंक को, राजा बनाते हैं। राज ही राजा को, रंक बनाते हैं। राज और नीति का मेल ही, राजनीति कहलाता है। राज + नीति = राजनीति। राज एवं नीति के ज्ञाता को, राजनीतिज्ञ कहते हैं। राज + नीति + ज्ञ = राजनीतिज्ञ।

जहाँ दरार है वहाँ जरूर दराज है।

129. दो + स्तर = दोस्त - दो स्तर के लोग ही दोस्त बनते हैं।

130. ध्येय + On = ध्यान -

ध्येय का On होना ही, ध्यान है। आपका ध्येय (Goal) क्या है, यह ध्यान में On होता है। यानि जब लोग कहते हैं कि, "I want to achieve my goal". यानि ध्यान आपको आपके ध्येय के प्रति जागरूक रखता है। ध्यान व्यक्ति को होश में रखने की प्रक्रिया है। ध्यान करने के बाद व्यक्ति को समाधान मिलता है। इसलिए व्यक्ति को प्रतिदिन ध्यान करना चाहिए।

131. डर + आफत = Draft -

जब व्यक्ति डर जाता है। या जब व्यक्ति पर कोई आफत आती है, तो वह Draft बनाता है। यानि कुछ लिख कर रख देता है।

132. धूम + धाम = धूमधाम -

पहले के लोग हवन करते थे, और धाम की यात्रा करते थे। जिसे वह धूमधाम से मनाया कहते थे। जिससे धुआँ होता है, वह है धूम यानि यज्ञ-हवन। धाम कहते हैं, भगवान के स्थान को, जो दूर-दूर होते हैं, पहाड़ों, नदी, समुद्र किनारे, कठिन स्थानों पर होते हैं।

133. धैर्य-संयम = धैर्य ध्येय तक पहुँचाता है। संयम यम से बचाता है।

134. दह + हाड़ = दहाड़ - दहन कर दे जो हाड़ को, वह है दहाड़।

135. द्वादश ज्योतिर्लिंग -

शरीर में बारह इन्द्रियाँ हैं। इन्हीं इन्द्री को लिंग कहा गया है। यह इन्द्री आत्मा की ज्योति से प्रकाशित होती है, इसलिए ज्योतिर्लिंग कहलाती है। शरीर में बारह इन्द्रियाँ यानि द्वादश हैं, इन द्वादश इन्द्रियों से ज्योति प्रकाशित होती है, अतः यह बारह इन्द्रियाँ ही द्वादश ज्योतिर्लिंग कहलाती हैं। प्रत्येक इन्द्री तीस दिन तक सक्रिय रहती है, इस तरह पृथ्वी जब सूर्य की परिक्रमा तीन सौ पैंसठ दिन में पूरी करती है, तब तीस दिन के हिसाब से बारह इन्द्रियाँ तीन सौ साठ दिन सक्रिय रहती हैं। अब कौन-सी इन्द्री कौन-से तीस दिन सक्रिय रहती है, यह शोध का विषय है। परिक्रमा से बचे हुए पाँच दिन कोई भी इन्द्री सक्रिय नहीं रहती है। इन पाँच दिनों में केवल आत्मा और परमात्मा ही रहते हैं। इसलिए इन पाँच दिनों को पंच दिवस या पंच देव या पंच या पंचायत कहा जाता है। इन पाँच दिनों में ही पहले दिन शरीर, दूसरे दिन मन, तीसरे दिन बुद्धि, चौथे दिन चित्त, पाँचवें दिन अहंकार की अनुभूति होती है। शरीर ही आत्मा है, शरीर में रहनेवाला अहंकार ही परमात्मा है। आत्मा शरीर को बचाना चाहती है, क्योंकि आत्मा को भय है कि शरीर के नष्ट हो जाने पर आत्मा नष्ट हो जायेगी। और अहंकार ही तो परमात्मा होने की घोषणा करता है। क्योंकि परमात्मा के अहम् से ही सभी कार्य होते हैं। तो इन बचे पाँच दिनों में पहले दिन भूमि की अनुभूति होगी। फिर जल की अनुभूति होगी। फिर अग्नि की अनुभूति होगी। फिर वायु की अनुभूति होगी। फिर आकाश की अनुभूति होगी। यह पाँच दिन बड़े ही महत्त्व के होते हैं, और वर्ष में एक बार ही आते हैं। भूमि ही शरीर है, क्योंकि शरीर भूमि से बना है। जल ही मन है, क्योंकि मन जल से बना है, अग्नि ही बुद्धि है, क्योंकि बुद्धि अग्नि से बनी है, वायु ही

चित्त है, क्योंकि चित्त वायु से बना है, आकाश ही अहंकार है, क्योंकि अहंकार आकाश से बना है, आकाश ही परमात्मा है, क्योंकि परमात्मा के अहम् से सभी कार्य हुआ है। अहम् यानि मैं, कार्य यानि बहुत हो जाना, जैसे कि परमात्मा ने कहा है, "एको अहम् बहुस्याम"। इन्द्री को शरीर का द्वार भी कहा गया है। आत्मा की ज्योति इन बारह द्वारों से बाहर निकलती है, इसलिए उसे बारहदरी या बारादरी कहते हैं। आत्मा को परमात्मा से ज्योति प्राप्त होती है।

136. दर्प + पण = दर्पण -

दर्प यानि अहंकार। पण यानि धन। स्त्री अपना चेहरा दर्पण में देखती है, चेहरे की सुन्दरता को देखकर स्त्री में दर्प यानि अहंकार उत्पन्न होता। और ज्यादा बार-बार देखने से अहंकार बढ़ता जाता है। पुरुष को पण यानि धन का अहंकार होता है। पुरुष बार-बार अपने धन को देखकर अपने अहंकार को बढ़ाता रहता है। धन के रूप में अपने पास स्वर्ण को रखता है, और अपने पास रखे स्वर्ण से अपना अहंकार पोषित करता है। इसलिए पुरुष स्वर्ण के रंग में ही, स्त्री के रूप को देखता है। स्त्री स्वर्ण से लदकर और अपना रूप निखारती है। रूप ही दर्पण में देखती, दर्प को प्राप्त होती है। पुरुष धन से अपनी छवि उज्वल करता रहता है। इस उज्वल होती छवि में अपना पण बढ़ाता रहता है। क्योंकि जितना पण कमाएगा उतना अहंकार बढ़ेगा। तभी तो स्त्री अपने पुरुष की आय का बखान करती है। पुरुष की कमाई को तिगुना बताया करती हैं। यानि दर्पण आपकी सही कीमत धन के रूप में बताता है, कि आपकी सही दर कितनी है। तभी तो यह कहावत है कि, "आईने में जाकर देख तुझे तेरी औकात पता चल जाएगी" या "आईना सबको उसकी सही सूरत दिखा देता है" इसलिए तो पहले समय में घर के दर पर ही दर्पण टाँग दिया जाता था। जिसमें आनेवाला अपनी सूरत ठीक कर लेता था। फिर घर में प्रवेश करता था। क्योंकि सूरत देखकर ही, किसी के धनवान होने का पता लगाया जाता था। धनवान यानि सीरत। यानि लोगों को सूरत नहीं सीरत (धन) से पहचाना जाता है। सीरत का अभिप्राय पण से है। पण का मतलब धन होता है। स्त्रियों की सूरत और पुरुषों की सीरत देखकर व्यवहार किया जाता है। यानि स्त्री का चेहरा और पुरुष का धन देखकर व्यवहार किया जाता है।

137. Data Book = दाता बुक -

दाता परमात्मा है। परमात्मा से जो हम माँगते हैं, परमात्मा हमको जो देता है, उसका Data परमात्मा अपने पास अपनी Data Book में रखता है। इस Data Book का Audit चित्रगुप्त करते हैं। इसलिए दाता का Data कितना इस्तेमाल करना है, यह उपयोग करनेवाले के ऊपर निर्भर है।

138. द्वितीय + जन्म = द्विज -

स्त्री के द्वारा, संतान को जना जाना, सबसे बड़ा कार्य है। जो 9 महिने के बाद, स्वतः हो जाता है। प्राकृतिक है। गुरु के द्वारा, शिष्य को जना जाना भी, सबसे बड़ा कार्य है, जो 12 वर्ष के बाद, अस्वतः होता है। अप्राकृतिक है। 12 वर्ष बाद, शिष्य को Master की Degree, प्राप्त होती है। शिष्य को जन्म देना, बड़ी मुश्किल से होता है, क्योंकि इसके बाद शिष्य ही, गुरु हो जाता है। और, शिष्य का शिष्यत्व ही, रूपांतरित होकर, गुरुत्व में परिवर्तित हो जाता है। इसे ही द्विज कहा जाता है, द्विज यानी द्वितीय जन्म। द्वितीय + जन्म = द्विज। शिष्य से गुरु बनने के लिए, शिष्य को अभ्यास एवं, परीक्षा से

गुजरना पड़ता है। 12 वें वर्ष की परीक्षा में उत्तीर्ण, होने के बाद, शिष्य का जन्म, गुरु के रूप में होता है। इसमें गुरु को भी, बड़ी पीड़ा से गुजरना, पड़ता है। क्योंकि, गुरु के द्वारा शिष्य को, गुरु के रूप में, जना जाना होता है। 12 वर्ष का साथ, जिसमें गुरु-शिष्य का मोह, यह, गुरु के द्वारा शिष्य को, जनने से रोकता रहता है। एवं, शिष्य संसार में आने से, भयभीत होता रहता है। इसलिए आप जब स्वयं जनते हैं, तभी आप दूसरे को जना सकते हैं। जब गुरु के द्वारा शिष्य को, जना दिया जाता है, तब शिष्य का, द्विज के रूप में, जन्म होता है, अब शिष्य भी दूसरों को जना सकता है।

139. दुनिया + भर = दुनियाभर -

दुनिया कभी भर्ती भी है ? पंगत में दोना मिलता है, जिसे हाथ में पकड़कर, परोसनेवाले से बोलते रहते हैं, और दो ना, यहाँ दो ना, वहाँ दो ना, फिर एक दोने से छोटी दुनिया मिलती है, उस दुनिया में रायता मिलता है, रायता आया और आते ही पी गए, दुनिया फिर खाली, वह दुनिया कई बार रायते से भर दी जाती है, परन्तु रायता पी लेने के बाद दुनिया फिर खाली। यही है दुनिया, जितना भी दुनियाभर का भर लो, दुनिया में, दुनिया खाली की खाली ही रहती है, जैसे ही गोलगप्पे की दुनिया हाथ में दी जाती है, एक गोलगप्पा डाला और गोलगप्पा, गप्प से पेट में गया, दुनिया फिर खाली की खाली। फिर दुनिया गोलगप्पे से भरो। आखिर में दुनिया में, गोलगप्पे का पानी भरा जाता है, वह पानी भी तुरन्त पी लिया जाता है, और दुनिया फिर खाली। दुनिया को कोई नहीं भर सकता है, दुनिया भर ही नहीं सकती है। दुनिया खाली की खाली है, क्योंकि दुनिया सबको खा जाती है। दुनिया सब हजम कर जाती है। तो "दुनियाभर" शब्द मात्र थोड़े, समय तक एहसास देता है। कि दुनिया भरी हुई है। तो पंगत अब होती नहीं, दुनिया अब मिलती नहीं, गोलगप्पे जरूर दुनिया में खाए जाते हैं, गोलगप्पे का पानी पियाये जाते हैं। इस तरह दुनिया भर को भरमाए जाते हैं, कि दुनिया भर गई है और दुनियाभर की बातें बतलाये जाते हैं।

140. दिया + मूँद = Diamond -

जब Diamond मिल जाता है, तब दिया मूँद लिया जाता है। दिया = दीपक। मूँद = ढक लेना। हीरे की खोज, अमावस की घनी अंधेरी रात में, दिये को जलाकर की जाती है। और जब हीरे की चमक, मिलनी शुरु हो जाती है, तब अपना दिया, ढक लिया जाता है, और हीरे की चमक को, Follow करते हुए, हीरे तक पहुँचा जाता है। और हीरा यानि Diamond, प्राप्त कर लिया जाता है। इसी तरह, जैसे पैदल स्टेशन तक, जाया जाता है। प्लेटफार्म पर ट्रेन का इंतजार किया जाता है। फिर जब ट्रेन में बैठ जाते हैं, तो फिर अपना पैदल चलने का, प्रयास बंद कर दिया जाता है। इसी तरह, Meditation में आँखे मूँदकर बैठने से, घना अंधेरा छा जाता है। फिर उस घने अंधेरे में, अपने आत्मा रूपी दिये की रोशनी में, परमात्मा को खोजा जाता है। फिर जब परमात्मा की आभा, दिखनी प्रारंभ हो जाती है। तब अपनी आत्मा के दिये को, ढक लिया जाता है, दिये को बुझाया नहीं जाता है, दिये को ढका जाता है और Meditation Continue करते हुए, फिर परमात्मा की आभा से परमात्मा तक पहुँचा जाता है। यही Meditation में परमात्मा को, उपलब्ध होना है। इसलिए जो लोग परमात्मा को, प्राप्त कर लेते हैं, वह अपना सिर मूँड लेते हैं। यह पहचान है, कि उनको ब्रह्म की उपलब्धि हो गई है। उनका मन

ब्रह्म में लग गया है। ब्रह्म + मण = ब्राह्मण। मण = मन। इसलिए ब्रह्म में जिसका मन लग गया, वह ब्राह्मण हो गया। फिर ब्रह्म ही उनके अन्न का, प्रबंध करता है और वह दिनरात ब्रह्म के, ध्यान में लगे रहते हैं। इसलिए उनकी कोई ईच्छा नहीं होती। केवल आवश्यकताऐं होती हैं। एक समय का अन्न और वर्ष में दो जोड़ी वस्त्र। जिसे वह भिक्षा माँग कर, पूरी कर लेते हैं। इसलिए उन्हें भिक्षुक कहते हैं। भगवान + ईच्छुक = भिक्षुक। भगवान को प्राप्त करने को ईच्छुक। जिनकी ईच्छा केवल भगवान को प्राप्त करने की है। वह उसके लिए Meditation करते हैं। और जो समाज में नहीं रहते, वह फिर वन में रहने चले जाते हैं, जहाँ उन्हें वस्त्र की, आवश्यकता नहीं होती है, नागा बनकर रहते हैं, फल से अपनी क्षुधा की तृप्ति करते हैं। और Meditation (तपस्या) में बैठे रहते हैं। इस तरह से, जब परमात्मा का अनुभव होने लगता है, तब अपनी आत्मा को, शांत रखा जाता है। और परमात्मा की आभा में, परमात्मा तक पहुँचकर, परमात्मा का आनंद लिया जाता है। यानि जब Diamond अपनी रोशनी, बिखेर रहा है। तब अपना दिया मूँद लो। ऐसे ही जब परमात्मा की आभा की, अनुभूति हो रही है, तब अपनी आत्मा की रोशनी को ढक लो।

141. डर + आमा = Drama -

आम लोगों में डर को फैलाने के लिए Drama रचाया जाता है।

142. द्वार + क्षण + इक = द्वारक्षणिक = दार्शनिक -

जब कोई अपने घर से बाहर जाने के लिए द्वार तक पहुँचता है, तब अगर वह कहता है, "कि एक क्षण रुकना मैं अभी आया" यह कहकर वह भीतर जाता है, और फिर कोई वस्तु अपने हाथ में लेकर आता है, और कहता है, कि "अरे ! यह तो मैं साथ में ले जाना ही भूल गया था"। तो यहाँ द्वार पर क्षण जो इक बीता है, वह एक क्षण, इंतज़ार करनेवाले को दार्शनिक बना देता है। क्योंकि इंतज़ार करनेवाले का वक्त एकदम रुक गया है, उस क्षण में उसे जो भी अनुभूति होगी वह उसके भीतर दार्शनिकता को जन्म देगी। तो द्वार पर बिताया इक क्षण व्यक्ति को द्वारक्षणिक से दार्शनिक बना देता है। इसी प्रकार पुराने जमाने में, जब कोई सिद्ध संत गली से गुजरता था, तो घर की सब औरतें घर के द्वार पर आकर खड़ी हो जाती थीं, और कहती थीं कि, "अरे ! इक क्षन मुझे भी दर्शन कर लेने दो"। तो वह औरतें घूँघट को, उँगलियों के द्वारा मोड़कर, उसमें से एक आँख से, उस सिद्ध संत के दर्शन द्वार पर आकर, बारी-बारी कर लेती थीं। तब से यही, द्वार पर बिताया एक क्षण का दर्शन दार्शनिक बन गया। द्वार क्षण इक = द्वारक्षणिक = दार्शनिक। द्वार फिर दार, क्षण फिर शन, हो गया। क्योंकि उस सिद्ध संत के दर्शन से, एक क्षण की शांति मिलती थी। तो क्षण को ही शन यानी शन को ही शांति मान लिया गया। इसलिए लोग कहने लगे कि, "यहाँ तो क्षणभर की शान्ति नहीं है"। या "आपके पास रहने से इतनी शांति मिलती है, कि इतना सारा वक्त क्षणभर में निकल जाता है"।

143. दाम + मन = दामन -

दाम मन का लगाते हैं, दामन तो फैलाओ। ओर छोर न मन का पाते हैं, अन्दाजा तो लगाओ। मन वह दामन है, जिसका दाम कोई नहीं लगा सकता है। मन का दामन, इतना बड़ा होता है कि, उसके ओर छोर का कोई अन्दाजा नहीं होता है।

144. दर + अर्श + अन = दर्शन -

अर्श से गिरे हुए अन्न की हम दर लगाते हैं। यानी आकाश से गिरे हुए अन्न की हम कीमत लगाते हैं। जब कोई व्यक्ति अर्श पर पहुंचकर परमात्मा से मिलकर धरती पर आता है। तब उस व्यक्ति के दर्शन करने की एक कीमत रखी जाती है। जिसे दक्षिणा कहते हैं। जो यह दक्षिणा देता है, वह उस पहुंचे हुए व्यक्ति के दर्शन का लाभ प्राप्त कर लेता है। वह व्यक्ति परमात्मा का जो वर्णन करता है, उसे दार्शनिकता कहते हैं।

145. धन + ध्येय = धन्धे –

धन ही जिसमें ध्येय होता है, वही धन्धेय होता है, यानी धन्धे। यानी धन देनेवाला। क्योंकि वही धन देता है और धन का धेयता होता है। यानी धन का ध्यान करनेवाला होता है।

146. ध्येय + On = ध्यान -

ध्येय जब On हो जाता है, तब ध्यान लग जाता है। जैसे मिसाइल का Target Fix कर देने से, उसके बाद मिसाइल का बटन On कर देने से, मिसाइल का ध्यान लग जाता है, और मिसाइल अपने ध्येय तक जाता है। इसलिए पहले ध्येय को On करो, ध्येय के On होते ही, ध्यान अपने आप लग जाएगा, जैसे धन के लिए ध्येय मिल जाने से आदमी धन्धेय (धन्धे) में लग जाता है। वैसे ही ध्येय जब आन को संभालने का हो जाता है, तब ध्यान अपने आप लग जाता है।

147. निंदा -

दानी बनकर, निंदा को प्रशंसा में, परिवर्तित कर दिया जाता है। निन्दा = दानिन। "दानिन" शब्द था, जो कालान्तर में "दानी" बन गया।

148. The + Wiz = द्विज -

Wizdom को उपलब्ध व्यक्ति। Wiz = जानकार, Wizdom = ज्ञानी, Wizdom एक Polish शब्द है। इसलिए Wizdom को अंग्रेजी में, Wisdom लिखते हैं।

149. धार्मिकता - तांत्रिकता =

धार्मिकता एवं तांत्रिकता, इस तरह से मिश्रित हैं, कि दोनों को अलग करना, संभव नहीं है। धार्मिकता आस्तिक होती है। तांत्रिकता नास्तिक होती है। तांत्रिक के द्वारा, तांत्रिक क्रियाओं का प्रयोग करके, लक्ष्य को प्राप्त किया जाता है। जिसमें तामसिक वस्तुओं का, उपयोग एवं सेवन किया जाता है। धार्मिकता में धार्मिक क्रियाओं का प्रयोग करके, लक्ष्य को प्राप्त किया जाता है। जिसमें सात्विक वस्तुओं का उपयोग एवं सेवन किया जाता है। आस्तिकता यानी, भगवान, ईश्वर, परमात्मा में आस्था। नास्तिकता यानी, शैतान, भूत, प्रेत, चुड़ैल, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी में आस्था।

150. Dare -

डर को जीतनेवाला ही Dare होता है। यानी जो डरता नहीं है, वही हिम्मत करता है।

151. दीपक + राशन = Depression -

व्यक्ति दो कारणों से परेशान रहता है। एक दीप यानी घर में दीपक कैसे जलेगा ? दूसरा राशन यानी घर में राशन कहाँ से आएगा ? यह दो वस्तुएं व्यक्ति को बहुत Deep रुप सेपरेशान करती हैं। क्योंकि

दीपक जलाने के लिए घी / तेल चाहिए। पेट भरने के लिए राशन चाहिए। इसलिए व्यक्ति जीवनभर इन दो कारणों से परेशान रहता है। इसलिए अवसाद में रह रहे व्यक्ति को तेल दान करने एवं भण्डारा करके राशन दान करने के लिए कहा जाता है, जैसे धरती में बीज डालने से कई गुना अन्न की प्राप्ति होती है। वैसे ही भण्डारा करने और तेल दान करने पर, कई गुना की प्राप्ति होती है। इससे व्यक्ति अवसाद से बाहर आ जाता है और आनंदमय जीवन जीता है।

152. दुआ और बद्दुआ -

बद्दुआ, कमजोर व्यक्ति के, मुँह से निकली, वह बात है, जो ताकतवर से, ताकतवर व्यक्ति को, बरबाद कर देती है। दुआ, कमजोर व्यक्ति के, मुँह से निकली, वह बात है, जो कमजोर व्यक्ति में, रुहानियत को बढ़ाती जाती है और खुशहाली ले आती है।

153. डर + रावना = डरावना –

आत्मा की अमरता, और शरीर के नश्वरता की बात करनेवाला, आध्यात्मिक देश भारत, आज शरीर एवं आत्मा के विछोह से भयभीत हो रहा। इस महामारी से बचने के लिए, न कहीं कोई, पूजा-पाठ-हवन हो रहा, और न ही कहीं कोई, भविष्यवाणी हो रही है कि, यह महामारी कब समाप्त होगी एवं इसका निदान कब प्राप्त होगा ? बस एक प्रकार का, भय फैला हुआ है, और व्यक्ति शारीरिक स्तर पर, इस बीमारी से निजात पाने की, कोशिश कर रहा है। किंतु शरीर से ऊपर मन है और मन की मजबूती को, मनोबल कहते हैं। किंतु इस बीमारी के सामने, मनुष्य का मनोबल, बुरी तरह धवस्त हो चुका है। शरीर को मजबूती मन से मिलती है और मन को मजबूती मंदिर से मिलती है और मंदिर में भगवान रहते हैं, जो आत्मा को मजबूती देते हैं। किंतु भगवान से, जब तक आत्मा का, संपर्क नहीं होगा, तो आत्मा कैसे मजबूत होगी, और आत्मा का संपर्क, मन से नहीं होगा, तो मन कैसे मजबूत होगा, और मन का संपर्क, शरीर से नहीं होगा, तो शरीर कैसे मजबूत होगा। इसी संपर्कता का नाम 'आस्था' है। भय आस्था को मजबूत करता, और डर आस्था को कमजोर करता है। जैसे अर्जुन को युद्ध से भय हुआ, तो इस कारण अर्जुन की, आस्था मजबूत हुई। क्योंकि अर्जुन का संपर्क, भगवान श्रीकृष्ण से था। जबकि कर्ण डर गया था, और एक महारथी होकर, बाण चलाने के स्थान पर, रथ से नीचे उतरकर रथ का पहिया, खड्डे में से निकालने लगा। जबकि कर्ण रथ पर रहकर भी, तीर चलाता रहता तो, कभी न हारता। इसलिए भय और डर को समझना है। भय के 'भ' में भगवान हैं, और डर के 'र' में रावण है, इसलिए डर को डरावना भी कहते हैं। डर रावणा। रावण दूसरों को डराता था और फिर स्वयं भी डर गया। चैत्र नवरात्रि की नवमी, भगवान राम के अवतार से 'राम नवमी' है और शरद नवरात्रि की दशमी, रावण के हारने के कारण, 'दशहरा' है। मेघनाद अगर, शरद नवरात्रि का अनुष्ठान, पूरा कर लेता तो, कभी नहीं हारता। इसलिए आस्था को, बनाए रखने में ही भलाई है, और आस्था जब टिक जाती है, तो व्यक्ति आस्तिक हो जाता है। किंतु समय की घड़ी, टिक-टिक तो करती है, परंतु एक स्थान पर, टिकती नहीं है। इसलिए आस्था को, टिकाए रखिए, और आस्तिक बने रहिए। तो आशा पर Tick √ लगाइए, और आशा Tick बने रहिए। आशा Tick रहने से तो, Columbus को अमरीका मिल गया। आशा Tick ही फिर, विषाणु के विष को Wash कर देती और जिससे

जीने की Wish बनी रहती है, जो आशा को विश्वास बना देती है।

154. धर्म = ताकत -

आदमी धर्म को नहीं अपनाता है, आदमी ताकत को अपनाता है। अगर धर्म में ताकत है, तो धार्मिक हो जाता है। अगर मजहब में ताकत है, तो मजहबी हो जाता है। अगर Religion में ताकत है, तो Religious हो जाता है। क्योंकि ताकत ही गर्व को, उत्पन्न करती है। तभी व्यक्ति कहता है, "We are proud to be American" "We are proud to be Britishers" इसलिए अगर हमें गर्व से यह कहना है, "We are proud to be Bhartiya" तब हमको भारत को, ताकतवर बनाना पड़ेगा। क्योंकि विकास को, बचाए रखने के लिए, ताकतवर होना बहुत जरूरी है। क्योंकि कमजोर हुकूमतों पर, ताकतवर लड़ाके कब्जा कर लेते हैं और विकास का विनाश कर देते हैं।

155. दादा दादी -

Daddy की माँ, ही दादी माँ है। Dad के अब्बा, Dad + अ = दादा हैं।

156. दिया + व्रत = Divert -

चार पुरुषार्थ हैं, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। धर्म, अर्थ तक तो ठीक है, किंतु जब मनुष्य काम पुरुषार्थ को अर्जित करता है। तब मनुष्य काम पुरुषार्थ में उलझ जाता है और वह भूल ही जाता है कि, काम के बाद मोक्ष है। काम पुरुषार्थ से, Divert हो जाता है और काम से क्रोध, क्रोध से लोभ, लोभ से मोह, तक पहुंच जाता है। जिससे मनुष्य में, ईर्ष्या, राग, द्वेष, अहंकार आ जाता है। मनुष्य मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार इन चार के, पोषण में लग जाता है। और मनुष्य अपने द्वारा बनाई, मायावी दुनिया में, अपने आपको को, भगवान समझने लगता है। किंतु मनुष्य के द्वारा निर्मित, वस्तुएं को माया कहते हैं, यह वस्तुएं निर्जीव होती हैं। माया से आगे का मार्ग बंद है। तब मनुष्य फिर, माया से Divert करता है, और धर्म पुरुषार्थ की, शरण में पहुंच जाता है। इस Divert में मनुष्य, धर्म के स्थान मंदिर में, दिया जलाता है, और व्रत का पालन करता है। इसे ही, Dia + Vert = Divert. यानी दिया + व्रत = Divert. कहते हैं। इसमें मनुष्य धर्म पुरुषार्थ से, पुनः यात्रा प्रारंभ करता है, और अर्थ, एवं काम पुरुषार्थ को, लांघता हुआ, सीधा मोक्ष का पुरुषार्थ करता है। जिसे शास्त्रों में, "नैष्ठिक ब्रह्मचर्य" कहा गया है।

157. Dig + नीति = Dignity -

इसे ही Dignity कहते हैं। Dig = खड्डा। Nity = नीति। यानि इसे खड्डा खोदने की नीति कहते हैं। तभी तो लोग कहते हैं, “ओय ! तू डिग पैया”। यानि आदमी गौरव, प्रतिष्ठा, शान आदि के कारण अहंकार में आ जाता है। अहंकार और गौरव का अन्तर बहुत थोड़ा है। तो अहंकार में व्यक्ति डिग ही जाता है। यही Dignity है। यानि गौरव, प्रतिष्ठा, शान के द्वारा किसी के अन्दर अहंकार पैदा करवा देना और उस अहंकार से वह डिग जायेगा।

158. दस + हरा = दशहरा -

दस इन्द्रियों के हरे होने पर, दसहरा होता है। जिस दिन मनुष्य के शरीर की, दस इन्द्रियाँ हरी-भरी हो जाती हैं, उस दिन दसहरा मनाते हैं। प्रकृति तीन प्रकार की है, सत्त्व यानी रावण, राजस यानी मेघनाद,

तामस यानी कुंभकर्ण, इन तीन प्रकृति के गुणों की, प्राप्ति से दस इन्द्रियाँ, हरी हो जाती हैं, जैसे वर्षा के आने पर, पृथ्वी हरी हो जाती है। इसलिए जो जवारे बोए जाते हैं, वह दसवें दिन, पूरी तरह से हरे हो जाते हैं। उन जवारों की तरह, मनुष्य की दस इन्द्रियाँ भी, हरी हो जाती हैं। हरा रंग जीवन का प्रतीक है, इसलिए भगवान विष्णु को भी, हरि बोला जाता है। भगवान विष्णु के हरि रूप का, क्षेत्र हरियाणा कहलाता है। हरियाणा भी हरा हरा है। हरियाणा में, हरियाली ही हरियाली है। भगवान विष्णु सभी के पालनहार हैं, और हरियाणा की हरियाली की, फसल से सभी का, पालन-पोषण होता है। इसलिए हरियाणा में, रावण का दहन नहीं होता है। भगवान विष्णु के हरि रूप के हरियाणा में एक हरि मंदिर भी है। दस + हरा = दशहरा।

159. दान + ज़र = Danger -

दान करना ज़र को, यही Danger से, बचने का उपाय है। हर दान मांगनेवाला, यही कहता है, कि "आप ! खतरे में हैं, अगर ! आपको इस खतरे से बचना है, तो, आप कुछ दान करिए। हम आपको ! इस खतरे से बचा लेंगे।" दान + ज़र = Danger.

160. दीप + अवली = दीपावली -

दीपकों की अवली यानी दीपकों की श्रृंखला। दीप + अवली = दीपावली। अवली = श्रृंखला।

161. देह + Hard = देहाड़ी -

देह से Hard कार्य करने को देहाड़ी कहते हैं। यानी देह से हाड़तोड़ मेहनत करने को देहाड़ी कहते हैं।

162. दमखम –

आदमी में दम होता है, तो आदमी खम में उड़ने लगता है। दम = ताकत। खम = आकाश। इसे ही दमखम दिखाना कहते हैं। दम का उल्टा मद होता है। खम का उल्टा मख होता है। किन्तु जो दम, खम में रखी हुई, मद को पी लेने के बाद आता है, तो तब अपने ऊपर बैठी, मख को भी नहीं उड़ा पाता है। खम = शीशे की बोतल। मद = मदिरा। मख = मख्खी।

163. दूल्हा + लाड़ = दुलार –

दूल्हे को जो लाड़ दिखाया जाता है, उसे दुलार कहते हैं।

164. धर्म > अर्थ > काम > मोक्ष -

याद रखना, काम के बाद मोक्ष है। धर्म > अर्थ > काम > मोक्ष। काम और कर्म में अन्तर है। कर्म को धर्म से किया जाता है, इसीलिए कर्म को ही Duty, फ़र्ज़ कहा जाता है। इस धर्म के साथ किए गए कर्म से, व्यक्ति को अर्थ की प्राप्ति होती है। अर्थ = धन, सम्पत्ति। उस अर्थ से व्यक्ति अपने काम को पूरा करते है। काम का दायरा बहुत बड़ा है। काम यानी इच्छा। व्यक्ति के मन में किसी काम को करने की इच्छा होती है। तो जब व्यक्ति के पास अर्थ आ जाता है, तब व्यक्ति उस काम को कर लेता है। इस तरह व्यक्ति, काम को करता हुआ, मोक्ष की तरफ़ बढ़ता जाता है। जैसे की काम का दायरा बड़ा है, तो व्यक्ति को काम से मोक्ष तक का सफ़र तय करने में, बहुत वक्त लग जाता है। क्योंकि व्यक्ति जितना अर्थ अर्जित करता है, वह काम को पूरा करने में, व्यय हो जाता है। व्यक्ति में फिर से नई इच्छा, उत्पन्न हो जाती है, तब उस नई इच्छा को पूरी करने के लिए, फिर से धर्म के साथ कर्म करता

है, फिर अर्थ को प्राप्त करता है, उस अर्थ से काम को पूरा करता है, और मोक्ष की तरफ़ बढ़ जाता है। इस तरह से यह सिलसिला, चलता रहता है। जब तक व्यक्ति काम को पूरा नहीं कर लेता है, तब तक व्यक्ति, मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकता है। और काम को पूरा करने के लिए अर्थ की आवश्यकता होती है। साधक बहुत कोशिश करता है कि, साधना करके धर्म से सीधे, मोक्ष में पहुँचा जाए। इसके लिए साधक, धर्म तो करता है, किन्तु कर्म नहीं करता है। कर्म न करने पर अर्थ नहीं मिलता है। किन्तु लोग साधक को, धर्म करने पर भी अर्थ दे देते हैं। किन्तु, साधक अर्थ लेना नहीं चाहता है। इसीलिए साधक अर्थ को छूता नहीं है। बहुत साधना करते हुए साधक, अर्थ को पार करता है, किन्तु काम में विश्वामित्र की तरह, अटका दिया जाता है। ऐसे बहुत से साधक हैं, जो धर्म-कर्म, अर्थ को छोड़कर, काम में अटका दिए जाते हैं। अब जब साधक काम में, आ जाता है, तब फिर से साधक को अर्थ की, आवश्यकता होती है, तो साधक पुनः अर्थ की प्राप्ति के लिए, धर्म का सहारा लेता है। और धर्म से अर्थ कमाता है। लोग जिस धर्म को मानते हैं, लोग जिस भगवान को मानते हैं, उस भगवान का मन्दिर बनाकर, दान के माध्यम से अर्थ की प्राप्ति करता है। किन्तु अर्थ तो काम की तरफ़ ही ले जाता है। इस तरह साधक पुनः काम-धाम में अटक जाता है। काम की पूर्ति करता है, और धाम की यात्रा करता है। धाम यानी तीर्थ। धाम यानी जहाँ कभी धर्म रहा था। किन्तु साधक मोक्ष की तरफ़, नहीं जा पाता है। धर्म से कर्म, कर्म से अर्थ, अर्थ से काम काम से पुनः धाम (धर्म) बस यही होता रहता है। यानी काम से मोक्ष की यात्रा तक का को जो मार्ग है, उस मार्ग पर साधक जितना चलता है, इच्छा की पूर्ति होने पर, पुनः अर्थ की प्राप्ति के लिए, वह साधक पुनः पीछे हटता जाता है। तो काम की बनिस्बत साधक कार्य को करता है, की कार्य को करने से, वापस धर्म की तरफ़, अर्थ की प्राप्ति के लिए, न जाना पड़े। और इसी कार्य से अर्थ की, प्राप्ति हो जाए। और उस अर्थ से इच्छाओं की पूर्ति करता चलूँ। तो जब व्यक्ति कार्य को करता है, तब व्यक्ति धर्म-कर्म को, छोड़ देता है। जिसे आमजन कहते हैं कि, "यह नास्तिक हो गया है, धर्म-कर्म करता ही नहीं है"। किन्तु व्यक्ति कार्य यानी Work को ही पूजा मानता है, और उस कार्य से अर्थ की प्राप्ति करता है। इस कार्य में नैतिकता नहीं होती है, कार्य को करने का मकसद, केवल धन की प्राप्ति होता है। और उस प्राप्त धन से अपनी इच्छाओं की पूर्ति करना होता है। हाँ उस धन से धर्म को करना भी एक इच्छा ही माना जाता है, यानी धन से धार्मिक अनुष्ठानों को सम्पन्न करना। जैसे की पूजा-पाठ, तीर्थयात्रा, बड़े-बड़े धार्मिक आयोजन, कार्य से प्राप्त धन से यह सब किए जाते हैं। जो एक तरह के काम ही होते हैं। काम यानी इच्छा। धन से किए गए, धर्म में नैतिकता नहीं होती है। व्यक्ति अपने धन के बल पर, धर्म के पूजा-पाठ आदि अनुष्ठान, अपने अनुसार करवाता है, न कि शास्त्र के अनुसार। अतः धार्मिक अनुष्ठानों को इस प्रकार मनमाने ढंग से करने पर, धार्मिक अनुष्ठानों के प्रति लोगों में कौतुहल उत्पन्न हो जाता है कि, "यह जो शास्त्र में लिखा है, वह सत्य विधि है, या यह जो लोग कर रहे हैं, वह सत्य विधि है"। इसी बात पर फिर शास्त्रार्थ होता है। इस तरह से कार्य से प्राप्त धन से मनमानी करता हुआ व्यक्ति, मोक्ष की तरफ़ बढ़ रहा है, ऐसा सोचता चलता है। किन्तु व्यक्ति तब धर्म से भी महरूम हो जाता है। और नास्तिकता की तरफ़ बढ़ता जाता है। एक दिन व्यक्ति, अधार्मिक हो जाता है। और कहता है कि, "यह धर्म-मोक्ष सब ढकोसला है, मैंने इतना पुण्य

किया, धार्मिक अनुष्ठान किए, दान किया, किन्तु मुझे तो मोक्ष नहीं मिला"। और इस तरह व्यक्ति, केवल कार्य को करता हुआ, उस कार्य से प्राप्त धन से, अपनी इच्छाओं को पूरा करता हुआ। जीता रहता है। वह व्यक्ति मोक्ष पर विश्वास ही नहीं करता है, इसीलिए मोक्ष के लिए प्रयत्न, करने का तो सवाल ही नहीं उठता है। हाँ, वह व्यक्ति अपनी अच्छी जीवनशैली बनाता है। शान से जीता है। और इच्छाओं को पूरा करते-करते, अपने शरीर को छोड़ देता है। जीवन का यही मन्त्र सबको देता है कि, "मोक्ष वोक्ष कुछ नहीं होता है, किसी भी प्रकार से धन की प्राप्ति करो, शानदार जिन्दगी जिओ, और अपनी इच्छाओं की पूर्ति करो"। इस तरह की सोच, साधक को भी परेशान कर देती है, साधक भी साधना को छोड़कर, धन की प्राप्ति में लग जाता है, और उस धन से काम की पूर्ति करता है। इस तरह मोक्ष की तरफ़ का मार्ग साधक द्वारा छोड़ दिया जाता है। आम गृहस्थ कहता है, "मुझे यह काम है, मुझे वह काम है"। साधक कहता है, "मुझे यहाँ कार्य है, मुझे वहाँ कार्य है"। किन्तु कार्य का क्रम इस तरह, बन जाता है कि, कि कार्य फिर वापिस, कर्म में ही लेकर आता है और काम फिर वापिस धाम में लेकर जाता है। धाम यानी धम्म, धम्म यानी धर्म। अतः साधक कर्म में वापिस लौटकर आता है, और आमजन धर्म में वापिस, लौटकर आता है। साधक को प्रायः कर्म करता हुआ पाया जाता है। आमजन को प्रायः धर्म करता हुआ पाया जाता है। तो यह है, धर > अर्थ > काम > मोक्ष का सिद्धांत। इसीलिए याद रखना, मोक्ष की साधना करनेवाले, साधु-संत-महात्मा-संन्यासी-योगी आदि साधना करते हैं, किंतु उस साधना के बदले अर्थ (धन) नहीं लेते हैं। क्योंकि वह साधना स्वयं के लिए करते हैं। न कि दूसरों के लिए। इससे साधना के बल पर, सीधे मोक्ष को पा जाते हैं। जिसे समाधि कहते हैं। लोग फिर उनकी समाधि को, मूर्ति को पूजते हैं, जिसे लोग धर्म मानते हैं। जिस संत-महात्मा ने जीते जी धर्म, अर्थ, काम को नहीं किया, लोग उसकी समाधि, मूर्ति से, कामनाओं की पूर्ति चाहते हैं। उसकी प्रशंसा-स्तुति करते हैं। किंतु वह तो कब का, मोक्ष को प्राप्त हो गया है।

165. दु:ख + दाई = दु:खदाई -

दु:ख और दाई का बहुत बड़ा सम्बन्ध है। इसीलिए दु:खुदाई है। दु:ख + दाई = दु:खदाई। जब प्रसूता को दर्द से दु:ख होता है। तब दाई को बुलाया जाता है। जब दु:ख बहुत ज्यादा होता है, तब व्यक्ति Die करने की सोचता है। कि, "अब तो यह दु:ख सहा नहीं जाता, इससे अच्छा तो मर ही जाता, तो ठीक था"। दु:ख + Die = दु:खदाई। यानी जो दु:ख व्यक्ति को, Die करने के लिए मजबूर करे, वह दु:खदाई होता है।

166. Dining = दिनिंग -

जहां लोग दिन में भोजन करते हैं, उसे Dining कहते हैं। Dining = दिनिंग। सूर्य के उगने से लेकर, सूर्य के अस्त होने के समय को, दिन कहा जाता है। इसीलिए दिन के समय जहां, भी भोजन करते हैं, उसको Dinner कहा जाता है। Dinner = दिन्नर।

167. दीपक + अवली = दीपावली -

जो लोग अपने पूर्वजों की समाधि पर, प्रतिदिन दीपक नहीं प्रज्वलित कर पाते हैं, वह लोग कार्तिक मास की अमावस्या को, अपने पूर्वजों की समाधियों पर, 365 दीपक प्रज्वलित करके, अपने पूर्वजों

का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इसीलिए इसे दीपकों की अवली कहते हैं। दीपक + अवली = दीपावली। अवली = शृंखला। भगवान राम 14 वर्ष वनवास में रहे, इसीलिए 14 वर्ष तक भगवान राम, अपने पूर्वजों के समाधि स्थल पर, दीपक नहीं जला पाए। अतः भगवान राम जब, अयोध्या वापिस आए तो, भगवान राम के द्वारा, सर्वप्रथम अपने पूर्वजों के यहां पर, पूरे 14 वर्ष के हिसाब से दीपक प्रज्वलित किए गए। जिस कारण इतने सारे दीपक प्रज्वलित हुए की, दीपकों की अवली बन गई। यह रिवाज है कि, जब भी बाहर जाओ या, जब भी बाहर से आओ, रात्रि को अपने पूर्वजों के यहां पर, दीपक अवश्य जलाया जाता है। इससे व्यक्ति को अपने कार्य के लिए, अपने पूर्वजों का आशीर्वाद प्राप्त होता है। और पूर्वजों के यहां पर भी, उजियारा रहता है। पुरखों की समाधि में एक आला होता है, इस आले में दीपक जलाया जाता है, दीपक घी का जलाया जाता है। दीपक को जलाने पर, आले में ऊपर काला काजल जम जाता है, इस काले काजल को, इकट्ठा करके रख लिया जाता है। और पैदा हुए छोटे बच्चों को, लगाया जाता है। इस काजल को औरतें भी लगाती हैं, और दोनों ही बुरी नजरों से, बचे रहते हैं। क्योंकि उनके पुर्वज उनकी रक्षा करते हैं। आजकल भी कहीं कहीं, एक घी का दीपक जलाते हैं, उसके ऊपर दूसरा दीपक, उल्टा करके पकड़ कर रखते हैं, जिससे उल्टे पकड़े दीपक में, नीचे जल रहे, दीपक का काजल इकट्ठा हो जाता है, दीपक में लगे उस काजल का, अगले दिन माथे पर टीका लगा लेते हैं, जो वर्षभर बुरी नजर से बचाकर रखता है। इस तरह से दीपकों की अवली का, यह महत्त्व एवं उपयोग है।

168. दिल + चस्पा = दिलचस्प – दिल में जो चस्पा हो जाए, उसे दिलचस्प कहते हैं।

169. दल + लाल = दलाल -

जो लाल होते हैं, वह दलाल होते हैं। दल में जिस व्यक्ति के नाम के साथ लाल लगता है, वह दलाल होता है। दल + लाल = दलाल। तभी उसके घरवाले कहते हैं, "यह तो मेरा लाल है"। जिसके चेहरे पर लाली होती है, वह दलाली करता है। दल + लाली = दलाली। लाली यानी Lipstick, जिसके चेहरे पर Lipstick होती है, वह दलाली करती है।

170. ढका + अंग = ढंग -

ढके हुए अंग को ढंग कहा जाता है। ढका + अंग = ढंग। तभी तो कहते हैं, "तुझे ! ढंग से कपड़े पहनने भी नहीं आते हैं।

171. डर + रावण = डरावना -

डर और रावण का क्या संबंध है ? रावण क्या डर का प्रतीक है। डर + रावण = डरावना। तभी तो डरावना है या डरावनी है। ऐसा कहते हैं।

172. धन + या + वाद = धन्यवाद -

पत्र के नीचे लिख दिया, आपको धन चाहिए या वाद चाहिए।

173. दान – दक्षिणा – भिक्षा – Fund -

केवल ब्राह्मण ही दान लेता है। जिस पुण्य को प्राप्त करने के लिए, या जिस पाप का निवारण करने के लिए, शास्त्र में जितना दान लिखा है, उतना ही लेना होता है, उससे ना ज्यादा ना उससे कम। ब्राह्मण

दान के बदले में वर देता है, इसे ही वरदान कहते हैं। दक्षिणा केवल गुरु को दी जाती है। गुरु के द्वारा शिष्य को, शिक्षा-विद्या में दक्ष कर देने के बाद, शिष्य के द्वारा गुरु को, जो ईणाम दिया जाता है, वह ईणाम ही दक्षिणाम् कहलाती है। कालांतर में ब्राह्मण को, गुरु का पद भी मिल गया। इसलिए ब्राह्मण दान एवं दक्षिणा, दोनों का पात्र हो गया। ब्राह्मण वर भी देने लगा और शिक्षा-विद्या भी देने लगा। इस ब्राह्मण को पंडित जी के नाम से, संबोधित किया जाता है। किन्तु भिक्षुक भी था अभी, यह भिक्षुक "ज्ञान" को प्राप्त करने के लिए, ध्यान करता था। तो इस भिक्षुक को भिक्षा मिलती थी। भिक्षुक दो प्रकार के होते हैं, एक वह जो भगवान को प्राप्त, करने के लिए भिक्षुक बने हैं। जो कुछ नहीं करते हैं, केवल ध्यान करते हैं, और एक समय ही भोजन करते हैं। तथा दूसरे वह जो, भीख से अपनी क्षुधा को, शांत करते हैं। तथा पूरे समय भिक्षा मांगते रहते हैं। तथा गुरुकुल में रहनेवाले, ब्रह्मचारियों को भी, भिक्षा पर ही निर्भर रहना पड़ता था। जो अपने गुरु के लिए भी, भिक्षा मांगकर लाते हैं। इस प्रकार दान, दक्षिणा एवं भिक्षा का, विधान वर्णित किया गया है। गृहस्थ के द्वारा जो, किसी की सहायता के लिए, मदद मांगी जाती है, वह Fund Raising कहलाती है। इस Fund Raising को, इकट्ठा करने के लिए, गृहस्थ के द्वारा Fun And Drama तथा राई नृत्य एवं Singing के कार्यक्रम का, आयोजन किया जाता है। जिसके Ticket एवं विज्ञापन को बेचकर, Fund का एकत्रीकरण किया जाता है। इस Fund का उपयोग गृहस्थ के द्वारा, गृहस्थ को देने के लिए, ही किया जाता है। भिक्षा केवल ब्राह्मण के घर से लेनी चाहिए। दान केवल क्षत्रिय के घर से लेना चाहिए। दक्षिणा केवल वैश्य के घर से लेनी चाहिए। Fund Raising केवल शूद्रों के यहां से करनी चाहिए।

174. डर + रो = डरो -

जब आदमी डरता है और रोता है, तब कहते हैं, "डरो मत"। डर + रो = डरो। यानी डरना नहीं है, और रोना नहीं है।

175. Do + शमन = दुश्मन -

जब आप किसी को, शमन रहने को कहते हैं, तब आप उसको, अपना दुश्मन बना लेते हैं। Do + शमन = दुश्मन। जब कोई व्यक्ति किसी बात को सभा में कहना चाहता है और तभी कोई कहता है, "अरे ! तुम शांत रहो, तुम क्या जानो इसके बारे में, तुम चुप रहो"। तब से वह व्यक्ति, उस शांत करवाने वाले व्यक्ति का, दुश्मन हो जाता था। इसलिए तो दूसरे को शांत करने से पहले, अपने दुष्ट मन को शांत कीजिए। तब फिर आपका कोई, दुश्मन नहीं होगा। दुष्ट + मन = दुश्मन। क्योंकि दुष्ट मन ही मनुष्य का, दुश्मन होता है। अगर दूषित अन्न खाते हैं तो, दूषित मन बनता है, यही दूषित मन ही, दुश्मन बन जाता है। इसलिए भारत में, शुद अन्न खाने पर जोर देते हैं।

176. डर + अग्न = Dragon -

आप दो ही चीज़ों को, Drag कर सकते हैं। डर को और अग्न को। डर + अग्न = Dragon. जिस प्रकार से Dragon अपने आप, Drag होता जाता है। उसी प्रकार से, व्यक्ति के भीतर छिपे डर को, बार बार डराकर, Drag किया जाता है। और अग्नि तो अपने आप, Drag होती जाती है। इसलिए चित्र में बढ़ते हुए, Dragon को दिखाया गया है। जो अग्नि के द्वारा, बढ़ते हुए शरीर से दूसरे को

डराता है। डर का प्रतीक सर्प एवं सिंह है, इसलिए Dragon का आकार, सर्प जैसा एवं दांत सिंह के जैसे, बनाए गए हैं। अग्नि जिस प्रकार से, हवा लहराराती हुई, ऊपर की तरफ उठती हुई बढ़ती है, उसी प्रकार से Dragon के, मुंह से आग निकलती है और हवा में लहराते हुए Dragon का शरीर बढ़ता जाता है।

177. धनी + आया = धनिया -

धनिया तो धनी होने का प्रतीक है। सब्जी वालों का यह Code है, कि सब्जीवाला जब किसी को, बिना पैसे के धनिया देता है, तो इसका यह संकेत होता है कि, "यह धनी व्यक्ति आया है, इसको धनी व्यक्ति की तरह, सब्जी बेची जाए, यह मोलभाव नहीं करेगा"। धनी + आया = धनिया। धनी व्यक्ति धान को देकर, वस्तुओं की खरीदारी करता है। धनी व्यक्ति राजा होते हैं, जहां यह रहते हैं, उसे राजधानी कहते हैं। राजा + धानी = राजधानी। पहले समय में धान को ही, धन माना जाता था। जिसके पास ज्यादा धान होता था, वही प्रधान होता था। आज भी कई जगह पर कहा जाता है, "यह मेरा धणी है"।

178. ठन + Duck = ठंडक -

ठन या Duck होने पर, ठंडक हो जाती है। ठन + Duck = ठंडक। शून्य तापमान पर ठहर जाती है नदी, उसे ही ठन कहते हैं, ठहर + नदी = ठन। Duck को शून्य भी कहते हैं। इस तरह से ठन और Duck मिलाकर, ठंडक शब्द बनता है। जब दो देशों में शीत युद्ध होता है, तो उसे भी कहते हैं कि, "इन दोनों में ठन गई है"। ठन जाना यानी Freeze हो जाना। शून्य यानी Duck को भी, Freezing Point कहते हैं।

179. Don + नेता = Donate -

Don जब नेता बनने लगते हैं, तब Donate करने लगते हैं। Don + नेता = Donate. Don से कहा जाता है कि, "Do something for nation". तो Don अपने Nation के लिए, जो करता है, उसे Donation कहते हैं। Don + Nation = Donation. इस तरह से Don अपने Nation के लिए, Donate करते हुए, नेता बन जाता है। जनता अपने नेता से कहती है कि, "नेता हमें यह दो, नेता हमें वह दो"। दो + नेता = Donate. किन्तु नेता बनने के बाद, वह Don कुछ देता नहीं है। और जनता मांगती रहती है कि, "दो नेता हमें कुछ तो दो"। किन्तु नेता बनने के बाद, वह Don कभी Donate नहीं करता है। लेकिन जनता में बोलता रहता है, "मैंने देश के लिए यह किया है, मैंने देश के लिए वह किया है"। "Don" शब्द से पहले"डॉन" शब्द बना, "डॉन" का अपभ्रंश "दान" शब्द है। क्योंकि Don के पापों का निवारण, करने के लिए दान करवाकर, पुण्य करवाया जाता है। दान करनेवाला ही नेतृत्व करता है।

180. दिशा + पुते = Dispute -

दो ही मन्तव्यों को लेकर, Dispute होता है। कौन सी दिशा में जाना है और यह दीवार कौन से रंग से पुते।

181. दहन + हाड़ = दहाड़ -

दहन कर दे जो हाड़ का, उसे दहाड़ कहते हैं। दहन + हाड़ = दहाड़। सिंह जब जब दहाड़ता है, तब तब पशुओं, पक्षियों एवं मनुष्यों के, हाड़ में दहन प्रारंभ हो जाता है। जिस प्रकार से देह में अन्न का, दहन हो जाता है। देह + अन्न = दहन। देह में गया अन्न, जठराग्नि में जाकर दहन हो जाता है। "देहन" शब्द का ही अपभ्रंश, शब्द है "दहन"।

182. दांत + Tone = दातौन -

पहले रोज़ लोटा लेकर, सुबह शाम दो तीन मील चल लेते थे, साथ में अपनी वाक् से, वाक्य बोलकर वाकया भी जान लेते थे। Walk की Walk हो जाती थी, साथ ही किसी को ताक कर, उसके बारे में Talk भी हो जाती थी। बैठे बैठे शरीर का "गु" भी बाहर आता था, और Talk करते करते, मन का गुबार भी बाहर निकल जाता था। जमीन को भी अगली फसल के लिए, खाद मिल जाता था, क्योंकि दो चार दिन में ही, "मल" ही मिट्टी बन जाता था। साथ में दातौन भी कर ली जाती थी, दातौन व्यक्ति के दांत को, तो स्वच्छ करती ही थी, साथ में व्यक्ति की Tone को भी, अच्छा बना देती थी। दांत + Tone = दातौन। क्योंकि दातौन के दोनों फलकों से, जीभ की खखार भी साफ की जाती थी। लोटा मांजते मांजते शरीर को भी, स्नान करवा लिया जाता था। इस तरह से बिना कुछ खर्च किए, केवल एक लोटे पानी में, अन्दर बाहर से अपने आपको, शुद्ध कर लिया जाता था। तब फिर कलेवा किया जाता था। रोटी में चुपड़े हुए घी को ही, हाथ-पैरों के साथ साथ, बालों एवं मुंह पर लगा लिया जाता था। कंघी से फिर मांग काड़ ली जाती थी, कंघी से ही कानों के पीछे लगा घी, बालों में अच्छी तरह से, मिला दिया जाता था। कान + घी = कंघी। जो कान के पीछे का घी, बालों में मिलाने का कार्य करे, वह "कंघी" कहलाती है। और जिस सिर में सरसों का तेल, लगा होता था, तब उसी सिर पर हाथ रखकर सों खाई जाती थी। सिर + सों = सरसों। यही तो भारतीय संस्कृति कहलाती थी। आजकल जो लोग बड़े बड़े, Farm में House बनाकर रहते हैं, वह अपने Farm में स्थित, House से दूर शौचालय बनवाते हैं। फिर उस House से धीरे धीरे, अपने Farm में ही, दो चार मील घूम घाम लेते हैं, तब अपने Farm पर बने शौचालय में जाते हैं। वहीं दातून भी करते हैं, वहीं स्नान भी करते हैं, और Farm में स्थित गाय का, दूध, दही, मक्खन, मट्ठा, लस्सी, छास, घी खाते पीते हैं तथा Farm में उगी सब्जियां, अनाज, दालें आदि खाते हैं। इस तरह से प्रकृति में प्राकृतिक जीवन का आनंद लेते हैं। इसलिए लोग लोटा लेकर, Walk करते हुए, साथ साथ Talk भी करते हुए जाते थे। Walk की Walk हो जाती थी, Talk की Talk हो जाती थी।

183. दूं + आ = दुआ -

जब कोई किसी व्यक्ति को कुछ देने के लिए बुलाता है, तब कहता है कि, "दूं आ"। दूं + आ = दुआ। इसको ही "दुआ" मांगना कहते हैं। व्यक्ति अपने दोनों हाथों की, हथेलियों को जोड़कर, उस देनेवाले के पास पहुंच जाता है। और उससे दोनों हाथों की, जुड़ी हुई हथेलियों में कुछ ले लेता है। इसलिए कहते हैं कि, "दुआ मांगी जाती है"। जब व्यक्ति दोनों हाथों की, हथेलियों को जोड़ लेता है, तब व्यक्ति का जुड़ाव, "अल्लाह" से हो जाता है, और व्यक्ति "Dual" हो जाता है। Do + Allah = Dual = दुआ। व्यक्ति अल्लाह को कहता है कि, "Do Allah" इसे ही, "दुआ" कहते हैं, क्योंकि

दुआ अल्लाह से ही मांगते हैं, इस Dual को ही ब्रह्मृति पताञ्जली ने "योग" कहा है, योग यानी परमात्मा से जुड़ाव। ब्रह्मृषि पताञ्जली भी अपने, दोनों हाथों की हथेलियों को जोड़कर, परमात्मा में ध्यान लगाते थे। इसलिए उनका नाम "पाताञ्जली" है। क्योंकि दोनों हाथों की जुड़ी हुई, हथेलियों को "अंजुली" बोला जाता है। क्योंकि ब्रह्मृषि पताञ्जली ने, अपने अंजुली को ही "पात्र" बना लिया था। तो पात्र अंजुली से यह पताञ्जली शब्द बना। पात्र + अंजुली = पताञ्जली। यह "पताञ्जली" ही आगे चलकर, "करपात्री" शब्द बन गया। क्योंकि कर को पात्र बनाया गया। कर + पात्री = करपात्री। किन्तु कर एक हाथ को कहा जाता है। इसलिए जो केवल एक हाथ में, कुछ लेता है, वह "करपात्री" कहलाता है।

184. दंग + गल = दंगल -

दंग हो जाना किसी गल पर, दंगल कहलाता है। दंग + गल = दंगल। दंगल में आदमी तभी जाता है, जब व्यक्ति किसी गल पर, दंग रह जाता है।

185. दूर + Shit = दूषित - दूर बैठकर करना चाहिए Shit, नहीं तो स्थान दूषित हो जाएगा।

186. Delete = दलित -

जिस प्रकार से साहित्यिक रचना में से, अशुद्धियां को Delete कर दिया जाता है। उसी प्रकार से दल में से अशुद्ध लोगों को Delete कर दिया जाता है, इन Delete लोगों को ही, दलित कहा जाता है। Delete = दलित। दल में से जिसको इत कर दिया गया है, उसे दलित कहा जाता है। दल + इत = दलित। "इत" को प्रयोग किसी को लोप करने के लिए किया जाता है। जैसे कि अंग्रेजी में "It" का प्रयोग निर्जीव वस्तुओं के लिए किया जाता है, उसी प्रकार से इत का प्रयोग उनके लिए किया जाता है, जो हैं तो पर दिखते नहीं है। इत = It.

187. ढक + कोष + ला = ढकोसला -

ढक कर कोष को लाया जाता है, उसे ढकोसला कहते हैं। ढक + कोष + ला = ढकोसला। पहले जमाने में, जब कोष को लेकर चलते थे, तब उस कोष को इस तरह से, ढककर चलते थे कि, किसी को मालूम नहीं पड़े की, कोष को लेकर जा रहे हैं। इसे ही ढकोसला कहते थे।

188. दीवार + आला = दीवाल -

जिस दीवार में आला होता है, उस दीवार को "दीवाल" कहते हैं। दीवार + आला = दीवाल। आला में दीपक रखा जाता है, दीपक से आले में दिव्यता आती है, दिव्यता जब आले में आती है, तब उसे "दिव्यआले" कहा जाता है, दिव्य आले से दिव्याले बना है, और दिव्याले से कालांतर में, "देवालय" शब्द बन गया। दिव्य + आले = देवालय। क्योंकि जब लालटेन आ गई, तब आले में दीपक रखना, बंद कर दिया गया। तब आले में किसी ने कुछ रखा, और किसी ने कुछ रखना, शुरु कर दिया। इसी दीवाल के आला में, लोगों ने अपनी धन-सम्पत्ति भी, रखनी शुरु कर दी। तो कभी किसी के आला में, कोई सेंध लगाकर धन ले जाता था, तो लोग कहते थे कि, "मेरा तो दीवाला ही निकल गया"। दीवाल + आला = दीवाला। किन्तु लोगों ने वर्ष में एक दिन, दीपक जलाना जारी रखा। जिसे लोगों ने "दीवाली" नाम दिया। दीवाल के आला में तो सामान रखा था, तो लोगो ने दीवाल में एक,

छोटी सी आली बनाई और, उस आली में दीपक को प्रज्वलित किया। इसलिए उसे नाम दिया "दीवाली"। दीवाल + आली = दीवाली। और किसी-किसी ने आले में, देवता की मूर्ति रखनी शुरु कर दी। और ऊपर से कपड़े से ढक दिया, या किवड़ियां उस पर लगा दीं। लेकिन उसको अभी भी देवालय, नाम से ही पुकारते रहे। किन्तु बाद में दीवारों में, आले बनने भी बंद हो गए, तब कालांतर में यही मूर्तियां, जब देवालय से निकालकर, एक बड़े भवन में स्थापित की गईं। तब उस बड़े स्थान को, भी देवालय कहा गया और, उस स्थान पर भी लोग, दीपक प्रज्वलित करने लगे। इस तरह से दीवाल का आला, देवालय बन गया। दीवाल से ही नाम पड़ा "Wall", The + Wall = Wall. इसमें The को Silent कर दिया गया।

189. दाह + रूह = दारू -

व्यक्ति ने दारू पी तो ली, यह सुनकर कि, "दारू पीने से देह में दु:ख नहीं होता है"। किन्तु उसे यह नहीं बताया गया कि, "दारू पीने से, उसकी मति काम नहीं करेगी"। इसी तरह से यह भी सुनाया जाता था कि, किसी व्यक्ति को दु:ख देना है तो, प्रभु का नाम लेकर, उस व्यक्ति के पानी में, खाने में, चुपके से दारू मिला दो। उस व्यक्ति को पता भी नहीं चलेगा कि, उस व्यक्ति ने दारू पिया हुआ है। वह व्यक्ति अपने आपको सामान्य ही समझेगा। तब दारू को पीने के बाद, उस व्यक्ति का दिमाग जम जाएगा, जिससे उस व्यक्ति की बुद्धि काम नहीं करेगी, और वह कार्यों में गलती करेगा। उस व्यक्ति की गई गलतियों के कारण, उस व्यक्ति को आत्म ग्लानि होगी, और उस व्यक्ति को दु:ख होगा। और वह व्यक्ति अपने आपको कोसेगा कि, "ऐसा मैंने क्यों किया"। तब उस व्यक्ति को कहो कि, "देखो यह दारू है, इस दारू को पीने से तुम्हारी, देह में दु:ख नहीं होगा"। तब वह व्यक्ति दारू पीकर अपने, दु:ख को दूर करने की कोशिश करेगा। क्योंकि उसको समझाया गया है कि, "दारू पीने से देह में दु:ख नहीं आता है"। किन्तु उसे यह नहीं पता कि, "दारू पीने से मति खराब हो जाती है, जबकि वह व्यक्ति अपने दु:ख का कारण, प्रभु को मान लेता है। और अपने दु:ख के लिए, प्रभु को दोषी मानता है तथा, जिसने उसके खाने-पीने की वस्तुओं में, दारू मिलाकर पिला दिया था, उसे अभी तक पहचान भी नहीं पाया है। दाह करती जो रूह का उसे दारू कहते हैं। दाह + रूह = दारू। जिस प्रकार से बम के भीतर छिपी बारूद, विस्फोट होकर शरीर को दाह करती है। उसी प्रकार से शरीर के भीतर गई दारू, व्यक्ति को क्रोध दिलाकर, व्यक्ति की रूह को दाह करती है। दाह = जला। जिस प्रकार से बम के विस्फोट से, सबकुछ नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार से शरीर के भीतर गई दारू से, हुए क्रोध में सबकुछ नष्ट हो जाता है। क्योंकि शरीर के भीतर गई दारू, व्यक्ति के Blood Pressure को, High से भी High कर देती है और, व्यक्ति Hypertension का शिकार हो जाता है। जबकि उसे कुछ पता ही नहीं, यह क्यों हो रहा है। और व्यक्ति अपने आपको, आत्मग्लानि में झोक देता है। तथा इस किए गए पाप का स्वयं को, दोषी मान लेता है। जबकि उसे कुछ पता ही नहीं है। इसलिए भारत देश में, किसी के यहां का पानी एवं भोजन, करने को मना किया गया है। क्योंकि कई लोग व्यक्ति को, भ्रमित करने के लिए, उस व्यक्ति के पानी एवं खाने में, Rum को भर देते हैं, जिससे व्यक्ति भ्रमित हो जाता है। भर + Rum = भ्रम। क्योंकि व्यक्ति को हराने से पहले, व्यक्ति की मति हर ली जाती है। और इसका दोषी

प्रभु को बना दिया जाता है। जबकि उसकी मति तो उसको, चुपके से दारू पिलाने से हर ली गई है। क्योंकि उसको दोस्त बनकर हराना जो है, इसलिए दोस्त दारू को पहले, चुपके से मिलाकर पिलाते हैं और, फिर बाद में उसके बारे में, बदनामी फैलाते हैं कि, "वह तो दारू पीता है"। उसे तो पता ही नहीं होता है कि, उसके शरीर में दारू जा रही है। क्या प्रभु भी षडयंत्र करते हैं, और षडयंत्र के तहत पहले दारू पिलाकर, उस व्यक्ति की मति हर लेते हैं, और तब उस व्यक्ति को दुःख देते हैं। जबकि प्रभु तो सभी को सुख देते हैं। और प्रभु सबको आनंद देते हैं। आखिर प्रभु क्यों किसी की, मति को पहले दारू पिलाकर, हर लेते हैं, फिर दुःख को मिटाने के लिए, दारू पीने को देते हैं कि, "दारू पीने से दुःख नहीं होता है देह में"। यानी ऐसा समझा जाए है कि, प्रभु के द्वारा दुःख को दूर नहीं किया जाता है, और दुःख को दूर करने के लिए, दारू को पिया जाता है। तो इसलिए व्यक्ति इसी बात को मानकर, प्रभु के स्थान में नहीं जाता है, वह व्यक्ति दारू के मिलनेवाले स्थान पर जाता है। इस तरह व्यक्ति अपनी करनी को, प्रभु पर डाल देता है, और सबको समझाता है कि, "प्रभु के द्वारा व्यक्ति को, किसी पाप का दुःख दिया जाता है"। जबकि जिसको दुःख मिल रहा है, उसने कोई पाप या गलती की ही नहीं है।

190. डर + Ream = Dream -

अपने डर को लिखने के लिए, पूरा Ream चाहिए। डर + Ream = Dream. सफेद कागज़ की Ream पर, अपने भीतर के Dark को, काली पक्तियों में लिखने के लिए, पूरी Ream लग जाती है, इसे ही Dream कहते हैं। यानी Dream को Ream पर उतारा जाता है।

191. धन + दो + लात = धन-दौलत -

जब कोई यह कहता है कि, "भले ही कोई मुझे दो लात मार ले, पर मुझे धन दे दे"। तब इसे ही"धन-दौलत" कहते हैं। धन + दो + लात = धन-दौलत।

192. धार + रण = धारण - धार वाली वस्तु, रण में धारण करके ले जाना।

193. दे + Tail = Detail -

आदमी से पहले आदमी की, Detail भेजी जाती है। तभी आदमी की पूंछ होती है। दे + Tail = Detail. व्यक्ति के पहुंचने से पहले, यह Detail विज्ञापन के रूप में, प्रचारित प्रसारित की जाती है। जिससे आनेवाले व्यक्ति को, सब लोग पहचान जाते हैं, और, तभी उस आनेवाले व्यक्ति की पूंछ होती है। इसलिए बुलानेवाला आदमी, यह कहता है कि, "जो आनेवाले हैं, उनकी Detail भेज दीजिए"। इसलिए लोग अपनी पूंछ, करवाने के लिए, सबसे पहले अपनी Detail भेज देते हैं। यही दी गई Detail ही, उस आदमी की पूंछ करवाती है। पशु की तरह आदमी की पूंछ, भले ही नहीं होती है, किन्तु आदमी की Detail, बहुत लम्बी होती है। और आदमी को सभी से, Introduce करवाने के लिए, मंच पर यह Detail पढ़ी जाती है। किन्तु कुछ लोग पहले से ही, विभिन्न माध्यमों से विज्ञापन करके, अपनी Detail सभी को, उपलब्ध करवा देते हैं। इसलिए वह जहां भी जाते हैं, उनकी पूंछ होती रहती है, क्योंकि सभी लोग उनके बारे में Detail से पहले से ही जानते हैं। इसलिए किसी कार्यक्रम के होने के बाद हाथी पर बैठी हस्ती तो निकल जाती है, किन्तु उस हस्ती की पूंछ रह जाती है। लोग पूछते हैं कि, "हाथी पर कौन बैठा था" ? जानने वाले बताते हैं कि, "यह बैठा था, वह

बैठा था" । इस तरह से हाथी तो निकल जाता है, किन्तु हाथी पर बैठने वाले की, पूंछ रह जाती है। पहले जमाने में हाथी पर बैठाकर, बड़ी हस्ती का सम्मान किया जाता था। हाथी को "हस्तिन्" कहते हैं, इसलिए हाथी पर बैठने वाले को, "हस्ती" कहते हैं। जिस गृह के आगे हाथी बंधा होता था, उसको "गृहस्थी" कहते हैं। गृह + हस्थी = गृहस्थी। हस्तिन् = हस्ती = हस्थी = हाथी।

194. ढोता + रहता = ढोर – जो भार को ढोता रहता है, वह "ढोर" कहलाता है।

परम + शुभ = पशु - जो परम शुभ है, वह पशु होता है।

जान + वर = जानवर - जो अपनी जान के लिए, वर मांगता है, वह जानवर होता है।

Any + मल = Animal - जो Any जगह मल करता है, वह Animal होता है।

कत्ल = Cattle - जिनका कत्ल किया जाता है, उसको Cattle कहते हैं।

195. Dull + Litter = दलित -

ऐसा Dull व्यक्ति जो Litter को, उठाने का काम करता है। वह दलित कहलाता है।

196. डर + Ream = Dream -

डर को Ream पर लिखने को Dream कहते हैं। डर + Ream = Dream. डर को जब लिखने बैठते हैं, तब पूरी की पूरी Ream लग जाती है। तब जाकर व्यक्ति अपने Dream को, लिख पाता है।

197. धड़ + Rum = धर्म -

जब तक Rum है, तब तक धर्म है। क्योंकि धड़ में गई ही, Rum धर्म करवाती है। धड़ + Rum = धर्म। जब व्यक्ति के धड़ में, Rum जाती है, तब व्यक्ति गलतियां करता है। यही गलतियां ही पाप कहलाती है। इन्हीं गलतियों के बदले जो, दंड भुगतना पड़ता है, वह दंड ही पुण्य कहलाता है। और यह पुण्य ही धर्म कहलाता है। इसलिए व्यक्ति को धर्म में, ले जाने के लिए, व्यक्ति के पानी एवं भोजन में, चुपके से Rum मिला दी जाती है। वह Rum मिला हुआ, पानी पीने एवं भोजन करने पर, व्यक्ति का विवेक खत्म हो जाता है। जिससे व्यक्ति की बुद्धि काम नहीं करती है, और व्यक्ति जो भी कार्य करता है, उस कार्य में गलतियां हो जाती हैं। होश में आने पर, इन गलियों के कारण व्यक्ति में, ग्लानि होती है, और उस ग्लानि को दूर करने के लिए, व्यक्ति जो भी करता है, वह पुण्य कहलाता है। इस पुण्य को ही धर्म कहा जाता है। जबकि व्यक्ति को तो पता भी नहीं होता है कि उसने Rum पी रखी है। इस तरह से व्यक्ति के धड़ में गई Rum, ही धर्म बन जाती है। इसलिए व्यक्ति कहता है कि, "मेरा मन तो इसमें रम गया" । दरअसल Rum के धड़ में जाने से, व्यक्ति का मन एक ही विचार पर, बार-बार घूमता रहता है। जिसे मन का रमना या जपना कहते हैं। इसलिए धर्म में गए व्यक्ति की, बुद्धि कुंद हो जाती है, Rum को पिया हुआ वह व्यक्ति, पशु हो जाता है। और केवल उस व्यक्ति में, आहार, निद्रा, भय, मैथुन के, विचार ही चलते हैं। तथा व्यक्ति का मन केवल, रमण में लगता है। Rum + मन = रमण। रमण = मैथुन। इसलिए धर्म में गया व्यक्ति, ब्रह्मचर्य की बात अवश्य करता है। जबकि उसका खुद का मन तो, रमण में लगा हुआ है। इसलिए जब तक Rum है, तब तक धर्म है। इसी Rum को रम कहा गया है। Rum = रम। इसी रम में रमने को राम कहा गया है। इसलिए Rum रूपी राम में, सब रम जाना चाहते हैं। और धर्म को मानने वाले, प्रत्येक त्योहार, पर्व, रीति रिवाज, अनुष्ठान आदि

में, किसी न किसी बहाने से, Rum अवश्य पीते हैं। क्योंकि बिना Rum को पिए, वह लोग किसी भी त्योहार, पर्व, रीति रिवाज, अनुष्ठान में, रम नहीं सकते हैं। और जब उनके धड़ में Rum जाती है, तब उनकी भभकती हुई, भक्ति बाहर आती है। यही भक्ति तब धर्म करवाती है, और दूसरों को भी धर्म करने की, प्रेरणा देती है।

198. डर + शक = दर्शक –

जो लोग डर जाते हैं, और जो लोग शक करते हैं, वही लोग 'दर्शक' बन जाते हैं। डर + शक = दर्शक। युद्ध के समय जो लोग, युद्ध में जान गवाँने से डर जाते हैं, और युद्ध में जीत मिलेगी की नहीं, इस बात पर जो शक करते हैं, वही लोग दर्शक बन जाते हैं। दर्शक बने हुए लोगों के लिए युद्ध एक आनंद का कारण बन जाता है और दर्शक लोग युद्ध पर दर लगाते हैं और लोगों के शक का फायदा उठाते हैं। 'कि बताओ कौन जीतेगा ? कौन हारेगा ? किस पर कितना लगाओगे ?' इस तरह से दर्शक लोग युद्ध न करके भी, आनंद एवं धन के लाभ को प्राप्त करते हैं। तथा युद्ध में हारे हुए की कमियाँ निकालते हैं, और युद्ध में जीते हुए की प्रशंसा करते हैं। इस तरह से डर एवं शक ही, दर्शक वर्ग का निर्माण करता है।

199. दीक्षा + अंत = दीक्षांत –

याद रखना दीक्षा का अंत हो जाता है, इसलिए दीक्षांत समारोह होता है। दीक्षा + अंत = दीक्षांत। किन्तु शिक्षा का अंत कभी भी नहीं होता है। तभी तो शिक्षांत समारोह नहीं होता है।

200. डर + रंक = Drunk –

डर जाता है जब रंक, तो Drunk कर लेता है। डर + रंक = Drunk. रंक जब Drunk कर लेता है, तब रंक भी राजा बन जाता है, और रंक का डर दूर हो जाता है। इसलिए अपने भीतर के डर को, दूर करने के लिए, रंक प्रतिदिन Drunk करता है, और वर्तमान परस्थिति से दूर होकर, कल्पना की दुनिया में चला जाता है। क्योंकि Drunk करने के बाद, रंक के दबे हुए सपने, रंक के मन के मंच पर, रंगीन होकर चलने लगते हैं और, रंक उन सपनों को देखता हुआ, रंक सो जाता है। इस तरह से रंक, Drunk करके अपने डर पर, काबू पा लेता है।

201. धरती > अर्थ > Earth -

धरती को Earth कहा गया है, क्योंकि धरती को बेचने के बाद, जो धन प्राप्त होता है, उस धन को अर्थ कहते हैं। इसलिए अर्थ को ही Earth कहा गया है, और धरती को भी Earth कहा गया। धरती > अर्थ > Earth. अतः धरती को बेचने के बाद, जो अर्थ प्राप्त होता है, उस अर्थ से वस्तुओं का, क्रय-विक्रय किया जाता है। इस तरह से एक प्रकार से, धरती को ही खरीदा और, बेचा जा रहा है। यानि धरती किस तरह से Earth बन गई, यह यहां पर बताया गया है। और व्यक्ति अपने Ear को अर्थ पर रखता है, इसलिए इसे Earth कहते हैं। Ear + अर्थ = Earth. यानि व्यक्ति अपने कान वहीं लगाता है, जहां पर धन की चर्चा होती है। इसलिए कहते हैं कि, 'दीवारों के भी कान होते हैं'। व्यक्ति पहले मिट्टी की, मोटी दीवारों को बनाता था, मिट्टी की इन मोटी दीवारों के बीच, व्यक्ति अपना धन छुपाकर रखता था। तब दूसरा व्यक्ति मिट्टी की दीवारों पर, कान लगाकर सुनता था कि, छुपाया हुआ धन कहां पर है। और इसीलिए व्यक्ति ने आला बनाया था। आला = Stethoscope. इसी आला से

व्यक्ति, मिट्टी की दीवारों में स्थित, धन की आवाज़ को सुन लेता था, और धन को निकाल लेता था। मिट्टी की दीवार में जिस जगह पर, आला के द्वारा धन खोज लिया जाता था, धन रखने की उस जगह को आला कहते हैं। और वो उस आले में दीपक रखते थे। जिससे आले में से धन, निकालने वाले व्यक्ति का मुंह काला हो जाता था। इसलिए कहावत है कि, 'बुरी नज़रवाले तेरा मुंह काला' ।धरती को बेचने से प्राप्त धन को अर्थ कहते हैं, धरती को मिट्टी कहते हैं, इसलिए मिट्टी को बेचकर जो धन प्राप्त होता है, उस धन को मिट्टी कहते हैं कि, धन तो मिट्टी के समान है।

202. दास + ताने = दास्तानें -

दास को बोले जाने वाले ताने ही तो, दास की दास्तानें होती हैं। दास + ताने = दास्तानें। हर दास को ताना सुनना पड़ता है। यही ताने जुड़-जुड़कर, दास की दास्तान बन जाते हैं। दास की इसी दास्तान को, सुनकर लोग रो देते हैं।

203. दोष + तनाव = दोस्त –

दोष का तनाव जो झेल सके, उसे दोस्त कहते हैं। दोष + तनाव = दोस्त। किसी व्यक्ति के दोष का तनाव, जो व्यक्ति झेलता है, वही व्यक्ति दोस्त होता है। यानि दोस्त वही होता है, जो दोस्त का Tension झेलकर, दोस्त का तनाव कम देता है।

204. धीर = धीरे-धीरे – धीर व्यक्ति धीरे-धीरे कार्य करता है।

205. दिव्य + अली = दिवाली -

दिव्य अली से दीपक अवली तक। दिव्यता में उत्तम जो है, वही तो दिव्य अली यानि दिवाली है। दिव्य + अली = दिवाली। अली = उत्तम। देवताओं की यह उत्तम दिव्यता दिखाई देने पर, दीपकों की अवली के द्वारा, देवताओं का स्वागत किया जाता है। दीपक की पंक्ति यानि दीपक अवली ही, दीपावली है। दीपक + अवली = दीपावली।

206. दिखा + खावा = दिखावा –

व्यक्ति खाना खाते समय दिखावा करता है। दिखा + खावा = दिखावा। यानि व्यक्ति जब खाना खाते समय, दिखा-दिखा कर खाना खाता है, उसे दिखावा कहते हैं। यानि व्यक्ति जब खाना खाते समय, कहता है कि, 'देख-देख में क्या खा रहा हूं'। देख + खावा = दिखावा।

207. दिख + खाई = दिखाई -

अगर आपको किसी को देखना है तो, आप दावत दीजिए, और इस दावत में सभी को आमंत्रित कीजिए, जिसे आप देखना चाहते हैं, वह आपको दावत खाता हुआ, दिखाई दे जाएगा।

208. दान = Don -

दान एक प्रकार का धार्मिक Tax है, इस दान को मांगने वाला Don कहलाता है। दान = Don. इसलिए कहा जाता है कि, 'आप अपनी हैसियत के अनुसारदान दीजिए'। यानि आप अपनी संपत्ति के अनुसार दान दीजिए। इस दान को Collect करने के लिए, जगह-जगह पर दान-पात्र रखा रहता था। क्योंकि धार्मिक स्थल पर, आगंतुक से Direct Tax तो, ले नहीं सकते हैं। इसलिए दान के प्रचार के लिए, पुण्य और स्वर्ग के प्रलोभन दिए जाते थे। पाप और नर्क के डर दिखाए जाते हैं।

जबकि पुण्य और स्वर्ग तो होते ही नहीं है। और पाप एवं नर्क भी तो नहीं होते हैं। इस तरह से धार्मिक स्थल और तीर्थों से, दान के नाम पर Tax वसूला जाता था। इसलिए धार्मिक स्थलों और तीर्थों को, सरकार Direct या Indirect, अपने नियंत्रण में रखती है।

209. दार + क्षण + इक = दार्शनिक -

दार कर लेता है जो, क्षण को इक बार में, उसे दार्शनिक कहते हैं। दार + क्षण + इक = दार्शनिक। दार = दैखना।

210. धड़ + Rum = धर्म –

धड़ में जब Rum जाती है, तब धर्म का उद्भव होता है। धड़ + Rum = धर्म। इसलिए प्रत्येक धार्मिक कर्मकांड के पहले, धड़ में Rum को उतारा जाता है। इस Rum को सोमरस कहा जाता है।

211. दिव्य + रुह = डिब्रूगढ़ - दिव्य रुह का गढ़ 'डिब्रूगढ़' है।

212. दर + किनारे = दरकिनार –

दर देखकर किनारे कर दिया जाता है। इसे ही दरकिनार कहते हैं। दर + किनारे = दरकिनार। किसी वस्तु की अधिक दर या, कम दर को देखकर, उस वस्तु को किनारे कर दिया जाता है।

213. दक्षिणमार्ग -

शरीर की Healing के लिए, डॉक्टर के पास जाते हैं, एवं Hospital में जाते हैं।

मन की Healing के लिए, पूजा-पाठ करते हैं, मंदिर में जाते हैं, एवं मनोवैज्ञानिक के पास जाते है।

आत्मा की Healing के लिए, शास्त्रों का अध्ययन करते हैं।

ब्रह्म की Healing के लिए, Yoga एवं Meditation करते हैं।

किन्तु व्यक्ति जब इन सबसे Heal नहीं हो पाता हैं।

तब व्यक्ति वाममार्ग को अपनाता है।

वाममार्ग -

वाममार्ग यानि माँस, मछली, मदिरा, मुद्रा, मैथुन का उपयोग करने लग जाता है और इनसे Heal होने की कोशिश करता है। जैसे कि वाममार्ग का प्रारंभ, मुद रहने से होता है। मुद + रहना = मुद्रा। मुद = प्रसन्न रहना, खुश रहना। जब कोई कहता है कि, "प्रसन्न रहो, खुश रहो, मुदित रहो"। तब ही से वाममार्ग की शुरुआत हो जाती है। क्योंकि व्यक्ति मुद तब ही रह सकता है, जब उसके पास धन होता है। इसलिए धन को मुद्रा का पर्यायवाची बनाया गया है। मुद्रा = धन। अब इस मुद्रा से व्यक्ति, माँस, मछली, मदिरा और मैथुन, को खरीदकर प्रसन्न रह सकता है। इसी प्रसन्नता को वह व्यक्ति, Healing होना समझता है।

इस वाममार्ग की शुरूआत, एक स्थान से और होती है कि, जब किसी व्यक्ति को यह कहा जाता है कि, "तुमको फलानी बीमारी में मछली खानी चाहिए, इससे तुम जल्दी ठीक हो जाओगे"। या फिर यह कहा जाता है कि, "तुमको सेहतमंद होना है तो, अंडे और माँस खाया करो"। या फिर यह भी कहा जाता है कि, "कि अरे ! डरो मत इसको पियो, इसको पीने से तुम्हारी पाचन शक्ति, अच्छी रहती है"। इस तरह से व्यक्ति को, अनायास ही वाममार्ग की तरफ, मोड़ दिया जाता है। अब वाममार्ग की इन

वस्तुओं को खानेवाला व्यक्ति, दक्षिणमार्ग के उपयों को करने से कतराने लगता है। और अन्य सभी को भी, वाममार्ग के रास्ते पर लाने की कोशिश में लग जाता है। तब वह वाममार्ग का व्यक्ति कहता है कि, "अरे ! सब खाओ-पिओ, मजा करो" । यहाँ पर मजा करने का मतलब होता है, मेथुन करना। मजा = मैथुन। अतः व्यक्ति खाने-पीने और मजा करने के लिए मुद्रा पर Depend हो जाता है और केवल मुद्रा (धन) को कमाता है और उस कमाए गए धन से, खाता है, पीता है और मजा करता है। इस तरह से व्यक्ति पूरी तरह से, कब वाममार्गी हो जाता है, उसे स्वयं ही पता नहीं चलता है। किन्तु जब व्यक्ति वाममार्ग की, वस्तुओं का सेवन करते हुए भी, दक्षिणमार्ग के उपायों को करने लग जाता है। तब उसे ढोंग कहा जाता है। क्योंकि वाममार्ग की वस्तुओं के सेवन से, व्यक्ति कभी Heal नहीं हो सकता है। हाँ ! दक्षिणमार्ग के उपायों को, करते हुए व्यक्ति Heal अवश्य हो जाता है। इसलिए जो व्यक्ति दक्षिणमार्ग को, अपनाना चाहता है, उस व्यक्ति से माँस, मछली, मदिरा, मुद्रा, मैथुन को, छोड़ने को कहा जाता है। वाममार्ग की इन वस्तुओं के सेवन को, छोड़ने को ही महर्षि पातञ्जली के योगसूत्र में, यम कहा गया है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह। यहीं से दक्षिणमार्ग की शुरुआत होती है। और धीरे-धीरे व्यक्ति, शरीर से लेकर ब्रह्म तक Heal हो जाता है।

214. दल + Lawn = दालान - दल को बिठाने के लिए, Lawn बनाया जाता है।

215. डर + रावण = डरावना -

डर भी रावण के नाम से जाना जाने लगा है, इसलिए डरावना कहलाने लगा है। डर + रावण = डरावना। यानि रावण भी डर का पर्याय बन गया।

E

1. ईडा - ईडा नाड़ी ही पीड़ा देती है।

2. Ego -

जब भारत में अंग्रेज आए और वे एक गाँव की सीमा से गुजर रहे थे। उनका पाँव नीचे जमीन पर पड़ी चीज पर पड़ा, उनके मुँह से निकला Eee...., तभी साथ चल रहे भारतीय ने कहा गू है जनाब। यही E...... और गू ही Ego है। तभी से अंग्रेजों ने पैर में जूते पहनने शुरू कर दिए।

ई + गू = Ego -

ई....... गू .... बस यही तो Ego है। ई + गू = Ego. व्यक्ति का Ego व्यक्ति के गू से पता चलता है। इसलिए व्यक्ति अपने Ego को, दिखाने के लिए, अपने गू करने वाले स्थान को, बड़े ही अच्छे से रखता है। इसलिए व्यक्ति के गू करने वाले, स्थान से व्यक्ति का, Ego पता चल जाता है। इसलिए जो लोग व्यक्ति के, Ego को भुनाना जानते हैं, वह व्यक्ति के गू करने वाले स्थान को, बहुत ही साफ सुथरा और, Updated रखते हैं। अक्सर Ego को प्रदर्शित करने वाला व्यक्ति, अपने गू करने वाले स्थान के बारे में, किसी ना किसी प्रकार से, लोगों की चर्चा में शामिल कर लेता है। और लोग उस व्यक्ति के, गू करने वाले स्थान के बारे में चर्चा करते हैं कि, "तुम्हें ! पता है फलाने ने Gold की Seat लगवा रखी है, Gold के नल लगवा रखे हैं, Gold के Tiles लगवा रखे हैं, पूरे का पूरा घर ही Gold का बनवा रखा है"। इस तरह से गू के स्थान से, व्यक्ति अपना Ego प्रदर्शित करता है।

3. एकजुट - जूट की तरह एकजुट हो जाओ।

4. ईच्छ + Ploit = Exploit - Exploit करनेवाले बड़े ही Politely बोलते हैं।

5. ईच्छ + See + लेन्त = Excellent -

इच्छा के अनुसार कर देना। जब किसी की इच्छा के अनुसार कार्य कर दिया जाता है, तो उसे Excellent कहा जाता है।

6. ईक्ष + आम = Exam –

इच्छा जब आम हो जाती है, तो Exam कहलाती है, यानि जब सब यह जान लेते हैं कि, आपके अन्दर की इच्छा क्या है ? तो फिर पग-पग पर आपकी परीक्षा होती है। यानि आपकी इच्छा को जानने वाला, आपके रास्ते में बाधा उत्पन्न करता है। तभी तो किसी भी व्यक्ति को अपनी इच्छाओं को आम नहीं करना चाहिए।

7. Entry + जय = Enjoy –

जब कोई राजा अन्य राजा पर विजय प्राप्त कर के वापस अपने राज्य में किले के दरवाजे से Entry करता था। तो सारी प्रजा उसकी जय-जयकार करती थी। तो राजा कहता था कि, "आज आनंद लो, उत्सव मनाओ" यानि Enjoy करो।

8. ईच्छ + Pose = Expose – ईच्छाओं के अनुसार Pose दिखाने को Expose कहते हैं।

9. Electric + जी = Easy –

Electricity से कार्य करने पर, कार्य Easy हो जाता है। जी (मन) के अनुसार मिलने पर, वह कार्य Easy हो जाता है।

10. ऐन + नाक = ऐनक – ऐन नाक के ऊपर जो लगाया जाता है, वह ऐनक है।

11. Excited – ईच्छा पूरी करने के लिए व्यक्ति बहुत ही Excited हो जाता है।

12. Exactly – इच्छा के अनुसार बनाया जाए वह है, Exactly.

13. Eve + Entry = Event –

शाम को शामयिनाने में शामिल होने के लिए ही Event की जाती है।

14. ईच्छा + Size = Exercise –

ईच्छा के अनुसार शरीर का Size बनाने के लिए Exercise की जाती है।

15. ईक्ष + Press = Express –

किसी की ईच्छा को जानने के लिए उस पर दबाव डाला जाता है, जिससे उसके अन्दर की बात बाहर आ जाती है, वह खुद ही Express कर देता है।

16. एक + अंत = एकान्त – एक का अंत हो जाए वही एकान्त है।

17. At + Bar = एतबार –

जो Bar में जाए उसी पर एतबार किया जाता है, क्योंकि Bar में जानेवाला व्यक्ति शराब पीता है, और शराब पीनेवाला कभी झूठ नहीं बोलता है, इसीलिए उस पर एतबार है।

18. ईच्छ + पलायन + Nation = Explanation –

जब व्यक्ति अपने देश से पलायन करता है, तब व्यक्ति एक Explanation देता है कि, "मेरी ईच्छा तो नहीं थी कि, मैं अपना देश छोड़कर आऊँ। परन्तु क्या करूँ, कुछ कारण ऐसे बन गए कि, मुझे अपना देश छोड़कर, इस देश में शरण लेनी पड़ी"।

19. इच्छ + परत (पढ़त) = Expert –

दूसरे की इच्छाओं को पढ़ने वाले ही Expert होते हैं, यानि जो Ex हो जाते हैं वह दूसरे की इच्छाओं को अच्छी तरह से भाँप लेते हैं, क्योंकि वह भी उसी रास्ते से गुजरे हैं।

20. ए + जा + बैठ = Elizabeth –

England की रानी को जब महारानी बानाया गया तो कहा गया Elizabeth.

21. Engine + Near = Engineer –

जो Engine के Near रहे वह Engineer होते हैं।

22. ऐ + Thic = Ethic -

"ऐ ठीक है"। यही तो Ethic है। ऐ + Thic = Ethic. जब आप किसी विचार को, ठीक मानकर चलते हो, तो आप Ethic का पालन करते हो। जबकि दूसरा कह रहा है कि, "All is fair in love and war" तो फिर वहाँ पर Ethics, काम नहीं आते हैं।

23. Expensive – इच्छा के अनुसार कोई भी वस्तु लोगो तो वह Expensive ही होगी।

24. E + जी = Easy -

Electricity (बिजली) और जी (मन) के अनुसार जो भी कार्य होता है, वह Easy होता है। बिजली से सभी काम आसान हो जाते हैं। मन के अनुसार भारी से भी भारी काम भी आसान हो जाता है।

25. Electric + मान = ईमान -

आदमी के अंदर एक बिजली होती, उस बिजली का सभी मान करते हैं। इसी अन्दर की बिजली को ईमान कहते हैं, यानि Electric मान।

26. Ex + पीढ़ियों + अंश = Experience -

Ex पीढ़ियों का अंश है, इसलिए Experience है। एक आदमी ने कहा "मुझे बहुत Experience है" दूसरे आदमी ने पूछा "तुझे कैसे Experience हो गया ? तू तो अभी जवान है"। उस आदमी ने कहा "मेरे शरीर में, मेरे अंतःकरण में, मेरी आत्मा में, मेरी Ex पीढ़ियों का अंश है, इसलिए मुझे Experience है"। व्यक्ति के पास न जाने कब से उसकी पीढ़ियों का अनुभव है। उसी अनुभव का भारतवासी लाभ उठाते हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी बात बताते हैं। पुरानी पीढ़ी वर्तमान पीढ़ी को अपना, और अपने पूर्वजों की पीढ़ियों के किस्से सुनाती हैं। इसी तरह पीढ़ी दर पीढ़ी शिक्षा ग्रहण की जाती है। यह शिक्षा पीढ़ी पर बैठकर सुनाई जाती है। पहले सभी के घर में पीढ़ी होती थी। जो लकड़ी और रस्सी से बनी होती थी। उसी पीढ़ी पर बैठकर अपने दिल की पीड़ा सुनाई जाती थी, जो आगे आनेवाली पीढ़ी को Experience दे जाती थी। "अरे ! हमारे समय में ऐसा होता था, इसको ऐसे किया जाता था, वह ऐसा था, बरसात ऐसी होती थी, गाय का पहला दूध ग्राम देवता को चढ़ाया जाता है", ऐसी न जाने कितनी अनगिनत बातें, पीढ़ी पर बैठकर पीढियों दर पीढ़ी, सुनाई और सुनी जाती थीं। यही Ex पीढियों का अंश ही, Experience है।

27. Each + छा = ईच्छा -

Each पर छा जाने की ईच्छा है। मैं हर एक के दिल पर छा जाऊँ। मैं प्रत्येक के हृदय में समाहित हो जाऊँ। यही ईच्छा लोकेषणा में होती है। पूरे लोक पर मैं छा जाऊँ।

28. Epic = Electronic Picture -

जब परमात्मा Picture लेता है, उसे Epic कहते हैं। Electronic Picture. उसका Negative और Positive परमात्मा के पास होता है।

29. Ear + न = Earn -

जब व्यक्ति, कुछ Earn कर लेता है, तब वह व्यक्ति, किसी की नहीं सुनता है। तभी तो लोग कहते हैं कि, "वह तो अब किसी की, सुनता ही नहीं है।" यानी, उस व्यक्ति के कान, अब किसी की बात पर, ध्यान नहीं देते हैं। Ear + न = Earn. क्योंकि व्यक्ति अब, अपने मन की सुनता है, क्योंकि उसके पास, Money आ जाती है। तो फिर व्यक्ति, मनमानी करता है। यानी व्यक्ति का मन, Money की बात, मान कर चलता है। मन + Money = मनमानी। इसलिए पहले के लोग, व्यक्ति को, Money नहीं देते थे। वस्तुएं देते थे। इसलिए साधना, करनेवाला साधु, भिक्षा में मणि नहीं, लेता था। मणि = Money. क्योंकि मणि के बदले, कुछ भी खरीदने का, मन करता था। तो मणि नहीं लेकर, साधु अपने मन को, वस में कर लेता था।

30. ईश्वर + सलाम = इस्लाम -

ईश्वर को सलाम ही इस्लाम है। ईश्वर जो Slum में होता है। उसे इस्लाम कहते हैं। ईश्वर + Slum = इस्लाम। अमीर लोग अपने देवता खुद अपने हाथों से बनाते हैं। उन देवताओं एवं देवताओं के बुतों की पूजा करते हैं। इस पूजा में बहुत सा धन खर्च होता है, किन्तु यह खर्च Slum में रहनेवाले गरीब लोग वहन नहीं कर सकते हैं। इसलिए गरीब लोग निराकार ईश्वर को याद करते हैं। Slum के लोगों के द्वारा माननेवाले इसी निराकार ईश्वर को Slum लोगों का ईश्वर कहते हैं, जो इस्लाम के नाम से जाना जाता है। Slum में रहनेवाले एक दूसरे को ही ईश्वर मानकर सलाम करते हैं, इसलिए इसे इस्लाम कहते हैं, ईश्वर को सलाम करके, ईश्वर का Welcome करते हैं, सामनेवाला भी Welcome ईश्वर कहता है। इसे ही सलाम वालेकुम कहते हैं। वालेकुम = Welcome.

31. ईश्वर + मान + दार = ईमानदार -

जो व्यक्ति ईश्वर एवं दार को मान देता है, वही ईमानदार होता है। दार = पत्नी। यानी जो व्यक्ति ईश्वर एवं पत्नी को मान देता है, वही व्यक्ति ईमानदार होता है।

32. ईश्वर + प्रणि + धान = ईश्वर प्रणिधान -

प्रत्येक प्राणी का ईश्वर उसका धान है। ईश्वर + प्रणि + धान = ईश्वर प्रणिधान। धान ही तो अन्न है, और अन्न ही ब्रह्म है। धान से ही धन बना। धन को देकर धान खरीदते हैं। इसलिए सबके प्राण, धन में लगे रहते हैं। इसलिए धन को भी ईश्वर का, दर्जा मिला हुआ है। और धनी व्यक्ति का पता, धनिया से चलता है, क्योंकि धनी व्यक्ति के यहां पकी, दाल, साग, सब्जी, भाजी में, ऊपर से धनिया पत्ती को डाला जाता है। इसलिए व्यक्ति धन को प्राप्त करने में, लग जाता है कि, धन को प्राप्त करके, ईश्वर को धन चढ़ा करके, लोगों में धान का दान देकर, ईश्वर से वर की प्राप्ति कर लेगा। किन्तु वर तो व्रत करने पर मिलता है, इसलिए जो जो वर, जिस जिस ईश्वर का व्रत करने पर मिलता है, व्यक्ति उस उस ईश्वर का व्रत करके, उस उस ईश्वर से वर की प्राप्ति करता है।

33. Electricity + द्रव्य = इन्द्री -

Electricity जिसमें द्रव्य के तौर पर रहती है, उसे इन्द्री कहते हैं। Electricity + द्रव्य = इन्द्री। जब भी बादल आते हैं, और बादलों के बीच में, बिजली कड़कने लगती है, उसी समय इन्द्री में स्थित, द्रव्य में हलचल होती है, और इन्द्री में विद्युत का प्रवाह, बड़ी जाता है।

34. iLL + लाज = इलाज - iLL हुआ व्यक्ति लाज के कारण, इलाज करवाता है।

35. ईमान + Press = Impress -

व्यक्ति दो तरह से ही किसी को, Impress करता है। ईमान + Press = Impress. पहला – अपने ईमान से किसी को Press करता है। यानी व्यक्ति अपने ईमान से, किसी पर दबाव बनाता है। दूसरा – किसी के ईमान को Press करता है। यानी व्यक्ति किसी के, ईमान पर दबाव डालता है। और उसको Impress करता है। इस Impression को ही आजकल की भाषा में, दबाव की राजनीति कहा जाता है। यानी व्यक्ति या तो अपने ईमान से, किसी पर दबाव बनाता है। या किसी के ईमान पर दबाव बनाता है। इसलिए इसे ही कहते हैं कि, "First Impression is the Last Impression". यानी

जो पहले दबाव बना लेता है, तब वह सारी जिन्दगी उस पर, दबाव बनाकर रखता है। इसलिए पहली मुलाकात में, व्यक्ति एक दूसरे को, Impress करने में लगे रहते हैं। जिस प्रकार से Press में, दबाव डालकर पन्नों में, जो अक्षर छापा जाता है, वह अक्षर ही Impression बन जाता है। इसलिए उसको अक्षर कहते हैं। किन्तु इतना याद रखिए, ईमान से ही Impression बनता है। और ईमान से ही कोई Impress होता है। ईश्वर का मान ही ईमान होता है। ईश्वर + मान = ईमान। व्यक्ति के भीतर बैठा, उसका ईश्वर ही उसका मान होता है। जब व्यक्ति अपने भीतर बैठे, ईश्वर को मान देता है, तब व्यक्ति ईमान में होता है। इसलिए किसी को Impress करने के लिए, अपने भीतर बैठे ईश्वर को मान दीजिए, तब जाकर किसी को Impress कर पाएँगें। अपने भीतर बैठे ईश्वर की बात मान लीजिए, वही ईश्वर को मान देना होता है, ईश्वर को मान देने से व्यक्ति का, ईमान बनता है, और मजबूत होता है। दूसरा अपने आप उससे Impress हो जाता है।

36. Electricity + मांस + अन्न = Emotion -

शरीर के अन्दर स्थित Electricity, खाए गए अन्न को, मांस में बदल देती है। और, मांस से ही Electricity बनती है, इसे ही Emotion कहते हैं। Electricity + मांस + अन्न = Emotion. मांस से बनी Electricity से, शरीर Motion में आता है। Electricity + Motion = Emotion.

37. Expire + लोरी = Explore -

Expire हो गए लोगों के बारे में, लोरी सुनाकर, उनको Explore किया जाता है।

38. Entry + Jar = इंतजार - जार की Entry का इंतजार किया जाता है।

F

1. फिक्र - फिकर - Fee और कर (Tax) सबको इन दोनों की ही तो फिक्र होती है।

2. फैला + Ash (राख) + Back = Flash Back -

गांव में जब छोटे बच्चे Back यानि पीछे तरफ से पोट्टी करते थे तब उस पर Ash (राख) फैला देते थे। जिसे मिट्टी डालना भी कहते थे। वही आगे चलकर आजकल Flush करना हो गया। यानि कि, "फैला दे Ash को"। अंग्रेज जब भारत में आये, तो वह भारत की, कहीं पर भी पोट्टी करने की समस्या से बहुत परेशान हो गये। क्योंकि भारत के लोग कहीं-भी बैठ कर पोट्टी कर देते थे। जब सुबह-सुबह के अंधेरे में Morning Walk के लिएअंग्रेज निकलते थे तो उनके पैर में अक्सर वह लग जाया करती थी। तो उन्होनें पहले तो अपनी बस्ती, जिसे वह Colony कहते थे, उस Colony के चारों तरफ Fencing लगवाई, फिर दीवार लगवाई। तब भी लोग न माने तो उन्होनें Tower बनवाये और उस पर बड़ी-बड़ी Light लगवाई। जिसे Flash Light कहा जाता है। और उस Tower को Light House. यह Flash Light सुबह-सुबह जला दी जाती थी और घूमती रहती थी और देखती रहती थी कि, कोई आस-पास पोट्टी तो नहीं कर रहा है। अगर कर रहा है, तो उसकी Back पर Flash (चमक) जाती थी। जिससे पोट्टी करने वाला पीछे मुड़कर देखता था। जिसे Flash Back कहते थे। Flash यानि चमक। तो आजकल Commode को पानी और फिनाईल आदि से चमकाया जाता है, तो उसे भी Flush करना कहते हैं।

3. Fine - Fine होने के लिए Fine देना पड़ता है।

4. फर + अर्क = फर्क –

फर (पंख) के न होने से ही फर्क पड़ता है। अर्क (दवाई) के होने से ही फर्क पड़ता है।

5. फसाद -

जब कोई कहीं फँस जाता है, तो वह वहाँ से निकलने के लिए, कुछ न कुछ फसाद खड़ा कर देता है।

6. फन = Fan - लोग उन्हीं के Fan बनते हैं, जिनमें फन होता है।

7. फल + Luck = फलक - फल और Luck दोनों ही फलक से गिरते हैं।

8. फूल + लो = Follow -

फूल लो यानि जो लोग किसी को Follow करते हैं, वह लोग उसके लिए फूल लें जाते हैं।

9. Free + Dom = Freedom -

जो Free (मुक्त) हो जाता है, वह Dom (मकबरे) में चला जाता है।

10. For + Rum = Forum –

Rum पीने के लिए Forum बनाया जाता है, यानि जहाँ पर ऐसे लोग इकट्ठे होते हैं जो Rum पीते हैं।

11. फूट + बाल = Football -

आदमी के सर को जब सैनिक लोग, अपने पैर के जूते से फोड़ते थे, तो सिर के फूटने पर, उसे फुटबाल कहते थे। तभी तो आज भी लोग क्रोध में, आने पर किसी को कहते हैं कि, "तेरे सर को फूटबाल

बनाकर खेलूँगा"।

12. फोड़ + मूल = Formula –

मूल से फोड़ देना ही, Formula है। यानि ऐसी कोई बात बताओ जिससे इसका जड़-मूल ही नष्ट हो जाए, यही है Formula.

13. Fry – राई में ही Fry किया जाता है। यानि राई (सरसों) के तेल में सभी चीज Fry करते हैं।

14. Fool = फूल –

जिसे कोई Fool यानि मूर्ख बनाना चाहता है, तो उसे वह फूल भेजता है। चाहे वह Birthday हो या मरण दिन, दोनों समय फूल चलता है।

15. Fear –

Ear से ही Fear होता है, यानि कान से हम किसी की बात को सुनते हैं और उसके बारे में डर बना लेते हैं।

16. Fund + आ = फंडा –

जिससे Fund आता है, उसे फंदा या फंडा कहते हैं। यानि किसी को फंसाने के लिए फंदा लगाया जाता है, उसमें जब कोई फंस जाता है, और Fund आ जाता है, तो उसे कहते हैं फंडा।

17. For + मल = Formal – मल के लिए जाना ही, Formal होता है।

18. Festival + East = Feast –

East (भारत) में ही Festival मनाया जाता है, जिसमें Feast खिलाई जाती है।

19. Fill – ILL होने पर उसकी जगह पर दूसरे को Fill किया जाता है।

20. फूल + काँटे = Folk – फूल और काँटे जो पहनते हैं, वही Folk करते हैं।

21. Fish = फिसल – फिसल जाए जो वह है Fish.

22. Forgery – जरी के काम में ही Forgery होती है।

23. Fast –

Fast चलने वाले Fast (व्रत) करते हैं, क्योंकि कार्य के वक्त उन्हेंखाने का समय ही नहीं मिलता है।

24. फरमाबरदार – फरमा में जो ढल जाते हैं, वह फरमाबरदार हो जाते हैं।

25. Form –

फरमा ही Form है, यानि ढाँचा जिसमें उनको ढाला जाता है। जैसे कि वस्तुओं को ढालने के लिए फरमा होता है, वैसे ही आदमियों को ढालने के लिए Form होता है। जिस Form को भरने पर, पता चल जाता है कि, किसको कैसा ढालना है।

26. Farm + मर = Farmer – Farm में जाकर जो मर जाता है वह है Farmer.

27. फलता +ओज = फौज –

फलता है जिसमें ओज, उसे कहते हैं फौज। राजा ऐसे लोगों की फौज बनाता है, जिनका ओज फलता है, किंतु पुरुष ओज को ही फौज बनाता है, जो उसे हर प्रकार की समस्या से उसे बचाती है।

28. फंदा –

स्वेटर को बुनने के लिए फंदा लगाया जाता है, पुरुष को फंसाने के लिए स्त्रियाँ स्वेटर बुनती हैं, स्वेटर में जितने फंदे होते हैं, उतने फंदे में वह पुरुष को फंसा लेती हैं, ऐसी ही फंदे डालकर स्त्रियाँ जाल बुनती है।

29. Fall = फल –

फल ही Fall हैं, यानि फल ही पेड़ से नीचे गिरते हैं, और नीचे गिरने वाले को ही Fall कहते हैं।

30. Frock = फर = पंख –

पंखों से फ्रॉक (Frock) बनता है, जो लड़कियाँ पहनती है, जैसे मोर के पंखों से उसका फ्रॉक (Frock) बनता है।

31. Fill + Hall = फिलहाल – Hall को कैसे Fill किया जाये, यही फिलहाल सोचा जा रहा है।

32. Fresh + Rate = Frustrate –

Fresh लोगों को जब उनके मुताबिक Rate नहीं मिलता है, तो वह Frustrate हो जाते हैं।

33. Fly = फैलाई – Fly करके ही, किसी चीज को फैलाया जाता है।

34. Free = फरी-फरी - जहाँ Free मिलता है, वहीं लोग फिर-फिर कर घूमते हैं।

35. फल + ऋतु = Fruit –

फलते हैं जो ऋतु के आने पर, वह कहलाते हैं Fruit. जिसे तोतले बच्चे “फलूट” भी कहते हैं।

36. फब + Rite = Favorite –

उस पर क्या फबता है? यह उसके Rite (संस्कार) से पता चल जाता है, यानि उसे क्या पसंद है, यही Favorite.

37. Far + गू = Fargo – गू करने के लिए ही आदमी Fargo जाता है।

38. Flash = फ्लैश – फैलाना Ash (राख) को -

Potty करने के बाद हर कोई Flash करता है। किंतु भारत में जब कोई बच्चा घर में ही Potty कर देता था, तो वहाँ पर राख (Ash) को फैला दिया जाता था, बस इसी से यह शब्द बना Flash.

39. फँस + आना = फसाना – फँस कर आना ही फँसाना होता है।

40. फरक + चर = Fracture –

चरने में फरक आ गया जानवर के तो समझो उसको Fracture हो गया है, यानि जब चरवाहा यह देखता है कि, किसी जानवर को चरने में फरक आ जाता है, तो चरवाहा समझ जाता है कि, “इसके किसी अंग में Fracture हो गया है”।

41. Follow + Ox = Fox – जो सदा OX को Follow करती है, वह है Fox.

42. फल + उल्टा = Fault – फल जब उल्टा लटकता है, वही है Fault.

43. Fan + टिक = Fanatic –

Fan वाले लोग ही टिके रहते हैं। जिसके Fan होते हैं, वह Fan की पंखुडियों तरह चलते हैं, जिनकी पंखुडियाँ उसकी तरफ आने वाली हर चीज को काट डालती हैं। इसीलिए Celebrity लोग Fan बनाते हैं, जिससे उनकी रक्षा होती रहे।

44. फैले + ना + Oil = Foil – Oil को फैलने से बचाने के लिए ही Foil लगाई जाती है।

45. फल + इच्छ = Fix –

अगर आपको अपनी ईच्छा के अनुसार फल प्राप्त करना हो तो फिर उसे Fix कर लो।

46. फंस – Fans (प्रसंशकों) में फंस जाते हैं, वह फंस ही जाते हैं।

47. Face + Law = फैसला –

कोई Face (चेहरा) देखकर, तो कोई Law (कानून) के अनुसार फैसला लेता है।

48. Fool + Ish = Foolish -

जो लोग ईश्वर को फूल चढ़ाने के लिए ले जाते हैं, वह लोग Foolish होते हैं।

49. फांस + Law = फासला –

जब आप किसी को फांस नहीं पाते हैं, तो एक Law बना देते हैं और उस Law में उसे फंसा लेते हैं। फिर लोगों में Law से फासले करवाये जाते हैं।

50. Foreign = फौरन –

Foreign में हर काम फौरन हो जाता है, इसलिए उसे Foreign कहते हैं।

51. For + Rest = Forest –

जब आदमी समाज में अपने दायित्वों को निभाते-निभाते थक जाता है। तब वह विश्राम के लिए वन की ओर प्रस्थान करता है। यानि Rest करने के लिए Forest में चला जाता है।

52. Fool + Low = Follow -

Fool और Low लोग ही, किसी को Follow करते हैं। इनके हाथ में फूल होता है, यह अपने आपको हमेशा, Low समझते हैं।

53. फल + लाने = फलाने -

जब, सच बोलने वाले, मौन हो जाएंगे। तब झूठ बोलने वाले, खुद-ब-खुद, चुप हो जाएंगे। क्योंकि झूठ बोलनेवालों को, सच के पैर नहीं मिल पाएंगे। इसलिए 99 झूठ बोलनेवाले 1 सच बोलनेवाले को अपने साथ में रखते हैं, और अपना सैंकड़ा पूरा करते हैं। यही 99 का फेर है, जो 1 सच के बिना कभी पूरा नहीं होता है। जैसे 100 कौरवों और 5 पांडवों में केवल 1 युधिष्ठिर ही सच बोलनेवाले थे। इसी तरह हर, झूठों की मित्र मंडली में, एक सच बोलनेवाला होता है। इसलिए सभी मित्र, अपनी झूठी बात को, सच साबित करने के लिए अपने घरवालों से बोलते हैं, कि "आपको ! मेरी बात पर विश्वास नहीं है, तो फलाने से पूछ लो। फलाने की बात को तो सच मानोगे" ! यह सच बोलनेवाला व्यक्ति, फलाना नाम से जाना जाता है। इसी फलाने के सच के पैर पर, झूठ बोलनेवाला, अपने, झूठ को चलाता है। इसलिए समाज में जितने भी फलाने हैं, अगर यह फलाने, मौन धारण कर लेते हैं, तो यह झूठ बोलनेवाले, खुद-ब-खुद चुप हो जाएंगे। क्योंकि झूठ बोलनेवाले के पास, हमेशा एक तैयार बहाना होता है, "वो मैं फल लाने गया था।" या "वो फल लाने गया है।" यह फल लाने ही, तो फलाने है।

54. फीरी = Free -

"आ थोड़ा-सा फीरी आवाँ" जब व्यक्ति को Free मिलने लगता है, तब व्यक्ति फिर-फिर से आता है।

55. Fool + Low = Follow -

Fool और Low लोग ही, किसी दूसरे को Follow करते हैं। Fool + Low = Follow. फूल लेकर दूसरे के पीछे, "फूल लो फूल लो" कहते हुए, घूमते रहते हैं। फूल + लो = Follow. इसीलिए किसी को Follow करना है, तो फूल लेकर उसके पास जाओ, और उसको फूल दे दो।

56. फर्ज + जी = फर्जी -

आप फर्ज अदा करो, किंतु फर्ज को जी से मत लगाओ, क्योंकि फर्ज को जी से लगाया तो, फर्जी हो जाओगे। फर्ज + जी = फर्जी। यानी फर्ज अदा करो और उस फर्ज को मन में धारण नहीं करो।

57. Fresh + Air = Fair =

Glasses की Buildings के Air-conditioning Rooms में अब Fresh Air नहीं आती। Fresh Air के लिए Building की Terrace पर Fair लगाए जाते हैं। Fresh + Air = Fair. वहां पर भी सब एक दूसरे के Affairs के बारे में बातें करते हैं। इस तरह से Fresh Air के Fair को भी अपनी Affairs की सोच से दूषित करते हैं। Do + Shit = दूषित। कभी कभी मैदानों में भी Fair लगाते हैं, किन्तु वहां पर भी, इतना मल करते हैं कि, सबकुछ मैला हो जाता है। आते तो सब एक दूसरे से मिलने के लिए हैं, किन्तु मैदान की परिधि के बाहर, इतना मल करते हैं कि, सब मैला हो जाता है।

58. Fall + तू = फालतू -

फाल लगाते समय, जो बातें की जाती हैं, वह फालतू की बातें कहलाती हैं। आदमी Water Fall को देखते हुए, जो बातें करते हैं, उनको फालतू की बातें कहते हैं। किसी को किसी के, प्यार में गिरते हुए देखकर, जो बातें की जाती हैं, वह फालतू की बातें कहलाती हैं। जैसे "I am Fall in Love". किसी को जमीन पर गिरते हुए देखकर, जो बातें की जाती हैं, वह फालतू की बातें कहलाती हैं। किसी को किसी की, नजरों से गिरता देखकर, जो बातें की जाती हैं, वह फालतू की बातें कहलाती हैं। किसी को ज़िन्दगी में, गिरता हुआ देखकर, जो बातें की जाती हैं, वह फालतू की बातें कहलाती हैं। जब किसी का Fall हो जाता है, तब उसके साथ, सब तू करके बात करते हैं। Fall + तू = फालतू। "तूने ! ऐसा किया होता तो, तेरा पतन नहीं होता"। जब व्यक्ति का पतन हो जाता है और वह उस पतन के दु:ख में, बैठा होता है, तब लोग कहते हैं, "तू ! यहां क्यों इस तरह बैठा है, भूल जा जो हो गया, सो हो गया"। फिर वह व्यक्ति जो भी कार्य करता है, वह सब फालतू के कार्य कहलाते हैं। "अरे ! यह तो उसने किया है जिसका Business Fall हो गया था"। फल जिसमें मिले उसे फालतू का कार्य बोला जाता है।

59. फल + लोप = Flop -

फल का जहां पर लोप हो जाए, उसे Flop कहते हैं। फल + लोप = Flop. अत्यधिक परिश्रम करने के बाद, जब फल की प्राप्ति नहीं होती है, तब उसे फल का, Lop हो जाना कहते हैं यानी Flop कहते हैं।

60. फव्वारा + जल = फ़ज़ल -

फव्वारा बनके जब जल बरसता है, तब उसे फ़ज़ल कहते हैं। फव्वारा + जल = फ़ज़ल। अल्लाह जब फ़ज़ल करता है, तब आसमान से जल बरसाता है, इसे ही अल्लाह का फ़ज़ल कहते हैं। क्योंकि जल नहीं होगा तो, फसल नहीं होगी और जल के बिना तो, कुछ भी नहीं होगा। इसीलिए खुदा अपनी नेमतें, पानी के रूप में बरसाता है, अल्लाह के बरसाए पानी से हमारी यह धरती, फसलों, फलों, पेड़ों, पौधों से लहलहाती है। यही लहलहाती कुदरत ही, खुदा की नेमत कहलाती है। इसीलिए खुदा से पानी बरसाने की दुआ की जाती है।

61. Friend + Ship = Friendship -

Friend तो एक Ship की तरह होता है। इसीलिए बोलते हैं, "Friendship". दुनिया के सागर की लहरों से Friend ही Ship बनकर, पार करवा देता है। Scholar भी एक Ship की तरह होता है। सागर की लहरों से पार करवा देता है। इसीलिए बोलते हैं, "Scholarship". पहले के जमाने में, प्रत्येक Ship पर एक Scholar को रखा जाता था। जिसका खर्चा Ship वाले वहन करते थे। लोगों का मानना था कि, एक Scholar के रहने पर, Ship डूबेगा नहीं और आसानी से यात्रा हो जाएगी। Scholar = आध्यात्मिक ग्रन्थों को विद्वान।

62. फलक + चूंता + Ate = Fluctuate -

फलक चूंता है तब हम खाते हैं, यही Fluctuate होता है। फलक + चूंता + Ate = Fluctuate. आसमान से बारिश होती है, बारिश से अन्न उत्पन्न होता है, अन्न को हम खाते में। इसलिए कहते हैं, "जहां से फल और Luck चूंता है, उसे Fluctuate कहते हैं"।

63. Fan + टिक = Fanatic -

Fan होकर जो टिक जाता है, वह Fanatic हो जाता है। Fan + टिक = Fanatic. यह Fan Sing करते हुए, Fencing का काम करते हैं। Fan + Sing = Fencing. इन Fan के सींग होते हैं, तो यह Fencing का काम करते हैं। Fan + सींग = Fencing. यह Fan सिंह भी हो जाते हैं, और Fencing का काम करते हैं। Fan + सिंह = Fencing. किसी के बहुत सारे Fan इकट्ठा होकर, एक Fencing का काम करते हैं, और जिसके Fan होते हैं, उसकी रक्षा करते हैं। इस तरह से यह Fan, उसके लिए Infantry का काम करते हैं। यह Fan बच्चों की तरह, अबोध होते हैं, इसलिए इन Fan को Infant कहते हैं। इन्हीं Infant के द्वारा, भीतर से किए गए, इस प्रयत्न को Infantry बोलते हैं। In + Fan + Try = Infantry. इसलिए जिनके Fan होते हैं, वह कहते हैं कि, "इन Fan को Try करने दो"। Fan = प्रसंशक। जब कोई प्रसन्न होकर, किसी की प्रशंसा करता है, तब उसके ऊपर दूसरे को, शक होता है, तो उसे ही प्रसंशक कहते हैं। प्रसन्न + शक = प्रसंशक। दूसरा सोचता है कि, "यह इतना प्रसन्न क्यों है ? और बेमतलब किसी की, प्रशंसा क्यों कर रहा है" ? इसलिए प्रशंसा करने वाले पर, शक होता है। किन्तु वह प्रसंशक किसी के, फन की प्रशंसा कर रहा है, क्योंकि उसके फन का Fan बन जाता है। और घूमते हुए Fan (पंखे) की तरह, जगह जगह घूमकर उसके विरोधियों की गर्मी को, ठंडा करता है। जिस प्रकार से Fan के घूमने पर, Fan की तीन पंखुड़ियों इक दिखती हैं, उसी प्रकार से किसी के घूमते हुए Fan भी, उसी Trick से इक दिखते हैं। त्रि + इक = Trick. जिससे

तीन पंखुड़ियों इक दिखती हैं, उसे Trick कहते हैं। इसलिए कोई ऐसी Trick अपनानी चाहिए, जिससे यह Fan इक न दिखें। यानी Fan Not इक। इससे यह सही में Fanatic कहलाएंगे। Fan + Not + इक = Fanatic. जब Fan इक नहीं रहेंगे, तब Fan टिक नहीं पाएंगे। Fan + अटिक = Fanatic. Fan तभी टिक पाते हैं, जब Ticket सब कट जाते हैं। टिक + कट = Ticket. Ticket ही Fan को टिकने देते हैं। Fan + Ticket = Fanatic.

64. फूं + कौन = Phone -

"फूं कौन" को ही Phone कहते हैं। फूं + कौन = Phone. Pho + Kon = Phone. Phone को उठाते ही व्यक्ति सबसे पहले Phone के Transmitter में फूं-फूं करता है, तब पूछता है कि, "कौन बोल रहा है ? कौन बोल रहा है" ? किन्तु Phone में फूं फूं नहीं करना चाहिए। क्योंकि जब किसी के कान में फूंकते हैं, तब उसके गुरु बन जाते हैं। क्योंकि Phone के दूसरी तरफ, किसी व्यक्ति के कान लगे होते हैं। और कान फूंकने का कार्य, केवल गुरु के द्वारा शिष्य के, कान फूंक कर किया जाता है। इसलिए जिसमें फूंकते नहीं हैं, उसको Phone कहते हैं। लेकिन लोग तो जब भी Phone को मुंह के सामने लाते हैं, तब ही Phone में फूंकते हैं, चाहे वह Telephone हो, या Microphone हो या Mike Phone हो। सभी तरह के Phone में, सबसे पहले फूं फूं करके, फूंक मारते हैं। जबकि जिसमें फूं फूं नहीं करते, उसे Phone कहते हैं। लेकिन आजकल लोग, Mobile से Mobile में बात करके, एक दूसरे के कानों में, इतनी बातें फूंकते हैं कि, सारा का सारा ज्ञान आज ही, एक दूसरे को दे देंगे। इस तरह से एक दूसरे के कान में, बातों को फूंकते हुए, एक दूसरे के गुरु शिष्य बन जाते हैं। और बहुत सारा ज्ञान, एक दूसरे को दे देते हैं।

65. फरमा + ईश्वर = फरमाइश –

आप जो फरमाते हैं ईश्वर से, वह ही फरमाइश होती है। फरमा + ईश्वर = फरमाइश। फरमाने के लिए एक Farm भरना पड़ता है।

66. फरता + ऋतु = Fruit -

फरता है जो ऋतु के आने पर, उसे Fruit कहते हैं। फरता + ऋतु = Fruit. यानी अपनी ऋतु के अनुसार, Fruit फरता है। जब जिस Fruit की ऋतु आती है, उस ऋतु में वही Fruit फरता है।

67. फर + Nature = Furniture -

फर फर की आवाज आ रही थी, पता चला की Nature को, काटकर Furniture बन रही है। फर + Nature = Furniture. लकड़ी पर जब रन्दा चलाते हैं, तब फर फर की आवाज आती है।

68. फल + Low + लोट = Float –

फल Low की तरफ़, लोटता हुआ जाता है, उसे ही Float कहते हैं। फल + Low + लोट = Float. उसी तरह से नदी में, कोई भी Float करता है।

69. Fit + नस = Fitness -

Fit रहना नस का Fitness कहलाता है। Fit + नस = Fitness. अगर व्यक्ति की नस Fit है, तब व्यक्ति में Fitness है। नस जब Fit रहती है, तब Ness मिल जाती है।

70. Phone + Type = Font -

Phone से Type करने को, Font कहते हैं। Phone + Type = Font. ऐसे Alphabets जो Phone से, Type किए जाते हैं। वह Alphabets ही Font कहलाते हैं। पहले जमाने में विभिन्न प्रकार के, Fountain Pen से, Alphabets को विभिन्न प्रकार से, लिखा जाता था। इसलिए उन Alphabets को, Fountain कहा जाता था। जो बाद में "Fountain" से अपभ्रंश, होकर के "Fount" और बाद में, "Font" कहे जाने लगे। जब Typewriter बने, तब इन्हीं Font को, Type किया जाने लगा। जिसमें भी इन Alphabets का नाम, "Font" ही रखा गया। Fountain + Type = Font. बाद में जब ऐसे Phone का अविष्कार हुआ। जिसमें एक तरफ रखे Phone से, Typewriter जुड़ा रहता था, उस Typewriter पर जो, भी Type किया जाता था, वह दूसरे तरफ Phone के, साथ रखे Typewriter पर, Type हो जाता था। बाद में Typewriter हटा दिया गया, और Phone के Dial पर ही, Alphabets को लिख दिया गया। और साथ में एक, Paper Roll लगा दिया गया। इस Paper Roll पर, सब Type हो जाता था। इस तरह से Fountain Pen के द्वारा, लिखे गए Alphabets को, उसी आकार में जब Phone पर, Type किया गया, तब उन Alphabets को Font कहा गया। इन Font की लिखाई से ही, मालूम पड़ जाता था कि, यह संदेश किसके लिए आया है। बाद में इसी का नाम "Teleprinter" पड़ा। और आगे जाकर "Fax" कहा गया। आजकल इसे "Email" और "SMS" कहते हैं। तथा "WhatsApp" इसका ही, विस्तारित रूप है। और सभी में विभिन्न प्रकार के, Font का उपयोग, आज भी किया जाता है। किन्तु Fountain Pen से लिखना, आजकल लगभग ना के बराबर हो गया है। जबकि सारे Font इसी, Fountain Pen की देन हैं।

71. Food + ईष्ट = Feast -

Food for ईष्ट is called Feast. Food + ईष्ट = Feast. भोजन जो ईष्ट के लिए बनाया, Feast कहलाता है। इसी Feast से शब्द बना है, "Festival".

72. Found + डर = Founder - किसी का डर Found कर लो, और Founder बन जाओ।

73. For + Long = फलांग -

जो व्यक्ति Long जाना चाहता है, उस व्यक्ति को फलांग मारनी पड़ती है। For + Long = फलांग। जो व्यक्ति छल के द्वारा Long जाता है, छलांग कहते हैं। छल + Long = छलांग।

74. फल + लोप = Flop -

जिसका फल लोप हो जाए, उसे Flop कहते हैं। यानि परिश्रम तो किया किन्तु फल का लोप हो गया।

75. Fortune + नर = Fortuner –

हम तो यही सोचते हैं कि, 'हर नर के Fortune में Fortuner हो। Fortune में नर के Fortuner.

G

1. गुण + गुण + आना = गुनगुनाना - जिसके पास गुण होते हैं, वही गुनगुनाता है।

2. गुरुकुल एवं विश्वविद्यालय -

दो तरह की अध्ययन व्यवस्था, सदा से रही है। गुरुकुलीय एवं विश्वविद्यालीय। गुरुकुल केवल, राजा के पुत्रों के लिए, सीमित थे। विश्वविद्यालय सभी विद्यार्थियों के लिए थे। गुरुकुल जैसे आजकल के, Private Educational Institutions. विश्वविद्यालय जैसे आजकल के, Governmental Education Institutions.

3. गैर + Anti = Guarantee -

गैर और Anti लोगों को विश्वास में लेने के लिए Guarantee दी जाती है।

4. गलती -

जब तक कोई बात गलती नहीं है, तब तक वह बात गलती है। जब बात गल जाती है, तब वह गल बन जाती है। इसलिये बात को या दाल को गलने दो, जिससे फिर वह गलती नहीं मानी जाएगी।

5. गू – तर = Gutter - गू से जो तर है, वह है Gutter यानि जिसमें गू-ही-गू भरा है।

6. गु + अण (अन्न) = गुण-दोष -

अन्न से ही गु बनता है। और गु अन्न का ही परिणाम है। गु को हम खेतों में डालते हैं, जिससे अण (अन्न) उपजता है। दो + ष (षड्यंत्र) = दोष। षड्यंत्रपूर्वक किसी को कोई वस्तु देना ही दोष कहलाता है। किसी को बहुत अच्छी वस्तु देते परंतु उसमें कोई षड्यंत्र है, तो यह वस्तु देना दोष है।

7. Gun + तंत्र = गणतंत्र -

Gun का तंत्र ही गणतंत्र है। इसलिए गणतंत्र दिवस के दिन Guns (तोपों) का प्रदर्शन किया जाता है।

8. गलती = Guilty - जो लोग गलती करते हैं, वही लोग Guilty Feel करते हैं।

9. गोरी + जी + Us = Gorgeous - गोरी को गौर से देखने का जी, हमारा सबका करता है।

10. गुप्त - जहाँ गु किया जाता है, उस जगह को गुप्त कहते हैं।

11. Gate -

आने के लिए अलग, जाने के लिए अलग होता है Gate. इसीलिए Gate पर लिखा रहता है, In और out.

12. घनत्त्व –

जो घना होता है, वही घनत्त्व कहलाता है। लोहार के पास जमीन में गड़ा हुआ, लोहे का घन होता। जिस घन पर लोहार वस्तु को रखता है और हथोड़े से मारकर वस्तु का निर्माण करता है। उस जमीन में गड़े हुए, लोहे के घन का घनत्त्व बहुत अधिक होता है, जो हथोड़ों की चोट को सहन करता हुआ, न जाने किसी वस्तुओं का निर्माण करता जाता है।

13. गीत + तार = Guitar – गीत जब तारों पर बजाये जाते हैं, उसे Guitar कहते हैं।

14. ग्रास = Grass –

पहला भोजन Grass है, यानि घास है। इसलिए भोजन करने को ग्रास लेना कहते हैं। Ass (गधे) ग्रास को खाते हैं, ग्रास ही खाई जाती है। भारत में पहले लोग घास खाते थे, इसीलिए आज भी खाने के पहले कौर को ग्रास कहते हैं।

15. गाय + ऊन = Gaun –

गाय की खाल और ऊन से बने वस्त्र को Gaun कहते हैं। जो गाँव के लोग पहनते हैं।

16. ठग + बन + धन = गठबन्धन –

ठग कर धन बनाना। जब कोई ठगकर धन बनाने का काम करता है, उसे गठबन्धन कहते हैं। पहले भारत में ठग होते थे, जो गठबन्धन बना कर ठगी करते थे, उनके पास एक अंगोछा होता था। जिस पर वह गाँठ बान्ध कर रखते थे। और ऐसे ही वह कई सारे अंगोछों को भी गाँठ बाँन्ध कर रखते थे। फिर बाद में जब उनमें झगड़े होने लगे तो वह अपने लड़के और लड़की की शादी भी गठबन्धन से करने लगे की यह हमारे बीच समझौता है। यह शादी एक गठबन्धन यानि समझौता होता है, जो दोनों को पालन करना होता था। और जिसको ठगा जा रहा है, उसे पता भी नहीं चलता था।

17. गू + गली = Goggles –

जब गू की गली से निकलते हैं तो Goggles पहनते हैं। जिससे काले चश्मे में गू न दिखाई दे।

18. गू + गली = Google –

गू की गली को ही Google कहते हैं। यानि जैसे गू की गली में से निकलना हो तो पैर ईधर-उधर रखकर निकलना पड़ता है। यही Cricket में गूगली Ball (गेंद) फेंकना कहलाता है। जिसमें पैर ईधर-उधर कर Ball को फेंका जाता है। पाकिस्तान के एक Cricketer अब्दुल कादिर इसी प्रकार की Google Ball को फेंका करते थे।

19. गू + गली = गुग्गल –

इसी गू की गली से जब गू की बास आती है, जो उस बास को दूर करने के लिए, गुग्गल जलाया जाता है। जिसकी सुगन्ध से गली की दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

20. गोबर + Mint = Government –

मनुष्य ने दूध के लिए गाय को पाला, जब गाय ने गोबर दिया तो, तो उस गोबर को एक स्थान पर इकठ्ठा किया, फिर उसका सभी में बराबर वितरण करने के लिए जो व्यवस्था बनाई उसे Government कहते हैं। यानि गोबर की बदबू को Mint की खुशबू से दबाना यही Government का काम है।

21. गुलाम –

पहले जमाने में गुलाम खरीदे जाते थे। नौकर और गुलाम में फर्क होता है, नौकर वह होता है जो नौ काम कर लेता है, और गुलाम वह होता है, जो केवल गु उठाने का काम करता है। यानि पहले जमाने में राजा आदि लोग अपने हाथ से अपने गु को साफ करना नहीं चाहते थे। तो वह हगने के बाद अपने शरीर पर लगे "गु" को साफ करने के लिए गुलाम रखते थे। जिसमें सबका अपना-अपना गुलाम होता था। वह गुलाम हमेशा उनके साथ रहता था। वह गुलाम ही हगने के बाद उनके गु को गुदा से

हाथ के द्वारा साफ करता था। और वहाँ से सारा गु उठाकर एक बाग में फेंक कर आता था। जहाँ पर उस गु का उपयोग माली गुलाब उगाने के लिए करता था। तो हर राज घराने के सदस्य का अपना एक गुलाब का पौधा होता था। जिसमें उसका गु डाला जाता था। फिर उस गुलाब की खुशबू आती थी जो गू की बदबू को भगाती थी। यही गुलाम का काम था।

22. गप = Gap –

जब किसी को समय के बीच का समय बिताना होता है, यानि किसी का इंतजार करना होता है, तो वह इंतजार करनेवाला समय गप्प मार कर गुजारता है, और Gap को भरता है।

23. Girl = गरल =

Girl ही तो गरल है, गरल को विष भी कहते हैं। पहले जमाने में विषकन्या होती थी, जो कि किसी व्यक्ति को प्यार करती थी, तो वह व्यक्ति मर जाता था, वह अक्सर लड़की यानि Girl होती थी। इसलिए Girl को गरल कहा गया है।

24. घूस + पैठ = घूसपैठिया – घूस देकर जो पैठ बनाते हैं, वह घूसपैठिया हैं।

25. घटाना –

किसी को घटाने के लिए उसमें से कुछ न कुछ घटाया जाता है यानि कोई किसी में से कोई चीज घटाने लगता है, तो वह घट जाता है।

26. घटा –

जब बादलों की घटा छा जाती है, तब वह बादल अपने में से पानी को घटा देते हैं, जिससे बरसात हो जाती है।

27. गायक –

गाय को चरानेवाला ही गायक हो जाता है, क्योंकि वह वक्त काटने के लिए गाना गाता है।

28. गुजार + ईश = गुजारिश –

गुजारा करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की जाती है, जिसे गुजारिश कहते हैं।

29. ग्रामीण = Grammy – ग्रामीण लोगों के लिए Grammy Award दिये जाते हैं।

30. जिम + नास्तिक = Gymnastic – जिम में जानेवाला नास्तिक होता है।

31. घना + बड़ा = घबरा – घना और बड़े को देखकर हर कोई घबरा जाता है।

32. गद्दी = गड्डी –

मालिक अपनी काली कमाई, अपनी बैठनेवाली गद्दी के नीचे रखता है, यानि गड्डी की गड्डी जहाँ रखी जाती है, उसके ऊपर चादर बिछाकर बैठ जाता है, वही उसकी गद्दी कहलाती है, क्योंकि किसी पर विश्वास नहीं करता है, उसी गद्दी पर बैठता-सोता है।

33. गुरु + Room = Groom – गुरु ही किसी को Groom करते हैं।

34. घर + ऋण = घृणा – घर के लिए ऋण लेने वालों से ऋणा होती है।

35. गुल + Jar = गुलजार – जो गुल Jar में खिलते हैं, उन्हे गुलजार कहते हैं।

36. घाघ – जो लोग स्त्रियों के घाघरे में छिपे रहते हैं, वही तो घाघ होते हैं।

37. Gunnies = गुणीज़ -

गुणी लोगों को ही Gunnies कहते हैं, और उनके Record ही Gunnies Book of World Record में रखे जाते हैं। गुणीज़ - गुण + is = Gunnies। इसमें कुछ गुण हैं। गुणी लोगों को ही Gunnies कहते हैं, और उनके Record ही Guinness Book Of World Record में रखे जाते हैं। कुछ न कुछ तो गुण होना चाहिए, तभी तो उसका Record बनेगा और उसे लिखा जाएगा।

38. Germ –

जर में ही Germ (जर्म) यानि पैसे सें ही Germs होते हैं। पैसे यानी सिक्के एवं नोट न जाने कितने लोगों के हाथों में जाते हैं। यह सिक्के एवं नोट सभी लोगों के हाथों से मिले हुए, Germs से भर हुए होते हैं। इसीलिए पहले जमाने में, साधु-संत धन को छूते नहीं थे, ताकि किसी के Germs हमको न लग जाएँ।

39. गिरह = ग्रह –

जब आदमी ज्योतिष के अनुसार चलने लग जाता है, तो वह ग्रहों के चक्कर में फंस जाता है, यानि गिरह में फंस जाता है।

40. गुणा = गुना – व्यक्ति में गुण होते हैं, तो कई गुना तरक्की करता है।

41. 104. गीत + दहाड़ = गीदड़ -

गीत तो गीदड़ से बना। गीदड़ ही "हुआँ हुआँ" का, गीत गाता है। गीद = गीत। दहाड़ = दड़। गीदड़ की दहाड़ ही, गीद से अपभ्रंश होकर, गीत शब्द बन गया। दहाड़ में से "हा" निकल गया, तो "दड़" बच गया। यह "दड़" से "दाड़" बन गया। तो दाड़ से निकली, आवाज को, गीद यानी गीत कहते हैं। गीदड़ की दाड़ से, हुँआ हुँआ की, आवाज निकलती है।

42. गम + छा = गमछा – जिस पर गम छा जाता है, वह गमछा ओढ़ता है।

43. घात –

घाट पर ही घात किया जाता है, कोई नदी में घाट समझकर उतरता है और उस घाट पर छुपा हुआ मगरमच्छ, उस पर घात कर देता है।

44. ग्रह + हक = ग्राहक –

ग्रह जब अपना हक लेने आते हैं, उसे ग्राहक कहते हैं। इसीलिए ग्राहक को भगवान कहते हैं।

45. Guide –

अंग्रेज भारत में आये तो, सब जगह गू ही गू था और जो व्यक्ति गू के रास्तों में रास्ता दिखाता था। उस व्यक्ति को अंग्रेज, अपने साथ ले लेते थे, जिसे अंग्रेज लोग "Guide" के नाम से पुकारते थे। क्योंकि दो ही लोग Guide होते हैं, पहले वो लोग जो गु में से रास्ता दिखाते हैं, और दूसरे वो लोग जो बारुदी सुरंगों में से रास्ता दिखाते हैं, यह दोनों लोग ही Guide कहलाते हैं। गु + Id = Guide.

46. चीभ + बर = Gibber –

चीभ जब बर (जल) जाती है, तो वह Gibber की तरह बात करता है।

47. Gas – Gas पर खाना पकाने से पेट में गैस हो जाती है।

48. Gravy – Grave से मुर्दा निकालकर लाते हैं, और Gravy पकाते हैं।

49. गु + Bar = गुबार –

Bar में जाकर शराब पीते हैं, और गु (गटर) में गिरते हैं, इसे ही गुबार कहते हैं।

50. घास + ला = घोसला –

पक्षी घास को ला-लाकर ही घोषला बनाता है। घास को घोस भी कहते हैं।

51. गल – गल ही तो लग जाती है।

52. गिरते + प = Grip – गिरते हुए को पकड़ लेना ही Grip है।

53. गली + च = गलीचा –

गली को या तो साफ करके चमकाया जाता है, या गली में गलीचा बिछाया जाता है।

54. गुण + डराना = गुण्डा – जो अपने गुण से डराते हैं, उसे ही गुण्डा कहते हैं।

55. गिरा + Beat = Gravity –

गिरा पक्षी का Beat जब पृथ्वी पर उसे कहते हैं, Gravity. यह गिरेविटी है। जैसे चरैवेति होता है। यह शब्द पक्षी की वीट के जमीन पर गिरने से बना है। गिरे वीट यानी वीट का गिरना। यह शब्द अगर सेब यानि Apple के गिरने से बनता तो यह होता Appleviti. परन्तु शब्द वीट के गिरने से बना है, इसलिए गिरेविटी यानी Gravity.

56. जिन्न + जर = Ginger –

जिन्न लोग ही जर (धन) पर बैठे रहते हैं, इसीलिए तो जिन्न लोग Ginger (अदरक) की तरह हो जाते हैं।

57. जी + स्तर = Gesture – जी का स्तर ही Gesture है यानि जी में क्या चल रहा है?

58. गली + ज = गलीज – गली में जन्म लेनेवाले गलीज होते हैं।

59. Grade – गिरे हुए लोगों को Grade मिलता है।

60. God + जिला = Godzilla –

जिसे God (भगवान) जिलाकर रखे, उसे Godzilla कहते हैं, दूसरे लोग उसे मारना चाहते हैं, भगवान उसे जिलाता है।

61. जन + Rate = Generate -

आपका Rate तभी Generate, होता है, जब यह देखा जाता है, कि आपके साथ, कितने जन हैं। जन + Rate = Generate. जन = Public, Followers. Rate = भाव, कीमत। यानि आपकी कीमत, तभी आंकी जाती है, जब यह देखा जाता है कि, आपके साथ कितने लोग हैं। इसलिए अपना Rate, ज्यादा से ज्यादा बढ़ाने के लिए, सब अपने Followers बढ़ाते हैं, और सबको कहते हैं, हमें ज्यादा से ज्यादा Follow करें, ताकि हमारा भाव बढ़े।

62. गाँव + राम = ग्राम – जो गाँव राम का है वह ग्राम है।

63. ग्राम + मर = Grammar –

ग्रामीण लोगों की ग्रामीणता जिससे मर जाए उसे कहते हैं Grammar.

64. Giddiness = गिद्धी –

जिस तरह से गिद्ध एक ऊँचाई पर पहुँचने के बाद बिना पंख को हिलाये चक्कर काटते हुए उड़ते हैं, उसी प्रकार जब किसी को चक्कर आते हैं, तो उसे Giddiness कहते हैं।

65. गिद्धा –

जिस प्रकार गिद्ध एक के बाद एक आ करके, मरे हुए जानवर को खाते हैं और उड़ जाते हैं। उसी प्रकार गिद्धा नृत्य-गायन में भी लड़कियाँ, एक के बाद एक आ करके नाच-गाकर चली जाती हैं।

66. गर्द + न = गर्दन –

गर्द न हो जिस पर उसे कहते हैं गर्दन। गर्दन पर अक्सर मिट्टी जम जाती है, जो कॉलर पर लग जाती है, इसीलिए कई लोग गर्दन पर कॉलर के बीच में रूमाल रखते हैं, ताकि गर्द उस रुमाल पर लगे।

67. गुल + मोहर = गुलमोहर –

ऐसा गुल (फूल) जो मोहर का काम करता है। गुल के पेड़ की लकड़ी से ही मोहर की लकड़ी बनाई जाती थी। इसीलिए गुलमोहर कहलाता है। गुल मोहर के फूलों से स्याही बनाई जाती है, जिससे मोहर लगाई जाती है।

68. गिरे + Eat = Great –

जो गिरे हुए लोगों को Eat (भोजन) करवाते हैं वही Great कहलाते हैं।

69. Gallery –

गली में ही Gallery बनाई जाती है। जिसमें लोग आयें-जायें और दीवारों के दोनो तरफ लगे चित्रों को देखते चले।

70. गली + व + अंत = Gallivant –

गली-गली को छान मारो – गली को अंत तक छान मारना ही Gallivant.

71. गाल + वनाईज = Galvanize –

नाई के द्वारा गाल बजाना। नाई जब मालिश करता है, तो वह गाल पर जोर-जोर थप्पड़ मारता है, यानि गाल बजाता है, यही है Galvanize.

72. गम + बीत = Gambit – गम का बीत जाना ही Gambit है।

73. Gang = गंग – गंगा किनारे रहने वाले लोग ही Gang बनाते हैं।

74. Glut = गलत – लत ही गलत है, किसी चीज की लत ही Glut है।

75. गू + रिल्ला = Gorilla –

गोरिल्ला अपने गू के छोटे-छोटे रिल्ला बना करके, लोगों के ऊपर फेंकता है, इसीलिए वह Gorilla कहलाया जाता है।

76. गू + Sip = Gossip –

व्यक्ति दो ही जगह Gossip करता है। गू करने के लिए जाते समय या Sip यानि कुछ पीते समय। गाँव में लोग गू करने के लिए एक समूह में जाते हैं, एक-एक कर बैठ जाते हैं और फिर बातें करते हैं। उसी प्रकार Sip यानि कुछ पीते समय लोग, समूह में बैठ जाते हैं और बातें करते हैं, जो Gossip

कहलाती हैं।

77. गाँव + ना = गौना –

शादी के बाद लड़की का ससुराल उसका गाँव हो जाता है। शादी के बाद मायका लड़की का गाँव नहीं रहता है। तो सभी पूछते हैं कि, "गाँव न गई अबे तक अपने" बस यही "गाँव न गई" ही गौना है।

78. गू + ल्फ = Golf –

भारत में जगह-जगह गू फैला रहता था, जिससे अंग्रेजों ने छुटकारा पाने के लिए Golf का खेल बनाया है।

79. गोपनीय – गू तो गोपनीय ही जगह पर किया जाता है।

80. गुड़ + गाँव = गुड़गाँव – जहाँ पर गुड़ ही गुड़ होता है, वह है गुड़गाँव।

81. गज + जेट = Gazette –

गज के द्वारा जो लिखा जाता है, वह Gazette है। गज + जेट = गजट। महाभारत को गणेशजी के द्वारा लिखा गया, जिनका सिर गज का था।

82. गज + आब = गजब -

गज (हाथी) इतना पानी (आब) पीता है, तब ही तो कहना पड़ता है,गजब है जी गजब, यानी यह तो हाथी के जितना पानी पीता है।

83. Gear = गैर -

गैर के बगैर क्या चल सकता है। Gear के बिना गाड़ी नहीं चल सकती है। तभी लोग कहते है कि, "उसके बगैर भी चल जाएगा"। परन्तु जिन्दगी कहती है कि, "गैर को भी अपनाना पड़ता है"। क्योंकि गैर के बगैर कुछ नहीं चल सकता है, क्योंकि गैर ही Gear का काम करता है, एवं जिन्दगी की गाड़ी को रफ्तार देता है।

84. गंगा + गो + Tree = गंगोत्री -

गंगा, गाय और Tree इन तीनों को सुरक्षित रखने से ही गंगोत्री में स्नान होगा और पुण्य प्राप्त होगा।

85. Grey = गिरे - गिरे हुए लोग ही Grey कपड़ा पहनते हैं।

86. गृह + Duet = Graduate -

जब ब्रह्मचारी गुरुकुल में पढ़कर स्नातक हो जाता है। तब उसका विवाह निश्चित किया जाता है और वह गुरुकुल से जोड़ा बनाकर बाहर निकलता है। क्योंकि गुरुकुल में ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणी दोनों पढ़ते हैं। तो जब गुरुकुल में पढ़ने के बाद विद्यार्थी-विद्यार्थिनी बाहर निकलते हैं, तो वह Duet होते हैं और अपने गृह जाने पर Graduate होते हैं।

87. Good News -

Any Good News. पहले जमाने में जब भी कोई नई (New) खबर आती थी, तो गुड़ खिलाया जाता था। इसी गुड़ खिलाने को अंग्रेजों ने Good News नाम दिया। जिसे बाद में मीठे से जोड़ दिया गया, कि कोई अच्छी खबर आती है, तो मीठा खिलाया जाता है।

88. गु + रूह = गुरु - गु में जो रूह दिखा दे वह गुरु।

89. Good -

जो बात गूढ़ होती है, वही बात Good होती है। इसलिए Good News पर गुड़ खिलाया जाता है और कहा जाता है कि, "आपने बहुत अच्छी खबर सुनाई, आपके मुँह में घी शक्कर"।

90. Glue + कोष = Glucose -

Glue के कोष को, Glucose कहते हैं। Glue दो वस्तुओं को, चिपकाने का कार्य करता है। शरीर के कोष में, जो Glue रहता है, वह शरीर के अंगों को, चिपकाए रखता है। इसी कोष के कारण, व्यक्ति कोश भर, चल पाता है। और, जो कोश भर भी, नहीं चल पाता है, उसे ही कोसा जाता है, कि, "अरे ! तू तो कोश भर भी, न चल पाया।" इसीलिए शरीर के कोष में, वृद्धि करने के लिए, गोंद के लड्डू खाए जाते हैं। गोंद = Glue. शरीर के कोष में, Glue की कमी होने पर ही, Glucose चढ़ाया जाता है।

91. गैर + इक = गैरिक -

गैर लोग इक हो जाते हैं। गैर यानि जो एक-दूसरे को नहीं जानते हैं। जब उनमें एक्य लाना होता है तो, उनको एक ही रंग का कपड़ा पहनाया जाता है। तो उसे गैरिक कहते हैं। पहले यह श्वेत वस्त्र थे, फिर काले हुए, फिर पीले हुए, फिर गेरुए हुए, और गेरुए पर आकर रुक गए। क्योंकि गेरू आसानी से उपलब्ध थी, कपड़ा रंग भी आसानी से जाता था और दूर से ही पहचान लिया जाता था। इस तरह गैरिक वस्त्र पहननेवाले, हमेशा से ही गैर रहे हैं, जो एक-दूसरे को नहीं पहचानते हैं, और गैरिक वस्त्र पहनकर एक साथ रहते हैं। इस तरह गैर लोग एक बनकर रहते हैं। समाज में जो गैर होता है, वह गैरिक वस्त्र पहनकर आता है। समाजवाले गैरिक वस्त्र पहनकर आनेवाले व्यक्ति को अपनी, समाज, परिवार एवं स्वयं की व्यक्तिगत बातें नहीं बताते हैं, क्योंकि वह गैर है। इसीलिए पश्चिमी देशों में Garage होता है। कि जो गैर है, और जिसे अपने घर के राज नहीं बताने हैं, उसे गैराज में ठहराया जाता था। गैर + राज = Garage.

92. जी + वित = जीवित -

व्यक्ति दो वस्तुओं से जीवित रहता है, "जी" यानि "G". "G" यानि "God". वित यानि धन।

93. God = गोड़ -

जिनके पैरों की पूजा की जाती है। वही God होते हैं। भारत में अपने से बड़े लोगों को भगवान माना जाता है। और उनके पैर पूजकर आशीर्वाद लिया जाता है। भारत में पैर को कई जगह गोड़ कहा जाता है। जी हाँ यह सही है कि भारत में ईश्वर आत्म-साक्षात्कार का विषय है। जब आप अपने माथे से किसी के पैर छूते हैं, तब आप अपना माथा जमीन पर रख देते हैं और आपकी रीड़ की हड्डी का नीचे का भाग ऊपर उठ जाता है और आपका पेट अन्दर की तरफ खिंचता है, जिससे आपकी कुण्डलिनी जाग्रत होती है और सहस्रार की ओर जाती है। आपका माथा कुण्डलिनी शक्ति से भर जाता है और जैसे ही माथा पृथ्वी को छूता है, वैसे ही आपका संपर्क पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से हो जाता है। जिससे कुण्डलिनी शक्ति और गुरुत्वाकर्षण शक्ति में आपस में आदान-प्रदान होता है और दोनों जुड़कर एक हो जाते हैं। दोनों में संबंध स्थापित हो जाता है और समाधि की अनुभूति होती है। इसी

को अद्वैत कहते हैं। इसका फायदा यह होता है कि, आपके शरीर, मन, आत्मा की सारी पीड़ा सिमटकर पृथ्वी में समा जाती है और पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से आपको नयी शक्ति मिलती है। आप में ताजगी आ जाती है, प्रफुल्लता आ जाती है। इसलिए यह पैर की पूजा करवाने का उपाय किया गया।

94. गुजार + ईश = गुजारिश -

ईश्वर से गुजारिश की जाती है कि, गुजार ठीक-ठाक हो जाए।

95. गाजापट्टी - गज = हाथी, पट्टी = मार्ग, हाथी का मार्ग।

96. गुरु-शिष्य परम्परा –

जिस साधना को करके, गुरु ने ईश्वर को प्राप्त किया है, उसी मार्ग पर चलकर, शिष्य भी ईश्वर को प्राप्त करता है। और आगे आनेवाली, तमाम गुरु-शिष्य की पीढियां भी, उसी मार्ग पर चलकर, ईश्वर को प्राप्त करती हैं। इसे ही परम्परा कहा जाता है। किंतु राजा का पद प्राप्त करनेवाले, सभी अपना-अपना मार्ग अपनाते हैं।

97. गुस + ताख़ = गुस्ताख़ -

किसी को, गुसल लेते हुए, ताकना ही गुस्ताख़ी है। गुसल लेनेवाले को, ताकनेवाला ही, गुस्ताख़ है।

98. Groom -

बिना गुरु के, भला, कोई Groom हो सकता है। Groom = गुरूम। गुरु के द्वारा 12 वर्ष की Grooming के पश्चात, गुरुकुल की शिक्षा, जब पूर्ण हो जाती है। तब शिष्य का, समावर्तन संस्कार किया जाता है। समावर्तन संस्कार के समय शिष्य को सुन्दर वस्त्रों एवं आभूषणों से सजाया जाता था। इसी वेष में शिष्य, विवाह संस्कार भी करता था। जो कि गुरुकुल में, पढ़ चुकी कन्या से ही होता था। इसलिए जब भी, किसी से पूछा जाता कि, "आपका कुल कौन-सा है" ? तब वह अपने, गुरु का नाम बता देता था। इसलिए इसे गुरु का कुल कहते हैं। गुरु से ही उसके कुल की, पहचान होती थी। गुरु + कुल = गुरुकुल।

99. घी = माँस। शक्कर = मदिरा -

घी का उत्पादन, पशु के दूध से होता है, दूध से दही बनता है, दही से मक्खन तैयार होता है, मक्खन को गर्म करके, घी निकाल लिया जाता है। अगर, इसी दूध को जब, बछड़ा पी लेता है, तब बछड़े के शरीर का, विकास होता है। और, दूध के सेवन से ही, बछड़े के शरीर में, माँस का निर्माण होता है। मदिरा का निर्माण, गन्ने से होता है, गन्ने से ही शक्कर का, निर्माण होता है। युरोपीय सभ्यता में, उपलब्धि को Celebrate, करने के लिए, माँस एवं मदिरा का सेवन, किया जाता है। भारतीय उपमहाद्वीप में, उपलब्धि का उत्सव मनाने के लिए, घी एवं शक्कर को, खिलाया जाता है और कहा जाता है, "आपके मुँह में घी-शक्कर"। घी-शक्कर मनुष्य के शरीर में, ऊर्जा को बढ़ाते हैं। माँस-मदिरा भी, मनुष्य के शरीर में ऊर्जा को बढ़ाते हैं। इस तरह से, घी=माँस। शक्कर=मदिरा। दोनों एक समान हैं, केवल नाम में भिन्नता है, किन्तु गुण एक समान हैं।

100. घी-गुड़ -

गुड़ खाते ही, आदमी की Will, बाहर निकलकर आती है, इसे ही Good Will कहते हैं। Good Will = दिली ईच्छा। गुड़, गन्ने से बनता है। गन्ने से मदिरा भी, बनती है। मदिरा के सेवन से, दिल की ईच्छा, बोल दी जाती है। उसी तरह से, गुड़ खाने के बाद भी, दिल की बात, बोल दी जाती है। गुड़ और मदिरा में, ज्यादा फर्क नहीं है, गुड़ एक तरह की, Solid मदिरा ही है। इसलिए गुड़ खाने पर, शरीर में गर्मी आती है, जिस प्रकार गन्ने से बनी, मदिरा पीने पर आती है।

101. गुण + तंत्र = गणतंत्र -

जिसके पास गुण हैं, वही तंत्र (व्यवस्था) को, चलाता है। गुण + तंत्र = Gunतंत्र। जिसके पास, गुण नहीं होते हैं, वह फिर Gun से तंत्र को, चलाता है। वह अपने गण के हाथ में, Gun को थमा देता है और फिर गुणतंत्र के स्थान पर, Gunतंत्र से व्यवस्था को चलाता है।

102. गदर = Gather –

गदर करने के लिए भीड़ इकट्ठी की जाती है, इसी इकट्ठी भीड़ को देखकर Gather शब्द बनाया गया।

103. गर + Rib = गरीब –

गर व्यक्ति की Rib दिखे तब व्यक्ति गरीब होता है। उसी व्यक्ति को गरीब माना जाता है, जिस व्यक्ति की पसलियां दिखाई देती हैं।

104. गुरु + दक्ष + ईणाम् = गुरुदक्षिणाम् -

जब गुरु के द्वारा शिष्य को दक्ष कर दिया जाता था। तब शिष्य के द्वारा गुरु को ईणाम् दिया जाता था। गुरु + दक्ष + ईणाम् = गुरुदक्षिणाम्। गुरुकुल में होनेवाली विभिन्न स्पर्धाओं में, दक्ष शिष्यों को धनराशि एवं प्रतीक चिन्ह ईणाम् में मिलते थे। दक्ष शिष्य यह ईणाम् में मिली धनराशि एवं प्रतीक चिन्ह, गुरु को समर्पित कर देते थे। गुरु जी धनराशि रख लेते थे और प्रतीक चिन्ह शिष्य को वापिस लौटा देते थे। ईणाम् = ईनाम। जब शिष्य समावर्तन संस्कार के पश्चात्, गुरुकुल से वापिस समाज में जाता था, तो शिष्य कहीं पर भी कार्यरकत होता था, तो शिष्य अपने Showcase में, गुरुकुल की स्पर्धाओं में जीते गए, प्रतीक चिन्हों को रखता था। इन्हीं प्रतीक चिन्हों को देखकर, दूसरे लोग अपने बालकों को, उसी गुरुकुल में उन्हीं गुरु के पास, विद्या-शिक्षा अर्जित करने के लिए, फूल लेकर भेजते थे कि, "जाओ यह फूल लो, और गुरु के पास जाकर, गुरु को Follow करो"। फूल + लो = Follow. किन्तु कालान्तर में, शिष्य कोई विद्या-शिक्षा प्राप्त नहीं करते हैं, गुरु को वर्ष में एकबार मिलते हैं, उसी दिन गुरु को फूल देते हैं, कुछ धनराशि देते हैं और प्रतीक चिन्ह बाजार से खरीदकर, अपने घर के Showcase में रख लेते हैं। न अब प्रतीक चिन्हों के बारे में, बात होती है। न अब समावर्तन संस्कार होता। अब तो दीक्षान्त समारोह होते हैं। यानी दीक्षा का भी अंत कर देते हैं। दीक्षा + अंत = दीक्षांत। न अब कोई दक्ष होता है, न किसी को ईणाम् मिलता है। अब तो बस दक्षिणा बची है, जो किसी अनुष्ठान के उपरांत, यजमान के द्वारा दी जाती है। इस दक्षिणा को अनुष्ठान की Fees समझकर रख लिया जाता है। यजमान की ईच्छापूर्ति के लिए, अनुष्ठान किया जाता है। इसी अनुष्ठान को ही, धर्म और आध्यात्म, मान लिया जाता है। शिष्य को दक्ष करने के लिए, गुरु के द्वारा शिष्य को दीक्षा दी जाती थी। शिष्य जब दक्ष हो जाता था, तब शिष्य के द्वारा गुरु को, ईणाम् दिया जाता है,

जिसे दक्षिणाम् कहते हैं। दक्ष + ईणाम् = दक्षिणाम्।

105. Gum – ख़ुशी - Gum की तरह ग़म चिपक जाता है। ख़ुशी तो खुश्क की तरह उड़ जाती है।

106. गृह + हस्थी = गृहस्थी -

हस्थी या हस्ती एक समान होते हैं। पहले लोग अपने आपको, हस्ती के रूप में प्रदर्शित करने के लिए, अपने घर के द्वार पर हस्थी (हाथी) बांधकर रखते थे, इसीलिए उनको गृहस्थी कहते थे। गृह + हस्थी = गृहस्थी। वह लोग उस हस्थी पर बैठकर भ्रमण के लिए निकलते थे। इसीलिए देखने वाले लोग कहते थे, "देखो तो फलाने हस्ती आ रहे हैं"। इसीलिए देवराज इन्द्र को भी हस्ती कहा गया है, क्योंकि देवराज इन्द्र भी, ऐरावत नाम के हस्थी पर बैठकर आते हैं। इसीलिए पहले के समय में, जहां कहीं भी शोभायात्रा निकलती थी, तो उस समय के बड़े-बड़े हस्तियों को, हाथियों पर बैठाकर शोभायात्रा में निकालते थे। उन हाथियों पर हौदे होते थे, जो कि ओहदे का अपभ्रंश है। यानी ओहदेदार लोगों को होदों पर बिठाते थे। इसीलिए गृहस्थी हमेशा, ओहदे की बात करेगा कि, "तू ! जानता नहीं मैं कौन हूं, बता रे ! मैं इस शहर की कि, कितनी बड़ी हस्ती हूं"। इसलिए हस्ती बनना है तो, पहले गृहस्थी बनो। और जो अपने आपको हस्ती मान रहे हैं, वह भी पहले गृहस्थी ही होंगे, क्योंकि बिना गृहस्थी बने, हस्ती बन ही नहीं सकते।

107. ग्राम + मीन = ग्रामीण -

ग्राम में रहकर मीन खानेवाले, ग्रामीण बोले जाते हैं। प्रत्येक ग्राम में तालाब होता था। तालाब में मछली पाली जाती थी। वही मछली खाई जाती थी। मन तो मांस का अंश है। मन का अंश = मांस। व्यक्ति अपने शरीर का मांस खाकर ही, अपने मन को बनाता है। अन्न से मांस बनता है, उस मांस से मन बनता है। व्यक्ति को मिठु नहीं पालना चाहिए, यही तो मिठुन है। मिठु + न = मिठुन। मिठु यानी तोता। मुद रहना ही मुद्रा कहलाता है। मुद + रहना = मुद्रा। मद का बना है यह शरीर। मद + यह = मद्य। मद = Mud. Mud यानी मिट्टी। यह बात किसी से कहनी नहीं है, इसे ही मत्स्य कहते हैं। मत + Say = मत्स्य। गुरु के द्वारा जो मंत्र दिया जाता है, वह मंत्र किसी को नहीं बताया जाता है।

108. गैर + रात = गैरत - गैर के साथ रात गुजारने पर ही, गैरत पहचानी जाती है।

109. गाय + Tree = गायत्री -

वेदों की रचयिता देवी सरस्वती हैं, क्योंकि कहा जाता है कि, "वेद अपौरुषेय" हैं। यानी वेद, किसी पुरुष के द्वारा नहीं रचे गए हैं। तो वेद ज्ञान की देवी सरस्वती के द्वारा, रचे गए हैं, जो कि एक स्त्री हैं। और वेद, ब्रह्मा जी के पास हैं, और देवी सरस्वती तो ब्रह्मा जी की पुत्री हैं, देवी सरस्वती ज्ञान देनेवाली हैं, तो देवी सरस्वती ने वेद का ज्ञान, ब्रह्मा जी को दिया। और गायत्री मंत्र का जप करने से, वेद समझ में आते हैं। क्योंकि गायत्री मंत्र का जप करने पर, देवी सरस्वती सिद्ध हो जाती हैं, और ज्ञान को प्रदान करती हैं। इसी ज्ञान को वेद कहा गया है। गाय की सेवा करो, गाय को चराने ले जाओ, गाय का दूध पिओ, पीपल के Tree के नीचे बैठकर Meditation करो। आपको गायत्री मंत्र की सिद्धि हो जाएगी। गाय + Tree = गायत्री। भगवान बुद्ध गाय के दूध से, बनी खीर पीते थे, और पीपल के Tree के नीचे बैठकर, ध्यान करते थे। जिससे भगवान बुद्ध को, गायत्री मंत्र सिद्ध हो गया और, ज्ञान

की देवी सरस्वती के द्वारा, ज्ञान प्रदान किया गया। जिससे भगवान बुद्ध ज्ञान को, उपलब्ध हुआ। ब्रहषि विश्वामित्र जैसे और भी, जितने साधक सिद्ध हुए हैं, वह गायत्री मंत्र की उपासना से ही, सिद्ध हुए हैं। तथा ज्ञान को उपलब्ध हुए हैं। तो गाय का दूध पियो, और पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर, Meditation करो, ज्ञान को उपलब्ध हो जाओगे।

110. गोद = God -

जिसकी गोद में हैं, वही गोद ही तो God है। गोद = God. उन्हीं God के तो गोड़ पूजते हैं। God = गोड़। छत्तीस भाषाओं के ज्ञाता, आखिर में आकर, संस्कृत के नाम पर, अपना नाम "सांस्कृतायन" के स्थान पर, "सांकृत्यायन" रख लिया। संस्कृत ग्रंथों में "देवता" शब्द का प्रयोग हुआ है। लोगों ने देवता का अर्थ "God" कर लिया है। देवता के संबंध में जानकर बहुत से लोग, नास्तिक हो जाते हैं। किन्तु जो नास्तिक लोग उपनिषद को पढ़ते हैं, वे नास्तिक लोग भी आस्तिक, हो जाते हैं। आशा जहां टिक जाए, व्यक्ति उसका आस्तिक हो जाता है। यानी जहां पर आशा की पूर्ति हो जाए, वहां व्यक्ति आस्तिक हो जाता है। वह कोई भी हो, जिससे उसकी आशा पूरी हो, देवता हो, दानव हो, मानव हो, पत्थर हो, पेड़ हो, नदी हो। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। बस उसकी आशा पूरी होनी चाहिए। जिसकी आशा पूरी नहीं होती है, वह नास्तिक हो जाता है। उसकी आशा किसी पर, टिकती ही नहीं है। इसलिए आस्तिक व्यक्ति, अपनी आस्तिकता को दिखाने के लिए, माथे पर टीका लगाता है। नास्तिक अपने माथे पर, कोई टीका नहीं लगाता है। ✓ का Mark ही आस्तिक लगाता है। × का Mark नास्तिक लगाता है। नास्तिकता को आस्तिकता में, परिवर्तित करने का एक ही उपाय है, और वह उपाय है "Meditation". Meditation करो आस्तिक बनो।

111. ग़म + भीरु = गंभीर -

व्यक्ति दो ही परिस्थिति में गंभीर होता है। एक ग़म होने पर, दूसरा भीरु होने पर। ग़म + भीरु = गंभीर। Gum में बैठकर चिपक जाता है। ग़म = Gum. भीड़ में नहीं जाना चाहती है जिसकी रूह, उसे भीरू कहते हैं। भीड़ + रूह = भीरू।

112. गुरु + तत्त्व + आकर्षण = गुरुत्वाकर्षण -

गुरु एवं तत्त्व का आकर्षण ही, गुरुत्वाकर्षण है। गुरु + तत्त्व + आकर्षण = गुरुत्वाकर्षण। पृथ्वी के केंद्र में स्थित, चुंबकीय क्षेत्र को गुरु कहते हैं। मनुष्य सहित सभी प्राणियों, एवं वस्तुओं में स्थित रूह को, तत्त्व कहते हैं। मृत्यु के समय गुरु के द्वारा, इस तत्त्व को अपनी तरफ, खींच लिया जाता है। इसको ही गुरुत्वाकर्षण कहते हैं। जिस प्रकार गुरु में स्थित रूह को, खींच लिया जाता है, और गु को पुनः मिट्टी बना दिया जाता है।

113. ग्रह + Vity = Gravity -

ग्रह की शक्ति ही "Gravity" है। ग्रह + Vity = Gravity. Vity = शक्ति। सभी ग्रहों में एक शक्ति है। ग्रहों की यह शक्ति ग्रहों के केंद्र में रहती है। जो सभी वस्तुओं को अपनी तरफ खींच कर रखती है। इसे ही ग्रह Vity के नाम से, Gravity कहते हैं। "गुल्ली" को मराठी भाषा में "विटी" बोलते हैं। आकाश की ओर उछाली गयी विटी, जब वापिस ग्रह पर गिरती है, तब उसे "गिराविटी" कहते थे।

गिरा + विटी = Gravity. इसी गिराविटी से नाम पड़ा Gravity.

114. गुरु + दम = गुरुडम -

गुरु का दम ही "गुरुडम" कहलाता है। इसलिए लोग कहते हैं, "जरा इस पर दम कर दीजिए"। गुरु + दम = गुरुडम।

115. गुर + रुह = गुरु -

गुर सिखाए जो रुह के, उसे "गुरु" कहते हैं। गुर + रुह = गुरु। रुह = आत्मा। यानी जो आत्मा का ज्ञान देता है, वह गुरु होता है।

116. गाय + Tree = गायत्री -

वेदों की रचयिता देवी सरस्वती हैं, क्योंकि कहा जाता है कि, "वेद अपौरुषेय" हैं। यानी वेद, किसी पुरुष के द्वारा नहीं रचे गए हैं। तो वेद, ज्ञान की देवी सरस्वती के द्वारा, रचे गए हैं, जो कि एक स्त्री हैं। और वेद, ब्रह्मा जी के पास हैं, और देवी सरस्वती तो ब्रह्मा जी की पुत्री हैं, देवी सरस्वती ज्ञान देनेवाली हैं, तो देवी सरस्वती ने वेद का ज्ञान, ब्रह्मा जी को दिया। और गायत्री मंत्र का जप करने से, वेद समझ में आते हैं। क्योंकि गायत्री मंत्र का जप करने पर, देवी सरस्वती सिद्ध हो जाती हैं, और ज्ञान को प्रदान करती हैं। इसी ज्ञान को वेद कहा गया है और गायत्री तो ब्रह्मा जी की पत्नी हैं। यानी दोनों ही स्त्री हैं। गाय की सेवा करो, गाय को चराने ले जाओ, गाय का दूध पिओ, पीपल के Tree के नीचे, बैठकर Meditation करो, आपको गायत्री मंत्र की सिद्धि हो जाएगी। गाय + Tree = गायत्री। भगवान बुद्ध गाय के दूध से, बनी खीर पीते थे, और पीपल के Tree के नीचे बैठकर, ध्यान करते थे। जिससे भगवान बुद्ध को, गायत्री मंत्र सिद्ध हो गया और, ज्ञान की देवी सरस्वती के द्वारा, ज्ञान प्रदान किया गया। जिससे भगवान बुद्ध को, ज्ञान उपलब्ध हुआ। ब्रह्षि विश्वामित्र जैसे और भी, जितने साधक सिद्ध हुए हैं, वह गायत्री मंत्र की उपासना से ही, सिद्ध हुए हैं। तथा ज्ञान को उपलब्ध हुए हैं। तो गाय का दूध पियो, और पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर Meditation करो, ज्ञान को उपलब्ध हो जाओगे।

117. गद + दरवाजे = गदर -

गद गद होकर किसी के दरवाजे पर, इकट्ठे होने को "गदर" कहते हैं। गद + दरवाजे = गदर। यह गद गद होना Ring Ceremony पर, होता है। इसी गदर और Ring Ceremony को, मिलाकर "Gathering" शब्द बना है। गदर + Ring = Gathering.

118. ज्ञान + Ear = Gear -

व्यक्ति के Ear ही Gear होते हैं। ज्ञान + Ear = Gear. Ear को उमेठने पर ही, व्यक्ति को ज्ञान प्राप्त होता है, और व्यक्ति की ज्ञान प्राप्त करने की, Speed बढ़ जाती है। इसलिए छात्र के कान खींचे जाते हैं और कान पकड़वाकर उठक-बैठक, करवाई जाती है और, मुर्गा बनवाकर कान पकड़वाए जाते हैं।

119. गुल + आम = गुलाम -

गुल एवं आम थामे हुए लोगो को, गुलाम कहा जाता है। गुल + आम = गुलाम। ख़स ख़स का शरबत, जिसको पिलाया जाता है, उसी को ख़ास कहा जाता है। ख़स = ख़ास। बादशाह ने मुनादी करवा दी कि, "हर ख़ास-ओ-आम को, यह इत्तिला दी जाती है कि, जो गुल एवं आम लेकर आएंगे,

उनको गुलाम बनाया जाएगा। और जो ख़स ख़स लेकर आएंगे, उनको ख़ास बनाया जाएगा। तथा उनके ऊपर ख़स ख़स का, इत्र डाला जाएगा"। इस तरह से गुलाम को, बादशाह को एक एक गुल देता है, और बादशाह के द्वारा, हर गुलाम को एक एक आम दिया जाता है, और ख़ास लोगों पर, ख़स ख़स का इत्र छिड़का जाता है और, ख़स ख़स का शरबत पिलाया जाता है। हर ख़ास-ओ-आम की यही पहचान है, ख़स का इत्र और ख़स का शरबत, ख़ास की पहचान करवाता है। गुल और आम ही गुलाम की, पहचान करवाता है।

120. ग़म + भीगी + रूह = गम्भीर - ग़म से भीगी हुई रूह ही, गम्भीर होती है।

121. गले + लोरी + फैलाई = Glorify -

गले से लोरी गाकर, किसी की Glory फैलाई जाती है। गले + लोरी = Glory. गले + लोरी + फैलाई = Glorify. Glory = महिमा। किसी व्यक्ति को Glorify करना होता है, तो गले से उसकी लोरी गाई जाती है। गले के द्वारा लोरी गाकर उस व्यक्ति की Glory पूरे वातावरण में फैलाई जाती है। इसे ही Glorify कहते हैं। Glorify = महिमामंडन। बच्चे के कान में गई लोरी ही, बच्चे के मानस पटल पर, बार-बार खुद-ब-खुद दोहराई जाती है। और बच्चे को उस व्यक्ति की, महिमा के बारे में बताती रहती है। इस तरह से गले से गाई गई, लोरी के माध्यम से, व्यक्ति अपने आप Glorify हो जाता है। और आनेवाले पीढ़ियों में, उस व्यक्ति की महिमा का मंडन होता रहता है। इस तरह से लोरी सुनाकर, बालपन में ही, बड़े-बड़े महापुरुषों की कहानियाँ, बच्चों के मन में डाल दी जाती हैं। जिससे बच्चों के मन में, उन महापुरुषों की एक छवि, निर्मित हो जाती है। और समय के बीतने पर, वह छवि मजबूत होती जाती है। यह लोरियाँ सुनाने का सिलसिला, पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। इस तरह से उन महापुरुषों का, महिमामंडन आगे बढ़ता रहता है। इसे ही "Mouth to mouth publicity" कहते हैं। इसलिए पहले महापुरुषों का वर्णन, पद्यात्मक होता था, काव्य में होता था, और काव्य सरल होता था, जिससे सभी उसे गा सके और लोरी में उसे सुना सके। इस तरह के काव्य निर्माताओं को "चारण" बोला जाता था। यानी जिनकी चाह, रण में जाने की होती थी। चाह + रण = चारण। जो अपनी चाह से रण में जाना चुनते थे, उन्हें ही "चारण" कहते हैं। रण को जीतकर, जब यह चारण वापिस आते थे, तब यह चारण, उच्च स्वर में रण की गाथा को सुनाते थे। उच्च स्वर में रण की गाथा, सुनाने के कारण, इनका उच्चारण ऊँचा होता था। उच्च + चारण = उच्चारण। क्योंकि रण के कोलाहल में, उच्च स्वर में बोल-बोल कर, सैनिकों का उत्साहवर्धन करते थे। जिस कारण इनके स्वर ऊँचे हो जाते थे। इसलिए वह उच्च स्वर में, रण की गाथा सुनाते थे। इसलिए लोरी बहुत दूर तक सुनाई देती है, क्योंकि उच्च स्वर में गाई जाती है। व्यक्ति को Glorify करती है।

122. घाम + अण्ड = घमण्ड –

घाम अण्ड का घमण्ड है। घाम + अण्ड = घमण्ड। घाम = सूर्य का तेज प्रकाश। सूर्य के तेज घाम में वही चलता है, जिसके अण्ड में घाम होता है। ब्रह्मचर्य में स्थित व्यक्ति के, अण्डकोष में तेज प्रकाश रहता है। जिस कारण से बाहर का, सूर्य का तेज घाम उस व्यक्ति को, प्रभावित नहीं करता है। घाम अण्डकोष का होने पर, इसे घमण्ड कहते हैं। इसलिए लोग कहते हैं कि, "इसको बहुत घमण्ड हो गया

है, इसका घमण्ड उतारना पड़ेगा"। इसलिए उस व्यक्ति के पास, अप्सरा को भेज दिया जाता है।

123. घर + रौंदा = घरौंदा -

किसी ने घर बनाया, किसी ने रौंद दिया, कोई कहता है कि, "रोन दे यार" बस यही तो घरौंदा होता है।

124. गोबर + वर्ध + अन्न = गोवर्धन -

गोबर से बढ़ता है अन्न, इसलिए "गोवर्धन" कहते हैं। गोबर + वर्ध + अन्न = गोवर्धन। फ़सल में गोबर डालने से, फ़सल ज्यादा पैदा होती है।

125. गद + जीत = Gadget –

आदमी गदगद तब होता है, जब उसे जीत मिलती है। गद + जीत = Gadget. इसी गदगद की जीत को, मिलाकर शब्द बना है 'Gadget'. आजकल आदमी गदगद तभी होता है, जब वह कोई Gadget को जीत जाता है। इसलिए आजकल आदमी का गदगद होना, और जीत को प्राप्त करना, Gadget पर निर्भर करता है।

126. गाड़ी कमाई -

पहले जमाने में जिस कमाई को, व्यक्ति ज़मीन में गाड़ देता था, व्यक्ति की उस कमाई को, गाड़ी कमाई कहते थे। आजकल गाड़ी कमाई से व्यक्ति, गाड़ी खरीद लेता है। और उस गाड़ी को एक दिन, ज़मीन में गाड़ देता है। इस तरह से व्यक्ति की गाड़ी कमाई, गाड़ी से होकर आखिरकार ज़मीन में ही, गाड़ दी जाती है।

127. ग़म + भीरू = गंभीर –

ग़म और भीरू व्यक्ति को गंभीर बनाते हैं, और व्यक्ति में गंभीरता लाते हैं।

128. ग्रह + तू + देत = Gratitude -

व्यक्ति जब ज्योतिष पर विश्वास करता है, तब ज्योतिषी बोलता है कि, 'यह ग्रह दशा होने पर, आपको यह मिला है, और ऐसी ग्रह दशा होने पर, आपको यह मिलेगा'। ग्रह से मिलने पर, व्यक्ति ग्रह का धन्यवाद करता है कि, 'मेरा तो कुछ नहीं है, यह सब तो "ग्रह तू देता है" मुझे'। ग्रह + तू + देत = Gratitude. इसी 'ग्रह तू देत' को ही, 'Gratitude' कहते हैं। क्योंकि ग्रहों की बदलती स्थितियां ही, सब कुछ देती हैं।

129. गर + Rib = गरीब -

गर Rib दिख जाएं तो उसे गरीब बोलते हैं। गर + Rib = गरीब। पहले जमाने में जब किसी व्यक्ति की, गर Rib दिखने लग जाती थीं, तब उस व्यक्ति को गरीब बोलते थे। Rib = पसली। यानि किसी व्यक्ति की पसलियां, दिखाई देने पर, उस व्यक्ति को गरीब बोलते थे।

130. फल + आय + दे = फायदे -

जो फल आय दे, उसे फायदे बोलते हैं। फल + आय + दे = फायदे। जब लोग पूछते हैं, 'और ! कितने का फायदा हो गया ? सुना है! फल तो बहुत अच्छे लगे थे'। यानि जिस फल से आय होती है, उसे फायदा कहते हैं।

131. जैन + U + अन्न = Genuine -

जैन लोगों के द्वारा उपयोग किया गया, अन्न ही Genuine होता है। जैन + U + अन्न = Genuine. जैन लोग जिस अन्न का उपयोग करते हैं, वही अन्न Genuine होता है। क्योंकि जैन लोग अन्न के उपयोग के, सम्बंध में बहुत ही संवेदनशील होते हैं। इसलिए उस अन्न को 'जैन Meal' कहते हैं।

132. गुण + डर = गुण्डा -

जब किसी का गुण, लोगों को डराने लगे, तो लोग उस गुणवान को, गुण्डा कहने लगते हैं।

133. घूम + मढ़ = घुमढ़ - जब आप घूमते हैं, तब आप मढ़ते जाते हैं। इसे ही घुमढ़ कहते हैं।

134. घोंघे + राल = घुंघराले -

घोंघे की राल से शब्द बना है 'घुंघराले'। घोंघे + राल = घुंघराले। भगवान बुद्ध के सिर पर घोंघे बैठे, और घोंघे ने अपनी राल छोड़ी। इसी से एक नया शब्द बना 'घुंघराले'। इसलिए जब भी किसी के सिर पर, इस तरह के बाल दिखाई देते हैं, उन बालों को घुंघराले बाल बोलते हैं।

135. गो + बर = गोबर -

खाते तो गोबर ही हैं, बस गोबर का रूप परिवर्तित करके, कण्डे बना लेते हैं। उन कण्डों पर रोटियां, बैंगन, टमाटर, मिर्चें, आलू आदि सेंककर खाते हैं। तब कण्डों का Flavour तो, रोटियों में, बैंगन में, टमाटर में, मिर्चों में, आलू आदि में आ ही जाता है। इस तरह से कण्डे के रूप में, गोबर को खा लेते हैं। जिस तरह से कुरूप कन्या को, पसंद नहीं करते हैं। किन्तु वही कुरूप कन्या, जब Beauty Parlour में से, सुंदर बनकर आती है, तब उसको पसंद करने लग जाते हैं। इसी प्रकार से घूरे के रूप में, साल भर का इकठ्ठा किया गया, गोबर और गोमूत्र, जब खेतों में डाल देते हैं। तब अनाज के रूप में, गोबर और गोमूत्र को खाते हैं, गाय के गोबर को ही गोबर कहते हैं। गोबर ही जलाया जाता है। गो + बर = गोबर। गो = गाय। बर = जलाना।

H

1. हृदय + यम + गम = हृदयंगम –

हृदय से कभी भी गम (दुःख) को लगाना नहीं चाहिए, नहीं तो फिर यम के पास जाना पड़ता है। यानि जो व्यक्ति अपने हृदय से दुःख को लगा लेता है, वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

2. सु + पेशाब = सुहृदय -

अगर आपकी सु यानि पेशाब अच्छी उतर रही है, तो आपका हृदय सुहृदय है। यानि आपको कोई दिल की बीमारी नहीं है। कोई B.P. (Blood Pressure) की बीमारी नहीं है। अगर आपकी पेशाब सही नहीं उतर रही है। रुक-रुक कर उतर रही है, उतर नहीं रही है, जलन होकर उतर रही है, तेजी से उतर रही है, बार-बार उतर रही है, तो आपका हृदय ठीक नहीं है। क्योंकि पेशाब जब ठीक से नहीं उतरती है, तो वह वापस खून में फैल जाती है और पेशाब में नमक होता है। जिससे नमक फिर खून में उतर जाता है और वह खून के माध्यम से हृदय में चला जाता है। इसलिए व्यक्ति को कभी रात को अचानक पेशाब लगती है या पेशाब करने के बाद चक्कर आता है, तो यह इसी का परिणाम है कि, पेशाब ठीक ढंग से नहीं उतर रही है। इसके लिए पानी की जाँच करनी चाहिए। क्योंकि पानी अगर सही नहीं है, तो पेशाब में समस्या आती है। और यही समस्या फिर रक्तचाप (Blood Pressure) और हृदयाघात (Heart Attack) का कारण बनती है। इसलिए जहाँ तक कोशिश की जाए की पेशाब बराबर आये और पेशाब को रोका ना जाए। क्योंकि पेशाब को अगर रोका गया, तो भी वह वापस ऊपर उठकर वाष्पित हो जाती है और Gastric आदि रोग का कारण बनती है तथा पुनः खून में चली जाती है और पुनः वही समस्या पैदा करती है। इसलिए जहाँ तक हो सके पेशाब जब आए तब कर लेनी चाहिए। इससे हृदय फिर सुहृदय हो जाता है। व्यक्ति में चिढ़चिढ़ापन नहीं रहता है। क्योंकि जिसकी पेशाब नहीं उतरती है, वह व्यक्ति चिढ़चिढ़ा भी हो जाता है। क्योंकि यही पेशाब Gas का रूप धारण करके उसके दिमाग में घुस जाती है। जिससे उसका दिमाग काम नहीं करता है। इसलिए व्यक्ति कहता है कि, "हलका होकर आता हूँ"। बार-बार ऐसा होने पर, उसको रास्ता मिल जाता है, खून में शामिल होने का और दिमाग में घुसने का। एक तो फिर उसे संभालना मुश्किल होने लगता है। इसलिए ऐसा आने का मौका नहीं देना चाहिए और अपने "सु-सु" (पेशाब) को अच्छा बनाना चाहिए।

3. होली + Wood = Hollywood -

होली में Wood के जलाने पर उसके बाद हँसी-मजाक किया जाता है, वही Hollywood है।

4. हाय = By-By -

लोग यही चाहते हैं कि, "उन्हें किसी की हाय न लग जाए"। पर जब किसी से मिलते हैं तो, "Hi ! How are you" ? कहते हैं, यानि मिलते ही हाय यानि बद्दुआ देते हैं और पूछते हैं कि "कैसे हो" ? जब बिछड़ते हैं, तब कहते हैं By-By यानि की, "तुम्हें बाय (बुरी हवा) लग जाए"। तभी तो कहते हैं कि "इसे बाय (चुडैल, भूत-प्रेत) लग गई है"।

5. हाथ-A-Way = Hathaway -
जब कोई रास्ता पूछता है, तब उसे हाथ के इशारे से रास्ता दिखाया जाता, उसे ही कहते हैं Hathaway.

6. हसीना - कहते हैं जो हँसी वो फँसी। पर जो हँसे न, वही तो है हसीना।

7. हण्डिया –
जिसमें हाड़ पकाए जाते हैं, उसे हँड़िया कहते हैं, जो कालांतर में अपभ्रंश होकर हण्डिया हो गया।

8. Hamm -
आजकल Hamm का उपयोग करते हैं। कभी-कभी जब कोई किसी से परेशान हो जाता है तो, वह कहता "मर" कहीं जाकर। यही दोनों जब मिलते हैं तो Hammer कहलाते हैं।

9. हजम -
कहीं-कहीं "य" को "ज़" पढ़ा जाता है। इसलिए यह ऐसा पढ़ा जाएगा "हयम" यानि "हाय यम" और हाय यम से हज़म शब्द बन गया, क्योंकि यमराज ही सबकुछ हजम कर सकते हैं।

10. Who + Zoom = हुजूम -
"जरा Zoom तो करो, देखें कि हुजूम में कौन-कौन है" ? हुजूम में किसी को देखना है, तो Zoom करके देखा जाता है।

11. Hit + लड़ = Hitler -
हित के लिए लड़नेवाला ही Hitler कहलाता है। अपनी जाति के लिए लड़नेवाला ही Hitler है।

12. हिम + अ + Cut = हिमाकत - हिम (बर्फ) को काटा नहीं जा सकता है।

13. Harmony -
"तो तुमने हार मानी" यही तो Harmony है। यानि हार को मान लेना ही Harmony है। हार को पहन लेना और Money को ले लेना ही Harmony है।

14. हार + Pick = Harpick -
जो लोग हार जाते हैं, वो लोग पीक (पान की पीक) साफ करने के लिए Harpick उठाते हैं। अंग्रेजों के जमाने में क्लर्क पान खाकर कोने में थूक देते थे। पीक को साफ करने का काम जिसे दिया गया। उसने Harpick की खोज कर डाली।

15. Who + तीर = Hooter -
जब तीर अचानक किसी को लगता है, तो वह दर्द के मारे जोर से कहता है कि, "यह किसका तीर है" "या Who's तीर"।

16. Hypnotism = हिप्नोटिज्म -
Hypnotism की शुरुवात, Hip से होती है। जब कोई चलता है और उसके Hip पर जब कोई नज़र रखता है, तो वह व्यक्ति Hypnotism का शिकार हो जाता है।

17. हार + मौन + नियम - हारमोनियम -
हार कर मौन का नियम, लेने वाले हारमोनियम बजाते हैं।

18. Hell + पड़ना = Help – Hell, में गिर पड़ने पर ही कोई Help-Help चिल्लाता है।

19. हीन + दीन = हिन्दी – हीन और दीन ही हिन्दी है।

20. हिलते + Air = Hair –

हिलते हैं जो Air से, वह हैं Hair. बाल ही तो हवा में उड़ते हैं, तब पता चलते हैं कि, यह Hair हैं।

21. होश + सियार = होशियार – सियार ही होश में रहते हैं, इसीलिए सियार ही होशियार रहते हैं।

22. Hard – हाड़ (हड्डी) ही Hard (मजबूत) होती है।

23. हाथ + थोड़ा = हथौड़ा – हाथ से थोड़ा ही काम होता है, इसीलिए फिर हथौड़ा बनाया।

24. Hint – हीन लोगों को ही Hint दिया जाता है।

25. Hell + Met = Helmet – Hell, से Met न होना पड़े, इसीलिए Helmet पहनते हैं।

26. हम + बली = Humble –

हम में ही बल होता है और बली से ही सब Humbly से पेश आते हैं। जब सारे लोग एक साथ इकट्ठे हो जाते हैं, तो उनमें बल आ जाता है, और वह लोग बली हो जाते हैं। फिर उन इकट्ठे लोगों से, सभी लोग Humbly से पेश आते हैं। या फिर बलवान जो बली होता है, उससे लोग Humbly से पेश आते हैं। यानी ताकत के सामने सभी विनम्रता दिखाते हैं।

27. High + जीना = Hygiene –

High (ऊँचे) लोग जिस तरह से जीते हैं, उसे Hygiene कहते हैं।

28. हावी = Heavy – जो Heavy हो जाते हैं, वही हावी हो जाते हैं।

29. Head + Lines = Headlines –

माथे की लकीरें। गाँव में सुबह-सुबह लोग सोकर उठते थे, उनके माथे की लकीरों को देखकर ही, उनके मन की बातें पता चल जाती थीं। तो लोग अंधेरे में ही नित्य-कर्म कर लेते थे और तैयार होकर उन माथे की लकीरों को चंदन के लेप से छिपा लेते थे, जिससे दूसरे उन के मन की बातें न जाने सके। यही माथे ही लकीरें Head Lines होती हैं। उन माथे की लकीरों को पड़कर किसी का भी भूत-वर्तमान-भविष्य पता चल जाता है। अंग्रेज उन्हें छिपाने के लिए सिर पर Rubber Band लगाते हैं, या Hat टोपी पहनते हैं, सिख्ख लोग पगड़ी पहनते हैं, पटका पहनते हैं, मुसलमान लोग भी टोपी पहनते हैं, ऐसे सभी लोग किसी न किसी प्रकार से अपने माथे की लकीरों को छुपा कर रखते हैं, ताकि कोई उनके Head Lines को देख न ले और उन के मन की बात न जान ले। यही Head Lines ही अखबारों की Head Lines बनी। माथे पर चन्दन लगाते हैं, छुपाते हैं लकीरों को, कोई पहचान ने ले, Head Lines को, कि रात में क्या बीता था ?

30. हल + हुआ = हलुआ –

जब कोई समस्या हल हो जाती थी, तो हलुआ बाँटा जाता था। जिस संकेत यह होता था, कि समस्या हल हो गई। तथा हल से जमीन को हलुए की तरह बनाया जाता है।

31. हवा + लाई = हवाला –

हवा से लाते हैं, जिसे वह है हवाला, यानि आदमी कहता है कि, "हवा लेकर आयी, मैं नहीं लाया"

यह है हवाला।

32. Hake + कड़ी = हेकड़ी – Hake या कड़ी पहनाने से व्यक्ति की हेकड़ी निकल जाती है।

33. Hope = पीहू – पपीहरा अपनी Hope बनाकर रखता है, और पीहू-पीहू बोलता रहता है।

34. Whose + Son = हुश्न –

Son (पुत्र) को देखकर ही माँ की सुन्दरता का अन्दाजा लगाया जाता है, कि यह किसका Son है ?

35. हार – हारे हुल लोग हार (खेत) में खेती करने चले जाते हैं।

36. हीन + Saw = हिंसा –

हीन देखना किसी को, वही तो हिंसा है। जब हम किसी को हीन भाव से देखते हैं, तो हम हिंसा करते हैं, क्योंकि उसके अन्दर हम हीन भावना पैदा करते हैं कि, "मेरे पास यह है, तुम्हारे पास नहीं है" जिससे उसका दिल टूट जाता है और वह मर भी जाता है। कभी-कभी, तो किसी को हाथ से मारने या हथियार से मारने से ज्यादा खतरनाक है, किसी को हीन भाव से देखना।

37. हीन + दीन = हिन्दी –

हीन और दीन लोगों की भाषा हिन्दी है। यानि जो हर कार्य में "नहीं" का उपयोग करते हैं, "कि नहीं ऐसा नहीं कर सकते हैं"। तो "नहीं" का उल्टा "हीन" होता है। जो नहाने के लिए नदी में जाते हैं, नदी का उल्टा "दीन" होता है। भारत के लोग दोनों ही चीजों को प्रकट करने में माहिर हैं, इसीलिए वह हीन-दीन बने रहते हैं।

38. हस + बन्द = Husband – जिसका हंसना बंद हो जाए, वही तो Husband है।

39. High + Story = History – High लोगों की Story ही तो History होती है।

40. Hood – जो हूड़ होते हैं, वही Hood होते हैं।

41. हूड़ + दंग = हुड़दंग – हूड़ लोग ही हुड़दंग कर दंगा करवाते हैं।

42. होड़ + डींग = Hording – जो होड़ करते हैं और डींग हाँकते हैं, वही Hording लगवाते हैं।

43. हम + अनीति = Humanity –

हम ही अनीति है। जब कोई अनीतिपूर्वक कोई कार्य करना चाहता है, तो वह हम की बात करता है। यानि वह कहता है कि, "हम सब एक हैं" वह भीड़ इकठ्ठी करता है, जिसे कहता हैं कि, "हम सब मानव हैं, हम सब एक हैं"। जब सह में हम का भाव आता है, तो फिर वह उनसे कोई भी अनीति वाला काम करवा लेता है, यही Humanity.

44. Head = हद – Head ही हद है, यानि सिर ही तो हद है, यानि अब हद से पानी गुजर गया।

45. Honor = हुनर - जिसमें हुनर होता है, उसे ही Honor दिया जाता है।

46. हरि + का + आना = हरियाणा –

हरि का आना ही हरियाणा है। हरि यानि विष्णु का गाँव ही हरियाणा है। अमृतसर में जो Golden Temple है, वह पहले हरि मंदिर (विष्णु मंदिर) था, अब उसे हर मंदिर कहते हैं। उसको ऐसे बनाया गया कि क्षीर सागर (तालाब) है और उस तालाब के बीच में मंदिर है। पुराने हरमंदिर में विष्णु और लक्ष्मी की मूर्ति थी, जिसे हटाकर गुरु ग्रन्थ साहब रख दिया गया। आज हरि मंदिर से हर मंदिर और

अब Golden Temple हो गया।

47. होड़ + डींग = Hording - होड़ लगाने वाले और डींग हाँकने वाले ही, Hording लगाते हैं।

48. हाँकना -

पहले बैलगाड़ी वाला या तांगेवाला अपने तांगे या बैलगाड़ी में बिठाकर किसी को ले जाता था। वह गाड़ी हाँकते हुए और उन यात्रियों को गांव की बड़ी-बड़ी बातें बताता था। तभी से गाड़ी को हाँकते हुए बड़ी-बड़ी बातें बताना मुहावरा बन गया कि, "वह तो बड़ी-बड़ी हाँकता है"। आज भी टैक्सीवाला या रिक्सावाला जब किसी नये यात्री को रेलवे स्टेशन या Airport से लेकर उसके गंतव्य तक ले जाता है, तो वह टैक्सीवाला या रिक्सावाला भी अपने शहर के बारे में बड़ी-बड़ी बातें बताता है। यह एक तरह से उस शहर के बारे में Update करना होता है कि, "इस शहर में ऐसा होता है, आप अपना व्यवहार ऐसा रखना"।

49. हरि + दय = हृदय - हरि की दया जहाँ रहती है, उसे हृदय कहते हैं।

50. Home + Nest = Honest -

अपने घर में बैठे रहना या घोसले में बैठे रहना ही सबसे अच्छी नीति है। यानि किसी के विवाद में न पड़ना ही सबसे अच्छी नीति है। इसलिए "Honesty is the best policy".

51. हिदायत -

He is on Diet. Diet की ही हिदायत दी जाती है। कि आपको केवल यह-यह खाना है।

52. हानि -

जब आपके Knee (घुटने) में दर्द शुरू हो गया, तो समझो कोई आपको हानि पहुंचा रहा है। क्योंकि हानि पहुंचाने वाला, जब सीधे-सीधे हानि नहीं पहुंचा पाता है और अपने गुनाह और दुश्मनी को प्रकट नहीं करना चाहता है और आपके निकट भी रहना चाहता है, वही आपका छुपा हुआ दुश्मन, आपको ऐसी वस्तु खिलाता रहता है, जिससे आपके घुटने में धीरे-धीरे दर्द शुरू होने लगता है और आप Doctor के चक्कर काटते रहते है।

53. हल + दो आने = हल्द्वानी –

जहाँ हल दो आने का मिलता है, वह हलद्वानी है। यहाँ दो आने में हर चीज का हल मिल जाता है।

54. हैरत + अंग + Age = हैरतअंगेज -

व्यक्ति किसी के अंग देखकर और किसी की Age देखकर ही हैरतअंगेज होता है और वह उसको हेरता (देखता) रहता है।

55. हाड + मांस = Harmon's -

हाड (हड्डी) और मांस ही Harmon's हैं। हड्डी ही Hard (सख्त) होती है, इसलिए हड्डी ही हाड है। मांस ही मन का अंश है, इसलिए मांस है। मांस से ही मन बनता है। क्योंकि अन्न से मांस बनता है, और फिर मांस से मन बनता है। इस तरह यह दोनों मिलकर हाडमांस यानि Harmon's हैं।

56. Hit + तैष = हितैषी -

आदमी किसी को Hit करने के लिए तैष में आ ही जाता है।

57. हल्दी = हाथ पीले करना -

हल्दी एक Sanitizer है। शादी से पहले लड़की के हाथों में इसलिए हल्दी लगाई जाती थी, क्योंकि लड़की को ससुराल जाकर खाना बनाना है, और बर्तन धोना है। चूल्हा-चौका करना है। कपड़े भी धोने हैं, घर भी लीपना-पोतना है, झाड़ू-बुहार करनी है, इसलिए हल्दी हाथों में, चेहरे पर, पूरे शरीर में Sanitizer के तौर पर, लगा दि जाती थी, जिससे लड़की को किसी-भी प्रकार का Infection नहीं हो पाए। यह हल्दी लड़की की रक्षा करे। हल्दी चाहे शरीर पर लगाओ, चाहे गर्म दूध-गर्म पानी में मिलाकर पिओ, सब्जी-दाल-चावल में मिलाओ, थोड़ी हल्दी को पानी में मिलाकर उस पानी से स्नान करो। हल्दी के पेस्ट को हाथों में मलो, हल्दी सभी प्रकार से Sanitizer का कार्य करती है। हल्दी ही Healthy रखती है, क्योंकि लड़की अन्य घर में जा रही है, तो हल्दी लगाकर लड़की को सुरक्षित कवच दिया जाता था। ताकि वह यहाँ के कीटाणु वहाँ और वहाँ के कीटाणु यहाँ न ला सके। इसीलिए हल्दी लगाए Healthy रहे।

58. हम + ऐसा = हमेशा -

एक आदमी हमेशा यही कहता फिरता है। अब हम ऐसा करेंगे। अब हम ऐसा करेंगे। लोग उसके लिए यही कहते कि "अरे छोड़ो, यह तो उसका हमेशा का काम है। करना-धरना कुछ नहीं, बस यही कहते फिरना, हम ऐसा करेंगे, हम ऐसा करेंगे" यही हमेशा होता है।

59. हरि + तेज = Heritage -

हरि का तेज ही Heritage है। हम सबमें हरि का तेज है, इसलिए हरि ही हमारी विरासत हैं। हम हरि की विरासत को संजोकर रखते हैं, इसलिये हरि तेज कहलाते हैं, यही Heritage है।

60. हुलकारना = Hulk -

Hulk नाम है पर हलका नहीं है। Hull (हुल) K (कार) हुलकारता है, इसलिए उसका नाम हुल्क (Hulk) है।

61. हो + सियार = होशियार -

अगर हो सियार, तो होशियार रह सकते हो। वर्ना शेर तो, बीस घंटे सोता ही रहता है। होश में तो, Host ही रहता है। बाकी मेहमान तो, मदहोश ही रहते हैं। होश जिसका यार है, वही तो होशियार है। ऐसे को फिर दूसरे यार की जरूरत नहीं है। मन का होना शरीर में, होश कहलाता है। क्योंकि मदहोशी में मन तो सो जाता है। मन के सो जाने से, शरीर एवं चेतना का संपर्क, अवरुद्ध हो जाता है। चेतना का शरीर पर कोई काबू नहीं रह पाता है।

62. Hi = Bye -

लोग यही चाहते हैं कि, उन्हें किसी की, हाय न लग जाए। पर जब किसी से मिलते हैं, तो मिलते ही कहते हैं, Hi How are you ? यानि मिलते ही हाय लगा देते हैं, यानि पहले बद्दुआ देते हैं, और फिर पूछते हैं कैसे हो ? और जब बिछुड़ते हैं, तब कहते हैं Bye Bye, यानि की तुम्हें बाय (बुरी हवा) लग जाए। तभी तो कहते हैं, कि इसे बाय, यानी बुरी हवा लग गई है।

63. हीरा - राहों की रगड़ खा-खाकर, राही ही हीरा बन जाता है।

64. Hard Work = हाड़तोड़ -

मेहनत हमेशा हाड़तोड़ ही होती है, Hard Work कहो या हाड़तोड़।

65. हुक्म + मत = हुकूमत -

हुकूमत दो शब्दों का जोड़ है। पहला हुक्म यानी आदेश। दूसरा मत यानी वोट। यानी एक में हुक्म बजा लाना होता है, दूसरी में मत करवाकर निर्देश जारी किया जाता है। हुक्म + मत = हुकूमत।

66. हीन + Saw = हिंसा -

किसी को हीन देखना भी, हिंसा ही है। व्यक्ति के द्वारा स्वयं को, श्रेष्ठ समझना एवं दूसरे को हीन देखना भी हिंसा ही है। हीन + Saw = हिंसा।

67. हर + अप्पा = हड़प्पा -

हड़प्पा, भगवान शिव का नगर है, इसलिए, हड़प्पा की खुदाई में, भगवान शिव और नाग की मूर्तियां मिली हैं। हड़प्पा का संबंध, कर्नाटक से है। सिंध के सिंधी लोग, और कर्नाटक के कन्नड़ लोग, हमेशा एक-दूसरे को, पसंद करते हैं। कर्नाटक में भगवान शिव को, माननेवाले संप्रदाय हैं। यहाँ पर भगवान शिव को, मूर्ति के रूप में माना जाता है। हर + अप्पा = हड़प्पा। हर = शिव। अप्पा = भगवान। सिंध में शिव को हर, कहा जाता है, कर्नाटक में भगवान को, अप्पा कहा जाता है। कर्नाटक में शिव को, भगवान मानते हैं, इसलिए शिव को अप्पा कहते हैं, "शिवाप्पा"।

68. हस्ति + ना + पुर = हस्तिनापुर -

हस्ति नहीं है, जिस पुर में, वह है हस्तिनापुर। हाथी नहीं है, जिस नगर में, वह है हस्तिनापुर। हस्तिनापुर में हाथी नहीं थे।

69. हार + Vest = Harvest -

हार में जाने वाला व्यक्ति अपनी Vest में बीज रखता है, जिन्हें वह व्यक्ति हल के साथ बोता जाता है। हार + Vest = Harvest. हार = खेत। उस व्यक्ति के Vest में, जो बीज होता है, उसे खेत में बोने को ही, Invest करना कहते हैं, क्योंकि जितना बीज, उस व्यक्ति के Vest में होता है, वह भूमि के अन्दर बो देता है। In + Vest = Invest.

70. हम + Law + वर = हमलावर -

तीन तरह से व्यक्ति हमलावर होता है। हम + Law + वर = हमलावर। जब व्यक्ति हम होता है। यानी जब व्यक्ति के साथ, बहुत सारे लोग होते हैं। वह बहुत सारे लोग, अपने आपको हम कहते हैं। हम कहने वाले यह लोग, दूसरे पर हमलावर हो जाते हैं। व्यक्ति Law से किसी पर, हमला करता है। वह बने बनाए कानून का, उपयोग करता है, उस कानून से दूसरे पर, हमला करता है। या फिर, नया Law बनाकर, दूसरे पर हमलावर हो जाता है। जब व्यक्ति वर को प्राप्त करता है। यानी जब किसी पर, किसी का वरदहस्त होता है। तब वह व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर, हमलावर हो जाता है। यानी जब व्यक्ति, वर के रूप में किसी शक्ति को, प्राप्त करता है, तब वह व्यक्ति उस वर से, दूसरे पर हमला करता है। इस प्रकार तीन प्रकार से, कोई हमलावर होता है। इन तीन प्रकार के हमलों को, रोकने के लिए उपाय किये जाते

हैं। हम को रोकने के लिए, मह का उपयोग किया जाता है। मह यानी, महिला की शरण लेता है। जब व्यक्ति पर लोगों की, भीड़ हमला करती है, तब व्यक्ति बचने के लिए, महिलाओं की शरण में चला जाता है और बच जाता है। Law के हमले को, रोकने के लिए व्यक्ति, Wall बनाता है। वह उस दीवार के भीतर रहता है। Law से हमला करनेवाला, उसकी दीवार पर, Notice लगाकर चला जाता है। वह व्यक्ति Wall के पीछे, छिपकर अपने आपको बचा लेता है- जैसे किले की दीवार के पीछे छिपकर, लोग अपने आपको बचा लेते हैं। वह लोग दूसरे के Law को, अपने यहाँ पर लागू नहीं, करने देना चाहते हैं। वर के हमले से बचने के लिए, व्यक्ति रव यानी रब्ब का, स्मरण करता है। जिससे रब्ब उस वर वाले व्यक्ति का, वर Rub कर देता है। क्योंकि रब्ब सबसे बड़ा है।

71. हल + Luck = हलक -

किसी मसले का हल और किसी व्यक्ति का Luck उसके हलक में होता है। तब लोग पूछते हैं कि, "बताओ ! इस मसले का हल क्या है" ? ज्योतिषी से लोग पूछते हैं कि, "बताईये ! इसकी किस्मत में क्या है" ?

72. हिम + मत = हिम्मत -

हिम की तरह मत होना, हिम्मत कहलाता है। व्यक्ति को हिम की तरह ठंडा नहीं होना चाहिए। जब कोई कहता है कि, "बर्फ की तरह ठंडे क्यों बैठे हो ? कुछ गर्मजोशी दिखाओ"। बस यही गर्मजोशी दिखाना ही, "हिम्मत" शब्द बन गया। इसी गर्मजोशी के लिए, वे पेय पदार्थ पिलाए जाते हैं, जो गर्मजोशी को लाते हैं और व्यक्ति को हिम होने से बचाते हैं।

73. हग + Gas = हगास -

हगने के लिए जब Gas Pressure डालती है, तब उसे हगास कहते हैं। जिससे हगना हो जाता है, और Gas भी निकल जाती है।

74. हड़ताल- बगावत -

Civilian के काम न करने को हड़ताल बोला जाता है। Army के काम न करने को बगावत बोला जाता है।

75. Hit + लड़ = Hitler -

उसने मुझे Hit किया। या वह मुझसे लड़ गया। Hit + लड़ = Hitler. किसी को Hit करनेवाला या किसी से लड़ जानेवाला ही Hitler कहलाता है। किसी का हित करने के लिए, किसी को Hit कर ही देता है। फिर कहता है, "मैं तो इसका हित चाहता हूँ, इसीलिए इसको मारता हूँ"। किसी के लाड़ में पला-बढ़ा व्यक्ति, किसी से भी लड़ जाता है, यह कहते हुए कि, "तू ! जानता नहीं, मैं कौन हूँ"।

76. होर + से = Horse -

Horse ताकत का प्रतीक है, क्योंकि ताकतवर व्यक्ति ही पूछता है, "होर के काम से, बता वो भी कर दूं"। "कुछ होर से तो वा भी धर दे, जितना भी धर दे, मैं ठा लूंगा" इस तरह से, होर से ही Horse शब्द बन गया। और Horse ही Power का, प्रतीक बन गया। होर + से = Horse. लम्बी लम्बी यात्राएं करने वाले, बड़े बड़े युद्ध में योद्धाओं का, साथ निभाने वाले, Horse इतने ताकतवर होते हैं कि,

कभी बैठते नहीं हैं। इसलिए जब कोई व्यक्ति, अपनी ताकत को एक दूसरे से, ज्यादा दिखाते हैं, तब वह एक दूसरे से होड़ लगाते हैं और कहते हैं कि, "मेरे से होड़ लगा रह्या से" । "होड़ से" ही आगे चलकर Horse बन गया और होड़ का अपभ्रंश ही घोड़ बना गया, जो आगे चलकर घोड़ा बन गया। होड़ + से = Horse. क्योंकि पहले समय में लोग, घोड़ों की दौड़ ही, एक दूसरे से आगे जाने में, लगाते थे। इस तरह से Horse ही Power का, प्रतीक बन गया।

77. हुलकारना + लड़ना = हुल्लड़ -

हुलकारते वही हैं, जो लड़ना चाहते हैं। हुलकारना + लड़ना = हुल्लड़। जैसे कि कुत्ते को हुलकारा जाता है, लड़ने के लिए। ऐसे ही लड़ने को आतुर व्यक्ति, कहता है कि, "Who wants to fight with me" ? यानी "कौन है जो मुझसे लड़ना चाहता है" ? इसे ही हुलकारना कहते हैं। जब वह व्यक्ति यह कहता है, तब उस व्यक्ति के समर्थक जोर जोर से हो हल्ला मचाते हैं, इसे ही हुल्लड़ करना कहते हैं। जिसे हूल देना भी कहते हैं। जब कोई अपने कंधों को उचकाता हुआ, अपनी जांघों पर ताल देते हुए कहता है, "हूं ! लड़ेगा मुझसे ? बताओ कौन लड़ेगा मुझसे" ? इसे ही हुलकारना कहते हैं, Who + लड़ = हुल्लड़। हुल्लड़ मचाते हुए जो लोग चलते हैं, हमेशा वह लड़ने को तैयार रहते हैं। इसीलिए उन हुल्लड़बाजों से, दूर से ही निकल जाना चाहिए।

78. हक + की + कत = हकीकत -

हक की बात वही करता है, जो हकीकत को जानता है। "अरे ! देखो तो, वह जब भी मिलता है, अपने हक की बात करता है, कहता है, "मुझे भी मेरा हक दे दो, वरना मैं सबको हकीकत बता दूंगा"।

79. हवन + Wish = हविश -

हवन जो Wish की प्राप्ती के लिए किया जाता है। हविश कहलाता है।

80. Have + Wish = हविष्य -

Do you have any wish" ? आपकी जो भी Wish है, उसको हविष्य बनाकर, देवता को समर्पित कर दीजिए। देवता आपको Won करवा देंगे। Have + Won = हवन। अपनी Wish को Won करवाने के लिए भक्तजन हवन करते हैं। अन्न के रूप में जिस हवि की आहूति हवन में डाली जाती है, वही हवि व्यक्ति को Win करवाती है। हवि + Win = हविन। हविन का ही अपभ्रंश हवन है। हवन ही आह और Hoot के प्रकोप से भक्तजन की रक्षा करता है। आह + Hoot = आहूत। जब व्यक्ति कार्य करता है, तब कुछ लोग, उस व्यक्ति को "आह" देते हैं कि, "इसको मेरी आह लग जाए"। और कुछ लोग, उस व्यक्ति को उल्लू की आवाज में, "हू...हू...हू" करके Hoot करते हैं। इसी आह और Hooting से अपनी रक्षा करने के लिए भक्तजन हवन में आहूति देते हैं।

81. Hidden + आयत = हिदायत -

Hidden आयत को ही हिदायत कहते हैं। Hidden + आयत = हिदायत। जब किसी के कान में चुपके से कोई बात बताई जाती है। उसे हिदायत कहते हैं, जो किसी अन्य को नहीं बताई जाती है। इसे छुपा हुआ ज्ञान कहते हैं। यही छुपा हुआ ज्ञान, गुरु के द्वारा चुपचाप, शिष्य के कान में दिया जाता है।

82. हाड़ + अण्डे = हाण्डी –

जिसमें हाड़ और अण्डे पकाए जाते हैं, उसे हाण्डी कहते हैं। हाड़ + अण्डे = हाण्डी। हाड़ और अण्डों से हाण्डी भरी रहे, इसलिए व्यक्ति दिनभर, अपने हाड़ एवं अण्डों से हाण्डता रहता है।

83. Harm = हरम - हार गए लोगों को Harm करके, हरम में रखा जाता है।

84. हीन + समझ = हिंसा -

व्यक्ति जब किसी को हीन, समझ लेता है, तब व्यक्ति उसी हीन से हिंसा करता है। हीन + समझ = हिंसा। यानी जब व्यक्ति किसी को, कमजोर देखता है, तब व्यक्ति उसी कमजोर से, हिंसक व्यवहार करता है। जरूरी नहीं कि यह हिंसा, हाथ से ही की जाती है। जब किसी को कमजोर, समझ लिया जाता है, तब उस कमजोर को, बुरे-बुरे शब्दों से सम्बोधित करके, वाणी के द्वारा हिंसक व्यवहार, किया जाता है कि, "हट यहाँ से, यहाँ क्यों खड़ा है ? तेरी औकात भी है, यह लेने की। इसका तो तू, सपना भी नहीं देख सकता है, तू अपनी औकात में रह, जानता है !!! तू किससे बात कर रहा है," यह सब वाणी के द्वारा, की जानेवाली हिंसा है। यह वाणी के द्वारा की जानेवाली हिंसा, व्यक्ति के हृदय पर आघात करती है। जबकि हाथ से की गई हिंसा, व्यक्ति के शरीर पर, आघात करती है। इसलिए किसी को भी हीन समझकर, उससे किया गया, किसी भी तरह का दुर्व्यवहार, हिंसा कहलाता है।

85. I + Hate + You = हेतु -

I hate you ही तो हेतु है। I + Hate + You = हेतु। लोग जब किसी से Hate करते हैं, तब कहते हैं कि, "मैं आपके पास किसी हेतु से आया हूं"। यानी जब किसी के पास, किसी हेतु से तभी जाते हैं, जब उससे Hate करते हैं। यानी जिससे "हेय" करते हैं, उसे "तू" कहकर बोलते हैं। हेय + तू = हेतु। "हेय तू" यहां पर कैसे ?

86. हार + काट = हरकत -

जीतनेवाला व्यक्ति हारनेवाले व्यक्ति को, उसी तरह से काट देता है, जिस तरह से किसान अपने हार में, खड़ी फसल को काट देता है। हार + काट = हरकत। इसलिए जीतनेवाला व्यक्ति हारनेवाले, व्यक्ति से कहता है कि, "अगर कोई हरकत करी तो, अभी तुम्हें काट दूँगा"। इसलिए हारनेवाला व्यक्ति, कोई हरकत नहीं करता है।

87. हल + हुआ = हलुआ - हल हुआ तो हलुआ खिलाओ।

88. हाय + डरो = Hydro -

किसी की हाय से डरो यही Hydro है। क्योंकि जिस प्रकार Hydro में कितनी Power होती है, उसी प्रकार से हाय में, बहुत शक्ति होती है। बड़ी-बड़ी राजसत्ताएँ, एक गरीब की हाय से भस्म हो जाती है। इसलिए कहते हैं कि, "किसी को मत डराओ और किसी की हाय मत लो, किसी गरीब की हाय से डरो"।

89. हाय + दशा = हादसा -

"हाय दय्यिया ! यह क्या दशा बना रखी है ? कुछ हो गया था क्या" ?

90. Hunt + तीर = Hunter -

जो Hunt करता है तीर से, वह Hunter होता है। Hunt + तीर = Hunter. हन करना तन का Hunt कहलाता है। हन + तन = Hunt. हन = "वध" करना। यानी तीर से तन का वध करने वाला ही, Hunter कहलाता है।

91. होड़ + और + Scope = Horoscope -

व्यक्ति तो होड़ ही, और ज्यादा, Scope के लिए करता है। होड़ + और + Scope = Horoscope. इसलिए व्यक्ति Horoscope देखनेवाले के, पास जाकर पूंछता है कि, "होर और Scope है" ? होर + और + Scope = Horoscope. Scope के लिए व्यक्ति, Horoscope देखता ही है। या फिर, हर किसी से पूछता रहता है कि, "इसमें और कोई Scope है" ? इसी Horoscope का अपभ्रंश Hope शब्द है। Horo + Scope = Hope. इसी Hope के लिए व्यक्ति, Horoscope वालों के पास जाता है कि, "शायद कोई Hope मिल जाए"।

92. होश + सियार = होशियार -

अगर होशियार रहना है तो, होश में रहो सियार की तरह। होश + सियार = होशियार। दो ही लोग होश में रहते हैं, पहला – Host। दूसरा – सियार। Host करने वाला हमेशा, होश में रहता है और, Guest हमेशा अपना होश खो देते हैं। सियार हमेशा होश में रहता है। कभी भी किसी का, शिकार नहीं बन पाता है। इसलिए होश में रहना है तो, सियार बनकर रहो, हमेशा होशियार रहोगे।

93. हाँ + कह = हाँके – हाँ कहने पर ही हाँके जाते हैं। हाँ + कह = हाँके।

ना + कह = नाके – ना कहने पर नाके बनाए जाते हैं। ना + कह = नाके।

जैसे-जैसे व्यक्ति हाँ-हाँ कहता जाता है, वैसे-वैसे व्यक्ति हाँका जाता है। और आगे बढ़ता रहता है। जब-जब व्यक्ति ना-ना कहता है, तब-तब व्यक्ति के लिए नाका बनाए जाते हैं।

94. Hell + पड़ा = Help -

Hell, में पड़ा व्यक्ति ही, Help-Help चिल्लाता है। Hell + पड़ा = Help. और अपने हाथों को ऊपर उठाता है कि, कोई उसके हाथों को पकड़ ले।

95. हम + बल = Humble -

हम में ही बल है, इसलिए सब आपसे Humble से पेश आते हैं। हम + बल = Humble. हम यानि बहुत सारे लोगों की एकता का समूह। जब बहुत सारे लोग, एकता के समूह में होते हैं, तब सब लोग, उन एकता वाले लोगों के साथ, Humble रूप से व्यवहार करते हैं। इसलिए सभी लोग संयुक्त रहो, हम के बल से युक्त रहो, आपस में सभी Humble रहो, ताकि विनम्र व्यवहार लोग आपसे करें।

96. हस्त + तक + छाप = हस्तक्षेप -

हस्त तक की छाप ही हस्तक्षेप है। हस्त + तक + छाप = हस्तक्षेप। पहले व्यक्ति के हस्त तक की, छाप ली जाती थी, जिसे हस्तक्षेप कहते हैं। बाद में केवल अंगूठे तक की छाप, ली जाने लगी।

97. Heal + करदे = Healthy –

जो Heal करदे वही Healthy होता है। और हल्दी ही Heal कर देती है। Heal + करदे = Healthy. हल्दी = Healthy.

98. हीन + Saw = हिंसा -

व्यक्ति हिंसा उसी के साथ करता है, जिसे व्यक्ति हीन देखता है। हीन + Saw = हिंसा। किसी व्यक्ति को जब हीन देखा जाता है, तब उस हीन व्यक्ति के साथ, कोई भी व्यक्ति हिंसा करने को, तैयार रहता है कि, 'यह मेरा क्या बिगाड़ लेगा, इसमें तो ताकत ही नहीं है'। किन्तु जब व्यक्ति को अनुभव होता है कि, इसका सम्बन्ध तो, किसी बड़े व्यक्ति के साथ है। तब वह व्यक्ति उस हीन व्यक्ति के साथ, हिंसा नहीं करता है। अपितु मित्रता कर लेता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको, शक्तिशाली दिखाना चाहता है, ताकि उस व्यक्ति को हीन देखकर, कोई उस व्यक्ति के साथ, हिंसा न कर ले।

99. हाथ + आ + पाई = हाथापाई -

एक आदमी के पास, एक पाई थी। उस आदमी ने उस एक पाई को, लोगों की भीड़ की तरफ उछाल दिया। अब भीड़ का प्रत्येक व्यक्ति, उस एक पाई को पकड़ने के लिए, अपने-अपने हाथ को आगे बढ़ाता है। और पाई जमीन पर गिर जाती है। तब भी जमीन पर गिरी, पाई को उठाने के लिए, लोग दूसरे का हाथ उठाते हैं, और अपने हाथ से, पाई को उठाना चाहते हैं। तब पाई को फेंकनेवाला व्यक्ति, पूछता है कि, 'किसके हाथ आ पाई'। इसे ही हाथापाई कहते हैं। हाथ + आ + पाई = हाथापाई।

100. हाड़तोड़ = Hard Work - हाड़तोड़ मेहनत को ही, Hard Work बोलते हैं।

101. हूड़ = Hood –

जो हूड़ होते हैं, वही Hood होते हैं। हूड़ = Hood. हूड़ यानि बिना दिमाग वाले। यह Hood ही, अपनी पहचान छिपाने के लिए, Hoodie पहनते हैं। यही हूड़ ही तो दबंग होते हैं। यानि जब कोई व्यक्ति, हूड़ की बात को नहीं मानता है, तब हूड़ के द्वारा, उस व्यक्ति का अंग दबाया जाता है। दबाया + अंग = दबंग। इसलिए हूड़ को दबंग भी कहते हैं।

I .

1. Entry + Jar = इंतजार - जार की Entry का इंतजार किया जाता है।

2. Image + नारी = Imaginary -

Image नारी की। नारी की Image (छवि) की कल्पना करना, जैसे मेरे सपनों की रानी। Dream Girl. यही परिकल्पना भी है, यानि परि की कल्पना (Imagine) करना।

3. I + कौन = Icon -

Icon स्वयं अपनी पहचान बताते हैं कि I कौन? यानि मैं कौन हूँ ? Icon पर उंगली रखते ही वह अपना सारा परिचय दे देता है।

4. I + So + Late = Isolate -

जब व्यक्ति यह कहे कि, "I am so late". तब यह समझना चाहिए कि, वह व्यक्ति आपसे Isolate होना चाहता है। जिसे Isolate (अलग) होना होता है। वह खुद को दूसरों से Late कर देता है। या फिर वह लेट जाता है, और कहता आप लोग जाओ, मैं थोड़ा सो लेता हूँ।

5. Intolerance -

तोलने के बाद, थोड़ा और अंश दुकानदार के द्वारा ग्राहक के थैले में डाल दिया जाता था। पर आजकल अंश तो क्या पैकेट का वजन भी तौल में जोड़ा जाता है और ग्राहक से पूरी रकम माल की ली जाती है, जो पैकेट पर छपी होती है। ग्राहक मोल-भाव भी नहीं कर सकता है, जो कि ग्राहक का हक है।

6. In + दिया = India -

जो दिया में रहे वह है India. अंग्रेज जब भारत में रहने आये तो, जब उनसे उनके लोग पूछते कि, "कहाँ रहते हो" ? तो वह बताते कि, "I am living in dia". यानि "मैं दियों के देश में रहता हूँ"। बस यही दियों का देश ही, आगे चलकर "India" हो गया। क्योंकि India में * मंदिर में दिया* *घर में दिया* *पूर्वजों के स्थल पर दिया* *समाधि पर दिया* *मजार पर दिया* *हर त्योहार पर दिया* *पूरी दीपावली ही दियों की* इस तरह "दिया" के नाम से "India" नाम हुआ।

7. In + See + Cu + Re = Insecure -

जब अंदर का घनत्त्व कम होता जाता है, तो आदमी Insecure - यानी डावांडोल होता जाता है। और अपने को असुरक्षित महसूस करने लगता है। अंदर का घनत्व अधिक होने से, आदमी अपने को सुरक्षित महसूस करता है।

8. I + दिया = Idea –

I कहो या दिया (दीपक) कहो, एक ही बात है। दोनों ही Idea के प्रतीक हैं, यानि दिमाग की बत्ती जलने के प्रतीक हैं। I यानि मोमबत्ती जो जलती है, तो रोशनी हो जाती है और दिया से भी रोशनी होती है। मोमबत्ती के ऊपर जलती हुई लौ एक बिन्दु के जैसे दिखाई देती है, इसलिए छोटी आई (i) पर एक बिन्दी होती है।

9. ILL + Loose + अन्न = Illusion –
बीमार होने पर आदमी अन्न खाना छोड़ देता है। तो उसका मन साफ हो जाता है, उस समय व्यक्ति को जो ज्ञान होता है, उसे Illusion कहते हैं।
10. इल्म – ILL होने पर जो इल्म (ज्ञान) होता है, वह इल्म है।
11. In + डर = इन्द्र –
In का डर ही इन्द्र है। In यानि अन्दर का डर ही इन्द्र है। इन्द्र जो देवताओं का राजा है उसे हमेशा एक डर सताता रहता है, जो उसके अन्दर का डर है। यह अन्दर का डर ही उसे "इन्द्र" का नाम देता है।
12. In + Vest = Invest –
Vest में in करना ही Invest है, Vest यानि बनियान। बनिया जो बनियान पहनता है, उस बनियान के अन्दर जेबें रखता है, और उसी में वह अपना धन रखता है, उसी धन को वह Invest करता है।
13. Truck + Son = Instruction –
Truck और Son दोनों को ही Instruction दिया जाता है।
14. Igloo – लू से बचने के लिए ही Igloo बनाये जाते हैं।
15. ईनाम – नाम ही ईनाम है, ईमानदारी पर सबको ईनाम दिया जाता है।
16. इतर = इत्र –
इत्तर रखने के लिए लोगों को इत्र लगाया जाता है, जिससे पता चले की यह हमारी जाति के नहीं है।
17. अंतिम + काल = इन्तकाल – अंतिम काल ही इंतकाल है।
18. Easy + हार = इजहार – आसानी से जो हार मान जाते हैं, वह लोग इजहार कर देते हैं।
19. Eye + दाँत + तय = Identity –
Eye और दाँत से ही किसी की Identity तय की जाती है। जब कोई मुर्दा मिलता है, तो उसकी आँख और दाँत देखकर पता किया जाता है कि, वह कौन है ?
20. ईश + अल्ला = ईशांअल्ला – ईश्वर और अल्ला ही तो ईशांअल्ला है।
21. इम + Age = Image –
यही दो चीजें ही किसी की Image बनाती हैं। या तो वह ईमानदार है या उसकी Age अधिक हो गयी है, वही उसी की Image है।
22. In + Spect = Inspect –
अन्दर देखनेवाला ही Inspect करता है, उसे ही Inspector कहते हैं।
23. ILL + लॉज = ईलाज –
आदमी दो ही सूरतों में ईलाज करवाता है, एक बीमार पढ़ने पर, दूसरा लॉजवश।
24. i = आई –
अंग्रेजी वर्णमाला के वर्ण i आई पर बिन्दी क्यों होती है ? भारत में आई का मतलब होता है माँ, माँ के माथे पर बिन्दी होती है, इसीलिए i पर बिन्दी होती है।
25. Infantry –

Infant (अनाथ) की Infantry बनाई जाती है, क्योंकि उनके मरने पर कोई रोनेवाला नहीं होता है एवं मुआवजा भी नहीं देना पड़ता है।

26. इसे + उसे = Issue – इसे दिया जाए या उसे दिया जाए, यही तो Issue है।

27. इन्द्र + दौरा = इंदौर - जहाँ पर इन्द्र दौरा करने आये, वह इन्दौर है।

28. India का झण्डा -

India का झण्डा, माथे पर लगे, त्रिपुण्ड के जैसा है। पहला खाना भगवान शिव का है, इसलिए भगवा रंग का है। दूसरा खाना भगवान ब्रह्मा जी का है, इसलिए सफेद है। तीसरा खाना भगवान विष्णु का है, क्योंकि उन्हें हरि भी कहते हैं, इसलिए हरे रंग का है। बीच का चक्र बीच की बिंदी है। जिसमें 24 पंखुड़ी हैं, जो 24 घंटे के प्रतीक हैं, कि "24 घंटे आप इन तीनों की छत्र-छाया में रहते हो"। इसी तरह का त्रिपुण्ड शिवलिंग पर भी लगाया जाता है।

29. In + धन = ईंधन - आपके पास आनेवाला धन ही आपका ईंधन है।

30. ईंट + ली = Italy -

जितने भी मकान बने हैं ईंटों से वह सब ईटली के कारीगरों की देन है। भारत में तो कच्ची मिट्टी के घर बनते थे।

31. Image + Nation = Imagination -

जैसे Image कि एक निश्चित माप होती है और Nation की एक सीमा होती है। उसी तरह कल्पना भी एक कल्प तक चलती है। एक कल्प का जितना समय होता है, कल्पना भी उतनी ही सीमित होती है। इसलिए सीमाओं को जानना जरूरी है। हर बात, वस्तु, वाक्य, कवित्व, भाव सभी की सीमा होती है। सीमा में रहना ही सुरक्षा होती है। सीमा के बाहर सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं होती है। इसलिए सीमित साधनों के साथ अपनी-अपनी सीमा में रहने से Image, Nation एवं कल्पना तीनों ही शील रहती हैं। शील ही सुरक्षा है, जो शील को तोड़ देता है, वह असुरक्षित हो जाता है। इसलिए शीलवान रहो, सुरक्षित रहो।

32. In + शिष्ट = Insist -

जब शिष्ट लोग आग्रह करें, तो बात मान लेनी चाहिए। क्योंकि शिष्ट जन ही, Insist करते हैं। क्योंकि शिष्ट लोगों में ही, शिष्टाचार होता है। इसलिए शिष्ट जन, शिष्टाचारपूर्वक आग्रह करते हैं।

33. In + द्रव = इन्द्र -

भीतर का द्रव। In दर = भीतर की कीमत, E = Electric. शरीर के भीतर स्थित, विद्युत द्रव का नाम "इन्द्र" है, यह द्रव शरीर में रक्त के रूप में स्थित रहता है।

34. Immune + नीति = Immunity -

Immune = प्रतिरक्षा, Original की रक्षा होती रहे, इसके लिए Document की प्रति, बना ली जाती है। और फिर प्रति ही, सब जगह दिखाई जाती है। इसी प्रति को, पहले नकल कहते थे। यानी Original की, नकल बना लेते थे और उस नकल को Attested करवा लेते थे और फिर उसी नकल को चलाते थे। इस तरह मूल की रक्षा उसकी प्रति बनाकर कर लेते हैं, जैसे कोई राक्षस अपनी

बहुत-सी प्रतियाँ (Clone) बना लेता था। Clone मरते रहते थे, Original जिन्दा रहता था, जैसे रक्तबीज राक्षस। यही Immune नीति है। अपने Original को छिपाकर अपनी प्रति सामने रखना, इसे ही प्रतिभा कहते हैं। यानी जो जितनी, दूसरे की नकल उतार सकता है, वह प्रतिभावान है। जिसे दूसरे शब्दों में Talent, कहा जाता है। इस तरह से हम अपने को, बचा लेते हैं, और दूसरे की नकल करके, अपनी प्रतिभा दिखा देते हैं। प्रति से भावना को दिखाना ही, प्रतिभा कहलाता है। यानी दूसरे की भावना की, नकल करके उसका मजाक, उड़ाना ही प्रतिभा है। प्रति + भावना = प्रतिभा। यानी Immune नीति है।

35. इतिहास =

इतिहास नया नहीं होता है, इतिहास परत दर परत खुलता जाता है, जितना जानते जाते हैं, उतना हमको नया लगता जाता है, इतिहास, राजनीति का हमेशा, राजदारी में रहता है, उतना ही हम जानते हैं, जो लोकोक्तियों में रहता है, जैसे इतिहासकारों के अनुसार, तो अनारकली का अस्तित्त्व ही नहीं है, किंतु अगर अकबर के इतिहास से, अनारकली को बिसार दिया जाए, तो अकबर जैसे बहुत से बादशाह खो जायेंगे। इसलिए इतिहास हमेशा, छुपाकर ही रखा जाता है, हाँ, वक्त के आनेवाले दौर में, इतिहास अपने आपको स्वयं ही, सबके सामने प्रस्तुत कर देता है। भूतकाल में घटी घटनाओं को, जितना हम खुरचने लगेगें, उसमें उतने और नये तरह के तथ्य, निकल कर आयेंगे।

36. Ideal = अड़ियल = I + Deal = Ideal -

अड़ियल और Ideal में, ज्यादा फर्क नहीं होता है। आईडिअल = अड़ियल = Ideal. एक बार, जब कोई किसी को, अपना Ideal बना लेता है, तब वह उस पर, अड़ियल रुख अपना लेता है। वह कहता है, "यह मेरा Ideal है, मुझे, इसके जैसा ही बनना है।" उसकी सोच उसके, Ideal तक ही, सीमित रह जाती है। उसके सामने, उसके Ideal का जिक्र करो, तभी वह Dial होता है और कहता है कि, "मैं इसी के साथ Deal करूँगा, अन्यथा नहीं करूँगा"।

37. Information & Wisdom -

जानकारी सब चाहते हैं। जानकारी = Information. ज्ञान कोई-कोई चाहता है। ज्ञान = Wisdom. संसार की बातें जानकारी हैं। परमात्मा की बातें ज्ञान हैं। जानकारी की प्राप्ति के लिए, धन खर्च करना पड़ता है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए, ध्यान (Meditation) करना पड़ता है। जानकारी बदलती रहती है। ज्ञान स्थिर रहता है - जैसे आम का पेड़, आम का पत्ता, स्थिर रहता है, जबसे सृष्टि है, तबसे। किंतु आम का पना, आम का अचार, आम की लकड़ी का Furniture, न जाने कितनी बार, बदला है।

38. Indus + Try = Industry -

Indus नदी के किनारे रहनेवाले लोग, हमेशा कहते हैं, "कोशिश तो कर, आगे रब देखेगा"। यही कोशिश करने को Try करना भी कहते हैं। Indus + Try = Industry. सिंध नदी के किनारे बसे लोग हमेशा Industry लगाते हैं।

39. इति + हास = इतिहास -

जिसकी इति हो जाती है, उसी का हास किया जाता है, उसे ही इतिहास बोला जाता है। इति + हास = इतिहास। जिस प्रकार से, Hitler की इति होने पर, Hitler का हास किया जाता है। उसके जीवित रहने पर, उसका हास नहीं कर सकते हैं। क्योंकि जीवित लोग अपना, हास नहीं होने देते हैं। हास करने वाले जगह जगह घूमकर, उसका हास करते हैं। जिससे जनसामान्य यह समझ लेते हैं कि, जिसका हास किया जा रहा है, उसकी इति हो चुकी है। जनसामान्य उसी को, इतिहास समझ लेते हैं। इसलिए इतिहास में उसी का नाम, ज्यादा समय तक रहता है, जो अपने जीवनकाल में, ज्यादा हास्यास्पद कारनामे करता है और जनसामान्य में भी वही, लोकप्रिय एवं लोकप्रसिद्ध होता है, जो हास्यास्पद कार्य करता है। गंभीर लोगों का इतिहास नहीं होता है, क्योंकि गंभीर लोगों पर, हास्य नहीं बना सकते हैं। इसलिए प्रत्येक राजा अपने साथ, एक विदूषक रखता था, जो राजा के साथ मिलकर, हास्यास्पद कार्यों को करता था। जिससे राजा की प्रसिद्धि एवं, लोकप्रियता में बढ़ोतरी होती थी। बड़े-बड़े राजाओं एवं उनके, विदूषकों की अनेक हास्यास्पद कहानियां, दुनियाभर में प्रसिद्ध हैं। जैसे - अकबर-बीरबल, राजाकृष्णदेवराय-तेनालीराम, हातिमताई-नजरूल आदि आदि । इसलिए जिसको भी इतिहास में, अपना नाम दर्ज कराना है, उसको अपने जीवन में, कुछ हास्यास्पद कार्यों को करना चाहिए।

40. In + साफ = इंसाफ - जिनका In साफ होता है, वही इंसाफ कर सकते हैं।

41. इंसान + अल्लाह = इंशाल्लाह -

इंसान के साथ, जब अल्लाह आ जाता है, तब इंशाल्लाह, सभी काम खुद-ब-खुद, पूरे हो जाते हैं। क्योंकि सभी काम, खुदा के द्वारा पूरे किए जाते हैं। इंसान + अल्लाह = इंशाल्लाह।

42. iLL + ज़म = इल्ज़ाम -

व्यक्ति दो चीजों पर इल्ज़ाम देता है, पहली, "यार ! वो मैं बीमार था, इसलिए नहीं आ पाया"। दूसरी, "यार ! वो मैनें उस दिन, ज्यादा पी ली थी, इसलिए नहीं आ पाया"। iLL + ज़म = इल्ज़ाम।

43. iPhone-Android -

iPhone यानि अद्वैत। Android यानि द्वैत। iPhone यानि एक पर श्रद्धा और एक पर विश्वास। Android यानि दो पर श्रद्धा और दो पर विश्वास। यानि एक से काम नहीं बना तो, दूसरा तो है, उस दूसरे से काम करवा लेंगे। iPhone यानि i पर श्रद्धा और i पर विश्वास। यानि स्वयं पर श्रद्धा और स्वयं पर विश्वास। Android यानि Main Plan के अलावा, एक Backup Plan भी है। iPhone यानि एक ही Plan है।

J

1. जी + हवा = जिह्वा –
जिससे "जी" की हवा निकालती है, वह है जिह्वा। जिह्वा यानि जीभ है, जो जी (मन) की बात को बाहर निकालती है।

2. जवाहर + रात = जवाहरात -
जवाहर (जेवरात) जो हैं, वो रात को पहनने चाहिए, वह भी अमावस्या की रात को। ताकि उनमें लगे मोती, हीरे, पन्ना, मणिक्य आदि की चमक से पता चले कि, वह जवाहरात (जेवरात) हैं।

3. जान = ज्ञान -
जान का ज्ञान ही ज्ञान है। जान यानि ज्ञान, आत्मा का ज्ञान ही जान है। तभी तो लोग कहते हैं कि, "अब जान में जान आ गई"। जानकारी यानि ज्ञानकारी। जानी यानि ज्ञानी। कई लोग "ज्ञ" का उच्चारण "ज़" भी करते हैं।

4. जिम्मेदारी - व्यक्ति Gym में जाकर, जिम्मेदारी को उठाने की Practice करते हैं।

5. June + Noon = जुनून -
जून में ही जुनून है। नून (नमक) खाने से, जुनून पैदा होता है। सर में जू होने पर, Noon में जुनून होता है, क्योंकि जू सिर में चलने लगती हैं।

6. जोंक -
Joke करनेवाले कहते हैं कि, "हँसने से खून बढ़ता है" क्योंकि जोंक की खुराक खून है। तो वह हँसा-हँसाकर लोगों का खून बढ़ाकर, अपने मतलब की चीज चूसकर, चुपके से निकल जाते हैं, हँसनेवालों को पता भी नहीं चलता।

7. जाते + हज = जहाज - जाते हैं जिससे हज पर, उसे जहाज कहते हैं।

8. जल + लाद = जल्लाद - जल को लादने वाले को जल्लाद कहते हैं।

9. जय + दाद = जायदाद -
जय-जयकार करके और दाद देकर जायदाद एकत्रित की जाती है। Joy + Dad = जायदाद जब मिलती है, Dad की तो सभी Joy करते हैं। जायदाद दो ही तरीके से मिलती है। जय-जयकार करने से या फिर Dad (पिता) से।

10. जीव + अन्न = जीवन -
जीव का जीवन जो है वह अन्न से चलता है।अकेले जीव से नहीं चलता है, न ही जीवन, अकेले अन्न से चलता है, जीवन के लिए, जीव और अन्न दोनों ही आवश्यक हैं।

11. झरती + बला = झबला –
जिससे बला झर जाती है, यानि बला को दूर रखने के लिए बच्चे को झबला पहनाया जाता है।

12. Jacket - Jackal की खाल से बने वस्त्र को Jacket बोलते हैं।

13. जी + क्रय = जिक्र –

जी जिसका क्रय करता है, उसी क्रय करनेवाले का सभी जिक्र करते हैं।

14. जी + हुजूर = जी-हुजूरी – हुजुर की ही जी हुजूरी की जाती है।

15. Yes + Son = जश्न –

Son के होने पर ही जश्न मनाया जाता है। जब Doctor कहता है कि, "Yes Son" यानि "आपके यहाँ पर लड़का हुआ है" तो फिर सभी लोग जश्न मनाते हैं।

16. जल्दी – जलने पर जलदे-जलदे, यह कहकर जल ही मँगाया जाता है।

17. जेब = बजे –

पहले घड़ी जेब में रखते थे। समय का पता करने के लिए लोग पूछते थे कि, "क्या बजे हैं" ? तो वह जेब से घड़ी को निकालकर दिखा देता था, वही जेब है।

18. जैल = Jail –

जब आदमी कई सालों के बाद जेल से बाहर निकलता है, तो उसके बाल देखकर ही उसे नाम दिया गया कि, "जैल वाले बाल बना दो"। जेल जैसे बाल बनाने के लिए एक तेल बनाया गया जिसे "जैल" कहते हैं।

19. जूँ + फलें = जुल्फें – जूँ से फलीं होती हैं जुल्फें यानि जूँ-ही-जूँ से भरी होती हैं।

20. गो + बर = गोबर -

गो, गाय को कहते हैं, और बर, जलाने को कहते हैं। गो + बर = गोबर। गाय के गोबर को ही, गोबर कहते हैं। गाय के गोबर से बने, उपलों-कण्डों को ही, जलाया जाता है। इसीलिए गाय के गोबर से, बने उपलों-कण्डों का ही, उपयोग करना चाहिए।

21. जय + वर = जेवर –

जय ही सबसे श्रेष्ठ वर है, उसे ही जेवर पहनाया जाता है, जिसकी जय होती है।

22. जिन्न –

जी को जो नहीं करने देता है, वह जिन्न कहलाता है। जब किसी के शरीर में जिन्न (भूत) आ जाता है, तो वह अपने जी के अनुसार कुछ नहीं कर पाता है। उसे सबकुछ जिन्न के अनुसार करना पड़ता है।

23. जीना –

जिस पर जी न सके कोई वह है जीना। जीने पर कोई जिन्दगी बसर नहीं कर सकता है।

24. जुटे – जूते देखकर ही पता चलता है कि इतने लोग जुटे हैं।

25. जन + ऐऊ = जनेऊ –

जनता जान जाए कि यह अलग है, इसको पहचानने के लिए जनेऊ है। जिसको समाज में सजा दी जाती है, उन्हें समाज पहचान सके इसीलिए उसे जनेऊ पहनाया जाता है।

26. जल + न = जलन –

जल के ना होने पर तापमान बढ़ जाता है, और फिर सूर्य की तपिश से बहुत ही जलन होती है।

27. जान + Key = जानकी – किसी के जान की चाबी ही "जानकी" है।

28. जल + अन्न + डर = जलन्दर – जल और अन्न का डर ही जलन्दर है।

29. जल + अन्न = जलन –

जल और अन्न किसी के पास ज्यादा हो तो उससे सबको जलन होती है।

30. जी –

किसी के नाम के पीछे "जी" लगाने का मतलब है कि, वह जीव ही जी होता है, इसलिए जब किसी के जी को सम्बोधित करते हैं, तो उसको "जी" कहते हैं।

31. जू + लीखें = Julie –

जिसके सिर में जू और लीखें होती हैं, उसे ही Julie होती है।

32. जरनि = Journey -

तब फिरि जरनि भई नख-सिख तें, दिया-बाति जनु मिलकी। --- सूरदास जी Meditation में, पाँव के अंगूठे के नाखून से, सिर की चोटी तक, ध्यान की जरनि (यात्रा) की जाती है। ऐसा सूरदासजी कह रहे हैं। जिस प्रकार दिया-बाती जलाते हैं, तब उनके जलने से, यानी मिलकने से, सब चमकता है। उसी प्रकार ध्यान करने पर, सब चमकता है। ऐसे जैसे दूधिया रोशनी हो, यानी Milky Way की तरह। इसलिए योगीजन, ध्यान करने के लिए, Milk पीते हैं, Milk पीने से उनमें, ओज उत्पन्न होता है, जिससे योगीजन मिलकते हैं, इसे ही शरीर से, परमात्मा की, जरनि यानी यात्रा, कहते हैं। जरनि = Journey = यात्रा। Milky = मिलकी। मिलकी = मिलकना = जलाना = चमकना।

33. जन + जीर = जन्जीर – जन ही जन्जीर है।

34. जल + A + B = जलेबी –

जल में A बनाने पर वह B बन जाती है, तो वह जलेबी कहलाती है।

35. जुलै –

तिब्बती लोग जब किसी से मिलते हैं, तो जुलै कहते हैं। तिब्बत में सर्दी बहुत पड़ती है, और वहाँ पर पठार है, हरियाली नहीं है, जिससे वह लोग गर्मी चाहते हैं, साथ में हरियाली चाहते हैं, भारत में July में गर्मी भी रहती है, और हरियाली भी रहती है, तो वह प्रसन्नता में जुलै कहते हैं, जुलै कहकर वह इसको याद करते हैं।

36. Jin = जिन – Ginger से बनी शराब को ही Jin कहते हैं।

37. जु + झाड़ू + पन = जुझारुपन –

तीन ही समय व्यक्ति जुझारुपन दिखाता है, एक जब सिर में जूँ होती है, दूसरी गन्दगी होती है, तीसरी उसे जोर से प्यास लगी होती है और वह पानी की तलाश में होता है।

38. झुनझुना – जिसके हाथों में झुनझुनाहट होती है उन्हें झुनझुना थमा दिया जाता है।

39. यम + आना = जमाना –

जब यम आते हैं और सब को ले जाते हैं, उसे यम का आना यानि जमाना कहते हैं, कि पुराने जमाने में ऐसा होता था।

40. Jaw + बड़ा = जबड़ा –

Jaw ही तो बड़ा होता है, यानि कोई जब कहता है कि, "जो बड़ा मुँह है उसका" बस यही "जो बड़ा"

ही Jaw यानी जबड़ा हो गया।

41. जीव + अंश = Jeans –

Jeans को पहनते तो थे, परंतु उसे कभी धोया नहीं जाता था, तो उसमें जीव के अंश पैदा हो जाते थे, इसीलिए वह Jeans कहलाया। विज्ञान में भी जीव के अंश को Jeans कहते हैं।

42. Jet = जीत –

जीत ही Jet है। जीतने के लिए ही, Jet विमान का इंजन बनाया गया था।

43.जी + वित = जीवित – वित्त ही मनुष्य को जीवित रखता है।

44. जो + Lose = जुलूस –

जो लोग Lose (हार) जाते हैं, उनका जुलूस निकाला जाता है।

45. जाँच – आँच में ही तो जाँच होती है।

46. जायका = जाएँका –

जब कोई किसी के यहाँ पर मेहमान होता है, और जाने का नाम नहीं लेता है, तो फिर उसे बेस्वाद भोजन परोसा जाता है, तो वह समझ जाता है, कि अब जाएँका है, यही जायका है।

47. जौक –

मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर अपने दरबार में Joke सुनते थे, जो सबसे अच्छे Joke सुनाता था, उसका नाम जौक रखा गया।

48. Jogging = योगिंग –

योग करना ही Jogging है, क्योंकि जो योग करता है, उसे योगी कहते हैं और योगी को ही जोगी भी कहते हैं।

49. जहाँलत -

जहाँ जाने की लत हो बार-बार, वहाँ जहाँलत ही होती है और लत ही पड़ती है।

50. जाको प्रभु –

"जाको प्रभु दारुण दुख देही, ताकी मति पहले हर लेही।" -

आदमी गम को भुलाने के लिए दारु पीता है। दारु पीने से उसकी बुद्धि चली जाती है और आदमी सोचता है कि दारु पीने से दुःख दूर हो जाते हैं।

51. जाग + ऋत = जाग्रत -

जागती रहती है ऋतु। ऋतु ही है जो दिन-रात जागती है। जागती ऋतु रात में ज्यादा सक्रिय रहती है। गर्मी सर्दी बरसात सभी ऋतुऐं जागती हैं।

52. झाड़ -

गुजराती एवं मराठी में पेड़ को झाड़ इसलिए बोलते हैं, क्योंकि पेड़ पर लगे फलों को नीचे गिराने के लिए पेड़ पर चड़कर पेड़ की डाल को झाड़ा जाता था। इसी झाड़ने के कारण पेड़ का नाम झाड़ पड़ गया।

53. झाड़े - इस भारत देश में शौच जाने का एक नाम "झाड़े जाना" भी है।

54. जान + Query = जानकारी -
जान को ज्ञान भी कहते हैं। क्योंकि "ज्ञ" को "ज़" पढ़ा जाता है। Query को क्योंरी भी कहते हैं ? जब कोई स्त्री किसी दूसरी स्त्री से कुछ पूछती है, तो इसी तरह पूछती है, "कि क्यों री बता वहाँ क्या हुआ था" ? तो इस तरह जान कह लो या Query कह लो दोनों ही जानकारी हैं।
55. Zoo + बाण = जुबान - किसी जो Zoo में छोड़ दिया और उसके हाथ में बाण दे दिया।
56. जूँ + बाण = जुबान -
किसी के सिर में जूँ हैं, और उसे मारने के लिए किसी के हाथ में बाण दे दिया। बस यही जुबान है।
57. जल + Saw = जलसा -
रेगिस्तान में जल को देखकर पड़ाव डाला जाता है, रात को जलसा मनाया जाता है।
58. जय + Anti = जयन्ती -
जय प्राप्त करना Anti लोगों पर उस को जयन्ती बोलते हैं। यानि जिस दिन व्यक्ति अपने दुश्मनों पर विजय प्राप्त करता है, वह दिन जयन्ती का दिन होता है।
59. जन + पद = जनपद - जन लोगों को जहाँ पर पद पर बैठाया जाता है, उसे जनपद कहा जाता है।
60. जर + Money = जर्मनी –
जर्मनी के पास ही "जर" और "Money" है। जर एवं Money यह दोनों ही, जर्मनी कहलाते हैं। मणी को ही Money कहते हैं।
61. जर + Sim = ज़रासीम -
दो ही चीजों में ज़रासीम होते हैं। जर यानि धन में या Sim में। ज़रासीम = Virus.
62. जी + बाण = जीबाण -
यह जीबाण शब्द है। जी + बाण = जी का बाण। जी का अपभ्रंश जु हो गया, बाण का अपभ्रंश बान हो गया। इससे जीबाण से यह, जुबान हो गया। जीबाण = जुबान। जी का बाण ही, जीबाण है। इसलिए कहा जाता है, कि धनुष से निकला बाण और जुबान से निकला शब्द, कभी वापस नहीं आते हैं। जीबाण के बाण से, बाणी शब्द बना, जो बाद में, बाणी से वाणी शब्द में परिवर्तित हो गयाा। बाणी = वाणी। इसलिए जब हम, किसी से बात करते हैं, तब उसके शरीर से बात नहीं करते हैं, तब हम उसके जी से, बात करते हैं। यही जी को G, लिखा जाता है, और G का पूर्ण नाम, God होता है। G = God. God का अर्थ, भगवान होता है, भगवान का "भ", व्यक्ति के "जी" को, दर्शाता है। इसीलिए "जी" और "भ" का जुड़ाव ही "जीभ" कहलाता है। इसीलिए जी का बाण, जीभ से निकलता है, जिसे शब्द कहा जाता है, और शब्द अनश्वर है, क्योंकि G यानी God, भ यानी भगवान, अनश्वर है, तो जीभ से निकला, शब्द भी अनश्वर है। "जी" व्यक्ति के शरीर में रहनेवाला God है, जो व्यक्ति के अन्तःकरण को अपनी बात सुनाता है। अन्तःकरण = अन्तःकर्ण = अन्दर के कान। व्यक्ति के शरीर भीतर भी दो कान होते हैं, जो अन्तःकरण कहलाते हैं, इसलिए लोग कहते हैं, "अरे ! कभी अपनी भी सुन लिया करो"। इसे ही अन्तःप्रेरणा भी, कहते हैं। व्यक्ति के शरीर के बाहर भी, दो कान होते हैं, जो सबको दिखाई देते हैं। यह बाहर की, आवाज को सुनते हैं। इसीलिए व्यक्ति

को, कहा जाता है कि, "वह चौकन्ना रहे"। यानी चार कानों को खोलकर रखे और सुने। जब हम किसी के भीतर के God को जान लेते हैं, तब हम उसके नाम के आगे, जी लगाकर बात करते हैं। जिसे लोग सम्मान, देना कहते हैं।

63. जी + ज्ञान + Saw = जिज्ञासा –

जी यानि मन ही ज्ञान को देखना चाहता है। जरा-सी कुछ खटपट सी होती है, तो व्यक्ति का मन देखना चाहता है कि, क्या हुआ ? यही जिज्ञासा है।

64. जी + ज्ञान + सुनना = जिज्ञासु -

हर किसी का जी ज्ञान को सुनना चाहता है। सभी का मन ज्ञान को सुनना चाहता है। अब यह ज्ञान कोई-सा भी हो सकता है। आत्मा का ज्ञान हो सकता है। या किसी के मन की बात को सुनना हो सकता है। या किसी के दरवाजे पर कान लगाकर किसी की बातें सुनना हो सकता है। बात सिर्फ इतनी है कि मन चाहता है कि, "मैं इसके बारे में सुनु"। इसलिए लोग कथा-प्रवचन सुनना चाहते हैं, क्योंकि लोग किसी प्रकार का ज्ञान सुनना चाहते हैं। यानि जी की यही आशा है कि, जी ज्ञान को सुनना चाहता है, इसलिए मन जिज्ञासु है।

65. जन्म –

जन में जो नम गया, उसका जन्म हो गया। जन-जन को नमन करना, तो जन्म सफल हो गया।

66. जाग + ऋत = जाग्रत,

स्व + पन = स्वप्न,

स + उष + उप्ति = सुषुप्ति,

त + उर + इय = तुरीय –

जाग ऋत = जग से अपने को रीता करो। स्व पन = स्वयं का पानी भरो। स उष उप्ति = वह उष्मा को उत्पन्न करेगा। त उर इय = तन ऊर्जा से परिपूर्ण होगा। इतना ही है। Meditation करो। Meditation के द्वारा अंतःकरण में से जगत को खाली करो। स्वयं के पानी से उसे भरो। स्वयं का पानी = ब्रह्मचर्य का पानी। बचपन = बचाओ अपने पानी को। बचा हुआ पानी शरीर, मन, प्राण, आत्मा में ऊष्मा को उत्पन्न करता है। तन इस ऊर्जा से परिपूर्ण हो जाता है। तन = शरीर, अंतःकरण, प्राण, आत्मा, परमात्मा के एक्य को तन कहते हैं। जब स्वयं का पानी बचा लिया जाता है। तब उस बचे हुए पानी से ऊष्मा की उत्पत्ति होती है। इसी ऊष्मा की ऊष्णता से शरीर, अंतःकरण, प्राण, आत्मा, परमात्मा एक हो जाते हैं, जिससे शरीर तना हुआ दिखाई देता है, इसलिए तने हुए शरीर को तन कहते हैं। इसे ही सुख, खुशी, ज्ञान, आनंद कहा गया है। इसलिए इसकी अनुभूति के लिए Meditation करना ही एकमात्र उपाय है, पहले के ब्रह्मृषियों ने Meditation करके ही ब्रह्म को प्राप्त किया और हमारे लिए उपयोगी शास्त्रों का लेखन किया। Meditation = ध्यान = तपस्या।

67. ज्योति + लिंग = ज्योतिर्लिंग –

आम धारणा यह है कि, तीसरी आँख, शरीर के बाहर देखती है। वस्तुतः, तीसरी आँख, शरीर के भीतर देखती है। दरअसल, तीसरी आँख, एक ज्योति है। जब तीसरी आँख की, ज्योति प्रकाशित हो

जाती है। तब बाहर की दोनों आँखें, ऊपर माथे पर, दोनों भोहों के मध्य में, एक आँख के ऊपर, दूसरी आँख चढ़ जाती है। और बाहर से देखने पर, दोनों आँखें, अधखुली नजर आती हैं। जब तीसरी आँख से, भीतर की तरफ रोशनी निकलती है, तब मन एक मंच बन जाता है और मन के मंच के परदे पर, चित्त के चित्र चलने लगते हैं। इन चित्रों को हम देखते हैं, यही चित्र स्वप्न कहलाते हैं, इनमें आवाज भी होती है, यह चित्र भूत एवं भविष्यकाल के होते हैं। किसी के भी सम्बन्ध में होते हैं। तीसरी आँख की ज्योति को, ही आत्म-ज्योति कहते हैं। इसी आत्म-ज्योति का प्रकाश, Meditation करते हुए, शरीर के भीतर बढ़ाते जाना है। इसी आत्म-ज्योति को, बाह्यरूप में जलते हुए, दीपक के रूप में दिखाते हैं। जब व्यक्ति मरणासन्न, अवस्था में होता है। तब व्यक्ति के पास एक जलता हुआ दीपक रख देते हैं। क्योंकि व्यक्ति के पूरे शरीर के, मरणासन्न होने पर, व्यक्ति की तीसरी आँख, सबसे ज्यादा सक्रिय हो जाती है। सारे शरीर की ऊर्जा, तीसरी आँख पर आ जाती है और व्यक्ति फिर तीसरी आँख की रोशनी में बहुत कुछ देखता है। अगर व्यक्ति उस समय, अपनी तीसरी आँख से, कुछ न देखते हुए, लेटे-लेटे केवल Meditation करे, तो वह व्यक्ति बीमारी से, ठीक हो जाएगा। इसलिए मरणासन्न के पास रखा, जलता हुआ दीपक, उस व्यक्ति की तीसरी आँख की, सक्रियता का प्रतीक है। तीसरी आँख में, Electric Spark होता रहता है, जो व्यक्ति के, अंगों को पुनः सक्रिय कर देता है। इसलिए Doctor आखिरी विकल्प में, मरीज को Electric Shock देते हैं। किन्तु अगर दोनों भोहों के मध्य में रगड़ा जाए, तो वह भी कारगर होता है। इसलिए हम ऐसे व्यक्ति को ढूँढते हैं, जिसकी तीसरी आँख सक्रिय हो और वह मरीज के सिर पर हाथ रखे, जिससे मरीज की तीसरी आँख सक्रिय हो जाए। इसी के लिए जलते हुए, दीपक को रखा जाता है। यही जलता हुआ दीपक, बाद में ज्योतिर्लिंग में बदल गया। इसलिए ज्योतिर्लिंग के, नीचे की जलहरी दीपक के जैसी है और लिंग का आकार, जलते हुए प्रकाश की तरह है। जैसे शिवलिंग पर साँप, लिपटा रहता है, वैसे ही मरणासन्न व्यक्ति, मृत्यु के पाश में बंधा रहता है। मरणासन्न व्यक्ति को, शक्तिशाली बनाने के लिए, दूध पिलाया जाता है। इसलिए शिवलिंग पर भी, दूध चढ़ाया जाता है। रात भर जले हुए, दीपक को धोने के लिए, दीपक पर पानी डाला जाता है। इस तरह से, तीसरी आँख का प्रतीक, पहले दीपक बना। फिर ज्योतिर्लिंग बना। जो की भीतर की दशा को प्रकट कर देता है। और मनुष्य के शरीर, मन को, स्वस्थ रखता है। इस तरह त्रिनेत्र पहले दीपक में बदला और फिर शिवलिंग में बदल गया। यह इसलिए बदल गया, ताकि साधक को साधना करने के प्रतीक मिल सके।

68. जय + ईष्ठ = जयेष्ठ -

जय को प्राप्त करने की ईच्छा, ही ज्येष्ठ है। जय + ईष्ठ = जयेष्ठ। ईष्ठ = ईच्छा। सभी की ईच्छा है कि, वह जय को प्राप्त करे। जो भी व्यक्ति जय को, प्राप्त करता है, वही व्यक्ति सभी के लिए, ज्येष्ठ हो जाता है। सभी लोगों में बड़ा हो जाता है।

69. जुग + आड़ = जुगाड़ -

समीकरण का ही, दूसरा नाम जुगाड़ है। भारत में जुगाड़ पर ही, सब कुछ चलता है। युग की आड़ को ही, जुगाड़ कहते हैं। "य" को कहीं-कहीं "ज़" पढ़ा जाता है। इसलिए "य" को "ज़" पढ़ने पर, युग को

जुग पढ़ते हैं। जब भी कभी कोई बात, समय के ऊपर, डालना चाहते हैं, तब कहते हैं, कि युग ही ऐसा चल रहा है। इस तरह युग की आड़ लेते हैं और सबकुछ युग पर डाल देते हैं, इसे ही जुगाड़ कहते हैं। इसी जुगाड़ का, दूसरा नाम समीकरण है। जुग + आड़ = जुगाड़।

70. झूठ-मूठ =

जो लोग झूठ बोलते हैं, वो लोग अपनी मूठ, बाँधकर रखते हैं। झूठ बोलने वाले लोग, अक्सर यह पूछते हैं कि, "बताओ मेरी मुट्ठी में क्या है ?" किंतु अपनी मुट्ठी नहीं, खोलते हैं। यही बंद मुट्ठी वाले लोग, झूठ बोलते हैं। और झूठ बोलने के बाद, हमेशा यही कहते हैं कि, "वो तो मैं ऐसे ही कह रहा था, मजाक कर रहा था। सच मत मान लेना।" क्योंकि बोल ही, वह झूठ रहा था। ऐसे लोगों ने कहावत भी, बना रखी है कि, "बंद मुट्ठी लाख की, खुली मुट्ठी खाक की"। ऐसे झूठ बोलने वाले लोग, कभी भी अपनी, बात पूरी नहीं बोलते हैं, शब्दों को या वाक्यों को, हमेशा अधूरा छोड़ देते हैं, और, सामनेवाले की परीक्षा लेते हैं कि, यह मेरी बात, कितनी समझता है, इसी से वह सामनेवाले की, समझदारी का पता लगा लेते हैं। इस तरह के मुट्ठी बंदकर, रखनेवाले लोग ही, दुनिया में समझदार और, चालाक कहलाते हैं। अपनी मुट्ठी खोलते नहीं है, दूसरों की मुट्ठी, खुलवाले के कोई न कोई, उपाय करते रहते हैं। "देखें तो सही, इसकी मुट्ठी में क्या है ?"

71. जो + कर = Joker -

जो कर देता है और जो कर लेता है, वह दोनों ही Joker होते हैं। जो + कर = Joker. इसीलिए ताश की गड्डी में दो Joker होते हैं। इक्का अकेला होता है, किन्तु बादशाह को भी मात दे देता है। तुरुप का पत्ता तो, इक्के से भी बड़ा होता है। यानी तुरंत जो अपना रूप बदल लेता है, वह इक्के से भी बड़ा होता है। तुरन्त + रूप = तुरुप। और दोनों Joker सबसे बड़े होते हैं, जो तुरुप के पत्ते से भी बड़े होते हैं, जो कभी भी अपना चेहरा नहीं दिखाते हैं। यह वही Joker होते हैं, जो कर लेते हैं और जो कर देते हैं। किंतु रंग पुते चेहरे के पीछे छिपे रहते हैं।

72. Jinni + Us = Genius -

Jinni हमारी है, इसीलिए हम Genius हैं। Jinni + Us = Genius.

73. जानना – मानना -

किसी के बारे में जानने के लिए जान लगा देनी पड़ती है। किसी के बारे में जानकारी इकट्ठी करते हुए जब जासूस पकड़ा जाता है, तब जासूस को अपनी जान गंवानी पड़ती है। क्योंकि जासूस किसी के बारे में जानने के लिए विरोधी पक्ष में जाता है। इसी तरह से परमात्मा को जानने के लिए जान लगानी पड़ती है, तब कहीं जाकर परमात्मा को जान पाते हैं। किसी बात को मान लेना, सबसे आसान होता है, इसमें मान भी मिलता है, और जान भी बची रहती है।

74. जन्म + आती = जाति -

आप किसी भी धर्म में चले जाएं, या नास्तिक भी हो जाएं, किसी भी देश, महकमे में चले जाएं, किन्तु आपकी जाति लोगों के द्वारा हमेशा किसी न किसी बहाने से पूछी ही जाएगी या पहचान ली जाएगी। चाहे आपका Surname पूछा जाए, चाहे आपका पूरा नाम पूछा जाए, चाहे आपका गोत्र पूछा जाए,

चाहे आपका Title पूछा जाए। आप जाति नहीं छुपा सकते हैं, जाति कभी नहीं बदलती है, चाहे धर्म बदल लो, चाहे बहुत बड़े धनवान हो जाओ, चाहे बहुत बड़े पद पर बैठ जाओ, चाहे बहुत बड़े विद्वान हो जाओ, चाहे बहुत बड़े ज्ञानी हो जाओ। आपकी जाति हमेशा आपके साथ रहती है। आप भले भूल जाने की कोशिश करो, किन्तु लोगों के द्वारा, आपको हमेशा याद दिला दी जाएगी। और एक दिन आप भी खुद, अपनी जाति पर गर्व के साथ, घोषणा करोगे कि, "मुझे अपनी जाति पर गर्व है, कि मैं इस जाति में पैदा हुआ"। कितनी ही कोशिश करो, जाति कभी जाती नहीं है, क्योंकि जो जन्म से आती है, वह जाति है। जन्म + आती = जाति। जीवन जीने के लिए आप कोई भी पद्धति अपना सकते हैं। किन्तु लोग आपकी जाति, आपको याद दिलाते रहेंगे, और आपको आपकी जाति से, पुकारते रहेंगे। इसलिए जातिवाद को समाप्त कर देने का भ्रम, दिमाग से निकाल देना चाहिए। दुनिया के किसी भी देश में, चले जाईए, हर देश में जातिगत व्यवस्था है। उस देश के लोग भी, आपकी जाति को जानना चाहेंगे। यह जाति जीवन का सत्य है, इस सत्य को स्वीकार कर लेना चाहिए। जाति को न धर्म परिवर्तन मिटा सकता है, और न पूंजीवादी व्यवस्था मिटा सकती है। पूंजीवाद गरीब-अमीर की व्यवस्था देता है, किन्तु गरीब कभी अपनी, जाति को छोड़ता नहीं है, और अमीर को कभी ऊंची जाति वाले, अपनी जाति में लेते नहीं हैं। आखिर व्यक्ति अपनी जाति में, सुकून पाता है, क्योंकि मनुष्य भी एक पशु ही है, पशुओं के जैसे अपनी जाति में, रहता है। अन्य जाति वालों को अपनी जाति में, स्वीकार नहीं करता है। क्योंकि जाति प्राकृतिक है, और जब प्रकृति अपने हिसाब से, विभाजित करती है, तो मनुष्य कैसे मानव के नाम पर, जाति मिटा सकता है। विदेशों में भी लोगों को, अपने Surname पर गर्व होता है। इसीलिए जन्म से जो आपके साथ आती है, और जन्म भर आपके साथ रहती है। इसी को जाति कहते हैं। जिसे सभ्य लोग संस्कार कहते हैं, आदतें कहते हैं, Habits कहते हैं। यह सिखाए नहीं जाते हैं, यह जन्म से ही अपने साथ लेकर आते हैं। न इसे आप सुंदर कपड़ों से छुपा सकते हैं, न इसे आप सुंदर वाणी में छुपा सकते हैं, न इसे आप अधिक धन में छुपा सकते हैं, यह प्रकट हो ही जाती है, एक बार प्रकट हो गयी, तो लोग आपकी जाति जान जाते हैं, जाति का पहचाना जाना, इस संसार का सबसे बड़ा सत्य है। वर को आप Earn कर सकते हैं, तो उसे वर्ण कहते हैं। वर + Earn = वर्ण। आप जब तपस्या करते हैं, तब आपको तपस्या के फलस्वरूप, वर की प्राप्ति होती है और आप वर्ण को Earn कर लेते हैं। आप नौकर से दुकानदार बन सकते हैं, दुकानदार से राजनीति में जा सकते हैं, राजनीति से बौद्धिक वर्ग में जा सकते हैं। किन्तु आप जाति नहीं बदल सकते हैं, आखिर में आपको, अपनी जाति में ही आना है। जाति एवं वर्ण में भिन्नता है, अपनी जाति में जाते ही, आप एक अपनापन महसूस करते हैं। आप शूद्र से वैश्य बन सकते हैं, वैश्य से क्षत्रिय बन सकते हैं, क्षत्रिय से ब्राह्मण बन सकते हैं, ब्राह्मण से क्षत्रिय बन सकते हैं। यानी आप किसी भी वर्ण से, किसी भी वर्ण में जा सकते हैं, किन्तु आप जाति नहीं बदल सकते हैं। आप गुर्जर से जाट नहीं बन सकते हैं, आप जाट से गुर्जर नहीं बन सकते हैं, आप गुर्जर, जाट से राजपूत नहीं बन सकते हैं, आप राजपूत से पंडित नहीं बन सकते हैं, पंडित से राजपूत नहीं बन सकते हैं, इस तरह से आप, जाति कदापि नहीं बदल सकते हैं, क्योंकि आपको अपनी जाति पर गर्व होता है। आप नौकर से भले ही,

मालिक बन जाएं, किन्तु आप अपनी जाति को कभी नहीं भूलते हैं। जैसा कि मुंशी प्रेमचंद की कहानी, "शतरंज के खिलाड़ी" में, कहने को तो दोनों नवाब हैं, किन्तु आखिर में जब युद्ध आता है, तब दोनों एक-दूसरे की जाति को बताकर एक-दूसरे का, उपहास उड़ाते हैं।

75. जान + Key = जानकी -

जिसकी जान Key में होती है, उसे जानकी कहते हैं। जान + Key = जानकी। लगभग प्रत्येक व्यक्ति की जान, उसकी Key में रहती है। यह Key किसी भी प्रकार की हो सकती है।

76. जल + वायु = जलवा - जल एवं वायु से ही जलवा होता है।

77. झरना + Luck = झलक -

अगर तुम्हारी Luck है, तो तुम्हें झरना देखने को, मिल जाएगा। व्यक्ति यह सोचता है कि, "अगर उसका Luck हुआ तो, उसे आज उसकी झलक मिल जायेगी"। यानी किसी की झलक भी Luck से मिलती है।

78. जी + ओ = जिओ -

जब आप अपने "जी" को, "ओ" के साथ जोड़ देते हैं, तब जुग जुग जीते हैं, और लोग कहते हैं, "जुग

79. जंग + गल = जंगल - हर गल पर जहां जंग हो जाए, उसे जंगल कहते हैं।

80. जी + तने = जीतना -

"जी" को "तने" रहो जीत जाओगे। जी + तने = जीतना। अपने "जी" को "तने" रहो। यानी पेड़ का तना जिस प्रकार से, तना रहता है, तो तना जीत जाता है। यानी अपने जी को कड़ा करके रखो।

81. गण + War = गंवार -

जो गण War करने के लिए, हमेशा तैयार रहते हैं, उसे गंवार कहते हैं।

82. जेब + रियाल = जेबरियाल -

जेब में जिसके रियाल रहता है, उसे "जेबरियाल" कहते हैं। जेब + रियाल = जेबरियाल। रियाल ही Real होता है। रियाल = Real.

83. जल + जीरा = जज़ीरा –

जल में जो जीरे के बराबर दिखाई दे, उसे जज़ीरा कहते हैं। अथाह जलराशि में जो जीरे के समान, प्रतीत होता है, उसे जज़ीरा कहते हैं।

84. सबको जोड़कर रखनेवाली = जोरु -

ज़र को जोड़ती है, वह जोरु कहलाती है। ज़र को जोड़नेवाली = जोरु। सबको जोड़कर रखनेवाली = जोरु। जोड़े गए ज़र को, जो ज़मीन में गाड़कर रख देते हैं, उसे ज़र जोरु ज़मीन कहते हैं।

85. जन्म + आती = जाति -

जातियां ही भारत देश की धरोहर हैं, वर्णव्यवस्था तो आर्य अपने साथ लाए थे। इसलिए वर्णव्यवस्था परिवर्तनशील है, किन्तु जाति अपरिवर्तनीय है। वर्णव्यवस्था तो इस समय लगभग, समाप्त ही हो गई है, किन्तु जाति व्यवस्था यथावत है। धर्म बदले गए, राज व्यवस्थाएं बदली गईं, किन्तु जाति व्यवस्था नहीं बदली। संसार में सब देशों में जाति व्यवस्था है। कहीं Goldsmith है, तो

कहीं Ironsmith है, तो कहीं Cowboy हैं, तो कहीं Potter हैं। संसार में जातियां कहां नहीं है। संसार में सब समाप्त हो सकता है, किन्तु जाति कभी भी, समाप्त नहीं हो सकती है। क्योंकि जाति ही से तो समाज बनता है। समाज से संस्कृति बनती है, और संस्कृति ही किसी की, जाति की पहचान करवाती है। जाति नैसर्गिक है, दुनिया में व्यक्ति कहीं भी रहे, किन्तु जब अपनी जाति के लोगों में जाता है, तब अपने आप ही, अपने जाति की तरह व्यवहार, करने लग जाता है। अपनी जाति में जाकर व्यक्ति को, एक अलग ही अहसास होता है। जैसे - एक हिरण अपनी जाति के साथ, प्रसन्न रहता है। मगरमच्छ अपने जाति में पड़ा रहता है। उसी तरह से मनुष्य भी, अपनी जाति में प्रसन्न रहता है। क्योंकि जाति जन्म से आती है। जन्म + आती = जाति। और प्रत्येक मनुष्य अपनी, जाति से निजात पाना चाहता है। किन्तु जाति से कभी भी, निजात नहीं मिलती है। क्योंकि निज जात ही निजात है। निज + जात = निजात। जब कोई किसी दूसरी की जाति में, पड़ा रहता है, तब उस जाति के लोग बोलते हैं कि, "यह अपनी जाति में क्यों नहीं जाता है ? यहां क्यों पड़ा रहता है, अब इसे निज जात में जाना चाहिए"। निज = Private. जात = जाति। जाति ही व्यक्ति को Private बनाती है। इसलिए तो Board लगा रहता है कि, "This is Private Property". जितना Private होते जाएंगे, उतने ही निज जाति में सिमटते जाएंगे। तो जाति कभी नहीं जाती। वर्ण योग्यता पर आधारित हैं, जातियां जन्म पर आधारित हैं। वर्ण बदले जा सकते हैं, किन्तु जाति नहीं बदली जा सकती है।

86. Jack + कड़ = जकड़ -

Jack और कड़ को मिलाकर, शब्द बना है, "जकड़"। Jack + कड़ = जकड़। जिस प्रकार से गाड़ी में Jack लगाकर, गाड़ी को कड़ा कर दिया जाता है, और गाड़ी एक स्थान पर जकड़ जाती है। उसी प्रकार से, किसी के नाम की जय जय बोलकर, उसमें अकड़ को भर दिया जाता है। और अपने नाम की, जय जय में अकड़कर चलता है।

87. जान + बूझ = जानबूझकर

जब व्यक्ति की जान को बूझ लिया जाता है, तब व्यक्ति के साथ, जानबूझकर व्यहवार किया जाता है।

88. जूं + था = जूता –

किसी ने किसी के सिर पर, जोर से जूता मारा और कहा कि, "वो आपके सिर पर जूं था"। जूं + था = जूता। इसलिए तब से जूं को मारने के लिए, जूते का उपयोग किया जाता है। तभी तो कहते हैं कि, "तेरे सिर पर दो चार जूते पड़ेंगे, तो तेरी सारी खुश्की उतर जाएगी"।

89. जय + यज्ञ = ज़ायज –

जय प्राप्त करने के लिए, यज्ञ करना ही "ज़ायज" होता। जय + यज्ञ = ज़ायज।

90. ज्ञानी + ऊ = जनेऊ –

लोग यह जान लें कि, ज्ञानी कौन है ? तो ज्ञानी को जनेऊ पहनाया गया। कोई जब किसी से पूछता कि, 'यहां ज्ञानी कौन है' ? तो लोग कहते कि, 'ज्ञानी ऊ है'। ज्ञानी + ऊ = जनेऊ। तो कालांतर में ज्ञानी की पहचान, करने के लिए, ज्ञानी को जनेऊ पहनाया गया। और लोग जनेऊ पहने हुए व्यक्ति की ओर, इशारा करके कहते कि, 'ज्ञानी ऊ है'। इस तरह से 'ज्ञानी ऊ' का, अपभ्रंश होकर 'जाने ऊ' हुआ,

और कालांतर में 'जनेऊ' हो गया।

91. जाग + रण = जागरण –

जाग क्योंकि रण में है। रण में गया व्यक्ति जागता है, उसे ही जागरण कहते हैं।

जाग + ऋतु = जागृत –

जग जागता रहता है, ऋतु के आने पर, इसलिए जग ही जागृत है।

जाग + ऋतु = जागृत –

स्त्री की ऋतु आने पर, पुरुष को जागृत रहना पड़ता है, इसे ही जागृत कहते हैं।

जाग + रीति = जागृति –

जग में चलनेवाली रीति के, पालन करने के समय, मनुष्य को जागते रहना चाहिए।

92. जंग + गल = जंगल -

जंग हो जाती है जहां गल पर, उसे जंगल कहते हैं। जंग + गल = जंगल। यानि जहां बात-बात पर, लड़ाई हो जाती है, वह है जंगल।

93. जान + आंच = जांच -

जान है तो आंच है। जान + आंच = जांच। सबसे पहले हाथ लगाकर, यह देखा जाता है कि, शरीर में आंच है कि नहीं है। अगर शरीर में आंच है, तो शरीर में जान है। इसे ही अग्नि परीक्षा कहते हैं कि, पता तो करो कि, 'इसके शरीर में अग्नि है कि नहीं है'। इसलिए सबसे पहले, व्यक्ति के माथे पर हाथ रखकर, व्यक्ति का तापमान देखा जाता है कि, व्यक्ति ठंडा है कि गर्म है। जब किसी से बहुत दिनों के बाद मिलते हैं, तब उसके माथे पर हाथ फेरते हैं, उसके माथे को चूमते हैं। यानि उस व्यक्ति का अग्नि परीक्षण करते हैं कि, इस व्यक्ति में कितनी जान बची है। अगर व्यक्ति का शरीर ज्यादा गर्म है, तो व्यक्ति को ठंडा पेय पदार्थ, पीने को दिया जाता है। अगर व्यक्ति का शरीर ज्यादा ठंडा है, तो व्यक्ति को गर्म पेय पदार्थ, पीने को दिया जाता है। इसलिए किसी भी मेहमान के आने पर, यह पूछा जाता है कि, 'आप गर्म लेंगे कि ठंडा लेंगे'। इस तरह की अग्नि परीक्षा से, सभी को गुजरना पड़ता है। तभी तो उसके शरीर में, जान की जांच आंच के द्वारा की जाती है ।

94. जी + तना = जीतना –

जी को तना रखने वाले ही जीतते हैं। इसलिए जिसको जीतना है, उसको अपने जी को तना रखना चाहिए। जी + तना = जीतना। जी का स्थान 'जीभ' मैं है। यानि जी 'जीभ' में रहता है। जीभ से ही जी भरकर खाया जाता है। यानि जीभ से ही जी को भरा जाता है। जी + भर = जीभ। जी यानि GOD, जी = GOD.

95. जल + Eel = ज़लील -

जल में Eel ही ज़लील करती है। जल में Eel मछली को हाथ लगाते ही, ज़लील होना पड़ता है।

96. ज्ञानी + ऊ = जनेऊ -

लोग यह जान लें कि, ज्ञानी कौन है ? तो ज्ञानी को जनेऊ पहनाया गया। कोई जब किसी से पूछता कि, 'यहां ज्ञानी कौन है' ? तो लोग कहते कि, 'ज्ञानी ऊ है'। ज्ञानी + ऊ = जनेऊ। तो कालांतर में ज्ञानी

की पहचान, करने के लिए, ज्ञानी को जनेऊ पहनाया गया। और लोग जनेऊ पहने हुए व्यक्ति की ओर, इशारा करके कहते कि, 'ज्ञानी ऊ है'। इस तरह से 'ज्ञानी ऊ' का, अपभ्रंश होकर 'जानी ऊ' बना, जानी ऊं कहते-कहते "जाने ऊ' हुआ, और कालांतर में 'जनेऊ' हो गया। इसलिए तरह से ज्ञानी व्यक्ति की पहचान, जनेऊ बन गया।

K

1. कवि + अली = कव्वाली -
कवि जब अली के लिए लिखते हैं, उसे कव्वाली कहते हैं। कवि के द्वारा अली की प्रशंसा में लिखी गई कविता "कव्वाली" कहलाती है, कविता को पढ़नेवाले लोग "कव्वाल" कहलाते हैं।

2. कठोर - जिसके पास कोई ठौर न हो, वही कठोर है।

3. कन्द-मूल -
किसी ने पूछा कि, "आप लोग प्याज (कान्दा)-लहसुन क्यों खाते हैं" ? बड़ी सोच के बाद जबाब दिया कि, "हमारे ऋषि-मुनि कन्द-मूल खाते थे। इसलिए हम भी कन्द (कान्दा) मूल (मूली) यानि जमीन के अन्दर पैदा होने वाली वस्तुओं का उपयोग करते हैं"।

4. काग + जात = कागजात -
जिन्दगी भर कोई भी जात (जाति) के बने रहो। पर अंत में काग (कौआ) ही सबकी जात होती है। तीर्थ में पिण्ड को खाने के लिए काग (कौए) को ही बुलाया जाता है और किसी जात वाले को नहीं बुलाया जाता है। यह बात पंडा जी अपनी किताब के कागज़ में लिख लेते हैं, जिसे कागजात कहा जाता है। किसी के मांगने पर पेश कर दिया है कि, "यह हैं हमारे कागजात"।

5. कार्य + काल = कार्यकाल -
काल ही तो कार्य करवाता है। काल (समय) ही सारा कार्य कर रहा है। इसलिए उसका ही कार्यकाल है। हम कहते हैं की हमारा कार्यकाल है। हमने अपने कार्यकाल में इतना किया। उसने अपने कार्यकाल मे इतना किया। परन्तु सारा कार्य तो काल के द्वारा ही किया जा रहा है। समय आया हम बड़े हुए और बच्चे पैदा करने लायक हुए तो बच्चे पैदा किए। समय आया तो बूढ़े हो गए, समय आया तो मर गए। सब कार्य काल के अन्तर्गत ही तो आता है। दाड़ी आई तो काट ली। काल के सिवाय हम कुछ भी नहीं काल ही सब कुछ है।

6. कर + VAT = करवट -
ईधर कर है, उधर VAT है, अब किधर वह करवट ले, इसलिए वह सीधा सो लेता है, मुर्दे की तरह। बिना करवट के, आसमान को देखता हुआ। इसलिए कर और Vat यह दोनों ही करवट नहीं लेने देते हैं।

7. कर + तब + व्यय = कर्तव्य -
पहले कर (Tax) दो, फिर व्यय (खर्च) करो। इसी को कर्तव्य कहते हैं।

8. क+अनून = कानून -
किसी भी चीज को बिना नूण (नमक) के परोसना का कानून है। अंग्रेजों ने देखा भारत के लोग नमक ज्यादा खाते हैं, जिससे इन का BP High हो जाता है। तो सबसे पहला जो नियम बनाया, वह "नूण" (नमक) पर बनाया। फिर जो भी नियम बना, वह कानून कहलाया।

9. खाना + गाल = खंगाल -

खाना गाल में छुपा कर तो नहीं रखा है, यह जाँचने के लिए फिर, गाल को खंगाला जाता है।

10. खनन -

"जब तक खन की आवाज आए, तब तक खनन करते रहो"। खन की आवाज का मतलब है कि, नीचे कोई धातु है।

11. कायदा - काया को चलाने का एक कायदा होता है।

12. कथा -

पहले लोग पैदल यात्रा करते थे। जब वो दिनभर चल कर थक जाते थे। तो रात्रि में कहते थे कि, "कुछ कहो (कथ)"। यह "कथ" आगे चलकर "कथा" में बदल गया।

13. कहानी -

जब किसी की हानि के बारे में कहते हैं, उसे कहानी कहते हैं। कहानी चाहे आप "Once Upon A Time" से प्रारंभ करो या "किसी वंश" की कहानी कहो। बात एक ही है। आपको कहानी किसी न किसी वंश की ही कहनी होगी।

14. खुल जा Sim-Sim - सबसे पहला Password.

15. कान + Nose = कन्नौज -

इत्र के फुए को कान में लगाया जाता है, ताकि उसकी खुशबू Nose तक आती रहे। इसलिए जिस स्थान पर "इत्र" बनता है, उस जगह का नाम कन्नौज है।

16. Cave + लय = कैवल्य -

केवल लय रह जाए। जब व्यक्ति में केवल लयात्मक रह जाए। केवल लय रह जाने पर ही वह व्यक्ति Cave (गुफा) में रहने चला जाता है।

17. कुश + लता = कुशलता -

लता की कुशलता यही है कि लता जो है वह (कुश) काँटों से भरे पेड़ पर इस कुशलता से चढ़ जाती है, कि उसके पत्तों पर खरोंच तक नहीं आती है।

18. Kitty Party -

Kitten को लेकर जब पार्टी की जाती है, तब उसे Kitty Party कहते हैं। Kitchen में बिल्ली न घुसे, इसलिए महिलाएँ बिल्ली के बच्चे को अपने साथ लेकर आती हैं और Kitty Party करती हैं।

19. कल्पना - कल पानी कहाँ मिलेगा ? इसी की सभी कल्पना करते हैं।

20. कपोत -

पोत ही कपोत बताते हैं, जहाँ पोत (पानी का जहाज) हो वहाँ कपोत होते हैं।

21. Case + श्व = केशव -

महाभारत युद्ध के पश्चात जो श्व पड़े हुए थे। उन पड़े हुए श्व का Case जिस पर लगाया गया, उसे ही केशव के नाम से बुलाया गया।

22. खास - जो सखा होता है, वही खास होता है।

23. Crow + धरना = क्रोध -

Crow जब गुस्से में धरना देते हैं, उसे क्रोध कहते हैं। जब किसी कौए को कोई मारता है, तो सभी कौए इकट्ठे होकर क्रोध करते हैं।

24. कब + उतर = कबूतर को दाना -

लोग यही देखते हैं कि, यह कबूतर कब उतरेगा। क्योंकि पहले के समय में, कबूतर एक मुफ्त का संदेशवाहक था, जो एक Messenger का काम मुफ्त में करता था। तो लोग फिर कबूतर को दाना डालने लगे, की दाने को देखकर वह कबूतर नीचे आएगा और किसका सन्देश ले जा रहा है, उसको निकाल कर पढ़ लेंगे और या संदेश को बदल देंगे, या फिर यह खबर उसके दुश्मन तक बेच देंगे। इसलिए कबूतर को दाना खिलाने का प्रचलन हुआ और भारत के लोग सन्देश हमेशा से मुफ्त में ही पहुंचाने में यकीन रखते हैं- जैसे कोई जाता है, तो उसको ही कह दिया कि, "कह देना सब ठीक है" और इसी बात का फायदा भारत के दुश्मनों ने हमेशा उठाया। कबूतर को दाना खिला कर और किसी के सन्देश को पढ़कर, अब भी भारत के लोग उसी सन्देश वाहक प्रक्रिया को इस्तेमाल करते हैं, जो मुफ्त में ज्यादा-से-ज्यादा सन्देश भेजने का Offer देती है। तो यह कहानी है, कबूतर को दाना खिलाने की।

25. क्रीड + काट = Cricket -

क्रीडा यह संस्कृत शब्द है। क्रीडा शब्द का ही अपभ्रंश क्रिकेट है, यानी जब क्रीड़ा की जाती है, किसी को काटने के लिए, तो उसे क्रीड़ केट कहते हैं और एक मुहावरा भी है की गला काट प्रतियोगिता है। तो जब गले को काटने की प्रतियोगिता होती है, तो वही प्रतियोगिता तो क्रीड काट बनती है। और किसी भी मरे हुए सैनिक का गला ही तो काटा जाता है। और फिर उस कटे हुए सिर को बालों के पकड़ कर उछालते हैं और उस पर तीर या बन्दुक से निशाना लगाते हैं। या फिर उसे दूर लटका देते हैं और फिर उस पर निशाना लगाते हैं। देखा नहीं है मेलों में रंग भरे हुए गुब्बारे पर निशाना लगाते हैं। अब गुब्बारे प्रयोग में लाते हैं, पहले तो कटे हुए सिर ही लटकाए जाते थे। और निशाना लगने पर जैसे गुब्बारे से रंग निकलता है तो उन सिरों में से खून निकलता था। मेरे ख्याल से तो सारे खेल ही इसी तरह इजाद हुए हैं, क्योंकि हर खेल में बाल का तो इस्तेमाल होता ही है।

26. खिल + Off = खिलॉफ –

खिलते हुए किसी को Off करना ही खिलॉफ है और फिर खिल-खिलाते हुए Laugh करना ही खिलाफ है।

27. कुश + ओन = Cushion –

कुश (घास) होनी चाहिए उस पर। पहले लोग कुश (घास) को सिर के नीचे रखकर सोते थे। यही Cushion आगे चलकर कुशन हो गया।

28. कर + Road = करोड़ -

कर दिया जाता है, Road को बनाने के लिए। कर + Road = करोड़। Tax का Collection, Road को बनाने के लिए, किया जाता है। Tax = कर।

29. कुल + Law = कुल्ला –

कुल यानि गुरुकुल और Law यानि कानून (जेल में रहना) इन दोनों जगहों पर ही कुल्ला करना पड़ता है। यानि सुबह-सुबह उठकर दातून नहीं मिलती है, और कुल्ला करके मुँह साफ करना पड़ता है।

30. Kiss + मत = किस्मत –

किसी को Kiss नहीं करना चाहिए, नहीं तो उसकी किस्मत बन जाती है। एक राजकुमारी ने एक मेंढक को Kiss किया और वह मेंढक बदलकर राजकुमार बन गया। यानि उस मेंढक की किस्मत एक Kiss करने से बदल गई।

31. कर + ऋण + दे = कारिन्दे –

कर लेने वाले और ऋण लेने वाले दोनों ही कारिन्दे रखते हैं, और खुद आराम से रहते हैं।

32. Key + चैन = Kitchen –

चाबियाँ हाथ में आते ही स्त्रियाँ चैन से रहती हैं और फिर Kitchen को संभालती हैं, Kitchen में किसी को घुसने नहीं देती हैं। जब तक चाबियाँ हाथ में नहीं आती हैं, तब तक बेचैन रहती हैं।

33. Key + ताब = किताब –

किसी को भी ताबे में लेने की, Key है "किताब"। Key + ताब = किताब। लोगों को किताबें पढ़ाकर, उन किताबों में लिखी गई बातों से, लोगों को अपने ताबे में लिया जाता है। किताब में लिखी कुछ खास बातों को, अलग से लिखकर, कुंजी भी बना ली जाती है। लोग उन कुंजियों को पढ़कर, Pass होने की कोशिश करते हैं। इस तरह से कुंजी हो या किताब, दोनों ही लोगों को ताबे में लेने का कार्य करती हैं। इसलिए लोग कहते हैं, "देखो तुम जिस किताब को मानते हो, उस किताब में ही ऐसा लिखा है, यही सत्य है, तुम भी ऐसा ही करो, तुम अपनी मनगढ़ंत बातें मत करो" ! इस तरह से उस व्यक्ति को, उस किताब में लिखी गई बात से, ताबे में लिया जाता है। इसलिए सबसे पहले, यह पता किया जाता है कि, यह कौन सी किताब को मानता है ? इसलिए जो किताबें लोगों को, ताबे में रखने का कार्य करती हैं, उन किताबों को बहुत सहेजकर और संभालकर रखा जाता है।

34. कितना + आब = किताब –

किसको कितना आब (पानी) दिया गया, इसका जिसमें हिसाब होता है, उसे किताब कहते हैं। पहले अरब में पानी की बड़ी समस्या थी, तो वहाँ पर पानी हिसाब से दिया जाता था। तो उस पानी का हिसाब जिसमें लिखा जाता है, उसे किताब कहते हैं।

35. काटना + नाई = Knife – नाई के पास और ही Knife होता है।

36. काज –

Cause ही काज है, यानि जब आदमी के पास कोई काम नहीं होता है, तो उसे अपने आप को Busy दिखाने के लिए कोई न कोई Cause देना होता है, कि I can't come for this purpose, because I am busy.

37. केरल – करेले की तरह दिखाई देता है, इसीलिए केरल।

38. कच्चा + हरी = कचहरी –

कच्चे फल और हरी फसल तोड़ने के एवज में कचहरी में लाया जाता है।

39. काम + ना = कामना – काम का ना होना ही कामना है।

40. खाना + रात = खैरात – खाना और रात को ठहरने के लिए ही आदमी खैरात माँगता है।

41. खर्च – रचने के लिए खर्च करना पड़ता है, जो खर्च नहीं करते हैं, वह अर्च करते हैं।

42. कथा = थक – जब थक जाते हैं, तो कथा कहते हैं।

43. खो + Off = खौफ – खोने का या बन्द होने का नाम ही खौफ है।

44. कुली + न = कुलीन –

जो कुली नहीं होते हैं, वही कुलीन होते हैं, यानि जो दूसरों का बोझ अपने ऊपर नहीं उठाते हैं, वह हैं कुलीन।

45. कुर्ता – जो कुड़ता है, वही कुर्ता पहनता है।

46. कोफ्ता – कोफ्त को खतम करने के लिए कोफ्ता बनाते हैं।

47. काश = Cash – काश मेरे पास इतना Cash होता तो, तो मैं यह कर लेता।

48. कर = Tax -

ताजमहल के बादशाह ने सबके हाथ (कर) कटवा लिए। अब कर (Tax) की जगह, रुपया (रिश्वत) देकर, अपने कर (हाथ) बचाता रहता है।

49. कल + पानी = कल्प – कल पानी कहाँ से मिलेगा, यही कल्पना तो कल्प बन जाती है।

50. कोप – किसी की Copy करने पर ही क्रोध आता है।

51. कन्दरा – कान के जैसी होती है, कन्दरा।

52.कड़वा + हट = कड़वाहट – कड़वा जो बोलता है, उसे हटा दिया जाता है।

53. Kill + लत = किल्लत – Kill कर दे जो लत उसे किल्लत कहते हैं।

54. कलह + Less = क्लेश –

कलह हमेशा Less होने पर ही होता है। यानि कल के लिए क्या करना है ? या Less (कमी) होने पर ही, क्लेश होता है।

55. खातिर + नाक = खतरनाक -

जब बात नाक तक आ जाती है, तब ही बात खतरनाक हो जाती है यानी जब खतरा नाक तक आ जाता है, तब खतरनाक हो जाता है, जैसे कि सूर्पनखा की बात नाक तक आ गई और बात खतरनाक हो गई, जैसे कि जब पानी नाक तक आ जाए, तब बात खतरनाक हो जाए। नाक ही तो प्रतिष्ठा का विषय है, तभी तो कहा जाता है, कि, "बात मेरी नाक तक, आ गई थी" या, "और तो सब ठीक है, बस मेरी नाक बचाकर रखना" या फिर, "यह हर जगह अपनी नाक घुसेड़ता रहता है"। क्योंकि जब बात नाक की खातिर करने की आती है, तब बात खतरनाक हो जाती है, खातिर + नाक = खतरनाक। क्योंकि आदमी कहता है कि, "देख ! यह काम मेरी नाक की, खातिर कर दे बस"। नाक की खातिर करना, इतना आसान नहीं है। क्योंकि आदमी यही कहता है कि, "इसने तो मेरी खातिर न करी, इसने तो मेरी नाक कटवा दी"। दरअसल नाक जब खत जाती है, और तर जाती है, तब नाक खतरनाक हो जाती है। खत + तर + नाक = खतरनाक। क्योंकि आदमी को जब भी, खत मिलता है, वह आदमी

खत को सबसे पहले, नाक से सूँघता है, फिर खोलता है। इससे खत में मौजूद कीटाणु, उसकी नाक में चले जाते हैं। और फिर वह खतरनाक हो जाते हैं। इसी तरह से, जब आदमी नदी, तालाब आदि में, नहाता है। और पानी से तर हो जाता है, पानी उसकी नाक में, घुस जाता है, तब आदमी तर जाता है। इसीलिए नाक को दबाकर, पानी में डुबकी, लगाई जाती है, ताकि पानी नाक में न घुसे। और आदमी तरने से बच जाए। तो यह नाक का मसला, बड़ा ही गंभीर है। इसीलिए आदमी अपनी, नाक पर मक्खी भी नहीं, बैठने देता है। क्योंकि नाक पर मक्खी, बैठना भी खतरनाक होता है - जैसे एक राजा और उसके, बंदर अंगरक्षक की कहानी, इसमें प्रसिद्ध ही है। तो नाक पर जब बात, आ जाती है, तब बात अपने आप खतरनाक, हो जाती है।

56. Key + बाड़ = किवाड़ –
पहले आदमी बाड़ बनाता था कि, कोई उसके घर में न घुस सके। फिर किवाड़ लगाने लगा, जो Key से खुलते थे।

57. खाने + ईश्वर = ख्वाईश – इंसान अपने खाने की ख्वाईश ईश यानि ईश्वर से ही करता है।

58. कछुआ = (कड़ाही, खप्पर) –
कछुआ को उल्टा कर उसे उसी के खोल में पकाना, और पकने के बाद उसी में खाना ही तो कड़ाही या संतों का खप्पर कहलाती है।

59. काहिल – जो हिलते नहीं हैं वही तो काहिल होते हैं।

60. कर + राह = कराह – कर (Tax) और राह (रास्ता) यह दोनों ही आदमी को कराह देते हैं।

61. कोण + Arch = कोणार्क – कोण को ही Arch कहते हैं, अतः यह कोणार्क है।

62. काश + If = काशिफ – काश ऐसा हो जाए या If (अगर) ऐसा हो गया, यही काशिफ है।

63. Cool + Feeling = कुल्फी –
लोगों को Cool की Feeling कराने के लिए गुरुकुल में कुल्फी दी जाती थी।

64. कशमकश – कशमकश में फंसा व्यक्ति ही कश में कश मारता है।

65. कान + स्तर = कनस्तर – कान पकड़ कर किसी का स्तर तय किया जाता है, वही कनस्तर है।

66. कर + Road = करोड़ – जो कर देते हैं, वह Road पर चलते हैं, वह करोड़पति होते हैं।

67. काम + वेश = कमोवेश – काम और वेश इन दोनों में ही व्यक्ति कमोवेश में होता है।

68. खाल + लाश = खल्लाश –
खाल और लाश से ही पहचाना जाता है, कि यह खल्लाश हो गया है।

69. Cup + Cup + पी = कंपकपीं –
जब आदमी को कंपकपी होती है तो वह ठंड में Cup पर Cup चाय पीता है, इसे कहते हैं, कंपकपीं।

70. कनीज = Knees –
कनीजों को हमेशा घुटनों पर रहना पड़ता था, इसीलिए उन्हें देखकर घुटनों के लिए अंग्रेजों ने Knees शब्द बनाया।

71. खट्टा + आशा = खटास –

जब स्त्री खट्टा खाने लगती है, तो घरवालों को एक आशा जगती है कि, अब वह माँ बनने वाली है, परंतु इससे स्त्री और उसके पति के बीच में दूरियाँ आ जाती हैं, क्योंकि अब उसका पति उसके साथ मिलन नहीं कर सकता है। तो ऐसा ही जब किसी के जीवन में होता है, और दूरियाँ आ जाती हैं, तो कहा जाता है, उनके जीवन में खटास आ गई। परंतु यह खटास किसी न किसी को जन्म देती है।

72. कुल – जब यह पूछा जाता है कि आपके घर में कुल कितने लोग हैं, तो वह होता कुल।

73. काट + तिल = कातिल –

किसी को काट-काट कर मारा हो, या किसी को तिल-तिल तड़फाकर मारा हो, दोनों ही कातिल कहलाते हैं।

74. कठपुतली = काठ की पुतली –

आदमी के जिंदा होने की पहचान उसकी पुतली (पलक) से होती है, जब आदमी की पुतली गिरती नहीं है, तो वह काठ का उल्लू हो जाता है, यानि सम्मोहित हो जाता है, और दूसरे के ईशारों पर चलने लगता है, वह काठ की पुतली की तरह होता है।

75. का + आँच = काँच – काँच को आँच नहीं लगती है।

76. नाक + Out = Knockout – नाक में मार कर ही तो किसी को Knockout किया जाता है।

77 Call + लड़ = Caller –

जब किसी को लड़ने के लिए बुलाया जाता है, तब उसकी Caller को पकड़कर उसको बुलाया जाता है।

78. काली + न = कालीन –

नीचे की जमीन काली न हो, इसके लिए जमीन पर कालीन बिछाया जाता था।

79. के + रोशनी = Kerosene –

किसकी रोशनी है। जब Kerosene से पहली बार लालटेन जलाई गई तो, लोगों ने पूछा कि, "किसकी रोशनी है"?

80. खुर + आफत = खुराफात –

जब बैल अपने खुर से जमीन को खोदने लगता है, तब समझो आफत आने वाली है, तो उस समय भाग जाओ। ऐसे ही समय आदमी जब अपने खुर यानि नाखून को मुँह से काटता है तो समझो उस पर आफत आई हुई है, और वह खुराफात करने वाला है।

81. क्रोध –

Crow को ही क्रोध आता है। Crow यानि कौए जब क्रोधित होते हैं, तो सारे कौए एक जगह एकत्रित हो जाते हैं, और जोर-जोर से कांव-कांव करते हैं।

82. ख्व + आब = ख्वाब –

आदमी को दो ही चीजों के ख्वाब आते हैं, एक पानी के, दूसरे खाने के। रेगिस्तानी इलाकों में पानी कम होता है, और खाना भी कभी-कभी नसीब होता है, तो फिर उसे ख्व (खाना) और आब (पानी) के ख्वाब आते हैं।

83. खबरी –
जो बरी हो जाता है, वह खबरी हो जाता है। यानि जो पुलिस को खबर देनेवाला बन जाता है, वही पुलिस का खबरी बन जाता है।

84. कह + हानि = कहानी – जिसमें दूसरे की हानि की बात कही जाती है, वह है कहानी।

85. Kill + आ = किला –
Kill करने के लिए लोगों को जहाँ पर लाया जाता है, उसे कहते हैं "किला"।

86. काया + यम = कायम - यम ही कायम है। पर सोचा यह जाता है, कि काया ही कायम है।

87. Key + चैन = Kitchen -
चाबियाँ हाथ में आते ही, स्त्रियाँ चैन से रहती हैं। Kitchen को संभालती हैं, Kitchen में किसी को घुसने नहीं देतीं हैं। जब तक चाबियाँ हाथ में नहीं आती हैं, तब तक बेचैन रहतीं हैं।

88. कर + मठ = कर्मठ -
मठ ही कर्मठ बना देता है। मठ यानि मट्ठा बनाने के लिए, कर (हाथों) में दम होना चाहिए। तभी दही को बिलो सकते हैं, और मठ में तो बहुत सारी गाय होती हैं, दही भी बहुत सारा होता है, तो उस दही से मट्ठा निकालने के लिए, कर्मठ बनाया जाता है।

89. कर + तब + व्यय = कर्तव्य -
व्यक्ति का कर्तव्य यही है कि पहले कर (Tax) दे उसके बाद वह व्यय करे।

90. Know (जानना) + Ledge (हद) = Knowledge -
अपनी हद को जनना ही Knowledge है।

91. कलेवर = Clever -
Clever (बुद्धिमान) लोग अपना क्लेवर बदल लेते हैं और अच्छे से अच्छे क्लेवर में रहते हैं।

92. Cash + आय = काषाय -
Cash की आय होती रहे जिससे, इसीलिए काषाय है। Cash रुपी आय को प्राप्त करने के लिए ही, काषाय वस्त्र पहने जाते हैं।

93. कपि = Copy = नकल -
बंदर नकल करता है। Monkey Copy करता है, इसलिए बंदर को कपि कहते हैं।

94. कस + सोटी = कसौटी -
"कस कर पकड़ो, मैं सोटी मारता हूँ" यही कसौटी है। कस कर जब सोटी पड़ती है, उसको सहन करना ही कसौटी है।

95. काया + Not = कायनात -
जिस दिन यह काया आपके पास नहीं रहती है, वही तो कायनात है। काया यानि शरीर का नहीं रहना ही कायनात है।

96. काया + अमत = कयामत -
काया जब आपकी अमत हो जाती है, तो फिर कयामत आ जाती है। क्या + अमत = जब कोई

आपके मत से सहमत नहीं होता है। तो कयामत आ जाती है।

97. खुश + गवार = खुशगवार - जब कोई खुश होता है, तो लोग उसे गवार समझते हैं।

98. कार + अगर = कारगर -

आदमी तभी कारगर साबित होता है, जब उसके पास कार होती है। तभी तो आदमी कहता है कि, "काश अगर मेरे पास भी कार होती"। यानि मेरे घर पर भी कार खड़ी होती तो मैं कारगर होता।

99. कथ + अनक = कथानक -

कथा किसी को बिना नाक के करने की। ऐसी कथा जिसमें किसी को बिना नाक के किया गया हो। वह है कथानक।

100. कौम + मल = कोमल -

कौम और मल दोनों ही, कोमल होते हैं। व्यक्ति जब अपनी कौम में रहता है, तो वह कोमल होता है। व्यक्ति का मल ही कोमल होता है, यानि बड़े से बड़ा व्यक्ति भी अपनी जाति में जब आता है, तो वह कोमल हो जाता है। सभी से हिलमिल बात करता है। व्यक्ति का मल ही तो कोमल होता है, इसलिए मलमल का कपड़ा बहुत कोमल होता है। पहले जमाने में स्वर्ण को मल में छुपा कर ले जाते थे। जो लोग सिर पर मैला ढोने का कार्य करते थे, वह यही काम करते थे। डलिया में नीचे स्वर्ण रहता था और ऊपर मल रहता था। जिससे मल की दुर्गंध के कारण उनके पास कोई नहीं आता था। वह आसानी से स्वर्ण एक जगह से दूसरी जगह पर पहुंचा देता था। शरीर पर मल का लेपन करने से त्वचा कोमल रहती है।

101. Key + मती = कीमती - इस संसार में दो चीजें कीमती हैं, एक Key एवं दूसरी मती।

102. कश्चित -

जो अपने चित्त को कस कर रखते हैं, उन्हें कश्चित कहते हैं। यानि "वही लोग मुझे प्राप्त कर सकते हैं, जो अपने चित्त को कस कर रखते हैं। उसे इधर-उधर नहीं जाने देते हैं"।

103. कथा-व्यथा -

मनुष्य बहुत मेहनत करने बाद थक जाता है, किन्तु उसे फिर भी काम करना है। तो जो ऊर्जा उसे फिर काम करने के लिए मिलती है, वह भगवान की शक्ति होती है। इसलिए भगवान की कथा मनुष्य कहता है, "कि मेरी तो ताकत खत्म हो गई थी, वो तो मैंने बजरंगबली का नाम लिया, और न जाने कहाँ से मुझे शक्ति मिल गई, मैंने फिर पूरा काम करके ही दम लिया"। कभी-कभी मनुष्य जब यहाँ-वहाँ व्यय करता है। और उसको सबको बतता फिरता है, "यहाँ इसमें इतना व्यय किया था, वहाँ उसमें उतना व्यय किया था"। व्यय किया था, ही तो व्यय था यानि मनुष्य की व्यथा है।

104. क्षमा -

जब मोक्ष की तरफ जाते हैं, तब सभी से क्षमा माँगते हैं और सभी को क्षमा करते हैं, मोक्ष को अगर उल्टा लिखेंगे तो क्षमो होता है, इसमें से "ओ" निकाल देने पर क्षमा रह जाता है, क्षमा ही मोक्ष का द्वार है। जब क्षमा का लेन-देन बराबर हो जाता है, और दोनों तरफ शून्य Balance आ जाता है, तब क्षमा समाप्त हो जाती है, और केवल "ओ" बचता है। यही "ऊँ" है, जो आखिर में रह जाता है, बस वह

"ऊँ" से ओतप्रोत हो जाता है। "ऊँ" ही उसमें विचरण करता है।

105. खप्पर -

तांत्रिकों में खप्पर में भिक्षा लेने की परम्परा रही है। खप्पर दो प्रकार के होते थे। एक मानव की खोपड़ी का, दूसरा कछुए की खोल का। तान्त्रिक शमशान में से खोपड़ी खोज कर लाता है। किसी तान्त्रिक को खोपड़ी प्राप्त न हो पाए इसके लिए खोपड़ी की कपाल क्रिया की जाती है, ताकि खोपड़ी टूट जाए। किन्तु तान्त्रिक फिर कब्रों में से खोपड़ी खोद लाता है। तान्त्रिक खोपड़ी के अन्दर मौजूद मगज को खाता है। जिससे मुर्दे का सारा ज्ञान तान्त्रिक को Transfer हो जाता है। इस तरह तान्त्रिक प्रत्येक दिन नई खोपड़ी खाता है। इस तरह तान्त्रिक बहुत से लोगों के राज को जान लेता है। तान्त्रिक लम्बी आयु के लिए कछुए के खोल में ही कछुए को खाता है। जिससे कछुए जैसी लम्बी आयु को प्राप्त करता है। प्रत्येक दिन कछुआ खाता है। इसलिए तान्त्रिक के पास मानव की खोपड़ी और कछुए की खोल बहुत अधिक मात्रा में मिल जाती हैं। इस तरह तान्त्रिक मगज खाता है। इसलिए कहावत भी है, "अरे ! क्यों मेरा मगज खाते हो ?" "भई ! मेरा दिमाग मत चाटो" क्योंकि शेर का मगज खाने से शेर का दिमाग होता है। इसलिए राजा लोग शेर का शिकार करके, शेर का मगज खाते थे, कि शेर किस प्रकार जंगल का राजा है, वैसा ही दिमाग हमारा हो जाए। इसलिए जो व्यक्ति शेर के जैसा उठता-बैठता-चलता है। हो न हो अवश्य ही वह शेर का दिमाग खाता है। जो जिसका मगज खाता है, वह वैसा ही हो जाता है। इंसान शरीर से तो इंसान रहता है, किन्तु दिमाग से पता चलता है, कि किस पशु का दिमाग खाया है, तो इंसान वैसा ही व्यवहार करता है। किन्तु खप्पर दो का ही बनता है, मनुष्य की खोपड़ी एवं कछुए की खोल का। बाकी के सिर में भूसा भरकर, Drawing Room की दीवार पर लटका दिया जाता है। तो इसलिए जो भी खप्पर में खाता है, वह निश्चय ही तान्त्रिक की परम्परा का है। तन्त्र में भी वाम तन्त्र का है, जो पंच मकार की उपासना करते हैं, खप्पर में ही खाते-पीते हैं। किन्तु आजकल खप्पर नारियल के खोल के मिलते हैं। शायद अब वैसे तान्त्रिक रहे नहीं, जो हैं वह सोने, चाँदी, पीतल, काँसे, नारियल, लकड़ी, मिट्टी आदि के खप्पर का उपयोग कर रहे हैं। परन्तु असली तान्त्रिक के पास, मनुष्य की खोपड़ी और कछुए की खोल का खप्पर मिलेगा। यह असली तान्त्रिक के पहचान की निशानी है। यह खप्पर का मायना है।

106. Cool + Feel = कुल्फी -

जो Cool Feel कराए, उसे कुल्फी कहते हैं। Cool + Feel = कुल्फी।

107. खातिर + दारी = खातिरदारी -

पहले किसी की खातिर की जाती थी, तो उसके लिए दरी बिछाई जाती थी।

108. कद + दम = कदम -

कद और दम को मिलाकर कदम बनता है। व्यक्ति का कद बढ़ा होना चाहिए। व्यक्ति में दम होना चाहिए। तो ही कदम बनता है। जिसे एक कदम कहते हैं। अगर आप परमात्मा की प्राप्ति के लिए, एक कदम आगे बढ़ते हैं, तो परमात्मा आपकी तरफ निन्यानबे कदम बढ़ता है और सौ प्रतिशत परमात्मा आपका हो जाता है। किन्तु शर्त यही है कि, परमात्मा की तरफ पहला कदम आपको रखना

है - जैसे ट्रेन में पहला कदम आपको रखना है। प्लेन में, बस में, पहला कदम तो आपको रखना ही है। फिर परमात्मा आपका, यह रोज करना है। रोज परमात्मा को याद करना है, एक घड़ी यानि चौबीस मिनट। वीडियो की एक सैकण्ड की फुटेज में भी चौबीस ही फोटो होते हैं। तब जाकर एक सेकंड का वीडियो पूरा होता है। इसलिए एक घड़ी परमात्मा को याद करो। परमात्मा आपको उनसठ घड़ी संभाल लेगा। पूरा एक दिन। इसलिए कदम तो उठाओ। कद भी बढ़ाओ और दम भी बढ़ाओ और बस एक कदम परमात्मा की तरफ बढ़ाओ।

109. कड़ी निन्दा -

कड़ी सभी खाते हैं, सभी कड़ी की प्रशंसा करते हैं, फिर निन्दा के साथ कड़ी को क्यों जोड़ दिया गया।

110. कल + यान = कल्याण -

कल्याण सभी का कल्याण करता है। कल यानि मशीन। यान यानि यात्रा करने का साधन जैसे साईकिल, स्कूटर, बस, रेलगाड़ी, विमान। मशीन का उपयोग करके जल्दी काम निपटा करके आराम करने के लिए वक्त निकाल सकते हैं। मशीन का उपयोग करके अधिक उत्पादन करके लाभ कमा सकते हैं। मशीन का उपयोग करके युद्ध में किसी को भी जीत सकते हैं। यान का उपयोग करके जल्दी से जल्दी बिना थके एक स्थान से दूसरे स्थान तक आ-जा सकते हैं। इस तरह सभी का कल्याण होता है। थकान नहीं होती है, कार्य शीघ्रता से हो जाता है और विजय प्राप्त होती है।

111. कथा + वाचक = कथावाचक -

इसमें दो व्यक्ति हैं। कथा और वाचक। कथ - जो व्यक्ति थक जाते हैं, वह कथा कहते हैं - जैसे पहले पैदल चलते थे, तो जो व्यक्ति थक जाता था, वह अपनी थकान की पूरी कहानी सुनाता था। जिसे कथा कहते थे। वाचक - Watch करनेवाले व्यक्ति को वाचक कहते थे - जैसे कोई किसी को दिनभर Watch करता है। Watch करने के बाद उस व्यक्ति की पूरी कहानी का वाचन करता है, वह वाचक कहलाता है।

112. खाम + ओस = खामोश -

खाम और ओस दोनों एक ही हैं। जिस तरह से ओस खामोशी के साथ गिरती है, उसी तरह से खामोश है। ओस की तरह खाम रहना खामोशी है। खाम यानि Silence. ओस सबसे पवित्र होती है, इसलिए ओस को Osam कहते हैं। ओस चुपचाप गिरती रहती है, उसके गिरने का पता भी नहीं चलता है। ओस की खाम ही खामोशी कहलाती है। खामोशी के साथ ओस उड़ भी जाती है। ओस घास, पेड़-पौधों, मिट्टी सभी के लिए अच्छी होती है।

113. कंठ + स्थ = कंठस्थ -

कंठ में जो स्थित है। बार-बार दोहराने के बाद, जो कंठ में स्थित हो गए हैं, उन्हें कंठस्थ कहते हैं। कंठ में ठहरी आवाज, नाभि से उठनेवाली आवाज को, कानों तक नहीं आने देते हैं। नाभि से निकलने वाली नाद की ध्वनि, ऊपर अंतःकर्ण यानि अन्दर के कानों तक नहीं आ पाती है। क्योंकि जो कंठ में स्थित हो गया है, उसका बार-बार का दोहराव, मार्ग को अवरुद्ध कर देता है। इस तरह से व्यक्ति नाभि से उठनेवाले ब्रह्म के नाद को सुन नहीं पाता है। अतः जो नाभि से उठनेवाले नाद को सुनता है, वह

बाहर के ज्ञान को कंठस्थ नहीं करता है। वह बाहर के ज्ञान को एक बार पढ़ता है और पेट में उतार लेता है और फिर पचा लेता है। क्योंकि बाहर का ज्ञान भी तो भोजन है, इसे भी पचाना पड़ता है। इसलिए कंठस्थ करने की अपेक्षा, शास्त्र को कंठ के नीचे जाने देना चाहिए। फिर कंठ के नीचे गई वस्तु स्वतः ही पच जाती है। और फिर पचने के बाद, जो शास्त्र कंठ से उच्चारित होगा, वह शास्त्र ही परमात्मा की वाणी है। जिस प्रकार पचा हुआ भोजन ऊर्जा प्रदान करता है, उसी प्रकार से पचा हुआ शास्त्र भी ओज, तेज, ऊर्जा प्रदान करता है। सुनाने वाले और सुननेवाले दोनों को इन वस्तुओं से लाभान्वित करता है। पचा हुआ शास्त्र, पचानेवाले की आत्मा में उतर आता है, सदा उसके साथ रहता है, जन्मों-जन्मों साथ रहता है। जबकि कंठस्थ किया गया शास्त्र, शरीर के साथ ही समाप्त हो जाता है। अतः शास्त्र को कंठ से नीचे उतारने के लिए, पहले शास्त्र का पाठ गुरु से सुनना पड़ता है, क्योंकि कान ग्राह्य इन्द्री है। सुनने पर शास्त्र सीधा नाभि की भट्टी में पचने चला जाता है। और अगले दिन फिर वही पाठ गुरु जी को सुना दिया जाता है। यहाँ पर पाठ को सुनना है, सुनने के बाद उसे दोहराना नहीं है और फिर कल सुना देना है। दोहराने से पाठ की परत दर परत बनती जाएगी और वह दिन भर घूमती रहेगी, फिर अगले दिन जो पाठ मिलेगा, उसको तो सुन नहीं पाओगे, क्योंकि पहले ही वाले पाठ का दोहराव इतना होगा कि, दूसरे दिन का पाठ सुनाई नहीं देगा। इसलिए दोहराव नहीं होना चाहिए। साथ ही पुस्तक से पढ़कर पाठ को रटना नहीं चाहिए। क्योंकि पढ़ने में आँख, जिह्वा कार्य करती है। लिखा हुआ जब हम पढ़ते हैं, तब आँख देखती है, और जिह्वा पढ़ती है, जो जिह्वा पढ़ती है, उसको कान सुनते हैं। तो फिर इस तरह बार-बार करने से दोहराव होता है और शास्त्र का ज्ञान नहीं प्राप्त हो पाता है। अतः शास्त्र की पंक्ति को गुरु से सुनें, कल पुनः गुरु को उसको सुना दें। इससे जो शास्त्र का रस है "ज्ञान" वह आपको प्राप्त होगा क्योंकि "रसो वै सः" रस ही परमात्मा है। इसलिए जिसे उस परमात्मा के रस की प्राप्ति हो जाती है। यानि जो शास्त्र हमने सुना, और सुनने के बाद पचा लिया। तो शास्त्र का जो रस है, वह हमारे सिर में ज्ञान के रूप में रहता है। इसलिए जिसके सिर में वह रस रूपी परमात्मा का ज्ञान रहता है। उसे हम सम्मान देते हुए "Sir" कहते हैं। इसलिए शास्त्र के रस रूपी ज्ञान को अपने सिर में स्थान दीजिए और सम्मानपूर्वक अपने आपको "Sir" कहलवाईए।

114. काम-धाम -

काम यानि गृहस्थी। मुझे यह काम है, मुझे वह काम है, मुझे वहाँ काम है, मुझे यहाँ काम है, मुझे तो काम ही काम है, मुझे तो काम से फुरसत नहीं है, किसी को मुझसे काम है, मुझे किसी से काम है, यह काम ही गृहस्थ कहलाता है। धाम यानि धर्म को जानने का स्थान। धर्म देवता पर टिका है, धर्म के देवता का स्थान, धर्म की यात्रा धाम से प्रारंभ होती है, सभी धर्मों के अपने-अपने देवता हैं, इन सभी देवताओं के रहने के स्थान हैं, जिन्हें धाम कहा जाता है। जब व्यक्ति का कार्य काम से नहीं बनता है, तो व्यक्ति देवता से सहायता माँगने के लिए, धाम की यात्रा करता है। इस धाम की यात्रा के कुछ नियम होते हैं, "ब्रह्मचर्य" पहला नियम है। यानि जिसको भी धाम पर जाना है, उसको ब्रह्मचर्य का पालन करना है। क्योंकि एक वक्त खाकर, पैदल चलना है, जिसके लिए शक्ति की आवश्यकता की, पूर्ति ब्रह्मचर्य करता है। "भिक्षा" दूसरा नियम है यानि भिक्षा द्वारा भोजन प्राप्त करना है, वह भी दिन में

एक बार। तीसरा नियम है, "एक स्थान पर एक रात्रि का श्यन" चौथा नियम है, "धाम की पूरी यात्रा पैदल ही करनी है" पाँचवा नियम है, "केवल दो जोड़ी वस्त्र रखने हैं पास में" इन नियमों के साथ धाम की यात्रा करनी है। धाम की यात्रा करने के बाद व्यक्ति, कार्य पूरा हो जाने के बाद पुनः, धाम की यात्रा करता है, जिसमें व्यक्ति देवता को धन्यवाद देता है, दान-पुण्य करता है।

115. खार + is = खारिज - खारे को खारिज कर दिया जाता है, "ऐं यह तो खारा है"।

116. Cane + जूस = कंजूस -

Cane का जूस - जैसे Sugarcane का जूस। तो Sugar को हटा दो और Cane रहने दो। इसलिए भारत में जूस गिलास में पिया जाता है। बाकी जगह जूस Can (डिब्बा) में पिया जाता है। तो भारत में जो गन्ने का जूस सस्ता होता है, जो गन्ने का जूस यानि Cane का जूस पीता है, वह बचत करता है। तो उस बचत करनेवाले को लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि "अरे ! वह तो Cane का जूस पीता है, पैसे बचाता है" फिर यही Cane का Juice ही धीरे-धीरे "कंजूस" बन गया। लेकिन आजकल Cane में मिलनेवाला जूस महँगा है और गिलास में मिलनेवाला जूस सस्ता है।

117. कथा + सार = कथासार -

जब आदमी थक जाता है, तो कहता है, "सार-सार सुना दो, बहुत थक गया हूँ, पूरा न सुन सकूंगा।" जब आदमी कथा सुनाने लगता है, तब सुननेवाला कहता है, "बड़ा रस आ रहा है, आपकी कथा में, इसे जल्दी खत्म मत करना, हमें और सुनाओ।" मेहनत करके जो थक गया है, उसको सोने के लिए, सार मिल जाए, वही उसके लिए, सार्थक है। सार = पशुओं को बाँधने का घर। कथा सुनानेवाले को, कथा सुनाने के बाद भण्डारे में रसा-रसा मिल जाए, वही उसके लिए सार्थक है।

118. Cave + वट = केवट -

एक आदमी का नियम था कि, वह प्रतिदिन एक सूखे वटवृक्ष की खोह में जाकर आराम करता था। एक दिन वह व्यक्ति वटवृक्ष की खोह में गहरी नींद सो रहा था। तभी वहाँ पर बाढ़ आ गई, और वह वटवृक्ष उस बाढ़ के पानी में तैरता रहा और वह आदमी उस वटवृक्ष की खोह में सोता रहा। जब उस आदमी की आँख खुली तो उसने चारों ओर पानी देखा, और वह उस वटवृक्ष को तैरते देखा और भी लोगों ने उसे देखा। वह वटवृक्ष तैरते-तैरते एक जगह किनारे पर लगा। खोह को अंग्रेजी में Cave कहते हैं। वटवृक्ष की Cave में बैठे होने से उस आदमी का नाम केवट पड़ गया।

119. कर + Anti = क्रांति -

अपने कर से, जो कार्य अपने Anti लोगों के लिए करते हैं, वही क्रांति कहलाती है। कर + Anti = क्रांति। कर = हाथ।

120. कुंभकर्ण एवं कर्ण -

दोनों ही नेक दिल, किंतु एक ने साथ दिया रावण का, एक ने साथ दिया दुर्योधन का, वचन और रिश्ता तथा दोस्ती दोनों ने निभाई कि "प्राण जाए पर वचन न जाए"। कर्ण = कान। सूर्य के भीतर हो रहे विस्फोटों की, आवाजों की पहली ध्वनि कान में, सुबह 3:30 बजे सुनाई पड़ती है। जिससे आदमी की नींद खुल जाती है। कान के अन्दर सुनाई देनेवाली, इस सूर्य की पहली ध्वनि का नाम कर्ण है।

इसलिए कर्ण को सूर्य का पुत्र कहते हैं। कुंभ = घड़ा, घड़ा खाली हो तो, उसमें मुँह डालकर बोलने से, ज्यादा आवाज करता है। कई लोग घड़े में Speaker डालकर, आवाज तेज कर लेते हैं। किंतु जब घड़ा भरा हो तो, फिर आवाज नहीं करता है। तो कुंभकर्ण के कान भरे हुए थे, इसलिए उसे किसी की, आवाज नहीं सुनाई देती थी, सिवाय रावण की आवाज के। कहते हैं न कि, "अरे ! यह तो किसी की सुनता ही नहीं, सिवाय उसकी।"

तो यह कुंभकर्ण है, जिसके कान में घड़े की, तरह पानी भरा है, यह किसी की नहीं सुनेगा। सिवाय रावण की आवाज के। घड़े में होनेवाली ध्वनि को कुंभकर्ण कहते हैं।

121. Key + नाड़ा = किनारा -

नाड़ा को Key में डालकर, पयजामा में डाला जाता है। फिर Key को निकाल लिया जाता है और फिर पयजामा को बाँध लिया जाता है। ऐसे ही नाव में एक रस्सी होती है, जिसे नदी के किनारे लगे, लकड़ी के खूँटे से बाँध दिया जाता है। नदी में कितनी ही हिलोरें आएँ, किंतु नाव खड़ी रहती है।

122. Cotton -

सूत से ही सूट बनता है। कपास को काँतने से Cotton बनता है। ऐसा कहते थे लोग कि, "कपास काँतन को दिया है।" "कपास को काँतना है।" यह काँतन ही तो Cotton कहलाता है।

123. कलावा -

जब भी किसी कार्य को, करने का संकल्प किया जाता है, तब उस संकल्प को याद रखने के लिए, कलाई में लाल और पीले रंग का, कच्चे सूत का धागा बाँधा जाता है। जिसे कलावा कहते हैं। जब संकल्प पूरा हो जाता है, तब कलावा निकालकर, विसर्जित कर दिया जाता है। जब व्यक्ति की स्वयं की इतनी, सामर्थ्य नहीं होती है कि, वह संकल्प को पूर्ण कर सके, तब वह कलावा मंदिर में मूर्ति के, हाथ में बाँध देता है। मंदिर में एक मूर्ति के हाथ में, ज्यादा कलावे बाँधने के कारण, कलावा बाँधने की जगह नहीं बचती, तब मंदिर में एक जगह निर्धारित कर दी जाती है, जहाँ कलावा बाँध दिया जाता है। संकल्प के पूरा होने पर, कोई भी कलावा निकालकर विसर्जित कर दिया जाता है। कलावा बाँधते समय जो संकल्प होता है, वह संस्कृत में होता है। उसमें पंचांग, नाम, गोत्र, देश, समय, क्षेत्र, गाँव का नाम होता है। यह कलावा पहचान होता है, इस बात की कि, इस व्यक्ति ने संकल्प लिया है। संकल्प की सिद्धि के लिए, स्वास्थ्य का होना जरूरी है। इसलिए संकल्पित व्यक्ति के, माथे पर हल्दी-चूने का, तिलक लगाया जाता है। इस तरह से यह दो प्रकार, व्यक्ति के संकल्प को पूर्ण करते हैं। कालान्तर में व्यक्ति के संकल्प को, जानने के लिए और व्यक्ति अपने संकल्प को, पूर्ण नहीं कर सके, इसके लिए अनेक उपाय किए गए। कि जिससे व्यक्ति, अपने कलावे को निकाल फेंके, और माथे पर तिलक नहीं लगाए। इसे ही बाद में कलई खुल जाना, कहा जाने लगा। क्योंकि कलावे में ही संकल्प होता है, संकल्प यानी इच्छा यानी Wish, जो कि, किसी को बताई नहीं जाती है। संसार में यह कलावा, कई प्रकार से, कई जगह चलता है और सभी इसे मानते हैं। कलाई में कुछ न कुछ, पहना जाता है और कार्य के पूरा होने तक कलावा उतारते नहीं है। कई-कई लोग तो जिन्दगीभर पहने रहते हैं।

124. Copy -

कोप को पी जाना ही Copy है। जब कोई किसी की Copy, उतारकर उसका मजाक, उड़ाता है। तो जिसका मजाक उड़ाया जा रहा है, तब यह देखकर, उसको अपने भीतर, उत्पन्न होनेवाले कोप को, पी जाना चाहिए। कोप = क्रोध, रोष।

125. Comb = कोम को बाँधना -

Comb की तरह कोम को बाँधकर रखा जाता है। पूरी की पूरी कोम अगर एक Comb से अपने बालों को संवारती है, तो पूरी की पूरी कोम एक रहती है।

126. कुट + टिल (तिल) = कुटिल -

तिल को बार-बार, कूटना पड़ता है, तब जाकर तिल में से, तेल निकलता है। इसे ही कुटिल कहते हैं। कुट + टिल (तिल) इसे ही कहते हैं कि, "इसे तब तक कूटो, जब तक यह कुछ, बक न दे"। यानी "Hit him until, he says something". आजकल इसे दबाव की, नीति कहते हैं। यानि Pressure Policy. इसलिए आजकल, Blood Pressure की बीमारी, जल्दी से हो जाती है। क्योंकि सभी इसी नीति का, उपयोग करते हैं। यहाँ से Pressure डलवाओ, वहाँ से Pressure डलवाओ। जिस पर Pressure डाला जा रहा है, वह अपनी लघुशंका भी, रोक कर बैठा है। तो इस तरह वह, Diabetes का भी मरीज हो गया। अब तो जब भी दबाव डालनेवाली Call आती है, तो उसके Role का स्तर बढ़ जाता है और व्यक्ति धीरे-धीरे Cholesterol का शिकार हो जाता है। उसे फिर छोले-भटूरे भी खाने को, मना कर दिए जाते हैं। इस तरह बार-बार कुटिलता का, उपयोग करके जब व्यक्ति का, पूरा तेल निकाल लिया जाता है। ऊपर से घी-तेल खाने को भी, मना कर दिया जाता है, तो फिर व्यक्ति Sterile हो जाता है और कितना ही Pressurized करो उसमें से फिर तेल नहीं निकलता। तो फिर उन तिलों को, हथेली पर रखकर, तिलांजलि दे दी जाती है। यानी उन तिलों को, हमेशा के लिए छोड़, दिया जाता है। फिर कूटने के लिए नये तिलों की तलाश की जाती है, यही कुटिल है।

127. कन्या + दान = कन्यादान -

कन्या के पिता से, पुरुष इच्छित कन्या का दान मांगता है। कन्या का पिता, पुरुष को अपनी कन्या का दान करता है। विवाहित स्त्री उस पुरुष से, आत्म का दान मांगती है। वह पुरुष, उस स्त्री को आत्म का दान करता है। इस आत्मदान से, स्त्री से संतान की उत्पत्ति होती है। पुरुष की आत्म के द्वारा, जन्म लेने के कारण, उस पुरुष को, उस संतान का आत्मज कहते हैं। स्त्री भी अपनी आत्मा से, उस संतान को सींचती है, इसलिए उस स्त्री को, उस संतान की आत्मजा कहते हैं।

128. केशर + अमीर = कश्मीर -

केशर बेचकर जहाँ के लोग, अमीर होते हैं, उसे ही कश्मीर कहते हैं। केशर + अमीर = कश्मीर। केशर के रेशे आदमी के सिर के केश की तरह दिखाई देते हैं, इसीलिए केशर कहते हैं। केश + सिर = केशर। केशर का उपयोग, Currency के रूप में होता था। इसीलिए केशर ही बाद में, Cash बन गया। केशर = Cash. केशर के एक तिनके का, उपयोग Currency के रूप में होता था और उससे अन्य

वस्तुएं, खरीदी जाती थीं। फिर बाद में केशर को, पानी में डालकर, कागज को केशरिया रंग में, रंग कर उस कागज से, वस्तुएं खरीदी जाने लगीं। यही केशर बाद में, कागज के बीच में, पिरोया जाने लगा - जैसे कि आजकल, कागज के नोट में, धातु का पतला तिनका, पिरोया होता है। पहले के लोग, बीड़ी में, हुक्के में, तम्बाकू की जगह, केशर को डालकर पीते थे। इसलिए उसे कश मारना कहते थे और उसी से "कशमकश" शब्द बना है। संत-महात्माओं के वस्त्र भी, केशरिया रंग के होते थे। क्योंकि संत-महात्मा, कश्मीर की शारदा विद्यापीठ के, Scholar होते थे। इसलिए संत-महात्माओं के, केशरिया वस्त्रों को, केशरिया बाना कहते थे। केशर से बनाया गया। केशर + बनाया = केशरिया बाना।

129. काली + लंका = कलंक -

काला रंग प्रकाश को सोख लेता है। इसी तरह से, किसी की नजर से निकली, प्रकाश की किरण को, चेहरे पर लगा, काला टीका सोख लेता है। जिससे व्यक्ति देखनेवाले की, बुरी नजर से बच जाता है। क्योंकि किसी की नजर, जब लग जाती है, तो अच्छे-अच्छों को, भस्म कर देती है। भगवान शिव की नजर से, काम भस्म हो गया। महर्षि कपिल की नजर से, राजा सगर के, साठ हजार पुत्र भस्म हो गए। इसी नजर से बचने के लिए, काला हिजाब/बुरका पहना जाता है। इसी नजर से बचने के लिए, काला सूट पहना जाता है। इसी नजर से बचने के लिए, काला चश्मा पहना जाता है। इसी नजर से बचने के लिए, आजकल दाढ़ी और बाल, काले रंग में रंगाकर रखे जाते हैं। इसी नजर से बचने के लिए, साधु काला कम्बल रखते हैं, और कई साधु काले वस्त्र पहनते हैं। इसी नजर से बचने के लिए, बच्चे की कमर में काले बालों से, गुंथी करधनी पहनाई जाती है। इसी नजर से बचने के लिए, काले रंग का चश्म-ए-बद्दूर, मकान पर टांगा जाता है। इसी काली नजर से बचने के लिए, भैरव का काले रंग का कलावा, कलाई में पहना जाता है। नजर से बचने के और भी, बहुत-से उपाय हैं। क्योंकि नजर अच्छे-अच्छों को, तबाह कर देती हैं। इसलिए खासकर खूबसूरत एवं, सुन्दर लोगों और चीजों को, नजर न लगे, इसलिए बहुत प्रकार के, उपाय किए जाते हैं। काले रंग से अंकित होने से, लंका कलंकित हो गई। हनुमानजी ने लंका जलाई, तो पूरी लंका काली हो गई। यानी काला अंक पूरी लंका को लग गया। जो की कलंक नाम का शब्द दे गया। काली + लंका = कालेंका। कलेंका = कलंक।

130. Crush + क्षण = कृष्ण -

भगवान श्रीकृष्ण पर सभी का Crush है। कोई भी, क्षणभर को देखता है, तो देखते ही, कृष्ण पर उसको, Crush हो जाता है। Crush + क्षण = कृष्ण। इसे ही मोहित हो जाना भी कहते हैं।

131. खाण्ड + Dove = खाण्डव -

लोग खाण्ड खाते थे और Dove को पालते हैं और वन में रहते थे। इसलिए उसे "खाण्डव वन", कहते थे। खाण्डव वन के, पेड़-पौधों-लताओं को, उखाड़कर जला दिया गया, और वहाँ पर विकसित, सुन्दर महल बना दिया गया। जिसका नया नाम दिया गया, "इन्द्रप्रस्थ"। खाण्डव वन का राजा तक्षक, अपने प्राण बचाकर भागा, और तक्षक ने नये नगर की स्थापना की, जिसे "तक्षशिला"

के नाम से, जाना गया है। साथ ही तक्षक ने, तक्षशिला में विश्वविद्यालय की, स्थापना की, जिसे "तक्षशिला विश्वविद्यालय" के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई। इसी तक्षशिला विश्वविद्यालय में, महर्षि पाणिनि, महर्षि पतंजलि, आचार्य चाणक्य ने, अध्ययन एवं अध्यापन का, कार्य किया था। तथा सम्राट चन्द्रगुप्त मोर्य का, अध्ययन भी, इसी तक्षशिला विश्वविद्यालय में, हुआ था। महाभारत युद्ध के पश्चात, तक्षक ने राजा परीक्षित पर, आक्रमण कर दिया, और खाण्डव वन की, बरबादी का बदला ले लिया। यही खाण्डव वन के, खान लोग, जो शेष नाग को अपना, देवता मानते हैं और, इसी भारत देश के, नागवंश के मूल निवासी हैं। जो वनों को पसंद करते हैं, प्रकृति के प्रेमी हैं, और नाग पंचमी को, नाग की पूजा करते हैं। इन्हीं नागवंशियों ने, भीम को नदी से, निकालकर विष के, असर से मुक्त किया था। इन्हीं नागवंशियों ने राम और लक्ष्मण को, नागपाश से मुक्त करवाया था। इन्हीं नागवंशियों ने, नागपुर, नागौर जैसे नगर बसाये हैं। नागवंशियों के द्वारा बसाये, इन बस्तियों को नागर कहते थे, जिन्हें बाद में नगर, कहा जाने लगा। नागर = नगर। आज जिस भी बस्ती के, नाम के पीछे, नगर शब्द लगा है, वह सारे के सारे, नगर, नागवंशियों द्वारा ही, बसाये गये हैं। इन्हीं नगर में, रहने वाले लोग, नागरिक कहलाते हैं। नागर + इक = नागरिक। नगर में रहनेवाले, इक-इक व्यक्ति का, पहचान-पत्र होता है, इक-इक के अनुसार, नागरिक को नगर की, सुविधाएं मिलती हैं। इसलिए नगर में रहनेवाले, नागरिकों को कम से कम, बच्चे पैदा करने के लिए, कहा जाता है। अक्सर यह भी कहते, सुना गया है कि, "मैं ! इक-इक को, देख लूँगा।" खाण्डव वन के, खान लोग प्रकृति का, पोषण-संरक्षण करते हैं, इसलिए इनके बच्चे भी, कम पैदा होते हैं, और नगरों में पेड़, पौधे, बहुत होते हैं। नागवंश के लोग, आजकल नागौर, नागौरी, नागपाल, नागर कहलाते हैं। वासुकि नाग ने समुद्र मंथन में, रस्सी बनकर अमृत कुंभ को, लाने में सहयोगी रहे थे। इसीलिए नागवंश के लोग, कुंभ मेले को, बहुत अच्छी तरह से, मनाते हैं। आज भी नागवंश के लोग, नागा साधु बनकर, कुंभ मेला मनाते हैं। इन्हीं नागा साधुओं ने, अमृत कुंभ की रक्षा के लिए, बहुत से युद्ध लड़े, और आज तक अमृत कुंभ की, रक्षा कर रहे हैं। वासुकि नाग के वंशज, होने से, नागवंश के नागा साधुओं को, कुंभ मेले में स्नान करने का, सबसे पहला स्थान, प्राप्त होता है। नागवंशियों के आदि देवता, शेष नाग हैं, जिन्होंने पूरी पृथ्वी पर, राज्य किया था, इसीलिए कहा जााता है कि, पृथ्वी को शेष नाग, संभाले हुए हैं। पृथ्वी के लगभग सभी देशों में, नागवंश के लोग, मिल जाते हैं, जो नागों को पालते हैं, नागों की पूजा करते हैं, उन देशों की, राज्य व्यवस्था को, संभालते हैं। पूरी दुनिया के राजा लोग, नागवंशियों को, राजकोष की रक्षा की, जिम्मेदारी दे देते थे। इसीलिए यह कहावत है कि, "हर खजाने की रक्षा करता हुआ, नाग मिल जायेगा।" सभी खजानों की रक्षा करनेवाले नागवंशी ही थे, जिन पर सभी विश्वास करते थे। इसलिए खाण्डव वन के, खान लोगों का, एवं तक्षक के वंशज, नागलोगों का आपस में, बहुत सम्बन्ध है। यह नागवंशी आज भी, खाण्ड खाते हैं, और Dove को पालते हैं तथा नाग की पूजा करते हैं। Dove के जैसे, रंग वाले दूध से, नहाते हैं। इसीलिए नागवंशी आज भी, दूध के धुले कहलाते हैं, क्योंकि नागवंशी सदा, सच बोलते हैं, ईमानदार होते हैं, जनता के Tax से इकट्ठे, किए गए, राजकीय कोष (खजाने) को, सदियों-सदियों संभालते हैं। इसीलिए तक्षशिला विश्वविद्यालय

से, आचार्य चाणक्य जैसे, ईमानदार प्रधानमंत्री पाते हैं, जो खुद के कार्य के लिए, खुद के तेलवाला दीपक जलाते हैं, राजकीय कार्य के लिए, राज्य के तेलवाला, दीपक जलाते हैं। तभी राजकीय व्यवस्था को, चलाने के लिए, आचार्य चाणक्य ने "अर्थशास्त्र", नाम के ग्रन्थ की रचना की। योगसूत्र के रचनाकार, पाणिनी अष्टाध्यायी पर, महाभाष्य के रचनाकार, आयुर्वेद के ग्रन्थ, चरकसंहिता के रचनाकार, शेषनाग के अवतार, महर्षि पतंजलि भी, नागवंशी ही थे। जैसे कि एक कहावत है, छोटे गुरु का, बड़े गुरु का, नाग लो भाई, नाग लो। तक्षशिला विश्वविद्यालय से ही, आचार्य चाणक्य ने, अर्थशास्त्र की विद्या प्राप्त की थी, और, किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को, संचालित करनेवाली, "कर प्रणाली" का अध्ययन किया था। इसी तक्षशिला विश्वविद्यालय के नाम से, कर प्रणाली का नाम, तक्षेक्षण पड़ा। तक्ष शिक्षण = तक्षेक्षण = Taxation. और तक्षक के नाम से, Tax का नाम पड़ा। तक्षक = तक्ष = Tax.

132. Key + Fight = किफ़ायत -

Key के लिए ही हमेशा, Fight होती है। इसे ही किफ़ायत कहते हैं। Key + Fight = किफ़ायत। एक स्त्री सारे घर में, जहाँ वस्तुएँ रखती है, वहाँ पर, Lock लगाकर रखती है, और उसकी Key, अपने पास रखती है। क्योंकि वर स्त्री किफ़ायत, करना चाहती है। किंतु उन्हीं Key को, प्राप्त करने के लिए, जब Fight होती है, उसे ही Key Fight कहते हैं। ऐसे ही लोकतंत्र में, जब प्रत्येक विभागों पर, Lock लगा दिया जाता है, और लोगों को, किफ़ायत की व्यवस्था से, सभी वस्तुओं का वितरण, किया जाता है, उसे लोकतंत्र कहते हैं। क्योंकि सभी को, सभी वस्तुएँ समानरूप से प्राप्त हों। बस इसी Key की सुरक्षा के लिए, जो मती इस्तेमाल करते हैं, वह बहुत कीमती होती है। Key + मती = कीमती। जब इस तरह किफ़ायत Luxury में बदल जाती है, तो लोकतंत्र फिर Luxuries हो जाता है, और राजतंत्र में परिवर्तित हो जाता है।

133. करेला - कड़वाऐला से कड़वैला से कड़ैला से करैला से करेला शब्द बना।

134. कर्ण + अर्क = कर्णाक -

कर्णाक का अपभ्रंश कोणार्क है, यह कोणार्क नहीं, यह कर्णाक है, क्योंकि बंगाल, उड़ीसा की, भाषा में, "ओ" का उच्चारण विशेषतर, किया जाता है। इसीलिए यह "क" से "को", में उच्चारित किया जाता है। तो कर्णाक यानि कर्ण के द्वारा बनाया गया, सूर्य का मन्दिर। कर्ण + अर्क = कर्णाक। कर्ण = सूर्य का पुत्र। अर्क = ज्योति, प्रकाश, किरण, । दुर्योधन ने कर्ण को, अंग देश का राजा बना दिया था, अंग देश का विस्तार, आज के कोणार्क के समुद्री तट तक था। इसीलिए, कर्ण ने सूर्य की उपासना, करने के लिए, शिवलिंग की स्थापना की। कर्णाक के शिवलिंग पर, सूर्य का प्रकाश सीधा पड़ता था, क्योंकि कर्णाक के, मन्दिर के ऊपर गुम्बज नहीं था। कर्णाक के शिवलिंग का, पूजन अमावस्या के दिन, दोपहर को होता था। क्योंकि अमावस्या के दिन, चंद्रमा का दर्शन नहीं होता है। इस तरह से, 12 अमावस्या को, 12 बार कर्णाक के, शिवलिंग का पूजन होता था। सन् 1903 में कर्णाक के, मन्दिर को दीवारें लगाकर, रेत से भर दिया गया। कर्णाक मन्दिर के, अन्दर ऐसा क्या था, जिसे छिपाने के लिए, दीवारें लगाकर, उसे रेत से भर दिया गया। कर्ण के द्वारा स्थापित, शिवलिंग के कारण, इस पूरे

स्थान को, कलिंग भी कहा जाता है। कर्ण + लिंग = कर्णलिंग = कलिंग। भारत के पश्चिमी समुद्री तट पर, चंद्रमा का सोमनाथ मन्दिर, सोम द्वारा स्थापित, किया गया। एवं, भारत के पूर्वी समुद्री तट पर, सूर्य का कर्णाक मन्दिर, कर्ण द्वारा स्थापित, किया गया। सोमनाथ को तो कई बार, ध्वस्त किया गया, किंतु, कर्णाक को केवल एक बार, ध्वस्त कर पाए, और, उड़ीसा के इस क्षेत्र में, अभी तक किसी, विदेशी राजा का शासन नहीं रहा। गुजरात के सोमनाथ मन्दिर एवं उड़ीसा के कोणार्क मन्दिर में क्या Connection हो सकता है ? दोनों ही मन्दिर में गुम्बज नहीं है। एक मन्दिर चन्द्रमा का है एवं दूसरा मन्दिर सूर्य का है। दोनों मन्दिर समुद्र तट पर स्थित हैं। दोनों ही मन्दिर में स्थित, शिवलिंग हवा में लटकते थे। सोमनाथ मन्दिर में, पूर्णिमा की रात को, पूजन होता था। कोणार्क मन्दिर में, अमावस्या के दिन में, पूजन होता था। भारत देश के पूर्वी, समुद्री कोने पर, सूर्य का मन्दिर, दूसरे पश्चिमी समुद्री कोने पर, चन्द्र का मन्दिर, कोई तो इसमें, रहस्य होगा ? कर्णाक मन्दिर का, अक्षांश 19°53.15N है। सोमनाथ का मन्दिर, अक्षांश 20°53.16.9N है। यानी केवल उन्नीस-बीस का अन्तर है।

135. कौन + जी = कुंजी -

कौन के जी में क्या है ? अगर यह पता चल जाए, तो उसको नियंत्रित किया, जा सकता है। कौन + जी = कुंजी। इसीलिए, दूसरे के जी में क्या है ? यह जानने की कोशिश, हमेशा से की जाती रही है। जब किसी के जी के बारे में, पता चल जाता है कि, इसकी पसंद, नापसंद क्या है ? किस चीज में तटस्थ है ? तब उस व्यक्ति को आसानी से नियंत्रण में लाया जा सकता है।

पसंद = Like

नापसंद = Dislike

तटस्थ = Neutral

इन तीन के नियम से ही, उसे नियंत्रण में ला सकते हैं। नियम + त्रण = नियंत्रण। उसकी पसंद की करो तो, उसका परिणाम यह होगा। उसकी नापसंद की करो तो, उसका परिणाम यह होगा। उसकी तटस्टथा की करो तो, उसका परिणाम यह होगा। इस तरह से, तीन नियम बनाकर, उसे नियंत्रण में ले आते हैं। जब उस पर नियम लगा दिये जाते हैं, तब वह कहाँ, खुल कर जी पाता है ? क्योंकि नियम को भंग करने पर नित्य यम का भय दिखाया जाता है कि, "अगर नियम तोड़ा, तो प्राण दण्ड मिलेगा"। नित्य + यम = नियम। इस तरह से, नियंत्रण में रहनेवाले व्यक्ति को, कहा जाता है कि, "खुल कर जीना है, तो खुद पर नियंत्रण रखो।"

136. कला + Love = कलावा -

जब किसी को कोई "कला" सिखाते हैं और जब किसी को "Love" करते हैं। तब उसकी कलाई पर कलावा बाँधते हैं। कला + Love = कलावा। हर उस्ताद अपने शागिर्द को, कोई भी कला, सिखाने की शुरुआत, दाहिने हाथ की कलाई पर, धागा बाँधकर करते हैं। कोई भी प्रेमी, अपनी प्रेमिका की कलाई पर, धागा बाँधकर, अपने प्रेम को प्रारंभ करते हैं। यही धागा बाद में, कंगन बन गया। कला जिससे आती है, उसे कलाई कहते हैं। कला + आई = कलाई।

137. खीरा = खीर -

खीरे की ही तो, खीर बनती है, इसलिए इसका नाम ही, खीरा है।

138. खोह + खाली = खोखली -

खोह खाली होती है, इसीलिए खोखली होती है।

139. ख़्वाब + Wish = ख़्वाहिश -

ख़्वाब Wish के देखे जाते हैं, इसीलिए ख़्वाहिश कहलाते हैं। अगर आप अपने ख़्वाब किसी को बता देते हैं, तो आप अपनी Wish उसको बता देते हैं। दूसरों के ख़्वाबों को जानकर उन ख़्वाबों के माध्यम से उसकी Wish समझने का अध्ययन भी किया जाता है और ख्वाब उन्हीं को आते हैं, जो Wish रखते हैं।

140. खल + जी = खलजी - खल है जिसके जी में वह खलजी हो गया।

141. खिल + जी = खिलजी - खिल गया जिसका जी, वह खिलजी हो गया।

142. कनेऊ -

कानों में जमनेवाली, कड़वाहट वाली कनेऊ, यह कनेऊ, वही कड़वी बातें हैं, जो लोगों द्वारा बोली जाती हैं, जो कान में कड़वा कनेऊ बनकर जम जाती हैं। कड़वे कनेऊ के रूप में जमी, यही बातें, कानों में गूँजती रहती हैं, और जब सब तरफ शांति होती है, तब सुनाई देती हैं। यह बातें सुनाई न दें, इसीलिए संगीत का सहारा लिया जाता है। जो कान की सफाई करते रहते हैं, उनको यह कड़वी बातें नहीं सुनाई देती हैं। इसीलिए कान में जमनेवाले कड़वे कनेऊ की सफाई करते रहिए। इससे परमात्मा का गुंजायमान "ॐ" स्पष्ट सुनाई देता है। कनेऊ = कान में जमनेवाला कड़वा मैल।

143. कला + कृति = कलाकृति –

कला होती है जिस कृति में उसे कलाकृति कहते हैं।

144. कि + Saw = किस्सा -

कि Saw ही किस्सा कहलाता है। कि + Saw = किस्सा। "अच्छा बताओ तुमने क्या देखा" ? किस्सा यहाँ से शुरु होता है। फिर सुनानेवाला जो सुनाता है, वह है किस्सा। "का हानि हुई" ? से जो प्रारंभ होती है, वह कहानी कहलाती है। का + हानि = कहानी। जब आदमी अपनी हानि या दूसरे की हानि की बात बताता है, तब उसे कहानी कहते हैं। जैसे अकीरा कुरुसावा की Film में Rashomon एक समुराई योद्धा की हानि की कहानी है। Rashomon में जो लकड़हारा, पुजारी, डाकू, समुराई की पत्नी ने जो देखा वह सुनाते हैं, वह किस्सा है।

145. खाया + क्या-क्या = खाका -

किसी ने खाया क्या-क्या है, उसके खाने से उसका खाका तैयार किया जाता है। खाया + क्या-क्या = खाका। वह व्यक्ति Veg है या Nov-Veg है। Veg है तो, Veg में क्या-क्या खाता है ? Non-Veg है तो, Non-Veg में क्या-क्या खाता है ? क्योंकि जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन। इस तरह केवल मात्र खाने से, व्यक्ति का पूरा खाका तैयार, कर लिया जाता है। इसीलिए स्त्री केवल पुरुष का भोजन देखती है, यह खाता क्या-क्या है। बस उसी अनुसार स्त्री के द्वारा, पुरुष को पूरी तरह पहचान लिया जाता है।

146. केवल + लय = कैवल्य -

जब आप शिखर पर होते हैं, उस समय आपके पास कोई दूसरा मनुष्य नहीं होता है। इसे ही शास्त्रों में कैवल्य कहा गया है। केवल + लय = कैवल्य। सामाजिक तबका इसे तनहाई कहता है। संस्कृति इसे अकेलापन कहती है। राजनीति में इसे राजा कहा गया है। वहाँ न वार्तालाप है, वहाँ न शोरगुल है। वहाँ केवल मौन है, भीतर का और बाहर का भी। शिखर पर से उतरकर जब नीचे आते हैं, तब लोगों के बहुत से सवाल होते हैं, ताने होते हैं। लोगों को संतुष्ट कर पाना असंभव होता है। फिर लोगों की भीड़ में खो जाते हैं, शिखर पर बिताये दिन याद आते हैं। फिर जो तलहटी का अकेलापन है, वह झेलना पड़ता है।

147. क्या + राय = किराया –

राय का भी किराया लगता है। जब कोई आपसे पूछे, "इस संबंध में आपकी क्या राय है" ? तब आपको उस दी गई राय का, किराया भी लेना चाहिए। क्योंकि व्यक्ति को जब Advance में, किराया मिल जाता है, तब ही व्यक्ति किसी को, Key देता है। क्योंकि भारत में कहावत भी तो है, जब भी कोई किसी को, राय देता है, तब यह जरूर कहता है, "लाख रुपए की बात है, किसी से न कहिओ, केवल तोसों कह रहो हों, गांठ बांधकर रख लिओ"। तो भारत देश में, एक राय की कीमत, लाख रुपए है। इसलिए किसी को भी, अपनी राय यूं ही मत देते रहिए।

148. खाते पीते घर का है -

जब यह कहा जाता है, "यह तो खाने पीने वाला आदमी है"। तब इसका आशय होता है कि, यह व्यक्ति मांस खाता है एवं शराब पीता है। और जब यह कहा जाता है, "यह तो खाते पीते घर से है"। तब भी इसका आशय होता है, यह मांस खानेवाले एवं शराब पीने वाले घर से है। मांस खाना एवं शराब पीना, एक तरह से अमीर होने की निशानी है। शाकाहारी होना एवं पानी पीना, गरीब होने की निशानी है। इसीलिए व्यक्ति जब अमीर हो जाता है, तब व्यक्ति मांस खाना एवं शराब पीना प्रारंभ कर देता है, इस प्रकार व्यक्ति यह प्रदर्शित करता है कि, वह व्यक्ति अमीर हो गया है। इस अमीरी को दर्शाने के लिए व्यक्ति ऐसी जगह आना जाना प्रारंभ करता है, जहां केवल अमीर जाते हैं और जहां केवल मांस से बने व्यंजन एवं विभिन्न प्रकार की महंगी शराब परोसी जाती है । और उस जगह पर शबाब का रक्स भी होता है। यह अमीरी में सब कुछ जायज माना जाता है। चाहे वह शराब हो शबाब हो या कबाब हो। कितना बड़े से बड़ा शाकाहारी भी अमीर होने पर जब अमीरों की संगत में जाता है, तब वह भी शराबी कबाबी बन ही जाता है। इसके लिए अमीरों ने बहुत से क्लब खोल रखे हैं। जहां यह अमीर अपनी मुद्रा (धन) को पानी की तरह बहाते हैं। मछली, मांस, मदिरा, मैथुन का लुफ्त उठाते हैं। इस तरह से धन के मद में यह अमीर वामपंथ के मार्ग पर चलने लग जाते हैं। इन अमीरों के लिए पूजा पाठ एक प्रदर्शन रह जाता है, जिसे यह अपनी मर्जी से करवाते हैं। इस कारण से गरीब लोगों की आस्था भी धर्म के लिए डावांडोल होने लगती है। यह अमीर मंहगाई को बढ़ाते जाते हैं, महंगाई से मिले अत्यधिक मुनाफे का उपयोग, अपनी अय्याशियों को पूरा करने के लिए करते हैं। दिखावे के लिए थोड़ा बहुत दान धर्म भी कर देते हैं। अमीरों की अय्याशी की कीमत गरीबों को अपने

धन से चुकानी होती है। क्योंकि अमीरों के द्वारा उत्पादित की गई खाद्य वस्तुओं को बहुत मंहगे दामों पर खरीदना पड़ता है। लोगों को यही थोड़ी सी अमीरी विकास दिखाई देती है, "कि विकास हो रहा है"।

149. कण + कन + नाद = कणाद -

कण में से जो नाद निकलता है और कन में जो नाद सुनाई देता है, उसे कणाद कहते हैं। कण + कन + नाद = कणाद। कन = कान। कण में से निकलने वाले नाद को, जिस महषि ने पहली बार, अपने कान में सुना, उनको महषि कणाद कहते हैं। प्रत्येक कण में से नाद निकलता है, यह नाद 'ॐ' की ध्वनि में, कान में सुनाई देता है। 'ॐ' परमात्मा का नाम है, इसीलिए कहते हैं, "कण-कन में भगवान हैं"।

150. काम + ना = कामना -

कामना ही काम करवाती है, यह तामसिकता है। कोई मनुष्य जब खाली बैठा होता है, तब उस खाली मनुष्य को, ताना दिया जाता है, 'खाली बैठा है, तुझे कोई काम ना है' ? यानी काम के लिए कामना पैदा करनी पड़ती है। यही काम मनुष्य को, काम > क्रोध > लोभ > मोह > ईर्ष्या > राग > द्वेष > अहंकार तक ले जाता है। तब मनुष्य को फिर से ताना दिया जाता है कि, 'यह तो बड़ा अहंकारी हो गया है'। Car लेने के लिए आर्य जो करता है, वह कार्य कहलाता है। यह राजसिकता है। धर्म ही कर्म करवाता है, यह सात्विकता है। कर्म में फल की अनिश्चितता है, फल मिले कि ना मिले, कितनी देर बाद फल मिले, यह कुछ भी निश्चित नहीं है। इसीलिए मनुष्य कर्म, बहुत कम करता है। क्योंकि कर्म को करने के लिए, धर्म की आवश्यकता पड़ती है। धर्म यानी Morality. किन्तु मनुष्य तो आजकल धार्मिक पूजा-पाठ भी Morality से नहीं करता है। तो इसीलिए कर्म भी नहीं करता है। किन्तु कामना के वशीभूत होकर, काम जरूर पूरी ईमानदारी से करता है। इसीलिए तो मनुष्य को काम के लिए प्रेरित करने के लिए, भूतकाल में लोगों के द्वारा, किए गए कामों की कहानियां सुनाई जाती हैं। भूतकाल की इन कहानियों के वश में होकर मनुष्य वशीभूत हो जाता है और कामना को पैदा करता है, तथा काम में जुट जाता है। इसीलिए तो कहते हैं, 'पता नहीं इसको तो काम का ऐसा भूत सवार है कि, किसी की सुनता ही नहीं है, जब देखो तो काम काम, बस यही कहता रहता है, आज काम से वहां जाना है, कल काम से वहां जाना है। इसका यह काम का भूत, कब उतरेगा पता नहीं'। इस तरह से कामना जब तक मनुष्य को अहंकारी नहीं बना देती है तब तक काम का भूत मनुष्य के सिर से नहीं उतरता है। कामना की पूर्ति के लिए, तामसिक भोजन लेना पड़ता है। परमात्मा के ध्यान को त्यागकर, भगवान की भक्ति को छोड़कर, भूत-प्रेतों की पूजा करने के लिए, तंत्र की शरण में जाता है, और फिर तांत्रिक उससे ना जाने क्या-क्या करवाता है और कामना तो ना जाने मनुष्य से क्या क्या करवा देती है। जबकि शास्त्र कहते हैं कि, 'मनुष्य को परमात्मा तब ही मिलता है, जब मनुष्य ध्यान को करके, अपने अंत:करण को कामनारहित कर लेता है'। ध्यान करने के लिए सात्विक भोजन लेना होता है। सात्विक भोजन मनुष्य के अंत:करण में धर्म की भावना उत्पन्न करता है, भावना से भक्ति प्रारंभ हो जाती है, भक्ति के प्रारंभ होते ही, ध्यान लग जाता है। ध्यान मनुष्य को परमात्मा तक ले जाता है। परमात्मा को देखकर मनुष्य, अपरिमित शांति को उपलब्ध हो जाता है। हां आर्य बनने के

लिए तथा Car, मकान आदि भौतिक सुख सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए कार्य करो। आर्य यानी श्रेष्ठ। किन्तु कार्य को करने के लिए राजसिक भोजन लेना होगा। तभी राजसी ठाठ-बाट मिलेगा। क्योंकि कार्य को करने के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता है, इस परिश्रम को करने के लिए, शक्ति से भरपूर राजसिक भोजन तो लेना ही पड़ेगा। जिन स्थानों के मनुष्यों ने भौतिक तरक्की की है, तो उन स्थानों के मनुष्यों ने बहुत मेहनत की है। और बहुत मेहनत करने के लिए राजसी भोजन किया है। चाहे वह स्थान चीन हो कि अमेरिका हो कि युरोप हों। इसीलिए तो भारत देश के लोगों ने भी Chinese Food, European Food, American Food, वाला राजसिक भोजन लेना प्रारंभ कर दिया है। जल्दी ही भारत देश भी भौतिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण विकसित स्थान बन जाएगा। किन्तु राजसिक भोजन लेनेवाला मनुष्य अपने आपको राजा ही समझता है। धर्म से भगवान से उस मनुष्य का कोई सरोकार नहीं होता है। अपने आपको ही श्रेष्ठ मानता है। उस मनुष्य से भक्ति या ध्यान या धर्म की आशा कभी नहीं करना। क्योंकि वह मनुष्य स्वयं को निर्माता मानता है। इसीलिए आजकल जहां देखो वहां Creative लोग मिल जाएंगे। तो इस तरह से काम, कार्य एवं कर्म का तात्पर्य कहा गया है।

151. क्या + रुग्ण = करुणा -

किसी रुग्ण को देखकर, मन में जो भाव आता है, उसे करुणा कहते हैं।

152. कुत्ते का तर्क = कुतर्क - कुत्ता जब तर्क करता है, उसे कुतर्क कहते हैं।

153. काल + लिख = कालिख -

काल के द्वारा जो लिख दी जाती है, वही कालिख कहलाती है।

154. कान + ठहर = कण्ठ -

कान जहाँ जाकर ठहर जाते हैं, उसे कण्ठ कहते हैं। कान से सुनी गई बात, कण्ठ में जाकर ठहर जाती है, और कण्ठ से ही पलट कर जिह्वा पर आ जाती है।

155. Key + रत्न = कीर्तन -

रत्न को प्राप्त करने की Key है कीर्तन। Key + रत्न = कीर्तन। रहता है जो तन में, उसे कहते हैं रत्न। रहता + तन = रत्न। सभी के तन में, परमात्मा रूपी रत्न रहता है। तो तन में रहनेवाले परमात्मा रूपी रत्न को, प्राप्त करने की Key है कीर्तन।

156. Kill + List = क्लिष्ट -

Kill करने की List बनाने का कार्य, सबसे क्लिष्ट होता है। Kill + List = क्लिष्ट। जब किसी को यह कार्य दिया जाता है, तब कहा जाता है कि, "जाओ किस-किस को Kill करना है, उसकी एक List बनाकर लाओ"। उसके लिए तब यह List बनाना, बहुत ही क्लिष्टकर होता है।

157. खान + दान = खानदान - खान ही दान करते हैं, इसलिए खानदान कहते हैं।

158. कान + Way = Convey -

कान के Way से जो बात जाती है, वही बात तो Convey हो जाती है। तभी तो लोग कहते हैं, "कौन है बे" "कौन ने ये बात कही है" ? कान + Way = Convey. जब कोई किसी को कहता है, "तुझे एक

बात बताता हूं, पर तूने किसी और को बताना नहीं है" । बता + ना = बताना । बस यही "बता ना" ही तो, बात को एक Way दे देता है, और बात Convey हो जाती है और उस ना बतानेवाली बात की एक पूरी "Convoy" बन जाती है । कानोंकान बात, Convey होती हुई, कहां से कहां तक पहुंच जाती है । इसे ही तो "Mouth To Mouth Publicity" के नाम से जानते हैं । इसलिए अगर बात Convey करनी है तो, बस इतना ही कह दो, "इसे किसी को बताना मत" । बस बात कान के Way से चलती हुई, पूरी दुनिया में Convey हो जाएगी ।

159. कान + घी = कंघी -

पहले रोज़ लोटा लेकर, सुबह शाम दो तीन मील चल लेते थे, साथ में अपनी वाक् से, वाक्य बोलकर वाकया भी जान लेते थे । Walk की Walk हो जाती थी, साथ ही किसी को ताक कर, उसके बारे में Talk भी हो जाती थी । बैठे बैठे शरीर का "गु" भी बाहर आता था, और Talk करते करते, मन का गुबार भी बाहर निकल जाता था । जमीन को भी अगली फसल के लिए, खाद मिल जाता था, क्योंकि दो चार दिन में ही, "मल" ही मिट्टी बन जाता था । साथ में दातौन भी कर ली जाती थी, दातौन व्यक्ति के दांत को, तो स्वच्छ करती ही थी, साथ में व्यक्ति की Tone को भी, अच्छा बना देती थी । क्योंकि दातौन के दोनों फलकों से, जीभ की खखार भी साफ की जाती थी । लोटा मांजते मांजते शरीर को भी, स्नान करवा लिया जाता था । इस तरह से बिना कुछ खर्च किए, केवल एक लोटे पानी में, अन्दर बाहर से अपने आपको, शुद्ध कर लिया जाता था । तब फिर कलेवा किया जाता था । रोटी में चुपड़े हुए घी को ही, हाथ-पैरों के साथ साथ, बालों एवं मुंह पर लगा लिया जाता था । कंघी से फिर मांग काढ़ ली जाती थी, कंघी से ही कानों के पीछे लगा घी, बालों में अच्छी तरह से मिला दिया जाता था । कान + घी = कंघी । जो कान के पीछे क आ घी, बालों में मिलाने का कार्य करे, वह "कंघी" कहलाती है । यही तो भारतीय संस्कृति कहलाती थी । आजकल जो लोग बड़े बड़े, Farm में House बनाकर रहते हैं, वह अपने Farm में स्थित, House से दूर शौचालय बनवाते हैं । फिर उस House से धीरे धीरे, अपने Farm में ही, दो चार मील घूम घाम लेते हैं, तब अपने Farm बने शौचालय में जाते हैं । वहीं दातून भी करते हैं, वहीं स्नान भी करते हैं, और Farm में स्थित गाय का, दूध, दही, मक्खन, मट्ठा, लस्सी, छास, घी खाते पीते हैं । तथा Farm में उगी सब्जियां, अनाज, दालें आदि खाते हैं । इस तरह से प्रकृति में, प्राकृतिक जीवन का आनंद लेते हैं । इसलिए लोग लोटा लेकर Walk करते हुए साथ साथ Talk भी करते हुए जाते थे । Walk की Walk हो जाती थी और Talk की Talk हो जाती थी । खास बात यह है कि, यह Walk बिना स्नान किए, बिना शौच किए, बिना दातुन किए की जाती थी ।

160. कौम + मुद = Comedy -

कौम को मुद करने के लिए Comedy की जाती है । कौम + मुद = Comedy. Comedy = कौमुदी । कौम में जब किसी को खुश करने के लिए जो कार्य किया जाता है उसे “Comedy” कहते हैं ।

161. खरी + Read = खरीद -

व्यक्ति हमेशा दो तरह की, वस्तुएँ खरीदता है, पहली जो खरी होती हैं, दूसरी जो Read करने के लिए

होती हैं। इसे ही खरीद कहते हैं। खरी + Read = खरीद। खरी = शुद्ध। किन्तु आजकल व्यक्ति, वस्तुओं के Packet पर, वस्तुओं के बारे में लिखी, खरी बातों को Read करके, वस्तुओं को तो खरीद लेता है। किन्तु व्यक्ति Read करने के लिए, कुछ नहीं खरीदता है। क्योंकि व्यक्ति की Read करने की, Capacity उतनी ही बची है, जितनी Capacity में व्यक्ति, वस्तुओं के Packet पर लिखी, खरी बातों को Read कर लेता है। क्योंकि व्यक्ति को बहुत सी, वस्तुओं के Packet की बातों को, Read करना पढ़ता है, तब जाकर व्यक्ति, कोई वस्तु खरीद पाता है।

162. कोष + ईश्वर = कोशिश -

कोष और ईश्वर दोनों से ही, कोशिश की जाती है। कोष + ईश्वर = कोशिश। कोई कोष से और ईश्वर से, कोशिश करता है।

163. कान + सुननेवाला = कंस -

कान से सुननेवाला "कंस" कहलाता है। कान + सुननेवाला = कंस। राजा कंस ने कान से आकाशवाणी को सुना, इसलिए नाम पड़ा "कंस"। उस आकाशवाणी के कारण, राजा कंस ने हत्या करके पाप किए, और उन पाप के फलस्वरूप, राजा कंस का वध कर दिया गया। इसलिए व्यक्ति को, किसी की भी बातों को सुनकर, उन बातों पर यकीन नहीं करना चाहिए। और राजा कंस ने "कांसा" नामक धातु को बनाया था। राजा कंस के नाम से, उस धातु का नाम "कांसा" पड़ा। कंस = कांसा। और कांसा के बर्तनों में, पानी पीना एवं भोजन करना, बहुत ही स्वास्थ्य दायक होता है। कांसे की पहचान भी आवाज से होती है। राजा कंस के यहां होनेवाले, मल्लयुद्ध की क्रीड़ा में, राजा कंस के द्वारा, कांसे से बने "कांस्य पदक", विजेताओं को देकर, पुरुस्कृत किया जाता था। क्योंकि यह पदक राजा कंस के द्वारा, लिए जाते थे और, राजा कंस के द्वारा बनाई गई, कांसा धातु के होते थे। इसलिए इनका नाम "कांस्य" पदक पड़ा। और राजा कंस के नाम का प्रचार हुआ कि, "कंस के यहां से जीता हुआ है"। राजा कंस के वंशजों को "कंसाना" कहा गया, आज भी कंसाना लोग, कांसे के बर्तन बनाकर बेचते हैं। राजा कंस की जाति गुर्जर थी।

164. काठ + नाई = कठिनाई -

काठ की नाई ही कठिनाई है। जब नाई भी कह दे कि, "आपके बाल तो बिल्कुल, काठ की नाई हो गये हैं" तब समझो कठिनाई है।

165. ख़त + रहा = ख़तरा -

सभी को ख़तरा है, सभी ख़त रहे हैं। ख़त + रहा = ख़तरा। जब दीमक लग जाती है, तब लकड़ी ख़त जाती है। और सभी में दीमक लगी हुई है, इसलिए सभी धीरे-धीरे ख़त रहे हैं। किन्तु अगर जिसको ख़त ना नहीं है, वह तब ख़त्ना करवा ले। ख़त + ना = ख़त्ना। ख़त्ना करवाने वाले को, किसी तरह का ख़तरा नहीं होता है।

166. कूटना + तिल = कुटिल -

तिल को कूटने वाले को, कौटिल्य कहते हैं। कूटना + तिल = कुटिल। कुटिल से कौटिल्य बना।

167. खलु = आकाश -

"सर्वं खलु इदं ब्रह्म", सारी खाली यही ब्रह्म है। जहां जहां भी खाली जगह है, वहां वहां ब्रह्म है। खलु = आकाश। खाली जगह को आकाश कहते हैं। तो यह आकाश ही "ब्रह्म" है।

168. Key + मत = कीमत -

Key ही मत है, जिस तरह से Key के द्वारा, Lock को बंद-खोल दिया जाता है। उसी तरह से मत डालकर लोकतंत्र को मजबूत किया जाता है।

169. कल्प + ना = कल्पना -

जब यह कल्प नहीं रहेगा, तब क्या होगा ? व्यक्ति इसी की कल्पना करता है।

170. काया + कल्प = कायाकल्प -

काया कल्प तक रहे, इसके लिए काया को कायाकल्प किया जाता है। काया + कल्प = कायाकल्प। सभी तपस्या करनेवाले, यह वर अवश्य मांगते हैं कि, उनकी काया हमेशा रहे।

171. ख़ुश + आम + मद = ख़ुशामद -

किसी को ख़ुश करना हो तो, आम और मद लेकर जाओ, आम एवं मद को प्राप्त करके, लोग ख़ुश हो जाते हैं। ख़ुश + आम + मद = ख़ुशामद। भारत में लोग किसी की, ख़ुशामद करने के लिए, आम भेजते हैं कि, "फलां फलां के यहां से, यह आम आए हैं"। या यह कहते हैं कि, "यह हमारी आमों की बगिया के, पहले पहले आम हैं, बड़े ही रसीले और मीठे हैं, आपके लिए लाएं हैं"। या आम का आचार खिलाते हैं, या किसी के यहां पर, आम का आचार भेज देते हैं, या लेकर जाते हैं। और कहते हैं कि, "घर का बना हुआ आम का आचार है, आप जरूर खाईयेगा"। विदेशों में लोग किसी की, ख़ुशामद करने के लिए, मद की Bottle लेकर जाते हैं, और कहते हैं कि, "दुनिया की सबसे अच्छी मद है, मैंने तुम्हारे लिए मंगवाई है"। या किसी को मद का प्याला, भरकर पेश करते हैं कि, "आज हमारी तरफ से एक, प्याला तो पीजिए"। इस तरह से आम और मद से, लोग ख़ुश हो जाते हैं और, लोगों की ख़ुशामद हो जाती है, लोग इसी ख़ुशी में, ख़ुशामद करनेवाले का कार्य कर देते हैं।

172. खिलखिला + Laugh = खिलाफ -

खिलखिला कर जब Laugh करते हैं, तब वह ही खिलाफ हो जाते हैं। खिलखिला + Laugh = खिलाफ। व्यक्ति जब खिलखिला कर, Laugh करता है, तब यह मान लिया जाता है कि, "यह हमारे खिलाफ हो गया है"। इसलिए व्यक्ति को खिलने एवं, खेलने और Laugh करने को, नहीं दिया जाता है। क्योंकि व्यक्ति तभी खिलता, जब व्यक्ति खेलता है। खिल + खेल = खिलखिला। जब व्यक्ति खेलता है, तब व्यक्ति खिलता है और, खेल में जीतने पर Laugh करता है। इसलिए व्यक्ति जब खिलखिला कर, Laugh करता है, तब व्यक्ति को "खिलाफ" समझा जाता है। और खिलखिलाते व्यक्ति को, Off कर दिया जाता है, इसे ही खिलाफ कहते हैं। खिलखिला + Off = खिलाफ। इसलिए व्यक्ति को ना, खेलने एवं खिलने दिया जाता है, और ना ही व्यक्ति को, Laugh करने को दिया जाता है।

173. कुम + भगवान = कुंभ -

कुम से भरे हुए भगवान को, कुंभ कहते हैं। कुम + भगवान = कुंभ। कुम = Cum. कुम को अमृत

कहा गया है।

174. काया + iLL = Kill -

किसी को Kill करने के लिए, उसकी काया को iLL किया जाता है। काया + iLL = Kill. जिससे यह पता नहीं चले कि, इसे किसने Kill किया है। लोग यही समझे कि, iLL होकर मरा है।

175. खा + जाना = खजाना -

उस समय धन रखने के स्थान को, खजाना कहते थे और, ख़ज़ाने की देखभाल करने वाले को, खजांची कहते थे। क्योंकि सब लोग खजाने को, खा जाना चाहते थे। खा + जाना = खजाना। इसलिए जब खजांची से, कुछ वित्त मांगते थे तो, खजांची कहता था कि, "हां ! अब खजाने में कुछ नहीं बचा, हमारी जान है बची है, तो हमारी जान खा लो"। खजांची की जान, खजाने पर ही लगी रहती थी। इसलिए उसे खजांची कहते थे। ख़ज़ाना + ची = खजांची। ची = जान।

176. Key + ताबे = किताब –

किसी को भी ताबे में लेने की, Key है किताब। Key + ताबे = किताब। जब बहुत सारे लोग काबू में, नहीं आते हैं, तो उन लोगों को काबू में, लेने के लिए 'किताब' लिखी जाती है। और उन लोगों को बताया जाता है कि, 'इस किताब में जो लिखा है, उसको मानो और उसी किताब में, लिखे के अनुसार चलो'। इस तरह से किताब के द्वारा, सभी को ताबे में लिया जाता है। इसलिए किताब सभी को, ताबे में लेने की कुंजी है।

177. कार्य + क्रम = कार्यक्रम -

जब कार्य एक क्रम के अनुसार होता है, उसे कार्यक्रम कहते हैं। कार्य + क्रम = कार्यक्रम।

178. कल + लिंग = कलिंग -

कल का लिंग ही कलिंग है। कल + लिंग = कलिंग। कल यानि Machine का लिंग, ही कलिंग है।

179. खातिर + नाक = खातिरनाक -

व्यक्ति किसी की खातिर, नाक के लिए करता है। अब वो चाहे अपनी नाक हो, या दूसरे की नाक हो। खातिर + नाक = खातिरनाक। यानि नाक व्यक्ति की इज्जत का प्रतीक है। तो व्यक्ति अपनी इज्जत बचाने के लिए, या दूसरे की इज्जत करने के लिए, खातिरनाक करता है। अगर व्यक्ति ने खातिर नाक के, नहीं किया तो, फिर वह खतरनाक हो जाता है। यानि लोग यही कहेंगे कि, 'अगर उसने उसकी नाक की, खातिर नहीं किया है, तो कम से कम अपनी नाक की, खातिर तो करना चाहिए था।

180. काल + पल + इक = काल्पनिक -

काल का पल इक ही है। काल के जिस पल से, व्यक्ति गुजर रहा है, काल का वह पल इक ही है। काल + पल + इक = काल्पनिक। जिसप्रकार से Film Projector के, सामने से इक-इक चित्र गुजरता है, और परदे पर वही चित्र चलता हुआ, दिखाई पड़ता है। उसी प्रकार से मन के मंच पर, इक-इक पल गुजरता है, और कल्पना का चित्र, चलता हुआ दिखाई देता है। उसी कल्पना के चित्र के इक-इक जोड़ को, काल्पनिक कहते हैं।

181. कल + यान = कल्याण –

कलयुग में कल का यान मिलना ही, कलयुग में कल्याण होता है। कल + यान = कल्याण। कल = Machine. यान = गाड़ी। यानि Machine से चलनेवाली गाड़ी ही, प्रत्येक व्यक्ति कलयुग में चाहता है कि, 'मेरे पास भी एक गाड़ी होनी चाहिए, तभी मेरा कल्याण होगा'।

182. क्रोध + पचाना = कोप -

किसी के द्वारा कोप भवन का, उपयोग करने के बाद, मकानों में कोप भवन का, बनना स्थगित हो गया है। **क्रोध + पचाना = कोप।** क्रोध को पचाने का कार्य जहां होता है, उसे कोप भवन कहते हैं। क्रोध + पचाना = कोप। पहले समय में मकानों में, एक कमरा बनाया जाता था। क्रोध आने पर व्यक्ति इस कमरे में, बैठकर अपने क्रोध को पचाता था। इसलिए इस कमरे को, कोप भवन कहते थे। चिल्लाओ, रोओ, गाओ, हंसो, नाचो, यानि कि किसी भी प्रकार का, मानसिक या शारीरिक उपद्रव, इस कोप भवन में करो। इतना सब करने के बाद, शिथिल होकर सो जाओ। और फिर सोकर उठो तो, मन एवं शरीर तरोताजा लगता है। इस क्रिया को रेचन कहते हैं। इस तरह से कोप भवन में, अपने भीतर का क्रोध निकाल देने पर, व्यक्ति समाज में क्रोध नहीं कर पाता है। और समाज किसी के कोप से सुरक्षित रहता है। इसलिए क्रोध को पचाने के लिए, मकानों में कोप भवन बनाए जाते थे। आजकल कोप भवन नहीं बनाए जाते हैं, इसलिए क्रोध आजकल सड़कों पर आ गया है। और क्रोध का प्रदर्शन कर, व्यक्ति अपने आपको अभिव्यक्त करता है।

183. खाली = लिख -

जो व्यक्ति अपने आपको, खाली कर सकता है, वही व्यक्ति लिख सकता है। खाली = लिख। लिखनेवाला अपने आपको, खाली करता जाता है। इसलिए लिखनेवाले को, लेखक कहते हैं। लिखता है जो 'ख' 'क', वही लेखक होता है। सब लोग 'क' 'ख' से लिखते हैं। यानि सीधा लिखते हैं। किन्तु लेखक 'ख' 'क' से लिखता है। यानि लेखक उल्टा लिखता है। इसलिए लेखक के द्वारा लिखी गई बात, कई वर्षों के बाद समझ में आती है। यही समझदारी उस लेखक के द्वारा, लिखी गई कृति को हमेशा के लिए, अमर कर देती है।

184. कुली + Ya = कुलिया –

कुली जिसमें से निकल जाएं, उसे कुलिया कहते हैं। कुली + Ya = कुलिया। कुली = Porter.

185. कान + सुननेवाला = कंस –

कान से सुननेवाला "कंस" कहलाता है। कान + सुननेवाला = कंस। राजा कंस ने कान से आकाशवाणी को सुना, इसलिए नाम पड़ा "कंस"। उस आकाशवाणी के कारण, राजा कंस ने हत्या करके पाप किए, और उन पाप के फलस्वरूप, राजा कंस का वध कर दिया गया। इसलिए व्यक्ति को, किसी की भी बातों को सुनकर, उन बातों पर यकीन नहीं करना चाहिए। और राजा कंस ने "कांसा" नामक धातु को बनाया था। राजा कंस के नाम से, उस धातु का नाम "कांसा" पड़ा। कंस = कांसा। आस-पास के गांव के लोग, पानी मिला हुआ दूध, मथुरा में बेचने आते थे। इससे मथुरा वाले लोग बड़े परेशान थे। तब मथुरा के राजा कंस ने, एक नई धातु बनाई। उस धातु को कंस के नाम से, कांसा कहा गया। कांसा के बर्तन में दूध और पानी, अलग-अलग दिखाई देता है। कांसे के बर्तन में, पानी

ऊपर और दूध नीचे रहता है। कांसे की पहचान भी आवाज से होती है। राजा कंस के यहां होनेवाले, मल्लयुद्ध की क्रीड़ा में, राजा कंस के द्वारा, कांसे से बने "कांस्य पदक", विजेताओं को देकर, पुरुस्कृत किया जाता था। क्योंकि यह पदक राजा कंस के द्वारा, दिए जाते थे और, राजा कंस के द्वारा बनाई गई, कांसा धातु के होते थे। इसलिए इनका नाम "कांस्य" पदक पड़ा। और राजा कंस के नाम का प्रचार हुआ कि, "राजा कंस के यहां से, जीता हुआ "कांसे का पदक" है"। कंस के वंशज आज भी कंसाना नाम से रहते हैं, और कंसाना लोग कांसे के बर्तन बनाते हैं। तथा अन्य धातुओं से निर्मित बर्तनों का भी, व्यापार करते हैं।

186. कल + Key = कल्कि -

कल और Key के जोड़ को कल्कि कहा जाता है। कल = मशीन। Key = चाबी। कल यानी मशीन, इसलिए इस युग को कल का युग कहते हैं, यानी मशीन का युग। और प्रत्येक मशीन, एक Key से खुलती है। चाहे उस Key को, Password, OTP, PIN, CAPTCHA, PATTERN, Face Lock, कुछ भी कहो। कल और Key के इसी जोड़ को कल्कि कहा जाता है। अकेले कल से कुछ नहीं होगा, अकेले Key से कुछ नहीं होगा, किन्तु कल और Key के जुड़ने पर ही, सभी कुछ हो जाता है, जिसे कल्कि कहा जाता है। आज के कलयुग में सभी कार्य, मशीन पर निर्भर हो गए हैं, और इन मशीन को खोलने के लिए Key है। इसलिए यह युग कल और Key पर आधारित है। कल को शराब भी कहा जाता है, और शराब जब मनुष्य के शरीर में जाती है, तब मनुष्य के मन की चाबी बन जाती है। और मन के द्वार को खोल देती है। शराब को पीने से, मनुष्य का शरीर भी मशीन (कल) बन जाता है। और मनुष्य अपनी सुध-बुध खो देता है, तथा मशीन की भांति ही, दूसरे मनुष्य के वश में हो जाता है। शराब पिलानेवाले के अधीन हो जाता है। शराब उस मनुष्य के शरीर को, जकड़ लेती है। और मन को खोल देती है। मनुष्य के शरीर को वश में करने के लिए, एवं मनुष्य के मन की बात को जानने के लिए, शराब की इस चाबी का उपयोग, सब भली-भांति करना जानते हैं। इसलिए शराब को किसी न किसी माध्यम से, मनुष्य के शरीर में प्रवेश करवा देते हैं। इस तरह से शराब के द्वारा, मनुष्य के शरीर को कल (मशीन) बना देते हैं, और उसी शराब को Key बनाकर, मनुष्य के मन की बातों को जान लेते हैं। इस तरह से कल यानी मशीन का यह युग, कल (शराब) को ही Key बनाकर, कल्कि बन जाता है। कल (मशीन) + Key (शराब) = कल्कि। यानी इस युग में, मशीन और शराब का ही जलवा रहेगा। इसलिए इस युग को कल का युग कहते हैं। कल + युग = कलयुग। कल (मशीन, शराब) का युग।

L

1. लित + रेचन = Literature -

जो लित रहते हैं रेचन में, वह Literature लिखते हैं, यानि अपने को खाली करने में लगे रहते हैं। अपने मन की बात लिखना, अपने आपको खाली करना होता है। यानि जब आप कोई बात लिख देते हैं, तो आप उस बात के बोझ से खाली हो जाते हैं और वह बात फिर कभी आपके मन में दुबारा नहीं आती है, क्योंकि बात जब तक लिख दी न जाए, जब तक बात मन में घूमती रहती है।

2. लीद + डर = Leader –

पहले जमाने में घोड़े, हाथी, गधे, ऊँट आदि से सफर करते थे। उनकी लीद की पहचान करना और किस दिशा में गये हैं, कितने दिन पुरानी लीद है। यह सब जानकारी जो बिना किसी डर के जानता था, वह फिर सबको बताता था और वही लीद पहचानने वाला बिना डर के आगे-आगे चलता था। उसी लीद पहचानने वाले के बताए रास्ते पर कारवाँ आगे बढ़ता था। यही लीद को Lead करना बोला गया। इसलिए आगे चलकर लीद और डर की पहचान करने वाला ही Leader हो गया।

3. Firewall = लक्ष्मण रेखा -

किसी प्रकार का Virus न घुसे इसके लिए लक्ष्मण ने पहला Antivirus बनाया है। जिसे लक्ष्मण रेखा यानि लक्ष्मण+Ray+खा कहते हैं। यह ऐसी Ray थीं जो अदृश्य थीं। कोई अन्दर घुसता तो उसे जला (Fire) देती थीं। एक अदृश्य अग्नि दीवार (Firewall) की तरह थीं। और Ray थीं जो अन्दर घुसने वाले को खा जाती थीं इसलिए रेखा थीं।

4. लीद = Lead -

लीद से ही Lead मिलती है। पूर्वकाल में सब घोड़ों से चलते थे। घोड़े लीद करते थे। उसी लीद से उनके पीछे चलने वाले Lead लेते थे।

5.Leap Year -

जिस तरह से गोबर-चूने से लीप-पोत कर सब बराबर कर दिया जाता है। उसी प्रकार बचे हुए समय को भी Leap Year में लीप कर बराबर कर दिया जाता है।

6. लाई + न = Line -

"देखो कितनी देर हो गई, कब से गई है, पर लाई न अभी तक"। "अरे Line में खड़ी होगी। मैं भी गई थी, बड़ी Line लगी थी"। किसी चीज को लाने में देर लगे, तो समझो Line में लगे हैं।

7. Leak + Age = Leakage -

Age ही Leak होती है। सभी इसी Leak पर चलनेवाले होते हैं, कोई Leak से हटकर नहीं चल सकता है। Leak + Age = Leakage. आदमी सभी तरह की Leakage बंद कर सकता है। किन्तु Age की Leakage बंद नहीं कर सकता है। संसार में एक आयु ही तो है, जो लीक पर चल रही है, और आयु के इस रिसाव को, कोई बंद नहीं कर सकता है। भले ही कोई कितने ही प्रयत्न कर ले, आदमी कितना ही कहे कि, वह लीक पर नहीं चलता है। परन्तु आयु की लीक पर सभी को चलना

पड़ता है। सभी की Age Leak होती है, इस Leakage को कोई भी Water Proofing बंद नहीं कर सकती है।

8. लेते + ऋण = Latrine -

लेते हैं जो ऋण, वो बनाते हैं Latrine. एक आदमी था, वो ऋण लेता था। पर वह ऋण चुका नहीं पाया। अपने घर पर ही रहने लगा। ऋण देनेवालों ने सोचा कि, "शौच को तो बाहर आएगा"। पर ऋण लेनेवाले ने, घर के अन्दर ही शौचालय बना लिया और इस तरह Latrine बनी।

9. Leak = लीक -

Leak हो रही वस्तु पर चलने वाले ही, लीक पर चलते हैं। कार से तेल Leak हो रहा था, उस Leak होते तेल की धार पर चलनेवाला मंजिल को पा जाता है।

10. लाई + बल + टीस = Liabilities -

लाई जाती है जो बल से वह टीस देती है। कोई भी चीज जो बलपूर्वक हासिल की जाती वह हमेशा एक जिम्मेदारी ही बनी रहती है।

11. Lonely -

जो Loan लेते हैं, वह Lonely रहते हैं, यानि जो लोग कर्जा लेते हैं, उनका जीवन भी अकेलेपन में बीतता है। क्योंकि वह कर्जा देनेवाले से बच कर या छुप कर रहते हैं।

12. Lie + Sense = License – Lie बोलने के लिए Sense चाहिए।

13. लाते + चार = लाचार -

लाते हैं जिसको उठाकर चार, वही है लाचार।

14. लेत + तीर = Letter –

तीर के द्वारा लाया गया। जो ले जाता है तीर, उसको कहते हैं Letter. पहले जमाने में जब किसी को कोई पत्र भेजता था, तो उसे तीर में बींधकर छोड़ देता था। वो तीर पेड़ आदि में लग जाता था, उसे ही लेत तीर कहते हैं।

15. Laun + Dry = Laundry –

ऐसा Laun जो Dry करने के लिए होता है, उसे Laundry कहते हैं।

16. लिफाफा = Leaf –

पहले पत्र Leaf यानि पत्ते पर लिखे जाते थे और उसी Leaf से लिफाफा बना और पत्ते से उस लिफाफे पर लिखा पता और पत्र बना।

17. लट = लत –

नशे की लत से ही लट बन जाती है। यानि साधुओं को नशे की लत रहती है, जिससे उनकी लट बन जाती है।

18. Label – जो चीजें Lab में रखी जाती हैं, उनमें ही Label लगाया जाता है।

19. Lip + Stick = Lipstick –

पत्नी बहुत बोलती थी, तो पति ने एक Stick दिया, जो Sticky था, उसको लगाने पर ही पत्नी के

औंठ चिपक गये और वह Lipstick हो गया।

20. लाना + ईष्ट = List –

ईष्ट के सामने जब व्यक्ति चीजों को लाने की माँग रखता है, तो वह List बनाता है।

21. Lesson – किसी के पास Less (कम) है, उसे Lesson दिया जाता है।

22. Love + वर = Lover -

जिससे Love होता है, उसे ही वर बनाया जाता है। तभी तो वह Lover होता है। Love + वर = Lover. यानी जिससे Love होता है, विवाह उसी से किया जाता है। यानी जिससे Love होता है, Relation उसी से बनाया जाता है। जिससे आप प्रेम करते हैं, उसको ही आप श्रेष्ठ मानते हैं। प्रेम = Love. श्रेष्ठ = वर।

23. लतीफा – जिन्हें लत लगी होती है, वही लतीफा सुनाते हैं।

24. Laugh + फन + डर = लफन्डर –

तीन लोग लफन्डर होते हैं, जो Laugh करते हैं, फन दिखाते हैं, और डराते हैं।

25. Larva = लारवा –

जब व्यक्ति के मुँह से लार निकलती है, तो वह किसी न किसी किटाणु का लारवा है, जो उसके शरीर में पल रहा है और लार के माध्यम से बाहर निकलता है।

26. लोमड़ी – जिसके बाल बहुत ही मुलायम होते हैं, उसे लोमड़ी कहते हैं।

27. लजा – जो जाल में फंस जाते हैं, वही लजाते हैं।

28. League – गली में जो खेली जाती है, वही तो League है।

29. लचक – Clutch में लचक होनी चाहिए।

30. लाश + कर = लश्कर – लाशों पर कर लगाना ही लश्कर है।

31. Lodge = लॉज – लॉज बचाने के लिए Lodge बनाई जाती है।

32. लाई + जोल = Lizol – सफाई करने के लिए जल लेकर आओ।

33. लाँघ – Long को ही लाँघ कहा जाता है।

34. Logic – लोग जिसका जिक्र करें, तो उसमें Logic जरुर देते हैं।

35. Logo –

लोगों द्वारा किसी को दिया गया नाम ही Logo है। Logo - कोई भी कंपनी लोगों (People) को अपनी पहचान दिखाने के लिए Logo बनाती है। यह वह चिन्ह होता है, जो लोगों में फैलाया जाता है, इसीलिए इसे Logo कहते हैं। लोगों तक पहुंचने के लिए होता है Logo. Logo के माध्यम से ही लोग किसी के बारे में जानते हैं।

36. Lottery – लूट के माल को बाँटने के लिए Lottery निकाली जाती है।

37. लचीला – चीला ही लचीला होता है।

38. लय + जी = लेजिम – जब लय होती है जी में, उसे कहते हैं लेजिम।

39. लाड़ + डर = Ladder -

लाड़ और डर ही जीवन की सीढ़ी है। एक तरफ लाड़-प्यार किया जाता है। दूसरी तरफ़ डर-भय भी दिखाया जाता है। इसी Ladder पर चड़कर व्यक्ति सफलता की सीढ़ी चढ़ता है।

40. लोभी + Buying = Lobbying -

लोभी यानि जो लाभ लेना चाहते हैं। जिनसे कहना पड़ता है। "लो" "भी" अब क्या शर्माना। Buying यानि जिन्हें खरीदा जाता है। इन दो प्रकार के लोगों से, आप अपने लिए Lobbying कर सकते हैं। ऐसे लोग ही किसी के पक्ष में Lobbying करते हैं।

41. Lift -

एक Leaf आदमी को Lift कर लेती है, इसीलिए कहते हैं न कि, "डूबते को तिनके का सहारा"।

42. लोक + Down = Lockdown -

पृथ्वी एक लोक है, अब एक ही दाव यहाँ चल सकता है, कि सभी Down हो जाएँ। सारे पृथ्वी लोक को नीचे कर दिया। पृथ्वी लोक के लोग आसमानों से बात कर रहे थे, परमात्मा ने कहा लोक को नीचे करो, मनुष्यों को उनकी औकात बता दो, मनुष्य की मनमानी को पृथ्वी भी बहुत सहन कर चुकी थी, मनुष्य मानता ही नहीं था। पृथ्वी ने अपने आपको, अपने आसमान को, स्वच्छ और साफ रखने के लिये पृथ्वी लोक को ही Lock Down कर दिया। न जमीन पर प्रदूषण होगा, न आसमान पर प्रदूषण होगा, जब से यह Corona Virus आया है, और Lock Down हुआ है, तब से प्रदूषण जमीन-आसमान कहीं भी नहीं है। चिड़ियों की आवाजें सुनाई देने लगी हैं। सारे पृथ्वी लोक के मनुष्यों का दिमाग Down हो गया है। पृथ्वी ने अपना दाव जो चल दिया है। सारी पृथ्वी पर हलचल बंद है। मनुष्य सौ साल पहले वाली दुनिया में चला गया है, जहाँ महामारी फैलने पर कोई दवा काम नहीं करती थी, और मनुष्य महामाई की पूजा करता था। अब घर पर रहकर समय काटने के लिए परमात्मा का ध्यान, भजन, करिए, कोई पुस्तक पढ़िये। यही संसार का सार्थक ज्ञान है, कि प्राण सभी को प्यारे हैं। शरीर सभी को प्यारा है। आत्मा और शरीर को जोड़नेवाला सेतु प्राण है। प्राण में अगर पंख लग गए तो, प्राण पखेरु उड़ जाते हैं। इसलिए जब घर पर ही रहना है, तो समय का सदुपयोग कीजिए, परमात्मा का ध्यान कीजिए। यह परमात्मा के द्वारा पृथ्वी को स्वच्छ-स्वस्थ रखने का साफ-सफाई अभियान है। परमात्मा के इस कार्य में सहयोग करते हुए, स्वच्छता पर ध्यान दीजिए। क्योंकि यह Corona Virus गन्दगी से ज्यादा फैलता है। हमारे देश में तो स्वच्छता का अभियान बहुत पहले से चल रहा है। इसलिए हमारे देश में इसके फैलने की दर बहुत ही कम है। जितनी साफ-सफाई रखेंगे, उतना यह आपसे दूर रहेगा और आप बचे रहेंगे।

43. लाज + Bob = लाजवाब -

लाज या Bob दोनों एक ही बात हैं। स्त्री की लाज, स्त्री के स्तन (Boob) में होती है। इसलिए जब स्त्री लाजवन्ती होती है, तो वह स्तनों को छिपा लेती है।

44. Lip + Saw = लिप्सा -

व्यक्ति की लिप्सा, व्यक्ति के Lip को देखकर, जानी जा सकती है। कि व्यक्ति को कौन-से व्यंजन पसंद हैं ? क्योंकि उन व्यंजनों को देखते ही, व्यक्ति के ओठों पर लार टपकने लगती है। जिस भोजन

के व्यंजन को देखकर, व्यक्ति की लार ओठों पर टपके, तो समझो व्यक्ति की मनःस्थिति वैसी है, क्योंकि जैसा अन्न वैसा मन।

45. लंगर -

जहाज के लंगर डाल दिये गए। क्योंकि जहाज के भी Lungs होते हैं, जो जहाज के तैरने के समय फालतू कचरे को रोकते हैं, जो जालियों के बने होते हैं। इन जालियों से बने Lungs की साफ-सफाई करने के लिए, जब जहाज को बीच पानी में रोका जाता है, तो रोकने के लिए जो लोहे का बड़ा टुकड़ा डाला जाता है, जिसे Anchor भी कहते हैं। उसी को लंगर डालना कहते हैं। अब जब जहाज रुका है, तो सभी लोगों को एक पंक्ति में बिठाकर खाना भी खिला दिया जाता है। जहाज की जालियों की सफाई होने के बाद, फिर जहाज का लंगर वापिस निकाल लिया जाता है और जहाज आगे यात्रा पर बड़ जाता है। इसी तरह Air Conditioner में जालियाँ लगी होती हैं, जो Air Conditioner की Lungs होती हैं, उन जालियों को भी निकाल कर बार-बार साफ करना पड़ता है। गाड़ी में भी Filter लगे होते हैं।

46. Luck + क्षण = लक्षण -

Luck एवं क्षण दोनों बड़े ही, छन-छन कर आते हैं। व्यक्ति यह सोचता रहता है कि, उसका Luck एक दिन आएगा और, समय क्षण-क्षण होकर निकलता जाता है। न तो व्यक्ति Luck को प्राप्त कर पाता है, और न ही क्षण को पकड़ पाता है। व्यक्ति के जन्म लेनेवाले क्षण से ही, व्यक्ति का Luck लिखा जाता है। Luck क्षण के मिलान से ही, व्यक्ति के लक्षण के बारे में पता चलता है। यही लक्षण है।

47. लकीर का फ़कीर -

लकीरों से वर्ण बनते हैं, वर्णों के जोड़ से शब्द बनते हैं,शब्दों के जोड़ से वाक्य बनते हैं, वाक्यों के जोड़ से शास्त्र बनते हैं, तो जो साधु इन शास्त्रों को पढ़ता है। किंतु साधना करके उनका, अनुभव नहीं करता है। वह साधु लकीर का फ़कीर होता है। क्योंकि साधना किए गए, व्यक्ति को साधु कहते हैं। साधनारहित व्यक्ति को, लकीर का फ़कीर कहते हैं। क्योंकि जो वर्णों की लकीरें हैं, वही उसने पढ़ रखी हैं। किंतु उनको अनुभव नहीं किया है।

48. लत + सी = लस्सी -

"एन्नु ये लत सी, तो मैंने लस्सी पिला दी"। किसी भी प्रकार की लत को छुड़ाने के लिए, लस्सी पीनी चाहिए। लत छूट जाएगी।

49. Look + जरी = Luxury -

Look, मैंने जरी के, वस्त्र पहने हैं। जरी के वस्त्र, पहनना ही, Luxury होता है।

50. लोम + मढ़ = लोमड़ -

लोम जिसका, मढ़ा जाता है, उसे लोमड़ कहा जाता है। लोमड़ी की खाल, सबसे ज्यादा, मुलायम होती है। इसीलिए, लोमड़ी की खाल का, उपयोग सब जगह, किया जाता है। Follow the Ox, Is called Fox. Follow + Ox = Fox. पंचतंत्र की, एक कथा के अनुसार, एक लोमड़, एक Ox के

लटकते, अंडकोषों को देखकर, उस Ox को Follow, करता रहता है, कि "यह फल जब गिरेंगे, तब मैं इनको खा लूँगा" । किंतु सारा जीवन, निकल जाता है, न वह फल गिरते हैं, न ही लोमड़ उसे खा पाया।

51. Luck + क्षण = लक्षण -

व्यक्ति सोचता है कि, वह क्षण, कब आएगा ? जब उसका, Luck खुलेगा। यानी, अपनी किस्मत के, दरवाजे के खुलने का, इंतजार, करता व्यक्ति ही, Luck और क्षण को, देखता रहता है। इसलिए व्यक्ति, लक्षण देखता है। Luck + क्षण = लक्षण। Luck देखनेवाला जानकार, कहता है कि, "जब वो क्षण आ जाएगा, तब में आपको, बता दूँगा, आप इस कार्य को, उसी क्षण कर देना, आपका Luck बदल जाएगा।" तो Luck को, माननेवाले लोग, उस क्षण की आस में, रहते हैं। कि, कब वह क्षण आएगा, और, उनका Luck बदल जाएगा। इसी आस में, वह समय में, लक्षण का अंदाजा, लगाते रहते हैं। और, समय को गँवाते, रहते हैं। और, समय, छन-छन कर, कल-कल करता हुआ, उनके सामने से ही, निकलता रहता है। व्यक्ति बोलता रहता है, "आज नहीं कल करेंगे" । जबकि Luck का विपरीत कल होता है।

52. Lime + मिट = Limit -

Limit Cross करोगे तो, मिट जाओगे। Lime + मिट = Limit. Lime = चूना। चूने का उपयोग, जमीन पर, Lines बनाने के लिए, किया जाता है। निर्देश यह दिया जाता है कि, इन्हीं चूने की बनी, Lines के बीच चलना है। अगर Lime की, Lines को Cross किया, तो मिट जाओगे। Lime + मिट = Limit. इसीलिए आज भी, Road पर सफेद धारियों से, निशान बने रहते हैं कि, अपनी तरफ चलना है, सफेद धारी को, Cross नहीं करना है। गाड़ी की पूजा करते समय, सबसे पहले गाड़ी के, पहियों के नीचे, Lime को रखकर, उस Lime पर, गाड़ी चढ़ाई जाती है। Lime = नींबू। यह बताने के लिए होता है कि, गाड़ी चलाने से पहले, नींबू को पूरी तरह चूसो, ताकि, गाड़ी चलाने से पहले, गाड़ी चलाने वाला होश में रहे। और, साथ में नींबू-मिर्ची भी दी, जाती है कि, ताकि, नींबू को चूसकर, होश न आए तो, मिर्ची को चबाओ। मिर्ची तब तक चबाओ, जब तक तीखा न लगने लगे। क्योंकि अगर Limit में, नहीं रहे तो, नींबू की तरह पिस जाओगे, और फिर, जैसी आग मिर्ची में होती है, उसी आग में जला दिये जाओगे, जलकर फिर कोयला, बन जाओगे, और फिर, किसी डाल पर, लटका दिए जाओगे। गाड़ी चलाने से पहले, यह बात याद रहे, इसीलिए नींबू, मिर्ची, कोयला, गाड़ी पर लटका दिया जाता है। और, घर के बाहर भी, नींबू, मिर्ची, कोयला, आनेवाले के लिए, चेतावनी के तौर पर, लटका दिया जाता है कि, किसी दूसरे के घर में, Limit से रहो, अगर Limit Cross किए तो, रावण की तरह मिट जाओगे।

53. लेखक -

दूसरे की कहानी को लिखनेवाला व्यक्ति लेखक होता है। जिसमें दूसरे का अनुभव होता है, दूसरे के शब्द होते हैं, जिन्हें लिखनेवाला केवल सुंदररूप में लिख देता है।

54. लिख + ख + क = लेखक -

लिख लेता है जो ख और क में वह लेखक होता है। आमतौर पर सभी लोग क से ख वाले वर्णानुक्रम लिखते हैं। जैसा उन्होंने समझा, सुना, जाना एवं अनुभव किया, वह वैसा ही लिखते हैं। यानी - क ख ग घ ङ। किन्तु लेखक ङ घ ग ख क के उलटे क्रम से लिखता है। इसीलिए लेखक की कहानी हमेशा Flashback से प्रारंभ होती हैं और वर्तमान पर समाप्त होती है।

55. Lock + प्रिय = लोकप्रिय –

प्रिय वस्तु को व्यक्ति Lock करके रखता है। इसीलिए उसे लोकप्रिय कहते हैं। जैसे धन को व्यक्ति Lock करके रखता है, इसीलिए धन लोकप्रिय है। Lock + प्रिय = लोकप्रिय। तो जिसको लोकप्रियता प्राप्त करनी होती है, वह व्यक्ति लोक में धन को खर्च करता है और लोक का प्रिय हो जाता है। लोक + प्रिय = लोकप्रिय। क्योंकि लोक को वही प्रिय होता है, जो लोक में रह रहे लोगों को, उनकी प्रिय वस्तु देता है और लोगों की प्रिय वस्तु धन है। लोगों को प्रिय वस्तु देते रहिए और लोगों के प्रिय बने रहिए।

56. Lust = लस्त -

Lust में रहोगे, तो लस्त रहोगे और पस्त हो जाओगे। Lust = लस्त। वासना के कीचड़ में सना, Wash नहीं हो पाता है। Wash + ना = वासना।

57. Lion + और + डर = Law and Order -

Lion और डर का तो दूर-दूर तक का कोई नाता ही नहीं है। Lion + और + डर = Law and Order. Lion ही है जो बिना डर के रहता है। क्योंकि Lion ही Law है, Lion के डर से सभी, Law and Order में रहते हैं। इसीलिए शासक को शेर कहा जाता है, और शासक के आसन को सिंहासन कहा जाता है।

58. Lips + Saw = लिप्सा -

किसी की लिप्सा देखनी हो तो, उसके Lips को Saw करना चाहिए। Lips + Saw = लिप्सा। किसी वस्तु को प्राप्त करने की चाहवाला व्यक्ति, उस वस्तु को देखने पर, उस व्यक्ति के मुँह में से लार टपकने लगती है, वह व्यक्ति अपने दोनों Lips को दबाते हुए, उस लार को बाहर टपकने से रोकने लगता है। इससे उस व्यक्ति की उस वस्तु के लिए लिप्सा पता चल जाती है।

59. लोक + प्रिय = लोकप्रिय -

लोगों को जो प्रिय होता है, वह लोकप्रिय होता है। लोक + प्रिय = लोकप्रिय। लोगों में जो प्रसिद्ध होता है, लोकप्रसिद्ध होता है। लोक + प्रसिद्ध = लोकप्रसिद्ध।

60. Litter + तर = लित्तर - Litter से जो तर हो, उसे लित्तर कहते हैं।

61. Lips + Stick = Lipstick -

Lips को Stick करने के लिए, Lipstick बनाया गया। Lips + Stick = Lipstick. किन्तु होंठ तो चिपके ही नहीं, अपितु Lips घड़ी की टिक टिक की तरह, लगातार Tick Tick करते रहे। यह कहते हुए कि, "हां यह ठीक है ? यहां Tick लगा दूं"। या "यहां Tick लगाओ, यह ठीक है"। या "यह ठीक है, इसको ले लो"।

62. ले + Test = Latest -

"ले Taste कर" को Latest बोला जाता है। ले + Test = Latest. जब कोई नई वस्तु बनती है, तो उस वस्तु को Test करने के लिए, लोगों को यह कहा जाता है कि, "ले इसको Taste कर, यह Latest चीज़ आई है"। वस्तु का इस्तेमाल कर देने के बाद, पूछा जाता है कि, "बता कैसी लगी ?, कैसा Taste है इसका ?, चल तो जाएगी बाजार में ? लोगों को पसंद तो आएगी ?" इन सवालों के जबाव को सुनकर, इस तरह से Latest वस्तु को, Test कर लिया जाता है।

63. Luck + कीड़ा = लकीर -

एक कीड़ा चलता जा रहा था, कीड़े के चलने से एक, लकीर बनती जा रही थी। यह सब देखने वाले ने कहा कि, "यह कीड़ा जहां जाएगा, वहां ही मेरा लक्ष्य होगा"। अब लक्ष्य में से "क्षय" का लोप हो गया, और केवल Luck बचा है। कीड़ा और Luck को मिलाकर, शब्द बना "लकीर"। Luck + कीड़ा = लकीर। इसलिए जब भी कोई व्यक्ति, किसी विशेष कार्य को करने में, लग जाता है तो लोग कहते हैं कि, "इसके अन्दर तो उसका कीड़ा घुस गया है"। बस उसी लकीर पर वह व्यक्ति, चलने लगता है और एक दिन फ़क़ीर हो जाता है। तब लोग कहते हैं कि, "यह तो लकीर का फ़क़ीर है"।

64. Love + वर = Lover -

जिससे Love होता है, वही उसका वर होता है, इसलिए वही उसका Lover होता है। Love + वर = Lover. मेरा Love ही मुझे, वर के रूप में प्राप्त हो जाए, ऐसी इच्छा रखकर व्रत किया जाता है। व्रत की पूर्णता के बाद, यह आशीर्वाद प्राप्त होता है कि, "तुझे ! तेरा मनचाहा वर प्राप्त हो"।

65. लाल + चलना = लालच -

लाल को चलना सिखाने के लिए, लालच दिया जाता है। लाल + चलना = लालच। हाथ में कोई वस्तु लेकर, लाल से कुछ दूरी पर बैठ जाते हैं। तब वहां से बैठे बैठे लाल को, वह वस्तु दिखाते हुए, लाल से कहते हैं, "आजा आजा ले ले"। लाल यह सुनकर धीरे धीरे, चलता हुआ आता है, तब उस वस्तु को लाल को, दे दिया जाता है। इस तरह से वस्तु का लालच देकर, लाल को चलना सिखाया जाता है। इसी तरह से ज़िन्दगी में भी, लालच देकर लोगों को, चलना सिखाया जाता है। इस लालच को Prize, Gift, तोहफा, उपहार, भेंट, ईनाम या पुरस्कार कहते हैं।

66. **Luck + क्षण = लक्षण -**

व्यक्ति के लक्षण देखकर, लोग व्यक्ति के Luck को, क्षण में बता देते हैं। Luck + क्षण = लक्षण। तभी तो लोग कहते हैं कि, "अच्छा तुम्हें अभी पता चला, अरे ! मैं तो इसके लक्षण देखकर ही, समझ गया था कि, इसकी किस्मत कैसी है"। यानी व्यक्ति के लक्षण ही, व्यक्ति का भविष्य बता देते हैं। तभी तो बड़े-बूढ़े किसी के, लक्षण ज्यादा गौर से देखा करते थे। व्यक्ति भी यही सोचता है कि, "वह क्षण कब आएगा, जब उसकी किस्मत चमकेगी"। इसलिए व्यक्ति कोई भी कार्य, प्रारंभ करने से पहले, उस क्षण को जान लेना चाहता है कि, "किस क्षण में कार्य को, प्रारंभ करने से, इस कार्य का भविष्य उज्जवल रहेगा"। इसी क्षण का नाम मुहुर्त है। किसी का मुंह हूरना ही मुहूर्त है। मुंह + हूरत = मुहूर्त। हूरना = गौर से देखना। व्यक्ति तभी कहता है कि, "आज तो किस्मत ही खराब है, पता नहीं

किसका मुंह देखा था आज"। इसलिए व्यक्ति हूर जैसी, सुन्दर दिखने वाली स्त्री से, शादी करता है कि, "चलो सुबह सुबह अच्छी सूरत, देखने को तो मिलेगी"। क्योंकि "हूर" को ही हूरकर देखा जाता है। हूर = परी, अप्सरा। इसलिए व्यक्ति अपने आस पास भी, सुन्दर दिखने वाले लोगों को ही रखता है। इसलिए लोग Makeup करते हैं, ताकि सुन्दर दिखाई दें। किन्तु व्यक्ति जब सुबह सुबह, सोकर उठता है तो, आईने में अपना ही चेहरा देख लेता है। क्योंकि व्यक्ति अपने से ज्यादा सुन्दर, किसी को मानता ही नहीं है। इसलिए लोग आदमकद आईना लगाते हैं, ताकि चेहरे के साथ साथ, वस्त्र भी सुन्दर दिखाई दें।

67. लाख + नाऊ = लखनऊ -

लाख नाऊ जहाँ रहते हैं, उसे लखनऊ कहते हैं। लाख + नाऊ = लखनऊ। एक ज़माने में लखनऊ में, लाख नाई रहते थे, जो नबावों की खिदमत किया करते थे। लाख नाऊ के रहने के कारण ही, "लखनऊ" नाम पड़ा। कहलाता तो यह नबावों का शहर था, किन्तु नाम इस शहर का नाऊ के नाम पर पड़ा था।

68. लत + का = लटका -

लत व्यक्ति को लटका देती है। लत + का = लटका। क्योंकि जिस चीज़ की लत लगी होती है, व्यक्ति को जब तक, वह चीज़ नहीं मिल जाती है, तब तक व्यक्ति, उस चीज़ का इंतजार करता रहता है।

69. Less + मात्र = लेशमात्र -

Less मात्र को लेशमात्र कहते हैं। Less + मात्र = लेशमात्र। यानि कम मात्रा को Lessमात्र कहते हैं।

70. Lips + Saw = लिप्सा -

अगर किसी की लिप्सा देखनी है तो उसके Lips को Saw करना चाहिए। Lips + Saw = लिप्सा। जैसे बिल्ली की लिप्सा देखनी है तो, बिल्ली के ओठों को देखना चाहिए। इसलिए तो बिल्ली दूध पीने के बाद, अपने ओठों को अपनी जीभ से, साफ़ कर लेती है। ताकि कोई बिल्ली की लिप्सा को न देख सके। व्यक्ति की लिप्सा जिस वस्तु के लिए होती है, वही वस्तु अगर व्यक्ति के सामने आ जाए तो, व्यक्ति की जीभ में आया पानी, व्यक्ति के ओठों पर आ जाता है। ओठों पर आए इसी पानी से, व्यक्ति की लिप्सा का पता लग जाता है। इसलिए Buffer System में, भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यंजन,

खाने को रखे जाते हैं। और पंगत में केवल दो-चार खाने की, वस्तुएं ही बनाई जाती है।

71. Love + गुण = लगुन -

Love के गुण मिलाने को लगुन कहते हैं। लगुन में लड़का-लड़की के Love के गुण मिलाए जाते हैं। जिसे लगुन पत्रिका कहते हैं। Love + गुण = लगुन। लगुन पत्रिका में देखा जाता है कि, लड़का-लड़की आपस में, कितना Love करते हैं।

शरीर + गुण = शगुन -

शगुन में लड़का-लड़की के, शरीर के गुण देखे जाते हैं कि, शरीर में कोई खोट तो नहीं है।

अवगुण = अगुन –

अगुन में लड़का-लड़की के, अवगुण देखे जाते हैं। अवगुण का उच्चारण, अपभ्रंश होकर अगुन हो गया है। अवगुण = अगुन। इन्हीं अवगुण को लड़का-लड़की, हवन करते समय अग्नि में डाल देते हैं, अग्नि + अवगुण = अगुन। इस तरह से लगुन, शगुन, अगुन, इन तीन से विवाह सम्पन्न होता है।

72. लोक + केश + अन्न = Location –

लोक की Location, लोक के केश और अन्न से पता चलती है। लोक + केश + अन्न = Location. किसी भी लोक की Location, पता करनी हो तो, उस लोक के लोगों के केश, और लोगों के द्वारा खाए जानेवाले, अन्न का पता करना चाहिए। तब उस लोक की, Location पता लग जाएगी।

73. लीक + चलनेवाला = Lecture - लीक पर चलनेवाला Lecture देता है।

M

1. मोहरा - मोह करोगे तो मोहरा बन जाओगे।

2. Moon + देर = मुण्डेर -

जरा देख तो सही चड़कर ऊपर, Moon को कितनी देर है। मुण्डेर वह जगह होती है जहाँ से चंद्रमा (Moon) को देखा जाता था।

3. Miracle = मीरा का कल -

मीरा ने पिया विष का प्याला और वह बच गई और वह कल जिन्दा दिखाई दी, यही तो चमत्कार हो गया। मीरा के नाम से चमत्कार भी Miracle हो गया।

4. Money = मणी - मणी ही मनी (Money), पहले काल में मणि को ही धन माना जाता था।

5. मृत + You = मृत्यु -

तू मर जा। मृत होने की कामना सदा दूसरों के लिए की जाती है। लोग अक्सर यही कहते, "मैं क्यों मरुँ, तू मर जा"। यही है मृत्यु।

6. More + धन्य = मूर्धन्य -

जिसके पास More (ज्यादा) धन है। वही मूर्धन्य है। भले ही वह मूढ़ ही क्यों न हो ? किंतु अगर उसके पास धन है, तो उसकी अनर्गल बातों को भी कहा जाता कि, "धन्य हैं आप। आपके शब्द तो साक्षात् ब्रह्म-वाक्य हैं"।

7. माँ = मान - माँ को हमेशा मान दिया जाता है, माँ की हर बात मानी जाती है।

8. Mean + नत = मिन्नत -

Mean (मतलबी) लोग ही नत (झुकते) होते हैं। यानि जिन्हें मतलब निकालना होता है वही मिन्नतें करते हैं।

9. मैथी - मैथी खाने से Mathematics अच्छी हो जाती है।

10. मयान + मार = म्यांमार -

तलवार की आन उसकी म्यान में होती है। उस म्यान से जो मार मारी जाती है, उसे म्यान की मार कहते हैं।

11. मूक + अबला = मुकाबला -

व्यक्ति दो प्रकार के लोगों से मुकाबला करता है, एक मूक से एवं दूसरी अबला से। पुरुष को पहले मूक बनाया जाता है कि, "अरे तुम चुप रहो"। पुरुष के द्वारा स्त्री को बिना बल के देखकर कहा जाता है कि, "अरे यह तो अबला नारी है"।

12. मदन-मोहन - जिसमें मद नहीं है और जिसमें मोह नहीं है, तो फिर वही मदन-मोहन है।

13. मुँह + सी + बात = मुसीबत - मुँह को सी कर बात करने से मुसीबत नहीं आती है।

14. Moon + Day = Monday -

यह Moon Day कहा जाएगा, यानी सोमवार क्योंकि सोम को चंद्रमा कहा गया है और चंद्रमा ने

भगवान शिव की पूजा की थी। इसलिए चंद्रमा को सम्मान देने के लिए, यह Moon Day कहते-कहते अपभ्रंश के रूप से Monday हो गया, यानी मौन रहने का दिन।

15. Make + Sad = मकसद -

उसका मकसद इतना ही है, कि वह दूसरों को Make Sad (दुखी) करना चाहता है।

16. मन Money = मनमानी - Money हो तो मन अपने-आप मनमानी करने लगता है।

17. मुक्त + Leaf = मुक्तलिफ -

पत्ती जब पेड़ से मुक्त हो जाती है, वही तो मुक्तलिफ (अलग) कहलाती है।

18. मुँह + Feed = मुफीद - मुँह से ही तो Feed (खिलाया) किया जाता है।

19. मान + Trick = मान्त्रिक -

मान ही Trick है, यही मान्त्रिक है। किसी को मान देना, यह सबसे बड़ी Trick है। किसी की बात मान लेना, यह सबसे बड़ी Trick है। तीन चीजों को, एक कर देना, यही त्रिक यानी Trick, कहलाती है। त्रिक = Trick. त्र + इक = त्रिक।

20. Moon + Done = मुण्डन -

Moon की तरह Done कर देना। चंद्रमा की तरह कर देना। इसलिए बाल झड़ जाने के बाद सिर को चाँद भी कहते हैं। जब किसी को मूंड देते हैं तो उसका चेहरा Moon की तरह गोल निकल आता है, इसलिए उसे मुंडन कहते हैं यानि Moon की तरह Done कर देना। यहीं से चंद्रमा को Moon कहा गया है। मूड़ा हुआ सिर Moon की तरह दिखाई देता है।

21. माटी + Real = Material -

माटीरियल यानि माटी ही Real है, मिट्टी से ही सब बनता है, मिट्टी में सब मिल जाता है, मिट्टी ही बची रहती है बस।

22. मौन + तैयन = Mountain –

तय कर लेते हैं जो मौन में रहना, वो Mountain पर जाकर रहते हैं, क्योंकि वो समाज में नहीं रह सकते हैं।

23. मथ + ओढ़ = Method –

माथे को मथ लो या माथे पर कुछ ओढ़ लो। यही दो Method होते हैं। Math को Solve करने के। मथ + ओढ़ = Method. स्त्री कभी-भी Math को, Solve नहीं कर सकती है। क्योंकि स्त्री हृदय से चलती है। तभी तो जब भी, हिसाब की बात स्त्री से करो। तब ही स्त्री अपने माथे पर, ओढ़नी ओढ़ लेती है। और कहती है कि, "हिसाब-किताब हम नहीं जानते, वह तुम ही देख लो"। और मथानी को मथने लगती है।

24. मोती + भेंट = Motivate –

मोटी वेतन देकर Motivate किया जाता है। इसलिए राजा लोग Motivate करने के लिए मोतियों की माला किसी को भेंट में देते थे।

25. Man + हट्टन = Manhattan –

आदमियों का हाट – यानि जहाँ पर हट्टे-कट्टे आदमियों का बाजार लगता है, और वहाँ हट्टे-कट्टे आदमियों को खरीदा-बेचा जाता है।

26. मन + त्री = मन्त्री –

मन जब तीन चीजों (बुद्धि, चित्त, अहंकार) पर नियन्त्रण कर लेता है, तो मन को ही मन्त्री बनाया जाता है।

27. मुण्ड + ढेर = मुण्डेर –

मुण्डों का ढेर = जो मुण्डित सिर होते थे, उस कटे हुए सिरों के ढेर को मुण्डेर कहते थे। भारत में हर खपरैल घर के ऊपर आदमी के कटे हुए मुण्ड रखे होते थे। इन कटे हुए मुण्डें को खाने के लिए उस पर कौए आकर बैठते और उसको खाते थे। जब कोई मुण्डित संन्यासी या बौद्ध भिक्षुक गाँव में आता था, तो कौए काँव-काँव करते थे, कि एक और भोजन आ गया है। तो लोगों को पता चल जाता था कि, एक और संन्यासी या बौद्ध भिक्षुक गांव में आ गया है। फिर वह भिक्षुक जिस घर में भिक्षा माँगता था, उस घर के लोग भिक्षा के अन्न में बेहोशी की दवा मिला देते थे, जिससे वह भिक्षुक भिक्षा को खाकर बेहोश हो जाता था और वह घर वाले उसके सिर को काटकर मुण्डेर पर रख देते थे और धड़ को पका कर खा जाते थे। इसलिए यह शब्द बना धोखाधड़ी यानि धड़ को धो कर खा जाओ।

28. मेरे + दल = Medal –

मेरे दल वाला ही तो Medal है। यानि जो मेरे दल में शामिल हो गया है।

29. माँस + Cow = Moscow – माँस मिलता है जहाँ Cow (गाय) का वह है Moscow.

30. मुहँ + Off = माफ – मुहँ को Off करना ही तो मुऑफ है।

31. मय + ज + इक = Magic –

मय दानव द्वारा जो जाल एक बिछाया जाता है, वह है Magic. यानि मय दानव द्वारा जो बनाया जाता है, वह Magic है। उसको आजतक कोई समझ नहीं पाया है। और वह Magic एक जाल की तरह होता है, जिसे माया कहते हैं। और माया और जाल एक ही बात है यानि मायाजाल। जिसमें सब फंस जाते हैं।

32. Mom + Ent = Moment –

जब घर में Mom की Entry होती है, तो वही Moment होता है।

33. मुहँ + आवजा = मुआवजा –

मुँह से आवाज न आये इसके लिए मुआवजा दिया जाता है।

34. मूश + Kill = मुस्किल – मूस (चूहे) को कैसे मारा जाए यही मुस्किल है।

35. माह + कमा = महकमा –

माहवारी में होने वाली कमाई ही महकमे में आती है। 'महकमे' नाम की शुरुआत स्त्री की माहवारी से हुई। यानि जब स्त्री माहवारी से होती है, तब उन चार दिनों में वह कोई काम नहीं करती है, तब उस काम को करने के लिए पुरुष ने महकमे को प्रारंभ किया। यानि पुरुषों ने मिलकर पैसे इकट्ठे किये और एक महकमा बनाया। जिसमें कर्मचारियों की भर्ती की, इन कर्मचारियों का काम था, माहवारी स्त्री

की सेवा करना और उस काम के बदले उन्हें पैसे दिये जाते थे। तब से बस यही महकमा आज Department हो गया।

36. मोह + लत = मोहलत –

आदमी को अपनी लत से मोह हो ही जाती है और फिर उस लत को छोड़ने के लिए आदमी मोहलत माँगता है।

37. Man + नर = Manner – Man ही नर है, नर में ही Manner है।

38. मगज + In = Magazine –

किसके मगज में क्या है? यह जानने के लिए Magazine को छापा जाता है। व्यक्ति Magazine के जिस Article को ज्यादा पढ़ता है और गौर से पढ़ता है, तो समझ लिया जाता है कि, इसके मगज में क्या है।

39. My + नस = Minus –

मेरी नस। जब कोई किसी की दुखती रग (नस) पकड़ लेता है, तो वह फिर दूसरे को Minus (घटाने) करने में लग जाता है।

40. माल + कोश = मालकोश –

माल कह लो या कोश कह लो दोनों ही मालकोश है। पहले आदमी मल जाने के लिए कोश भर चलता था, तो उस रास्ते में जो कुछ उस व्यक्ति के कंठ से निकलता था, वह मालकोश कहलाया। कालांतर में जिस Toilet में कुण्डी नहीं होती है, तो उस Toilet में बैठा आदमी जो कुछ भी कंठ से निकालता है, वह मालकोश कहलाता है।

41. Manipulate –

जो Menu में होता है, वही Palate में होता है, यानि आदमी को Manipulate करने के लिए, उसका Menu वैसा बना दो और उसे Manipulate कर दो।

42. मिला + वट = मिलावट –

वट का पेड़ मिला कि नहीं, यही ढूढ़ने में समय लग जाता है, क्योंकि वट का वृक्ष अपनी जड़ों से नया तना बना लेता है, जिससे उसका सही पता लगाना मुश्किल है, कि असली पेड़ कहाँ है, यही होता है मिलावट में कि पता ही नहीं चलता है कि मिलावट कहाँ से शुरु हुई है।

43. मटक – स्त्री अपने सिर पर मटका रखकर मटक-मटक कर चलती है।

44. मोर्चा – कार्तिकेय अपने मोर पर बैठकर मोर्चा लगाते हैं।

45. Menu –

पहले ढाबा होते थे, जो पंजाबी लोग चलाते थे, और पंजाबी लोग उस पर खाने जाते थे, जो ट्रक ड्राईवर होते थे, तो वह कहते थे, कि मेन्नु यह चाहिए खाने को, मेन्नु वो चाहिए खाने को, यही मेन्नु से Menu हो गया।

46. मय – मय (शराब) पीने वाले को यम जल्दी लेने आ जाते हैं।

47. Mall –

जिसके पास माल होता है, वही माल में जाता है। कहानी है कि गुलाम ही गु उठा-उठाकर, मल का पहाड़ इकट्ठा कर लेता है, उसी मल को बेचकर माल कमा लेता है, माल से Mall खोल लेता है, Mall का मालिक बन जाता है।

48. Much + अन्न = मचान –

जिसे पास Much (ज्यादा) अन्न होता, उस अन्न पर नजर रखने के लिए मचान बनाता है।

49. मुँह + नाम = मुनीम –

मुनि लोग ही, मुनीम बन जाते हैं, उसके मुँह में नीम रहती है, जिससे वह हमेशा कड़वा बोलता है।

50. मोह + बात = मोहब्बत – मोह हो जाता है, किसी की बात से, तो वह है मोहब्बत।

51. मन + Age = Manage –

मन और Age दोनों को ही Manage किया जाता है। या तो आदमी मन के अनुसार Manage करता है, या फिर Age के अनुसार Manage करता है।

52. माह + सूल = महसूल –

माहवारी में जब स्त्री होती है, तो उसके खाने-पीने, रहने आदि कि व्यवस्था एक महकमा करता है, क्योंकि वह घर में नहीं रहती है, तो उसके पति से उसके रहने आदि का माहवारी का खर्चा वसूला जाता है, उसे महसूल कहते हैं।

53. Math –

Math को हल करने के लिए, माथे को मथना पड़ता है। यानि माथे से जो निकले वह Math. मैथी खाने से माथा अच्छा चलता है, जिससे Math के सवाल जल्दी से हल हो जाते हैं।

54. Mode = मूड –

मूड़ ही बताता है कि, आप किस मोड़ Mode पर हैं। आप जिस मोड़ पर होते हैं, मूड़ भी वैसा ही होता है।

55. Money = मणी –

पहले जमाने में मणी ही धन का प्रतीक थी, जो आगे चलकर अंग्रेजी शब्दावली में Money नाम से जानी गई।

56. Man + का = मेनका – हर Man के मन में एक मेनका रहती है।

57. मोह –

मुँह से ही मोह होता है, यानि किसी का सुन्दर चेहरा देखकर ही, हमें उससे मोह हो जाता है।

58. मण्डी = मंदी – जब मंदी आ जाती है, तो फिर मण्डी लग जाती है।

59. मिल = Mill – जहाँ पर सब लोग मिलकर कार्य करते हैं, उसे Mill कहते हैं।

60. मिले = Mile –

जहाँ पर मिलने का वादा होता है, उसे Mile कहते हैं। फिर कहते हैं कि, "यहाँ पर हम मिले थे"।

61. मन + चूर + अन्न = Manchurian –

ऐसा अन्न जो मन को चूर-चूर कर दे, वह है Manchurian।

62. मुँह + आईना = मुआईना –

औरतें अपना मुँह आईने में देखकर, मुआईना करती हैं। एक महिला अधिकारी को कहा गया कि, "वह जा करके अपने इलाके का मुआईना करके आये"। महिला अधिकारी उठी और Washroom में जा करके अपने मुँह को आईने में देखकर आ गई। लोग यह भी कहते हैं कि, "पहले अपना मुँह आईने में देख के आ, फिर मुझसे बात करना"। मुँह को आईने में देखना ही मुआईना होता है।

63. माँस + Tool = मसतूल –

जहाज पर एक खम्बे पर माँस रख दिया जाता था, अगर आस-पास कोई पंक्षी होता था तो उस मसतूल पर आकर बैठ जाता था, जिससे पता चलता था कि, आस-पास कोई जगह है।

64. मुद + दाह = मुद्दा -

मुद और दाह ही मुद्दा बन जाता है। मुद + दाह = मुद्दा। यह क्यों "मुद" है ? इसको क्यों "दाह" किया गया है ? यही दो बातें ही मुद्दा बन जाती हैं। मुद = प्रसन्न, खुश। मुड्डे पर बैठकर पूछते हैं कि, "आज का मुद्दा क्या है" ?

65. मेज + वाणी = मेजबान –

खाने की मेज पर बैठने वाले लोगों को अपनी वाणी का ध्यान रखना चाहिए।

66. मार्ग + रीता = मार्गरीटा –

मार्ग पहले ऋतु के अनुसार बने होते थे। मार्ग में कोई रीता (खाली) न रहे, वही मार्गरीटा है।

67. Museum –

जिनको यम ने Use कर लिया, उनको Museum में रखा जाता है। यानि जिनकी आत्मा यमराज ने निकाल ली, उनके शरीर को Museum में रखा जाता है। यानि जो चीजें Museum में होती हैं, उनमें आत्मा नहीं होती है।

68. मन + जी = मन्जी –

मन और जी दोनों ही तो मन्जी हैं। मन और जी, मन्जी (चारपाई) की तरह होते हैं, जिनके बीच में से छेद होते हैं।

69. मच (चम यानि चमड़ी) + छर (रक्ष) = मच्छर – चमड़ी की रक्षा मच्छर से करनी चाहिए।

70. मुठ + भेड़ = मुठभेड़ – मुठ (मुक्का) मारकर या भेड़ों को लड़ाकर मुठभेड़ की जाती है।

71. मूत + Liq = मुतालिक – मूत (शराब) और Liq (Liquor, शराब) एक ही होते हैं।

72. मुक्त + Leaf = मुक्तलिफ –

जिस तरह Leaf पेड़ से मुक्त हो जाती है, उसी प्रकार आत्मा शरीर से मुक्त हो जाती है, इसी तरह दोनों ही मुक्तलिफ रहते हैं।

73. मार + बल = Marble –

मार देता है जो बल को, वह है Marble. संगेमरमर का पत्थर आदमी के अन्दर के बल को खींच लेता है।

74. मजबूत – बुत ही मजबूत होते हैं।

75. Me + थक = मिथक –
जब मुझे थकान आती है, तो में एक मिथक बनाता हूँ, क्योंकि मैं असली बात किसी को बताना नहीं चाहता हूँ कि, मैं क्यों थक गया हूँ।

76. मद + खल + लत = मदालखत –
मद, खल और लत यह तीनों ही मदालखत करते हैं। मद (शराब) पिया हुआ व्यक्ति सब बातें खत में लिख देता है।

77. My + स्त्री = Mystery –
मेरी स्त्री ही मेरे लिए एक Mystery है, यानि वह अपनी स्त्री को ही नहीं जान पाता है। इसीलिए हर स्त्री अपने पति के लिए एक Mystery है।

78. मेढ़ –
खेत में जब यह तय किया जाता है कि, "यह मेरा है और यह मेरा है"। उसी के निपटारे के लिए ही मेढ़ बनाया जाता है। किसान खेत की मेढ़ पर बैठकर कुछ न कुछ बनाता रहता था, इसीलिए उसे Made भी कहते हैं।

79. मुँह + कद + दर = मुकद्दर –
लड़की का मुँह देखकर, लड़के का कद देखकर ही, दोनों की दर (कीमत) तय करके, उन दोनों का मुकद्दर तय किया जाता है, यानी दोनों की शादी कर दी जाती है।

80. मुहँ + खोटा = मुखौटा – जिनके मुँह में खोट होती है, वही तो मुखौटा लगाते हैं।

81. Muscle = माँसल – माँस से बने शरीर के ही Muscle बनते हैं।

82. मिन्नतें – जो लोग Mean होते हैं, वही मिन्नतें करते हैं।

83. मौन + Alisha = Mona Lisha -
मौन हो गई जब Alisha, तब उसके चित्र बनाकर, उसकी खामोशी का उत्तर माँगा गया लोगों से कि, "Mona Lisha क्या सोच रही है"?

84. मुस्कान + Tears = Musketeer –
जिसके चेहरे पर मुस्कान भी होती है और आँसू भी होते हैं, वही Musketeer हैं।

85. मत + Love = मतलब – मत Love करो यानि Love से ही तो सभी को मतलब है।

86. मेंहदी –
लगाते हैं मेंहदी हाथों में, छिपाते हैं लकीरों को, पहचान न ले कोई, जान न ले भविष्य को।

87. Miss + शाल = मिशाल –
जिसे सब लोग Miss करते हैं, उसी की तो मिशाल दी जाती है, या फिर उसके नाम की शाल पहनाकर सबको उसकी मिशाल दी जाती है।

88. Men + टल = Mental –
आदमी जब चीजों को टालने लगता है, तो समझो Mental हो गया है।

89. मूड़ + खाने = मूर्ख – मूड़ खाने वाले को मूर्ख कहते हैं।

90. माथे + मा + Tricks = Mathematics –
किसी के माथे में जब बहुत सारी Tricks आती हैं, बस वही Tricks से ही सारा Mathematics बना है।

91. मैत्री + Money = Matrimony – किसी से मैत्री करने के लिए Money जरुरी है।

92. Metro = मित्रों –
मित्रों के शहर को Metro बोला जाता है। यानि जहाँ पर मित्र ज्यादा करीब होते हैं, अन्य सम्बन्धों के अलावा।

93. मातृक + कुल + Lesson = Matriculation –
माता के कुल में पूर्णता प्राप्त करना ही Matriculation है। Matriculation होने तक लड़की माता के कुल में ही रहती थी। जब उसकी माता के कुल में सभी पढ़ाई हो जाती थी, तब वह अपने पति के घर पर आती थी, जिसे Intermediate कहते हैं। यानि जब तक गौना नहीं होता था, तब तक लड़की माता के घर में ही रहती थी।

94. मुहँ + गल = मुगल –
मंगोल की वह जाति जो भारत में आकर मुगल के नाम से मशहूर हो गई कैसे ? मुगल पहले मंगोल ही कहलाते थे, परंतु मुगलों के वंशजो ने औरंगजेब के बाद गली के लोगों को भी मुँह लगाना शुरु कर दिया, जिससे यह मुँह गल यानि मुगल हो गये, मुँह + गल = मुगल। और गली के लोगों को मुँह लगाने से मंगोल बने मुगलों का पतन हो गया।

95. मशहूर – जिसके पास हूर होती है, वही मशहूर होता है।

96. मा + दे = Made –
मा कुछ बनाया है तो दे, यही माँ के द्वारा बनाई वस्तु को ही Made कहा गया है।

97. Master –
माँ ही सबका स्तर जानती है, किसको क्या सिखाना है? कितना सिखाना है ? इसलिए माँ ही Master है।

98. मन + च = मंच –
मन में जो चलता है, उसको देखने के लिए मंच होता है। जो माथे पर अन्दर की तरफ होता है।

99. मनु + Facture = Manufacture –
मनु के द्वारा ही सबसे पहले जो चीजें बनाई गईं, वह Manufacture कहलाईं। यानि मनु ही थे, जिन्होंने मनुष्य के लिए हर चीज पहले बनाई। बस मनु के नाम से हर बनाई गई चीज को Manufacture कहा गया। फिर बाद में मनु हट गया और जहाँ पर वस्तुएँ Facture की जाती रहीं, उस स्थान को Factory कहा गया।

100. मदद – मद (शराब) पीने वाले की मदद की जाती है, क्योंकि वह खुद से चल नहीं सकता है।

101. मद + आलस = मदालसा – मद पीने से आलस आता है।

102. मुँह + फट = मुफ्त –

मुँह फटे लोग ही मुफ्तखोर होते हैं यानि जो मुँह फट होगा वही मुफ्तखोर होगा।

103. मिलो + Drama = Melodrama –

मेले में मिलने और बिछड़ने का जो Drama किया जाता है, वह है Melodrama.

104. Male + आ = मेला –

पहले मेले में Male (पुरुष) आते थे, मिलने के लिए यानि बिकने के लिए। यह Male शादी के लिए खरीदे और बेचे जाते थे। मेले में ही लड़के और लड़की का मिलाप किया जाता था, यानि मेलाप वही मेला कहलाता है।

105. मुँह + जाली = Muzzle –

मुँह में जाली लगाना ही Muzzle है। पहले खलिहान में फसल की दाएँ की जाती थी, जिसमें बैलों को कटी हुई एवं नीचे रखी हुई फसलों पर चलाया जाता था। जब बैलों के मुँह पर जालीनुमा मुसीका बाँध दिया जाता था, जिससे बैल फसल को न खा सकें, वही Muzzle है।

106. मौन + ईतर = Monitor –

जिस प्रकार Computer के Monitor पर सब दिखाई देता है, उसी प्रकार Class के Monitor पर सब प्रकट हो जाता है, मौन रहता है, और सारी Class से अलग (ईतर) रहता है, वही Monitor है।

107. मिल + Try = Military –

मिलकर Try करना ही Military है। Military में सब मिलकर Try करते हैं और युद्ध जीत लेते हैं। Hum में ही बल होता है, अकेले व्यक्ति में बल नहीं होता है, जब हम सब मिल जाते हैं, एक जुट हो जाते हैं, तो हम में बल आ जाता है और हमारे बल को देखकर हमसे सभी Humbly बात करते हैं, जब हम एक जुट नहीं होते और अकेले कार्य करते हैं, तो हम नहीं रहता है, अहम आ जाता है, यानि व्यक्ति यह कहता है कि, "मुझे अब किसी की जरुरत नहीं, मैं सब कर लूँगा"। यह व्यक्ति में अहम का प्रारंभ है और उसे अपने किए कार्य का अहम यानि, "यह किया हुआ मेरा काम है"। यही अहम कार्य फिर अहंकार बनता है। तो व्यक्ति को मिलकर कार्य करना चाहिए। इसी मिलकर कार्य करने के लिए Mill बनी - जैसे कपड़ा बनाने की Mill, जहाँ सब मिलकर कार्य करते हैं।

108. मल + Area = Malaria – मल वाले Area में ही Malaria होता है।

109. मलयगिरि पर्वत –

मलयगिरि पर्वत पर इतना मल डाला गया कि, उसकी बदबू को हटाने के लिए चन्दन के पेड़ लगाये गये जिससे कि, "सब ओर चन्दन की खुशबू फैले"।

110. मुँह + जला = मुजरा – जिसका मुँह जला होता है, वह मुजरा करती है।

111. मद + गाँव = Madgaon –

मद (शराब) वाला गाँव। गोवा में Madgaon है, गोवा शराब के लिए मशहूर है।

112. Map = माप – माप लेकर ही Map बनाया जाता है।

113. Meet = मीत – मीत से ही Meeting होती है।

114. मद + Dull = Muddle –

मद (शराब) को पीने वाले ही मिट्टी में सने रहते हैं, इसीलिए Muddle हो जाते हैं। मद (शराब) पीने वाले ही Dull होते हैं। मद को पीने से उनका दिमाग एवं शरीर कार्य करना बंद कर देता है और उनमें आलस आ जाता है। इसीलिए मद को पीनेवाले Dull लोग जल्दी ही दल बना लेते हैं।

115. माली + गनन्त = Malignant –

माली ही बागी होते हैं, यानि जो बाग में काम करते हैं, उसे माली ही चलाते हैं, वह ही बागी बनते हैं।

116. Mint – मीन की बदबू को दूर करने के लिए Mint रखी जाती है।

117. मार + काट = Market –

पहले सब चीज घूम-घूम कर बेची जाती थीं। फिर जब शहर में मार-काट मचती थी। तो एक ही जगह पर चीजों को रखकर बेचा-खरीदा जाता था। उसे ही Market कहते हैं।

118. मातृ + नीति = Maternity – माता की नीति ही Maternity है।

119.मृदा + दंग = मृदंग - मृदा (मिट्टी) में जब दंगल होता है, तो उसे मृदंग कहते हैं।

120. मुहँ + काम = मुकाम -

मुहँ को भरने के लिए सभी को काम करना पड़ता है। यही मुकाम है।

121. मद + होश = मदहोश - मद (नशा) करके भी जो होश में रहे, उसे ही मदहोश कहते हैं।

122. मिटा + Physics = Meta Physics -

मिटाना Physics को ही Meta Physics है। Physics यानि भौतिक। आध्यात्मिकता की प्राप्ति के लिए भौतिकता को मिटाना पड़ता है। तभी आध्यात्मिकता की प्राप्ति होती है।

123. Meditation -

Meditation इस तरह से है, जिस तरह आप ट्रेन में बैठे हैं और ट्रेन चल रही है। आप केवल बैठे हैं। आप कुछ नहीं कर रहे। फिर भी आप मंजिल पर पहुंच गए हैं। बीच में सो भी लिए। यानि आप हवाई जहाज में बैठे हैं और कुछ नहीं कर रहे हैं और मंजिल पर पहुंच गए हैं। यानि Meditation में केवल आपको बैठना है। कुछ करना नहीं है और कुछ वक्त के बाद आप मंजिल पर पहुंच जाएंगे। बस बैठना ही महत्वपूर्ण है, Meditation में।

124. मन + नत = मन्नत -

तन नत करना आसान है, किन्तु मन नत करना मुश्किल है। परन्तु मन को नत करने पर ही, मन्नत मांगी जाती है और, किसी की मन्नत पूरी होती है।

125. मूढ़ता -

जो मूढ़ होते हैं, उन सिर मूढ़ दिया जाता है। यानि उनका मुंडन कर दिया जाता है। ताकि उनके सिर की गर्मी कम हो जाए।

126. मन + Saw = मंशा -

मन में जो देखा, वही मंशा है। यानि जब लोग कहते कि "मुझे पता है, कि तुम्हारे मन में क्या है ? क्योंकि मैंने तुम्हारे मन को देखा है, मैं तुम्हारी मंशा को जानता हूँ, मेरे से तुम्हारे मन की बात छिपी नहीं है"। बस यही मंशा है, यानि मन को देखना।

127. मन + की = Monkey -

जो आपके मन की बात जान ले, वह Monkey होता है। इसलिए सुग्रीव ने हनुमानजी को भेजा कि, "जाओ पता करके आओ कि, इन दोनों के मन में क्या है"। बन्दर भी नकल करता है, आदमी भी नकल करता है, जिसे आदमी अभिनय कहता है। इसलिए इस हिसाब से, शारीरीक तौर पर तो नहीं, किन्तु मानसिक तौर पर, मनुष्य का पूर्वज बन्दर ही है।

128. मियाँ = म्यान -

जिसकी तलवार छीन ली गई हो और उसके पास केवल म्यान यानि मियान रह जाए। तब लोग उसको चिड़ाते हुए कहते हैं कि, "और मियाँ क्या हाल है"।

मय दानव + यान = म्यान -

मय के द्वारा बनाए गए यान को, म्यान कहते हैं। मय दानव + यान = म्यान। आजकल सब अपने अपने यान में आते हैं, और यान की ही बात होती है।

129. मूर्ति = मूड़ती -

दरअसल यह शब्द मूर्ति नहीं, मूड़ती है। व्यक्ति का कैसा मूड़ (भाव) होता है, उसे वैसी ही मूर्ति पसंद आती है। "जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरत देखी तिन वैसी"॥ व्यक्ति का मूड़ जानने के लिए मूर्ति बनाई गई है। अलग-अलग मूर्तियां उसके सामने रखी जाती हैं। उसके मूड़ की मूर्ति जब उसके सामने आती है तो उसकी आँखों में एक अलग चमक होती है। उसका उस मूर्ति से तादात्म्य स्थापित हो जाता है। फिर जब कभी व्यक्ति का मूड़ खराब होता है, तो उसे ठीक करने के लिए, उसे उसी मूर्ति के पास ले जाया है और वह व्यक्ति ठीक हो जाता है। अगर व्यक्ति के मूड़ की मूर्ति के बारे में पता न हो, तो उसे उसके कुल देवता की मूर्ति के पास ले जाया जाता है और वह सामान्य हो जाता है। बात है यह है कि मूर्ति व्यक्ति के मूड़ पर निर्भर है। भावना (मूड़) के अनुसार मूर्ति है। एकलव्य ने द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाकर सारी धनुर्विद्या द्रोणाचार्य के हृदय से Download कर ली और अपने हृदय में Save कर ली। एकलव्य ने किस तरह पहले अपना हृदय द्रोणाचार्य की मूर्ति से लगाया, फिर मूर्ति के माध्यम से द्रोणाचार्य के हृदय में प्रवेश किया, फिर द्रोणाचार्य के हृदय से धनुष-बाण के ज्ञान को अपने हृदय में उतार लिया। यह सोचने का विषय है ? क्योंकि कुछ लोग कहते हैं कि, "मूर्ति से क्या भगवान मिलते हैं" ? उनको यह कहानी सुनानी चाहिए। मूर्ति माध्यम है, परमात्मा तक जाने का। जिस प्रकार Wi-Fi माध्यम है, Internet की Website में जाने का। अब Wi-Fi का भी Setup लगाना पड़ता है। Wi-Fi के डिब्बे पर तीन डण्डियाँ होती हैं, Wi-Fi का Signal दिखाने का चिन्ह शिवलिंग पर लगे त्रिपुण्ड की तरह होता है। इसी तरह मंदिर के तीन शिखर होते हैं और शिवलिंग एक प्रकार से परमात्मा से संपर्क स्थापित करने का माध्यम है।

130. माँस + साज = Massage -

दो ही चीजों को मसाज की जरूरत होती है, एक शरीर के माँस को, दूसरी संगीत में बजने वाले साज को, संगीत के साज को Tuning करने के लिए, उसको बजाने से पहले बिठाना पड़ता है।

131. मंत्रालय = मंथरालय -

यह मंत्रालय नहीं, यह तो मंथरालय है। सभी के पास उसका मंथरालय है। आने वाले कष्ट की चिंता से, मन भयभीत हो जाता है। मन थर-थर कांपने लगता है, डर के मारे, तो वह मंथरालय कहलाता है। फिर मन, मन्थरा की तरह मन्त्रणा देता है कि, "अपनी सुरक्षा करो, चाहे जैसे भी हो" वह है मन्त्रालय।

132. मान + नस = मानस -

मान ही सबकी नस है। इसलिए "मानस" है। जिसको बोलते हैं, "दुखती रग"। मान + नस = मानस। देखिए किसी को मान न दो, तो वह नाराज़ हो जाता है और, किसी को मान दो, तो वह ख़ुश हो जाता है। किसी की बात न मानो और, किसी की बात मान लो, फिर फ़र्क़ देखो। यही मान की नस है, जो मानस है। सभी Man की यही नस है। Man + नस = मानस। क्योंकि Man अपने मन से चलता है, इसलिए Man कहलाता है। मन = Man. इसलिए जब Man को, आप मान नहीं दोगे, तो वह कहता है कि, "You don't have manners". Man + Nurse = Manners. और Hospital वाले, इस बात को बाखूबी से जानते हैं, तो Hospital में Man को, तुरंत एक Nurse दे देते हैं। यह Nurse ही Man के, मानस को बनाकर रखती है, और Nurse के सामने आदमी, Manners में रहता है। क्योंकि Man के द्वारा, Nurse की बात को मानना, ही तो Manners है। Nurse को Sister भी कहते हैं, और Sister के साथ सभी, शिष्ट आचरण करते हैं, तभी तो शिष्टता से पेश आते हैं। शिष्ट + तर = Sister. इसलिए भारत में मानने पर, ज़ोर दिया गया है, जानने पर नहीं। क्योंकि भारत में मान ही प्रमुख है, जान (Life) नहीं। इसलिए राजा दशरथ ने कहा कि, "प्राण जाए पर वचन न जाए"। यानी जान चली जाए, पर बात नहीं जानी चाहिए। किन्तु बात तो भारत में जान यानी ज्ञान की की जाती है। परंतु "बात" मान की ही मानी जाती है। जान = ज्ञान। भारत में लोग यह कहते हैं कि, "इतनी जानकारी क्यों ले रहा है ? बड़ों की बात है, आँख मूँद कर मान ले"। भगवान श्रीराम ने भी वही किया और भगवान श्रीराम ने राजा दशरथ की बात मान ली, इसलिए यह मानस है। यहाँ पूरे मानस में, बात ही तो मानी जा रही है। रानी कैकेयी ने मन्थरा की बात मान ली। राजा दशरथ ने रानी कैकेयी की बात मान ली। राजा रावण ने सूर्पनखा की बात मान ली। भगवान श्रीराम ने महर्षि अत्री की बात मान ली और सबसे बड़ी बात, भगवान श्रीराम ने सियोराम की बात मान ली। भगवती श्रीमती सीता ने भगवान श्रीराम की बात मान ली। लक्ष्मण ने भगवान श्रीराम की बात मान ली। भगवान श्रीराम ने सीता की बात मान ली। बस दो की बात ही नहीं मानी गई, पहली बात यह कि, महषि वशिष्ठ की बात, राजा दशरथ ने नहीं मानी। महषि वशिष्ठ ने राजा दशरथ से कहा था कि, "महाराज ! आज रात बारह बजे से पहले, राम का राज्याभिषेक कर दें, नहीं तो फिर कभी नहीं कर पाएंगे"। परंतु राजा दशरथ ने महषि वशिष्ठ की बात नहीं मानी। और दूसरी बात यह है कि, रानी मंदोदरी ने राजा रावण से कहां कि, "सीता को वापिस राम को सौंप दो"। किन्तु राजा रावण ने रानी मंदोदरी की, बात नहीं मानी। और इस तरह से हमको, मिली रामायण और रामचरितमानस। मान सब की नस है, इसलिए मानस है। मान + नस = मानस। इसलिए मनुष्य कहता है कि, "जहाँ हमारा मान होगा, वही हमको जाना चाहिए"। मान + Us = मानस। Us = हमारा। तो व्यक्ति वहीं जाता है, जहाँ उसकी बात को मानकर, उसको मान दिया जाता है। चरता है जो ऋतु के अनुसार यानी पृथ्वी पर

जैसी-जैसी ऋतु आती है, वैसा-वैसा वह चरता है, वह "चरित" कहलाता है। चर + ऋत = चरित। चरता + ऋतु = चरित। चरता = भोजन करना। यानी जो ऋतु के अनुसार, भोजन करता है वह "चरित" है। उसी के चरित को, Follow किया जाता है। तभी तो लोग बताते हैं कि, "तुम बताओ कि, तुम सर्दियों में क्या भोजन करते हो ? तुम बरसात में क्या भोजन करते हो ? तुम गर्मियों में क्या भोजन करते हो" ? रहता है जो आम लोगों में, वह राम कहलाता है। रहना + आम = राम। जो आम लोगों में, आम लोगों की तरह रहता है, वह राम कहलाता है। इस तरह से "राम चरित मानस" कहलाता है। आम लोगों में रहनेवाला राम, ऋतु के अनुसार भोजन करता है, और उसी जगह जाता है, जहाँ पर उनको मान मिलता है। मान हमेशा हमारे लोगों में ही मिलता है, आदर तो Other लोगों में मिलता है। आदर = Other. क्योंकि जो दर पर आ जाता है, उसे आदर देना ही पड़ता है। आता + दर = आदर। दर = दरवाजे। यानी जो आपके दरवाजे पर आया है, उसको आदर दिया जाता है। क्योंकि राम की बात को, सब मान देते हैं, और राम की बात को सब मान लेते हैं। इसलिए आम लोगों की तरह रहो, पृथ्वी पर जब-जब जो-जो ऋतु आती है, उस-उस ऋतु के अनुसार भोजन करो। और अपने मान का ध्यान रखो। कभी ऐसी बात नहीं करो, जो कोई माने न। क्योंकि "मानस" में सभी ने, एक दूसरे की बात मानी है। इसलिए भगवान राम के अनुसार, चरित करो और अपना चरित बनाओ, आपकी बात को सब मानेंगे और, आपको सब मान देंगे। श्रीरामचरितमानस को तो मान, काशी के ब्राह्मणों ने भी नहीं दिया था। गोस्वामी तुलसीदास जी को, श्रीरामचरितमानस का मूल ग्रन्थ, राजा टोडरमल के यहां पर, रख देना पड गया था। और तो और काशी के ब्राह्मणों ने तो, गोस्वामी तुलसीदास जी की हत्या, करने के लिए तांत्रिक बटेश्वर मिश्र ने, तांत्रिक भैरव को भेजा था। किन्तु तांत्रिक मारण प्रयोग उल्टा ही, बटेश्वर मिश्र के प्राण ले गया। काशी के ब्राह्मणों ने भरकस प्रयत्न किये की, श्रीरामचरितमानस को मान नहीं मिलना चाहिए, कि कोई श्रीरामचरितमानस को माने नहीं, किन्तु आज इसी श्रीरामचरितमानस की, कथा करके ब्राह्मणों ने अपने जीवन को, सुखमय बना लिया है। परन्तु श्रीरामचरितमानस आज भी, अपने मान को पाने का प्रयास कर रहा है। और लोग आज भी श्रीरामचरितमानस को, मान देने को तैयार नहीं हैं। जबकि श्रीरामचरितमानस को लिखा ही, आम जनमानस के लिए, आम जनमानस के द्वारा बोली जाने वाली, अवधी भाषा में लिखा गया था। और आम जनमानस ही आज, श्रीरामचरितमानस पर प्रश्न उठा रही है।

133. मुँह + ढककर = मूँढ़ -

मुँह को ढककर, रखनेवाला आदमी मूँढ़ है। जो अपने को मूँदकर रखते हैं। मुँह + ढककर = मूँढ़। जो मूँढ़ होते हैं, उनकी पहचान के लिए, उनका मुण्डन कर दिया जाता है। जिससे पता चले कि,यह मूँढ़ी आदमी है।

134. मुद + दर = मुद्रा -

जिसके प्राप्त होने पर व्यक्ति मुदित होता है, उसे मुद्रा कहते हैं। जिससे किसी वस्तु की दर तय की जाती है उसे मुद्रा कहते हैं।

135. मुहूर्त -

ध्यान-साधना आदि आध्यात्मिक कार्य करने के लिए "ब्रह्म मुहूर्त" होता है। क्योंकि अन्य समय पर ध्यान-साधना आदि पर्याप्त फल प्रदान नहीं करेंगे। उसी प्रकार व्यापार, शिक्षा, आदि अन्य सामाजिक-राजनीतिक और धार्मिक कार्यों को करने के लिए मुहूर्त होता। जिससे सही समय पर कार्य प्रारंभ करने पर उचित फल प्राप्त करेंगे। कहा भी गया है "Well Began Is Half Done".

136. मुस्लिम -

Slim होना तो सब चाहते हैं, किन्तु मुस्लिम होना कोई नहीं चाहता। जबकि Slim से पहले "मु" आता है। "मु" यानि मुँह। "मुँह" को छोड़कर Slim कैसे हो सकते हैं ? पहले "मु" और फिर Slim आएगा। Slim होनेवाला Automatically मुस्लिम हो जाता है। और मुस्लिम होनेवाला Automatically Slim हो जाएगा। सारे मुस्लिम Slim होते हैं, आज तक मोटा मुस्लिम नहीं देखा। सभी छरहरे बदन वाले हैं, जबकि सभी मांसाहारी हैं, और तीनों समय डटकर खाते हैं, कभी व्रत या Dieting करते नहीं देखा। इसलिए Slim होना है, तो फिर मुस्लिम हो जाओ। Protein का Jucie भी तो मांसाहार से बनता है, जो Body को Slim रखता है।

137. मन + ओं + बल = मनोबल -

एक शब्द है "मनोबल" इसका उच्चारण यह था, "मनोंबल" किन्तु कालान्तर में मनोबल बचा। मन जब "ॐ" से मिल जाता है, तो मन में मनों बल आ जाता है। एक मन तो चालीस किलोग्राम का होता है, मनों फिर अनगिनत किलोग्राम का होता है, क्योंकि "ॐ" परमात्मा है, परमात्मा का बल अनगिनत है। इसलिए जब व्यक्ति का मन "ॐ" से मिल जाता है, तो व्यक्ति का मनोबल भी बढ़ जाता है। "ॐ" और मन का मिलन ध्यान की अवस्था में ही होता है। तो प्रतिदिन ध्यान करो और अपने मन को ॐ से मिलाओ, अपना मनोबल बड़ाओ। लेकिन रोज ध्यान अवश्य करना है। प्रत्येक मन्त्र के आगे ॐ लगाया जाता है। मन्त्र को "ॐ" से ही शक्ति प्राप्त होती है। क्योंकि ॐ Socket है, जिसमें परमात्मा की उर्जा प्रवाहित हो रही है। Socket में तीन छेद होते हैं, मन्त्र Power Cord है, Power Cord की Plug में तीन पिन होती हैं। क्योंकि मन्त्र यानि - मन + त्र होता है। त्र यानि तीन। Plug को Socket में लगाने पर मोबाइल Charge हो जाता है। इसी प्रकार "ॐ" से मन को लगाने पर शरीर, मन, आत्मा तीन शक्तिवान हो जाते हैं। जिस तरह मोबाइल को प्रतिदिन Recharge किया जाता है। उसी प्रकार ध्यान करके अपने आपको दिनभर के लिए Recharge कर लो, तो मनोबल बना रहेगा।

138. मूँछ + तैद = मुस्तैद –

मूँछ को तय करके रखना ही, मुस्तैद है। जो लोग मुस्तैद होते हैं, वह बार-बार अपनी मूँछ के बालों को बल देकर तय करते रहते हैं, वही लोग मुस्तैद होते हैं।

139. Meter -

एक ही मित्र रखना चाहिए। उससे भी एक Meter की दूरी रखनी चाहिए। Meter बना है मितर से, और मितर बना है मित्र से। मित्र बना है म + इत्र से। जिस पर आप महकता इत्र डालेंगे, वह आपका मित्र है, क्योंकि वह आप से इतर है, उस पर इत्र की महक डालकर उसे अपना मित्र बना लिया। किंतु फिर भी उससे Meter भर की दूरी है। मित्र एक ही हो सकता है। जिसके कान में आप अपनी बात

कह सकते हैं, Nose से इत्र की महक से मित्र को पहचान लिया जाता है। इसलिए कन्नौज में इत्र बनाया जाता है। कान के ऊपर उसका फुआ रखा जाता है, Nose से उसकी महक मिलती रहती है। इस तरह वह इत्र उस व्यक्ति की रक्षा करता रहता है। इसलिए मित्र की जगह इत्र को अपनाओ और इत्र अपने पर छिड़कवाओ। फिर कान के ऊपर इत्र का फुआ बना कर रखो।

140. Me + थक = मिथक -

मुझे थकान है। जब व्यक्ति थक जाता है। किन्तु वह किसी पर जाहिर नहीं होने देना चाहता है कि, "वह थक गया है"। तो अपनी थकान को छुपाने के लिए, जो कहानियाँ गढ़ता है, वह मिथक कहलाती हैं - जैसे किसी व्यक्ति को काम पर भेजा, आपको पता है कि, इस कार्य में तथा आने-जाने में इतना समय लगेगा। किन्तु काम पर गया व्यक्ति देरी से आता है। तो देरी से आने का जो कारण वह बताता है, वही मिथक है। क्योंकि काम पर गया व्यक्ति यह स्वीकार नहीं करेगा कि, वह थक गया था और रास्ते में उसने आराम किया और फिर यहाँ पर आया। परन्तु वह व्यक्ति अलग ही कुछ का कुछ बतायेगा, जिसका कोई-भी प्रमाण नहीं होगा। बस यही है मिथक। ऐसे मिथक गढ़नेवाले व्यक्ति, हमेशा किसी न किसी सोच में रहते हैं। वह कोई न कोई मिथक गढ़ते रहते हैं - जैसे कि उनींदे से रहते हों। आप अपनी बात कहते रहिये, उनका ध्यान आपकी बात पर नहीं होता है। उनके दिमाग में इस कार्य से बचने का Plan बन रहा होता है। अपनी बात पूरी समझाने के बाद, जब आप उससे पूँछेंगे कि, "सब सबझ लिया क्या काम है ?" वह चौंका हुआ अपनी सोच से बाहर आएगा और कहेगा कि, "हाँ क्या ???" फिर थोड़ा रुककर बोलेगा, "हाँ-हाँ मैं समझ गया" जबकि उसने काम आधा-अधूरा ही सुना है। फिर वह काम पर निकल जाएगा। पूरा दिन कहीं पड़ा आराम करता रहेगा। शाम में आकर बताएगा कि, "काम नहीं हुआ" और फिर जो कहानी सुनाएगा, वही कहानी ही तो मिथक होगा। ऐसी उसके पास सैकड़ों कहानियाँ हैं। हर किसी को कोई न कोई कहानी सुनाकर अपनी थकान के बारे में किसी को कुछ नहीं बताता है। बस यही सुनाता है, "अरे ! सुन यार, अरे सुन तो" बस यहीं से उसके मिथक शुरु होते हैं।

141. मोह + ताज = मोहताज -

मोह में आदमी ताज बनाता है और फिर अपने ताज का ही मोहताज हो जाता है। शाहजहां ने मुमताज के मोह में ताज बनाया और फिर ओरंगजेब के द्वारा शाहजहां को तख्त-ओ-ताज से महरूम कर दिया गया। इस तरह शाहजहां अपने ताज का ही मोहताज हो गया।

142. माथा टेकना = Take Care -

यानि जब भी कभी यात्रा पर जाते हैं, तो बड़े-बुजुर्गों, देवी-देवताओं को मत्था टेककर जाते हैं। तो इन्होंने यहाँ पर "मत्था" शब्द हटा दिया और "टेककर" को इन्होंने "टेककेयर" (Take are) शब्द बना दिया। यहाँ पर आप Take Care को टेक केयर न पढ़कर टेक कर पढ़ें। तो यह शब्द Take Care बन जाता है। मत्था सभी टेक कर ही जाते हैं, कोई हाथ की हथेली को हाथ में लेता है, और हथेली पर मत्था टेकता है। कोई किसी के मत्थे को चूमकर मत्था टेकता है, कोई Salute करता है, तो वह भी अपनी हथेली को माथे पर लगाता है। कोई सलाम करता है, तो वह भी अपनी हथेली को

माथे पर लगाता है। कोई किसी के चरणों को, पैरों को, घुटनों को हाथ लगाकर, उस हाथ को मत्थे पर लगाता है, कोई मत्था ही चरणों पर रख देता है, यही सही विधि है, मत्था टेकना की। जिसे सजदा करना कहते हैं। खुदा को सजदा करके ही हर कोई यात्रा पर निकलता है। किन्तु मत्था हटा दिया और टेककर को Take Care कर दिया। पर यह नहीं बताया की कौन Care करेगा ? जबकि मत्था टेककर जाने से तो बड़े-बुजुर्गों, देवी-देवताओं, परमात्मा का आशीर्वाद Care करेगा और बंदा सही सलामत मंजिल तक पहुँच जाएगा। तो मत्था टेककर चलने से Take Care हो जाएगी।

143. मूढ़ + छा = मूर्छा -

मूढ़ आदमी छाह को ढूँढता है। इसीलिए मूढ़ आदमी अपने मूढ़ पर गमछा ओढ़ लेता है।

144. महा = अहम का उल्टा महा - अहम को महा बना लो। महा के पीछे अहम को छुपा लो।

145. माया और ब्रह्म –

यह संसार आपको अपनी उलझनों में, उलझा लेगा। आप बैठोगे ब्रह्म की प्राप्ति के लिए, ध्यान में, यह संसार, अपनी चाहतों के लिए, आपको ही ब्रह्म, बना लेगा। फिर दूसरे की चाहतों के लिए जो भी करता जाएगा, वही तो माया कहलाएगा। खुद को ब्रह्म मान और खुद की बनाई माया को सत्य मान लेगा। यही भ्रम फिर, पाल लेगा। वक्त के साथ, सब माया का लोप, हो जाएगा। स्वयं को ब्रह्म, समझनेवाला प्रकृति में, पुनः मिल जाएगा।

146. मूढ़ + रति = मूर्ति -

जो भी कलात्मकता, मूढ़ बनाती है, रति करने का, उसे मूर्ति कहते हैं। मूढ़ + रति = मूर्ति। मूर्ति देखने से ही, आदमी का मूढ़, रति करने का बन जाता है। इसीलिए, खजुराहो आदि जगह की, जो मूर्तियां हैं, वह मूर्तियां ही, मूढ़ बनाती हैं, रति करने का। इसीलिए लिंग और योनि की, मूर्ति रखी गई है। लिंग एवं योनि, जब रति कर लेते हैं, तब उन्हें जल से धोया जाता है। जब कोई, इस लिंग एवं योनि की, मूर्ति के बारे में, पूछता है, तब उसे सबकुछ बता दिया जाता है। इसीलिए मूर्ति हमेशा, युगल में होती है, एक पुरुष दूसरी स्त्री की। इसलिए मूर्ति के सामने, जोर-जोर से वाद्य यंत्र बजाकर, आरती की जाती है। क्योंकि मूर्ति को देखकर, मूढ़ बन जाता है, रति करने का, तब सब लोग उसका, आनंद लेते हैं, और, देखकर खुश होते हैं। इसीलिए जब कोई आता है, रति करने के लिए, तब उस रति प्रक्रिया का, दर्शन करने के लिए, दूसरे लोग को शंख बजाकर बुलाया जाता है। आ + रति = आरती। आ = आना रति के लिए। जहाँ रति किया जाता है, उस स्थान को, गर्भगृह कहते हैं। क्योंकि, रति करने के बाद, गर्भ की स्थापना हो जाती है। गर्भ + गृह = गर्भगृह। उसके बाद, जो रस युगल के, अंगों से रिसकर, उनके चरणों तक आता है, उसे एकत्रित कर लिया जाता है, उसे ही चरणामृत के रूप में, बाँट दिया जाता है, क्योंकि यही अमृत है, यानी जो कभी मरता नहीं है। अ + मृत = अमृत। रति के पश्चात, दोनों के अंगों को, जल से धोया जाता है, और, उसी जल को इकट्ठा, कर लिया जाता है, जिसे आरती के बाद, सब पर छिड़क दिया जाता है। आरती के बाद, आरती की थाली, आरती में शामिल व्यक्तियों के, पास ले जाई जाती है, जिसमें रतिक्रिया का, दर्शन करनेवाले लोग, उस आरती की थाली में, चढ़ावा डाल देते हैं, क्योंकि उन्होंने किसी पर किसी को चढ़ते हुए, देखा है। इस रतिक्रिया

को ही भोग लगाना कहते हैं, भोग का अर्थ भी स्त्री को भोगना होता है। मन हमेशा, वासना के तरफ ही और दिल प्रेम (काम) की तरफ, आकर्षित होता है, इसलिए इस स्थान का नाम, मन्दिल होता है। मन् + दिल = मन्दिल। मन्दिल ही का अपभ्रंश, मन्दिर है। इसीलिए मन्दिल में, भगवान होते हैं। भग + वान = भगवान। भग = योनि। वान = लिंग। इसीलिए गर्भगृह में भगवान की प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है, क्योंकि युगल के मिलन के पश्चात, स्त्री के गर्भ में, बच्चे के रूप में, प्राण प्रतिष्ठित हो जाता है। क्योंकि उस गर्भ में, पुरुष के प्राण की प्रति, प्रतिष्ठित हो चुकी होती है। इसीलिए सब कहते हैं कि, "यह तो इसका ही रूप है"। शादी होने के बाद, प्रथम रात्रि मंदिर में, जाया जाता है। जहाँ पर पुरुष-स्त्री का, मिलन होता है। इसलिए यहाँ पर उसे, अर्धनारीश्वर कहा जाता है। शादी के बाद के, प्रथम मिलन में, जो रक्त स्त्री के अंग से, निकलता था, उस रक्त से पुरुष के, माथे पर तिलक, लगाया जाता था। मंदिर रति करने के लिए, होता है। रजस्वला स्त्री के साथ, रति नहीं कर सकते हैं। अतः, रजस्वला स्त्री का मंदिर में, आना मना है।

147. मन + Naughty = मनोती -

मन बड़ा Naughty होता है, इसलिए मनुष्य मनोती माँगता है, कि "मन बड़ा नटखट है, मन मेरा एक जगह नहीं लगता, आप मेरा मन एक जगह लगा दो"। यानि मन की चंचलता को समाप्त करने के लिए मनोती माँगी जाती। क्योंकि मन जब एक जगह लगेगा तो कार्य ठीक से हो जाएगा, इसलिए Naughty मन को ठीक करना है तो मनोती माँगो और Naughty मन को एकाग्र करो।

148. My + स्त्री = Mystery –

"This is my स्त्री ! इसको आज तक, मैं समझ नहीं पाया हूँ !" ऐसा कथन एक पुरुष ने, अपनी स्त्री का परिचय करवाते हुए, किसी से कहा। उस पुरुष को, "पत्नी" शब्द की अंग्रेजी, नहीं आती थी। तो उसने, "यह मेरी औरत है" कि जगह कहा, "This is my स्त्री।" तभी दूसरे ने कहा, "हाँ ! क्यों नहीं यह सही ही तो है, प्रत्येक पुरुष की स्त्री, एक Mystery ही तो है"। इसलिए पुरुष अपनी स्त्री को, परदे में रखता है, या, फिर Makeup के पीछे, चेहरा छिपा देता है। ताकि उसकी स्त्री को, कोई पहचान न पाए, और उस पुरुष के रहस्य को, कोई जान न पाए। क्योंकि वह स्त्री, उस मनुष्य के सब रहस्य, बोलकर खोल देगी। इसलिए जिस प्रकार, मय यानी माया, माया यानी जादू के रहस्यों को, छुपाकर रखा जाता है, उसी प्रकार स्त्री को, छुपाकर रखा जाता है। इसलिए उसे, मय + स्त्री, या, My + Stery, कहते हैं। यानी, Mystery.

149. Miss + ऋतु = मिश्रित -

जो स्त्री अपनी ऋतु को Miss करती है। वह स्त्री मिश्रित हो जाती है। यानी जो स्त्री अपनी ऋतु को चूक जाती है और अपनी ऋतु को याद करती है, कि "अभी तक ऋतु नहीं हुई" तो वह स्त्री मिश्रित हो चुकी है।

150. Motivation = मोती वेतन = मोटी वेतन -

मोटी वेतन से ही Motivation मिलता है। इसलिए काम करने के लिए, मोटी वेतन का Offer दिया जाता है। मोटी + वेतन = Motivation. "अच्छा काम करोगे, तो ज्यादा पगार मिलेगा" यही

Offer का एक क्षण ही, व्यक्ति को Action में ले आता है। और व्यक्ति तेजी से मन लगाकर, कार्य करने में जुट जाता है। पुराने जमाने में राजा लोग, अपने यहाँ काम करनेवाले को, मोती देते थे वेतन के रूप में। मोती + वेतन = Motivation. फिर राजा लोग यह भी कहते थे, "मैं तुम्हारा मुँह मोतियों से भर दूँगा। अगर तुमने यह काम कर दिया"। या "इसका दामन मोतियों से भर दिया जाए"। यही मोतियों का वेतन बाद में, मोटी वेतन बना फिर Motivation बना। मोती वेतन > मोटी वेतन > Motivation. इसी परम्परा को निभाते हुए, सभी उद्योगपति अपने Employees को, Motivate करने के लिए, मोटी वेतन देते हैं। इसीलिए Companies उन्हीं, Employees का प्रचार करती हैं, जिनको मोटी वेतन देती हैं, जिससे दूसरों को भी Motivation मिले। समाज में लोग इसलिए कहते हैं कि, "देखो तो, उसको कितनी मोटी वेतन मिलती है, तुम भी कुछ ऐसी ही नौकरी करो, जिससे तुम्हें भी मोटी वेतन मिले"। "बड़ी मोटी कमाई है, उस व्यवसाय में, तुमको भी यही व्यवसाय करना चाहिए"। इस तरह से मोटी वेतन ही, Motivation देती है।

151. मेह + नत = मेहनत -

मेह यानी मेहरबान, नत यानी झुकना, मेहरबान के आगे झुको, तो मेहरबान मेहरबानी करेगा। यही मेहनत है। मेहरबान यानी परमात्मा, परमात्मा को नमस्कार करो, और फिर कार्य प्रारंभ करो। मेहनताना अवश्य मिलेगा। मेहनत करने से जो आता है, वही मेहनताना कहलाता है। पर मेहनत नहीं करोगे तो, फिर ताना भी सुनोगे। ताना सुनानेवाले शाह को, तानाशाह बोलोगे और फिर तानाशाही का दुःख झेलोगे। मर्म यही है कि, मेहनत करो।

152. मिमियाना + किरकिरी करना = Mimicry -

जब कोई मिमियाता है, या, जब किसी की किरकिरी हो जाती है। तब लोग किसी बालक को कहते हैं, "अरे ! दिखा तो, वह कैसे मिमिया रहा था।" तब वह बालक, उस आदमी की नकल उतारता है, जो मिमिया रहा था। लोग फिर यह भी कहते हैं, कि "अरे ! मैंने देखा, कैसे सबके सामने, उसकी किरकिरी हुई।" "अरे ! दिखा तो, जब उसकी किरकिरी हुई, वह कैसे मुँह बना रहा था।"तो किसी के मिमियाने, और किरकिरी की, नकल उतारने पर, जो मजाक बनता था, उस पर लोग हंसते थे और मजे लेते थे। यही मिमियाने का "Mimi" और किरकिरी का "किरी" दोनों को मिलाकर शब्द बना "Mimicry". इसमें Mimicry में, Mimi और Cry दो शब्द हैं, जिसमें मिमियाना एक, तरह का Cry करना ही होता है। यानी, जब कोई मिमियाते हुए रोता है, और उसको देखकर, किसी दूसरे को हंसी आती है, और वह उसके मिमियाते हुए रोने की, नकल करके दूसरे को दिखाता है, इससे उसे बहुत मजा आता है, लोग भी कहते हैं, "एक बार करके और दिखा, पैसा देंगे" उसे Mimicry कहते हैं।

153. मन + जी + इल् = मंजिल -

मन जब मर जाता है, तब "जी" बन जाता है। "जी" यानी "G". "G" यानी God. जब किसी के नाम के, पीछे "जी" लगाया जाता है। तब इसका मतलब यह है कि, "वह God हो गया है"। God यानी "जी" की पदवी तक, पहुंचने के लिए उसको, अपने मन को मर जाने देना होता है। मन के मर जाने पर

"जी" लगाकर सम्मान किया जाता है। इसलिए जिन्होंने भी अपने मन को मर जाने दिया है, वही लोग "जी" यानी God बन गए हैं, अर्थात् नर से नारायण बन गए हैं। 'मन को मारना' यह एक मुहावरा भी है। इसलिए साधक, तपस्या करके मन को मारने का, प्रयत्न करते हैं। मन को मारकर, सिद्ध बन जाते हैं और उनको सभी "जी" कहकर बुलाते हैं। साधारण जन के लिए God बन जाते हैं। ऐसे सिद्धों के पास बैठकर, अन्य लोग भी अपने मन को, मारने का अभ्यास करते हैं। तो यही है मनमर्जी का अर्थ। मन + मर + जी = मनमर्जी। एक बार मन मर गया, तब कोई भी आपका मन, भटका नहीं पाएगा। क्योंकि वहाँ अब मन का, वजूद ही नहीं है। मन अब वह "जी" में परिवर्तित हो गया है। इसलिए मन की मंजिल "जी" हो जाना है। जब मन, "जी" बन जाएगा, तब "जी" को, "इल" यानी "इल्हाम" होने लगेगा। मन + जी + इल् = मंजिल। "इल्हाम" यानी "Wisdom" यानी "बुद्धिमत्ता" यानी "ज्ञान" ही सबकी मंजिल है।

154. मुनन्जो + दड़ो = मोहनजोदड़ो -

मुनन्जो सिंधी शब्द है, जिसका अर्थ है, "मेरा"। दड़ा भी सिंधी शब्द है, जिसका अर्थ है, "दर"। इसका पूरा अर्थ हुआ "मेरा दर"। सिंध में सट्टेबाजी करना, आम बात है, और मोहनजोदड़ो ऐसी जगह थी, जहाँ पर सट्टेबाजी की दरें, लगाई जाती थीं। "दड़ा" को, सिंधी भाषा में, सट्टेबाजी करने को, कहा जाता है। मुनन्जो = मेरा > दड़ा = दरा = दर।

155. My + स्त्री = Mystery -

घूंघट के पीछे हो, या, Makeup के पीछे, स्त्री सदा से ही, अपने चेहरे को, छिपाती रही है। इसीलिए स्त्री सदा से ही, एक Mystery है। किंतु व्यक्ति यही, कहता है कि, यह "My स्त्री है।" किंतु वह पुरुष कभी भी, My स्त्री की Mystery को, समझ नहीं पाता है। My + स्त्री = Mystery.

156. मोह + चीर = मोची -

मोह करता है, जो अपने चीर से, उसे मोची कहते हैं। शरीर पर स्थित वस्त्रों को, चीर कहते हैं। आत्मा पर स्थित शरीर की, खाल को चीर कहते हैं। मोची को इस चीर से, मोह होता है। यानी, मोची को खाल से, मोह होता है। इसी खाल को, चर्म कहते हैं। इसीलिए मोची को, चर्मकार कहते हैं। चर्मकार का अपभ्रंश, चमार होता है।

157. मूढ़ + खानेवाला = मूर्ख -

मूढ़ खानेवाला, मूर्ख कहलाता है। लोग अक्सर बोलते हैं, "यार ! मेरा मूढ़ ना खाया कर।" मूढ़ को खाने की क्रिया को, मूर्खता कहते हैं। मूढ़ + खाता = मूर्खता। इसीलिए जब कोई, मूढ़ को खानेवाला सामने, आता दिखाई देता है, तब रास्ता बदल लिया जाता है या फिर कहा जाता है, "यह ! आज फिर आ गया, मेरा मूढ़ खाने के लिए।"

158. Moon + Mint = Monument -

Moon की चाँदनी में, जो चमके, एवं, Mint की तरह, ठंडक प्रदान करे, उन्हें ही Monument कहते हैं। Moon + Mint = Monument. Moon-O-Mint. इसीलिए Monument का निर्माण, केवल पूर्णिमा की, रात को ही, किया जाता था। ताकि वही वस्तुएँ, प्रयोग में ली जाएँ, जो

पूर्णिमा की चाँदनी में, चमकती हैं। इससे वस्तुओं की, Quality का पता, चल जाता था। पूर्णिमा की रात का व्रत, जीवन में चंद्रमा की भाँति, चमक प्रदान करता है। एवं, मन को Mint की तरह, ठंडक प्रदान करता है। समर में वीरगति को, प्राप्त हुए सैनिकों की स्मृति में ही स्मारक बनाए जाते हैं। समर + अर्क = स्मारक। एवं औषधि में से अर्क भी पूर्णिमा की रात को निकाले जाते हैं। इसलिए औषधि के अर्क को सोमरस कहा जाता है। पूर्णिमा की रात को, औषधि के अर्क में, सोम का रस मिल जाता है। यही कार्य अभी वर्ष में, शरद पूर्णिमा की रात को, होता है।

159. मिथ्या + Logic = Mythology -

मिथ्या एवं Logic के, जोड़ को Mythology कहते हैं। जब मिथ्त्व को, Logic के द्वारा, सिद्ध किया जाता है, उसे Mythology कहा जाता है। जब व्यक्ति कहता है कि, "मैं थो वहाँ ! मुझे पता है, वहाँ क्या-क्या हुआ ? कैसे-कैसे हुआ था ?" मैं थो = Mytho. अपनी बात को सिद्ध करने के लिए Logic देता है, वही Mythology है।

160.महत्त्व + आत्मा = महात्मा -

जब व्यक्ति, शरीर से नहीं, आत्मा से पहचाना जाता है, तब व्यक्ति, महात्मा कहलाता है। यानी जब व्यक्ति, शरीर को नहीं, आत्मा को महत्त्व देने, लग जाता है। तब व्यक्ति, महात्मा कहलाता है। महत्त्व + आत्मा = महात्मा। क्योंकि जब व्यक्ति, स्वयं की आत्मा को, महत्त्व देता है। तब व्यक्ति, दूसरों की आत्मा को भी, महत्त्व देता है। इसे ही आत्म सम्मान कहते हैं। आत्मा का सम्मान = आत्म सम्मान।

161. मन्त्र = Mentor -

जो मन्त्र दे, उसे, Mentor कहते हैं। मन्त्र = Mentor. Mentor से लोग, कोई एक ऐसी बात चाहते हैं, जिससे उन लोगों का, जीवन खुशहाल हो जाए। इसी बात को, मन्त्र कहा जाता है। मन्त्र को मन्तर भी, बोला जाता है। मन्तर को मन तक ही, रखना होता है। जैसे कि लोग कहते हैं, "ऐसी बात बता रहा हूँ, इसे अपने मन तक ही रखना। दूसरे किसी को मत बताना।" यही मन्तर ही तो Mentor है। मन्तर = Mentor. भारतीय परम्परा में, जो मन्त्र देते हैं, उनको गुरु कहते हैं। गुरु के द्वारा दिया गया, मन्त्र, गुरुमन्त्र कहलाता है। गुरुमन्त्र भी किसी को, नहीं बताया जाता है। मन को तोड़ने वाली बात को, मन्तर कहते हैं। जब साधना में साधक बैठता है, तब साधक का मन, अपने पुरानी आदत पर, Automatically चला जाता है। मन के इस Automatically जाने को, तोड़ना पड़ता है। मन की पुरानी आदतों को, तोड़ने के लिए जो बात, बताई जाती है। वह बात मन तोड़ कहलाती है। मन + तोड़ = Mentor. मन तोड़ से मन्तर हो गया, और फिर मन्तर से मन्त्र हो गया। सबका मन अलग-अलग प्रकार की, आदतों से भरा रहता है, इसीलिए सबके लिए, अलग-अलग मन्त्र होता है। एक का मन्त्र दूसरे को नहीं बताया जाता है।

162. मार + ज्ञान = मार्ग -

मार और रग, यह दो ही मार्ग हैं। पाठशाला में विद्यार्थियों को, मार कर जब ज्ञान सिखाते हैं, तब वह मार्ग कहलाता है। मारकर ज्ञान सिखाना। मार + ज्ञान = मार्ग। गाड़ी में जुते बैल, तांगे में जुते घोड़े, बोझ उठाये खच्चर-गधों को भी, कोच कर, मार्ग पर, रखा जाता है। इसीलिए, गाड़ी चलाने वाले

को, कोचवान कहते हैं। जो कोच कर ज्ञान सिखाता है, उसे Coach कहते हैं। कोच = Coach. जब समाज व्यक्ति की, दुःखती रग को जान जाता है, तब समाज ही Coach बन जाता है, और, व्यक्ति की दुःखती रग को कोचता है। इस प्रकार समाज भी मार्ग दिखाता है। मार + रग = मार्ग। बाँस की लकड़ी के आगे, लोहे की कील, लगी रहती है। इसी लकड़ी से, लोहे की कील को, बैलगाड़ी हाँकनेवाला, बैल को, ताँगा हाँकनेवाला, घोड़े को, खच्चर को हाँकनेवाला, खच्चर को, गधे को हाँकनेवाला, गधे को चुभोता है। इस चुभाने को ही, कोचना बोलते हैं।

163. Master + Mind = Mastermind -

Master कितना अच्छा शब्द है। Master यानी जो हमें, पहला सबक सिखाता है। Master यानी जो हमें, अ आ इ ई, क ख ग, सिखाता है। Master यानी माँ भी है, और स्त्री भी है। जब बच्चा छोटा होता है, तब उस बच्चे को, उसकी माँ जो सिखाती है, वह माँ कहलाती है। जब बच्चा बड़ा हो जाता है, तब उस पुरुष को उसकी, पत्नी यानी उस पुरुष की स्त्री जो, सिखाती है, वह स्त्र हो जाता है। दोनों को मिलाने पर, माँ स्तर से Master हो जाता है। दोनों ही सिखानेवाली, स्त्री होती हैं। माँ + स्त्री = Master. माँ और स्त्री इन दोनों के पास ही, Mind होता है। इसीलिए इसे Mastermind कहते हैं। Master + Mind = Mastermind. तो जब भी कोई, बुरा कार्य होता है, तो उस बुरे कार्य को, करनेवाले को Mastermind क्यों कहते हैं ? जबकि Master का हमारी, जिन्दगी को बनाने में, बहुत बड़ा योगदान होता है। Master हमारा प्रथम गुरु होता है। और उसी Master की दी गई, शिक्षा-विद्या से हमारा, Mind कार्य करने लायक बनता है। फिर क्यों हम Mastermind शब्द को, किसी बुरे कार्य को, करनेवाले के लिए, प्रयोग में लाते हैं ?

164. मत + भेद = मतभेद -

"तू ! किसी को मेरे भेद मत दे दिओ"। जब दोस्त से मनभेद हो जाता है, तब दोस्त यही ऊपर कही बात कहता है। मत + भेद = मतभेद। क्योंकि दोस्त ही दोस्त के भेद जानता है। किसी के भेद जानने के लिए, पहले उसके दोस्त से दोस्ती की जाती है, फिर दोनों दोस्तों में मनभेद कराया जाता है। तब दोस्त यही कहता है कि, "देख और तो सब ठीक है, पर तू ! मेरे भेद मत दे दिओ और न मैं तेरे भेद दूँगा"। लोगों को यही कहा जाता है कि, "हममें मतभेद हुआ है, मनभेद नहीं हुआ है"। मन + भेद = मनभेद।

165. मौन + Alisha = Monalisa –

जब मौन हो गई Alisha तब Monalisa हो गई। मौन हो जाने पर आँखें बोलती हैं और होंठ मंद मंद मुस्कान के साथ बंद रहते हैं। Monalisa Painting का अर्थ।

166. Major + रीति = Majority –

रीति को कितना Major रूप से मनाया गया है, इसका Measurement किसी की भी Majority को जना देता है। Major + रीति = Majority. अतः जिसका समर्थन करते हो उसके द्वारा आवाहानित रीति को Majority से मनाना चाहिए। जिससे उसे पता चल जाए कि, बहुत सारे लोग उसके साथ हैं। क्योंकि कौन किसके साथ है, इसका पता, उसके यहाँ पर फहरी पताका से चल जाता

है। तभी तो कहा जाता है, "जरा पता तो करो, हमारे साथ कौन-कौन है" ? पता + करो = पताका।

167. Mini + स्तर = Minister – Mini स्तर वाले को Minister कहा जाता है।

168. मौन + Soon = मॉनसून -

व्यक्ति को मान Soon चाहिए तो, व्यक्ति को Soon ही मौन हो जाना चाहिए। मौन हुए परमात्मा, मौन हुए देवी-देवताओं को ही, मान मिलता है। इसीलिए देवी-देवता की पत्थर की मूर्ति बनाई जाती है। यह मूर्ति सदा ही मौन रहती है। केवल जीवित मनुष्य ही अपनी इच्छाओं-आकांक्षाओं को बोलता है।

169. मृत + You = मृत्यु -

मृत्यु ही तो सबका भोज करती है। You को मृत्यु ही तो मृत बना देती है। उसी मृत से तब फिर मृदा बन जाती है।

170. Mill + Near = Millionaire -

जिनके पास मिल्कियत होती है, वही Millionaire होते हैं। जिनके पास Mill होती है, वह Millionaire होते हैं। Mill + Near = Millionaire. लेकिन पहले समय में, जिनके पास Milk की मिल्कियत होती थी, उन्हें ही Millionaire कहते थे। इसलिए लोग अपनी अपनी, मिल्कियत को दिखाने के लिए, गाय, भैंस, बकरी, ऊंट, भेड़, याक, पालते थे। इसी के अनुसार उनकी मिल्कियत, पता चलती थी। इसीलिए राजा लोग अपनी, मिल्कियत को प्रदर्शित करने के लिए, शेरनी का दूध पीते थे। जिससे राजा की बुद्धि, शेर की तरह हो जाती थी। और कहावत भी है कि, "शेरनी का दूध, स्वर्ण के पात्र में सुरक्षित रहता है"। आज भी लोग Milk को लेकर ही, दूसरे की मिल्कियत का पता लगाते हैं। इसी अपनी मिल्कियत को दर्शाने के लिए, चाय में दूध डालकर पीते हैं, "कि हमारे यहां तो, बिना दूध की कोई चाय पीता ही नहीं है"। इसलिए लोग रोज रात को, दूध पीकर सोते हैं, इसलिए ही लगभग सारी मिठाइयां, दूध से बनती हैं। इसलिए अपनी अपनी मिल्कियत को, दर्शाने के लिए भारत देश में, दूध को बड़ा महत्त्व दिया जाता है, क्योंकि Milk से मिल्कियत मापी जाती है।

171. मुझे + See + आह = मसीहा -

दु:ख दर्द में देखनेवाले को मसीहा कहते हैं। जब व्यक्ति कहता है, "मेरे दु:ख-दर्द में, यह मुझे देखने आया, इसके आते ही, मेरा दु:ख-दर्द दूर हो गया"। मुझे + See + आह = मसीहा। जब व्यक्ति दर्द में आह भरता है, उस दु:ख में, जो व्यक्ति को देखने आया है, वह मसीहा होता है। अधिकतर लोग मसीहा बनने के चक्कर में, दर्द में कराह रहे, व्यक्ति को देखने जाते हैं। कि, "मेरे देखने से ठीक हो जाए, तो लोग मुझे मसीहा कहेंगे"।

172. मुंह + रात = मुहूर्त -

रात के बीत जाने के बाद, जो अपना मुंह, शीशे में देखते हैं, उसे ही मुहूर्त कहते हैं।

173. मुंह + बंद + रख = मूर्ख -

जब यह बोला जाता है, "तू ! अपना मुंह बंद करके रख"। क्योंकि जो मुंह बंद करके रखता है, वह

मूर्ख होता है। मुंह + बंद + रख = मूर्ख। इसीलिए जो मूर्ख होता है, उसे कहा जाता है, "तू कुछ मत बोलना, बस अपना मुंह बंद रखना, एकदम चुप रहना"। सरोवर में जिस प्रकार से हंस चहचहाते हुए विचरण करते हैं, अगर हंसो के बीच, कोई बगुला आ गया तो, बगुले को चुप रहना पड़ता है। इसी प्रकार समझदारों की सभा में, जब कोई मूर्ख बैठ जाता है तो, मूर्ख को चुप रहना चाहिए। अगर कभी मूर्खों की सभा में, समझदार बैठ जाता है तो, तो समझदार को मौन धारण कर लेना चाहिए।

174. Mother + Saw = मदरसा -

Mother Saw को मदरसा कहते हैं। Mother + Saw = मदरसा। जहां बच्चे को Mother की देखरेख में, रखा जाता है, वह मदरसा कहलाता है।

175. मन + डोर = मंडोर -

मन की डोर ही मंडोर है। मन + डोर = मंडोर। मन्द हो जाता है जहां सूर्य, वह है मंदसौर। मन्द + सूर्य = मंदसौर।

176. मुंह + Read = मुरीद -

मुंह को Read करने वाले को, मुरीद बोला जाता है। मुंह + Read = मरीद। मुर्शीद के मुंह को देखकर, मुर्शीद की बात को, समझ जानेवाले को मुरीद कहते हैं।

177. मूल्य + भाव = मोलभाव -

एक होता है "मोल" जो वस्तु का मूल्य होता है। खरीदने वाला जब पूछता है, "इस वस्तु का क्या मूल्य है" ? तब उसको वस्तु का मूल्य बताया जाता है, मूल्य अपरिवर्तनशील है। जैसे - Fix Rate. दूसरा होता है "भाव" जो वस्तु खरीदने वाले के, Howभाव को देखकर लगाया जाता है। खरीदने वाला जब पूछता है, "इस वस्तु का क्या भाव लगाया" ? तब उसको वस्तु का भाव बताया जाता है। भाव परिवर्तनशील है। जैसे - वस्तु की Value. मूल्य + भाव = मोलभाव। How + भाव = हावभाव। किन्तु जब ना मोल किया जाता है, ना भाव किया जाता है, और वस्तु को भावना में, दे दिया जाता है, तब वस्तु देनेवाला कहता है, "आपसे क्या मोलभाव करना, आप तो ऐसे ही ले जाओ, और बिना तोले वस्तु को दे देता है। तराजू में भी नहीं डालता है, सीधा हाथों से उठाकर दे देता है। जब तक वस्तु खुली होती है, तब तक उसका भाव होता है। व्यक्ति भाव ताव कर सकता है, और क्रेता अपने भाव पर वस्तु, खरीद एवं बेच सकता है। एक बार वस्तु Pack हो गई, तब वस्तु का एक मूल्य, वस्तु के Packet पर लिख दिया जाता है। वही मूल्य देकर वस्तु को, खरीदना पड़ता है, जो मूल्य विक्रेता ने तय किया है। वस्तु को खरीदने वाला, उस Packet वाली वस्तु का, भाव ताव नहीं कर सकता है। Packet वाली व्यवस्था के कारण, व्यक्ति मोलभाव की पद्धति को, अपना नहीं सकता है। और भावना में आकर किसी को, कोई भी वस्तु नहीं दे सकता है। इससे क्रेता की तर्क करने की, शक्ति कम हो जाती है, और धीरे धीरे क्रेता की, बुद्धि मंद हो जाती है और क्रेता वस्तु को बिना मोलभाव के, खरीदने लग जाता है। एवं विक्रेता में वस्तु को, बिना किसी भाव के देने की भावना, समाप्त हो जाती है। क्रेता के द्वारा वस्तु के, मोलभाव की बात करने पर, विक्रेता ताव में आकर कहता है, "लेना है तो लो, ज्यादा मगज मत खाओ"। भाव की बात करने पर जो, ताव आता

है, उसे भावताव करना कहते हैं। भाव + ताव = भावताव। यानी क्रेता के मोलभाव करने का अधिकार, इस तरह विक्रेता के द्वारा, हनन कर लिया जाता है। और विक्रेता ही वस्तुओं के, तोल तथा मोल का, निर्धारक बन जाता है। विक्रेता ही अपने हिसाब से, वस्तुओं को विभिन्न वज़नों में तोलकर, उन तोली गई वस्तुओं को, Packet में डालकर, उन Packet पर वस्तु का मोल लगा देता है, जिसका क्रेता भाव नहीं कर सकता है। इस तरह से क्रेता के हाथ में एक Plastic की Crate पकड़ा दी जाती है, तब क्रेता उस Crate में वस्तुओं को क्रय करते हुए रखता जाता है। इस तरह वस्तुओं को, Crate में रखने वाला, ही तो क्रेता कहलाता है। Crate = क्रेट = क्रेता। Crate का ही अपभ्रंश क्रेता है।

178. मिट + थ्या = मिट्टी है -

अंत में सब मिट्टी है, इसलिए सब मिथ्या है। यानी सब मिट्टी हो जाता है। मिट्टी का कण-कण ही ब्रह्म है, इसलिए मिट्टी से सब उपजता है, और मिट्टी में सब मिल जाता है। यही मिट्टी ही तो ब्रह्म है, प्रकृति के रूप में विस्तारित होती है, और फिर मिट्टी में परिवर्तित हो जाती है। इसलिए सब मिट थ्या है। यानी मिट्टी में मिल जाता है। प्रलय में केवल मिट्टी रह जाती है, मिट्टी से ही पुनः सृष्टि होती है। इसलिए मिट्टी ही सत्य है, मिट्टी ही ब्रह्म है।

179. मीन + राल = Mineral -

जिस पानी में मीन की राल होती है, उसे Mineral Water कहते हैं। मीन के मुंह से जो राल टपकती है, वह पानी में मिल जाती है, उस पानी को Mineral Water कहते हैं।

180. मज + नूह = मजनू = मनु -

मज नूह ही मजनू है। मजनू का अपभ्रंश मनु है। मज + नूह = मजनू = मनु। मजनू का टीला ही, वह जगह है, जहां पर जल प्रलय के समय, नूह ने शरण ली थी। नूह के द्वारा मज चलाई जाती थी। मज = भैंस।

181. मन + मोह + हक = मनमोहक -

मन को जो मोह लेता है, वही हक की बात कहता है। मन + मोह + हक = मनमोहक। व्यक्ति सबसे पहले, दूसरे के मन को मोह लेता है, और तब अपने हक की बात कहता है। किसी के मन को मोहने के लिए, व्यक्ति उस व्यक्ति के मन को, मोहने वाले कार्य करता है। वचन बोलता है, वस्त्र पहनता, उसके मन को मोहने वाले, भोजन के व्यंजन खिलाता है। यानी व्यक्ति पूरी कोशिश करता है कि, "किसी भी प्रकार से, मैं इसका मन मोह लूं, तब अपने हक की बात करूंगा। यह मना नहीं करेगा"।

182. Miss + स्त्री = Mistry -

मिस्त्री ही केवल, सभी की Mistry को जानता है। मिस्त्री = Mistry. मकान में कहां पर क्या क्या बना है, यह केवल मिस्त्री ही जानता है। लकड़ी के बनाए गए Furniture, एवं अन्य वस्तुओं में, कहां क्या क्या बना है, यह केवल मिस्त्री ही जानता है। और बाकी सब लोगों के लिए तो, यह सब एक Mistry होता है। इसलिए इनको राजमिस्त्री कहते हैं। यह मिस्त्री ही तो सब राज जानते हैं, और राज को छुपाकर रखते हैं, इसलिए राजमिस्त्री की दिहाड़ी भी, ज्यादा होती है। किन्तु Miss एवं स्त्री की

Mistry को, कोई नहीं जानता है। Miss + स्त्री = Mistry. Miss और स्त्री हमेशा एक, Mistry ही रहते हैं। Miss = अविवाहित। स्त्री = विवाहित। मिस्त्री के द्वारा बनाए गए, सामान से भी ज्यादा, Mysterious ज़िन्दगी होती है, Miss और स्त्री की। इसलिए लोग Miss पर Try करते, रहते हैं कि, "यह Miss मेरी स्त्री बन जाए"। और यह कहते हैं, "Miss यह Try करो"। Miss + Try = Mistry. Miss उस व्यक्ति से शादी करने के बाद, उस व्यक्ति की स्त्री तो बन जाती है, किन्तु तब भी Miss बनी हुई स्त्री की, Mistry को जानने वाला कोई मिस्त्री, आज तक नहीं बना है। इसलिए Miss एवं स्त्री आज भी, एक Mistry ही हैं।

183. मेहनत + ताना = मेहनताना -

मेहनत करनेवाले को ताना भी सुनना पड़ता है, तब जाकर मेहताना मिलता है। मेहनत + ताना = मेहनताना। मेहनताना देनेवाला मेहनताना देते समय, ताना अवश्य देता है, "यह ठीक से नहीं किया, वहां ऐसा करना था, काम के बीच में कहां गया था, तेरे इतने पैसे काटकर लूंगा"। इस तरह से मेहनत करनेवाले को, मेहनताना के साथ-साथ, ताना भी सुनने को मिलता है। इसलिए मेहनत करनेवाले को, ताना सुनने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

184. मूक + Cut = मुक्त -

मूक को Cut करके मुक्त कर दिया जाता है। मूक + Cut = मुक्त। मूक की कटी लाश पड़ी रहती है, इस तरह मूक को मुक्ति मिल जाती है। मूक + कटी = मुक्ति। चुप रहनेवाले को Chop कर दिया जाता है, इसे ही तो चुपचाप कहा जाता है कि, "चुप हो जा, ज्यादा बोल मत, नहीं तो तुझे Chop कर देंगे"। चुप + Chop = चुपचाप। इस तरह से किसी को, चुप करने के लिए, उसको चुपचाप ही Chop कर दिया जाता है।

185. मद + Era = मदिरा –

मदिरा से ही Era का पता लगता है। मदिरा कितनी पुरानी है, इससे ही उस समय के, Era का पता लगता है।

186. मद + दर्द = मदद - मद ही है जो दर्द में मदद करता है। मद + दर्द = मदद। मद = मदिरा।

187. माथे + में + Trick = Mathematic -

माथे में Trick ही Mathematic है। माथे + में + Trick = Mathematic. माथे में जिनके Trick चलती है, वही Mathematic करते हैं। इसलिए Mathematic को, Solve करने के लिए Trick होती हैं। इन Trick को Formula कहते हैं। Mathematic की Trick का, Use करने वाले के माथे पर, Tracks बन जाते हैं।

188. मूक + उक्ति = मुक्ति -

मूक ही जिसकी उक्ति है, वही मुक्ति है। मूक + उक्ति = मुक्ति। जब व्यक्ति मूक हो जाता है, तब ब्रह्म उक्त करता है। यानी ब्रह्म बोलता है। ध्यान की अवस्था में, जब व्यक्ति मौन हो जाता है, तब ब्रह्म अपनी उक्ति करता है। यानी ब्रह्म अपनी बात कहता है। ब्रह्म की बात को सुनना ही मुक्ति है। क्योंकि ब्रह्म की बात ही ज्ञान है, और ज्ञान को सुनने से ही मुक्ति है। इसलिए ध्यान में ब्रह्म को बोलने दो, और

ब्रह्म की सुनो और, मुक्ति को पा जाओ।

189. मुद + रहा = मुद्रा -

मुद रहने के लिए मुद्रा होती है। मुद + रहा = मुद्रा। मुद = प्रसन्न। मुद्रा = Money. वाममार्ग के पंच मकार में से, कोई न कोई मकार का उपयोग, प्रत्येक व्यक्ति करता है और इस तरह वह व्यक्ति, वामतंत्र का पालन करता है। मांस, मछली, मदिरा, मुद्रा, मैथुन, यह वामतंत्र के पंच मकार हैं। इन पंच मकार में से, मुद्रा का उपयोग लगभग, प्रत्येक व्यक्ति करता है। और मुद्रा के द्वारा, अन्य चार मकार जैसे मांस, मछली, मदिरा, मैथुन को खरीदकर, उपयोग कर लेता है। इस तरह व्यक्ति पंच मकार में से, "मुद्रा" नामक एक मकार का, उपयोग करता हुआ, अनायास ही वामाचार का पालन करता है।

190. मन + मर + जी = मनमर्जी -

मन के मर जाने पर ही, जी की प्राप्ति होती है। मन + मर + जी = मनमर्जी। अपनी मनमर्जी पर वही जीता है, जो मन को मार देता है, और जी को प्राप्त कर लेता है।

191. Miss + Stress = Mistress -

जिसको व्यक्ति Miss करता है, वही व्यक्ति को Stress देती है। उसे ही Mistress कहते हैं। Miss + Stress = Mistress. वह Miss की जानेवाली स्त्री ही, Mistry होती है। Miss + स्त्री = Mystery. किन्तु व्यक्ति उसको My स्त्री समझता है। My + स्त्री = Mystery. तब वह एक Mysterious, जिंदगी जीने लगता है। उसको देखकर लोग कहते हैं, "यह तो बड़े ही Sterious व्यक्ति हैं। जबकि वह व्यक्ति, Miss की Stress के कारण, बनी Mystery से Sterious होकर, Mysterious हो गया है। जो अपने रहस्यों को, अपनी गंभीरता के पर्दे के पीछे, छिपा रहा है। और लोग कहते हैं कि, "अरे ! उनसे बात मत करो, वह बड़े गंभीर व्यक्ति हैं, बहुत कम बोलते हैं, उनसे दूर रहा करो"। इस तरह से Sterious रहना, एक अच्छा तरीका है, Mysterious रहने का, और Miss के Stress को, Mystery बनाए रखने का।

192. मकर + Sun + क्रांति = संक्रांति -

मकर रेखा से कर्क रेखा की तरफ़ Sun की क्रांति ही तो मकर संक्रांति है। मकर + Sun + क्रांति = संक्रांति। आज के दिन सूर्य, दक्षिण की मकर रेखा से, उत्तर की कर्क रेखा की ओर बढ़ना प्रारंभ करता है, इसलिए इसे "मकर संक्रांति" कहते हैं। पृथ्वी के द्वारा सूर्य की परिक्रमा, 365 दिन 6 घंटे में की जाती है, इसलिए प्रत्येक वर्ष मकर संक्रांति में, 6 घंटे का अन्तर होते रहने से, मकर संक्रांति कभी 14 जनवरी, कभी 15 जनवरी में आती रहती है। यह दिन कभी भी बदलता नहीं है, और प्रत्येक वर्ष 14 या 15 जनवरी को, ही आता है। तो पृथ्वी जब सूर्य की परिक्रमा करते हुए, मकर रेखा से जिस दिन, कर्क रेखा की तरफ चलती है, उस दिन का पता, कर्क रेखा पर रहनेवाले, लोगों को चल जाता था। क्योंकि सूर्य के द्वारा, मकर रेखा से प्रस्थान करते ही, कर्क रेखा पर सूर्य की छाया पड़ती है। सूर्य की छाया = वरी। सूर्य को Sun कहते हैं, Sun कालांतर में अपभ्रंश होकर, "छन" से होते हुए, "जन" शब्द बन गया और, जन की छाया के प्रथम दर्शन होने पर, जन वरी शब्द बन गया। जन + वरी = जनवरी। कर्क रेखा के लोगों ने, इसी दिन से अपने वर्ष का, प्रारंभ माना और, कर्क रेखा के लोगों ने

मकर संक्रांति को, अपने वर्ष का प्रथम दिन माना। वर्ष का प्रथम दिन होने पर, इसी दिन जन लोगों ने, वर की प्राप्ति के लिए, व्रत या वरत रखना प्रारंभ किया था, इसलिए इसका नाम जन व्रत से जनवरी है। जन + वर = जनवरी = January. और इसी तरह समस्त विश्व ने, मकर संक्रांति के जनवरी को, January के नाम से अपने वर्ष का, पहला महिना मान लिया। और जनवरी को वर्ष का, प्रथम दिन मानते हुए, जनवरी के प्रथम दिन, Resolution लेने की प्रथा चल पड़ी। यह Resolution, व्रत का ही एक रूप है। Sun जब दक्षिण के अयन से, उत्तर के अयन में आता है, तब उत्तर में चल रही शीतता में, उष्णता आ जाती है। इसे ही Sun की क्रांति यानी, संक्रांति कहते हैं। Sun एक क्रांता की तरह से, उत्तर में प्रवेश करता है, और अपनी उष्णता से, संपूर्ण उत्तर में उष्णता ले आता है। Sun के एकाएक उत्तरायण में आने पर, जब वातावरण में उष्णता आ जाती है, तब शरीर के भीतर उष्णता को, प्राप्त करने के लिए, गुड़ और तिल के लड्डू खाते हैं। यानी बाहर के उष्णता वाले वातावरण से, संतुलन बनाए रखने के लिए, तिल-गुड़ खाकर शरीर के भीतर, भी उष्णता लाई जाती है। सूर्य की नई किरणों की, गर्मी से बचाव के लिए, शरीर की त्वचा पर, एक ठंडे पानी की, परत जमा ली जाती है। इसलिए संक्रांति के दिन, सूर्योदय से पहले ही, नदी में डुबकी लगा ली जाती है। क्योंकि जब सूर्य निकलेगा तो, सूर्य की नई गर्म किरणें, शरीर पर पड़ेंगी, यह सूर्य की नई गर्म किरणें, नदी में डुबकी लगाई पानी की, परत से मिलाप कर, बाहर ही बाहर वापिस चली जाएंगी और शरीर के भीतर प्रवेश नहीं करेंगी। डुबकी के पश्चात् तिल गुड़ के लड्डू खा लिए जाते हैं। जो एकाएक आए सूर्य की, गर्मी को महसूस नहीं होने देते हैं। यह वही स्थिति होती है, जब सूर्य ग्रहण के पश्चात्, एकाएक सूर्य निकलता है तो, सूर्य की एकाएक आई गर्मी के, कुप्रभाव से बचने के लिए, सूर्य ग्रहण के पश्चात् नदी में, डुबकी लगाई जाती है। सूर्य ग्रहण के पश्चात् भी, तिल गुड़ के लड्डू खाते हैं। जो एकाएक आई सूर्य की गर्मी से, शरीर के भीतर गर्मी का, संतुलन बनाए रखते हैं। जिस प्रकार सोता हुआ मगरमच्छ, हल्की सी गर्मी मिलने पर, थोड़ा अपने शरीर को, हिलाता डुलाता है और जम्हाई लेता है, तथा पानी में सरक जाता है। उसी प्रकार मनुष्य भी मकर की भांति, इतने दिनों की सर्दी के बाद, सूर्य की गर्मी लगने पर, नदी में डुबकी लगा लेता है। इसलिए इसे मकर संक्रांति कहते हैं। मकर संक्रांति को पतंग उड़ाकर, आकाश की आद्रता एवं तापमान, एवं वायु की दिशा का, पता लगाया जाता है।

193. मह + सूस = महसूस -

सुसु की महक से, पता चल जाता है कि, स्त्री मासिक से है, या गर्भवती है, या सामान्य है। इसे ही महसूस होना कहते हैं।

194. मर + याद = मर्यादा -

जब किसी मर गए को, किसी के द्वारा, याद किया जाता है, तब उसको मर्यादा कहा जाता है।

195. मन + उत्पन्न = मनु -

मन + उत्पन्न = मनु - मन से उत्पन्न होने के कारण, नाम पड़ा मनु।

शत + रूपा = शतरूपा - शत रूपोंवाली होने से, नाम पड़ा शतरूपा।

मनु + Script = Manuscript -

मनु के द्वारा Script किया गया, इसलिए नाम पड़ा Manuscript.
Script के अनुसार ही नाटक खेला जाता है, इसलिए संसार को, लीला एवं मिथ्या कहा गया है। इसी Manuscript को मनुस्मृति भी कहा गया।
मनु + स्मृति = मनुस्मृति - जो मनु के स्मृति में आया, वह मनु ने Script कर दिया।
सम + रीति = स्मृति -
सबको सम करने के लिए, ऋतु के अनुसार जो रीति चलाई गई, उसे स्मृति कहते हैं। सम = बराबर। इसी स्मृति के अनुसार सबने, अपनी अपनी रीति चलाई।
मनु + अल = Manual -
इसलिए कोई भी Product के साथ, एक Manual आता है, जो यह बताता है कि, इस Product को कैसे चलाना है। यह Manual भी मनु के नाम से है।
मन + ऊष्मा = मनुष्य - मन की ऊष्मा से मनुष्य बना है।
196. मोम + ताज = मुमताज -
जिसके सिर पर मोम का ताज हो, वही तो मुमताज है। मोम + ताज = मुमताज। बादशाह की बेगम बनने के बाद, जब बेगम को ताज नसीब नहीं हुआ। तब बादशाह ने बेगम को, मोम का ताज पहना दिया। समय के साथ बाकी ताज तो मुरझा गए, किन्तु मोम का ताज आज भी, ताजमहल के रूप में, उस बेगम को सारे जहाँ में, मुमताज के रूप में ताजा रखे हुए। बादशाह के द्वारा बनाए गए, इस ताजमहल को ही तो, शाह के कार्य से "शाहकार" कहते हैं। शाह + कार्य = शाहकार।
197. मुंह + फट = मुफ़्त
जिसको मुफ़्त मिलता है, वह मुंहफट होता है। मुंह + फट = मुफ़त। जिनसे मुफ़त में करवाया जाता है, वह मुंहफट हो जाते हैं।
198. मेहनत + रूह = मेरू - मेहनत रूह की मेरु पर होती है।
199. Make + कड़ी = मकड़ी - जो Make करती है कड़ी, उसे कहते हैं मकड़ी।
200. मन + नत = मन्नत -
तन को नत करना आसान है, किन्तु मन को नत करना मुश्किल है। परन्तु मन को नत करने पर ही, मन्नत मांगी जाती है और, मन्नत पूरी होती है। मन + नत = मन्नत।
201. Made + It + Station = Meditation -
Made It Station is called Meditation. Made + It + Station = Meditation. जो आपको स्थायित्व प्रदान करें, वह Meditation होता है। आपके शरीर, मन, आत्मा को, आपस में जोड़कर एक कर दे, उसे Meditation कहते हैं। इसलिए Meditation को त्राटक, या त्रिपुटी भी कहते हैं।
202. मुंह + कद + दर = मुकद्दर -
मुकद्दर तीन चीजों से बनता है। मुंह कद और दर। मुंह + कद + दर = मुकद्दर। इसलिए लोग अपने मुंह पर, Makeup करते हैं। अपने कद को बढ़ाते हैं, और दर देखकर वस्तु को खरीदते हैं।

203. मेड़ा = मेड़ -

मेड़ पर मेड़ा की पूजा करने से, नाम पड़ा "मेड़" । मेड़ा = मेड़ । खेत को जोतने से पहले, और खेत को काटने से पहले, मेड़ पर मेड़ा की पूजा की जाती है । खेत से फसल काटकर, मेड़े को पहली फ़सल खिलाई जाती है । इसके बाद, मेड़ पर मेड़ा की बलि दी जाती है, मेड़ा का रक्त खेत की धरती पर गिरता है । जिससे धरती की प्यास बुझती है । जिससे धरती का गुरुत्वाकर्षण, मेड़े के रक्त को अपने में खींच लेता है । जिससे मेड़े के रक्त में स्थित विद्युत, और प्राण धरती के गुरुत्वाकर्षण में, समा जाते हैं । जिससे धरती का गुरुत्वाकर्षण, आकाश में घूमनेवाले बादलों में, रहनेवाले पानी को धरती पर, बरसने नहीं देता है, और ना ही बिजली गिरने देता है । इसके बाद पकी हुई फ़सल, आसानी से काट ली जाती है ।

204. मन + जिलाना = मंजिल -

मन को जिसने जिलाकर जी बना लिया, उसने मंजिल को पा लिया । मन + जिलाना = मंजिल । मन से लेकर जी तक पहुंचना ही, मंजिल कहलाता है । मन + जी + ला = मंजिल साधक की साधना मन से प्रारंभ होती है, और बुद्धि, चित्त, अहंकार से होकर, जी तक पहुंच जाती है । तब मन को मंजिल मिल जाती है । यानी मन से जी तक की यात्रा ही मंजिल है । मन को जी तक पहुंचाने पर, जो इल्म होता है, वही मंजिल होता है । मन + जी = मंजिल ।

205. मार + ज़र = मार्जार: -

मारा जाता है जिसको ज़र के लिए, उसको "मार्जार:" कहते हैं । मार + ज़र = मार्जार: । मार्जार: = बिल्ली । पहले जमाने में "बिल्ली कीील ज़ेर" के लिए बिल्लियों को मार दिया जाता था । इसी ज़ेर से नाम पड़ा "ज़र" । ज़र = धन । तभी से ज़ेर को ज़र और, ज़र को धन कहा जाने लगा । क्योंकि समाज में कहावत प्रचलित थी कि, "जिसको बिल्ली की "ज़ेर" मिल जाती है, उसको बहुत सारा धन मिल जाता है । इसलिए लोगों ने सोचा कि, इस बिल्ली की ज़ेर तो मुझे मिल गई है । अब यह बिल्ली आने वाले समय में, प्रजनन नहीं कर पाए । जिससे इस बिल्ली की ज़ेर किसी, अन्य व्यक्ति को नहीं मिल पाए, इसलिए इस बिल्ली को मार दो । तब जिस बिल्ली को ज़ेर के लिए, मार दिया जाता था, उस बिल्ली को "मार्जार:" बोला जाता था । Cat शब्द भी बिल्ली को, काटने पर ही बना है । क्योंकि बिल्ली को काट कर, मार दिया जाता था । इसलिए Cut या कट यह शब्द भी, बिल्लियों के काटने और, कटने पर बने हैं । Cat = काट । Cut = कट । Cattle शब्द भी Cat को, क़त्ल करने से बना है । Cattle = क़त्ल यानी जिसको काट करके तल कर, खाया जाता था । उसे क़त्ल कहा जाता था । काट + तल = Cattle. बिल्ली को मारा ना जाए, इसलिए समाज में, यह नियम लगाया गया कि, "जो बिल्ली को मारेगा, उसे मरी हुई बिल्ली के वज़न के, बराबर स्वर्ण देना पड़ेगा" । इस नियम से लोग, इतने भयभीत हो गए कि, "मार्ग में पहले बिल्ली को, निकल जाने देते थे और, कुछ समय तक प्रतीक्षा करने के बाद, तब उस मार्ग पर चलते थे" । इस तरह से ज़ेर के कारण मारी जा रही, बिल्लियों की हत्याओं पर रोक लगी । और आजकल भी बिल्लियों को सम्मान, इसी नियम से मिलता है । तथा बिल्लियां निश्चिंत होकर घूमती हैं ।

206. मज्ज + Boot = मजबूत -

मज्ज की खाल से बने Boot, मजबूत होते हैं। मज्ज + Boot = मजबूत। मज्ज = भैंस। भैंस की खाल से पहले Boot बनते हैं, जो कि बहुत ही मजबूत होते हैं। इन्हीं Boot को पहनकर, खेतों में आदमी आसानी से चलता है। क्योंकि खेत में कटी हुई फ़सल के, जड़ के बाहर आए हुए नुकीले हिस्सों पर, इन Boot को पहनकर, आसानी से चला जाता है। तथा जंगल में कांटों पर, छोटे-मोटे बूटों पर, पत्थर के टुकड़ों पर, आसानी से चला जाता है। मज्ज की खाल से बने होने के कारण, एवं पेड़-पौधों के बूटों पर, चलने का इनमें इतना बूता होता है, जिसके कारण इनको नाम दिया गया, "मजबूत"।

207. Myth + थक = मिथक –

Myth के कारण थक जाना ही, मिथक कहलाता है। Myth को कहनेवाला और, Myth को सुननेवाला दोनों ही, थक जाते हैं। इसलिए मिथक कहे जाते हैं।

My + Theory = Myth –

My Theory ही Myth कहलाता है। मिथ में व्यक्ति केवल अपनी ही, Theory की बात करता है, क्योंकि वह केवल उसकी ही, Theory होती है। Myth की Logy ही "Mythology" कहलाती है। Logy = शिक्षा। जैसे - Biology, Trilogy, Archaeology. इसी Theory को धीरे-धीरे एक, शिक्षा का रूप मिल जाता है, जिसे Logy कहा जाता है। इस तरह से Myth के साथ, Logy जुड़कर "Mythology" शब्द बन जाता है।

Myth + O + Logy = Mythology –

Mythology यानि, यानि मेरे सिद्धांत की शिक्षा। Mythology में सब अपने-अपने सिद्धांत की, ही बात करते हैं। और अपने-अपने सिद्धांत को, सर्वोच्च मानते हैं। इसलिए एक की Mythology दूसरे को, समझ नहीं आती है। और दूसरे को थका देती है। क्योंकि दूसरा भी अपनी Mythology को, सिद्ध करना चाह रहा है। वह पहले की Mythology को सुनता ही नहीं है। इसलिए Mythology की शिक्षा, एक Myth से प्रारंभ होती है, और सुननेवाले को थका देती है। तथा अन्त में सिद्ध होकर एक, सिद्धांत बन जाती है। तब फिर व्यक्ति सिद्धांत को पकड़ लेता है, और Myth को सुनना नहीं चाहता है। यानि पुस्तक के पीछे लिखे, प्रश्न के उत्तर को अपना लेता है और, प्रश्न को हल करने की प्रक्रिया को, समझना नहीं चाहता है। इसलिए Mythology को, कल्पना कह दिया जाता है। जबकि Mythology को अपनाकर ही, कोई भी व्यक्ति सिद्धांत तक पहुँच सकता है। किन्तु व्यक्ति Mythology के, Practical को ना करके सीधे Theory को रटकर, Answer को याद कर लेता है। और Mythology को एक कल्पना समझता है। किन्तु Mythology के भीतर छिपे, सिद्धांत को नहीं जान पाता है। जबकि Mythology ही उसको, ज्ञान के सिद्धांत तक पहुँचाएगी। इसलिए Mythology को समझने के लिए, Mythology को ध्यान से पढ़ो और, ध्यान लगाकर Mythology को समझो, ज्ञान अपने आप प्रकट हो जायेगा।

207. माह + ऋतु = मारुति –

माह कहो या ऋतु कहो, एक ही बात है। क्योंकि माह एवं ऋतु को जोड़कर, जो शब्द बनता है, उस शब्द को "मारुति"। माह + ऋतु = मारुति। स्त्रियों के माह की ऋतु आने पर, व्यक्ति को मारुति हो जाना पड़ता है।

208. मिथ + उत्पन्न = मिथुन –

मिथ से उत्पन्न होने के कारण, मिथुन है। मिथ + उत्पन्न = मिथुन। मिथ यानी मिट यानी मिट्टी।

मिट्टी > मिट > मिथ

जो मिट जाए और मिट्टी में मिल जाए, वही मिथ कहलाता है। इसलिए मिट्टी पर थूकना नहीं चाहिए।

मिट्टी + थू + नहीं = मिथुन –

क्योंकि इसी मिट्टी से सब उत्पन्न हुए हैं, और इसी मिट्टी में सबको मिल जाना है। इसलिए नबाव लोग थूकने के लिए, कदान रखते थे और, पीक थूकने के लिए पीकदान रखते थे। इसलिए सभी व्यक्ति दीवारों पर, और दीवारों के कोनों में थूकते थे। ताकि उनका थूक मिट्टी पर नहीं गिरे।

मिथ = Myth – इसलिए इस मिथ को, मिथ्या बोला जाता है।

मिथ्यालोजी = Mythology - लोग अपने जी में, इस मिथ में रहते हैं कि, यह मिट्टी से बनी हुई वस्तु मेरी है।

My + थो + लोग + जी = Mythology –

जबकि पूरी की पूरी प्रकृति ही मिथ्या है, क्योंकि यह प्रकृति, मिथ से उत्पन्न होने के कारण, मिथुन कहलाती है।

मिट + थ्या = मिथ्या –

इसलिए प्रकृति मिथ्या है। क्योंकि यह प्रकृति मिट जाने वाली है। मिट + थ्या = मिथ्या।

मिथ + थक = मिथक –

इसलिए मिथ्या होने से जो थक जाता है, वही मिथक कहलाता है। मिथ + थक = मिथक। तब थक गया व्यक्ति जो कहता है, उसे मिथक कहते हैं।

Myth + कल्पना = मिथक –

यानी Myth और कल्पना कहते हैं। Myth + कल्पना = मिथक।

मिथ्या + लोग + जी = Mythology –

यही मिथ्या कल्पनाएं, लोगों के जी में रहती हैं। जिसे "Mythology" कहते हैं। मिथ्या + लोग + जी = Mythology. इसलिए Mythology लोगों को, पसंद आती है और, लोगों के जी को भाती है।

Mythology + कल = Mythological –

इस तरह की Mythology का प्रारंभ, हमेशा एक ही वाक्य से होता है कि, "लो कल्लो बात, हमने तो यह बात ऐसी सुनी थी कि, जैसे अभी "कल" की ही बात है"। Mythology + कल = Mythological. इस तरह से "कल" की बात से, किसी भी Mythology की शुरुआत, प्रत्येक व्यक्ति अपने "जी" के, अनुसार करता है। Mythology तो वही होती है, किन्तु प्रत्येक के "जी" में, उस Mythology की अपनी, अलग ही कल्पना होती है। इसीलिए किसी एक की Mythology,

किसी दूसरे की Mythology से, हमेशा भिन्न होती है। किन्तु इस प्रकृति में रहने वाला "ब्रह्म" सत्य है। इसलिए "ब्रह्म" अजन्मा है, क्योंकि "ब्रह्म" शाश्वत है, क्योंकि "ब्रह्म" मिथ से उत्पन्न नहीं होता। यानी "ब्रह्म" मिट्टी से उत्पन्न नहीं होता है। यानी "ब्रह्म" पहले से ही मौजूद है। इसलिए "ब्रह्म" ही सत्य है, और मिथ से उत्पन्न जगत "मिथ्या" है।

208. मुंह + Coat = मुकुट – मुंह के Coat को मुकुट कहते हैं।

209. माया + मारने + ज्ञान = मर्मज्ञ - माया को मारने का ज्ञान, जाननेवाला मर्मज्ञ होता है।

210. Meme + अंश = मीमांसा -

Meme या अंश कह लो, एक ही बात है। इसी को मीमांसा कहते हैं।

211. मान + Go = मांगो -

मांगने से मान चला जाता है, मान + Go = मांगो। किसी से कुछ भी मांगने पर, मांगने वाले व्यक्ति का मान, देनेवाले व्यक्ति के मन से चला जाता है। यानि देनेवाला व्यक्ति अब, मांगनेवाले व्यक्ति का मान नहीं करता है। और समाज में भी, मांगनेवाले का मान घट जाता है। इसलिए बड़े लोग जब किसी के घर में जाते हैं, तब छोटे बच्चों को कुछ रुपए-पैसे देते हैं। जो बच्चे रुपए-पैसे ले लेते हैं, उन बच्चों का मान बड़े लोग नहीं करते हैं। और जो बच्चे रुपए-पैसे नहीं लेते हैं, उन बच्चों को और अधिक रुपए-पैसे, देने का लोभ दिखाते हैं। अगर बच्चे फिर भी नहीं लेते हैं, तब बच्चों के माता-पिता बच्चे को, बोलते हैं कि, 'ले लो'। क्योंकि बच्चों को रुपए-पैसे देकर, बड़े लोग अपना मान बढ़ाते हैं, और छोटे बच्चों का मान घटाते हैं। इसलिए लोग अपना मान बढ़ाने के लिए, दूसरे लोगों को रुपए-पैसे देते हैं।

212. मन + का = मनका -

माला का मनका तो मन की करवाता है। मन + का = मनका। यही मनका जब गुरु के द्वारा दिया जाता है, तो उसे गुरिया कहते हैं। गुरु + दिया = गुरिया। यानि व्यक्ति के पास जब मनका रहता है, तब व्यक्ति अपने मन की बात करता है। और यही मनका जब गुरु दीक्षा में, गुरु के द्वारा व्यक्ति को दिया जाता है, माला में पिरोकर दिया जाता है, तब व्यक्ति गुरु के द्वारा, बताई गई बात को करता है। इस तरह से माला का मनका, भी गुरु की गुरिया के रूप में, परिवर्तित हो जाता है।

213. मुड़ी + छांह = मुड़ीछा - मुड़ी को जो छांह दे, उसे मुड़ीछा बोलते हैं।

214. मुंह + Come + मल = मुकम्मल –

मुंह में आई चीज़ जब मल बन जाती है, तब वह चीज़ मुकम्मल हो जाती है।

215. माह + ऐरो = महेरो –

माह का ऐरो दे उसे महेरो कहते हैं। माह + ऐरो = महेरो। माहवारी का जो ऐरो दे, उसे महेरो कहते हैं। माहवारी के समय स्त्री को शक्ति देने के लिए, मठा और ज्वार को मिलाकर, पकाकर पकाया जाता है, जिसे महेरो बनाया जाता है। जिस घर में महेरो बनाया जाता है, महेरो बनने से पता चल जाता है कि, इस घर में कोई न कोई स्त्री माहवारी से है। माहवारी की जो ऐंदी दे, उसे महेदी कहते हैं। माहवारी + ऐंदी = महेंदी = मेहंदी। जो स्त्री महेंदी लगाती है, लोग समझ जाते हैं कि, यह स्त्री माहवारी से है।

घर में माहवारी चल रही है, यह बताने के लिए, घर के ऊपर, लाल रंग का झण्डा लगा दिया जाता है। घर के ऊपर लाल रंग का झण्डा लगाने से, पता लग जाता है कि, इस घर में कोई स्त्री माहवारी से है। माहवारी के पांच दिन, स्त्री के पति को ब्रह्मचर्य का, पालन करना पड़ता था। तो पति पांच दिन का समय, बिताने के लिए हनुमान चालीसा पढ़ता था। हनुमान चालीसा पांचों दिन, रात्रि के आठ घण्टे बिताने के लिए पढ़ता था। क्योंकि कामवासना का, आगमन रात्रि को होता है। और हनुमान चालीसा का पाठ पढ़ने से, कामवासना निकट नहीं आती है। माहवारी का समय पांच दिन का होने पर, हनुमान जी के पांच मुख है। इसी तरह से भगवान शिव के पांच मुख हैं। और ब्रह्मा जी के भी पांच मुख हैं। जिस स्त्री को माहवारी होती है, उसके पैरों में माहोर लगाया जाता है। माह + ओर = माहोर। माहोर से पता लग जाता है कि, यह स्त्री माहवारी में है। माहवारी स्त्री की सेवा करनेवाली को, मेहतरानी कहा जाता था। माह + तर = मेहतरानी। इस तरह से पहले जमाने में व्यक्ति को, माहवारी स्त्री का पता लग जाता था।

216. मुंह + Off = माफी –

अगर व्यक्ति अपना मुंह Off रखे, तो व्यक्ति को माफी मांगने की जरूरत नहीं है।

217. मेज़ + वाणी = मेज़बानी -

मेज पर बोली जानेवाली, वाणी को मेज़बानी कहते हैं। मेज़ + वाणी = मेज़बानी। मेज़बान मेज़ पर खाना खाते समय, मेहमान से जो वाणी बोलता है, उसको मेज़बानी कहते हैं।

218. मस्त + इश्क = मस्तिष्क - मस्त रहे जो इश्क में, उसे मस्तिष्क कहते हैं।

219. म + हत् + आत्मा = महात्मा -

जिस आत्मा को हत् नहीं किया जा सकता है, उस आत्मा को महात्मा कहते हैं। इसलिए जो महत्व देता है आत्मा को, वह महात्मा कहलाता है। महत्त्व + आत्मा।

220. मिट्टी के खिलौने -

हम उस बच्चे की तरह हैं, जिसको मिट्टी के खिलौने पकड़ा दिए जाते हैं। फिर उस बच्चे से वह मिट्टी के खिलौने, वापस लो तो बच्चा रोने-धोने लगता है, और खिलोनों को वापस नहीं देता है। ठीक इसी प्रकार से हमको, भगवान की पत्थर और मिट्टी की मूर्तियां, पकड़ा दी जाती हैं। और बच्चों की तरह हम भी, इन मूर्तियों को छोड़ना नहीं चाहते हैं। जैसे कि मिट्टी की बनी हुई बैलगाड़ी, बच्चे को कहीं नहीं ले जा सकती है, उसी प्रकार से मिट्टी की बनी हुई, भगवान की मूर्ति भी, व्यक्ति को धार्मिक यात्रा में, कोई उन्नति नहीं दिलवाती है। फिर भी हम इन मिट्टी के खिलौनों और, मिट्टी की मूर्तियों को छोड़ना नहीं चाहते हैं। अगर बच्चे को प्रारंभ से ही, ध्यान करवाया जाए तो, बच्चा बड़ा होकर भी ध्यान ही करेगा, और धार्मिक उन्नति को प्राप्त करेगा। ना कि मिट्टी के खिलौनों और, मिट्टी की मूर्तियों में, समय बरबाद करता हुआ, धार्मिक उन्नति से वंचित रह जाएगा।

221. मर + याद = मर्यादा - किसी मरे हुए को याद करो तो, मर्यादा में करो।

222. मान + चित्र = मानचित्र -

किसी की बात को मानकर, अपने मन में जो चित्र बन जाता है, उसे ही मानचित्र कहते हैं।

223. मौन + Alisha = Monalisa –

जब मौन हो गई Alisha तब, Monalisa हो गई। मौन हो जाने पर आँखें बोलती हैं, और होंठ मंद मंद मुस्कान के साथ बंद रहते हैं। यही है Monalisa Painting का अर्थ।

224. मंगल + मय = मंगलमय -

भारत के लोग तो पहले से ही, मंगल की यात्रा करते रहे हैं। तभी तो कहते हैं कि, 'आपकी यात्रा मंगलमय हो'।

225. मोल- भाव -

मूल्य को मोल कहते हैं, भव को भाव कहते हैं। भव = चाह। लोग कहते हैं कि, 'इस वस्तु का मूल्य कितना है' ? किन्तु दुकानदार यह देखता है कि, 'यह खरीददार की चाह क्या है' ? बस दुकानदार उस खरीददार के, भव को देखकर, उसकी चाह वाली वस्तु का, भाव बता देता है। मूल्य को नहीं बताता है। यानि खरीददार वस्तु का मूल्य पूछ रहा है, और दुकानदार वस्तु का भाव बता रहा है। क्योंकि मूल्य तो स्थिर है, और मूल्य में परिवर्तन नहीं हो सकता है। किन्तु भाव अस्थिर है, भाव में परिवर्तन होता ही रहता है। इसलिए दुकानदार के द्वारा खरीददार के, भाव का आंकलन किया जाता है कि, 'बस भर पता चल जाए कि, इसका मन किस वस्तु पर आ गया है'। तब दुकानदार उस वस्तु का भाव, बढ़ा-चढ़ाकर बताएगा। और उस वस्तु का मूल्य बतानेवाला कागज, उस वस्तु पर से हटा देगा, या अपने भाव वाला कागज चिपका देगा। इस तरह से मोलभाव चलता रहता है।

226. मन + आए = मनाए -

जब यह कह दिया जाता है कि, 'ठीक है, तुम्हारे मन में जो आए वो करो'। इसे ही मनाना कहते हैं। मन + आए = मनाए। मन + आना = मनाना। इसलिए किसी को मनाने के लिए, यही कहा जाता है। ऐसा कहने पर वह मान जाता है।

227. मिथ + उत्पन्न = मिथुन -

मिथ से उत्पन्न होने के कारण, इसे मिथुन कहा जाता है। मिथ + उत्पन्न = मिथुन। मिथ से उत्पन्न होकर, मिट जाती है, इसलिए इसे मिथ्या कहते हैं। मिट + थ्या = मिथ्या। ब्रह्म न उत्पन्न होता है, ब्रह्म न मिटता है। क्योंकि ब्रह्म सत्य है, इसलिए ब्रह्म शाश्वत है।

228. मन + Naughty = मनौती -

मन Naughty होता है, इसलिए मन को एकाग्र रखने के लिए, मनौती मांगी जाती है। मन + Naughty = मनौती। मनौती मांगने के लिए, मन को नत करना पड़ता है। मन + नत = मन्नत। नत = मन को नवाना। तभी मन्नत पूरी होकर, मनौती पूरी हो जाती है।

N

1. ना + अड़े = नाड़ी -
जो न अड़े उसे नाड़ी कहते हैं। नाड़ी हमेशा चलती रहती है। जब आप अड़ने लगे तो समझ लो आपकी नाड़ी भी अड़ गयी है। ज्यादा अड़ने पर नाड़ी पूर्णतः अड़ जाती है, और व्यक्ति को हृदयाघात हो जाता है, इसलिए अड़ना नहीं चाहिए।
2. ना + राय + अण = नारायण -
नहीं लेता राय अन्य की वह है नारायण। जो अन्य किसी की राय नहीं लेता। वह नारायण है। क्योंकि अन्य की राय तो सभी लेते हैं। परंतु परमात्मा किसी की राय नहीं लेता है।
3. Knee + जात = निजात -
जब कोई अपनी जात से निजात (छुटकारा) पाना चाहता है। तो वह जातीय कार्यक्रम में न जाने के लिए बहाना करता है कि, "मेरे घुटने में दर्द है, मुझे चलने में कठिनाई है, इसलिए नहीं आ पाऊंगा"। यही निजात है।
4. चिन + तके = चिन्तके = नचिकेता -
चिन्ता करता है और तकता है। वह व्यक्ति जो चिंता करता है और तकता रहता है और सोचता रहता है कि 'अब क्या होगा' ? जो चिंता करता है, वह हथेली पर अपनी Chin (थोढ़ी) को रख देता है। एक विशेष मुद्रा में बैठ जाता है। और तकता रहता है। वही नचिकेता है।
5. नस + Eve = नसीब -
कोई नस पकड़ता है। कोई Eve (शाम) होने का इंतजार करता है। इन्हीं दोनों से किसी का नसीब तैयार करते हैं। कोई किसी की कमजोर नस पकड़कर उसका नसीब बिगाड़ देता है और अपना नसीब बना लेता है। कोई Eve (शाम) को किसी को धोखा देता है, क्योंकि शाम को कुछ दिखाई नहीं देता है और चालाक व्यक्ति इसी बात का फायदा उठा लेता है। अपना नसीब बना लेता है। इसलिए तो कहता है कि, "शाम को मिलते हैं"। "आज की शाम कहाँ गुजार रहे हो"? "आज शाम का खाना मेरे साथ"। "शाम को किसी Event में चलते हैं"।
6. नीर (पानी) + आशा = निराशा -
नीर को पाने की आशा ही निराशा है। आदमी पानी के तलाश में भटकता है। पानी को प्राप्त करने की आशा ही उसे जीवित रखती है। जहाँ पानी मिल जाता है, वहीं घर बना लेता है। इसे ही घोर निराशा कहते हैं। घोर यानि घर। फिर जब उस स्थान का पानी कम होने लगता है या खत्म हो जाता है। तब फिर नये पानी वाले स्थान की खोज की जाती है। यही पुनः नीर को पाने की आशा ही निराशा।
7. नारंग - नहीं है जिसका कोई रंग उसे कहते हैं नारंग।
8. नतीजा - तीजा (तीसरे) का न होना ही तो नतीजा है।
9. नेत्र - इत्र नहीं डाला जाता है जिसमें, उसे नेत्र कहते हैं। आँखों में इत्र नहीं डाला जाता है।
10. नमः + कार्य = नमस्कार -

नमः करना अपने कार्य को। यानि कार्य को प्रारंभ करने से पहले, कार्य को नमस्कार करते हैं, फिर कार्य प्रारंभ करते हैं। यह सभी करते हैं ड्राइवर गाड़ी का दरवाजा खोलने से पहले गाडी को नमस्कार करता है। मोची, लोहार, बढ़ई सभी अपने कार्य को नमस्कार करते हैं।

11. निर्मल - नीर (पानी) से मल को साफ कर व्यक्ति निर्मल हो जाता है।

12. Naughty -

यह शब्द Pnaughty है, अंग्रेज P को Silent रखते हैं। इसलिए उन्होंने पनोती को जब सुना और इसका अर्थ समझा तो P को Silent कर दिया और पनोती को Naughty कर दिया, पर मतलब एक ही है। इसलिए अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग किसी को Direct पनोती नहीं बोलते, वह कहते हैं You are so naughty.

13. निमंत्रण = आमंत्रण -

जिसमें कड़वा-कड़वा खिलाया जाए वह निमंत्रण। जिसमें मीठा-मीठा खिलाया जाए वह आमंत्रण।

14. Name Plate -

Hostel में कोई भोजन में Late आता है, तो उसकी Plate के साथ एक पर्ची उसके नाम की लिख कर रख दी जाती है। वह Plate "Name Plate" कहलाती है।

15. निर्भर - नीर पर ही सब निर्भर हैं। इसलिए कहते हैं कि पानी (नीर) भर कर रख लेना।

16. नक्शे कदम -

कुत्ता नाक से सूंघ कर चलता है। आदमी दूसरे के कदम पर कदम रखकर चलता है। इसी नाक से और कदम को मिलाकर नक्शा बनाया जाता है, उसे ही नक्शे कदम कहते हैं।

17. Necklace - जो लोग नेक से Less हो जाते हैं, वह लोग Necklace (हार) पहन लेते हैं।

18. निद्रा - निडर लोग ही निद्रा ले पा लेते हैं। सिंह निडर होकर सोता है।

19. नतीजा -

तीजा (तीसरे) का न होना ही तो नतीजा है। जब पति-पत्नी को बच्चा हो पाता है, तो लोग पूँछते हैं कि, "कोई नतीजा नहीं हुआ अभी तक" ?

20. नकली -

नकली की नाक नकली होती है। नकली आदमी की पहचान होती है कि, उस व्यक्ति की नाक नकली होती है। क्योंकि नकली आदमी बेशरम होता है, शर्म नाक में होती है, इसलिए शर्मनाक कहते हैं। नकली आदमी शर्मदार नहीं होता है, क्योंकि उसकी नाक शर्म से लाल नहीं होती है।

21. नगमा - गम का न होना ही नगमा है। जो गम में नहीं होता, वही नगमा गाता है।

22. नाते – नातेदार ही हमेशा ताने देते हैं।

23. No + दल = Nodal – जो किसी दल में न हो वह है, Nodal.

24. नाज + अ + यज (यज्ञ) = नाजायज –

नाज (अन्न) जो यज्ञ में डाला जाता है, वही तो नाजायज है, क्योंकि वह अन्न किसी के खाने के काम आ सकता था।

25. नील + आम = नीलाम –

पहले जमाने में नील की खेती होती थी, और आम के बाग होते थे। जब दोनों फसलें तैयार हो जाती हैं, तो उनकी बोली लगाकर उनको बेचा जाता है। जिसे मिलाकर नीलाम कहा जाता है। फिर यही शब्द नीलामी के लिए उपयोग किया जाने लगा, यानि जब भी कोई चीज आम जनों के लिए बोली लगा कर बेची जाती है, तो उसे नीलाम करना कह दिया जाता है।

26. नुक्ता + चीनी = नुक्ताचीनी – नुक्ता लगा दो, या चीनी गिर गई है, यही तो नुक्ताचीनी है।

27. Note – जितने नोट (रुपये) आप देते जाएगें, उतने Notes आपके File पर लगते जाएगें।

28. Net + आ = नेता –

जो Net में फंस जाते हैं, वह नेता कहलाते हैं। यानि जो सरकार के जाल में फंस जाते हैं, उन्हें नेता बना दिया जाता है, फिर उस जाल में पूरी जनता को फसाया जाता है, यानि जहाँ नेता जाता है, पूरी जनता भी वहीं जाती है।

29. नींद + दल = Needle –

नींद और दल के लिए Needle की जरुरत होती है। जिस प्रकार चिड़िया अपना घोसला (नीड) चोंच से बनाती है, उसी प्रकार दल के कपड़ो को सीने के लिए Needle (सुई) की जरुरत होती है। जिस प्रकार नीड (घोसला) चिड़िया को सुरक्षा देता है, उसी प्रकार दल मनुष्य को सुरक्षा देता है। दोनों को ही नींद लेने के लिए Needle की जरुरत होती है। और नीड (घोसला, घर) ही सबकी सबसे बड़ी Need है।

30. नाई + ला = Nail –

नाखूनों को काटने के लिए अंग्रेज कहते थे कि, "नाई ला"। यही बाद में नाखून को Nail कहने लगे।

31. नशेनी –

नशे में है या नहीं, यह पता करने के लिए व्यक्ति को नशेनी पर चढ़ाया जाता है। नशेनी=सीढ़ी।

32. नेता – जो Net में फँस जाते हैं, वह नेता बन जाते हैं।

33. नियरे – Near ही नियरे है।

34. नशा + ऐड़ी = नशेड़ी –

नशे में रहने वाली की ऐड़ी से पता चलता है, कि वह नशेड़ी है। क्योंकि उसकी ऐड़ी में दर्द होता है, उससे उसके चलने में फर्क आता है।

35. नाक + सलामत = नक्सली – नाक को सलामत रखने के लिए वह नक्सली बनता है।

36. Nut-Bolt = नट –

जो अपना काम Nut-Bolt से करता है, वह नट कहलाता है। यानि नट जो होता है, वह ऐसी सामग्री रखता है, जो Nut-Bolt से खुल जाए, Pack करके वह अपने साथ ले जाए, क्योंकि उसे बंजारों का जीवन जीना होता है।

37. नाम + कर्ण = नामकरण -

कर्ण (कान) में जो नाम पुकारा जाता है, वही नामकरण कहलाता है।

38. ना + आशा + टिक = नास्तिक – जहाँ पर ना टिके आशा किसी की वह नास्तिक है।

39. नव + Neat = नवनीत –

नया ही तो Neat है, यानि नई वस्तु ही नवनीत है और मक्खन सदा नव रहता है यानि नया रहता है और Neat (बिना मिलावट) वाला होता है।

40. नर्क – जिस नर में अर्क नहीं होता है, उसका जीवन नर्क होता है।

41. नोन + Sense = Nonsense –

नोन (नमक) को किस प्रकार और कितना डाला जाए यही नोनSense है। एक कहावत भी है, "तोए नोन डारवे को सहूर तक नईयाँ" । सहूर यानि Sense और बेसहूर यानि Nonsense. किसी भी भोजन बनाने वाले की सबसे बड़ी खासयित यही है कि, भोजन में नमक कितना डाला जाए। यानि दो लोगों का भोजन है, तो कितना नमक डालना है ? दस लोगों का भोजन है, तब कितना नमक डालना है ? सौ या पांच सौ लोगों का भोजन है तो कितना नमक पड़ना चाहिए। यही नोन डालने का का ही तो Sense होना चाहिए। नहीं तो फिर Nonsense है। इसलिए जो नोन डालने का Sense नहीं जानते, वह अलग से नमक रख देते हैं। अंग्रेजों ने भारत को Sensitive बनाया। अंग्रेजों ने नमक के उपयोग का कानून बना दिया । क्योंकि अंग्रेज जानते थे कि यहाँ के लोग ज्यादा नमक खाकर Blood Pressure के मरीज बन जाते हैं। फिर Nonsense हो जाते हैं। और भारत में जब नमक का कानून टूटा तो फिर देखो भारत में Blood Pressure और Diabetes के मरीजों की बाढ़-सी आ गई। आज भी भारत में अगर नमक पर पाबंदी लग जाए तो भारत का आदमी Sensible हो जाए। क्योंकि नोन (नमक) मांसाहार में डलता है। शाकाहार तो बिना नमक के बनता है - जैसे चीन, अमेरिका में शाकाहारी भोजन में नमक नहीं डाला जाता है। मांसाहार में नमक डालना पड़ता तभी उसमें स्वाद आता है। शाकाहारी का तो खुद का ही स्वाद होता है। इसलिए शाकाहार को Vegetable और मांसाहार को Non-Vegetable कहा जाता है। वैसे मांसाहार है तो Vegetable, किन्तु नमक (नोन) पड़ने से Non-Vegetable हो गया है। जो खाने में नमक भी ठीक से नहीं डाल सकते हैं और जीवन में छोटी-छोटी बातों (Sense) को भी नहीं समझ सकते हैं, वही Nonsense होते हैं।

42. निश्छल – छल करने वाला पुरुष निशा का इंतजार करता है।

43. नक्शे-कदम –

कुत्ते नाक से रास्ता पता करते हैं, आदमी दूसरे के कदम देखकर रास्ता पता करता है, कोई-कोई इन दोनों के ही एक नक्शा बनाता है और कदम रखता जाता है, वह नक्से-कदम पर चलते चला जाता है।

44. नेक + तर = Nectar – नेक लोगों जिसको पीने से तर जाते हैं, वह है Nectar.

45. नव + रोज = नवरोज -

नौ दिन का उपवास, नौ दिन के रोजे, ही नवरोज है। इसमें नव, नये का भी प्रतीक है, और नौ का भी प्रतीक है। पारसियों का नववर्ष, जिस दिन प्रारंभ होता है, उसे नवरोज यानी, नया दिन कहते हैं। हिन्दुओं में नवरात्रि में, नौ दिन का उपवास रखा जाता है। इसीलिए नवरोज कहते हैं। नव + रोज = नौ दिन का उपवास। नव + रोज = नये वर्ष का प्रथम दिन।

46. नियम – यम ही नियम से आते हैं, यानि यमराज यानि मृत्यु नियम से आती है।

47. Net + Work = Network –

Net ही Work करता है, यानि किसी को फंसाने के लिए जो जाल फैलाया जाता है वह ही Work करता है।

48. नेक = Neck – नेक लोग अपनी नेक-नियती के लिए अपनी Neck (गर्दन) तक कटवा देते हैं।

49. NET = Never Enter There – Net यानि जाल, जिसमें कभी प्रवेश नहीं करना चाहिए।

50. ना + राज = नाराज – राज के ना होने पर सभी नाराज हो जाते हैं।

51. Knee + कर = निक्कर –

जिसके कर (हाथ) अपने Knee (घुटनों) तक जाते हैं, वह निक्कर पहनते हैं।

52. न + धन = निधन – धन के न होने पर निधन हो जाता है।

53. Not + Ice = Notice –

जब आदमी शराब पीता है, तो यह जरुर Notice देता है कि, वह बिना बर्फ वाली यानि Not Ice वाली पियेगा।

54. नून – नूण = Noon –

नूण खाने वाले का दिमाग वैसा ही हो जाता है, जैसा Noon (दोपहर) में सूर्य का होता है, यानी उसका पारा चढ़ हुआ होता है, यानि उसका रक्तचाप बढ़ा हुआ होता है।

55. नकल –

हम नकल उतारने में जितने माहिर होते हैं, उतने ही हम सफल होते हैं, तभी तो Charles Darwin ने कहा कि मनुष्य के पूर्वज बन्दर थे, क्योंकि बन्दर ही नकल उतारते हैं।

56. Nape = नेप = नापी – फाँसी के लिए गर्दन का नाप लिया जाता था, उसे ही Nope कहते हैं।

57. नस्ल – नाक देखकर ही, किसी की नस्ल बताई जाती है।

58. नाव + Sea = Nausea –

नाव लेकर के जब समुद्र (Sea) में जाते हैं, तो जो बीमारी होती है, उसे Nausea कहते हैं।

59. न + Ear = Near –

जिसके Ear नहीं होते हैं, वही कहता है कि, "Near (पास) आ जाओ, ताकी मैं तुम्हें सुन सकूँ"। उसी Near से नियरे शब्द बना।

60. नियरे = Near – Near (पास) रहने वालों को ही नियरे कहा जाता है।

61. N + Eat = Neat –

नहीं खाना चाहिए, जो वस्तुओं ज्यादा साफ-सफाई वाली होती हैं, उन्हें नहीं खाना चाहिए, यही Neat है।

62. Negative = नेगेटिव – नेगेटिव लोगों को नेग देकर गति दी जाती है।

63. Neigh = नेग –

बारात में जब घोड़ा दूल्हे को लेकर पहुँचता है, तो घोड़ेवाला भी अपना नेग माँगता है, जिसे Neigh

कहते हैं।

64. Nitrogen = नाईट्रोजन –

नाई लोग जब किसी जन के बाल काटते हैं, तो वह Nitrogen Gas से उसे स्तम्भित कर देते हैं। फिर बाल काटते हैं, यह Gas उनके पानी में होती है, जिससे वह आसानी से काम कर लेते हैं, और बाल कटवाने वाले के अन्दर की बात निकाल लेते हैं।

65. नस –

जब किसी की कमजोर नस पकड़ ली जाती है, तो उसे कलाई में धागा बाँधा जाता है, या घड़ी बाँधी जाती है।

66. न + आँच = नाच –

आँच का न होना ही नाच है। जहाँ पर आँच होती है, उस जगह पर जब कोई पैर रखकर बार-बार उठाता और ईधर-उधर रखता है, तो यही नाच है। यानि एक गर्म जगह पर जब कोई बार-बार पैर उठाकर उसे ईधर-उधर रखते हैं तो उसे नाच कहते हैं।

67. नल –

नल ने पानी का नल बनाया, और भी जो चीजें नल के नाम से जानी जाती हैं - जैसे Signal, Channel इन सबको नल ने बानाया। नल यानि रामायण के राम-सेतु को बनाने वाले नल-नील में से "नल"।

68. निश् + छल = निश्छल – रात को ही छल किया जाता है, वही निश्छल है।

69. निश + चिंत = निश्चिंत –

निशा में ही चिंता होती है, जब तक रात में चिंता से निश्चिंत नहीं होता है, तब तक नींद नहीं आती है।

70. Need = नींद –

नींद ही तो Need है, उसी के लिए नीड (घोषला) बनाया जाता है, ताकि नींद अच्छी आ सके। हर किसी की Need ही तो एक नीड (घोषला) है।

71. Now = नाऊ –

पहले कोई काम किया जाता था, तो नाई को बुलाकर निमंत्रण देने के लिए कहा जाता था, तो अभी-भी कहते हैं कि, "नाऊ को बुलाओ"।

72. Noun = नाऊन –

बच्चा जब पैदा होता है, तो उसकी नाल नाऊन ही काटती है, यानि नाई की पत्नी, तो बच्चे के दो नाम होते हैं, एक नाम राशि के अनुसार ब्राह्मण रखता है, एक नाम नाऊन रखती है, जो ज्यादा प्रसिद्ध होता है, क्योंकि नाई ही सब घरों में निमंत्रण देने जाता है। वह नाऊन के द्वारा रख गये नाम से ही निमंत्रण देने जाता है, इसलिए Noun कहलाता है।

73. नम + बर = Number –

जब कोई मर जाता है, तब सब की आँखे नम होती है और वह बर (जल) जाता है। इसी तरह नम होकर बरने का Number सभी का आता है।

74. No + जल = Nosal –

किसी भी नली में यह देखा जाता है कि, "इसमें जल है कि नहीं, उसे ही Nosal कहते हैं"।

75. न + मन = नमन -

नहीं करता जो मन से वह है "नमन"। नमन कभी मन से नहीं किया जाता है। जब मन न हो, फिर भी झुकना पड़े वह है "नमन"।

76. निर + उक्त = निरुक्त -

निर पीने के बाद जो उक्त होता है, वह "निरुक्त" है। यानि पानी पीने के बाद जो शब्द व्यक्ति के मुख से निकलते हैं उसे "निरुक्त" कहते हैं। क्योंकि कहा गया है कि, "दो कोश पर बदले पानी, चार कोश पर बदले वाणी"। जिस स्थान का पानी जैसा होगा उस स्थान की वाणी वैसी ही होगी। इसलिए ज्ञानी लोग गंगा जल पीते हैं। जिससे पूरे समय एक ही प्रकार की ज्ञान की वाणी निकलती है। यमुना का पानी पीने वाले, चंबल का पानी पीने वाले, गोदावरी का पानी पीने वाले, मानस सरोवर का पानी पीने वाले, पुष्कर सरोवर का पानी पीने वाले, नर्मदा का पानी पीने वाले, कृष्णा का पानी पीने वाले, कावेरी का पानी पीने वाले, गोमती का पानी पीने वाले, सरयु का पानी पीने वाले, सब का अपना-अपना उच्चारण और अर्थ होता है तथा बोलने का लहजा अलग-अलग होता है। यही निरुक्त है। यानि जो पानी पीने के बाद उक्त होता है, वह है "निरुक्त"। उक्त = बोलना।

77. निर + आकार = निराकार -

निर यानि नीर यानि जल यानि पानी। "परमात्मा" पानी के आकार वाला है। "परमात्मा" जल के आकार वाला है, इसलिए जल में ताकत है।

78. नीर + अंतर = निरंतर - नीर ही बिना अंतर के निरंतर बहता है।

79. निरीह -

नीर पीने के लिए आए पशु को "निरीह" कहा गया है। इस निरीह पशु पर वार नहीं करना चाहिए। परन्तु रात के समय एक राजा ने पानी पीने आए निरीह पशु पर बाण चला दिया और भारत में एक महाकाव्य लिखा गया।

80. निशा + चित = निश्चित -

रात्रि में व्यक्ति का चित एकदम शांत होता है। इसीलिए रात्रि में जो मनुष्य के चित्त में आता है, उसके लिए वह निश्चित हो जाता है।

81. Knee + दान = निदान -

घुटने की बीमारी का ईलाज, दान के द्वारा होता है, इसलिए उसे निदान कहते हैं। नि यानि Knee यानि घुटना। दान लेने वाले सौ लोग पंगत में नीचे बैठे हैं। दान देने वाला डलिया में पूड़ी लेकर, पूड़ी-पूड़ी कहकर घुटनों पर झुककर परोस रहा है। ऐसे ही दाल, चावल, सब्जी, मिठाई, पानी, फरसान, सभी कुछ परोस रहा है। उसका घुटने का दर्द हमेशा के लिए ठीक हो गया। यही निदान है।

82. नि + भाव = निभाव -

आदमी दो ही चीजों से निभा पाता है - एक तो उसके घुटने अच्छे होने चाहिए और दूसरा उसमें भाव

होना चाहिए। नहीं तो आदमी अक्सर यही कहता है कि, "आने का भाव तो बहुत था, परन्तु घुटनों में दर्द था, इसलिए नहीं आ पाया"।

83. नमक-चीनी -

अंग्रेज यह जानते थे कि, भारतीय अपने आप पर नियंत्रण नहीं रख सकते हैं। तो उन्होंने नमक और चीनी पर नियंत्रण लगा दिया। किन्तु जब नमक एवं चीनी से नियंत्रण हटा तो, भारतीय ही सबसे ज्यादा High Blood Pressure और Diabetes के बीमार हुए और आज का Medical उद्योग इन दो बीमारियों के बल पर भारतीयों के भरोसे चल रहा है।

84. Knee + यम = नियम -

जब घुटने में दर्द होने लगता है, तब समझना, कि यम के आने का समय हो गया। यम हमेशा नियम से आते हैं।

85. निर + द्वन्द्व = निरद्वंद -

यह पानी (नीर) पीयें या नहीं पीयें। यही निरद्वंद है। क्योंकि भारत में पहले कोई किसी का पानी तक नहीं पीता था।

86. नर + अर्क = नर्क –

नर का जब अर्क निकल जाता है, तो उसका जीवन नरक हो जाता है। क्योंकि शक्तिहीन पर सब कब्जा कर लेते हैं और वह पराधीन हो जाता है। नर का अर्क ही स्त्री की योनि द्वार से स्त्री में प्रवेश करता है, इसलिए स्त्री उस नर के अर्क का द्वार है।

87. नल-नील -

नल और नील राम का नाम लिखते थे। नल और नील इंजीनियर थे। नल जिससे पानी आता है, उस नल का अविष्कार नल ने किया, इसलिए उसका नाम "नल" पड़ गया। नाली और नालियाँ एवं पूरी नाली प्रणाली ही नल के नाम से जानी जाती है। चैनल मैं नल है, क्योंकि चैनल की व्यवस्था नल ने बनाई है। चाहे वह किसी भी प्रकार का चैनल हो। जहाँ-जहाँ नल शब्द जुड़ा है, इंजीनियरिंग में वह सभी नल के ही अविष्कार हैं। नील आर्मस्ट्रांग के आगे "नील" लगा है। दुनिया भर में नील भारत में सबसे ज्यादा होती है। पत्थर पर नाम नील से ही लिखा जाता था, इसलिए जींस भी नीली होती है। नल और नील दोनों ने मिलकर पुल बनाया - जैसे मिलिट्री में तैरता हुआ पुल बनता है। Tunnel भी नल ने बनाया। किसी भी सामान पर मैन्युफैक्चर का नाम होता है, एक ट्रेडमार्क होता है, वही था राम का नाम। वहीं से मैन्युफैक्चर का नाम प्रोडक्ट पर इम्बोस करने की शुरुआत हुई।

88. न + See + हट = नसीहत -

जिसे आप देखना नहीं चाहते, उसे आप नसीहत देते हैं। तभी तो लोग कहते हैं कि, "मैं तुम्हें नसीहत देते-देते में थक गया। अब में तुम्हें नहीं देखना चाहता हूँ, हट जाओ यहाँ से"।

89. निपटो + Ease + I am = Nepotism -

Nepotism यानि इससे तो मैं आसानी से निपट लूँगा। जहाँ पर भी निपटने की बात आती है, वह Nepotism है।

90. निर + मान = निर्माण -

निर से ही निर्माण होता है एवं निर से ही मान मिलता है। निर यानि पानी। पानी से निर्माण होता है। पानी से ही मान मिलता है। जिसके पास पानी होता है, वही निर्माण कर सकता है। जिसके पास पानी होता है, उसी को सभी मान देते हैं। जिस मेहमान को पानी पूछा जाता है और मेहमानी में पानी पिलाया जाता है, उसी मेहमान को मान दिया जाता और जो मेहमान पानी माँगता है, उसे मान नहीं दिया जाता है। बिना माँगे जिसे पानी दिया जाए, वही मान पाने वाला मेहमान होता है। इसलिए निर का बड़ा महत्व है। जिसे हम Near का मानते हैं, उसकी ही बात मानते हैं। यही निर्माण है।

91. No + बात = नोबत -

किसी ने यह कहा है कि "मेरी एक बात सुन लेते तो यह नोबत नहीं आती" नोबत कब आती है, नोबत तब आती है, जब आदमी कहता है, "कि अब मैं कोई बात नहीं कर सकता" "अब मैं किसी बात को कहने-सुनने की स्थिति में नहीं हूँ" "No More Talks" तो इसे नोबत कहते हैं। और फिर आदमी को नौ बातें सुननी पड़ती हैं। न जाने किस-किस की, क्या-क्या बातें सुननी पड़ती हैं। इसलिए पहले बात को पूरा सुन लो फिर किसी के गुन लो। नहीं तो, कोई न कोई नोबत खड़ी हो जाएगी और फिर सौ बातें सुननी पड़ेगीं।

92. निसर्ग + शब्द = निःशब्द -

निःशब्द यानि निसर्ग का शब्द। निसर्ग का शब्द यानि प्रकृति का शब्द। जब मनुष्य के भीतर निसर्ग का शब्द उतरता है, तब मनुष्य में भीतर मौन उतरता है। बाहर से मौन साधने की अपेक्षा, भीतर के मौन को उपलब्ध हो जाना ही निःशब्द है। मनुष्य बाहर से तो मौन साध ले, किन्तु मनुष्य के भीतर वार्तालाप होता रहे, तो यह बाहर का मौन टूट जाता है। भीतर का वार्तालाप किसी न किसी, कार्य के माध्यम से बाहर प्रकट हो ही जाता है। फिर मनुष्य का बाहर से साधा मौन टूट जाता है, इसलिए मौन को भीतर से साधना है। इसके लिए निःशब्द हो जाना है। इसी निसर्ग के निःशब्द की उपलब्धि, अभी कोरोना काल में, हम सबको हुई है। वृक्षों की हवाएँ, पक्षियों की चहचहाहट आदि यह सब निःशब्द हैं । निसर्ग को परमात्मा ने बनाया, निसर्ग से निकलनेवाला शब्द, परमात्मा का शब्द है, जो कि बिना किसी वाद्य यंत्र के निकलता है। इसलिए निसर्ग से निकलनेवाला निःशब्द शाश्वत है और वाद्य यंत्र से निकलनेवाला शब्द, अशाश्वत है। तो भीतर के वार्तालाप को विराम देने के लिए, और अंतःकरण के मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, इन चार से कोई विचार न करते हुए, क्योंकि इन चारों से ही विचार किया जाता है। परमात्मा के निःशब्द को गूँजने देना चाहिए। परमात्मा का निःशब्द सदा गूँज रहा है, किन्तु विचारों के शोरगुल में सुनाई नहीं पड़ता है। तब भीतर के मौन को उपलब्ध होकर, निसर्ग के निःशब्द का आनंद लेना चाहिए।

93. No + कर + चाह + कर = नोकर-चाकर -

जो कर नहीं देता है, वही तो नोकर है। जो चाह रखता कुछ करने की, वह चाकर है। नोकर पर कर नहीं लगता है, क्योंकि वह कर नहीं दे सकता है। जिसमें कोई चाह होती है, वह उस चाह को प्राप्त करने के लिए कर देता है। इसलिए वह चाकर है।

94. ना + चना = नाचना -

नाच वहीं हो सकता है, जहाँ चना नहीं हो। अगर जमीन पर चने बिखरे हों, और किसी को कहा जाए। "अब नाच" तो क्या, वह नाच सकता है। इसलिए नाच वहीं होता है, जहाँ चना नहीं होता है।

95. Knee + ढाल = निढाल -

दो ही वक्त कोई निढाल होता है। जब वह घुटनों के बल होता है या जब वह ढाल के पीछे होता है। घुटने = Knee. जब वह निढाल होता है, तब उसे नये रूप में ढाला जा सकता है। निढाल होने का दूसरा नाम समर्पण है। समर + पण = समर्पण - समर में पण देना। यानि युद्ध के समय धन देना। जब कोई युद्ध करते हुए थक जाता है। तब वह कहता है कि, "मुझसे धन ले लो और युद्ध विराम कर दो" यही समर्पण है। यानि विरोधी से जब जीता न जा सके और घुटने जबाव दे जाएँ, तलवार गिर जाए और ढाल का सहारा लेना पड़े, तो व्यक्ति फिर धन अर्पण करता है। कि यह धन ले लो और मुझे छोड़ दो। यानि वह अपना सौदा करता है, और स्वयं के धन से स्वयं को खरीदता है। क्योंकि अब उसको किसी ने निढाल बना दिया है। इसलिए आदमी Knee को ढाल बना लेता है। यानि घुटने के पीछे अपने को छिपा लेता है। जब भी उसको बुलाओ, वह यही कहता है, "आज मेरे घुटने में दर्द है, मैं नहीं आ सकता हूँ, तुम आकर धन ले जाओ, और धूमधाम से कार्यक्रम करो" यानि व्यक्ति पण (धन) अर्पण कर देता है, और समर्पण कर देता है। यही निढाल होना है, यानि घुटनों के बल आ जाना है और घुटनों पर हो जाने को ही समर्पण कहते हैं यानि पहले व्यक्ति घुटनों के बल सिर नवाता है, फिर धन अर्पण करता है। जिसे समर्पण कहते हैं।

96. ना + जी = नाजी -

नहीं है जिसके पास जी (दिल)। यानि बिना दिलवाला। अगर हिटलर के पास दिल होता तो हिटलर इतना क्रूर नहीं होता।

97. नीर + रस = नीरस -

नीर को रस में डाल दो तो रस फिर नीरस हो जाता है। नीर = पानी, Knee में से रस निकल जाता है, तो जिन्दगी भी नीरस हो जाती है। अब घुटना काम नहीं करता। क्या करेंगे वहाँ जाकर ? वहाँ कुछ भी नहीं धरा। इसलिए जब तक जोर है Knee में तब तक Journey कर लेनी चाहिए। संसार घूम लेना चाहिए। क्योंकि जब Knee के जोड़ में जोर नहीं बचेगा तो Journey नहीं कर पायेंगे। जोर + Knee = Journery. फिर कहेंगे कि, "जोड़ों में बड़ा दर्द रहता, हमसे तो न चला जाएगा" क्योंकि जोड़ में ही जोर होता है। यानि जुड़े रहने पर ही ताकत बनी रहती है। तो आपस में जुड़े रहो तो, जोर लगा सकते हो और परमात्मा से जुड़े रहो तो, फिर कहने ही क्या हैं !!! परमात्मा से जुड़ने के लिए Meditation है, प्रतिदिन केवल पाँच मिनट Meditation में बैठो, परमात्मा से जुड़ो और परमात्मा के जोर से फिर से अपने आपको Recharge कर लो - जैसे कि Power Nap लेते हैं। तब नीरस कुछ भी नहीं लगेगा।

98. Native = नातिव = नाता -

जहाँ से जिसका नाता होता है, वही उसका Native होता है। Native = नातिव = नाता। पहले

समय में बच्चे का जन्म, नाना के घर पर होता था। इसीलिए बच्चे को नाती बोला जाता था। नाती से नातिव यानी Native बन गया। इससे उस बच्चे का अपने उस जन्म-स्थान से नाता जुड़ गया। बच्चे का जन्म-स्थान ही बच्चे का Native Place होता है। नाना का नाती होने पर बच्चा बड़े ही लाड़-प्यार से पलता है। जिससे बच्चा Naughty हो गया। Naughty = नाती। इसीलिए लोग कहते हैं कि, "बड़ा शरारती बच्चा है यह! किसका नाती है" ? जो-जो लोग उस बच्चे के Native Place से हैं, वह बच्चे के साथ नाता रखते हैं, इसीलिए उन लोगों को ही, उस बच्चे को ताना मारने का हक है। नाता = ताना।

99. निशा + काँटे = निष्कंटक -

निशा का नहीं होना और काँटों का नहीं होना। यही निष्कंटक कहलाता है। रात्रि है तो मार्ग तय करना कठिन हो जाता है। मार्ग में काँटे हैं, तो मार्ग तय करना कठिन हो जाता है। रात्रि भी है और काँटे भी हैं, तो फिर मार्ग को तय करना, कितना कठिन होगा, कह नहीं सकते है, इसलिए रात्रि में यात्रा नहीं करनी पड़े, तो सराय आदि बनती है और मार्ग में काँटे न हो तो, बने-बनाए साफ मार्ग पर यात्रा की जाती है। और फिर भी रात्रि में और काँटों से भरे मार्ग पर यात्रा करनी पड़े तो, सावधान और सतर्क रहना पड़ता है। पैरों में जूतियाँ पहन ली जाती हैं, हाथ में रोशनी ले ली जाती है। और मन में फिर भगवान से सहयोग माँगने की आस्था उत्पन्न होती है। कुछ दूर चलने के बाद होश संभल जाता है, अंधेरे में भी दिखने लगता है। काँटों से बचकर यात्रा आगे जारी रखी जाती। इसलिए यही निष्कंटक है।

100. नीम + की + चटनी = नीचट –

गांधी जी नीम की चटनी खाते थे। जो भी मेहमान उनके आश्रम में आता था, उसे अवश्य ही खिलाते थे। भारत देश में नीम की दातुन सुबह करते थे। नीम का रस शरीर में जाकर करता क्या था ? वो भी कड़वा रस सुबह-सुबह। नीम की डाल मजबूत होती है, तोड़ते समय चट की आवाज नहीं आती है। नीम को जो चट करके खाता है, व्यक्ति नीचट हो जाता है। नीचट यानी मजबूत। अगर आप खट्टी चटनी खाओगे, तो आपके Knee में से चट चट की आवाज आएगी। और आप अगर नीम की चटनी खाओगे तो आपके Knee, नीचट हो जाऐंगे और आप गांधी जी की तरह पैदल तेजी तेजी से चलोगे। नीम व्यक्ति के शरीर में मजबूती लाता है। नीम का रस व्यक्ति को नीचट बनाता है। नीम के सूखे पत्तों को जलाकर धुँआ फैलाया जाता है, ताकि मच्छर न आएँ। जब नीम की दातुन करेंगे तो शरीर से नीम की गंध आएगी। तो मच्छर पास भी नहीं आएंगे। नीम की दातुन करो, नीम के पत्तों की चटनी खाओ, नीचट रहो।

101. Non-Veg =

जब आदमी ज्यादा नोन खा लेता है, तो वह Non-Stop हो जाता है। क्योंकि ज्यादा नोन खाने से, उसका Blood Pressure बढ़ जाता है। तो फिर वह बढ़े हुए, Blood Pressure में, Non-Stop हो जाता है। नोन = नमक। जब सब्जी में नोन डाल कर, खाया जाता है, तब उसे Non-Veg कहा जाता है। क्योंकि नमक समुद्र से आता है, समुद्र के पानी में मछली होती है। मछली की गंध भी नमक में होती है। तथा मछली एवं मांस को Preserve रखने के लिए नमक का इस्तेमाल किया जाता है।

इसलिए मछली एवं मास को Non-Veg कहा जाता है। अतः Veg में नमक नहीं मिलाया जाता है। नमक मिलाते ही, Veg फिर Non-Veg हो जाता है। क्योंकि सब्जी से, सबका "जी" बनता है। जी को ही "G" कहते हैं। "G" यानी "God" होता है। इसलिए पहले के जमाने में, फल, सब्जी, दाल, चावल, रोटी आदि, बिना नमक के खाते थे। समुद्री नमक के स्थान पर, चट्टान का नमक, काला नमक, सेंधा नमक खाया जाता था।

102. नोंक-झोंक =

नोंक में लगाकर ही तो, आग में झोंक दिया जाता है। यही नोंक-झोंक कहलाता है।

103. निर + माता = निर्माता -

निर और माता, यह दोनों ही, निर्माता होते हैं। निर + माता = निर्माता। निर = नीर = पानी। भूमि में रहनेवाला निर, और, वर्षा में बरसनेवाला निर, पेड़, पौधों, जीव-जन्तुओं, मनुष्यों, पशु-पक्षियों के, निर्माता होते हैं। प्रत्येक माता अपनी, संतान की निर्माता होती है। चाहे वह किसी भी, प्राणी की संतान हो।

104. ना + Eat = Night -

ना Eat ही Night बन गया। भारत में अमूमन, रात में नहीं खाते थे। सूर्य डूबने के पहले ही, खा लेते थे। जब भारत में, दूसरे देश के लोग आए, तब उन लोगों को कहा गया कि, "रात में नहीं खाते हैं"। अब खाना को, उनकी भाषा में Eat कहते हैं। तब उन्होंने अपने लिए, रात का शब्द बनाया "Night".

105. नर + संहार = नरसंहार - नर का ही संहार, क्यों किया जाता है ? नर + संहार = नरसंहार।

106. नींद + आना = निंदा -

नींद को लाने के लिए, लोग किसी की निंदा करते हैं। नींद + आना = निंदा। "ओय! जब तक मैं, उस दे बारे विच्च, दो-चार बातें न कर लूँ, तब तक मैन्नू, नींद ही नयी आंदी।" इसीलिए नींद आने के लिए, निंदा करना आवश्यक है। इसीलिए पहले समय में सोने से पहले कथा-कहानी-लोरी सुनाई जाती थी। कहानी में किसी की निंदा को सुनकर, कहानी कहनेवाले एवं कहानी सुननेवाले दोनों को नींद आ जाती थी। क्योंकि निंदा ही नींद लाती है और किसी की प्रशंसा नींद उड़ाती है। अतः किसी की हानि की ही कहानी होती है। क + हानि = कहानी। व्यक्ति किसी को कितना, लाभ हुआ है। यह सुनना नहीं चाहता है। व्यक्ति किसी को कितनी, हानि हुई है। यह सुनना चाहता है। इसीलिए जितनी भी कहानियाँ हैं, वह किसी के हानि की, कहानी है। जब किसी के हानि की, बात कहेंगे, तब उसकी निंदा तो, होना स्वाभाविक ही है।

107. नाज-नखरे दिखाना =

किसी ने जब, किसी स्त्री को कहा कि, "जरा ये नाज उठा दो।" उस स्त्री ने अपने, नख दिखाकर, न में हाथ हिला दिए कि, "देख नाज उठाऊँगी तो मेरे नख टूट जायेंगे"। तभी किसी तीसरे ने कहा कि, "तू ! नाज उठाने की, बात कर रहा है। वह अपने नख दिखा रही है।" नाज-नखरे दिखाना। नाज = अनाज। नख = नाखून। नाज उठाने की कहने पर स्त्री नखरे दिखाकर कहती है कि, "मैं नाज की बोरी

उठाऊँगी, तो मेरे नाखून टूट जायेंगे।" इसीलिए वह स्त्री, नाज उठाने में नखरे दिखाती है।

108. Nest + O + नाबूत = नेस्तोनाबूद -

Nest और बुत को तोड़ना ही, नेस्तोनाबूद करना होता है।

109. न + गम = नगमा -

दुःख को दूर करने के लिए जो गाया जाता है, उसे नगमा कहते हैं। न + गम = नगमा। गाना सुननेवाले इसीलिए तारीफ में कहते हैं, "वाह! क्या गम भरा नगमा सुनाया"।

110. न + See + हट = नसीहत -

आदमी किसी को नसीहत तभी देता है, जब आदमी कहता है, "हट यहाँ से, मैं तुझे देखना भी नहीं चाहता" न + See + हट = नसीहत।

111. नित्य + वास = निवास -

नित्य जहाँ वास करते हैं, उसे निवास कहते हैं। नित्य + वास = निवास। यह यहाँ के निवासी हैं।

आव्रजक + वास = आवास –

आव्रजक जहाँ वास करते हैं, उसे आवास कहते हैं। आव्रजक + वास = आवास। यह आवासीय जन हैं।

112. निष्ठा + अल्लाह = निठल्ला - जिसकी निष्ठा अल्लाह में होती है, वह निठल्ला होता है।

113. नोट + अंक + Key = नोटंकी -

तीन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति नोटंकी करता है। नोट + अंक + Key = नोटंकी। नोट को प्राप्त करनेवाली नोटंकी जगत प्रसिद्ध है। जिसे नाटक कहते हैं। ना अटक यानी नाटक। ना + अटक = नाटक। जिसको करने में ना अटका जाए, वह नाटक कहलाता है। नाटक की Script पहले से लिखी हुई होती है। नाटक की Rehearsal इसीलिए कराई जाती है, कि नाटक को करते हुए, अटके ना। कक्षा में विद्यार्थी एवं जीवन में व्यक्ति अधिक अंक पाने के लिए नोटंकी करते हैं। सबसे ज्यादा नोटंकी तो Key को प्राप्त करने के लिए की जाती है। Key को प्राप्त करने की नोटंकी कई जगह चलती है।

114. Knee + युक्त = नियुक्त -

Knee जिसका युक्त होता है, उसे ही नियुक्त किया जाता है। नहीं तो वह कहेगा, "मेरा घुटना दर्द कर रहा है, मैं नहीं आ सकता हूं"। Knee + युक्त = नियुक्त। इसीलिए किसी को नियुक्त, करने से पहले, उसका Medical होता है। किन्तु लोग युक्ति लगाते हैं, और नियुक्ति पा लेते हैं।

115. नीर + उत्तर = निरुत्तर -

शास्त्रार्थ करते समय, जो पहले पानी पी लेता है, वह निरुत्तर हो जाता है। नीर + उत्तर = निरुत्तर। इसीलिए लोग कहते हैं, "मैंने तुम्हें पानी न पिला दिया, तो मेरा नाम बदल देना"। क्योंकि जो शास्त्रार्थ में, हार जाता था, वह दूसरे के मत को, स्वीकार कर लेता था। दूसरे का मत स्वीकार करते ही, उसका नाम बदल जाता था। इसलिए जब कोई उत्तर नहीं मिलता था, तब पानी पी लिया जाता है, शास्त्रार्थ में पानी मांग लेना ही, निरुत्तर कहलाता है। शास्त्रार्थ करते समय, दोनों पक्षों के पास, एक दूसरे का

पानी, भरकर रख दिया जाता था। पूर्व पक्ष वाले के पास, उत्तर पक्ष वाले का पानी, एवं उत्तर पक्ष वाले के पास, पूर्व पक्ष वाले का पानी, भरकर रख दिया जाता था। जब शास्त्रार्थ करते हुए, गला सूखने लगता था तो, जो पहले पानी पी लेता था, वह शास्त्रार्थ हार जाता था, और वह दूसरे के मत को, स्वीकार कर लेता था। इसीलिए भारत देश में, अपने मत को छोड़कर, किसी अन्य के मत का पानी पीना स्वीकार नहीं किया जाता है। अन्य मत का पानी पीने का तात्पर्य ही है कि, दूसरे के मत को स्वीकार कर लेना। पानी मांगने का अर्थ है कि, इसके पास सरस्वती का रस, समाप्त हो गया है, यह एक सामान्य विद्वान है, सरस्वती ने इसकी जिह्वा का, साथ छोड़ दिया है। इसलिए यह पानी मांग रहा है। यह निरुत्तर हो गया है। इसीलिए लोग सबसे पहले पानी पिलाते हैं। अगर पानी पी लिया तो, हमारे मत का है, और पानी नहीं पिया तो, हमारे मत का नहीं है। पानी पीने या पानी नहीं पीने, के अनुसार ही, उसके साथ व्यवहार किया जाता था। इसलिए लोग सबसे पहले, पानी पीने पर जोर डालते हैं, कि कैसे भी करके, यह हमारा पानी पी ले। क्योंकि पानी पी लेने के बाद, वह उसके मत का हो जाता था। आजकल भी पानी के अनुसार, मत तय किया जाता है, कोई महंगे से महंगा, विदेशी पानी पीता है, तो कोई देश का महंगा पानी पीता है, तो कोई बोतल वाला पानी पीता है, तो बाकी सब सामान्य पानी पीते हैं। इस तरह से पानी भी मत का, निर्धारण करता है, और पानी ही उत्तर होता है, इसलिए निरुत्तर होता है।

116. नीर + धारा + रण = निर्धारण -

नीर की धारा किस तरफ जाएगी उसके लिए जो रण होता है, उसे ही निर्धारण कहते हैं। नीर = पानी।

117. निजी + कर्ण = निजीकरण -

निजीकरण के रास्ते से होकर ही, मौजूदा देश के भीतर, और भी कई, नए स्वतंत्र देश उत्पन्न होते हैं। निजीकरण के फलस्वरूप उत्पन्न, यह नये देश, अपनी निजी सेना भी, रखने लग जाते हैं और अपने-अपने देशों की सीमाओं में, अपने-अपने संविधान चलाते हैं, और अंततः कर देने से भी, मना कर देते हैं। इस तरह से निजीकरण के द्वारा, एक देश में ही कई, अन्य देश वजूद में आ जाते हैं। जिससे एक बड़ा देश, कालांतर में छोटे-छोटे देशों में, विभक्त हो जाता है। धीरे-धीरे सारा देश ही, निजी संपत्ति बन जाता है। "यह निजी संपत्ति है" इस तरह के लेखन, सभी स्थानों पर मिलने लगते हैं। दुर्योधन ने अपनी मनमानी करके, अपने कौरवों के देश में से, अपने मित्र कर्ण को, एक निजी संपत्ति "अंग देश" के रूप में प्रदान कर दी। इसी से इसका नाम "निजीकरण" पड़ा। यानी कर्ण की निजी संपत्ति। निजी + कर्ण = निजीकरण। जहांगीर ने अपनी मनमानी करके, अंग्रेजों को एक निजी संपत्ति प्रदान कर दी। देश के राजाओं ने अपनी मनमानी करके, अपने चहेतों को निजी संपत्ति के रूप में, जमींदारियां एवं जागीरें प्रदान कर दी।

118. ना + आंच = नाच -

आंच ना हो तो नाच होता है। जब धरती तपती है, इसलिए व्यक्ति जल्दी जल्दी, अपने पैर उठा उठाकर कर, चलता है, उसे नाच कहते हैं। जैसे तपती दोपहरी में, नंगे पैर चलना पड़े।

119. नाच + ना = नाचना -

जमीन पर जब चने पड़ा हो, तब व्यक्ति जिस तरह से, चनों के ऊपर से, चलता हुआ जाता है, उसे नाचना कहते हैं। यानी जहां चना नहीं है, वहीं पर पैर रखते हुए निकलता है।

120. न + ज़रिया = नज़रिया -

जब कोई ज़रिया ना हो तो, नज़रिया ही काम आता है। रियाया से मिले ज़र से ही, ज़रिया बनता है। रियाया अगर ज़र ना दे तो, रियाया के ऊपर नज़र रखी जाती है कि, "रियाया का ज़र कहां जा रहा है" ? इसे ही नज़रिया कहते हैं।

121. निरीह + क्षण = निरीक्षण – निरीह क्षण तभी आता है, जब कोई निरीक्षण करता है।

१२२. ना + पिता = नापित -

जब पिता नहीं रहता है, तब मुंडन करने के लिए, जिसको बुलाया जाता है, उसे नापित कहते हैं। ना + पिता = नापित। जब आई नहीं रहती है, तब मुंडन करने के लिए, जिसको बुलाया जाता है, उसको नाई कहते हैं। ना + आई = नाई। आई = मां। जिसके यहां पर, बाल ही बाल पड़े रहते हैं, और जिसके यहां पर, बाल कटवाने के लिए, बार बार जाते हैं, उसे Barbar कहते हैं। बार + बार = Barbar.

123. नज़र + दिखना = नज़दीक -

नज़र से दिखना चाहिए, इतना नज़दीक आओ। नज़र + दिखना = नज़दीक। जब व्यक्ति यह कहता है कि, "मुझे तुम नज़र से नहीं आ रहे हो, ज़रा पास तो आओ"।

124. नीर + मित = निर्मित – नीर एवं मिट्टी को मिलाने से, वस्तु निर्मित होती है।

125. नेग = Negative -

दान के द्वारा Negativity को, समाप्त किया जाता है। दान लेनेवाले के भीतर दान देनेवाले प्रति, जो Negativity होती है, वह Negativity दान लेने के बाद, Positivity में बदल जाती है। इसे ही "नेग" लेना भी कहते हैं।

126. नींद + दयनीय = निन्दनीय - निन्दा करनेवाला दयनीय होता है।

127. नट + उत्पन्न = नटु -

नट से उत्पन्न नृत्य को "नटु" कहते हैं। नट + उत्पन्न = नटु। नटु = क्रोध एवं उपहास के, भाव को प्रदर्शित करता है। नट के देवता को नटराज कहते हैं। नटराज से उत्पन्न नृत्य को, "तांडव" कहते हैं। तांडव = क्रोध एवं विध्वंस के भाव को प्रदर्शित करता है। "नटु" नृत्य की लय, Speed एवं, भाव को देखकर ऐसा लगता है कि, स्वयं नटराज क्रोध, उपहास एवं विध्वंस को कर रहे हैं और सब स्तब्ध होकर देख रहे हैं। नट जब बिना अटके नृत्य करता है, तब उसे "नाटक" कहते हैं। ना + अटक = नाटक। नट कभी भी नृत्य करते हुए, अटकता नहीं है, और जो नृत्य करते हुए अटक जाए, वह नट नहीं है। नट वह होता है, जो "टन" भर का वजन लेकर भी, रस्सी पर चल सकता है, और केवल "टन-टन" की आवाज पर, भी नृत्य कर सकता है। नट के नृत्य को टकटकी लगाए देखना, ही "नाटक" कहलाता है। नट + टक = नाटक। नट के द्वारा किये जा रहे, नृत्य को एक टक देखना ही, नाटक कहलाता है।

128. ना + एक = नेक - ना एक को ही नेक कहा गया है।

129. नीर + देश + Shit = निर्देशित -
किसी देश में पहुंचने पर, व्यक्ति को दो ही बातों के लिए, निर्देशित किया जाता था। एक नीर के लिए और, दूसरा Shit के लिए। नीर + देश + Shit = निर्देशित। नये आए व्यक्ति से कहा जाता था कि, "देखो ! वहां से पानी लेना, और चलो में तुमको, Shit करने की जगह दिखा देता हूं"।

130. नींबू-मिर्च लगाना -
पुराने समय में जिन बैलगाड़ियों के, आगे जुआं पर नींबू-मिर्चटंगे रहते थे, उन बैलगाड़ियों को Toll बैरियर से, गुजरने की इजाजत थी। कि नींबू-मिर्च लगी बैलगाड़ी ने, Toll Tax दे दिया है। यह नींबू-मिर्च उस जमाने का Fast Tag था।

131. नीर + मल = निर्मल - नीर से मल को स्वच्छ कर, निर्मल हुआ जाता है।

132. निरीह + क्षण = निरीक्षण -
जब व्यक्ति निरीह क्षण में होता है, तब बहुत से लोग उस व्यक्ति का, निरीक्षण करने आते हैं।

133. नींव + बंध = निबंध - मकान की नींव पर, बांध काम करना ही, निबंध कहलाता है।

134. Knee + भार = निभा -
Knee के ठीक होने पर ही, रिश्तों-नातों का भार निभा सकते हैं। Knee + भार = निभा। यानि Knee के अच्छे होने पर ही, कोई भी भार उठा सकते हैं।

135. नीर + अंजना = अंजना -
नीर अंजना के नाम से, नाम पड़ा 'निरंजना'। नीर + अंजना = अंजना। नीर = पानी, जल। ऐसा नीर जो अंजन का काम करता है। उसे निरंजना कहते हैं। इसी निरंजना के पास ही, अंजनीनंदन का जन्म हुआ था। इसलिए उनकी माता का नाम अंजना था। निरंजना नदी के किनारे बसे गया में, अंजनीनंदन का जन्म हुआ था। इसलिए इसे बोध गया कहते हैं। अलख निरंजन का महामंत्र भी, यहीं पर सबसे पहले सुना गया था। क्योंकि नीर पर कुछ लिखा नहीं जा सकता है, इसलिए इसे अलख निरंजन कहते हैं। किसी का नाम पहले निरंजना था, बाद में उन्होंने अपना नाम, अंजना रख लिया। और आज अंजना नाम से प्रसिद्ध हैं।

O

1. Ocean = ओसन = ओसियान -
राम जब सीता को ढूढ़ रहे थे तो कहते थे, "ओ सिया, ओ सिया" यही ओसियान ही Ocean है।

2. काल + Lock = O'Clock –
काल को भी Lock कर दे वह है, O'Clock. यानि काल पर ताला लगा दे। समय पर ताला लगा दे। ताले की शक्ल "O" के जैसी होती है।

3. Organize –
नाई ही Organize करते हैं, पहले नाई ही सब काम Organize करते थे।

4. ओ + बे = Obey –
जब भारत वाले कहते हैं कि, "ओ बे" यही ओ बे तो Obey है। जो Obedient होता है, उसे Obey कहते हैं।

5. Original –
राम सेतु बनानेवाले नल द्वारा जो भी बनाया गया, वह नल के नाम से जाना गया। नल ही पहले Engineer हैं, नल के द्वारा बनाई गई वस्तु Original है।

6. Omelette – अण्डे में "ॐ" ही तो होता है, उसी "ॐ" का Omelette बनता है।

7. ऊपर + चुनोती = Opportunity –
जिनको ऊपर जाना है, वही चुनौती स्वीकार करते हैं। यही Opportunity है। ऊपर + चुनौती = Opportunity. इसमें अवसर यह होता है कि, जब Everest पर चढ़ना है, तब मौसम के अनुकूल होने के अवसर का इंतजार किया जाता है, क्योंकि तब ही Everest पर चढ़ पाएंगे।

8. Oven –
वन में रहने वाले लोग Oven (तंदूर) का प्रयोग करते हैं, क्योंकि वन में खुले चूल्हे पर खाना पकाने से आग लग सकती है, इसीलिए Oven का प्रयोग किया जाता है।

9. **Off + फर = Offer –**
किसी को Off करने के लिए ही, उसे Offer दिया जाता है। पहले उसको Off किया जाता है, फिर उसके फर (पंख) काट लिये जाते हैं और उसको फिरने के लिए छोड़ दिया जाता है।

10. Omicron -
"Om I" मैं Om हूँ। Omi = The Sound of Universe. Om परमात्मा का नाम है। तब Omi में, Crona को Cron बनाकर, क्यों जोड़ दिया गया ? क्या यह Omicron, Om नामक परमात्मा को, निर्दयी बनाकर, पेश किया जा रहा है ?

11. ओर + फन = Orphan –
जो फनकार होते हैं, उनसे जब किसी स्त्री का संपर्क होता है, उससे जो औलाद पैदा होता है, वह Orphan कहलाता है।

12. आओ + न = Own –

जब कोई अपना अन्दर आना जाहता है, "तो कहते हैं आओ न, अपना ही है" यही "आओ न" ही Own हो जाता है।

13. Oxen –

बैल की ही नीलामी की जाती है। जब महाजन का कर्जा किसान नहीं दे पाता है, तब महाजन के द्वारा किसानों के बैलों की नीलामी की जाती है, जिसे Oxen कहते हैं।

14. Ox + जन = Oxygen –

Ox में सबसे ज्यादा Oxygen होती है। इसीलिए लोग Ox को अपने पास रखते हैं, जिससे उन्हें Oxygen मिलती रहे। इसी Oxygen के बल पर दो बैल पूरा खेत जोत देते हैं, गाड़ी खींच लेते हैं।

15. उखाड़ना + जड़ को = उजड़ -

जब जड़ों को उखाड़ लिया जाता है, तो वह स्थान उजड़ जाता है।

16. OM -

OM is stand for "Oh! My God". It means "OM" is "my God". O is Oh! M is My and OM is my God.

17. Ora -

जब आपकी जिंदगी में कोई और आ जाता है, तो आपको आपके Ora के बारे में पता चलता है। क्योंकि वह आपमें प्रवेश करने की कोशिश कर रहा है। वह आपके जैसा नहीं है। जो आपके जैसा होगा वह आप में प्रवेश कर जाएगा। बस यही Ora है, जो हमें ओरों के बारे में, बताता है।

18. Obviously - "ओ बे ये तो असली है" यानि जो असली है, वही Obviously है।

19. Outstanding Stories -

जब Teacher किसी बच्चे को कहती थीं कि, "जाओ मेरी Class से बाहर दीवार की तरफ मुँह कर खड़े रहो"। तो दूसरे बच्चे जब उससे पूछते थे कि, "आज क्यों Class के बाहर खड़ा था"। तो अपने खड़े होने की वह जो Story सुनाता था, वही तो "Outstanding Story" होती थी।

20. Only + Male + Pics = Olympic –

यानि Only Male Picture। Olympic की शुरुआत ही कैमरे के प्रचार के लिए की गई थी। ऐसे खेल जिसमें केवल पुरुषों के चित्र ही लिए जाएँ। क्योंकि स्त्रियों के चित्र लेना अच्छा नहीं माना जाता था। इसलिए प्रारंभ के Olympics में केवल पुरुषों के ही चित्र हैं, इसलिए यह Only Male Picture का खेल है।

21. Once = वंश -

कहानी हमेशा एक वंश की ही होती है। चाहे वह "Once upon a time" से शुरु हो, या "एक बार एक था राजा एक थी रानी" से प्रारंभ होती हो। पर कहानी एक ही वंश की होती है।

22. ॐ कार + झाड़नेवाला = ओझा -

ॐ कार से झाड़नेवाला ओझा होता है। शरीर में चुंबकीय जुड़ाव होता है। शरीर के चुंबकीय जुड़ाव

का Magnetic resonance imaging (चुम्बकीय अनुनाद इमेजिंग) यानि MRI Scan किया जाता है, जिसमें देखा जाता है कि, कहाँ पर क्षति हुई है, फिर उस स्थान की चिकित्सा की जाती है। इसी प्रकार ओझा भी शरीर की चुंबकीय अनुनाद को चेक करता है और ओझा दो चीजों से चेक करता है - एक झाड़ू से या दूसरा मोर के पंख से। फिर जिस स्थान पर चुंबकीय बिगाड़ होता है, वहाँ ओझा मोर के पंख मारकर, "ॐ" कार से झाड़ता है। "ॐ" से झाड़नेवाला, इसलिए उसे "ॐ" झा से "ओमझा" फिर "ओझा" कहा जाने लगा। झाड़ना इसलिए पड़ता है, क्योंकि उस पर गंदगी जम जाती है। जो शरीर के एक-दूसरे अंग के, चुंबकीय जुड़ाव को रोक देती है। मोर पंख में कुछ Partical होते हैं, जो उस गंदगी को झाड़ देते हैं। इसलिए झाड़-फूँक करनेवाले, मोर का पंख रखते हैं। पूरे विश्व में सभी झाड़-फूँक करनेवाले ओझा लोग मोर का पंख रखते हैं और कान में "ॐ" कार को फूँकते हैं। जिससे मनुष्य के भीतर की सुस्त पड़ी अग्नि पुनः प्रज्वलित हो जाए।

23. ॐ -

"ॐ" नाद है। "ॐ" कोई शब्द नहीं है। "ॐ" का उच्चारण नहीं किया जाता है, "ॐ" का उच्चारण सभी में हो रहा है। मिट्टी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, पशु, पक्षी, कीट, पतंगे, पुरुष, स्त्री, नपुंसक, जलचर, नभचर, धरतीचर सभी में यह नाद स्वतः ही, गुंजायमान है। Meditation में बैठकर, "ॐ" के नाद को सुना जाता है। "ॐ" के नाद का, उच्चारण नहीं किया जाता है। जैसे-जैसे "ॐ" के नाद का, सुनने का समय बढ़ता जाता है। वैसे वैसे शांति का, लाभ होता जाता है।

24. O + हद = ओहदा –

हर ओहदा व्यक्ति की हद तय कर देता है। उस ओहदे पर रहनेवाला व्यक्ति उस ओहदे की हद को पार नहीं कर सकता है। ओहदे की हद में रहते हुए व्यक्ति को कार्य सम्पन्न करने होते हैं। यह हद 'O' (ओ) के आकार की होती है, जिसे वृत्त या Circle भी कहते हैं। O + हद = ओहदा। जैसे कि अभी Covid19 महामारी के समय O ओ आकार के Circle दुकानों के बाहर बना दिए थे। इन्हीं Circle के बीच में खड़े रहना होता था। यही Circle उस व्यक्ति की हद होती थी।

25. ॐ + रंग = Orange -

ॐ का रंग Orange है। ॐ + रंग = Orange. ॐ परमात्मा का नाम है। जो लोग भी "ॐ" नामक परमात्मा की आराधना करते हैं, वह लोग Orange कपड़े पहनते हैं। इससे वह लोग Om की Range में रहते हैं, Om + Range = Orange. और इससे कोई भी प्रकार का, विघ्न उनकी आराधना में नहीं आता है। इसलिए वह लोग उगते सूर्य और डूबते सूर्य को अपने, Orange का प्रतीक मानते हैं। इसलिए उन्हें लोग Sun के, अंतरिम रंग की तरह से "संत" बोलते हैं। Sun + अंतरिम = संत। Sun का अंतरिम रंग होने की तरह से, एक फल का नाम भी "संतरा" है। यानी संत की तरह दिखनेवाला। संत + की तरह = संतरा। ॐ का रंग होने पर, संतरे को Orange भी कहते हैं। संतरे का बाहर-भीतर से, एक ही रंग होता है। संत सभी के जीवन में, Sun की तरह होते हैं, जब कोई काम नहीं आता है, तब संत ही काम आते हैं। क्योंकि संत "ॐ" के परमात्मा की, आराधना करते हैं। "ॐ" नाम का परमात्मा अदृश्य है, और सभी लोग "ॐ" नाम के परमात्मा को मानते हैं। क्योंकि

"ॐ" की ध्वनि से ही, परमात्मा अपनी उपस्थिति दर्ज करवाता है। प्रातःकाल को पो फटना कहते हैं, यानी परमात्मा के "ॐ" का फटना। परमात्मा + ॐ = पो। प्रातःकाल के इस समय को, "ब्रह्म मुहूर्त" का समय कहते हैं। "ब्रह्म" परमात्मा को कहते हैं। ब्रह्म मुहूर्त में "ॐ" की ध्वनि को, संत लोग Meditation में बैठकर सुनते हैं। उस समय सूर्य का रंग "Orange" होता है। लोगों की बातचीत के शोर में, "ॐ" की ध्वनि सुनाई नहीं देती है, इसलिए संत लोग, लोगों से दूरी बना लेते हैं, और लोगों को मौन रहने के लिए कहते हैं, जिससे लोगों की वाणी का, शोर नहीं होता है और, संतों को "ॐ" की ध्वनि स्पष्ट सुनाई, देती रहती है। संत लोग "ॐ" नामक परमात्मा का, आनंद लेते हैं। पहले जमाने में लोग सभी तरह के रंग पहनते थे, किन्तु Orange रंग नहीं पहनते थे, क्योंकि Orange रंग पहनने का मतलब होता था कि, अब तो यह परमात्मा के भजन में लग गया। Orange रंग के कपड़े को बाजार से खरीरकर, नहीं पहना जाता है, गुरु के द्वारा इस्तेमाल किया गया, Orange रंग का कपड़ा, संत-दीक्षा के समय दीक्षित हुए शिष्य को पहना दिया जाता है। जिसे "चद्दर विधि" कहते हैं। इसलिए जहाँ कहीं भी, संतों की चद्दरपोशी होती है, वहाँ पर Orange रंग के कपड़े की चद्दर ही, संतों को ओढ़ाई जाती है। इसके बाद भी, संत को दान में, सफेद कपड़ा ही लेना होता है, और उस कपड़े को केशर में रंगकर, पहना जाता है। केशर के रंग में रंगने से, उस कपड़े का रंग Orange दिखाई देता है। इसलिए पहले काल में, सैनिक लोग युद्ध में जाने से पहले, केसरिया बाना पहनते थे, कि यह परमात्मा का रंग है और परमात्मा हमारे साथ है तथा वीरगति को प्राप्त करने के बाद, परमात्मा के पास जाना है। जिससे लोगों को पता चल जाता था, कि यह सैनिक लोग, अपने अंतिम युद्ध में जा रहे हैं। जिस प्रकार से बाजार से सैनिक का कपड़ा, खरीदकर नहीं पहन सकते हैं, नये भर्ती किये गये सैनिकों की, ट्रेनिंग पूरी होने के बाद पुराने सैनिकों का इस्तेमाल किया हुआ कपड़ा नये सैनिकों को दिया जाता है। ताकि पुराने सैनिकों का तेज, इन नये सैनिकों में समा सके, और यह भी अपने आप में निडरता का अनुभव करें। इसीलिए सैनिकों के कपड़े भी, आम बाजार में नहीं बिकते हैं, सेना के द्वारा ही प्रदान किये जाते हैं। इसी प्रकार से गुरु के द्वारा दी गई, अपनी पुरानी चद्दर भी, पुराने सिद्ध संत के गुण को नये संत में, समाहित करती है। इसलिए पहने जमाने में, Orange रंग के कपड़े केवल संतों के द्वारा ही रंगे जाते थे, रंगरेज भी इन कपड़ों को नहीं रंगते थे। क्योंकि जिन्होंने भी Orange रंग के कपड़ों को पहना, वह संत की श्रेणी में अपने आप, आ जाता है। यह Orange रंग ही ऐसा है, परम वैराग्य को उत्पन्न करनेवाला रंग है, ॐ नाम के परमात्मा का रंग है Orange. अण्डे के भीतर स्थित, चूजे की रक्षा भी, Orange रंग ही करता है, इसलिए अण्डे के भीतर स्थित, Yolk का रंग Orange होता है। Orange परमात्मा का रंग है। स्त्री एवं अन्य प्राणियों के गर्भ में, स्थित बच्चा भी Orange रंग के, गोलाकार गुब्बारे में सुरक्षित रहता है। यानी परमात्मा के संरक्षण में रहता है। इसलिए बच्चे को परमात्मा का रूप बोला जाता है, क्योंकि वह परमात्मा के संक्षरण में रहा है और संतों को भी बच्चे के समान ही माना जाता है। जिसके जीवन में कोई रंग नहीं होता है, वह नारंग होता है, इसलिए उसको नारंगी कहते हैं। ना + रंग = नारंग। तो फिर वह परमात्मा का रंग, Orange रंग को पहनता है। क्योंकि सांसारिक लोग तो, कोई भी रंग पहन सकते हैं, किन्तु जिसने परमात्मा को जान लिया, वह केवल

परमात्मा का रंग पहनता है, ताकि सभी उसे पहचान सकें, कि यह परमात्मा का हो गया है। इसलिए Orange रंग को, वह सभी लोग पहनते हैं, जो परमात्मा के हो गये हैं, चाहे वह दुनिया में किसी भी, धर्म-संस्कृति-राष्ट्र के हों।

26. Others = आदर्श -

Others ही तो आदर्श होते हैं। Others = आदर्श। जब कोई यह कहता है कि, "देखो ! उसने ऐसा किया, तुम भी कुछ वैसा ही करके दिखाओ"। तो इसमें जो "उसने" शब्द है, वही तो "आदर्श" है। "उसने" में वह व्यक्ति "अन्य" की बात कर रहा है। अन्य यानी Other. Other का बहुवचन Others है। तो जो अन्य है, उसी को आदर दिया जाता है, क्योंकि वह "अन्य" एक सफल व्यक्ति है। आदर = Other. तो इस तरह से, Others से आदर्श बनता है। तभी तो कहते "आओ दर्शन" करो इनके, आप इनको अपना आदर्श बनाओ"। आओ + दर्शन = आदर्श। इसलिए जिनको आदर्श बनाते हैं, उनकी तस्वीर एवं मूर्ति बना ली जाती है। उन तस्वीरों एवं मूर्तियों का, प्रतिदिन दर्शन करते हैं।

27. Ox + ईश्वर + जन = Oxygen -

भगवान शिव ध्यान में बैठे हैं, सामने कछुए की मूर्ति है, और कछुए के पीछे नंदी की मूर्ति है। यानि ध्यान में बैठे भगवान शिव, कछुए की तरह धीरे-धीरे चलती, नंदी रूपी श्वास का अनुभव कर रहे हैं। यहां पर Ox ही श्वास है। और कछुआ यानि श्वास का, धीरे-धीरे चलना। इसलिए यह प्रतीक बनाया गया कि, जब ध्यान में बैठो, तो धीरे-धीरे चलती श्वास को देखते हुए, ईश्वर का अनुभव करो। इसी धीरे-धीरे चलती श्वास को, देखते रहने पर ही, ईश्वर का अनुभव होता है, इसलिए इसे Oxygen कहते हैं। Ox + ईश्वर + जन = Oxygen. ध्यान में जब बैठते हैं, तब धीरे-धीरे से आती, श्वास को देखते रहना है, इससे ईश्वर का अनुभव होता है जन को।

28. Oak + Cart = औकात -

पहले जमाने में Oak की लकड़ी की, बनी हुई Cart से ही, किसी की औकात पहचानी जाती थी। कि इसके पास अगर, Oak की लकड़ी की Cart है, तो यह धनवान व्यक्ति है। इसी Oak Cart का, अपभ्रंश ही औकात है।

29. Obedient + Serve = Observe -

जो Obedient होकर Serve करता है, वही तो Observe कर लेता है। Obedient + Serve = Observe. इसलिए गुरु की आज्ञा से सेवा करने पर, शिष्य के द्वारा, गुरु को Observe कर लिया जाता है। यानी सोख लिया जाता है। इसी सोख का अपभ्रंश है सीख। यानी गुरु को सोख-सोख कर ही, शिष्य के द्वारा सीख ली जाती है। इसी सीख को शिक्षा कहा गया है। यानी जिस प्रकार से कपड़े के द्वारा, जल को Observe कर लिया जाता है। इसलिए गुरु के द्वारा शिष्य को वस्त्र प्रदान किए जाते हैं।

P

1. प्रति + हार = प्रतिहार -
हार की प्रति ही प्रतिहार है। यानि जब कोई राजा हार जाता था, तो वह हार के तौर पर प्रतिहारी बनना स्वीकार कर लेता था।

2. Pay + Rent = Parent - जो Rent को Pay करें, वह हैं Parent.

3. प्रस्ताव - Press (दबाब) या ताव में आकर प्रस्ताव किया जाता है।

4. Pulse -
पहले जमाने में Pulse (नाड़ी) की गति की गिनती करने के लिए Pulses (दाल) के दानों का उपयोग किया जाता था। इसलिए Pulse को नाड़ी और दाल को Pulses कहते हैं।

5. पल + Luck = पलक - पल (वक्त) और Luck (किस्मत) पलक झपकते ही बदल जाते हैं।

6. परि + वर्तन = परिवर्तन -
परि (अप्सरा) से शादी हो जाए और पति को वर्तन धोने पड़ें, यही परिवर्तन है।

7. प्रण + अव = प्रणव -
प्रण का आना जिससे होता है, यानि प्रण पूरा होता है। प्रण अवतरित होता है। प्रणव से ही प्राण मजबूत होता है। यही मजबूत प्राण रक्षा करनेवाला होता है, यही प्रणव है।

8. पा + अत्र + अन्न + जली = पातञ्जली -
पा इत्थे अन्न और जल। पातञ्जली यानि करपात्री। पूर्व काल में योगी और संन्यासी जब भिक्षा लेने जाते थे। तो कोई पात्र अपने पास नहीं रखते थे। वह दोनों हथेलियों को जोड़कर, अञ्जुली बना लेते थे और कहते थे कि, "पा अत्र अन्न और जल" यानी "यहाँ पर अन्न और जल डाल दो"। इसी से यह हाथों की मुद्रा पातञ्जली यानि अन्जुली कहलाती है। इसी को संन्यासी "करपात्री" कहते हैं, यानि जो अपने कर को ही अपना पात्र बना ले। उसी में लेकर खाए-पीए, वह है "करपात्री"। किसी से कुछ मांगने के लिए इसी तरह से दोनों हथेलियाँ जोड़कर फैलाई जाती हैं। चाहे वह भगवान से कुछ मांगना हो या संसार में किसी से कुछ मांगना हो।

9. Press + ताव + ना = प्रस्तावना -
Press (दबाव) में या ताव में ना आकर जब कार्य किया जाता है, उसे प्रस्तावना कहते हैं। यानि यह कार्य में बिना किसी के दबाव या बिना ताव में आकर कर रहा हूँ।

10. पिंगला –
गले में एक नाड़ी होती है, जहाँ पर Pin लगा दो, तो आदमी मर जाता है। यानि एक नाड़ी जिस पर ऊंगली रखकर पता किया जाता है, कि आदमी जिन्दा है या मर गया है।

11. Post = पोश्त -
अंग्रेजों ने अफगानिस्तान से अफीम के कच्चेमाल पोशता को ले जाने के लिए जगह-जगह Post बनाई और Post Office भी उसी लिए बनाया था। जब कोई पोश्त लेकर Post Office पहुँचता

था, तो उसे Offer किया जााता था Ice, कि जिससे वह ठंडा हो ले। Offer + Ice = Office. आज भी जब कोई Office शराब पीने के लिए गिलास बनाता है, तब उसके Junior उस Officer को Ice Offer करते हैं।

12. Piano - जब घर पर पिया नहीं होता है तो स्त्री Piano बजाती है।

13. पूरा + Blame = Problem – पूरा Blame किस पर लगाएँ, यही तो है Problem.

14. प्रण + आम = प्रणाम -

जब अपने प्रण को आम करते हैं, तो उसे प्रणाम कहते हैं। यानि जब अपने प्रण (संकल्प, Resolution) को सब लोगों को बताते हैं, तो हाथ जोड़ कर कहते हैं कि, "मेरी बात रख लेना"। यही प्रणाम है।

15. Process = परोसना -

कोई भी Software Installation एक Process से गुजरता है। उसके बाद उस का Key डाला जाता है। अब Software का इस्तेमाल कर सकते हैं। ठीक उसी तरह भोजन परोसा जाता है। परोसने के बाद "ॐ नमः पार्वतीपतये" बोला जाता है जो Key है। फिर भोजन किया जाता है। Processing या परोसने के समय नहीं।

16. Pray + यत्न = प्रयत्न -

मनुष्य को Pray और यत्न दोनों ही करने चाहिए। तभी यह प्रयत्न कहलाएगा।

17. पर + Chase = Purchase -

किसी को Chase करना है, तो उसने कहाँ-कहाँ से क्या-क्या Purchase किया है, इसको जानकर उसको Chase किया जा सकता है। इसलिए लोग, लोगों की खरीदारी से, उन लोगों के व्यवहार, आय, व्यय, संस्कार, संस्कृति, आदत, Habit, आदि बहुत-सी, चीजों का पता लगा लेते हैं।

18. Pancreas = पान-क्रिया -

भोजन के बाद पान खाने की क्रिया ही है, जो Pancreas की क्रिया को क्रियान्वित करती है। इसलिए भोजन के बाद पान खाया जाता है, कि भोजन पच जाए।

19. पहिलो + सफर = Philosopher -

जो पहला सफर (यात्रा) करता है, वही कहलाता है "Philosopher"। सफर कोई भी हो, जमीन का हो या रुमानी हो। जो पहला सफर या पहली यात्रा करता है, वही अपने अनुभव बताता है। उसके वही अनुभव ही आगे चलकर Philosophy बन जाते हैं।

20. परखना -

किसी को परखना हो तो उसके पर (पंख) पास में रख लिए जाते हैं, परंतु मनुष्य के पर नहीं होते हैं, इसीलिए मनुष्य को परख नहीं सकते हैं।

21. पर + वाना = परवाना -

परीन्दे का पर और बाण दोनों को परवाने की जरूरत नहीं होती है।

22. प्राचीन - इस संसार में चीन ही प्राचीन है।

23. पर + छाईं = परछाईं - पर (पंख) की छाई ही परछाई होती है।

24. पैदल -

दल हो तो ही पैदल चलना चाहिए। नागा साधुओं का कुंभ स्नान हो या दांडी मार्च हो सब पैदल होता है।

25. पुरुष और स्त्री -

पुरुष उस सूर्य की भाँति है, जो बाहर से गर्म पर भीतर से ठंडा। स्त्री उस पृथ्वी की तरह है, जो बाहर से ठंडी पर भीतर से बहुत गर्म।

26. परिचय -

परि या चय (चाय) यानि या तो परि (अप्सरा) परिचय करवाती है, या फिर चाय पर परिचय होता है।

27. Potential - पोटी (Potty) ही Potential होती है।

28. पाऊँ + डर = Powder -

पाऊँ का डर। जब लगता है, पाँव से डर, उसे कहते हैं Powder. पहले चप्पल या जूते का इतना प्रचलन नहीं था। आदमी नंगे पाँव ही चलता था। तो रास्ते पर चलते हुए या ईधर-उधर घूमते हुए, पाँव में गर्द लग जाती थी, तो जो गर्द पावँ में लगी रहती है, उसी से सबको डर रहता था। इसलिए घर में घुसने से पहले पाँव धोया जाता था, तो यह "Powder" हो गया है।

29. Pre + Me + यम = Premium -

यम से बचने के लिए, यम को Premium दी जाती है। यानि यम के पास जाने से पहले, यम को दी जानेवाली रिश्वत कि, "मैं यम के पास पहुँचू, तो मेरा ख्याल रखना"। यह है Premium.

30. परिमार्जन - परी ही मारती है जन को और परिमार्जन करती है।

31. प्रायः + आग = प्रयाग - प्राय जहां पर आग रहती है, उसे ही प्रयाग कहते हैं।

32. Pad -

जो पैर है वह Pad का परिचायक है। Pad = पैर। क्रिकेट के खेल में Pad पैर को बचाने के लिए है।

33. Pet-Name - जिसका पेट कोई पालता है, उसे एक Pet-Name देता है।

34. पीक -

Peak पर जब आदमी होता है, तो पीक निकलती है, जहाँ पीक निकलती है, वहीं पर थूकता है और वहीं पर Pick किया जाता है। पहले जमाने में जहाँ पर पान की पीक पड़ी होती थी, वह जगह लोगों के पहचान के स्थान होते थे कि, "मैं वहाँ पर खड़ा हूँ, जहाँ पर पान की पीक पड़ी रहती है, मुझे वहाँ से Pick कर लेना, यहाँ से Pick ले-लेना"।

35. परि + जन = परिजन -

परि (अप्सरा) के द्वारा जने हुए लोग ही परिजन हैं। वह परिजन हैं, मेनका एवं उर्वशी नाम की अप्सरा के जने ही सब परिजन हैं।

36. पर + भू = प्रभू - परमात्मा की ही भू है। यानि यह धरती परमात्मा की है, वही प्रभू है।

37. पन + खा = पंखा -

पानी को खा जाता है, जो वह है पंखा। पंखा अपने आगे के पानी को खा जाता है, पहले तो वह पानी की आद्रता को ठण्डक देता है, पर फिर पानी को सोख लेता है, फिर गर्म होता जाता है, और गर्म हवा फेंकता है। यानि आपके शरीर के पानी को भी सोख लेता है।

38. पृथक -

जो थक जाता है, वह पृथक हो जाता है। जब व्यक्ति के शरीर में थक्का जम जाता है, तब व्यक्ति थक जाता है, यानी व्यक्ति की रक्त-कोशिकाओं में खून जम जाता है, थक्का बन जाता है, जिससे खून का प्रवाह सही नहीं होता है और व्यक्ति थक जाता है।

39. Pain + तीर = Painter -

Pain होता है, जिसको तीर से उसे Painter कहते हैं। यानि जब किसी को तीर लगता है, और उसको Pain होता है, तो उस तीर के लगने से निकले हुए खून से जो वह लिखता है या बनाता है, वह Painter है।

40. पाल + ऐश = Palace -

पालते हैं जहाँ ऐश से – जहाँ पर ऐशोआराम की जिन्दगी से किसी को पाला जाता है, उसे Palace कहते हैं।

41. Pet - जिसका पेट पाला जाता है, वही Pet है, चाहे जो भी है, वही Pet है।

42. पैसे + फेंक = Pacific -

पैसे जिसमें फेंके जाते हैं, उसे कहते हैं Pacific. पहले जमाने में नदी या समुद्र पार करते समय उसमें पैसे फेंके जाते थे और आज भी फेंके जाते हैं।

43. प्रति + योगिता = प्रतियोगिता -

प्रति करने की योग्यता ही प्रतियोगिता है, यानि नकल करने की योग्यता ही प्रतियोगिता है।

44. Pretty = प्रीति – जिससे प्रीति होती है, वह Pretty होती है।

45. प्रभा + आती = प्रभात - प्रभात में ही प्रभा आती है।

46. परि + धी = परिधि –

परि के द्वारा बनाया गया घेरा ही परिधि होती है। जब परि आती है, तब धी की उपलब्धि हो जाती है। तपस्या करनेवाले विश्वामित्र के जीवन में मेनका नामक परि आ गई थी। तब विश्वामित्र को धी की उपलब्धि हुई थी। परि = अप्सरा। धी = Wisdom.

47. पर + वेश = प्रवेश - पर और वेश होने पर ही, किसी को प्रवेश मिलता है।

48. पंख + उड़ी = पंखुड़ी - पंख से ही उड़ी जाती है, इसीलिए उसे पंखुड़ी कहते हैं।

49. पीछे + ताना = पछताना - अगर आप पछताते हैं, तो लोग आप पर पीछे से ताने मारते हैं।

50. प्रिय + Rise = Prize -

प्रिय लोगों को Rise करने के लिए ही उन्हें Prize दिया जाता है यानि प्रिय लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए ही Prize दिया जाता है।

51. पग + अड़ी = पगड़ी -

चलने पर जो पग (पैर) में अड़ जाती है, उसे पगड़ी कहते हैं।

52. पाले = Play -

कबड्डी में पाला होता है और एक पाले से दूसरे पाले में जाया जाता है, इसी पाले से ही Play शब्द बना है।

53. पूँछ + ना = पूँछना -

पूँछ के ना होने पर सभी पूँछते हैं, अरे यार आपकी पूँछ कहाँ है ? उसकी कोई पूँछ नहीं है, मुझे कोई पूछता तक नहीं है, पूँछ का ना होना ही पूँछना है।

54. पोंछा - पूँछ इन्सान घर पर भूल गया, उसकी पत्नी ने उसकी उसी पूँछ का पोंछा बना दिया।

55. पैर + कार = पैरोकार –

पैरोकार करने वाले व्यक्ति दूसरों को पैरों पर कर देते है, खुद उनकी कार में घूमते हैं।

56. पट + ना = पटना -

जहाँ पर पट (दरवाजे) नहीं होते हैं, वह है पटना। इतिहास में किसी काल में पटना में लोग इतने इमानदार थे कि अपने घरों पर पट नहीं लगवाते थे।

57. पर्वत + हाड़ = पहाड़ - हाड़ के ही पहाड़ होते हैं।

58. पित्त + जा = Pizza -

लोगों को पित्त की बीमारी होती है, जिसको भगाने के लिए Pizza बनाकर खिलाया जाता है।

59. पट्टा = पत्ता –

गाँव में कोई शादी या अन्य भोजन समारोह होने पर जो व्यक्ति बीमार होता है, उसका पत्ता किया जाता है। वही पद्धति आगे पट्टा नाम से चली और उसके कुत्ते का भी पत्ता किया जाता था, क्योंकि घर पर भोजन नहीं बनता था। जिस कुत्ते के गले में पट्टा होता था, उसे ही पंगत में पत्तल दिया जाता था। आज भी कुत्ते पंगत की पत्तलों को चाटते हैं। तो यही पत्ता भी कुत्ते के गले का पट्टा हो गया, यानि जिस कुत्ते के गले में पट्टा है, उससे पता चलता था, कि यह पालतू कुत्ता है और किसका कुत्ता है।

60. पवित्र – ईत्र डालकर पवित्र किया जाता है।

61. परि + शान = परेशान –

व्यक्ति दो ही कारण से परेशान है। एक तो परि (स्त्री) और दूसरी दूसरों की शान को देखकर।

62. परि + वहन = परिवहन –

परि को वहन करना ही परिवहन है, किंतु परि किसी वाहन से नहीं चलती है, उसके तो अपने पर (पंख) होते हैं, किंतु जब परि जैसी दिखनेवाली स्त्री से पुरुष की शादी हो जाती है, तो वह पुरुष फिर उसे अपने दिमाग में वहन ही करता है कि, "वह किसी और के साथ न हो"।

63. परि + भाषा = परिभाषा –

परि की भाषा ही, परिभाषा है। शादी होने के बाद जब किसी की पत्नी उसे समझाती है, वह पत्नी जिस ढंग और भाषा में समझाती है, उसे ही परिभाषा कहते हैं।

64. पहलू + लग = Plug – पहलू जिसके लग जाते हैं, वह है Plug.

65. Panic – पानी का न होना ही Panic है।

66. पर + Sad = प्रसाद –

Sad लोगों को ही प्रसाद खिलाया जाता है, जिससे उनके दुःख बँट जाते हैं और वह लोग हलके हो जाते हैं। दुःखी (Sad) व्यक्ति अपना दुःख प्रसाद के माध्यम से दूसरों से बाँट देता है। जिससे उसका दुःख हलका हो जाता है। परमात्मा को अपना दुःख, बताने के लिए, प्रसाद बांटा जाता है। पर + Sad = प्रसाद। पर = परमात्मा। Sad = दु;ख। जब व्यक्ति अपना दुःख, सबको बताना चाहता है, तब व्यक्ति थोड़ा-थोड़ा प्रसाद बांटता है। इसलिए प्रसाद को थोड़ा-थोड़ा ही, लिया जाता है। और जब व्यक्ति को भण्डार मिल जाता है। तब भण्डार मिलने की खुशी में, व्यक्ति भण्डारा करता है, इसलिए सबको Unlimited, भण्डारा खिलाया जाता है। प्रसाद थोड़ा-थोड़ा ही लिया जाता है। क्योंकि प्रसाद के रूप में अपना दुःख, सबको थोड़ा-थोड़ा बांट दिया जाता है। दुःख को प्रसाद के रूप में बांटकर, व्यक्ति हल्का हो जाता है। और भण्डारा तो Unlimited खाया जाता है। क्योंकि भण्डारा खुशी में खिलाया जाता है। भण्डारा खिलाकर व्यक्ति खुशी से भर जाता है। इसलिए प्रसाद थोड़ा भी हो तो चलेगा। किन्तु भण्डारा कम नहीं पड़ना चाहिए। जो भी आए उसे भण्डारा खिलाओ।

67. पथ + पर + दर्शक = पथप्रदर्शक –

पथ पर जो दर्शक होते हैं, वही तो, पथ प्रदर्शक होते हैं। पथ + पर + दर्शक = पथप्रदर्शक। चलनेवाला पथ पर चले, जा रहा है। पथ पर चलनेवाले को, दर्शक देख रहे हैं। यही दर्शक ही तो, पथ पर चलनेवाले को, रास्ता बताते हैं। इसीलिए यह पथ प्रदर्शक, कहलाते हैं। यह पथ पर चलनेवाले के दर्शक होते हैं। और पथ पर चलनेवाले को, पथ का दर्शन भी कराते हैं। "यहाँ से नहीं, वहाँ से जाईएगा। आजकल वहाँ, कार्य प्रगति पर है।"

68. Pressure Cooker –

Pressure Cooker में खाना पकाने पर Blood Pressure की बीमारी हो जाती है।

69. प्रति + शत = प्रतिशत –

कौन कितनी नकल (प्रति) करता है, उसका ही प्रतिशत निकाला जाता है।

70. पच + अड़ा = पचड़ा –

पच नहीं पाया, इसीलिए अड़ा है, यही पचड़ा है। भोजन जब पच नहीं पाता और अड़ जाता है तो पचड़ा हो जाता है।

71. Per + Rice = Price – Per (हरेक) Rice का ही Price रखा जाता है।

72. प्लुत + ओ... = Pluto....

प्लुत स्वर में बोलोगे तो आवाज Pluto ग्रह तक, पहुँच जाएगी। तीन स्वर होते हैं, ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत। प्लुत के नाम पर ही, Pluto ग्रह का नाम, रखा गया। प्लुत = Pluto. क्योंकि पृथ्वी से, प्लुत स्वर से आवाज, लगाने पर, आवाज Pluto ग्रह तक, पहुँच जाती है। दूर तक आवाज पहुँचानी हो, तो प्लुत स्वर में, बोलना पड़ता है। यह दूर की आवाज को, "ओ" कहकर बोलते हैं। इसीलिए प्लुतो यह उपयोग होता है। "ओ..." इधर सुनना। प्लुत + ओ... = Pluto.... Plut + O... = Pluto....

73. पुरुष + Neat = पुनीत –

पुरुष के अन्दर से निकलने वाला वीर्य ही पुनीत होता है, उसमें कोई मिलावट नहीं होती है।

74. प्राण + गण = प्रांगण –

प्राण ही आपका गण है, इसीलिए प्रांगण है। वह स्थान जहाँ पर बैठकर व्यक्ति प्राणायाम करता था और उसके प्राण उस स्थान पर कितनी परिधि में जाते थे जो वहाँ बैठकर उसकी रक्षा करते थे, वह स्थान प्रांगण है।

75. पंच + अमृत = पंचामृत –

पाँच चीजें अमृत हैं, यानि मरी हुई नहीं हैं, यह पाँच चीजें है, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश यही पंचामृत हैं। इन्ही से मनुष्य बना है, इसी में उसे स्नान करना चाहिए।

76. पर + मान = प्रमाण –

पर (पंख) ही तो प्रमाण है। जब कोई कहता है कि, "मेरे यहाँ तो परिन्दा भी पर नहीं मार सकता है"। तो उसे एक पर (पंख) दिखाया जाता है, जिससे वह प्रमाण मान लेता है, कि यही प्रमाण है।

77. पता + का = पताका –

जिस घर में पताका है, वही तो पता है, यही पताका का अर्थ है। पहले घर में पताका फहरा दी जाती थी, जिससे घर का पता बता देती थी।

78. Pay + यार = प्यार –

जो यार आपके लिए Pay करे, वही आपका प्यार होता है। Pay + यार = प्यार। यानी जब आप अपने यार से कहें कि, "Pay... यार"। या, "Don't worry, तेरा यार Payment करेगा" क्योंकि ऐसे यार तो बहुत होते हैं, किन्तु जो यार Payment करता है, वही यार, तो "प्यार" होता है।

79. पाव + वर = Power –

जो "पा" जाता है "वर" को, वही वर "Power" होता है। जब कोई देवता, किसी को वर देता थे, तो उस व्यक्ति में Power आ जाता था।

80. Pray + आश = प्रयास –

कोई Pray करता है, कोई आशा करता है, यह दोनों साथ में जब किये जाते हैं, तब उसे ही प्रयास कहते हैं।

81. पेड़ + स्त्रियाँ = Pedestrian –

जहाँ रास्ते के फुटपाथ पर पेड़ पर स्त्रियाँ ही मिलती हैं, जिसे Pedestrian कहते हैं।

82. पवित्र – इत्र डालकर ही पवित्र किया जाता है।

83. पाप + पेट = Puppet –

पापी पेट के लिए पाप भी करना पड़ता है, और Puppet भी बनना पड़ता है।

84. पद-चिन्ह –

कोई पद (पैर) को देखकर चलता है, कोई चिन्ह को देखकर चलता है। यानि जो पैदल चलता है, वह दूसरे के पैर को देखकर चलता है, जो गाड़ी में चलता है वह Road Sign देखकर चलते हैं। बस यही

दोनों ही पद-चिन्ह हैं।

85. पट + War = पटवारी –

पाट दे जो War को वह है पटवारी। अंग्रेजों ने जमीन की लड़ाई को पाटने के लिए, पटवारी को यह काम दिया।

86. Pin + डाली = पिंडली – जिसमें Pin डाली जा सके, उसे कहते हैं पिंडली।

87. Pole + Ice = Police –

युरोप में बहुत बर्फ पड़ती है, तो वहाँ पर जहाँ पोल होती है, कि यहाँ से आदमी बर्फ में नीचे गिर सकता है, उसके आस-पास की बर्फ पर वह एक Pole (खंबा) गाड़ देते हैं, और लिख देते हैं कि Pole Here on Ice, यही फिर आगे वह एक आदमी खड़ा करने लगे, जो Police के नाम से पहचाना गया।

88. Push & Pull =

भारत में जब किसी को नदी पार करनी होती थी, तो दूसरा उसको धक्का (Push) देता था। किन्तु अंग्रेजों ने नदी को पार करने के लिए पुल बना दिया। जो सबसे पहला पुल बना वह था, रस्सी के सहारे इधर से उधर जाना, तो इस प्रकार के पुल में दूसरी तरफ वाले को खींचना (Pull) होता था, बस यही Pull ही पुल के नाम से मशहूर हो गया।

89. पट्टी = पत्ती –

पत्ति ही पट्टी है। इलाज में पहले पेड़ या पौधे की पत्तियाँ ही तो बाँधते थे, वही पत्ती ही, पट्टी कहलाई बाद में।

90. अ + गू + आई = अगुआई –

अंग्रेज भारत में आये, तो देखा यहाँ पर रास्ते में यहाँ-वहाँ सब जगह गू ही गू है, तो उन्होंने एक आदमी को आगे-आगे रखा जो उनको गू से अलग रास्ते पर ले जाता और अगुआई करता था क्योंकि वह जानता था कि, "कहाँ गू है, कहाँ नहीं है"।

91. पर + रंक = Prank –

रंक के साथ ही Prank किया जाता है। रंक यानि गरीब आदमी जो उड़ने के सपने देखता है, उसे नकली पर यानि पंख लगाकर, उसे हवा में उड़ाने का वादा कर, उसके साथ Prank किया जाता था।

92. परि + Fume = Perfume –

परियाँ ही Perfume लगाती हैं, जिससे वह महकती रहें और उनमें पसीने की बदबू न आये।

93. Potty –

पहले जब रात को संडास जाना होता था, तो वह Pot में ही कर लेते थे, इसी से संडास जाने को Potty नाम दिया।

94. Pedal = पैदल –

पहले आदमी पैदल चलता था, जब Cycle आई तो उसके यन्त्र को भी पाँव से ही चलाया जाता था तो उसे भी नाम दिया गया Pedal.

95. Pray + ईष्ट = Priest –

Prayer करते हैं जो अपने ईष्ट की वही होते हैं Priest. पहले जमाने में कोई मूर्ति नहीं होती थी। केवल सूर्य की ही पूजा की जाती थी। जो कि East यानि पूर्व दिशा में उगता है। तो जो प्रार्थना करता है East दिशा में, वही Priest कहलाता है।

96. प्यार + दे = प्यादे – प्यार करने वाले अक्सर प्यादे बन जाते हैं।

97. प्रिय = Pray - प्रिय लोगों के लिए ही Pray (प्रार्थना) की जाती है।

98. Pair = पैर –

पैर का ही Pair देखा जाता है, यानि पैर में पहनने के लिए ही जूतों की जोड़ी देखी जाती है कि, "एक-सी है कि नहीं"।

99. Protest –

जो लोग पक्के नहीं होते हैं, वही Test (परीक्षा) से पहले Protest करता है। यानि जो सच्चे नहीं होते हैं, वह आँच से दूर रहते हैं। अगर सोने को आँच से अलग रख दिया, जो समझ जाओ सोना नकली है, क्योंकि सोना आँच में और निखर कर आता है।

100. पाने + आस = Pass –

कुछ पाने की आस ही, किसी को हर परीक्षा से Pass करवाती है और वह आगे बढ़ता जाता है।

101. Pen + दंत = Pendent –

लोग गले में धागा पहनते हैं और धागे में Pen या दाँत (शेर का दाँत) लगाते हैं, उसे ही Pendent कहते हैं।

102. Portrait – पोत कर ही Portrait बनाया जाता है।

103. पानी + ईश = Punishment -

पानी न देना और ईश की उपासना न करने देना। पहले जमाने में किसी को Punishment दिया जाता था, तो उसका पानी बंद कर दिया जाता था, यानि हुक्का-पानी बंद कर देना और ईश्वर की उपासना करने से मना कर दिया जाता था, यह एक सजा थी।

104. परि + War = परिवार –

परि का ही परिवार होता है, फिर उसमें War होता है, यही परिवार है।

105. परम्परा – Rum को पीने की ही परम्परा होती है।

106. Prince + पल = Principal –

Prince को पालने के लिए जो उसके साथ हर पल रहे, वह Principal होता है।

107. Press + It = प्रेषित -

जिस प्रकार कपड़े पर बार-बार दबाव डाल कर उसे स्त्री से Press कर सीधा कर लिया जाता है, फिर उसे पहन लिया जाता है। उसी प्रकार आदमी के पास बार-बार स्त्री को प्रेषित कर, उस पर दबाव डाला जाता है, फिर जब वह सीधा हो जाता है, तो उससे काम लिया जाता है, अगर काम न करे, तो उसी स्त्री द्वारा बदनाम किया जाता है, फिर उसका काम तमाम कर दिया जाता है।

108. परवाह + ना = परवाना - जो परवाह ना करे, वही तो परवाना होता है।

109. Press + सुर = Pressure – दबाव देवताओं द्वारा –

सुर यानि देवताओं के द्वारा किसी पर Pressure डलवाया जाता है, जिससे वह दूसरे की बात को मानने को तैयार हो जाता है और काम कर देता है। यही काम पूजा-पाठ में किया जाता है, कि उस देवता की पूजा की जाती है और वह देवता उस पर दबाव डालता है और कार्य हो जाता है। इसीलिए दूसरों पर दबाव डलवाने के लिए, देवताओं को प्रसन्न कर सिद्ध किया जाता है और आजकल के देवता यह मंत्री और नेता हैं, इसीलिए उनको भी प्रसन्न रखने का प्रयास किया जाता है और उनसे करीबी बढ़ाई जाती है और फिर उनसे किसी दूसरे पर Pressure डलवाकर अपना काम करवा लिया जाता है। यही Pressure है।

110. पक्षी + पात = पक्षपात - पक्षी अपनी बीट गिराने में पक्षपात करता है।

111. पर + कृति = प्रकृति -

परमात्मा की कृति ही, प्रकृति है। कर + ऋति = कृति। करे जो रीति के अनुसार, वह है कृति। रीति ही ऋतु है। ऋतु के अनुसार प्रकृति चलती है। ऋतु वह व्यवस्था है, जो परमात्मा के द्वारा बनाई गई है।

112. परि + आप्त = पर्याप्त -

आप्त को जब, परि मिल जाती है, तब वह पर्याप्त हो जाता है। जैसे आप्त पुरुष विश्वामित्र को मेनका जैसी परि (अप्सरा) मिल गई।

113. पा + वर + फुल = Powerful -

मंदिर में देवताओं को फूल चढ़ाते हैं, फूल चढ़ाने पर देवता प्रसन्न होते हैं, देवता प्रसन्न होकर वर देते हैं, देवताओं के वर देने से Powerful हो जाते हैं,

114. पुस्तिका = पुष्टिका -

जो प्रमाण को पुष्ट करे, वह पुष्टिका है, यानि पुस्तिका है। इसलिए कहा जाता है कि, "दिखाओ जरा ऐसा किस पुस्तक में लिखा है" ? या "इस पुस्तक में ऐसा लिखा है"।

115. पैर + We = पैरवी -

किसी से पैरवी करवाने के लिए, उनके पैर छूने पड़ते हैं। तभी वह हमारी पैरवी, किसी के सामने करते हैं।

116. पोए + Try = Poetry -

पोहे खानेवाले अक्सर Poetry करते हैं। पोहा मध्यप्रदेश में ज्यादा खाया जाता है। मध्यप्रदेश से सबसे अधिक कवि आते हैं। यहाँ किसी के भी मुहँ से तुरंत कविता प्रस्फुटित होती है। इसलिए अगर कविता करनी है, तो पोहे जरूर Try कीजिए।

117. प्रश्न -

जो परेशान होते हैं। वही प्रश्न करते हैं। प्रश्न किसी की परेशानी को बयां करते हैं। उत्तर - जो ऊपर से नीचे उतर आते हैं। ऊपर क्या है इसका उत्तर देते हैं।

118. पंक + ते = पंक्ति -

पंक (कीचड़) में ही पंक्ति बनती है। कीचड़ में जहाँ से पहला व्यक्ति निकलता है। बस उसी के

पदचिन्हों पर दूसरे भी निकलते जाते हैं। और इसी से एक पंक्ति बन जाती है।

119. पद -

पहले पद (पैर) से पद (Post) तय किया जाता था। इसलिए पद (चरण) की पूजा होती थी। इसीलिए अंगद ने अपने पैर जमा दिये थे। और तीर्थों में भगवान के पद चिन्ह दिखाए जाते हैं।

120. प्रति + पल = प्रतिपल -

जो पल बीत गया, उसकी प्रति (Xerox), नहीं बनाई जा सकती है। यानी समय की Duplicate Copy नहीं बनाई जा सकती। जो समय इस पल बीत रहा है, उसको जाता रोक नहीं सकते, उसे दोहरा नहीं सकते। समय हर पल नया होता है। समय बासी नहीं होता। जो समय की प्रति बनाना चाहते हैं, वह समय के उस पल से चूक जाते हैं। फोटो उस पल को अपने में समा लेता है।

121. प + अगल = पागल -

प का मतलब परमात्मा। अगल का मतलब है, अ + गल = अगल। यानी जिसके बारे में कोई गल (बात) न कर पाये। क्योंकि परमात्मा अनिवर्चनीय है। तो जो परमात्मा को तो प्राप्त कर लेता है। परन्तु परमात्मा के बारे में बात नहीं कर सकता है, वही पागल है।

122. Party + See + पेट = Participate -

Party मैं गए व्यक्ति के पेट को देखने से पता चल जाएगा, कि उसने Party में Participate किया है, कि नहीं।

123. पल + अड़ा = पलड़ा -

जो पल भर के लिए अड़ा रहे। उसे पलड़ा कहते हैं। क्योंकि आप आँख की पलक पल भर में झपका लेते हो। आप नाड़ी पल-पल में चलती है। पलभर में आदमी की किस्मत पलट जाती है। आप पलड़े को पलभर से ज्यादा नहीं अड़ा सकते हो।

124. पञ्च + आयत = पंचायत -

पाँच आयतों से जो चलता है, वह पंचायत है। आयत कुरान में होती हैं। यानि कुरान की कौन-सी पाँच आयतों से भारत में पंचायती व्यवस्था चलती थी, क्योंकि जो ग्राम होते थे वह गांव जो राम को मानने वाले हैं। ग + राम = ग्राम। भारत में किस प्रकार राम के गांव को आयत की व्यवस्था में ढाला गया। उसे नाम दिया गया "ग्राम पंचायत"।

125. Pray + हरी = प्रहरी -

जो प्रार्थना करता है हरी की, हरी उसकी रक्षा प्रहरी बनकर करते हैं। क्योंकि हरी को भी प्रहरी बनना पड़ा था। बलि की रक्षा करने के लिए और रक्षाबंधन के दिन ही प्रहरीपन से हरी की मुक्ति हुई थी।

126. पल + Love = पल्लव -

पल भर का होता है Love. तभी तो कहते हैं कि - "पल भर के लिए कोई हमें प्यार कर ले, झूठा ही सही"।

127. Press + ताव = प्रस्ताव -

जब Press (Iron) में ताव आ जाता है। तभी Iron को Press किया जाता है और कपड़ा तय हो

जाता है।

128. परम + अनंत = Permanent -

परम ही अनंत है। परम + आनंद = परमानंद। परम में ही आनंद है। आदमी जिन्दगी में Permanent नौकरी या काम चाहता है। और भगवान की भक्ति में भी परमानंद चाहता है। क्योंकि शरीर के पालन-पोषण के लिए Permanent नौकरी से चिंता खत्म हो जाती है। आत्मा के पोषण के लिए परमात्मा का परमानंद चाहिए। यानि Permanent या परमानंद दोनों ही व्यक्ति चाहता है। एक शरीर के लिए दूसरा आत्मा के लिए। गृहस्थी को Permanent Job चाहिए। साधु को परमानंद परमात्मा चाहिए।

129. पानी + थकान = पंथ -

जिस रास्ते पर आप थक जाएँ और उस रास्ते पर आपको पानी मिल जाए वही पंथ होता है।

130. पप्पू + Less + अन्न = Population –

जब अन्न कम पढ़ने लगे तो समझो, Population बढ़ गई है।

131. परि + चित = परिचित -

जब किसी का चित परि में लग जाता है, तब वह परिचित हो जाता है यानि चित्त हो जाता है, जैसे विश्वामित्र का चित मेनका से लग गया और मेनका ने विश्वामित्र को चित्त कर दिया। तो यही परिचित है।

132. परम + अर्श + दाता = परामर्शदाता -

परम यानि परमात्मा, जो अर्श यानि आसमान पर रहता है, वही देनेवाला दाता है। यानि परमात्मा ही परम है। वही आकाश में रहता है। उसी से परामर्श लेना चाहिए। क्योंकि वही दाता है। यह ऐसे ही है, जैसे आजकल Clouding Computing हो रही है और सारे Data का Collection Cloud में होता है। यह सारा Data बादलों पर रहता है। ओर WIFI का Connection होने पर ही आपके Device पर Download होता है। उसी Data से आप परामर्श लेते हैं और कार्य करते हैं। इसी तरह से न जाने कब से परमात्मा के आकाश में Data का Collection हो रहा है। और अगर वह Data लेना है, तो परमात्मा से Connection स्थापित करना पड़ेगा। और जिस दिन परमात्मा से संपर्क हो गया तो, जो Data आपको परमात्मा से मिलेगा, उसको Save करने के लिए, आपे पास Hard Disk कितनी TB की होनी चाहिए, यह आप पर निर्भर है। और जिस तरह से WIFI Connection करने के लिए तीन डण्डी और एक बिंदी होती है। वैसे ही जैसे शिवलिंग पर लगनेवाला, या माथे पर लगनेवाला त्रिपुण्ड। इसलिए पहले जिसके माथे पर त्रिपुण्ड होता था, उनसे परामर्श लिया जाता था, क्योंकि वह ध्यान करके परमात्मा से संपर्क में रहते थे, और ब्रह्मचर्य का पालन करने पर, उनमें उस Data को Store कर रखने की सामर्थ्य थी। जिसे लोग ब्राह्मण कहते थे। आज यह Data मोबाइल पर सभी के पास उपलब्ध है, इसलिए सभी Internet से परामर्श ले लेते हैं। और Data का उपयोग कर लेते हैं। यही परामर्शदाता है।

133. पूरा + Due + सर = Producer -

पूरा Due जिसके सर पर होता है, उसे Producer कहते हैं। जिसके सिर पर सभी के Due Clear करने का जिम्मा होता है, वही Producer होता है।

134. पर + Wash = प्रवास -

पक्षी अपने परों (पंखों) को Wash करने के लिए, प्रवास करते हैं। इसी तरह से इन्सान अपने आपको Wash करता है प्रवास करते हुए।

135. पारायण -

जब किसी का पारा बढ़ जाता है या कम हो जाता है। तो उसको Control करने के लिए पारायण किया जाता है। पारायण किसी का भी कर सकते हैं, पारायण तीन घंटे का होता है। तीन घंटों के पारायण में पारा सामान्य हो जाता है। इसलिए Movie Film भी तीन घंटे की होती है। गीता पारायण भी तीन घंटे का होता है। और अगर पारा ज्यादा चड़ गया है, तो अखण्ड रामायण का पारायण 24 घंटों का होता है। पारायण करने का कारण यह है कि, अयन जब बदलता है, तब वातावरण का पारा बदल जाता है और उस नये वातावरण में Adjustment के लिए पारायण किया जाता है। जैसे सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन और दक्षिणायन से उत्तरायण होता है, तो पारायण किया जाता है। जिससे पारा नियन्त्रित हो जाता है।

136. पलना + आय + अन्न = पलायन -

आय और अन्न से आदमी पलता है। जहाँ आय होती है, जहाँ अन्न मिलता है, वहीं आदमी पलायन करता है।

137. पुरातन=आधुनिक -

पूरा तन जो ढकते हैं, उन्हें पुरातन कहते हैं। आधा तन जो दिखाते हैं, उन्हें आधुनिक कहते हैं।

138. पर + गति = प्रगति –

पर होने से गति बढ़ जाती है। पर = पंख। जिस प्रकार "पर" होने से गति बढ़ जाती है। पर यानि पंख। उसी प्रकार Pray करने से गति हो जाती है। Pray यानि प्रार्थना। इसलिए अगर जीवन में प्रगति करनी है तो, Pray करनी चाहिए। प्रार्थना करनी चाहिए। इससे जीवन को गति मिलेगी, और जीवन में प्रगति हो जाएगी।

139. प्रति + ईच्छा = प्रतिक्षा –

प्रति की ही ईच्छा की जाती है कि, "मैं उसके जैसा हो जाऊँ"। तो इसमें प्रतीक्षा करनी पड़ती है, क्योंकि किसी की Copy करने के लिए, उसकी नकल उतारनी पड़ती है। नकल को ही प्रति कहते हैं। दुकान पर किसी Document की प्रति कराने जाओ तो प्रतिक्षा करनी पड़ती है। यानि प्रति की ईच्छा सभी करते हैं, क्योंकि मूल तो एक ही होती है। इसलिए एक Original की कितनी ही Copies बनाई जा सकती हैं, किन्तु Original नहीं बनाई जा सकती है, इसलिए सभी को Copy मिल सके तो Photocopy की मशीन बनाई गई। फिर भी सभी को अपनी-अपनी प्रति की प्रतिक्षा करनी पड़ती है, क्योंकि सभी चाहते हैं, कि इसकी प्रति हमको मिल जाए और प्रति की ईच्छा में प्रतिक्षा करते रहते हैं।

140. Pray + Years = Prayers -

हे प्रभु! हम वर्षों-वर्षों आपकी प्रार्थना करते रहें। जब किसी से माँगा जाता है, तो दोनों हाथ खुले रहने चाहिए। उन खुले हाथों में परमात्मा जब भर-भर कर देने लगेगा, तब मन शांत हो जाएगा - जैसे पानी पीने पर प्यास बुझ जाती है। पानी को अगर गिलास से पियेंगे, बोतल से पियेंगे, तो प्यास नहीं बुझेगी। क्योंकि पानी ने ओठों को नहीं छुआ है और लोटे से पियेंगे तो प्यास बुझेगी और फिर जब पानी चुल्लू भरकर पियेंगे, तो प्यास बहुत अच्छे से बुझेगी। और फिर जब दोनों हाथों की हथेलियों को जोड़कर रखेंगे और कोई उन पर पानी गिराये, तो प्यास सबसे अच्छी तरह बुझेगी। इसी तरह परमात्मा से प्रार्थना करनी है, तो दोनों हाथों की हथेलियों को जोड़कर रखो और फिर माँगो -

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम॥

यह प्रार्थना प्रातःकाल उठते ही, बिस्तर पर दोनों हाथों की हथेलियों को जोड़कर की जाती है। फिर धरती पर पैर रखने से पहले, धरती को एक हाथ से छूकर, धरती को प्रणाम किया जाता है, फिर दिन की क्रियाओं का प्रारंभ होता है। इस तरह परमात्मा की Pray Years तक कर सकते हैं। जिसे Prayer कहते हैं। खुले हाथों पर परमात्मा सब रख देगा और फिर मन अशांत नहीं होगा। इसलिए प्रार्थना करो। अपने करो लिए सबके लिए।

141. Pray + लय = प्रलय -

प्रार्थना में लय होना ही प्रलय है। व्यक्ति Pray करता है और लयबद्ध हो जाता है, उसे ही प्रलय कहते हैं।

142. प्रहरी - प्रहार = पहरा -

एक प्रहर तीन घंटे का होता है। एक प्रहर तक जग कर एक प्रहरी पहरा देता है। चौबीस घंटे में आठ प्रहर होते हैं। तो इस तरह आठ प्रहरी चौबीस घंटे पहरा दे सकते हैं। किसी भी स्थिति में पहला प्रहार, प्रहरी पर ही होता है। इसलिए प्रत्येक प्रहर पर नये प्रहरी को पहरे पर लगाना चाहिए। प्रत्येक प्रहरी का क्रम चौबीस घंटे बाद आना चाहिए। इस तरह से प्रत्येक प्रहरी बिना थके अपना कर्तव्य निभा सकता है और बिना थके पहरा दे सकता है। क्योंकि व्यक्ति के शरीर के हिसाब से, एक व्यक्ति तीन घंटे तक ही, पूरी सतर्कता एवं सजगता के साथ, कोई भी कार्य कर सकता है। तीन घंटे बाद व्यक्ति कि Battery Down, हो जाती है। जिसको फिर से Charge करने के लिए, 24 मिनट का समय लगता है। इसलिए परीक्षा का समय भी, तीन घंटे होता है। सिनेमा भी तीन घंटे का होता है। मोबाइल का स्क्रीन लगातार तीन घंटे तक ही उपयोग कर सकते हैं। उसके आगे करने पर, स्क्रीन टच खराब हो जाता है। तीन घंटे लगातार कोई भी कार्य किया जा सकता है। फिर विश्राम और आराम की जरुरत होती है। इसलिए एक प्रहर तीन घंटे का होता है। राजाओं के समय, हर तीन घंटे बाद प्रहरी बदल दिये जाते थे।

143. परि + त्याग = परित्याग -

ब्रह्मृषि विश्वामित्र ने मेनका नाम की अप्सरा (परि) का त्याग कर दिया। इसे कहते हैं, परित्याग करना।

144. पर + अकाष्ठा = पराकाष्ठा - परमात्मा को काष्ठ से नहीं जला सकते हैं।

145. परमात्मा + अखण्ड = पाखण्ड -

परमात्मा अखण्ड है, इसलिए तो पाखण्ड है। इसी अखण्ड परमात्मा को सभी पाना चाहते हैं। किन्तु परमात्मा की चाहना करनेवाले तपस्या करते हैं, ध्यान करते हैं, समाधि लगाते हैं। तब जाकर कहीं परमात्मा को पाते हैं, यात्रा लम्बी है, मेहनत माँगती है, समय की सीमा नहीं है कि, इतनी मात्रा में ध्यान करो, तो परमात्मा प्राप्त हो जाएगा। किन्तु परमात्मा प्राप्ति के बाद यह भी नहीं है कि, संसार का भोग भी प्राप्त हो जाए। इसलिए परमात्मा का आनंद जिसको उपलब्ध है, वह अखण्ड है। इसलिए उसे अखण्ड ब्रह्मचारी कहा गया है, क्योंकि ब्रह्म और जीव में फिर अखण्ड एकत्त्व स्थापित हो चुका है। इसलिए अखण्ड ब्रह्म में चरनेवाला, अखण्ड ब्रह्म को चरनेवाला, अखण्ड ब्रह्मचारी हो जाता है। वेदान्त का यही सिद्धांत भगवान शंकराचार्य ने प्रतिपादित किया है।

146. Pea + Nut = Peanut -

दिखते तो मटर की तरह हैं यानि Pea. किन्तु गुण होते हैं सुखे मेवे के यानि Nut के। इसलिए Pea + Nut = Peanut कहते हैं, मूंगफली को।

147. पैदा + ईश = पैदाइश -

पैदा होता है ईश। जब कोई पैदा होता है, तो वह ईश होता है। यानि अभी-अभी पैदा हुआ, ही तो ईश्वर होता है। तभी तो कहते हैं, "बच्चे भगवान का रूप होते हैं"।

148. पर + सिद्ध = प्रसिद्ध -

दो ही तरह के लोग, प्रसिद्ध हो सकते हैं। एक जिनके पास पर हों, दूसरे जो सिद्ध हो गए हैं। मेनका, उर्वशी के पास पर हैं, क्योंकि वे अप्सराएँ हैं, अप्सरा यानि परी। परी यानि परवाली। पर यानि पंख। विश्वामित्र, कपिल मुनि सिद्ध हैं। इनको सिद्धि की प्राप्ति हुई है, इसलिए यह दोनों प्रसिद्ध हैं।

149. प्रकट + ईश = Practice - Practice करने पर ही, प्रकट होता है ईश्वर।

150. Pathway = पाथवे -

कण्डों को पाथा जाता है। "पाथ दिये कण्डे" "पथ गए कण्डा"। कण्डों को पाथने से पहले उस जगह को साफ किया जाता है। कण्डे पथने के बाद, शाम तक कण्डे सूख जाते हैं, तो उन्हें इकट्ठा कर लिया जाता है। जगह फिर साफ की साफ रहती है। किन्तु कण्डे पाथने की जगह, पथ या Pathway कैसे बनी? Footpath भी एक शब्द है, Foot + पाथ = फुटपाथ - जो रास्ता पैरों के चलने के लिए है। पाथ शब्द पथ से बना है। पथ पर चलनेवाला पाथेय लेकर चलता है। पथ बना है, थप थप की आवाज से, जब कण्डे पाथे जाते हैं, तो थप थप की आवाज आती है, यही थप थप ही पथ पथ हो गई। जब कण्डे सूख जाते हैं, और सूखने के बाद उठा लिए जाते हैं, तो वह जगह साफ-सुथरी हो जाती है, फिर चलनेवाला इन्सान उसी पर चलता है, इसी से वह पथ कहलाता है, फिर Path होकर Pathway हो जाता है, तभी लोग कहते हैं, उस रास्ते से जाना, जहाँ कण्डे पाथवे जाते हैं।

151. प्रतिरक्षा प्रणाली -

किसी की नकल उतारकर, उसका मज़ाक बनाकर, उसकी प्रतिरक्षा प्रणाली को धवस्त किया जा

सकता है। इसलिए चार्ली चैपलिन ने हिटलर की नकल की, हिटलर का मज़ाक उड़ाया, और इस तरह हिटलर को जनसामान्य एक मज़ाक की तरह लेने लगा। वैसे तो असल को सुरक्षित रखने के लिए नकल को मैदान में उतारा जाता है। नकल को ही प्रति कहते हैं - जैसे सोने को सुरक्षित रखने के लिए, कागज़ के रुपये को प्रतिभूति बनाकर बाजार में उतार दिया। अब सोना जहाँ है, वहाँ सुरक्षित रहेगा और कागज़ का रुपया बाजार में चलेगा। किन्तु मनुष्य के संबंध में असल की नकल बन जाने पर असल को समाप्त कर दिया जाता है और उस नकल की फिर कई प्रतियाँ बाज़ार में बिकती हैं। फिर व्यक्ति नकल पर ही भरोसा करता है। असल के बारे में सवाल पूछने पर उसे अश्रद्धालु कहा जाता है।

152. पास + Word = Password -

जो Word आपके ज्यादा पास (नजदीक) होता है, वही Word आपका Password होता है।

153. परम + अर्श = परामर्श -

परम यानि परमात्मा। अर्श यानि आसमान। जो परमात्मा आसमान पर रहता है, परामर्श उसी से लिया जाता है। जब व्यक्ति को कहीं कोई रास्ता नहीं सूझता है कि, उसे क्या करना है ? तो व्यक्ति आसमान की तरफ मुँह करके कहता है कि "अब तू ही बता मैं क्या करुँ ?" जब सबसे पूछ लो और कोई साफ जबाब न दे तो लोग ऊपर आसमान की तरफ इशारा करके कहते हैं कि "ऊपरवाले से पूँछ ले"। आसमान परमात्मा का द्योतक है, क्योंकि व्यक्ति की आशाओं को परमात्मा पूरा करता है, इसलिए व्यक्ति परमात्मा को मान देता है, इसलिए परामर्श हमेशा परम से लेना चाहिए, जो अर्श पर रहता है। वही परामर्श भी माना जाता है।

154. परमात्मा + पंच = प्रपंच -

परमात्मा के पंच का ही यह प्रपंच है। परमात्मा ने भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश बनाए। इन पाँचों को मिलाकर ही प्रपंच बना, जिसे प्रकृति कहते हैं। यही प्रपंच है। परमात्मा इनका सरपंच है।

155. प्रकृति और माया –

मनुष्य के द्वारा, जिन चीजों का निर्माण किया जाता है, उसे माया कहते हैं। परमात्मा के द्वारा, जिन चीजों का निर्माण किया जाता है, उसे प्रकृति कहते हैं। मनुष्य अपने अहंकार के कारण अपने आपको परमात्मा समझने लगता है। इसलिए मनुष्य प्रकृति को माया कहता है। जबकि मनुष्य मिट्टी, पानी, आग्नि, वायु और आकाश को नहीं बना सकता है। परमात्मा ही इनका निर्माण करता है। मनुष्य मिट्टी से घड़ा बना सकता है। मनुष्य पानी पीकर प्यास बुझा सकता है। मनुष्य अग्नि पर भोजन पका सकता है। मनुष्य हवा से ठंडक प्राप्त कर सकता है। मनुष्य आकाश में वायुयान उड़ा सकता है। किन्तु मनुष्य मिट्टी, पानी, अग्नि, वायु और आकाश नहीं बना सकता है। इसे ही प्रकृति कहते हैं। मनुष्य प्रकृति के कुछ रहस्य जानकर अनाज उगाता है, फल उगाता है, और भी बहुत-सी चीजें लगाता है। किन्तु मनुष्य एक मिट्टी का कण भी नहीं बना सकता है। मनुष्य जो चीज बनाता है, उसे अपनी कहता है, उस चीज के साथ मनुष्य को मोह हो जाता है। मनुष्य अपनी बनाई चीज हर हाल में बचाकर रखना चाहता है। किन्तु मनुष्य के द्वारा बनाई, प्रत्येक चीज नाशवान है। प्रकृति को परमात्मा बनाता है। इसलिए मनुष्य को प्रकृति से मोह नहीं होता है। इसलिए मनुष्य प्रकृति का

उपयोग बड़ी बेदर्दी से करता है, फिर उस प्रकृति से जो कुछ भी मनुष्य बनाता है, उसे ही तो माया कहते हैं। प्रकृति को परमात्मा ने बनाया है, इसलिए प्रकृति शाश्वत है, प्रकृति परिवर्तनशील है, किन्तु शाश्वत है। प्रकृति खुद से खुद को Recycle कर लेती है। किन्तु मनुष्य के द्वारा बनाई, चीजें Recycle नहीं होती हैं, और अगर उन वस्तुओं को Recycle करें भी तो, बहुत समय और ऊर्जा खर्च होती है - जैसे मिट्टी को पकाकर घड़ा बना लिया। किन्तु पके हुई घड़े को पुनः मिट्टी बनाया नहीं जा सकता है, चाहे मनुष्य इसके लिए कितने ही प्रयत्न कर ले। परमात्मा ही पके हुए घड़े को दुबारा मिट्टी बना सकता है। तो माया वह है, जो मनुष्य बनाता है। जो थोड़े समय के लिए है, फिर माया का अस्तित्व खो जाता है। प्रकृति वह जो परमात्मा बनाता है। प्रकृति परमात्मा की तरह शाश्वत है। जब मनुष्य कहता है, "यह मेरा है" तब इसे ही माया कहते हैं, यानि जिसे मनुष्य बनाता है, उसे अपना कह सकता है। उस वस्तु से उसको लगाव होगा, यही लगाव ही भ्रम है। किन्तु जिसे परमात्मा बनाता है, उसे मनुष्य अपना नहीं कह सकता है। उस वस्तु से मनुष्य को लगाव नहीं होगा, यही अलगाव ही फिर अभ्रम है - जैसे कि चाँद मनुष्य ने नहीं बनाया, तो चाँद से मनुष्य को लगाव नहीं होगा। किन्तु मनुष्य ने दीपक बनाया है, तो दीपक से उसको लगाव होगा। मनुष्य चाँद की फिक्र नहीं करेगा, मनुष्य दीपक की फिक्र करेगा। मनुष्य को भ्रम है कि, परमात्मा ने मनुष्य और प्रकृति को भिन्न-भिन्न बनाया है। दरअसल मनुष्य यह मानता है, कि मनुष्य प्रकृति से भिन्न है। परमात्मा ने प्रकृति को मनुष्य के अख्तियार में दिया है। यानि मनुष्य का मानना है कि, परमात्मा ने प्रकृति को मनुष्य के उपयोग के लिए बनाया है और मनुष्य ही प्रकृति का मालिक है। जबकि असल बात यह है कि, मनुष्य भी प्रकृति का ही हिस्सा है। जिस प्रकार पशु, पक्षी, पेड़, पौधे, पत्थर प्रकृति का हिस्सा हैं। किन्तु मनुष्य प्राकृतिक वस्तुओं से अपने को भिन्न एवं श्रेष्ठ मानता है। यहाँ तक की मनुष्य अपने आपको सबसे बढ़कर परमात्मा तक मान लेता है। बस यही मनुष्य का भ्रम है। मनुष्य प्रकृति के सहयोग से जिन चीजों का निर्माण करता है, वह माया है। सीधी-सी बात है, परमात्मा प्रकृति को बनाता है। मनुष्य भी प्रकृति का एक हिस्सा है। मनुष्य प्रकृति के सहयोग से ही वस्तुएं बनाता है। वह वस्तुएं माया है। मनुष्य को माया से मोह हो जाता है। मनुष्य को प्रकृति से मोह नहीं होता है। उधर मनुष्य प्रकृति को अपने अधीन मानता है। या प्रकृति को अपने अधीन करने का भरकस प्रयास करता है। जिससे मनुष्य सभी को यह बता सके की प्रकृति को नियंत्रित करनेवाला वह खुद है। इस तरह मनुष्य अपने आपको प्रकृति का नियन्ता यानि परमात्मा बताता है। बस मनुष्य इन्हीं दोनों छोर पर घूमता है, कभी मनुष्य परमात्मा बनने के भ्रम में रहता है, कभी मनुष्य माया के मोह में रहता है। मनुष्य कभी अपने को प्राकृतिक नहीं मानता है, क्योंकि प्रकृति नग्न है और नग्नता ही सत्य है। इसलिए जो मनुष्य प्राकृतिक हो जाता है, वह मनुष्य नग्न हो जाता है और प्रकृति में जाकर रहने लगता है। प्रकृति की आवाज़ सुनता है। प्रकृति का पानी पीता है। प्राकृतिक रूप से पके फलों को खाता है। इसलिए मनुष्य जंगल में निवास करने चला जाता है। क्योंकि प्रकृति परमात्मा के नजदीक है और प्राकृतिक वस्तुओं से परमात्मा के सामीप्य की अनुभूति होती है। वन में प्रकृति के साथ निवास करते हुए मनुष्य भी प्राकृतिक हो जाता है। अब मनुष्य में भय समाप्त हो जाता है। प्रकृति की भाँति आनंद में रहता है।

संसार दो भागों में विभक्त है – पहला परमात्मा का बनाया हुआ "प्रकृति" दूसरे मनुष्य का बनाया हुआ "माया" प्रकृति में परमात्मा यह नहीं कहता की प्रकृति को मैंने बनाया। Nature has no signature. किन्तु मनुष्य जरूर यह कहता है कि, यह मैंने बनाया है, "Ya This is My" तो जहाँ यह My Ya लगता है, वही माया है, और मनुष्य बनाने के बाद Signature अवश्य करता है, जिससे मनुष्य यह दर्शाना चाहता है, कि यह मैंने बनाया है। अब अगर प्रकृति की तरफ मन लग रहा है, तो एक दिन परमात्मा में अवश्य मन लगेगा। और अगर माया की तरफ मन लग रहा है, तो मनुष्य स्वयं की चेतना से भी वंचित हो जाएगा। इसलिए साधु वन में प्रकृति के सान्निध्य में, चला जाता है कि एक न एक दिन, परमात्मा से मिलना हो ही जाएगा। जो माया में रह जाता है, वह स्वयं का भी अस्तित्व खो देता है, क्योंकि मनुष्य की बनाई वस्तु, कितनी ही कारगर हो, एक दिन समाप्त हो ही जाती है। परमात्मा की प्रकृति नित्य-निरन्तर बनती रहती है तथा सदा नवीन रहती है। माया से ही सभी को मोह होता है, यानि मायामोह। प्रकृति से मोह नहीं होता है, क्योंकि प्रकृति को मनुष्य My नहीं कह सकता है। परमात्मा फल बनाता है। यह प्रकृति है। मनुष्य जूस बनाता है। यह माया है। परमात्मा फल में बीज भी रखता है। उसी बीज से नया फल बनता है। मनुष्य फल का गूदा-गूदा खा लेता है। मनुष्य बीज को फेंक देता है। मनुष्य का शरीर भी इसी गूदे से बना है। परमात्मा बीज से नया फल बना देता है। किन्तु मनुष्य जूस और गूदे से नया फल नहीं बना सकता है। बस यही तो परमात्मा एवं प्रकृति और मनुष्य एवं माया है। परमात्मा मनुष्य के भीतर भी बीज बनाता है उसी बीज से नया मनुष्य बनाता है। यही प्रकृति का सतत् प्रवाह है। परमात्मा अपनी प्रकृति की रक्षा करता है। मनुष्य अपनी बनाई माया की रक्षा के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता रहता है। मनुष्य प्रकृति से प्राप्त संसाधनों से अपनी माया को निर्मित करता जाता है। माया का निर्माण करना सुख है। माया का टूट जाना दुःख है। आनंद तो केवल प्रकृति में है। इसलिए मनुष्य कुछ पल प्रकृति के साथ रहकर आनंद का अनुभव लेता है। जहाँ पर प्रकृति उपलब्ध नहीं है, वहाँ पर Meditation ही एकमात्र आनंद का स्तोत्र है। इसलिए Meditation करके आनंद का अनुभव प्राप्त करना चाहिए।

156. परमात्मा + अर्थ = पार्थ -

परमात्मा के अर्थ को जो पा जाए वही पार्थ है। यानि परमात्मा का ज्ञान जो प्राप्त कर ले वही पार्थ है।

157. परस्पर + रीति = Prosperity -

Prosperity तब आती है, जब परस्पर रीति हो। यानि एक-दूसरे का साथ देने की रीति ही, Prosperity है - जैसे पहली पंगत में परस दी जाती है, तो फिर पहली पंगत वाले दूसरी पंगत को परोसते हैं। यही परस्पर की रीत ही, Prosperity है।

158. पृथ्वी पर माथा टेकना -

योग का मतलब होता है जुड़ना। तो जब आपका माथा जमीन के गुरुत्वाकर्षण से जुड़ता है, वहाँ पर योग होता है। जी हाँ यह सही है कि, भारत में ईश्वर आत्म-साक्षात्कार का विषय है। जब आप अपने माथे से किसी के पैर छूते हैं, तब आप अपना माथा जमीन पर रख देते हैं, और आपकी की रीड़ की हड्डी का, नीचे का भाग ऊपर उठ जाता है और आपका पेट अन्दर की तरफ खिंचता है, जिससे

आपकी कुण्डलिनी जाग्रत होती है और सहस्रार की ओर जाती है। आपका माथा कुण्डलिनी शक्ति से भर जाता है और जैसे ही माथा पृथ्वी को छूता है, वैसे ही आपका संपर्क पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से हो जाता है। जिससे कुण्डलिनी शक्ति और गुरुत्वाकर्षण शक्ति में आदान-प्रदान होता है। दोनों जुड़कर एक हो जाते हैं और दोनों में संबंध स्थापित हो जाता है और समाधि की अनुभूति होती है। इसी को अद्वैत कहते हैं। इसका फायदा यह होता है कि, आपके शरीर, मन, आत्मा की सारी पीड़ा पृथ्वी में समा जाती है और पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से आपको नयी शक्ति मिलती है। आप में ताजगी आ जाती है। प्रफुल्लता आ जाती है। इसलिए यह पैर की पूजा करवाने का उपाय किया गया। God - जिनके पैरों की पूजा की जाती है। वही God होते हैं। भारत में अपने से बड़े लोगों को भगवान माना जाता है और उनके पैर पूजकर आशीर्वाद लिया जाता है। इसी को मत्था टेकना भी कहते हैं। भारत में पैर को कई जगह गोड़ कहा जाता है।

159. परमात्मा + अजित = पराजित - परमात्मा अजित है, यानि परमात्मा को जीत नहीं सकते।

160. पुरुष -

पुरा है जो ऊष्मा से वह पुरुष है। ऊष्मा से पूरे भरे हुए व्यक्ति को पुरुष कहा जाता है।

161. पा + गल = पागल –

या तो लोग पग लगते हैं, या गल लगते हैं। पग = पैर, चरण, गल = गले, यानी या तो लोग चरण छूते हैं, या गले लगते हैं। और फिर कुछ लोग आए जो हाथ मिलाते हैं। और हाथ जोड़ लेते हैं। कोई फिर माथा चूमते हैं, कोई हथेली के पिछले भाग को चूमते हैं।

162. पाँच + देवों की + उपासना = पंच देव उपासना –

प्रतिदिन Meditation में स्वयं को तपाया जाता है। स्वयं के ताप से शरीर, अंतःकरण को तपाकर, प्राण को बलवान बनाकर, आत्मा को परमात्मा से, एक्य कराया जाता है। यही पंचोपासना है। क्योंकि शरीर, अंतःकरण, प्राण, आत्मा, परमात्मा यही पंचदेव है।

163. पर + एश + On = परेशान -

एक ही औकात के दो व्यक्ति, जब कुछ सालों के बाद मिलते हैं, और उनमें से जब पहले की औकात बढ़ जाती है, और जब उससे दूसरा मिलता है, और पहले को ऐश की जिन्दगी जीते हुए देखता है, तो दूसरे की परेशानी On हो जाती है, और दूसरा परेशान हो जाता है।

164. पद + दय = पद्य -

पद को जो दे, वह पद्य होता है। अच्छे शब्दों के उपयोग से बने वाक्यों को स्तुति एवं प्रशंसा कहा जाता है। यह वाक्य रचना पद्यों में की जाती है। जिसे कविता कहते हैं। जिसे गाया जाता है। स्तुति एवं प्रशंसा के गीत गाकर लोगों को प्रसन्न किया जाता है और उनके हृदय में स्थान बना लिया जाता है। अच्छे शब्दों का जुड़ाव स्वतः ही स्तुति का गीत बन जाता है।

165. Psychic -

"साई" उस अवस्था का नाम है, जो मालिक बना देती है। जिसे "स्वामी" कहा जाता है, "शाह" कहा जाता है। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए, साधक को बहुत साधना करनी पड़ती है।

166. पंच + अ + मृत = पंचामृत -

भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश, यह पाँच हैं, जो कभी मृत नहीं होते हैं। इसलिए यह पाँच ही, पंचामृत हैं। पंच + अ + मृत = पंचामृत। इन पाँच अमृत को, मनुष्य प्राप्त करता रहता है।

167. परी + प्रणाम = परिणाम -

परी मिलेगी या प्रणाम मिलेगा। यही हर कोशिश का, परिणाम मिलेगा। परी + प्रणाम = परिणाम। ब्रह्मर्षि विश्वामित्र ने कोशिश की, उनको मेनका नाम की परी मिली। आज सारी दुनिया, ब्रह्मर्षि विश्वामित्र को, प्रणाम करती है। क्योंकि ब्रह्मर्षि विश्वामित्र की, तपस्या से, परिणाम के रूप में गायत्री मन्त्र मिला। मेनका रूपी परिणाम से, महाभारत का युद्ध हुआ। और, गायत्री मन्त्र के जप से, सभी लोगों को, ब्रह्म तत्त्व की अनुभूति हुई। इन्द्र के द्वारा, किसी की कोशिश को, रोकने के लिए सदा से ही, मेनका रूपी परी ईनाम में, भेजी जाती है। किन्तु कोशिश करनेवाला, फिर भी कोशिश करता है और गायत्री मन्त्र के रूप में, ऐसा ईनाम पाता है, जो सभी लोगों का, कल्याण करती है। फिर ब्रह्मर्षि विश्वामित्र ने नारियल भी बनाया, जिसके कारण यज्ञ में पशुबलि से छुटकारा हो गया और, पशुओं को भी जीवन जीने का अवसर मिल गया। तो कोशिश ऐसी की जाए, जिससे सभी का कल्याण हो।

168. पुष्ट + तक = पुस्तक -

शुक्र है, किताबों की दुनिया, वापस आ रही है। किताबों पर किताबें, छप रही हैं। मौखिक झूठ बोला, जा सकता है, किंतु किताबों में, सत्य ही लिखा जाता है, तभी तो लिखे को, प्रमाण माना जाता है, बोले को प्रमाण, नहीं माना जाता है। किताबों को पढ़ने के लिए, शिक्षित होना पड़ता है, इसलिए, किताबों को लिखने से, समाज शिक्षित भी होता है, क्योंकि किताब जो, पढ़ना होता है। इसलिए जो, तथ्य और सत्य दोनों को, पुष्ट करें, वह पुस्तक होती है। पुष्ट + तक = पुस्तक - पुस्तक ही किसी, घटना के पुष्ट होने का, प्रमाण होती है। भविष्य में पुस्तक को, पढ़कर ही, भूतकाल में हुई, घटना को लोग, सत्य मानते हैं, इसलिए पुस्तक लिखनी चाहिए, पुस्तक पढ़नी चाहिए, पुस्तक पढ़ने पर, व्यक्ति को बहुत सारा, ज्ञान होता है, जानकारी प्राप्त होती है, किताबें सदा से ही, अदब को आगे, बढ़ाती रही हैं।

169. परम + Mission = Permission -

परम के Mission पर, जो होता है, उसे परम की, Permission होती है। परम + Mission = Permission. परम = परमात्मा।

170. पैदा = पयादा -

"पैदा" तो सभी, पयादा के रूप में, होते हैं। किंतु, जिन्दगी की शतरंज में, निखर-निखर कर, बादशाह बन जाते हैं।

171. Palestine = पहला स्थान -

पहला स्थान ही, Palestine है। Palestine दुनिया का, पहला स्थान है, जहाँ पर सबसे पहले, सभ्यता उत्पन्न हुई।

172. परी + चयन = परिचय -

परी के द्वारा, जब किसी का, चयन किया जाता है। तब परी के समक्ष, उसके बारे में, जो वर्णन किया जाता है, उसे ही परिचय, कहा जाता है।

173. प्रकाश + Shit = प्रकाशित -

Shit से बचना है, तो प्रकाश करते हुए चलिए। पहले समय में, Shit करने के लिए, खेत, जंगल में, Open जमीन पर, जाते थे। जब रात में, बाहर जाते थे, तब प्रकाश लेकर, जाते थे। जिससे Shit पर, प्रकाश पड़ते ही, Shit प्रकाशित हो जाती है। इसी प्रकाश में, व्यक्ति मार्ग पर चलता था। अंग्रेजों ने जब, Road बनाई तब, लोग Road के, किनारे बैठकर, Shit करने लगे। इसीलिए अंग्रेजों ने, Road के किनारे, Street Light की व्यवस्था की। ताकि Street Light के, प्रकाश में Shit से बचकर, Road पर चला जाए। और, प्रकाश में कोई, Shit न करे। क्योंकि लोग अंधेरे में, Shit कर देते थे। लोग पानी का, उपयोग करते थे, तो अंग्रेजों ने, Road किनारे पौधे, लगा दिए। जिससे उपयोग, किया गया पानी, बेकार न जाए, और, पेड़ों के काम आ जाए। इसीलिए Torch का, भी उपयोग किया जाता था, कि, जंगल में चलते समय, Shit से बचकर चल सकें।

174. प्राण + जल = प्रांजल -

प्राण जल में होते हैं, जिसे प्रांजल कहते हैं। इसलिए जब संकल्प लेते हैं, तब हथेली में, जल लेते हैं। इसका भावार्थ यह है कि, इस संकल्प को, पूर्ण करने में पूरे प्राण, लगा दूँगा। क्योंकि प्राण दिखते नहीं, और, जल से ही प्राण बनते हैं। जल ही प्राण का, दिखनेवाला रूप है। जल से स्वच्छता भी होती है। प्राण भी जब, प्राणायाम बन जाता है, तब प्राण से भी, स्वच्छता होती है।

175. पीड़ा + मिट = पिरामिड -

पीड़ा को मिटाने के लिए पिरामिड होते हैं। मिश्र के पिरामिड, पीड़ा को मिटाने के लिए, बनाए गए थे। जो आपकी पीड़ को समझे, वह पीर बाबा होते हैं। पीर बाबा, दूसरों की पीड़ को, अपने ऊपर ले लेते हैं। जिससे दूसरों की पीड़ा दूर हो जाती है।

176. Pride + Village = Privilege -

जो Pride करते हैं, अपने Village पर, उन, Village वालों को, Privilege दिया जाता है। Pride + Village = Privilege. जिनके पास Villa होता है, जिनकी Age अधिक होती है, उसे ही, Village कहते हैं। Villa + Age = Village. प्रत्येक Village में, लोग Villa में रहते हैं, और, Age वाले होते हैं। यह लोग ही अपने, Villa एवं Age पर, Pride करते हैं। इसीलिए उन्हें गर्वीला, कहा जाता है, क्योंकि वह लोग, गर्व करते हैं Villa पर, यानी, उन्हें अपने Villa पर, गर्व होता है। गर्व + Villa = गर्वीला।

177. Press + ताव = प्रस्ताव -

आप तभी Press कर सकते हैं, जब उसमें ताव हो। Press + ताव = प्रस्ताव। जिसे कहते हैं कि, "लोहा गर्म है, मार दो हथोड़ा।"

178. पाप + खन्न + डर = पाखण्ड -

पाप के खन्न होने का डर, पाखण्ड कहलाता है। पाप + खन्न + डर = पाखण्ड। इसीलिए पाप को

निरन्तरता, प्रदान करने के लिए, जो कार्य किया जाता है, वह पाखण्ड कहलाता है। पाप अंधेरे में किया जाता है। जब व्यक्ति अंधेरे में से गुजरता है, अगर तब उस व्यक्ति को, खन्न की आवाज आती है, तब वह व्यक्ति डर जाता है। खन्न + डर = खण्ड। उस खन्न की आवाज से, उसका अंधेरे में से गुजरना, रुक जाता है। इस रुक जाने को ही, खण्ड हो जाना कहते हैं। यानि उस व्यक्ति का जाना, खण्डित हो गया। इसीलिए जो कार्य, खण्डित हुए बिना, किये जाते हैं, वह कार्य पाखण्ड कहलाते हैं।

179. Press + फूट + टन = प्रस्फुटन -

Press करते हैं, तो वस्तु फूट जाती है, उसमें से टन की, आवाज़ आती है। यही प्रस्फुटन कहलाता है। Press + फूट + टन = प्रस्फुटन। अक्सर लोग Foot से ही, Press करते हैं। हमेशा लोग अपने, पैर के पंजे से, दबाव डालकर किसी भी, वस्तु का अंदाज लगाते हैं। और, आदमी अपने Foot से, किसी के तन को Press करता है। Press + Foot + तन = प्रस्फुटन। और जमीन में दबा हुआ बीज, जब जमीन के दबाव से, फूटता है, तब उस बीज से अन्न, उत्पन्न होता है। Press + फुट + अन्न = प्रस्फुटन। जहाँ बीज बोया गया है, और जहाँ से, बीज फूटकर ऊपर आ गया है, उस जगह पर किसान, अपना Foot नहीं रखता है।

180. Pub + इत्र = पवित्र -

लोग Pub में जाते हैं, इत्र लगाते हैं। पवित्र कहलाते हैं। Pub + इत्र = पवित्र।

181. पीढ़ी + Overy + Discharge = Period -

पीढ़ी पर बैठो, जब Overy से Discharge होता है, इसे ही Period कहते हैं। पीढ़ी + Overy + Discharge = Period. पुराने जमाने में Period आने पर, पीढ़ी पर बिठाया जाता है। पीढ़ी के नीचे, एक बर्तन रख दिया जाता है, उस बर्तन में, रक्त का स्राव एकत्रित होता जाता है। इस एकत्रित रक्त स्राव को, सुखा लिया जाता है। और अगली माहवारी तक, सिर में बालों की, माँग में लगाया जाता है। एवं माथे पर बिंदी के, रूप में लगाया जाता है तथा पुरुष के द्वारा माथे पर बिंदु के रूप में, लगाया जाता है। जिससे दोनों स्त्री-पुरुष में लगाव बना रहता है। क्योंकि मासिक धर्म का, रक्त-स्राव अपने अन्दर बहुत से, गुण भरकर रखता है। रक्त-स्राव में आपस में, आकर्षण होता है। इसीलिए जिस स्त्री का, रक्त-स्राव जिस पुरुष को, लगाया जाता है, वह पुरुष जीवनभर, उस स्त्री के आकर्षण में, रहता है। कभी भी बेवफाई नहीं करता है। पीढ़ी पर बैठने पर, उस माहवारी के बाद, गर्भवती होने पर, तभी पूछा जाता है कि, "कौन-सी पीढ़ी के हो" ? रात के समय चारपाई पर, सुलाया जाता है। चारपाई के नीचे भी बर्तन, रख दिया जाता है। उस बर्तन में रक्त स्राव, एकत्रित होता रहता है। चारपाई पर केवल Period वाली, स्त्री सोती है। अन्य कोई भी व्यक्ति, चारपाई पर नहीं सोता है। केवल 5 दिन Period के समय, चारपाई को बिछाया जाता है। बाकी दिन खड़ा कर दिया जाता है।

स्त्री के मासिक धर्म का रक्त स्राव, पृथ्वी के ज्वालामुखी से, निकलने वाले लावे के समान होता है। लावा के समान ही, उस माहवारी के रक्त-स्राव में, बहुत से खनिज-तत्त्व होते हैं। स्त्री के बरते हुए तन से, निकलता हैं, इसीलिए बर्तन में एकत्रित, करते हैं। बर + तन = बर्तन। बर = जलन। माहवारी के समय स्त्री का तन, ज्वालामुखी की तरह, जलता है।

Period के पहले दिन का, रक्त स्राव पैरों के, पंजो तक जाता है, जिसे माहहौर या माहौर कहते हैं। इससे पता चलता है कि, माहवारी शुरू हो गई है। प्रत्येक माहवारी 5 दिन की होती है। जो कि प्रत्येक 23 दिन के बाद आती है। इसीलिए 1 वर्ष में 13 माहवारी होती हैं। इसी से 1 वर्ष में 13 महिने होते हैं। प्रत्येक महीना 28 दिन का होता है।

माहवारी के समय, माहवारी स्त्री की जो, स्त्री सेवा करती है। उसे महारिन कहते हैं। महारिन ही माहवारी स्त्री के लिए भोजन पकाती है। महारिन ही माहवारी स्त्री के वस्त्र धोती है। महानिर ही माहवारी स्त्री के साथ बतियाती है। प्रत्येक महीने के 5 दिन, वह महारिन उस माहवारी स्त्री के साथ होती है। इसीलिए उस महारिन स्त्री को पंच कहते हैं और उस महारिन स्त्री के पति को सिरपंच या सरपंच कहते हैं। क्योंकि वह महार पुरुष अपने सिर पर 5 दिन के लिए पगड़ी बाँधकर, रहता है। जिससे पता चलता है कि, वह महारिन पंच का सिरपंच है।

माहवारी के समय अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग तरह की व्यवस्थाएँ हैं। किंतु लगभग समान ही हैं। जैसे की एक राज्य में, माहवारी स्त्रियों के लिए, व्यवस्था करनी है तो, राज्य के सभी व्यक्ति, धन एकत्रित करके, एक स्थान बनाते हैं, जिसे महल कहते हैं। माहवारी का + हल = महल। जहाँ पर रजस्वला स्त्री को, रखा जाता है। इसीलिए उसे राजमहल कहते हैं। रज + महल = राजमहल। राजमहल में रजस्वला, स्त्रियों को रखा जाता था। इस राजमहल की जो व्यवस्था संभालता था। उसे राजन् या राजा कहते थे। यह राजन् ही रजस्वला स्त्रियों के लिए अन्न की व्यवस्था करता था। राज + अन्न = राजन्। यह राजा, नपुंसकलिंग का व्यक्ति होता था। जिसमें बूढ़ी-पुरानी औरतें, उसकी सहायता करती थीं। इस राजमहल में जाने के लिए, एक रजपथ होता था। जिसे राजपथ कहा जाता था। उस राजपथ पर केवल, रजस्वला स्त्रियाँ ही चलती थीं। जिनके रज गिरने से, उस पथ की मिट्टी, रक्त के समान लाल रंग, की दिखाई देती थी। इसीलिए उसे रक्तरंजित पथ, कहा जाता था। जिसे आजकल, Red Carpet का नाम दिया जाता है, रजपथ = राजपथ।

कस्बों में मासिक-धर्म के लिए, जो व्यवस्था थी। वह धर्मशाला कहलाती थी। इस धर्मशाला में, मासिक-धर्म की स्त्रियों को, रखा जाता था। इसके लिए सभी लोगों से, दान लिया जाता था। जिसे दान-धर्म कहा जाता था। इस दान का उपयोग, धर्मशाला में रह रही, मासिक धर्म निभा रही, स्त्रियों के लिए व्यय किया जाता था। धर्मशाला की व्यवस्था भी, नपुंसकलिंग के लोग संभालते थे। जिसमें बूढ़ी-पुरानी औरतें, उसकी सहायता करती थीं। धर्मशाला एवं राजमहल में, किस स्त्री का कौन-सा, Period चल रहा है। इसका पूरा लेखा-जोखा, रखा जाता था। और वहाँ पर रह रही, स्त्रियों को समय बिताने के लिए, शिक्षा प्रदान की जाती थी। इसीलिए आजकल, School में भी Period होते हैं। क्योंकि पुरुष तो, गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने के लिए, चला जाता था। गुरुकुल में पाठ चलते हैं, Period नहीं चलते हैं।

भग से निकले लावा से, वस्त्र को रंग लिया जाता है, उस वस्त्र को भगवा कहा जाता है। भग + लावा = भगवा। भग = योनी। लावा = रक्त स्राव। योनी से निकले, रक्त स्राव में वस्त्र को, रंग लेना ही भगवा रंग है। गांव के लोग इसी प्रकार, कपड़े को भगवे रंग में रंगकर, पाँच दिनों के लिए, घर से बाहर निकल

जाते थे। दूसरों के घरों में माँगकर, खाते थे। घर के बाहर ही सोते थे। फिर पाँच दिन के बाद, घर पर आ जाते थे। बाद में कालान्तर में, इन भगवाधारी लोगों के लिए भी, रहने का बसेरा बना दिया गया। जहाँ यह लोग रहते थे। रहने का बसेरा = रैन बसेरा।

गांव में इसी की व्यवस्था करने के लिए, पंचायत होती है। जो पांच दिनों के लिए, गांव की स्त्रियों के लिए, व्यवस्था करती है। इसीलिए इसके व्यवस्थापकों को पंच बोला जाता है। जो संख्या में पांच होते हैं और पांच वर्ष के लिए चुने जाते थे। पूर्वकाल में प्रत्येक गांव में, रजस्वला स्त्रियों के रहने के लिए, एक स्थान होता था। जिसमें केवल रजस्वला स्त्रियों को ही, रहने का अधिकार था। पुरुष उस स्थान से दूर ही रहते थे।

यह Hotel में Room वाली, व्यवस्था भी, माहवारी स्त्री के लिए है। माह + Room = महरूम। जब स्त्री माहवारी में होती है, तब उसके लिए एक, अलग कमरे की व्यवस्था की जाती है। जहाँ पर माहवारी स्त्री के लिए, कमरे के अन्दर ही, Toilet आदि की सुविधा, उसके कपड़े धुलने की सुविधा, उसके लिए भोजन की, Room Service की व्यवस्था। यानी जो भी व्यवस्थाएँ, Hotel के Room में होती हैं, वह सारी व्यवस्थाएँ, उस माहवारी स्त्री को, प्रदान की जाती है। उन सब सेवाओं के बदले, उस माहवारी स्त्री से Room का, Rent लिया जाता है। इस तरह से यह, Hotel में Room वाली व्यवस्था, माहवारी स्त्री के लिए थी।

रजस्वला होने के कारण, रज का स्वयं का Law लग जाता था। यानी स्त्री रज के Law के, अनुसार रहती थी। रज + स्व + Law = रजस्वला।

राजा की सरकार की तरफ से, माहवारी स्त्री को प्रत्येक महीने, कुछ आर्थिक सहायता, राजा की सरकार की तरफ से, मिलती थी। जिसे माहवार या महीना कहते थे। जिस वार यानी दिन से, उस स्त्री को माहवारी होती थी। उन सब स्त्रियों का पूरा Record, राजा की सरकार के पास, होता था। क्योंकि राजा इसी कार्य के लिए, राजस्व इकट्ठा करता था। रज + स्व = राजस्व। यह राजस्व, रजस्वला स्त्रियों की व्यव्सथा में, व्यय होता था। राजा अपने लिए इसमें से, कुछ भी नहीं व्यय करता था। जो राजा राजस्व की कमाई, अपने लिए व्यय करता था। उस राजा को लोग बोलते थे, कि, "यह औरतों की कमाई खाता है"। किंतु कालान्तर में, राजा लोगों ने इसी राजस्व से, अपने लिए Luxurious व्यवस्थाएँ की, जिसे "राजसी ठाट-बाट" कहा गया। जबकि यह सारा राजस्व का धन, रजस्वला स्त्रियों के लिए, सुविधाएँ जुटाने के लिए, जनता द्वारा राजा को दिया गया था। क्योंकि पहले नपुंसकलिंग वाले लोग, राजमहल का सारा इन्तजाम, देखते थे। किंतु जब पुरुष लोगों ने, वहाँ पर अपर्याप्त धन देखा तो, राजमहल की सारी व्यवस्था, अपने हाथ में ले ली। फिर यहीं से, उस राजमहल की व्यवस्था को, प्राप्त करने की, राजनीति चलने लगी। और रजस्वला स्त्रियों की, स्थिति दिन पर दिन, बद से बदतर होती गयी। फिर इसी राजगद्दी की, प्राप्ति के लिए, युद्ध, लड़ाईयाँ, षडयन्त्र, न जाने क्या-क्या हुआ। राजगद्दी यानी Sanitary Pad. यह Sanitary Pad एक, छोटे से गद्दे के समान होता है। और रजस्वला स्त्री के द्वारा, पहना जाता है। तो बस इसे ही राजगद्दी कहा गया। रज + गद्दी = राजगद्दी। रुई से बने जिसे गद्दी में, रज का स्व इकट्ठा होता है, उसे राजगद्दी कहते हैं।

मासिक-धर्म वाली स्त्री को ही, रजस्वला स्त्री कहते हैं। रजस्वला से ही राज शब्द बना है, राज में नीति जुड़ने पर, राजनीति शब्द बना है। इसी से मासिक-धर्म से धर्म, रजस्वला से राजनीति, तो यह दोनों धर्म एवं राजनीति, यहाँ पर ऐसे जुड़े हैं। जो कभी अलग नहीं, हो सकते हैं। क्योंकि मासिक-धर्म का, पाँच दिन का कष्टकारी समय, स्त्री के लिए काटना बहुत कठिन था। तो इन पाँच दिनों को काटने के लिए। यानी समय व्यतीत करने के लिए, जो व्यवस्था की गई, वह व्यवस्था "धर्म" कहलाई। उसका स्थान "धर्मशाला" कहलाया।

यानी राजमहल बनाए गए, Hotel बनाए गये, इनमें रजस्वला स्त्री के लिए, अच्छी से अच्छी सुविधा उपलब्ध कराई गई, जिससे बदले में स्त्री से, कुछ भी नहीं लिया गया। इसे ही धर्म का कर्म माना गया।

एक बात की सावधानी रखनी है, कि एकत्रित किया गया रक्त स्राव, किसी भी प्रकार से, किसी भी तांत्रिक क्रिया करनेवाले तांत्रिक के हाथ में नहीं लगना चाहिए। तांत्रिक क्रियाओं में, स्त्री के मासिक रक्त स्राव का, बहुत महत्त्व है एवं, बहुत उपयोग होता है। इसी मासिक रक्त स्राव को, प्राप्त करने के लिए, सारे तांत्रिक कामाख्या मंदिर में, जाते हैं। तान्त्रिक अपने साथ कुत्ते रखते हैं। यह कुत्ते सूँघकर बता देते हैं कि, इस घर में यह स्त्री, मासिक-धर्म से है। वह तान्त्रिक उस स्त्री से रक्त-स्राव खरीद लेते हैं। इसीलिए आजकल Sanitary Pad की जगह, Menstrual Cone का, उपयोग किया जा रहा है। इस Menstrual Cone में, रक्त-स्राव इकट्ठा कर, तान्त्रिक को बेच दिया जाता है। तान्त्रिक इस रक्त-स्राव का उपयोग, बड़े-बड़े लोगों के लिए, तान्त्रिक क्रियाओं को, करने के लिए करते हैं। क्योंकि मासिक-धर्म का, रक्त-स्राव ही असली कुमकुम एवं सिंदूर है।

जो स्त्री अपनी रजस्वला से एकत्रित किए गए रक्त को सुखाकर सिंदूर को अपनी माँग में लगाती है और जो पुरुष उसी स्त्री के रजस्वला से एकत्रित किए गए रक्त को सुखाखर कुमकुम के रूप में लगाता है, वह दोनों में प्रेम एवं लगाव बना रहता है। एक दूसरे के प्रति आकर्षण जीवन भर रहता है। इसीलिए जिस स्त्री को मासिक-धर्म की पीड़ा होती है, उस पीढ़ा को सहने के लिए, उस स्त्री को राजमहलों जैसी, सुविधा Free में उपलब्ध करवाई जाती है। क्योंकि राजस्व ही, रज के लिए लिया जाता है।

Period के पहले दिन का रक्त स्राव पैरों के पंजो तक जाता है, जिसे माहहौर या माहौर कहते हैं। इससे पता चल जाता है कि, माहवारी शुरू हो गई है।

प्रत्येक माहवारी 5 दिन की होती है, जो प्रत्येक 23 दिन के बाद आती है। इसीलिए 1 वर्ष में 13 माहवारी होती हैं, इसी से 1 वर्ष में 13 महिने होते हैं, प्रत्येक महीना 28 दिन का होता है। पहले के समय में, 13 महिने का 1 वर्ष होता था। माहवारी होने के कारण, उन 28 दिनों को महीना या माह बोला जाता है। इसीलिए प्रत्येक स्त्री का अपना एक अलग Calendar होता है, जिसे Mensuration Calendar कहते हैं। पहले जमाने में Mensuration Calendar से ही, सभी कार्य होते थे। Mensuration यानी माप। इसी Mensuration Calendar में सभी स्त्रियाँ अपने Mensuration Period का माप लिखकर रखती थीं। Men सुरा एवं Ration इसी Mensuration Calendar के अनुसार लेकर आता था। Men + सुरा + Ration =

Mensuration. और जब स्त्री Mensuration Period में आती थी तो उन पाँच दिनों में फिर पुरुष ही सुरा एवं Ration बनाता था। सुरापान से स्त्री को Period की पीड़ा का अहसास कम हो जाता था, और पाँच दिनों तक पुरुष के द्वारा बनाया गया भोजन प्राप्त होता था। यह Mensuration Calendar पुरुषों के Calendar से भिन्न होता है। सभी पुरुषों का एक ही Calendar होता है। गुजरात में आज भी अवकाश लेने के लिए, वहां पर 'रजा' शब्द का प्रयोग किया जाता है। क्योंकि जब स्त्री रजस्वला होती है, तब वह कोई कार्य नहीं करती है। इस कार्य से अवकाश लेने को ही, 'रजा' कहते हैं। पूर्वकाल में विश्व के कयी देशों में स्त्रियों के रजस्वला होने पर, Office से पांच दिन के लिए, Mensuration Leave With Pay के दिया जाता है। यानी उन पांच दिनों का भी Pay दिया जाता था। इन पांच दिन के लिए विश्व में बहुत प्रकार के महोत्सव हैं। जैसे Olympic Games के चिन्ह में 5 चक्र है। क्योंकि 5 दिन कैसे बिताएं, इस पर विश्वभर में, तरह-तरह के खेल हैं।
इसीलिए जिस स्त्री को, मासिक-धर्म की पीड़ा होती है। उस स्त्री को, पीढ़ी पर बिठाया जाता है। क्योंकि उसी पीढ़ी से, परिवार की आगे की, पीढियाँ चलती हैं।

182. पुरखों + उजियारा = पूजा -

"अरे ! जा जरा पुरखों के, यहाँ उजियारा कर आ"। पुरखों + उजियारा = पूजा। पुरखों की समाधि पर जाकर, दीपक जलाकर, उजियारा करने को, पूजा करना कहते हैं।
पुरखों + उजियारी = पुजारी - "आज कौन पुरखों के यहाँ, उजियारी करने गया था" ? पुजारी जो व्यक्ति पुरखों की समाधि पर जाकर दीपक जलाकर उजियारी करता है, उसे पुजारी कहते हैं। इसीलिए पूजा में पुजारी के द्वारा, सबसे पहले दीपक को जलाकर, उजियारा करना होता है। अब दीपक का उजियारा, होने के बाद, तब उन पुरखों के बारे में, बातें भी होती हैं। जिसे दादी-नानी की कहानियाँ कहते हैं। इस तरह से, दिन में किसी प्रकार का, उजियारा नहीं होता था। संझा प्रारंभ होने पर, दीपक को जलाकर उजियारा, कर दिया जाता था। इसे ही बाद में, पूजा करना और, इसे करनेवाले को, पुजारी नाम से, पुकारा जाने लगा।

183. Pub + Liquor = Public -

लोग Pub में जाते हैं, Liquor पीते हैं। Public कहलाते हैं। Pub + Liquor = Public.

184. पाया + था + गोरस = पायथागोरस –

पाया था जिसने गोरस पीकर उसे कहते हैं पायथागोरस। पायथागोरस जब मिश्र के विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने गए, तब प्रवेश परीक्षा में पायथागोरस को 40 दिन तक केवल गोरस पीने को दिया गया। 40 दिन तक गोरस पीने से पायथागोरस का मन पूर्णतः बदल गया और पायथागोरस को प्रवेश मिल गया। पायथागोरस को गोरस इतना पंसद आया, कि उन्होंने गोरस ही लेना जारी रखा, जिससे लोगों ने उनके नाम के आगे, गोरस उपनाम लगा दिया। गो + रस = गोरस = गाय के दूध में हल्दी और गुड़ डालकर उसे उबालकर गुनगुना कर पीना। गो = गाय।

185. पथ + होश = Pathos –

पथ पर चलने के लिए होश में रहना चाहिए। रास्ता हमेशा होशले से पूरा हो जाता है। जब कोई रास्ते

में चलते हुए गिर जाता है। तब रास्ते के किनारे बैठे हुए लोग कहते हैं, "अरे ! थोड़ा होश लेके चल"। होश + ला = होशला।

186. पाया + था + गोरस = पायथागोरस -

पाया था जिसने गोरस पीकर उसे कहते हैं पायथागोरस। पाया + था + गोरस = पायथागोरस। पायथागोरस जब मिश्र के विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने गए, तब प्रवेश परीक्षा में पायथागोरस को 40 दिन तक केवल गोरस पीने को दिया गया। 40 दिन तक गोरस पीने से पायथागोरस का मन पूर्णतः बदल गया, और पायथागोरस को मिश्र के विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल गया। पायथागोरस को गोरस इतना पंसद आया, कि उन्होंने गोरस ही लेना जारी रखा, जिससे लोगों ने उनके नाम के आगे, गोरस उपनाम लगा दिया। गो + रस = गोरस = गाय के दूध में हल्दी और गुड़ डालकर उसे उबालकर गुनगुना कर पीना। गो = गाय।

187. प्रेय + रण = प्रेरणा -

किसी प्रेय वस्तु को प्राप्त करने के लिए, रण हो ही जाता है। प्रेय + रण = प्रेरणा। तभी तो लोग कहते हैं, "तुझे ! नहीं पता, मुझे इसको पाने के लिए, किस-किस से रण लेना पड़ा"। लोग यह भी कहते हैं, "अपनी प्रिय वस्तु को प्राप्त करने के लिए, उसने बहुत से युद्ध लड़े हैं"। इस तरह की बातें करके, लोग एक-दूसरे से प्रेरणा लेते हैं। फिर कहते हैं, "मेरे लिए Pray करना। मैं अपनी प्रिय वस्तु को प्राप्त करने के लिए, रण में जा रहा हूँ"। Pray + रण = प्रेरणा। रण में जाने से पहले, सभी लोग जीतने की कामना के लिए, Pray करते हैं।

188. पीड़ी -

पीढ़ियाँ गुजर गईं, इन पीड़ों पर बैठ-बैठकर। जब भी पीड़ा हो, तब पीड़ी पर बैठ जाओ। देखो पीड़ा कैसे छूमन्तर हो जाती है। इसी पीड़ी पर बैठकर तो सभी अपनी पीड़ा सुनाते थे। सुननेवाले भी पीड़ी पर बैठकर हुँ हुँ कहकर हुँका भराते थे।

189. प्रति + Cool = प्रतिकूल -

जब आपकी कोई प्रति बनता है, तब आपको Cool रहना चाहिए। प्रति + Cool = प्रतिकूल। यानी जब कोई आपकी नकल उतारता है, तब आपको Cool रहना चाहिए। नकल हमेशा व्यक्ति के स्वभाव के उलट उतारी जाती है। जैसे कि व्यक्ति का स्वभाव गंभीर है, तो नकल उतारनेवाला उसको मजाकिया दिखाएगा।

190. पर + अर्थ + ना = प्रार्थना -

व्यक्ति तब ही परमात्मा से प्रार्थना करता है, जब व्यक्ति के पास, अर्थ नहीं रहता है। पर + अर्थ + ना = प्रार्थना। पर = परमात्मा। अर्थ = धन। क्योंकि व्यक्ति के पास, जब तक अर्थ रहता है, तब तक व्यक्ति, अपने आपको ही परमात्मा, मान लेता है। या जिनके पास धन होता है, उनको परमात्मा मान लिया जाता है। या धनवान लोग यह प्रदर्शित करते हैं, कि धनवान को ही परमात्मा मानो, धनवान को परमात्मा मानकर, धनवान की स्तुति करो, तब वह धनवान अपनी प्रशंसा, करनेवाले को धन देगा। और मेहनत से कार्य करनेवाले का मजाक उड़ाता है। इसीलिए लोग धन की प्राप्ति में लगे रहते

हैं और धनवान की स्तुति में कसीदे करते रहते हैं।

191. Public + City = Publicity -

City की Public के लिए Publicity की जाती है। Public + City = Publicity. City में Public आपको तभी जानती है, जब आप Publicity करते हैं। इसीलिए City में अपने आपको, Public में जनाने के लिए, Publicity करते रहिए।

192. परी + कल्पना = परिकल्पना -

सभी यह कल्पना करते हैं कि, उन्हें परी मिल जाए। परी + कल्पना = परिकल्पना। सभी की कल्पना में कोई न कोई परी होती ही है। किन्तु वह परी उसको मिलती है, या नहीं मिलती है। यह उसके भाग पर निर्भर करता है।

193. Pray + Me = प्रेमी -

जब आप Pray करते हुए कहते हैं, कि, "यह मुझे मिल जाए"। तब उसे प्रेमी कहते हैं। Pray + Me = प्रेमी। जिसे आप प्रेम करते हैं, उसी के लिए आप, Pray करते हैं। इसीलिए लोग प्रेम करते हैं, जिससे लोग उनके लिए, Pray करें। लोग कहते हैं कि, "Pray for Me".

194. Party + See + पेट = Participate -

Party में Participate करते हुए, अपना पेट See करना चाहिए। Party + See + पेट = Participate. Party में खाना-पीना, कुछ ज्यादा ही हो जाता है। इसीलिए Party में Participate करते हुए, अपने पेट को देखते रहना चाहिए। किन्तु लोग दूसरे की Plate देखते हैं, कि "यह क्या-क्या खा रहा है" ? "कितना-कितना खा रहा है" ? फिर Party के बाद उसके बारे में, बातें करते हैं कि, "अरे ! मैंने उसे देखा था, उस दिन किसी की Party में, उसकी Plate में तो Chicken था, और अब यहां मना कर रहा है कि, मैं Non-Veg नहीं खाता"। फिर कहता है, "उस दिन तो भकर-भकर, प्याज के पकौड़े, लहसुन की चटनी के साथ खा रहा था, आज कह रहा है, कि मैं प्याज-लहसुन नहीं खाता, बड़ा अजीब आदमी है"।

195. पाई + मान = पैमाना -

पाई से ही, किसी का मान, क्यों तय किया जाता है। "कि वह पाई-पाई को मोहताज हो गया"। चारपाई के एक पाए को, पाई कहते हैं। चारपाई के दो पाए को, दोपाई क्यों नहीं कहते हैं ? जबकि पाई के चिन्ह में, दो पाए दिखाएं गये हैं। π यह पाई का चिन्ह है।

196. Palm + पर = Pamper -

Palm पर रखकर Pamper, किया जाता है। Palm + पर = Pamper. हथेली पर रखकर, जब किसी को प्यार किया जाता है, तब उसे Pamper कहते हैं। और लोग अपनी हथेलियों को, पंख बनाकर हवा में लहराते हैं।

197. Pray + Sad = प्रसाद -

आप मेरे लिए Pray करो, मैं बहुत Sad हूँ। Pray + Sad = प्रसाद। जब कोई किसी को, प्रसाद देता है, तब वह कहता है, "मेरे लिए Pray करना, मैं बहुत ही Sad हूँ"। दरअसल प्रसाद ही, दूसरे का

दुःख होता है। पर + Sad = प्रसाद। जब व्यक्ति अपना दुःख बाँटता है, तो वह दूसरे को प्रसाद बाँटता है। क्योंकि उसको कहा जाता है कि, "अपना दुःख बाँट दो, तुम्हारा दुःख कम हो जायेगा"। आप कितनी ही, कोई भी शिक्षा पढ़ लें, किन्तु, जब तक आप, साहित्य को नहीं पढ़ते हैं, तब तक आप, पढ़े लिखे नहीं कहलाते हैं। अदब ही आपको अदब सिखाता है और बिना अदब को पढ़े, आप अनपढ़ ही कहलाएंगे। इसलिए कम से कम ज़िन्दगी में, अदब को जरूर पढ़ें।

198. Pay + Saw = पैसा -

जिसे आप Pay करते हो, यह देखकर, "कि कितना Pay करना है, उसे पैसा कहते हैं। Pay + Saw = पैसा। पहले Saw किया जाता है, फिर Pay किया जाता है।

199. प्रति + बंद = प्रतिबंध -

प्रति न कर सके कोई, इसलिए पुरुष को बंध, एवं स्त्री को बंध्या कर दिया जाता है। उसे प्रतिबंध कहते हैं। प्रति + बंद = प्रतिबंध। यानी इसके जैसे दूसरा न पैदा हो जाए, इसलिए प्रतिबंध लगा दिया जाता है। इसका ऐसा भी अर्थ है कि, इसकी कोई प्रति (Copy) न करे, इसलिए Copy नहीं करने पर, प्रतिबंध लगा दिया जाता है। अगर कोई उसकी Copy करता है तो, वह मजाक हो जाता है, और जब किसी का मज़ाक करना होता है। तब उसकी नकल उतारी जाती है। इससे उसका महत्त्व कम हो जाता है, जैसे - चार्ली चैपलिन ने हिटलर की, नकल करके, हिटलर का मज़ाक उड़ाया और हिटलर को सबने हल्के में लिया।

200. परीक्षा + परिणाम = परिणाम -

परीक्षा का ईणाम ही परिणाम होता है। ईणाम = ईनाम। आपने परीक्षा दी, उस दी गई परीक्षा का, आपको क्या ईनाम मिला ? यही परिणाम है।

201. Public + Sing = Publishing -

Public के द्वारा Sing करने पर, Book को Published मान लिया जाता है। Public + Sing = Publishing. पहले जमाने में पुस्तक को पद्य में लिखा जाता था। पुस्तक में लिखे इन पद्यों को, जब जनता गाने लग जाती थी। तब समझा जाता था, कि पुस्तक Published हो गई है। Public + Shed = Published. Public के Shed में पुस्तक पहुंच गई है। इसलिए पहले लोग पुस्तक को, पद्य में लिखते थे, ताकि वह पुस्तक लोग गाने लगे।

202. प्रभा + वित्त = प्रभावित -

प्रभा एवं वित्त ही प्रभावित करते हैं। स्त्रियों के चेहरे की प्रभा से, और पुरुष के पास स्थित वित्त से, लोग प्रभावित हो ही जाते हैं।

203. परि + यत्न = पर्यटन -

परि बड़े यत्न से मिलती है। परि + यत्न = पर्यटन। पहले परि को प्राप्त करने के लिए, स्वयंवर होते थे। जिसमें बड़े यत्न करने पड़ते थे। तब जाकर किसी एक को, परि मिलती थी। परि से विवाह करने के उपरांत, जब परि को लेकर, वर अपने घर जाता था, तो पर्यटन करते हुए जाता था। तब दोनों को पर्यटक कहा जाता था। दोनों ही मार्ग के स्थानों को, तकते हुए जाते थे। परि + यह + तक = पर्यटक।

वर के द्वारा परि को मार्ग में, यह कहते हुए सुना जाता था। "परि यह तक, परि यह देखो"। घर पहुंचते पहुंचते, परि और वर दोनों ही के तन में, परिवर्तन आ जाता था। परि + वर + तन = परिवर्तन। इस प्रकार के पर्यटन को, करने के लिए, परि "Pray" करती थी एवं वर "यत्न" करता था। जिसे ही प्रयत्न बोला जाता है। Pray + यत्न = प्रयत्न।

204. Popu + लड़ = Popular -

Population में Popular होने के एवं Popularity को प्राप्त करने के दो उपाय हैं। पहला उपाय है "लड़" यानी लड़ने वाले लोग जल्दी से, Popular हो जाते हैं। Popu + लड़ = Popular. लोग तब कहने लगते हैं, "अरे वह ! वह तो बहुत लड़ाकू है"। "अरे वहां के लोग ! तो बहुत लड़ने वाले हैं"। दूसरा उपाय है"रीति" यानी किसी रीति को चालू करवा दीजिए, आपकी Popularity बढ़ जाएगी। Popu + रीति = Popularity.

205. Press + स्थान = प्रस्थान -

Press करने का स्थान ही प्रस्थान है। Press + स्थान = प्रस्थान। पहलवान लोग, Acupressure वाला एवं Physiotherapist लोग यह जानते हैं कि, इन्हें कौन से स्थान पर, Press करना है। दूध निकालने के लिए, गाय एवं भैंस के थन में, कहां पर Press करना है, यह भी लोग जानते हैं।

206. पाप + रति = Party -

पाप करते हैं जो रति का, वह Party बनाते हैं। पाप एवं रति को मिलाकर, शब्द बना है Party. पाप + रति = Party. इस पाप में सभी रत रहते हैं, इसलिए इसे "Part" लेना कहते हैं। पाप + रत = Part. पाप की कमाई के द्वारा, रति के पाप रात को किए जाते हैं, Party हमेशा रात को दी जाती है। प्रत्येक Party में पाप एवं रति होती है।

207. प्रण + आन = प्राण -

जिसमें आन के लिए, प्रण लगाकर कार्य किया जाता है, उसे प्राण कहते हैं। प्रण + आन = प्राण। जब तक Sun रहेगा, तब तक कल पर बात को, नहीं डालूंगा। Sun + कल + पर = संकल्प। यानी सूर्य के रहने तक, कार्य को पूरा कर लेना है। जब Soul का Use करके, कार्य किया जाता है, उसे Solution कहते हैं। Soul + Use = Solution. यह कार्य जब तक पूरा नहीं हो जाता है, तब तक Resolution लिया जाता है। Re + Solution = Resolution.

208. प्रातःकाल + रंभाना = प्रारंभ -

गाय जब प्रातःकाल, अपना दूध दुहाने के लिए रंभाती है, तब उसे ही प्रारंभ कहते हैं। प्रातःकाल + रंभाना = प्रारंभ। तब व्यक्ति कहता है कि, "आ रहा हूं, रंभाना बंद कर"। तो इसे ही आरंभ कहते हैं। आ रहा हूं + रंभाना = आरंभ। यानी गाय के द्वारा प्रातःकाल रंभाने से, कार्य का प्रारंभ एवं आरंभ होता है। स्त्री किसी का स्तर देखकर बात करती है। किसी पुरुष के पास, ज़र, जमीन, पद, यह तीन का कितना स्तर है, वह देखकर ही, स्त्री किसी पुरुष से प्रभावित होती है।

209. पीक + Saw = पिकासो -

पिकासो का नाम पिकासो कैसे पड़ा। पिकासो भारत आया था, भारत में आदमी-औरत पान खाकर,

पान की पीक दीवारों पर, कोनों में और जमीन पर थूक देते थे। पिकासो ने पान की, इन थूकी गई पीक को देखा, और देखता ही रह गया। पिकासो को नहीं पता था कि, यह पान की पीक है। पिकासो ने पान की पीक की, बड़ी सराहना की तारीफ की, प्रशंसा की। इसलिए पीक के द्वारा, Saw करने के कारण, पिकासो का नाम पिकासो पड़ा। पीक + Saw = पिकासो। इसी "पीक" नाम से ही, Picture नाम पड़ा है। पीक + चर = Picture. पान को चरकर जब कोई, पीक को थूक देता है, तब उसे "Picture" कहते हैं।

210. पालन + रीति = प्रीति -

पालन करना रीति का प्रीति कहलाता है। पालन + रीति = प्रीति। किसी से रीति का पालन करवाना होता है, तो उसे भय दिखाया जाता है कि, "अगर इस रीति का पालन नहीं करोगे तो, तुम्हारे साथ ऐसा हो जायेगा"। तो भय में आकर वह व्यक्ति, रीति का पालन करने लगता है, इसे ही भय से प्रीति करना कहते हैं। इस तरह जब भी कभी, किसी नई रीति को बनाना होता है, तो यही भय फैलाया जाता है कि, "अगर इसका पालन नहीं करोगे तो, तुम्हारे को यह हो जायेगा"। तब भय में आकर उस नई रीति को, भी स्वीकार कर लिया जाता है, और भय में आकर उस रीति से, प्रीति कर ली जाती है।

211. पूजा + जीत = पूजित -

पूजा जीत की प्राप्ति के लिए, की जाती है। पूजा + जीत = पूजित। युद्ध के प्रारंभ से पहले, देवता एवं सैनिक दोनों की, पूजा करने पर जीत हो जाती है। और जो जीत जाते हैं, उनकी पूजा की जाती है, इससे वह पूजित हो जाते हैं।

212. परी + ईच्छा = परीक्षा -

परी की ईच्छा ही "परीक्षा" है। परी + ईच्छा = परीक्षा। ऐसी ही परीक्षा तो ब्रह्मृषि विश्वामित्र ने दी थी। देवराज इन्द्र ने अप्सरा मेनका को, ब्रह्मृषि विश्वामित्र की, परीक्षा लेने के लिए भेजा था। अप्सरा उर्वशी ने राजा पुरू की, परीक्षा ली थी और, अपने पर को धरती पर ही, छोड़ कर गई थी। पर = पंख। अप्सरा उर्वशी ने धनुर्धर अर्जुन की, परीक्षा ली थी। हातिम-अल-ताई की परीक्षा, परीबानो ने ली थी और, अपने परों को त्यागकर, हातिम-अल-ताई के साथ शादी की थी। इसलिए परीक्षा के ईनाम को, परिणाम कहते हैं। परी + ईणाम = परिणाम। ईणाम = ईनाम। परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद, जो ईनाम मिलता है, वह परिणाम कहलाता है और, इसे ही "परीक्षा का परिणाम" कहते हैं।

213. पैदा + ईश्वर = पैदाईश -

पैदा ईश्वर ही तो करता है, इसलिए इसे पैदाईश कहते हैं।

214. पुर + रखा = पुरखा -

पुर को रखानेवाले को "पुरखा" कहते हैं। पुर + रखा = पुरखा। किसी भी रहनेवाले स्थल के पीछे, "पुर" लगा होता है, उस "पुर" की रखवाली करनेवाले को, पुरखा कहते हैं। जब भी आप कहीं जाते हैं, तब आप कहते हैं कि, "जरा रखाए रखिए, हम अभी आते हैं"। तो वह रखानेवाला ही, आपका पुरखा है। इसलिए जिस दिन पुरखों का दिन आता है, उस दिन पूरी और खीर पुरखों के लिए बनाई जाती है।

पूर्व + जन्म = पूर्वज -

आप से पूर्व जन्म लेनेवाले को "पूर्वज" कहते हैं। पूर्व + जन्म = पूर्वज। यानी जिसका जन्म, आपसे पहले हुआ है, वह पूर्वज कहलाता है। आपसे पहले जन्म लेनेवाले, चाहे वे कोई भी हों, वे सभी आपके पुरखे हैं। उन पूर्व जन्म लेनेवालों से ही, आपने कुछ ना कुछ सीखा है। उन पहले जन्म लेनेवालों ने, अपने Experiments से, जो पुस्तकें लिखी हैं, उन्हीं पुस्तकों को पढ़कर, आपने ज्ञान एवं Information को, प्राप्त किया है। इसलिए आप जल्दी से जल्दी, ज्ञान को उपलब्ध हो जाते हैं। आपको अपने Experiments नहीं, करने पड़ते हैं। इसी तरह उन पूर्वजों ने, जो रास्ते एवं वाहन बनाए हैं, उनका उपयोग करके, आप जल्दी से जल्दी, अपने गंतव्य तक पहुंच जाते हैं। यानी आप उपयोगात्मक जीवन जीते हैं, आप प्रयोगात्मक जीवन नहीं जीते हैं। और शीघ्रता से बिना डरे हुए, वस्तुओं का उपयोग करते हैं। यह शीघ्रता एवं निडरता, आपके पहले जन्म लिए लोगों के, प्रयोगों का फल है।

215. पौड़ी + यम = Podium –

जिस पौड़ी पर चढ़कर, यम तक जाते हैं, उसे Podium कहते हैं।

216. परमात्मा + इच्छा = परीक्षा -

लोग तो कहते हैं कि, "परमात्मा मिला है तो, कोई चमत्कार दिखाओ"। यानी लोग परमात्मा को चमत्कार से पहचानते हैं। अगर चमत्कार कर दे, तो परमात्मा है, और चमत्कार न करे तो, यह ढोंग कर रहा है। ऐसा उसका प्रचार कर देते हैं। तब चमत्कार को माननेवाले लोग, परमात्मा की परीक्षा लेते हैं, और इस परीक्षा के लिए, परमात्मा के सामने अपनी इच्छा को रखते हैं। परमात्मा + इच्छा = परीक्षा। अगर परमात्मा उनकी इच्छा को, पूरा कर दे तो परमात्मा, परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया। और तब उसे परमात्मा मान लेते हैं। इसलिए परमात्मा को परमात्मा मानने के लिए, लोग अपनी अपनी इच्छाएँ, परमात्मा के सामने रखकर, परमात्मा की परीक्षा लेते रहते हैं। जब जब उन लोगों की इच्छाएं, पूरी होती जाती हैं, तब तब परमात्मा को मानना, उनके भीतर मजबूत होता जाता है। और जिस दिन परमात्मा के सामने, कोई ऐसी इच्छा रखते हैं, जिसे परमात्मा पूरी नहीं करता है, तब लोग परमात्मा को मानना छोड़ देते हैं। इसलिए परमात्मा ने सोचा कि, "वह कब तक लोगों की इच्छाओं को, पूरी करता रहे"। इसलिए परमात्मा अन्तर्ध्यान हो गया, अब जो ध्यान करता है, परमात्मा उसी को मिलता है। इसलिए परमात्मा की प्राप्ति के लिए, ध्यान करो Meditation करो।

217. Proper + पंगा + गन्दा = Propaganda -

Proper तरीके से पंगा लेकर, जब किसी को गन्दा किया जाता है, तब उसे तो ही Propaganda कहते हैं। Proper + पंगा + गन्दा = Propaganda. Proper = उचित। जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के कान में, Proper तरीके से कहता है कि, "अरे ! उस व्यक्ति से मत मिला करो, क्योंकि वह बहुत गन्दा व्यक्ति है"। और जब कोई व्यक्ति, किसी व्यक्ति को गन्दा करने के लिए, जानबूझकर उस व्यक्ति से पंगा लेता है। उसे Propaganda कहते हैं। जिसे आजकल की भाषा में, "Prank" कहा जाता है। पंगा + रंक = Prank. पंगा जब रंक से किया जाता है, तब उसे Prank कहा जाता है।

क्योंकि राजा से तो कोई भी व्यक्ति, Prank नहीं कर सकता है। इसलिए लोकतंत्र में सभी को, राजा बना दिया गया है। ताकि कोई रंक नहीं रहे और, रंक से कोई Prank नहीं करे। और कोई किसी से पंगा लेकर, और कोई किसी को गन्दा कहकर, Propaganda नहीं करे।

218. Proper + रीति = Property –

Proper रीति से जो प्राप्त होती है, उसे Property कहते हैं।

219. पुर + राणा = पुराण -

दिन के 24 घंटे को, 24 अवतारों में वर्णित किया गया है। इन 24 अवतारों को, 18 घंटों में समेटा गया है, क्योंकि बाकी के 6 घंटे, सोते हुए गुजरते हैं। पुर में रण से वापिस लौट कर आए, राणा के द्वारा जो कहा जाता है, वह "पुराणा" ही "पुराण" कहलाता है। पुर + राणा = पुराण। पुर से रण में गए राणा की स्त्री को राणी कहते हैं। पुर + राणी = पुरानी। राणा के द्वारा पुर के पुरुषों को, रण की बात सुना दी जाती है। किन्तु पुर में रहनेवाली स्त्रियों को, रण की बात राणा के द्वारा, नहीं सुनाई जाती है। इसलिए राणा के द्वारा राणी को, जो बात बताई जाती है, वही बात राणी के द्वारा, पुर में रहनेवाली स्त्रियों को, सुनाई जाती है। इसे ही पुरानी बात कहते हैं। यानी पुर की राणी की बात। पुर + राणी = पुराणी। पुर से रण में जाकर, वापिस लौटकर आए, राणा की बातें इस पुराण में होती हैं। इसलिए पुराणों में युद्ध की, बातें होती हैं। पुर में रहनेवाली राणी की बातें, इन पुराणों में होती हैं, इसलिए यह पुरानी बातें होती हैं। प्रथम पुराण ब्रह्मवैवर्त पुराण है, क्योंकि 24 घंटे में, जब व्यक्ति सोकर उठता है, तब व्यक्ति "ब्रह्म" होता है। और, व्यक्ति के उठने के समय को, ब्रह्म मुहूर्त कहा जाता है। पुराणों के रहस्य, पुराणों की कथाओं में, इस तरह से छुपाकर रखे गए हैं, कि जिस प्रकार से, शहद में कड़वी दवा।

220. पुरुष + Earth = पुरुषार्थ –

ब्रह्मृषि कपिल के द्वारा विरचित, "सांख्य सूत्र" के अनुसार, पुरुष और प्रकृति ही पुरुषार्थ है। Earth इस प्रकृति का एक, छोटा सा अंश है। पुरुषार्थ के लिए दोनों आवश्यक हैं, पुरुष भी और प्रकृति भी। अकेला पुरुष कुछ नहीं कर सकता है, और अकेली प्रकृति कुछ नहीं कर सकती है। पुरुष में से ही प्रकृति निकलती है, प्रकृति के कण कण में, पुरुष समाया हुआ है। इसलिए पुरुष और प्रकृति दोनों का, समान होना ही पुरुषार्थ है।

221. पारा + शीत + मूल = Paracetamol -

पारा को शीत करने वाली मूल को, Paracetamol कहते हैं। पारा + शीत + मूल = Paracetamol. मूल = भूमि के भीतर स्थित, पेड़-पौधौं की जड़।

217. Proper + पंगा + गन्दा = Propaganda -

Proper तरीके से पंगा लेकर, जब किसी को गन्दा किया जाता है, तब उसे तो ही Propaganda कहते हैं। Proper + पंगा + गन्दा = Propaganda. Proper = उचित। जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के कान में, Proper तरीके से कहता है कि, "अरे ! उस व्यक्ति से मत मिला करो, क्योंकि वह बहुत गन्दा व्यक्ति है"। और जब कोई व्यक्ति, किसी व्यक्ति को गन्दा करने के लिए, जानबूझकर उस व्यक्ति से पंगा लेता है। उसे Propaganda कहते हैं। जिसे आजकल की भाषा में, "Prank" कहा

जाता है। पंगा + रंक = Prank. पंगा जब रंक से किया जाता है, तब उसे Prank कहा जाता है। क्योंकि राजा से तो कोई भी व्यक्ति, Prank नहीं कर सकता है। इसलिए लोकतंत्र में सभी को, राजा बना दिया गया है। ताकि कोई रंक नहीं रहे और, रंक से कोई Prank नहीं करे। और कोई किसी से पंगा लेकर, और कोई किसी को गन्दा कहकर, Propaganda नहीं करे।

218. Proper + रीति = Property –

Proper रीति से जो प्राप्त होती है, उसे Property कहते हैं।

219. पुर + राणा = पुराण -

दिन के 24 घंटे को, 24 अवतारों में वर्णित किया गया है। इन 24 अवतारों को, 18 घंटों में समेटा गया है, क्योंकि बाकी के 6 घंटे, सोते हुए गुजरते हैं। पुर में रण से वापिस लौट कर आए, राणा के द्वारा जो कहा जाता है, वह "पुराणा" ही "पुराण" कहलाता है। पुर + राणा = पुराण। पुर से रण में गए राणा की स्त्री को राणी कहते हैं। पुर + राणी = पुरानी। राणा के द्वारा पुर के पुरुषों को, रण की बात सुना दी जाती है। किन्तु पुर में रहनेवाली स्त्रियों को, रण की बात राणा के द्वारा, नहीं सुनाई जाती है। इसलिए राणा के द्वारा राणी को, जो बात बताई जाती है, वही बात राणी के द्वारा, पुर में रहनेवाली स्त्रियों को, सुनाई जाती है। इसे ही पुरानी बात कहते हैं। यानी पुर की राणी की बात। पुर + राणी = पुराणी। पुर से रण में जाकर, वापिस लौटकर आए, राणा की बातें इस पुराण में होती हैं। इसलिए पुराणों में युद्ध की, बातें होती हैं। पुर में रहनेवाली राणी की बातें, इन पुराणों में होती हैं, इसलिए यह पुरानी बातें होती हैं। प्रथम पुराण ब्रह्मवैवर्त पुराण है, क्योंकि 24 घंटे में, जब व्यक्ति सोकर उठता है, तब व्यक्ति "ब्रह्म" होता है। और, व्यक्ति के उठने के समय को, ब्रह्म मुहूर्त कहा जाता है। पुराणों के रहस्य, पुराणों की कथाओं में, इस तरह से छुपाकर रखे गए हैं, कि जिस प्रकार से, शहद में कड़वी दवा।

220. पुरुष + Earth = पुरुषार्थ –

ब्रह्मर्षि कपिल के द्वारा विरचित, "सांख्य सूत्र" के अनुसार, पुरुष और प्रकृति ही पुरुषार्थ है। Earth इस प्रकृति का एक, छोटा सा अंश है। पुरुषार्थ के लिए दोनों आवश्यक हैं, पुरुष भी और प्रकृति भी। अकेला पुरुष कुछ नहीं कर सकता है, और अकेली प्रकृति कुछ नहीं कर सकती है। पुरुष में से ही प्रकृति निकलती है, प्रकृति के कण कण में, पुरुष समाया हुआ है। इसलिए पुरुष और प्रकृति दोनों का, समान होना ही पुरुषार्थ है।

221. पारा + शीत + मूल = Paracetamol -

पारा को शीत करने वाली मूल को, Paracetamol कहते हैं। पारा + शीत + मूल = Paracetamol. मूल = भूमि के भीतर स्थित, पेड़-पौधों की जड़।

222. प्रिय + और + रीति = Priority -

Priority दो तरह से निश्चित की जाती है। एक तो प्रिय से और, दूसरी रीति से। प्रिय + और + रीति = Priority. पहले तो व्यक्ति देखता है कि, कौन-कौन उसके प्रिय हैं। तो उन-उन प्रिय को, Priority दी जाती है और उसके बाद रीति को देखता है कि, रीति के अनुसार किसको, Priority दी जाती रही है। इसलिए व्यक्ति Priority को, प्राप्त करने के लिए, किसी का प्रिय बन जाता है। या, रीति का

पालन करने वालों के साथ, हो जाता है और, वह भी रीति का पालन करके, Priority को प्राप्त करने में लग जाता है।

223. प्रहर + लाद = प्रहलाद -

होरी के अगले दिन से एक प्रहर का कार्य, जिस पर लाद दिया जाता है, उसे "प्रहलाद" कहा जाता है। प्रहर + लाद = प्रहलाद। होरा से प्रहर लाद तक। एक होरा होता है, एक Hour का। एक प्रहर होता है, तीन Hours का। होरी के अगले दिन से, तीन Hours का एक, प्रहर होता है। होरी के पहले एक-एक Hour का, कार्य दिया जाता है। किन्तु होरी में, होरा को खाने के बाद से, एक-एक प्रहर का, कार्य लाद दिया जाता है। कि, "आज से तीन Hours कार्य, करना है"। होलिका का क्या कसूर था ? होलिका तो प्रहलाद को बचाने के लिए, प्रहलाद को गोद में लेकर बैठ गई थी। और होलिका के पास, जो बिना दहन होनेवाला कंबल था, वह कंबल होलिका ने प्रहलाद को, ओढ़ा दिया था। होलिका के उस ना दहन होनेवाले, कंबल के वजह से प्रहलाद बच गया था। और, होलिका बेचारी प्रहलाद को बचाने में, दहयित हो गई। किन्तु फिर भी होलिका को ही, वर्षों से दहन किया जा रहा है। जबकि होलिका तो, प्रहलाद को बचाने के लिए, लकड़ियों पर बैठी थी। होलिका स्वंय तो दहयित हो गई, और होलिका ने प्रहलाद को बचा लिया। दहन होती अग्नि में से, प्रहलाद को बचाने के लिए, तो कोई भी नहीं आया था। जबकि ब्रह्माजी से प्राप्त, उस ना दहन होनेवाले, कंबल ने प्रहलाद को बचाया था। होलिका ने तपस्या करके, यह दहन ना होनेवाला कंबल को, ब्रह्माजी से प्राप्त किया था। यही दहन ना होनेवाला कंबल, प्रहलाद को बचाने का उपाय बन गया। जबकि कहानी में यह कहा गया कि, कंबल भी दहयित हो गया, और होलिका भी दहयित हो गई। तो क्या ब्रह्माजी के द्वारा दिया गया कंबल, ब्रह्माजी का वरदान सिद्ध न हो सका। आखिर ब्रह्माजी के द्वारा दिया गया, कंबल दहयित कैसे हो गया ? यानी कंबल तो ब्रह्माजी वाला ही था, किन्तु कंबल अब होलिका के पास नहीं था, कंबल अब प्रहलाद के पास था। तो बात यह उठती है कि, होलिका वाले कंबल को, किसने बदल दिया और, वैसा ही दूसरा कंबल होलिका को दे दिया। और होलिका पूरे विश्वास के साथ, उस कंबल को ओढ़कर बैठ गई, तथा होलिका का असली कंबल, प्रहलाद तक कैसे पहुँच गया ? और, कहीं-कहीं ऐसा कहा गया कि, कंबल होलिका के पास से, अपने आप उड़कर, प्रहलाद के ऊपर आ गया, और प्रहलाद बच गया। आखिर बात आकर कंबल पर, आ जाती है कि, कंबल ने प्रहलाद को बचाया। यह कंबल भगवान प्रजापति विश्वकर्मा जी ने बनाया था। जिसे आजकल की भाषा में Fire Suite कहते हैं।

224. Pray + हरी + लाड़ = प्रहलाद -

जो Pray करता है और, जिसे हरी का लाड़ मिलता है, उसे "प्रहलाद" कहते हैं। Pray + हरी + लाड़ = प्रहलाद। जो होड़ लगाते हैं, Liquor को पीने की, उसे होड़लिका से होलिका कहते हैं। होड़ + Liquor = होड़लिका = होलिका। Liquor पीने की होड़, पीने वाले के भीतर स्थित, सबकुछ को दहन कर देती है। पीने वाले नर को सिंह के समान, क्रोध दिलवाती है। और बच जाता है "प्रहलाद"।

225. प्राण + प्रीति + ईष्टा = प्रतिष्ठा -

जिसमें प्राण लगे रहते हैं। जिससे प्रीति होती है, जो इष्ट होता है। इसे ही प्राण प्रतिष्ठा कहते हैं।

226. प्रत्यय + अन्न + चा = प्रत्ययंचा -

जिस प्रकार से प्रत्यंचा पर चढ़े तीर को, जोर से खींचकर फेंका जाता है। उसी प्रकार से प्रत्यय पर, शब्द को चढ़ाकर, जोर से खींचकर फेंका जाता है। प्रत्यय + अन्न + चा = प्रत्ययंचा। प्रारंभ से त्यय करके जिसको किया जाता है, उसे प्रत्यय कहते हैं। प्रारंभ + त्यय = प्रत्यय। यानी पहले से तय की गई बातों पर, नये शब्दों को चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है, उसे प्रत्यय कहते हैं।

227 पंडित + तय = पांडित्य -

पंडित लोग जो तय करते हैं, उसे पांडित्य कहते हैं। पंडित + तय = पांडित्य। इसलिए पंडित लोग तय करके, एक पान का बीड़ा बनाकर रख देते हैं। और तब लोगों को बताया जाता है कि, "यह कार्य पंडित लोगों ने तय किया है, जो इस कार्य को करना चाहता है, वह पान का बीड़ा उठा ले"। इसलिए जो व्यक्ति पान का बीड़ा, उठाते थे, वही व्यक्ति विरला कहलाते थे। उन्हीं के मुंह में पान शोभा पाता था। इसलिए पान का महत्त्व बहुत है, और पान ही पांडित्य को तय करता है। इसलिए प्रत्येक संकल्प में पान रखा जाता है।

228. Prom + Miss = Promise -

Prom में Miss किया गया Promise, सदा याद रखना पड़ता है। Prom + Miss = Promise. और मिलने पर कहा जाता है कि, "मैंने तुम्हें बहुत Miss किया, तुमसे किया Promise, मुझे आज भी याद है। इसी Promise को करने के लिए, तो Prom Night बुलाई जाती है। कि इस Prom Night पर मिलकर, लोग एक-दूसरे से Promise करें। और उस Promise को याद रखें।

229. पवन > पावन –

पवन ही पावन करती है, इसलिए श्वास के ऊपर ध्यान लगाकर, साधक पावन हो जाता है।

230. परम + रव = पर्व -

परम रब के लिए जो मनाया जाता है, वह है "पर्व"। परम + रव = पर्व। रव से ही राव शब्द बना है, और राव से रावण शब्द बना है। राव है जो वन का, वही तो रावण है। राव + वन = रावण।

231. पाला + तू = पालतू -

पालतू और फ़ालतू व्यक्ति को, हमेशा "तू" कहकर ही, संबोधित किया जाता है। यानी जिसको पाला जाता है। पाला + तू = पालतू। और जिसको Fall किया जाता है। Fall + तू = फ़ालतू।

232. प्रति + ईष्ट = प्रतिष्ठा –

हर कोई यह चाहता है कि, उसे प्रति मिल जाए उसके ईष्ट की। प्रति + ईष्ट = प्रतिष्ठा। जिससे समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ जाए। यानी जैसे किसी का कोई ईष्ट है, अब वह अपने ईष्ट की मूल (Original) तो रख नहीं सकता है। तो वह अपने ईष्ट की प्रति (Copy) को, बाजार से खरीद कर, अपने पास रख लेता है। उसके ईष्ट की यह प्रति, मूर्ति या चित्र के रूप में होती है। और अपने ईष्ट की इसी प्रति में, वह अपने प्राणों को प्रतिष्ठित कर देता है। जिस प्रकार से साधारण से कागज़ को, फाड़कर फेंक सकते हैं। किन्तु जिस कागज़ में, मुद्रा को प्रतिष्ठित किया जाता है। उस कागज़ को फाड़कर नही फेंकते हैं।

क्योंकि जिस कागज़ में मुद्रा को प्रतिष्ठित किया है, उस कागज़ के साथ प्राण जुड़ गए हैं। क्योंकि उस कागज़ को देकर, अन्न और जल तथा अन्य वस्तुओं और, सेवाओं का क्रय-विक्रय किया जाता है। और अन्न एवं जल से हमारे प्राण चलते हैं। इस कारण से उस मुद्रा वाले कागज़ को, फाड़कर फेंकने से पहले ही, पूरे प्राण आंदोलित हो जाते हैं। और उस मुद्रा वाले कागज़ को, फाड़ने की सोच भी नहीं सकते हैं। इसी प्रकार से जो हमारे ईष्ट होते हैं, उनकी प्रति को ना ही फ़ाड़ सकते हैं, और ना ही तोड़ सकते हैं। क्योंकि इससे हमारे प्राण प्रभावित होंगे, और हमारी प्रतिष्ठा चली जाएगी। इसलिए अपने ईष्ट की प्रति को बचाकर, अपनी प्रतिष्ठा एवं अपने प्राणों की, रक्षा करनी चाहिए। इसे ही प्राण प्रतिष्ठा कहते हैं।

233. प्रसन्न + शक = प्रसंशक –

प्रसन्न रहनेवाले व्यक्ति पर, हर कोई शक करता है कि, 'पता तो लगाओ, यह इतना, प्रसन्न क्यों रहता है' ? प्रसन्न + शक = प्रसंशक। इसलिए जो भी व्यक्ति, किसी प्रसन्न व्यक्ति पर, शक करता है, तो वह उस प्रसन्न रहनेवाले व्यक्ति का, प्रसंशक बन जाता है। और शक करनेवाले का, पहला ही प्रश्न यह होता है कि, 'आप ! आज बहुत ही प्रसन्न लग रहे हैं, ऐसी क्या प्रसन्नता की बात है ? हमें भी कुछ बताईए'। और शक करनेवाला व्यक्ति, किसी न किसी प्रकार से, उस प्रसन्न रहनेवाले व्यक्ति की, प्रंशंसा करके, प्रसन्न रहने का कारण जानने की, पूरी की पूरी कोशिश करता है। ऐसे प्रशंसा करनेवाले, और प्रसन्न रहनेवालों पर, शक करनेवाले को प्रशंसक कहते हैं।

234. Prom + Miss = Promise –

Prom में Miss से किया गया Promise, सदा याद रखना पड़ता है। Prom + Miss = Promise. और मिलने पर कहा जाता है कि, "मैंने तुम्हें बहुत Miss किया, तुमसे किया Promise, मुझे आज भी याद है। इसी Promise को करने के लिए, तो Prom Night बुलाई जाती है। कि इस Prom Night पर मिलकर, लोग एक-दूसरे से Promise करें। और उस Promise को याद रखें।

235. परी + चार + इक्का = परिचारिका –

जिसके पास परी चार होती है, वह इक्का होता है। वह चारों परियां उस इक्के की परिचारिका होती है। परी + चार + इक्का = परिचारिका। पैदा तो सब पयादा ही होते हैं। किन्तु ज़िन्दगी की शतरंज, खेलते खेलते आखिर में, राजा बन ही जाते हैं। पैदा = पयादा।

236. पारा + Site = Parasite –

व्यक्ति के शरीर के भीतर स्थित, पारा को जो अपनी Site बना लेते हैं, उनको "Parasite" कहते हैं। पारा + Site = Parasite. इन्हीं Parasite के कारण, व्यक्ति का पारा गर्म हो जाता है।

237. पारा + शीत + मूल = Paracetamol - इसलिए तो गर्म हुए पारे को, शीतल करने के लिए, व्यक्ति को "Paracetamol" खिलाया जाता है। पारा + शीत + मूल = Paracetamol.

मूल = जड़ी-बूटी - इस मूल (जड़ी-बूटी) को खाने से, व्यक्ति के शरीर का पारा शीतल हो जाता है।

238. पीकर घर गया = पिघल गया –

पीकर जब आदमी यह कहे कि, "मैं तो पिघल गया"। तब समझ जाना चाहिए कि, आदमी"पीकर

घर जाने" को, "पिघल गया" कह रहा है। पीकर घर गया = पिघल गया।

239. Press + स्थान = प्रस्थान -

Press करने के स्थान का पता लगने पर, व्यक्ति प्रस्थान करता है। Press + स्थान = प्रस्थान। यानि जैसे बिजली के बल्ब का, Switch पता लगने पर, Switch पर Press किया जाता है, और बिजली बल्ब के स्थान तक, प्रस्थान कर जाती है और, बल्ब में बिजली प्रज्वलित हो जाती है। इसी तरह से किसी व्यक्ति के, दबाव का कारण पता लगने पर, उस व्यक्ति को दबाव में लाया जाता है। यानि व्यक्ति पर Pressure डाला जाता है। जैसे कि देवताओं के Press करने के, स्थान का पता लगने पर, देवताओं को सुर बनाया जाता है, और देवताओं से अपना काम करवाया जाता है, और इसे ही Pressure कहा जाता है। Press + सुर = Pressure.

240. प्रातः + रंभा = प्रारंभ -

प्रातः जब गाय रंभाती है, तब उसे प्रारंभ कहते हैं। प्रातः + रंभा = प्रारंभ। प्रातः गाय दूध से भरी है और बंधी है। तब गाय रंभाकर कहती है कि, 'मुझे खूंटे से खोल दो, ताकि मैं अपने बछड़े को दूध पिला लूं'। गाय को रंभाते देखकर, तब बछड़ा भी रंभाने लगता है। यह रंभाना प्रातः होता है, इसलिए इसको 'प्रारंभ' कहते हैं। सायं गाय को आते देखकर, बछड़ा रंभाता है। तब उसे आरंभ कहते हैं। आते + रंभा = आरंभ। गाय जंगल से चरकर वापिस आ रही है, तब बछड़ा रंभाने लगता है। बछड़े का रंभाना सुनकर, गाय भी रंभाने लगती है। गाय के आने से बछड़े का रंभाना होता है, इसलिए इसे 'आरंभ' कहते हैं।

241. परमात्मा + अर्थ = परमार्थ -

परमात्मा के पास ले जानेवाला अर्थ, परमार्थ कहलाता है। परमात्मा + अर्थ = परमार्थ। जो अर्थ व्यक्ति को परमात्मा तक ले जाएं, उस अर्थ को परमार्थ कहा जाता है।

242. Pay + यार = प्यार –

जो यार आपके लिए Pay करे, वही आपका प्यार होता है। Pay + यार = प्यार। यानी जब आप अपने यार से कहें कि, "Pay... यार"। या, "Don't worry, Payment तेरा यार करेगा"। क्योंकि ऐसे तो यार बहुत से होते हैं, किन्तु जो यार Payment करता है, वही यार, तो "प्यार" होता है।

243. पृथा = पृथ्वी –

पृथा पर व्यक्ति रहता है, इसलिए व्यक्ति को, प्रथा का पालन करना चाहिए। पृथा = पृथ्वी। अलग-अलग स्थान पर, पृथा अलग-अलग होती है, इसलिए अलग-अलग स्थान की, प्रथा भी अलग-अलग होती है। पृथा पर व्यक्ति जब थक जाता है, पृथा तब व्यक्ति को पृथक कर देती है। और उस थके हुए व्यक्ति को, पृथा अपने में मिला लेती है। पृथा + थक = पृथक।

244. प्रसाद का भोग -

प्रसाद का भोग लगाते समय, जब मूर्ति को ही नहीं पता लगा कि, लड्डू में गाय की चर्बी, सुअर की चर्बी, मछली का तेल है। यानि मूर्ति ने भी गाय की चर्बी, सुअर की चर्बी, मछली के तेल को, स्वीकार कर लिया। मूर्ति को जब पहली बार, गाय की चर्बी, सुअर की चर्बी, मछली के तेल के लड्डू का भोग

लगाया गया, तब मूर्ति ने अस्वीकार क्यों नहीं किया ? ऐसा चमत्कार क्यों नहीं दिखाया ? यानि मूर्ति को ही पता नहीं चला कि, मुझे चढ़ाए गए भोग में, क्या-क्या मिला हुआ है ? क्योंकि मूर्ति तो पत्थर है, और पत्थर में तो प्राण नहीं होते हैं। चाहे मूर्ति में कितनी ही प्राण-प्रतिष्ठा कर लो। और इसी पत्थर की मूर्ति को, हम भगवान मान बैठे हैं। जबकि पत्थर तो पत्थर है, पत्थर में संवेदना कहां होती है ? और प्रसाद बनाते समय, कारीगर भी नहीं भांप पाए की, यह गाय की चर्बी है, सुअर की चर्बी है, मछली का तेल है। और तो और प्रसाद को खानेवाले, भक्तजन भी नहीं स्वाद को पहचान पाए, कि इस लड्डू में तो अजीब-सा स्वाद है। और प्रतिदिन प्रसाद खानेवाले, भक्तजन भी लड्डू में स्वाद की भिन्नता को, नहीं जान पाए। या फिर जानते सब थे, किन्तु किसी ने भी विद्रोह नहीं किया। यानि भारत के लोगों ने एक हजार साल, कैसे बिना विद्रोह के बिता दिए। इससे यह पता चलता है।

245. प्रौढ़ + कष्ट = Podcast -

प्रौढ़ लोग जब अपना कष्ट सुनाते हैं, उसे Podcast कहते हैं। प्रौढ़ + कष्ट = Podcast. प्रौढ़ लोग अपना यह कष्ट, पौढ़ियों पर बैठकर सुनाते हैं और इस वाक्य से कहना प्रारंभ करते हैं, "अरे ! अब तो घुटनों में इतना कष्ट है कि, पौढ़ियों चढ़ना भी नहीं हो पाता है"। बस यहीं से प्रौढ़ लोग, अपना कष्ट कहना प्रारंभ करते हैं, इसे ही Podcast कहते हैं।

246. पलाश + Stick = Plastic –

पलाश की Stick को Plastic कहते हैं। क्योंकि पलाश की Stick में, Sticker नहीं होती है। यानी पलाश के पत्ते, लकड़ी चिपकते नहीं है, इसलिए पलाश के पत्तों की, पत्तल-दोना बनाई जाती है। पलाश के पत्तों से बनी, पत्तल-दोना पर जल एवं भोजन, कुछ भी चिपकता नहीं है। ऐसे ही Plastic पर भी भोजन एवं जल, कुछ भी चिपकता नहीं है। इसलिए यज्ञोपवीत संस्कार के समय, पलाश की Stick (लकड़ी) दी जाती है कि, इस संसार का उपयोग एवं उपभोग, करते हुए भी, इस संसार से चिपकना नहीं है।

Q

1. Queue = क्यूँ -

“क्यूँ ? यहाँ क्यूँ खड़े हो” ? यह कहते हुए, वह भी वहाँ खड़ा हो गया। इस तरह हर आनेवाला यही पूछता कि, “यहाँ क्यूँ खड़े हो” ? और उत्तर सुनकर वहीं खड़ा हो जाता। क्यूँ-क्यूँ कहते-कहते, वहाँ एक लम्बी कतार लग गई। इसी लम्बी कतार का नाम “क्यूँ” ही कालान्तर में “Queue” बना। क्योंकि जब भी कोई पूछता कि, “क्यूँ, यहाँ क्यूँ खड़े हो” ? इस तरह से यह दो क्यूँ के बीच जो "यहाँ" नामक शब्द है। वह बीच से हट गया और क्यूँ में दो क्यूँ यानि "क्यू-क्यू" ही “Queue” कहा जाने लगा। यही “Queue” सही अर्थ है।

2. क्वाँर + ताईन = Quarantine -

भारत में पहले चार महिने का चातुर्मास बरसात के समय होता था। जो आषाढ़ से लेकर क्वाँर के महिने तक चलता था। इसलिए इसे क्वाँर ताईन बोला जाता था यानि इन चार महिनों में यात्रा बंद रहती थी। सभी कार्य बंद रहते थे। लोग घरों में रहते थे और बाहर पृथ्वी अपने आपको अगले आठ महिने के लिए तैयार कर लेती थी। नदियों, नालों, तालाबों में पर्याप्त मात्रा में पानी आ जाता था। यही क्वाँर ताईं ही आज का Quarantine है।

3. कुआं + तम = Quantum -

कुआं के तम को "Quantum" कहते हैं। कुआं + तम = Quantum. सूर्य की किरणें पढ़ने पर, कुआं के गहराई में स्थित, अंधेरे से प्रकाश निकलता है और साथ में कुआं के पानी से, भाप भी निकलती है। इसलिए इसे Quantum कहते हैं।

R

1. रूह + आब = रूआब -
रूह के आब से रूआब आता है। फिर आदमी में रुआब आता है और बड़े ही रोब में चलता है।

2. रईस = Rice -
जिसके पास Rice होता है, वही रईस होता है। जिसके पास धान होता है, वही धनी होता है।

3. रक्ष + Us = राक्षस -
रक्षा करे जो हमारी। वह है राक्षस। कमजोर हमेशा ताकतवर को यह एहसास दिलाता है और विवश करता है कि, ताकतवर को कमजोर की रक्षा करनी चाहिए। किंतु कमजोर कभी अपनी ताकत को बढ़ाता नहीं है।

रक्ष + Us = राक्षस -
जो रक्षा करता है हमारी, वह है राक्षस। रक्ष + Us = राक्षस। रक्षा करनेवाले को "राक्षस" कहते हैं।

4. राह + उ = राहु -
जो उल्टी राह पर ले जाए, वह राहु। इसलिए यात्रा से पहले राहुकाल देखते हैं। क्योंकि राहुकाल में यात्रा करने पर, उल्टी दिशा में यात्रा हो जाएगी।

5. राज + ऐश = राजेश -
जिसका राज होता है, उसी की ऐश होती है। यानि जो राजा होता है, वही ऐश्वर्यशाली होता है। वही राजेश होता है।

6. राम + Bow = Rambo -
राम का धनुष। Rambo ने पूरी फिल्म में एक धनुष का उपयोग किया है। वही धनुष को राम का धनुष बोला गया। यानि RAM BOW. इसिलए राम के धनुष का उपयोग करनेवाले का नाम पड़ा Rambo.

7. Riddim – Rituals -
भारतीय व्यक्ति Riddim पर चलते थे और Rituals मनाते थे। ऋद + दम = Riddim - ऋतुओं का दम। Rituals = ऋतु के अनुसार चलने वाले।

8. Road = रोड़े -
लोगों ने राह में रोड़े डाले और उन्होंने रोड़ो पर डामर डालकर Road बना डाली। जो अब सभी के लिए राह का काम करती है।

9. Range = रंज -
जहाँ तक आदमी की रंज होती है। वहीं तक उसकी Range होती है।

10. Roast = रुष्ट -
रुष्ट (रुठा) होना ही Roast होता है। जैसे Roast होने पर होता है, उसी प्रकार रुष्ट होने पर, आदमी भूना हुआ हो जाता है।

11. Recipe = रसपी -

रसेदार (तरीवाली) चीजों को बनाने की विधि को Recipe कहते हैं। जिसमें सब्जी-सब्जी खा ली जाती है, रस-रस पी लिया जाता है। इसलिए कहते हैं कि, "अरे ! और तरी डाल दे, तरी पीने का आनंद ही कुछ ओर है"। इसलिए जो सब्जी रसेदार बनती है, उसे तरकारी कहते हैं।

12. Risk - रिक्स (भोजन) के लिए Risk उठाना पड़ता है।

13. राज + नीयत = राजनीति -

कोई किसी के राज जानना चाहता है। कोई किसी की नीयत जानना चाहता है। यह दो शब्दों पर राजनीति चलती है। अपने राज छिपाना, दूसरों की नीयत जानना, यही राजनीति है। जो अपने राज छिपा लेता है और दूसरों की नीयत जान लेता है। उसी की राजनीति सफल होती है। और जिसके राज फास हो जाते हैं, और जिसकी नीयत सभी को पता चल जाती है। उसकी राजनीति असफल हो जाती है। राज + नीति = राजनीति। राजनीति तब तक सफल है, जब तक राज फाश नहीं हो जाते। जब राज खुलने लगते हैं, तब राजनीति की इतिश्री हो जाती है। इसलिए कुशल राजनीतिज्ञ अपने रहस्य छुपाये रखता है और दूसरों के रहस्य जानने में लगा रहता है। इस तरह वह अपनी राजनीति को सफलतापूर्वक संचालित करता रहता है। अतः अपने रहस्यों को, अपने चेहरे से, अपनी जुबान से, अपनी आँखों से, अपनी लेखनी से, अपने चाल-चलन से, अपने खान-पान से, अपने उठने-बैठने से प्रकट मत होने दो। अपनी राजनीति में हमेशा चकाचौंध रखो। जिससे दूसरों की आँखे चमक को देखकर चौंधिया जाएँ और आपके रहस्यों को नहीं समझ पाएँ, यानि दूसरों में समझ ही मत पैदा होने दो। स्वयं को समझदार बनाए रखो। यही तो राजनीति करने का सबसे कारगर तरीका है। अपने रहस्य और अपनी नीति (नीयत) छिपा कर रखो। दूसरों के रहस्य और दूसरों की नीति (नीयत) के बारे में पूरी जानकारी रखो। राज = रहस्य। नीति = नीयत।

14. रब + ईश = Rubbish - रब और ईश को ही लोग Rubbish कहते हैं।

15. रण + दम = Random -

रण में वही जाता है, जिसमें दम होता है। तभी रण में जानेवाले का, जब चुनाव किया जाता है, वह Randomly किया जाता है।

16. ऋतु + Aal = Rituals -

ऋतु के अनुसार जो किया जाए, वह Rituals होता है। भारत में त्योहार ऋतु (मौसम) के अनुसार मनाए जाते हैं, वही Rituals होते हैं।

17. Release + अन्न = Religion -

आदमी यही प्रार्थना करता है कि, "जो अन्न हमें मिल रहा है, यह अन्न इसी प्रकार हमें मिलता रहे"। यहीं से Religion की शुरुआत होती है। रैली में जाने वाले जन जहाँ हो, वह Religion होता है।

18. Rum + Our = Rumor -

जब कोई Rum पीकर अपने अंदर छिपे राजों को कहने लगता है और सुननेवाला कहता है और फिर आगे क्या हुआ? या और सुना ? और सुनानेवाला भी कहता है और सुन, या और सुनाऊँ। यही

Rum और ही Rumor है।

19. रहना + डार पर = Radar -

डार (डाली) पर रहना ही Radar है। रहता है डार (डाल) पर। पहले पेड़ की डाल पर, चढ़कर ही किसी के आने का पता लगाते थे, जैसे लक्ष्मण ने भरत के आने का पता डाल पर चढ़कर लगाया था।

20. रस + ऊख = रसूखदार -

जिसके पास ऊख का रस होता है, वही रसूखदार होता है। क्योंकि ऊख के रस से जो शराब बनती है, वह बहुत पैसेवाला बना देती है।

21. ऋषि + वर = Receiver –

ऋषि ही वर देते हैं, इसीलिए वह ऋषिवर कहलाते हैं।

22. Rotate + ताती = रोटी –

रोटी तवे के ऊपर ताती (गर्म) होती है, तो उसको एक छोर से पकड़कर उल्टा-पल्टा जाता है, जब ऊँगली गर्म तवे पर लग जाती है, तब वह रोती है। रोटी तवे पर Rotate की जाती है, वही रोटी कहलाती है।

23. ऋषि + वत = रिश्वत –

रिश्वत देकर रिश्ते बनाए जाते हैं। रिश्तेदारों को रिश्वत नहीं दी तो वह रिश्ते नहीं रखते हैं। ऋषि वत चलना ही रिश्वत होती है। पहले जमाने में ऋषि लोग तपस्या करते थे, तो आम जनता उनके पास अपने काम बनाने के लिए आती थी, तो उनके लिए फल, दक्षिणा आदि लाती थी। बस यही फल दक्षिणा ही तो रिश्वरत है।

24. Ring –

जब किसी को घेर लिया जाता है, तब उसे Ring पहनाई जाती है यानि अब वह फंस गया है। यानि जब किसी को छला जाता है, तो उसे छल्ला पहनाया जाता है।

25. Racist – राशि के अनुसार रहने वाले Racist कहलाते हैं।

26. Routine = रुटीन –

ऋतु से ही Routine बनता है, जैसी ऋतु आती है, वैसा ही Routine होता है।

27. Rocket – रोकें कैसे यही Rocket है।

28. ऋतु = रुत = Root -

रुत आने पर Root लगाओ। गुरो के द्वारा Grow करवाओ। ऋतु = रुत = Root. गुरु = गुरो = Grow. ऋतु आती है, तो लोग पौधे लगाते हैं। गुरु के द्वारा उन पौधों को, खाद-पानी दिया जाता है, देखभाल की जाती है, तो यही पौधे, बड़े-बड़े पेड़ बन जाते हैं। इसीलिए ऋतु का इंतजार करो। गुरु की खोज करो। जीवन में तरक्की ही तरक्की होगी। क्योंकि रुत के आने पर, Route मिलते हैं। समुद्र में चलनेवाली नावें, मौसम के अनुसार, अपना Route तय करती हैं।

29. The + रीढ़ = ढृढ़ – रीढ़ ही ढृढ़ है।

30. रानी – रान पर जो बैठे वह रानी है।

31. रूह + तबाह = रुतबा -

रूह तबाह हो जाती है, रुतबा बनाते बनाते। रूह + तबाह = रुतबा। तब जाकर रुतबा बन पाता है। किन्तु रुत के अनुसार भी, किसी का रुतबा बनता है। रुत + बा = रुतबा। तभी तो लोग पूछते हैं कि, "अरे ! कौन सी रुत बा" ? इसलिए अगर रुतबा बनाना है तो, रुह लगाकर किसी भी कार्य को करो। या फिर, रुत के आने का इंतजार करो। ऋतु के अनुसार सब अपना रुतबा दिखाते हैं।

32. रुखसत – सत के निकल जाने से, सभी रुखसत कर जाते हैं।

33. Roots – जो ऋतु के अनुसार आते हैं, उन्हें Roots कहते हैं।

34. Rest + On + Rent = Restaurant –

जहाँ पर Rest करते हैं Rent देकर, वह है Restaurant.

35. Rum + भा = रम्भा – Rum पीकर सब को जो भाये, वह है रम्भा है।

36. Rule – Rule ही तो रुलाई करवाते हैं।

37. Root = रुत = ऋतु -

पहले ऋतु के अनुसार रास्ते तय कर लेते थे। वर्षा के समय अलग रास्ते, गर्मी के अलग रास्ते, सर्दी के अलग रास्ते, उसे ही Root यानि रास्ता रहते हैं।

38. Rib + Bone = Ribbon –

Rib और Bone को बाँधा जिससे जाता है, वह है Ribbon.

39. Read = रीढ़ –

भारत में व्यक्ति पढ़ने के समय रीढ़ को सीधे रखते थे। अंग्रजों ने रीढ़ की हड्डी सीधे रखने को ही पढ़ना कहा, यानी "Read" करना है। पढ़ते समय रीढ़ की हड्डी सीधी रहती है, इसीलिए पढ़ने को Read कहते हैं।

40. Rev + आयत = रिवायत – जो बार-बार आती है, वही तो रिवायत है।

41. रुपये + माल = रुमाल –

रुपया और माल जिसमें रखता है, उसे रुमाल कहते हैं।

42. र + वन = रावण – रहता है जो वन में, वह है रावण।

43. राश + अन्न = Ration – राश या अन्न ही Ration है।

44. Rite = रीत – रीती-रिवाज ही संस्कार कहलाते हैं।

45. ऋतु = रीत – जब पृथ्वी घूमती है, तो जो उसके अन्दर होता है, वह ऋतु आने पर रीत (खाली हो) जाता है, यानि सर्दी आने पर सर्दी की चीजें रीत जाती हैं, यानि खाली हो जाती हैं। यही रीत ही तो ऋतु है।

46. रुह + बल = Rubble – रुह का बल ही Rubble है।

47. Re + Bell = Rebel –

जो बार-बार घंटी बजाते हैं, वही तो Rebel करते हैं और Rebellion होते हैं। भारत के मंदिरों में तो कई बार घंटियाँ बजती हैं। यानि लोग मंदिर में देवता के सामने लगी घंटी बजाते हैं और अपनी बात

कहते हैं।

48. Rhyme = राईम –

अंग्रेज जब भारत में आये, तो उन्होंने "राई" नृत्य में गाया जानेवाला तुकबंद वाला गाना सुना। उसी राई को अंग्रेजों ने "Rhyme" कहा। यानि की रहायी मिल गई, यही फिर आगे चलकर "Rhyming" शब्द हो गया।

49. रगड़कर + मल = Regmall – मल को रगडकर निकालने वाले को Regmall कहते हैं।

50. रूसी –

ऋषि को ही रूसी होती है, ऋषि लोग जटा रखते हैं, बाल कभी धोते नहीं हैं, उनकी जटा में रूसी हो जाती है।

51. Regular – मनुष्य गू जाने का कार्य ही Regular करता है।

52. र + अंक = Rank –

रंक के अंक होते हैं, राजाओं के कोई Rank नहीं होते हैं, क्योंकि उनके कोई अंक नहीं होते, क्योंकि किसी राजा को आँका नहीं जा सकता है।

53. Red + कुल = Ridicules – जो कुल रक्तपात करते हैं, वह Ridicules कहते हैं।

54. Russia = रसिया – ऋषियों का देश ही Russia है।

55. रजनी + ईश = रजनीश - रात का जो ईश्वर है, उसे रजनीश कहते हैं।

56. Re + पीट = Repeat –

जो आपको हाथ से नहीं मार सकते, वह बात को Repeat करके, आपको बार-बार आपके दिमाग में, चोट करते हैं।

57. रूह + ची = रुचि - रूह ही ची है। "ची" को चीन में आत्मा कहते हैं।

58. RAM & RSS –

"RAM" के बिना तो Computer और Mobile भी नहीं चलता है। जिन Computer एवं Mobile पर आज पूरी दुनिया चल रही है, उन Computer एवं Mobile में "RSS" feed होता है। अब "RSS" feed और "RAM" पूरे Technological System को चला रहे हैं। तो दुनिया Automatically RAM और RSS feed पर चल रही है। न आप RAM को हटा सकते हैं, और न RSS feed को हटा सकते हैं। दोनों को आप अलग नहीं कर सकते हैं। अगर RAM को कम किया, तो System ही Hang हो जाएगा। अगर आप RSS feed को हटा देंगे, तो RAM से संपर्क टूट जाएगा। RAM और Machine दोनों को जोड़ने का कार्य RSS feed का है और आपके Mobile, Computer का RAM कितना GB है, वह उतना तेज चलता है। यानि आप राम में अपना कितना "जी" भरोसे के साथ लगाते हैं, उतना आपका कार्य आसान होता है और तेजी के साथ होता है। राम से संपर्क में रहने के लिए आपको RSS से नाता जोड़ना होगा। क्योंकि RSS ही राम के सबसे करीब है। राम ने ही भारत का राज्य RSS को सौंपा है। राम के सहारे ही RSS ने सबको हराया है। क्योंकि जहाँ राम आते हैं, वहीं आराम होता है। अयोध्या में राम के आते ही सभी

अयोध्यावासियों ने विश्राम किया। लक्ष्मण जी की पत्नी उर्मिला तो चौदह वर्ष दरवाजे की चौखट पर एक पैर से खड़ीं रहीं। उर्मिला जैसा तप तो किसी ने भी नहीं किया। राम के आने से उनकी Wish पूरी हुई, और उर्मिला ने फिर विश्राम किया। क्योंकि एक बार जब आप अपनी Wish राम को अर्पित कर देते हैं, तो आप फिर विश्राम करते हैं, क्योंकि राम फिर आपकी Wish को पूरा करते है। तो आप अपने जी को भरोसे के साथ RAM में लगाते जाईए। और अपनी RAM का GB बड़ाते जाईए। और RSS feed के साथ, साथ निभाते जाईए। (G-जी, B-भरोसा)

59. रूह + जान = रुझान - जिसमें रूह और जान लगी हो, तो वह आदमी का रुझान बता देते हैं।

60. Rule + लड़ = Ruler -

Ruler पहले Rule बनाता है, फिर उन्हीं Rule से दूसरों से लड़ता है। इस तरह Ruler, Rule बना-बना कर दूसरों की जिन्दगी तंग कर देता है। इन्हीं रूलरों के बनाये नये-नये Rule से तंग आकर जनता रुल जाती है। रुलते-रुलते फिर आहों से भर जाती है, फिर आहों से तो बड़े-बड़े साम्राज्य ढह जाते हैं। इसलिए Ruler को उलटे-सीधे Rule बनाकर दूसरों की रूह से नहीं लड़ना चाहिए। क्योंकि शरीर से तो जीता जा सकता है, पर रूह से कोई नहीं जीत सकता है, रूह पर कोई Rule नहीं लगता है। रूह को आत्म कहा गया है, आत्म को Atom कहा गया है, Atom तो सबसे ताकतवर है, क्योंकि वह At Om यानि "ऊँ" के पास है, "ऊँ" परमात्मा का नाम है, तो वह परमात्मा के पास है, परमात्मा के सान्निध्य में है, अब जो परमात्मा के सान्निध्य में है, उससे कौन जीत सकता है। क्योंकि शरीर से कमजोर व्यक्ति आत्मा से बहुत मजबूत होता है। वह सदा परमात्मा की बनाई सृष्टि में परमात्मा का आशीष पाता है। इसलिए कम शरीरवाले पर जोर लगाना मूर्खता है, क्योंकि उसकी आत्मा फिर नहीं छोड़ेगी, और संपूर्ण साम्राज्य की नींव ही ढह जाएगी। इसलिए Rule बने सबके फायदे के लिए, न कि किसी के नुकसान के लिए। Rule बनाकर दूसरों को रुलाकर फिर Rule करना, यह परमात्मा के Rule के खिलाफ है। परमात्मा की खिलाफबाजी करनेवाले को कुदरत की पनाह में जाना पड़ता है। सारे Ruler इसी तरह फिर खाक में मिल जाते हैं। लोग उनको भूल जाते हैं। इसलिए Rule का उपयोग नापने के लिए किया जाए, न कि दूसरों को तापने के लिए।

61. Rome + आँच = रोमांच - जलते हुए Rome की आँच में Nero रोमांचित हो रहा था।

62. रग + Cut = रक्त -

रग पर Cut लग जाने से रक्त निकल आता है। रक्त कोई नाम नहीं है, यह रग पर लगे Cut को रग कट बोलते हैं, यही रग कट आगे चलकर रक्त हो गया।

63. रोना + ज्ञान देना = रोग - जब आदमी रोता है, और ज्ञान भी देता है, उसे रोग कहते हैं।

64. ऋचा + अर्ज = Recharge -

ऋचा कहते हैं वेद के मन्त्रों को। जिसमें परमात्मा से प्रार्थना की जाती है। अर्ज कहते हैं प्रार्थना को। ऋचा और अर्ज दोनों इसलिए किये जाते हैं, कि इन दोनों को, करनेवाला Recharge हो जाए। पुनः शक्तिशाली हो जाए। यानि परमात्मा से प्रार्थना करना कि, "परमात्मा हमें पुनः शक्तिशाली कर दे"।

65. रुष्ट = Roast -

जो रुष्ट हो जाता है, वह Roast हो जाता है। जब आदमी रुष्ट हो जाता है, तब उस पर लोग नमक मिर्च डालते हैं। जैसे Roast हुए, भुट्टे पर नमक मिर्च डालकर, खाया जाता है। Roast हुआ व्यक्ति रोता है और अस्त हो जाता है। रो + अस्त = Roast, रूह की ऊष्मा से जब व्यक्ति का मन टकराता है, तब उसका मन रुष्ट हो जाता है। रूह + ऊष्मा + टकराना = रुष्ट।

66. रूह + ठहर = रूठ -

रूह का ठहर जाना ही रूठ जाना होता है। दिल से काम लेनेवाले लोग ही रूठ जाया करते हैं। दिल में रूह रहती है, और रूह जब ठहर जाती है, तब उसको रूठ जाना कहते हैं। फिर रूठ जानेवाले का मिज़ाज रूखा हो जाता है। रूखे-रूखे रहते हैं - जैसे कि हो ही ना। जैसे कि पेड़ में से जब आत्मा निकल जाती है। तब पेड़ बिना पत्तों के, बिना हरियाली के, बिना हरी छाल के खड़ा रहता है। जिसे रुख कहते हैं।

67. राणी -

राणी केवल राणा की होती है। राजा की राणी नहीं होती है। महाराणी भी महाराणा की होती है। महाराजा की महाराणी नहीं होती है। राणी = रानी, महाराणी = महारानी, राणा = वह जो रण में जाए। राजा के साथ जो रानी शब्द लगाते हैं, वह रानी शब्द राणा के साथ लगाया जाता है, राजा के साथ रानी शब्द नहीं लगाते हैं।

68. रीति, रिवाज और रियाज -

ऋतु के अनुसार जो होता है, उसे रीति कहते हैं। रीति यानी रीतना। रीतना यानी खाली होना। जैसे वर्षा ऋतु में, आसमान से पानी खाली होता है। तो उस समय की रीति, अलग होती है। सर्दी, गर्मी के समय की ऋतु में, अलग-अलग रीति होती है। यही रीति फिर रीत बन जाती है, Re + त = रीत। यानी तन से दुबारा जिस क्रिया को किया जाए। इसलिए रीति को करने में, तन का ज्यादा महत्व है। मन से आपकी इच्छा भले ही, इस रीति को करने की न हो। क्योंकि दूसरों को दिखाई देना, चाहिए कि, मैंने भी रीति का पालन किया है।

Re + Was = रिवाज - जो पहले किया था, उसी को दुबारा करना। यानी वर्षा, सर्दी, गर्मी ऋतु के समय, जो हमारे पूर्वजों ने किया था। उसी को पुनः करना ही, रिवाज होता है।

Re + आज = रियाज - रियाज ही तो Re याज है। याज यानि याज्ञ। याज्ञ यानि यज्ञ। यज्ञ यानि अभ्यास। जब व्यक्ति "अ" से लेकर "ज्ञ" तक, पूरी शिक्षा प्राप्त कर लेता है, तब भी उस व्यक्ति को प्रतिदिन, उसका "अ" से "ज्ञ" तक पुनःअभ्यास करना होता है। यानी Re = पुनः, याज यानी ज्ञ तक अभ्यास करना। यही याज फिर आज बन गया। कि आज फिर दोहराना पड़ेगा। यानी अ से लेकर ज्ञ तक के वर्ण को, माला के द्वारा दोहराने को, वर्णमाला का अभ्यास कहते हैं। जिसे जप भी कहते हैं, ज को ज्ञ कहते हैं। तो जप यानी, ज्ञ तक पहुँचना। प यानी पहुँचना। इसलिए वर्णों का अभ्यास, उसी तरह से प्रतिदिन अनिवार्य है, जिस प्रकार से प्रतिदिन, साफ-सफाई का कार्य करना। जिससे विद्या की रक्षा होती रहती है। तो यह रीति, रिवाज और रियाज हैं।

69. Rich + आ = ऋचा -

ऋच, ऋच = ऋचा, ऋचा = ऋग्वेद के मन्त्र को ऋचा कहते हैं। ऋ = ऋषि। ग् = ज्ञान। वेद = विद्, विद्वान। ऋषि जो ज्ञान का विद्वान है, वही ऋग्वेद है। ऋषि के ज्ञान से भरा हुआ, विद्वान ही ऋग्वेद है। पहले वेद कंठस्थ होते थे, लिखित नहीं होते थे। तो जो ऋषि ऋचा के ज्ञान को जान गया है, वह ऋच यानी Rich कहलाता था। धनिक व्यक्ति Rich अब कहलाता है। तो धनिक होना आसान है, किन्तु ऋच होना सभी के बस की बात नहीं है। ऋच होने के लिए तपस्या, ध्यान, Meditation, इबादत करनी पड़ती है। Rich (धनिक) होने के लिए क्या करना पड़ता है ? यह सभी जानते हैं।

70. रो + मान + टिक = Romantic -

रोना भी आता है। जब दुल्हन की विदाई होती है। मान भी मिलता है समाज में। टिकती भी जन्म भर है। इसलिए रोमांटिक होती है।

71. राक्षस, मनुष्य एवं देवता -

राक्षस और कुछ मनुष्य, अपने जीवन को, उन्नत बनाने के लिए, तपस्या करते हैं। मनुष्य के द्वारा किए गए यज्ञ देवताओं को ऊर्जावान रखते हैं। यज्ञ करने पर, देवता पुरस्कार में, मनुष्यों को स्वर्ग का लालच देते हैं। किंतु वह भी, मनुष्य का शरीर छूटने के बाद। राक्षसों एवं मनुष्यों की, तपस्या को भंग करने का, संपूर्ण प्रयत्न देवता करते हैं। अन्यथा तपस्या सफल होने पर, राक्षसों एवं मनुष्यों को, अहंकारी कहकर, किसी भी प्रकार से, देवताओं के द्वारा राक्षसों एवं मनुष्यों का, वध कर दिया जाता है। देवता छल-कपट करके, किसी का भी जीवन, बरबाद कर देते हैं, और इसके बाद भी, मनुष्यों के द्वारा, देवताओं की पूजा, यथावत चलती रहती है।

72. रूह + मल = रूमाल - रूह का मल यानी पसीना जिससे पोछा जाता है, उसे रुमाल कहते हैं।

73. रह + Say = रहस्य -

आदमी दो ही, जगह पर रहस्य, रखता है। पहला, वह रहता कहाँ है ? दूसरा, वह कहता क्या है ? रहस्यमयी मनुष्य कभी, नहीं चाहता कि, कोई यह जाने कि, वह रहता कहाँ है ? वह अपने, रहने के स्थान को, रहस्यमयी रखना, चाहता है। दूसरा, वह मनुष्य, कभी नहीं चाहता है, कि कोई यह जान ले, कि वह क्या कहता है ? बस वह अपनी बात, कह देता है, और, छोड़ देता है कि, सब अपनी-अपनी, समझ के अनुसार, समझ ले।

74. राह + Stay = रास्ते -

जिस राह में आप, Stay करते हुए जाते हैं। उसे रास्ते कहते हैं। राह + Stay = रास्ते।

75. रूह-ब-रूह = रूबरू - एक रूह का दूसरी रूह से साक्षात्कार रूबरू कहलाता है ।

76. राज + नायक = राजनायिक -

जब आप राज के नायक, हो जाते हैं, तब आप राजनायिक, हो जाते हैं। राज + नायक = राजनायिक। किसी व्यक्ति के राजनायिक बनने से पहले ही, उससे बात कर लेनी चाहिए। एक बार राजनायिक बनने के बाद, फिर वह व्यक्ति, बातें छिपा लेता है। और, Diplomat हो जाता है। उस व्यक्ति को निर्देशित किया जाता है कि, “Dip लो मत”। यानी किसी भी बात में, गहराई में मत जाओ। Dip + लो + मत = Diplomat.

77. रूप + अंत + रण = रूपांतरण -

रूप का अंत, रण में हो जाता है। इसे ही रूपांतरण कहते हैं। जब व्यक्ति रण में, जाने के लिए, तैयार होने लगता है, तब वह व्यक्ति, कवच पहनता है, चेहरे पर काले रंग को, मलता है। अपने बालों को, छोटा कर देता है। इस तरह से, वह व्यक्ति अपने, बाहर के रूप को, बदल देता है। अन्दर से भी वह व्यक्ति, बदल जाता है। प्रेम की जगह, हिंसा आ जाती है। शांति की जगह, क्रोध आ जाता है। इस तरह से व्यक्ति का, रूपांतरण हो जाता है।

78. रचयिता -

रचना को रचनेवाला रचयिता होता है। रचयिता स्वयं का अनुभव शब्दों में लिखता है। रचयिता की रचना केवल एक या दो होती हैं। जिसपर लिखा रहता है, "विरचित"। रचयिता हमेशा शास्त्रों की रचना करता है।

79. रूह + रल = Rural -

रूह जहाँ रलती है, उसे Rural कहते हैं। रूह + रल = Rural. ऊर्जा पर जहाँ Ban लगा दिया जाता है, उसे Urban कहते हैं। ऊर्जा + Ban = Urban. Rural में रहनेवाले हमेशा कहते हैं, गाँव में तो आत्मा बसती है। Urban में रहनेवाले हमेशा इस वजह से परेशान रहते हैं कि, City में हमेशा कुछ न कुछ Ban होता रहता है कि, "आज से यह नहीं कर सकते हैं, यह Ban किया जाता है"। Rural में अपनी ऊर्जा की पूर्णतः को व्यक्ति प्राप्त करता है। जिस प्रकार जंगल में सभी वनस्पति एवं जानवर अपनी-अपनी संपूर्ण ऊर्जा से जीते हैं। Urban में व्यक्ति की ऊर्जा को दबा दिया जाता है, काट दिया जाता है, बुझा दिया जाता है। इसीलिए Urban में रहनेवाले व्यक्ति अपनी संपूर्ण ऊर्जा से नहीं जी पाते हैं।

80. रूह + आँसू = रुआँसू -

रुह से जब आँसू निकलते हैं, उसे रुआँसू कहते हैं। भाव की दशा में जो आँसू निकलते हैं, वह आँसू आत्मा से निकलते हैं। इसीलिए इन आँसुओं के निकलते समय, रुह काँपने लगती है, जिससे शरीर, मन भी काँपने लगता है।

81. राती + क्रीड़ा = रतिक्रीड़ा -

इन्द्र के पास चार अप्सराऐं हैं। मेनका = M। उर्वशी = U। रम्भा = R। तिलोत्तमा = T। MURT = मूर्त। सभी व्यक्तियों की कल्पना में इन चार परियों की मूर्त की कल्पना रहती है। व्यक्ति इन्हीं चार परियों की मूर्त से कल्पना में रतिक्रीड़ा करता है। रात को जो क्रीड़ा करते हैं, उसे राती क्रीड़ा कहते हैं। यही राती का अपभ्रंश रति है। राती + क्रीड़ा = रतिक्रीड़ा। रात को परियों की कल्पना कर कल्पना में परियों की मूर्त बनाता है, फिर उसी बनी हुई मूर्त के साथ रतिक्रीड़ा करता है।

82. Royal + Tea = Royalty -

जब Royal आदमी के पास जायें, तब Royal आदमी के द्वारा, Offer की गई Tea जरूर पिएं। यही आपकी Royalty निर्धारित करेगी। Royal + Tea = Royalty. इसीलिए Royal लोग, हमेशा यही कहते हैं, "आज शाम की चाय, आप हमारे साथ पियें"।

83. रो + मान + चित्त = रोमांचित -

व्यक्ति तभी रोमांचित होता है, जब व्यक्ति रोता है, और मान को प्राप्त होता है। रो + मान + चित्त = रोमांचित। व्यक्ति का चित्त रोने से, और मान देने-लेने से, रोमांचित हो जाता है।

84. Rum + मन = रमण – Rum पीने के बाद मन में रमण करने के विचार आते हैं।

85. रूह + अड़ी = रूढ़ी -

रूह में जो अड़ी है, वही तो रूढ़ी है। रूह + अड़ी = रूढ़ी। जो बात आत्मा में घर कर जाती है, वही बात रूढ़ी बन जाती है। वह बात उस व्यक्ति की, आत्मा में रहती है और, जन्म-जन्म तक जाती है। इसलिए रूढ़ी वाला व्यक्ति, Rude हो जाता है। रूढ़ी = Rude.

86. ऋषि + वत = रिश्वत -

रिश्वत देकर रिश्ते बनाए जाते हैं और रिश्वत से बने इन रिश्तों को, रिश्तेदार कहते हैं। घूस देकर ही कहीं भी, घुस सकते हैं। इन घूस देकर घुसे लोगों को, Ghost कहते हैं।

87. रख + खेल = रखैल – रखा जाता है, जिसे खेलने के लिए, उसे "रखैल" कहते हैं।

88. ऋचा = Rich -

वेद की ऋचा ही व्यक्ति को Rich बनाती है। ऋचा = Rich. इसलिए वेद की ऋचाओं से, व्यक्ति यज्ञ करता है, क्योंकि यज्ञ करने पर, भगवान विष्णु प्रसन्न हो जाते हैं, और व्यक्ति को धन देकर Rich बना देते हैं। क्योंकि धन की देवी लक्ष्मी हैं, और देवी लक्ष्मी भगवान विष्णु की, धर्मपत्नी हैं।

ऋचा + ज्ञान = ऋग्वेद -

ऋषियों के ज्ञान को "ऋचा" कहा जाता है, ऋचा का ज्ञान जिसमें होता है, उसे ऋग्वेद कहते हैं। बाकी अन्य यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वेद में मन्त्र हैं, क्योंकि इसमें मन का ज्ञान होता है। मन + त्र = मन्त्र। त्र को तर कहते हैं, जब व्यक्ति तर होता है, पानी पीकर के तब उसमें से जो निकलता है, उसे मन्त्र कहते हैं। मन + तर = मन्तर।

89. राव + वण = रावण -

जो राव है वण का, वह है "रावण"। राव + वण = रावण। वण = वन। जो राजा है वन का, और वह है रावण। वन के रखवाले को रावण बोला जाता है।

90. रूह + द्रवित = रुद्र - रूह जब द्रवित हो जाती है, तब रुद्र कहलाती है।

91. राम + चरित + मान + नस = रामचरितमानस - राम के चरित का मान, नस-नस में है।

92. रहना + अष्ट्र = राष्ट्र -

रहते हैं आठ प्रहर Aim, जागने में रत जिसके लिए, उसे राष्ट्र प्रेम के लिए, जाग्रत होना कहते हैं। रहना + अष्ट्र = राष्ट्र। प्रहर + Aim = प्रेम। जाग + रत = जाग्रत। जिनका Aim यही होता है कि, आठ प्रहर जागते हुए रहना है। यानी आठों प्रहर जागकर रहना ही, जिसका Aim होता है, वही राष्ट्र प्रेम के लिए जाग्रत, होना होता है। तीन घंटे का एक प्रहर होता है, इसलिए एक प्रहरी की Duty, एक प्रहर के लिए होती है, और आठ प्रहर के लिए, आठ प्रहरी होते हैं।

93. Re + Venue = Revenue -

Venue का पुनः-पुनः उपयोग करने पर Revenue प्राप्त होता है। Re + Venue = Revenue. इसलिए बार-बार उपयोग किए जाने वाले, Ven को New बनाकर रखना पड़ता है। Ven = वाटिका। जितना Ven को New बनाकर रखेंगे, उतना Revenue मिलेगा। इसी New बनाकर रखने को ही, साफ-सफाई रखना कहते हैं। Ven + New = Venue. Ven = कार्यक्रम स्थल।

94. रोब + Boat = Robot -

रोब पहनकर बैठा व्यक्ति, और Boat में बैठा व्यक्ति, यह दोनों ही "Robot" कहलाते हैं। रोब + Boat = Robot. रोब पहनकर बैठा व्यक्ति, अपने रोब में अकड़कर बैठा रहता है। और, Boat में बैठा व्यक्ति भी, किसी चीज़ को पकड़ कर, अकड़ा हुआ बैठा रहता है।

95. राम + कृष्ण = हरि -

राम और कृष्ण के मिलन को, ध्यान से देखने पर हरि मिलता है। राम + कृष्ण = हरि। राम = दाहिनी नासिका में स्थित सूर्य नाड़ी। कृष्ण = बाईं नासिका में स्थित चंद्र नाड़ी। सूर्य नाड़ी एवं चंद्र नाड़ी में से, जानेवाली श्वास के मिलन पर, देखते रहने से ही, परमात्मा का अनुभव होता है। परमात्मा के इस अनुभव को, "हरि आला" कहते हैं। अतः ध्यान में बैठकर, राम और कृष्ण को देखते रहो, आपको हरि की प्राप्ति हो जाएगी। सभी ध्यान करनेवालों ने, इसी तरह से ध्यान करके, हरि को प्राप्त किया है। यानी बैठो और आनेवाली श्वास, तथा जानेवाली श्वास को देखो, आपको ईश्वर का ज्ञान हो जाएगा। राम कृष्ण के द्वारा, हरि को प्राप्त करने के लिए, ध्यान करने की यह विधि, संपूर्ण विश्व में उपयोग की जाती है।

96. रूह + दरवाजे + अक्ष = रुद्राक्ष -

रूह के दरवाजे अक्ष हैं। आप आंखों से किसी की भी, रूह में झांक सकते हैं। रूह + दरवाजे + अक्ष = रुद्राक्ष। यानी रूह की दर अक्ष है। इसलिए किसी की रूह को जानने के लिए द्राक्ष खिलाए जाते हैं। दर + अक्ष = द्राक्ष। द्राक्ष को खाने से, व्यक्ति की रूह की बात, व्यक्ति की आंखों में, साफ दिखाई देने लगती है। द्राक्ष की Wine बनती है, Wine को पीने से, व्यक्ति के रूह की बात, आंखों में अपने आप आ जाती है। और मुंह से बोली जाने लगती है। इसलिए जो व्यक्ति द्राक्ष से बनी हुई, Wine नहीं पीना चाहता है, या Wine को छोड़ने का संकल्प लेता है, वह व्यक्ति रुद्राक्ष की माला को पहनता है। रुद्राक्ष की माला व्यक्ति को, द्राक्ष से बनी हुई Wine से, बचाकर रखती है और, व्यक्ति की रूह के संकल्प को, मजबूत रखती है। इसलिए रुद्राक्ष की माला को, पहनने का पहली Condition यही है कि, रुद्राक्ष की माला को पहनने वाला, रुद्राक्ष की माला को पहनने के बाद, Wine को नहीं पी सकता है। और कोई अन्य व्यक्ति भी, उसको Wine को पीने को, कह नहीं सकता है। इसलिए रूद्राक्ष की माला को पहनने से, व्यक्ति की रूह, मन, शरीर एक, सामंजस्य में रहते हैं और, स्वस्थ तथा सुन्दर रहते हैं। क्योंकि किसी व्यक्ति को, Wine पीते हुए देखकर, भगवान शिव की रूह के दरवाजे, अक्ष से आंसू निकलते हैं। यही आंसू ही रूद्राक्ष कहलाते हैं।

97. रुह + जान = रुझान –

रुह को जानने वाले ही, रुझान को बता सकते हैं। रुह + जान = रुझान। इसलिए तो कहते हैं कि,

किसी की रुह को जान लेने पर, उसके रुझान के बारे में, पता चल जाता है। इसलिए जिसकी रुह को, हम जान लेते हैं, उसे हम, 'जान' कहकर सम्बोधित करते हैं। और उसके नाम के पीछे, 'जान' शब्द लगा देते हैं। जैसे - भाईजान, आपीजान, अम्मीजान, अब्बाजान, मामूजान, फूफाजान, फूफीजान, मामीजान, दादूजान, दादीजान। इन सबके रुझान को हम जानते हैं। अगर आप किसी की रुह को, जानना चाहते हैं तो, आप उसकी क्यारी को देखिए। उसने अपनी क्यारी में, क्या-क्या लगा रखा है। क्यारी में लगे हुए पौधों के माध्यम से, आप किसी की रुह को जान सकते हैं। इसे ही 'जानक्यारी' कहते हैं। जो अपभ्रंश होकर 'जानकारी' हो गई है।

जान + क्यारी = जानकारी –

क्योंकि किसी की क्यारी से, यह पता चल जाता है कि, वह खाता क्या-क्या है ? और किसी की खाने की प्रिय वस्तु, उसको भेंट करके, आप उसकी रुह तक पहुँच जाते हैं, और आप उसकी रुह को जान लेते हैं। इसलिए क्यारी का एक उच्चारण, Query सुनने को मिलता है।

क्यारी = Query - 'Quer' -

पूर्तगाली भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ होता है, 'वह चाहता है'। इसी Quer को बाद में Query बोला गया। और 'En' एक अंग्रेजी Prefix है, En का Full Form होता है, 'Within', 'in'. तो Query के आगे En लगाकर, शब्द बना 'Enquery', जिसे बाद में 'Enquiry' लिखा गया।

En + Query = Enquiry –

यानि किसी की क्यारी में, क्या-क्या पौधे लगे हैं, इससे उसके बारे में, जानकारी मिल जाती है। कि वह 'क्या-क्या चाहता है' ? इसलिए किसी से मिलने से पहले, हम उसके बारे में, Query निकालते हैं। कि 'उसे क्या-क्या पसंद है' ? क्योंकि अब तो क्यारियाँ होती नहीं हैं, और सीधा पूछ भी नहीं सकते हैं, अतः उसका Search Data, किसी Company से, Purchase कर लेते हैं, और उस Search Data के माध्यम से, उसके बारे में जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। आजकल इसे ही रुझान कहा जाता है। क्योंकि आजकल सभी की रुह, Data में लगी हुई है, और अपनी जान को खपा रही है, और अपनी सारी जानकारी, Data वालों के यहाँ पर, अनायास ही जमा करवा रही है। उसे पता ही नहीं है कि, इसी Data से उसकी रुह को जान लेते हैं, और उसके बारे में, सारी जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। और इसी Data का उपयोग करके, उसके रुझान को समझ लेते हैं।

98. रव + वण = रावण - रावण =

भय को उत्पन्न करनेवाली वाणी। रव + वण = रावण। रव = भय। वण = वाणी। रावण की वाणी को जो सुन लेता था। उसके मन मे भय उत्पन्न हो जाता था। इसलिए रावण की वाणी के भय की, बहुत-सी किंवदंतियां प्रचलित हैं।

99. Response + Bill + Tea = Responsibility –

Response करता है जो, Bill देने के लिए Tea का, और Bill भर देता है Tea का, उसी को ही Responsibility दी जाती है कि, यह सभी Bill भर देगा। Response + Bill + Tea =

"ध्यानाचार्य" ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

Responsibility इसलिए पहली मुलाकात में चाय पीने को बोला जाता है कि, 'चलो चाय पीते हैं'।

100. राय + लेता = रायता -

रायता तभी फैल जाता है, जब व्यक्ति हर किसी से राय लेता है। राय + लेता = रायता। व्यक्ति जब बहुत से लोगों से, राय लेता है, तब उस ली गई राय से, रायता फैल ही जाता है। यानि व्यक्ति का वह कार्य, Fail हो जाता है, और पूरा नहीं हो पाता है। Fail = फैल। यानि जब व्यक्ति अपने कार्य को, फैला लेता है, तब व्यक्ति का कार्य Fail हो जाता है। और देखनेवाले यही कहते हैं कि, 'अरे ! यह सब क्यों फैला रखा है'।

100. रस + See = रस्सी –

रस से तुम किसी को See कर सकते हो। रस + See = रस्सी। रस से व्यक्ति बंधा हुआ है, अब किस रस से बंधा हुआ है, यह तुम देख सकते हो। जो व्यक्ति जिस रस से बंधा हुआ है, वह व्यक्ति वहीं मिलेगा, जहां वह रस रखा हुआ है।

101. रावण दस सिर = रावण की दस इन्द्रियाँ -

रावण ने अपनी दस इन्द्रियों के, मुंह खोल कर रखे हुए थे। इसलिए रावण के दस मुख थे, जो दस इन्द्रियों के खुले हुए मुंह थे। तो जो इन्द्री जो भी मांगती थी, रावण उस इन्द्री की मांग को, पूरा कर देता था। क्योंकि प्रत्येक इन्द्रियों के लिए, दो-दो हाथ थे। प्रत्येक इन्द्रियों के अपने-अपने, हाथ होने के कारण, रावण के बीस हाथ थे। किन्तु रावण के पैर दो ही थे। और वह दो पैर भी रावण ने, शनि की पीठ पर रखे हुए थे। यानि रावण का मन शनि के न्याय से, भयभीत रहता था। और न्याय को होने ही नहीं देता था। इस तरह से रावण अपनी इन्द्रियों के, विषयानुसार उन इन्द्रियों को, वस्तुओं को उपलब्ध करवाता रहता था। रावण की नाभि में अमृत था, इसलिए रावण निश्चिंत था। किन्तु अतृप्त इन्द्रियों के कारण, रावण का अमृत भी सूख गया।

102. Re + Wind = Rewind -

Wind के दुबारा चलने पर, व्यक्ति की पुरानी यादें Rewind हो जाती हैं। Re + Wind = Rewind. हवा के चलते ही, व्यक्ति में पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं। और व्यक्ति की स्मृति में से, पुरानी तस्वीरें निकलकर, मन के मंच पर चलने लगती हैं। यानि व्यक्ति की स्मृति में से, तस्वीरों को निकालने के लिए, ठंडी हवा का चलना जरूरी है, और अब ठंड शुरू हो गई है।

103. रूह + जान = रुझान -

रूह या जान ही रुझान बताते हैं। रूह + जान = रुझान। अगर आप किसी की, रूह या जान को समझते हैं, तो आप उसके रुझान को भी पहचान जाएंगे।

104. रक्ष + Us = राक्षस –

मनुष्यों ने देवताओं से, अपनी रक्षा करने के लिए, राक्षसों को नियुक्त किया था। रक्ष + Us = राक्षस। Us = हमारी। रक्षा करो हमारी से शब्द बना है, राक्षस। देवता भिन्न-भिन्न वेष को धारण करके, मनुष्य की कन्याओं के साथ, रमण किया करते थे। देवता भिन्न-भिन्न प्रकार से, मनुष्यों की फसलों को नष्ट करते थे। देवता भिन्न-भिन्न प्रकार से, मनुष्यों के जल स्रोतों को, भ्रष्ट कर देते थे। यानि देवता

भिन्न-भिन्न प्रकार से, मनुष्यों को परेशान किया करते थे। तब मनुष्यों ने राक्षसों को, अपनी रक्षा करने के लिए नियुक्त किया। राक्षसों का भोजन मांसाहारी था, और राक्षस मदिरापान भी करते थे। अतः मनुष्यों के द्वारा, राक्षसों को मांस एवं मदिरा, उपलब्ध करवाए जाते थे। आजकल जिस प्रकार से, मनुष्यों की रक्षा करने वाले, सैन्यदल भी मदिरापान एवं मांसाहार करते हैं। और आजकल भी मनुष्य के द्वारा, सैन्यदलों को मदिरा एवं मांस, उपलब्ध करवाया जाता है। देवता अपने भिन्न-भिन्न क्रियाकलापों के द्वारा, मनुष्य को परेशान करके, देवता कहते थे कि, 'हमारी पूजा करो, अन्यथा अपने कर्म को भुगतो'। यानि देवता सबकुछ मनुष्य के, कर्म पर डाल देते थे। और देवता अपनी भक्ति कवारने के लिए, डर एवं लोभ दिखाते थे। जब राक्षस अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए, तपस्या करते थे, तब देवताओं के द्वारा, राक्षसों की तपस्या भंग करने के लिए, कई तरह से विघ्न डाले जाते थे।

105. राजा + नेतृत्व = राजनेता -

स्वतंत्रता से पहले और स्वतंत्रता के बाद भी राजा लोग अपने लोगों को खड़ा करवाकर चुनाव लड़वाते थे। राजाओं का नेतृत्व करने के कारण चुनाव लड़ने वाले यह लोग ही राजनेता कहलाते हैं। राजा + नेतृत्व = राजनेता। क्योंकि राजा लोग अपने अहंकार के कारण, दर-दर Vote मांगने नहीं जाते थे। इन राजनेताओं की निष्ठा, राजा और राज्य के प्रति होती थी। किंतु अब तो राजा और राजा के राज्य की, भावना लगभग समाप्त हो गई है। और अब धीरे-धीरे राष्ट्र की भावना बन रही है, तब इन राजनेताओं को, राजनेता के स्थान पर राष्ट्रनेता कहकर, संबोधित करना चाहिए। राष्ट्र + के + नेता = राष्ट्र। पद एवं गोपनीयता की शपथ, 'भारत राष्ट्र' के नाम की लेनी चाहिए। तब इन लोगों में राष्ट्र के लिए भावना जगेगी, और राष्ट्र के लिए निष्ठापूर्वक कार्य करेंगे। जिससे राष्ट्र की उन्नति और विकास होगा।

106. रुद्र + अक्ष = Rudra Aax -

रुद्राक्ष को ही "Rx" कहा जाता है। रुद्र + अक्ष = Rudra Aax. Rudra Aax = Rx. क्योंकि महामृत्युंजय मंत्र को, रुद्राक्ष की माला से जपा जाता है। इसलिए रुद्राक्ष (Rudra Aax) का, अप्रभंश ही Rx है।

107. Rome + आंच = रोमांच -

Rome की आंच में Nero को, रोमांच आ रहा था, Rome + आंच = रोमांच। क्योंकि Rome जल रहा था, और Nero बंसी बजा रहा था। इसी को कहते हैं कि, मस्तराम मस्ती में, आग लगे बस्ती में। Rome की आंच जब चित्त में जाती है, तब Nero का चित्त रोमांचित हो जाता है। Rome + आंच + चित्त = रोमांचित। यानि व्यक्ति के रोम-रोम में, जब श्वास की धौंकनी से, आंच हो जाती है, और व्यक्ति के चित्त में फ़ैल जाती है। रोम-रोम + आंच + चित्त = रोमांचित। तब व्यक्ति का चित्त रोमांचित हो जाता है। इसके बाद व्यक्ति के रोम-रोम खड़े हो जाते हैं। जिसे रोंगटे खड़े हो जाना कहते हैं, यानि Goosebumps होना कहते हैं।

S

1. सुर + नाम = Surname -

सरनेम को अगर हम सुरनाम पढ़ें। संतान की प्राप्ति सुर (देवता) के वरदान से होने पर उन देवता के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए सुर का नाम संतान के नाम के साथ लगाया जाता था। यही सुरनेम कालान्तर में Surname हो गया।

2. सर + Head = सरहद -

सर ही Head है। राज व्यवस्था के समय राज्य की सीमा पर शत्रु पक्ष के सैनिकौं के सिरों से दीवार बनाई जाती थी। यह सीमा की दीवार सर से बनी होती थी, इसलिए इसे सरहद कहते थे। जब भी कोई बात हद से ज्यादा हो जाती है, तो उस समय कहते हैं, बात सर के ऊपर से निकल गई। या फिर कहते हैं, पानी सर तक आ गया है। यानि सर को सीमा माना गया है, इसलिए कहते हैं, हद कर दी आपने। सर और Head एक ही हैं, इसलिए सरहद है।

3. Sons + कृति = संस्कृति -

Sons (पुत्रों) के लिए जो कृत की जाए, वह संस्कृति है। हर पिता अपने पुत्रों के लिए जो भी कृत करता है, वह संस्कृति कहलाती है।

संस्कार + रीति = संस्कृति -

संस्कार और रीति दोनों को मिलाकर, संस्कृति बनाते हैं। संस्कार + रीति = संस्कृति। Sons के कार्य ही संस्कार कहलाते हैं। Sons + कार्य = संस्कार। पृथ्वी की ऋतु ही तो रीति कहलाती है। ऋतु = रीति। पृथ्वी की अलग अलग ऋतु में, अलग अलग रीति होती हैं, Sons के द्वारा इन इन रीति में, जो जो कार्य किए जाते हैं, वह संस्कृति कहलाते हैं। Sons + कृति = संस्कृति। क्योंकि उनके Sons भी, उस उस ऋतु में होनेवाली, उस उस रीति को देखकर, वैसा वैसा ही कार्य करेंगे। इस तरह से यह एक, संस्कृति बनती जाएगी। संसार की सभी संस्कृतियां इसी तरह से, संस्कार एवं रीतियों को मिलाकर ही बनी हैं। यही रीतियां ही उस व्यक्ति के, संस्कार बताती हैं। धर्म का संबंध स्त्री की ऋतु से है, इसलिए सभी धर्म एक हैं और, पांच दिन के धार्मिक आयोजन, संपूर्ण विश्व में होते हैं। किन्तु रीतियों का संबंध, पृथ्वी की ऋतुओं से है, इसलिए पृथ्वी की ऋतुओं की, भिन्नता के कारण, संपूर्ण विश्व में संस्कृतियां भिन्न भिन्न हैं। आध्यात्म और धर्म को,एक मान लिया गया है। किन्तु आध्यात्म एवं धर्म दोनों में भिन्नता है। आध्यात्म संपूर्ण ब्रह्माण्ड में एक सा है, क्योंकि आध्यात्म ही है जो, आओ ध्यान करें आत्म के द्वारा की, बात बताता है। यानी जब आकर ध्यान करती है आत्मा, तब उसको आध्यात्म कहते हैं। आओ + ध्यान + आत्म = आध्यात्म।

4. साईस + टमटम = System -

साईस जब टम-टम चलाता है। उसे System कहा जाता है। पहले जमाने में, Bus-Stand के बाहर, Railway Station के बाहर, साईस लोग अपनी-अपनी, टम-टम लेकर खड़े रहते थे। जब जिसका Number आता था। वही साईस अपनी टम-टम को, लेकर आगे बढ़ जाता था। इस तरह साईस

लोगों के द्वारा, अपनी-अपनी टम-टम को, ले जाने को System कहते हैं।

5. शव + बर = Shower –

भारत में शव को बारने (जलाने) के बाद जो स्नान किया जाता है, उसे Shower कहते हैं। शव जलाने का स्थान नदी किनारे होता है।

6. शक्कर + कंद = शकरकंद -

शक्कर बनती है जिस कंद से, उसे कहते हैं शकरकंद। दुनियाभर में शकरकंद की शक्कर बनती है। केवल भारत में शक्कर गन्ने की बनती है। शकरकंद से बननेवाली शक्कर सेहत के लिए फायदेमंद होती है। गन्ने से बननेवाली शक्कर सेहत के लिए हानिकारक होती है। शकरकंद को ही Sugar Candy (शक्करकंदी) बोलते हैं।

7. सत + त्य = सत्य - सत (परमात्मा) जो त्य करता है, वह सत्य है।

8. सखा = खास - जो खास होते हैं वही सखा होते हैं। जैसे श्रीकृष्ण के लिए सुदामा खास थे, इसलिए उनके सखा थे।

9. सखी = खीस -

जो सखी होती है, वही खीसे (जेब) में हाथ डाल सकती है। पत्नी ही पति की सखी होती है, जो पति के खीसे में अपना हाथ डालने का हक रखती है।

10. शिला + न्यास = शिलान्यास -

शिला पर न्यास (Trust) करना ही शिलान्यास कहलाता है। भगवान राम ने शिला रूपी अहिल्या पर Trust (विश्वास) किया। यही पहला शिलान्यास था। तबसे शिला पर कुछ न कुछ लिखा जाने लगा। उस लिखे पर ही विश्वास करना और उसे सच मानना ही पड़ता है, इसलिए कहते हैं कि, "पत्थर की लकीर है"। इतिहासकार भी इन्हीं शिलालेख को पढ़कर शिलालेख पर Trust करके, शिलालेख से ही इतिहास लिखते हैं। जिस पर हम पढ़नेवाले भी Trust करते हैं। यही शिलान्यास है।

11. स्व ÷ Earn = स्वर्ण -

स्वयं के द्वारा जो Earn करता है। उसके लिए वही स्वर्ण होता है। खुद की मेहनत से जो कमाता है, उसके लिए वही सोना, उसी से वही चैन से सोता है।

12. श्री 108 -

कहीं पर भी कभी भी लोग अक्सर एक प्रश्न पूँछते हैं कि "यह आप लोग श्री 108 क्यों लगाते हो" ? आज इसका उत्तर सामने आया, सो आपको बता रहा हूँ – "श्री 108 " नवरात्रि में 9 दिन। एक दिन में 24 घण्टे। एक रात्रि 12 घण्टे की। 9 दिन और 12 घण्टे को गुणा करने पर 9 X 12 = 108 यह आता है। यह है 108 का रहस्य। नोंवे दिन लक्ष्मी जी की पूजा होती है। लक्ष्मी जी यानि "श्री" यानि 12 घण्टे रात्रि का पूजन 9 दिन तक करने से श्री यानि लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इसलिए जिसके पास लक्ष्मी होती है, उसको श्रीमंत या श्रीमान् कहते हैं। यानि श्रीमंत का मतलब की जिसके पास लक्ष्मी यानि धन होगा उसी की बात मानी जाएगी। श्री + मंत = श्रीमंत - यानि जैसे जिसके पास धन होता है और वह दुकानदार को धन देता है। दुकानदार उसकी बात मानता है और उसे ही वस्तु प्रदान करता है

। उसी प्रकार श्री + मान् = श्रीमान् - यानि जिसके पास श्री यानि धन होता है, उसी को मान मिलता है। तो यह श्री 108 दोनो के लिए लगाया जाता है, यानि बात भी मानी जाती है और मान भी दिया जाता है। इसलिए यह श्री 108 सम्मानपूर्वक लगाया जाता है। यानि सम्मान का प्रतीक है। F M Radio की Frequency 108 पर पूर्ण हो जाती है, और Thermometer की आखिरी गणना भी 108 तक होती है, उससे आगे नहीं जाती है। संत-महात्मा श्री 108 अपने नाम के आगे लगाते हैं।

13. Sun + अंत = संत –

Sun (सूर्य) का जब अंत हो जाता है, तब संत काम आते हैं। सूर्य का अंत यानि सूर्य के डूब जाने पर अंधेरा छा जाता है, व्यक्ति डर जाता है, काम बंद कर देता है, यात्रा बंद कर देता है, भोजन बंद कर देता है, व्यक्ति का दिमाग सो जाता है, शरीर थक जाता है। ऐसे ही व्यक्ति के जीवन का सूर्य जब बंद हो जाता है। यानि व्यक्ति के जीवन में जब अंधेरा हो जाता है। सब काम बंद हो जाते हैं, वह व्यक्ति घोर निराशा में चला जाता है। उसे सहारा देने वाला कोई नहीं होता, तब उसके जीवन में संत का आगमन होता, संत के प्रकाश में वह रास्ता पाता है। अपने काम करता है। संत उसके घोर संकट के समय में काम आते हैं। उस व्यक्ति की मदद करते हैं। यही काम संतों का है। इसलिए संत साधना और तपस्या करके अपना तेज बड़ाते रहते हैं, ताकि वह किसी राह भटके को रास्ता दिखा सके। उसकी साधना से किसी का जीवन संवर जाए। इसलिए संत जो हैं, वह त्यागी होते हैं, वह अपनी इच्छाओं को छोड़कर, दूसरों की इच्छाओं की पूर्ति के लिए अपना सब त्याग कर देते हैं। यही संत होते हैं, जो जीवन के अंधेरे में उजाला बनकर मार्ग प्रशस्त कराते हैं। इसलिए जब सूरज डूबता है, तो उसका रंग, संत के चोले के रंग की तरह होता है। यानि उसका यही संकेत होता है कि, “अब मैं जा रहा हूँ और अब मेरे स्थान पर संत रंग धारी कपड़े पहने हुए संत आपको आगे का मार्ग दिखायेगें”। जैसे रात्रि को चन्द्रमा मार्ग दिखलाता है, दीपक मार्ग दिखलाता है। उसी प्रकार जीवन के अंधकार में संत मार्ग दिखाते हैं।

14. शुद्धि-उपास्य -

उपासना करने से शुद्धि हो जाती है। शुद्ध होने से वह ऊपर के आसन पर बैठ जाता है। बाल्मीकि ने उपासना की और शुद्ध हो गए। डाकू के आसन से ऊपर उठकर महर्षि के आसन पर बैठ गए।

15. सु-सु + मना = सुष्मना –

सु-सु कर लेना चाहिए, मन को शांत करने के लिए, क्योंकि सुष्मना वह नाड़ी है, जो हृदय से जुड़ी है और हृदय पर जोर पड़ने से पहले ही सु-सु (पेशाब) कर लेनी चाहिए।

16. Sons + कार (कार्य) = संस्कार –

दो ही तरह से Sons (पुत्रों) को संस्कार दिये जाते हैं। एक Car देकर और दूसरा कार्य देकर।

17. सुकड़ना -

सु-सु (पेशाब) आने पर सुकड़ना पड़ता है। पेशाब आने पर आदमी सुकुड़-सुकुड़ कर चलता है।

18. सर + आफत = शराफत - सर पर आफत आने पर शराफत आ जाती है।

19. Slow + गण = Slogan -

Slow गण लोगों को तेज करने के लिए Slogan बनाए जाते हैं। जिससे उनमें तेजी आए।

20. Suffering -

सफर या Ring यह दोनों ही मनुष्य को Suffering में डालते हैं। यानि चक्कर मे फसना या सफर मे चलना। दोनों ही कष्टदायक होता है।

21. Shoe + रक्षा = सुरक्षा -

Shoe (जूते) मनुष्य की रक्षा करते हैं। कांटे से, कंकड़ से, धूप से, धूल से।

22. Shoe +भगवान = शुभ -

Shoe ही भगवान हैं। इसीलिए Shoe को शुभ माना जाता है। किसी के जूते दिखना ही शुभ होता है। इसलिए फिल्म अभिनेता राजकुमार के जूते पहले दिखाए जाते थे।

23. शेख -

गुरु नानक देव जी मक्का गये थे। वहाँ उन्होंने शिष्य बनाए, जो आज शेख कहलाते हैं, क्योंकि शिष्य ही से सिख बना और सिख से शेख बना।

24. स + मन + वय = समन्वय - जो मन है और जो वय (शरीर) है, उनका एक होना ही समन्वय है।

25. Sun + ताप = संताप -

Sun (सूर्य) कह लो, चाहे ताप (तापमान) कह लो, एक ही बात है। क्योंकि Sun में ही ताप है और ताप ही सूर्य है। संतों में सूर्य के जैसा ताप होता है। इसलिए संत लोग सूर्य को तापते हैं। यानि संत लोग सूर्य नमस्कार करते हैं। जिससे उनके अन्दर सूर्य जैसा ताप आ जाता है।

26. Top + मान = तापमान -

जिसमें ताप होता है, उसी का मान किया जाता है। इसलिए सूर्य के ताप का मान किया जाता है, क्योंकि सूर्य Top पर है।

27. Sick + अस्त = शिकस्त -

Sick यानि बीमार हो जाना और अस्त यानि ढल जाना - इन्हीं दो वजहों से आदमी शिकस्त पाता है।

28. संत + ओष = संतोष -

संत और ओष का स्वभाव एक जैसा होता है। पवित्र और निर्मल। ओष अलिप्त रहती है और संत भी अलिप्त रहते हैं।

29. Stay + टस = Status -

Stay Order ले लेना। टस से मस न होना। इन दोनों से ही किसी का Status बनता है।

30. साम + Sung = Samsung -

साम (सामवेद) को ही Sung किया किया जाता है। सामवेद को ही गाया जाता है।

31. समी + चीनम् = समीचीनम् - चीन में बनी हर वस्तु समीचीनम् होती है।

32. सिफर + रिशतेदार = सिफारिश – सिफर पाने वाले रिश्तेदार ही सिफारिश करवाते हैं।

33. स्व + आस + तिक = स्वास्तिक -

व्यक्ति को स्वयं की आस पर टिक कर रहना चाहिए। यानि व्यक्ति को स्वयं पर विश्वास बनाए रखना

चाहिए। यही स्वास्तिक का अर्थ है।

34. Shape + Rate = Separate -

Separate दो ही प्रकार से किया जाता है। या तो किसी को Shape देकर या किसी को Rate देकर।

35. सलीका - साली के सामने आने पर, हर कोई सलीकेदार हो जाता है।

36. साँच को आँच नहीं -

साँचे को आँच नहीं लगती क्योंकि ईंट का साँचा आग में नहीं डाला जाता है। साँचा न जाने कितनी ईंटों को ढाल जाता है, अगर साँचे को आग में डालेंगे, तो फिर नई ईंट नहीं ढाल पाएँगे।

37. साला + आह (बात) = सलाह -

सलाह केवल साले की मानी जाती है और किसी की नहीं। तभी आदमी कहता है कि, "अरे साले साहब ! कोई सलाह तो दीजिए"।

38. सौभाग्यवती भव - गांधारी ही केवल सौभाग्यवती थी। उसके ही भाग्य में सौ पुत्र थे।

39. Spice -

अंग्रेज ने भारत में भोजन किया। भोजन ज्यादा मसाले वाला था। अंग्रेज बोला सि-सिप-Ice. यानि जल रहा है, ठंडक के लिए Ice दो। तब से मसाले को अंग्रेजी में Spice कहने लगे।

40. सत्यम् शिवम् सुन्दरम् -

यम (मृत्यु) ही सत्य है। मृत्यु को जीतनेवाला ही शिव (मृत्युञ्जय) है। मृत्यु के बारे में सुनकर (सन्दरम्) सबको डर लगता है, कि तेरे दरवाजे पर मौत खड़ी है।

41. स्त्री + इक = Strike –

स्त्री ही है जो Strike, कर सकती है। Strike = स्त्राईक। स्त्री की इक बात नहीं मानने पर, स्त्री सभी कार्य छोड़कर, बैठ जाती है। जिसे Strike यानी हड़ताल कहते हैं। स्त्री + इक = Strike. Strike = हड़ताल।

42. She + Saw = शीशा -

She saw herself in mirror, that mirror is called शीशा। She + Saw = शीशा। Every mirror is not called शीशा। Only that mirror is called शीशा, In which your heart is, connected with that mirror.

43. शरीर + मैल = Smell - शरीर के मैल की ही तो Smell आती है।

44. श्रद्धा + अञ्जली = श्रद्धाञ्जली -

जब भी व्यक्ति किसी के पास कुछ माँगने जाता है, तो वह व्यक्ति श्रद्धा एवं अञ्जुली लेकर जाता है। श्रद्धा यानि सुनकर धारण करना। किसी के प्रति श्रद्धा उसके बारे में सुनकर बनती है। एक बार किसी के बारे सुनकर जो श्रद्धा बन गई, वही धारणा बन जाती है, और यह धारणा फिर लाख कोशिशों के बाद भी नहीं बदलती है। जिस प्रकार नदी की धार एक बार जो मार्ग धारण कर लेती, वह कभी-भी नहीं बदली जा सकती है। यही श्रद्धा है। अञ्जुली यानि दोनों हाथों को जोड़कर, वह इस तरह कर लेगा कि, इसमें अन्न और जल आ जाए और गिर न पाएँ।

45. शनि -

शनि यानि निशा। जिस प्रकार निशा में कुछ नहीं सूझता है, उसी प्रकार से शनि की दशा में कुछ नहीं सूझता।

46. Stair -

सताने के लिए Stair होता है। यानि किसी के सत्य को उसी के सामने बताना ही तो Stair है।

47. सोन + धी = सोंधी -

सोंधी-सोंधी सुगंध, जमीं से उठ रही है।

आकाश से बूंद, जमीं पर गिर रही है।

सोन + धी = सोंधी।

बूंद पड़ी जमीं पर, सोन जमीं से निकली।

नथुने में माणस के घुसी, माणस को धी आई।

सोन = सोना, स्वर्ण। धी = Wisdom. बारिश की पहली बूंदों की, इतनी है बढ़ाई। लोगों में हर वर्ष की वर्षा ने, अक्ल है बढ़ाई। सोना भी मिला धरती से, धी भी धरती से मिली। बस वर्षा की पहली बूंदों की, सोंधी-सोंधी महक जो आई।

48. Son + तुल + ना = संतुलन -

Son से जब तुलना हो तो पिता को संतुलन बनाना बड़ा भारी पड़ता है। यदि पिता उस समय संतुलन बना ले, तो यह संतुलन उसे संत बना देता है। बहुत मुश्किल है अपने से अपने पुत्र की तुलना को झेलना, सहना और संतुलन बना कर रखना।

49. स + Fed = सफेद – जो Fed हो जाए वही सफेद है।

50. सु + कुनकुना = सुकून -

सु-सु (पेशाब) कर लेने पर ही सुकून आता है। पेशाब कर लेने पर कुन-कुना (गर्म) पानी बाहर निकल जाता है, आदमी ठण्डा हो जाता है, उसका दिमाग और दिल सुकून पाता है।

51. सितम - सीता पर सितम इतना ढाया, कि सितम भी सीता के नाम से सितम कहलाया।

52. सम्मोहन -

सम्मोहन वो चीज़ है, जब किसी के कोई सम हो जाता है यानी की बराबर हो जाता है, और फिर उससे उसे मोह हो जाता है, उस मोह में उसको हन किया जाता है, वह है सम्मोहन।

53. श्रावण -

श्राव अणुओं का होता है, जब अणु का श्राव होता है, उसे कहते हैं श्रावण। श्रावण में अणुओं का श्राव होता है। यह अणु बाद में अलग-अलग जीव जन्तु, पेड़-पोधे, मनुष्य, पशु, पक्षी, के रूप में जन्म लेते हैं। श्रावण में पृथिवी का गर्भ खुल जाता है और परमात्मा के अणु पृथ्वी के गर्भ में गर्भ धारण करते हैं।

54. Shoes = सूज –

पहले लोग बिना जूता-चप्पल के चलते थे, तो उनके पैर में काँटा लगने से वह सूज जाता था, तो पैर में

काँटा न लगे और वह न सूजे, इसीलिए फिर उन्होंने Shoes पहनने शुरु किये।

55. स्त्रैत + जी = Strategy - स्त्री का जी जो तय करता है, वह है Strategy.

56. Sea = सिया -

राम जब समुद्र किनारे माता सीता को ढूँढते थे, तो कहते थे कि, "सिया ओ सिया"। वही "सिया" ही Sea है।

57. सिया + अर्च = Search –

राम ने सिया (सीता) को ढूंढने के लिए जो अर्चना की, वही Search है।

58. Son + Coach = संकोच -

अपने Son का Coach बनने में सभी को संकोच होता है। इसलिए सभी अपने Son को पढ़ाने के लिए एक Coach को रख लेते हैं।

59. शेरवानी - शेर की खाल से बने वस्त्र को शेरवानी कहते हैं।

60. Stay + Top = Stop -

Top पर पहुँचते ही Stop हो जाना चाहिए। नहीं तो आगे गिरने का खतरा रहता है।

61. सह + आरा = सहारा -

सहयोग देना, आरे को चलाने के लिए, उसे ही तो सहारा कहते हैं। सह + आरा = सहारा। सह = सहयोग। आरे को अकेले नहीं, चलाया जा सकता है। आरे को चलाने के लिए, किसी के सहयोग की, आवश्यकता पड़ती है। इसी सहयोग से आरा चलता है, इसे ही सहारा कहते हैं। जब आदमी हार जाता है, तब आदमी को, किसी के सहायता की, जरूरत होती है। जो उसे उस हार के समय, संभाल सके। उसे ही सहारा कहते हैं। सह + हारा = सहारा। हारा हुआ आदमी ही, सहारा ढूँढ़ता है। कि, "किसी का सहारा, मिल जाए और मैं, इस समय संभल जाऊँ"। इसीलिए जो हारे हुए का, सहयोग करता है। वही सहारा होता है। लीन बड़ा ही ऊँचा शब्द है। जैसे ब्रह्मलीन। यानी ब्रह्म में लीन हो जाना। यानी ब्रह्म की तरफ झुक जाना। Lean = लीन। ब्रह्म यानी परमात्मा। जिस परमात्मा से, संपूर्ण सृष्टि उत्पन्न हुई है। उसी ब्रह्म में लीन हो जाना। क्योंकि परमात्मा पहले पूरा, सफाई करेगा फिर, Recycle करके दुबारा संसार में, भेज देगा। परमात्मा शरीर को नहीं, आत्मा की सफाई करता है, और आत्मा को Recycle करता है। इसीलिए संत-महात्मा, ब्रह्मलीन होते हैं। न स्वर्ग में जाते हैं, और न ही नरक में जाते हैं। न प्रेत योनि में जाते हैं, और न ही देव योनि में जाते हैं। संत-महात्मा लीन हो जाते हैं। इन्हीं संत-महात्मों का, सहारा लेकर संसारी लोग भी, ब्रह्म में लीन होना चाहते हैं। इसीलिए, समय-समय पर संत-महात्मा, आते हैं और उस समय के, संसारी लोगों को सीधे ब्रह्म में, लीन करवा देते हैं। इसके लिए संसारी लोग, संत-महात्माओं के सामने, Leaned होते हैं।

62. सितारे - सीता ने अशोक-वाटिका में बैठे-बैठे जो तारे गिने, वही तो सितारे हो गए।

63. Sauce -

बहू जब शादी करके घर आती है। तो सास बहू से Sauce (चटनी) बनवाती है। उसी बनी हुई चटनी से सास बहू को परख लेती थी कि कितना नमक-मिर्च डालती है बहू।

64. सौगंध -

गान्धारी के सौ पुत्रों की गंध। गान्धारी ही है जो सौगन्ध ले सकती है, क्योंकि वही है जो सौ पुत्रों की गन्ध ले सकती है और गन्ध से ही अपने पुत्रों को पहचानती है।

65. सीमा + अंकन = सीमांकन – सीमा का ही अंकन किया जाता है।

66. Sun + तरी = सन्तरी –

Sun ही तो सन्तरी है, यानि सूर्य ही सबसे बड़ा सन्तरी है। रात को जब सूर्य डूब जाता है, तो सन्त ही सन्तरी का काम करते हैं।

67. Serial – जो Real है, वही Serial है। यानि जो Real है, वही लगातार जारी रहता है।

68. Son + चय = सञ्चय –

अपने Son के लिए, व्यक्ति हर वस्तु चयन करके सञ्चय करता है। यानि पिता अपने पुत्र के लिए ही वस्तुओं का सञ्चय करता है।

69. शरीर + बद = शब्द –

शरीर को बंद करने के लिए शब्द है, यानि किसी के शरीर को रोकने के लिए एक नाम दिया जाता है, जिसे शब्द कहते हैं, वह शब्द सुनते ही उसका शरीर रुक जाता है, अतः यही शब्द है।

70. सोर + Row = Sorrow –

सोर और Row दोनों में ही दुःख होता है। सोर यानि जब स्त्री बच्चे को जन्म देती है, तो उसे सोर कहते हैं। उसके दर्द में दुःख होता है। Row में यानि पंक्ति में खड़े व्यक्ति को भी खड़े-खड़े दर्द होता है, जिससे उसको दुःख होता है।

71. Spy + डर = Spider –

Spy का डर सभी को होता है। जब किसी के घर में Spy करना हो, तो Spider को छोड़ दिया जाता है। Spider फिर उस घर में Spy करता है, इसलिए Spider से सभी को डर लगता है। आपके यहाँ पर Spy यानि जासूसी हुई है, इसका पता भी Spider (मकड़ी) से चलता है। मकड़ी का जाला अगर टूटा हुआ हो, तो किसी ने आपके यहाँ पर जासूसी की है। क्योंकि जासूसी अक्सर झरोकों से की जाती है और झरोकों पर मकड़ी जाला बनाती है।

72. Sold + डर = Soldier –

Sold कर देता है, जो अपने डर को, वह है Soldier. पहले जमाने में गुलाम ही Soldier होते थे। जो अपने डर से अपने आप को बेच देता है, उनको खरीदा जाता था और उनके परिवार वालों को पैसे दिये जाते थे।

Sold + ज़र = Soldier -

जो अपने आपको को Sold कर देता है, ज़र के लिए, वही तो Soldier होता है।

73. सर + हद = सरहद –

सिरों को काटकर, उनसे बनाई गई हद ही सरहद है। पहले जमाने में राजा लोग अपनी सरहद शत्रु देश के सैनिकों के सिर को काटकर, उन कटे हुए सिरों से अपनी सीमा का निर्धारण करते थे। उस राज्य में

प्रवेश करनेवाला कोई भी व्यक्ति, उन कटे हुए सिरों को देखकर समझ जाते थे कि, "यहाँ का राजा कितना क्रुर है"।

74. Sonography = सोनोग्राफी –

सोने (Gold) का पता करने के लिए Sonography की जाती है। जब लंका को जीतने के बाद सभी लोग वापस जा रहे थे। तब सभी की Sonography की गई कि, "कोई पेट के अन्दर सोना छिपा कर तो नहीं ले जा रहा है"। क्योंकि पूरी लंका सोने की थी और चारों तरफ सोना ही सोना था। भारत के लोग स्वर्ण के प्रति बहुत ही लालच से भरे रहते हैं।

75. Sun + ध्या = संन्ध्या –

Sun (सूर्य) का ध्यान करना ही संन्ध्या है। शाम को जब सूरज डूब जाता है, आदमी ध्यान लगाता है कि, "सूर्य कहाँ गया"?

76. सवार – जो War के लिए जाते हैं, वही सवार होते हैं।

77. सिर + Ring = श्रृंग –

जानवरों के सिर पर जो सींग होते हैं, वह कभी-कभी पूरे घुमावदार गोल घेरे के रूप में होते हैं, तो उन्हें देखकर लगता है कि वह सिर पर Ring की तरह हैं, बस वही श्रृंग है।

78. सिर + Ring + खला = श्रृंखला –

ऐसे ही जब सिर के Ring के बीच खाली स्थान होता है, उसे श्रृंखला कहते हैं।

79. स्त्रियों + Type = Stereotype –

स्त्रियों के जैसा ही तो Stereotype होता है। स्त्रियाँ ही Typing करती है, और कहानियाँ सुनाती है।

80. सुर + राही = सुराही – सुर (देवता) और राही यह दो लोग ही सुराही रखते हैं।

81. स्वयं + वाद = स्वाद – स्वंय के वाद का ही स्वाद आता है।

81. स्वयं + वाद = स्वाद – स्वंय के वाद का ही स्वाद आता है।

82. स्त्री + तीक्त = Strict = स्त्री ही तीक्त बोलती है, अतः स्त्री ही Strict होती है।

83. Sum + पानी = सम्पन्न – जो पानी को जोड़-जोड़कर रखता है, वही सम्पन्न होता है।

84. सिकी + न = Skin –

जो सिकी नही वही Skin है। सूर्य की धूम में जब त्वचा सिक जाती है, तब त्वचा पर झुर्यियाँ पढ़ जाती हैं, और त्वचा सिकुड़ जाती है, जिसे शिकन भी कहते हैं। यही शिकन ही तो Skin है।

85. सु-सु + चना = सूचना – सु-सु करके और चना देकर ही, किसी को सूचना दी जाती है।

86. स्वयं + छंद = स्वछन्द – स्वयं का छन्द ही स्वछन्द है।

87. स्वाद + East = स्वादिष्ट –

स्वाद जिनका ही ईष्ट है। East में रहनेवाले लोग स्वादिष्ट भोजन करते हैं।

88. साधा + रण = साधारण – जिसने रण को साध लिया है, वह साधारण है।

89. Sir + Vice = Service –

Vice लोगों को Sir कहा जाता है और Sir लोगों की ही Service की जाती है। यानि Vice लोगों

के गिलास में Ice डालकर, अंग्रेज लोग शराब पीते हैं। उनकी Service करने वाले उनके पूछते हैं कि, "Sir with Ice or Without Ice".

90. सख्त -

लकड़ी कितनी ही सख्त हो, वह खत ही जाती है। जब लकड़ी पुरानी हो जाती है, तब लकड़ी खत जाती है। खत = दीमक के द्वारा लकड़ी को खा लेना। यानी व्यक्ति कितना ही सख्त हो, आखिर में खत ही जाता है। जैसे पुराने पत्र उठाकर देखना, पुराने पत्र खत तब बन जाते हैं, जब पुराने पत्र खत जाते हैं। उन पुराने पत्रों में, मटमैलापन आ जाता है। आसपास से दीमक के द्वारा, खा लिये जाते हैं। तब वह पत्र ही तो, खत कहलाते हैं। पहले जमाने में, पत्र बहुत देरी से पहुँचते थे, और पहुँचते-पहुँचते, दीमक के द्वारा खा लिए जाते थे। तो पत्र फिर खत कहलाते थे।

91. सुर + आग = सुराग – सुर और आग से ही सुराग का पता चल जाता है।

92. शान = नाश -

नशा करने वाले शान दिखाते हैं। अक्सर व्यक्ति शान दिखाने के लिए नशा करते हैं।

93. सौदा = Soda - सौदा करनेवाले लोग Soda पीते हैं।

94. श्व + लीन = Shaolin – जहाँ श्व लीन होते हैं, वह Shaolin.

95. स्वीकार – Car को हर कोई स्वीकार कर लेता है।

96. सदा – जो दास बनकर रहता है, वह सदा रहता है।

97. सीता + तार = सितार – सीता ने तार बजाया, उसे सितार कहते हैं।

98. सताया – सत से ही किसी को सताया जाता है।

99. Song + लोक = श्लोक – जो Song लोक में गाये जाते हैं, वह Song श्लोक कहलाते हैं।

100. स + चूल = School – जहाँ पर चूल्हे की पढ़ाई होती है, उस जगह को School कहते हैं।

101. सचेत – सच से ही किसी को सचेत किया जाता है।

102. Suggestion –

स्त्रियाँ अक्सर पूँछती हैं कि, "वह कैसे सजे"? यानि सजने के लिए हर कोई Suggestion माँगता है।

103. Sad + गति = सदगति -

Sad गति ही सदगति होती है। Sad = दुःख। दुःख प्रदान करना ही सदगति होती है। तभी तो लोग कहते हैं कि, "मैं तुम्हारी ऐसी गत करूँगा, कि तुम सपने में भी, सुख को तरस जाओगे"? गत = गति।

104. सु + बह = सुबह – सु-सु- बहती है सुबह यानि प्रातः ही सु-सु लगती है।

105. सहन + शाह = शहनशाह – सहन कर लेते हैं जो सब कुछ, वही तो कहलाते हैं शहनशाह।

106. Skull = शक्ल –

जब कोई व्यक्ति दीन-हीन हालत में मिलता है, तो कहते हैं कि, "यह क्या शक्ल बना रखी है"। यानि उसकी चेहरे की सारी हड्डियाँ दिखाई दे रही हैं, बस उसी शक्ल को अंग्रेजों ने Skull कह दिया है। उसी Skull पर ही किसी की शक्ल बनाई जाती है।

107. सत + त्य = सत्य – सत यानि परमात्मा जो तय करता है, वह है सत्य।

108. Son + जय = संजय –
अपने Son (पुत्र) की जय हर होई सुनना चाहता है, इसीलिए धृतराष्ट्र ने संजय को रखा कि, "संजय मेरे पुत्र दूर्योधन की जय सुनाये"।

109. Socket –
शोख लेते हैं जो, वह हैं Socket. Socket में जब Plug को को लगाते हैं, तो वह उसमें से बिजली को सोख लेता है।

110. स + विच = Switch – जो दोनों के बीच होता है, वह है Switch.

111. क्षुधा = सुधा –
क्षुधा ही सुधा है, सुधा ही अमृत है, यानि जो मरे न वह अमृत है, और क्षुधा यानि भूख कभी मरती नहीं, मार देती है।

112. श्व + अन्न = श्वान –
श्व को अन्न के रूप में खानेवाला ही श्वान होता है, तभी तो कहते हैं कि, "तेरे शरीर को कुत्ते नोंच कर खा जाएगें"।

113. सर्वेक्षण – Survey ही सर्वेक्षण है।

114. संस्था – Sons को स्थायी करने के लिए "संस्था" बनाई जाती है।

115. स्वर्ग – स्वयं के वर्ग में रहना ही स्वर्ग होता है।

116. शुद्ध –
सु-सु (पेशाब) करनेवाला अन्दर से शुद्ध हो जाता है, Shoe पहननेवाला बाहर से शुद्ध रहता है।

117. सहारा – हारे को सहारा चाहिए।

118. सह + आरा = सहारा –
लकड़ी को काटने के लिए आरा चलाने के लिए सहारा चाहिए, अकेले आरा नहीं चलता है।

119. Suddenly – किसी चीज के सड़ने की बदबू Suddenly ही आती है।

120. Ship – समुद्र से सीप को ढूंढ़ने के लिए ही Ship बनाते हैं।

121. साबुन – बुनी हुए कपड़े से बु न आये, इसीलिए साबुन लगाया जाता है।

122. Sin + डर = Syndrome – Sin का डर ही Syndrome बनाता है।

123. Scarf – Scar को छिपाने के लिए ही Scarf पहना जाता है।

124. Sick + कोड़ = सिकोड़ना –
Sick (बीमार) और कोड़ी लोगों को देखकर नाक-भों सिकोड़ते हैं।

125. संदल = Sandal –
पहले खडाऊँ पहनी जाती थी, जो कि संदल की लकड़ी की बनी होती थी, इसीलिए उसे Sandal कहते हैं।

126. शय + तान = शैतान –
जिसको पीकर आदमी तानकर सो जाता है, उसे शैतान कहते हैं, इस्लाम में शराब को शैतान कहते हैं,

जिसे पीकर आदमी नशे में आकर सो जाता है।

127. Son + देश = सन्देश –

Son की मिट्टी की खुशबू ही उसी के लिए सन्देश होती है।

128. स्वर्ण अक्षर में इतिहास –

जो स्वर्ण देते हैं, उनका इतिहास ही स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता है।

129. Store + Age = Storage –

Store वाले के पास या Age वाले के पास ही चीजों Storage रहती हैं।

130. Smart = स्मार्त -

स्मार्त ही तो Smart होते हैं। जो लोग Smart होते हैं, उनकी स्मृति बहुत अच्छी होती है।

131. सड़ + अंध = सड़ान्ध –

सड़े हुए का पता केवल अंधे आदमी को ही चलता है, कि वहाँ सड़ान्ध है।

132. शान + थी = शान्ति –

वाह इनकी क्या शान थी। अब नहीं है, अब बड़ी शान्ति है। किसी की शान देखकर हर कोई ईर्ष्या करने लग जाता है, जब उसकी शान चली जाती है, तब उसे शान्ति मिलती है।

133. She + Lid = Shield –

आदमी जब कमजोर हो जाता है, तो वह औरत को Shield बना लेता है। जैसे ढक्कन बर्तन की रक्षा करता है, उसी प्रकार स्त्री भी ढक्कन बनकर पुरुष की रक्षा करती है।

134. सह + गिर्द = शागिर्द – सह (साथ-साथ) चले जो और इर्द-गिर्द रहे, वह है शागिर्द।

135. सर + Mind = सरमिन्दा – सर या Mind में रखते हैं, जो है सरमिन्दा।

136. Sun + रचना = संरचना – Sun (सूर्य) दे द्वारा जिसको रचा गया, वही तो है "संरचना"।

137. स्म + मृत = स्मृति –

ऋतु आने पर हर चीज अपने आप स्मृत हो जाती है, कि पिछली बारिस में यह हुआ था, सर्दी में यह हुआ था। किसी के मरने पर उसकी हर चीजें याद आ जाती हैं, कि वह ऐसा था, उसने ऐसा किया था।

138. समा + धान = समाधान – समा के चावल या धान ले करके आओ, दोनों ही समाधान हैं।

139. Sad + दमा = सदमा –

Sad (दुःख) होने पर दमा हो जाता है और व्यक्ति सदमे में चला जाता है।

140. सिफारिश – परीक्षा में सिफर (शून्य) पानेवाले ही सिफारिश करवाते हैं।

141. Star + दम = Stardom – किसी के सितारों का दम ही, उसे Stardom देता है।

142. स + हस + त्र = सहस्त्र – यानि तीन लोगों का हंसना ही सहस्त्र होता है।

143. Sale + आब = सैलाब –

Sale एवं आब में ही सैलाब उमड़ता है। जब कहीं Sale लगी हो या फिर नदी में आब (बाढ़) आयी हो, तो वही सैलाब है।

144. साब + Boss = शाबास –

साब या Boss ही शाबास कहते हैं, यानि शाबादी देते हैं।

145. Such = सच – सच ही तो Such है। सच हमेशा Such ही होता है।

146. Snow = सनो –

देखो कैसौ माटी में सनो है। तो फिर अंग्रेजों ने बर्फ से सने व्यक्ति को भी Snow Man कहना शुरु किया और गिरती बर्फ को Snow.

147. सीख + चिल्ला = शेख चिल्ली -

सीखते हैं जो, चिल्ला-चिल्ला कर, उन्हें ही सीख चिल्ला कहते हैं। जो बाद में, सीख चिल्ला से, सीख चिल्ली हुए। सीख चिल्ली से, शेख चिल्ली हो गए। सीख + चिल्ला = शेख चिल्ली।

148. शरीर + True = शत्रु –

जो आपके शरीर के बारे में True (सत्य) कह दे, वही तो आपका शत्रु है, यानि सत्य ही शत्रु है। इसीलिए हर आदमी सत्य को छुपाकर रखता है कि, "सच बाहर नहीं आना चाहिए"।

149. शरीर + कीच = Sketch –

शरीर जब कीचड़ में चला जाता है, तब फिर उसके सूखने के बाद जो आदमी दिखाई देता है, उसका चित्र नहीं Sketch ही बनता है।

150. सु-सु + Pens = Suspense –

परीक्षा के समय जो बार-बार सु-सु जाए या फिर बार-बार Pen बदले लिखने के लिए उसमें समझो कोई न कोई Suspense है।

151. शक + कर = शक्कर – शक करने वाले पड़ौसी लोग शक्कर माँगने आते हैं।

152. सजा –

गरीब आदमी को जब सजा देनी होती है, तो पूरे बाजार को सजा दिया जाता है, और वह सोच भी नहीं पाता क्या खरीदें क्या नहीं ?

153. Sick = सिक –

जब किसी की सिकाई की जाती है, तो गर्म तवे पर कपड़े को पहले सेक लिया जाता है, फिर उससे सिकाई की जाती है, उसमें जो गरमाहट होती है, उसी गर्माहट को देखकर बुखार आने पर जो शरीर गर्म होता है, तो अंग्रेजों ने उसे Sick कहा यानि शरीर गर्म है।

154. सफर – फर (पंख) से ही सफर तय किया जाता है।

155. सीख + कर = Seeker – जो सीख कर कार्य करते हैं, वही Seeker कहलाते हैं।

156. Sin + धु = सिन्धु –

Sin (पाप) जिसमें धुल जाएँ, वही सिन्धु है। पहले लोग सिन्धु नदी में पाप धोते थे, फिर जब गंगा नदी आ गई तब गंगा नदी में पाप धोने लगे।

157. स्व + पन = स्वपन –

पानी पीकर सोने से स्वपन आते हैं। यानि जब वह पानी पी कर सोता है, तो पानी ही आईने की तरह उसके अन्दर हो जाता है, और उसके स्व में क्या चल रहा है ? यह उसको उस पानी में दिखाई देता,

बस यही स्वपन (सपने) कहलाते हैं। इसीलिए पानी पीकर नहीं सोना चाहिए और पेशाब कर के सोना चाहिए।

158. Sun + दीप = संदीप –

Sun (सूर्य) जब डूब जाता है, तो दीपक ही रात को उजाला देता है। इसी प्रकार Son + दीप = संदीप है, यानि किसी का पुत्र ही उसके जीवन में दीपक की तरह उजाला देता है।

159. सिखाना –

खाना ही सिखाना होता है। जैसे चीन में सीक यानि दो लकड़ियों से खाना खाया जाता। जो हर किसी के बस की बात नहीं है, वह सिखाना पड़ता है। ऐसे ही सभी खाने सिखाने पड़ते हैं।

160. शिविर –

शिव के रहने का स्थान ही शिविर कहलाता है, क्योंकि शिव घूमन्तू जाति से हैं, जो घूमती रहती है, और वहाँ कैलास में बहुत ठंड होती है, जिससे सबको Shivering (ठंड) होती है, इसीलिए वहाँ शिविर लगाते हैं।

161. Shivering –

शिविर में रहने वाले ठंड से काँपते हैं, हिमालय में शिव के रहने के स्थान पर ठंड है।

162. सर + ये = श्रेय –

जो सब अपने सर पर लेता है, उसे श्रेय मिलता है। श्रेय भी सर पर मिलता है, उसे मुकुट पहनाया जाता है। परंतु संसार उल्टा है, यहाँ पर श्रेय (Credit) लेने वालों की होड़ है, परंतु सर आगे करनेवालों की नहीं। यह सब कुछ दूसरे के सर मड़ देना चाहते हैं यानि दूसरे के सर में Mud (मिट्टी) लगे, अपने सिर पर ताज सजे।

163. सा + Hit = साहित्य –

जब किसी को Hit करने के लिए तय कर लिया जाता है, तो फिर उसके लिए साहित्य लिखा जाता है। साहित्य में उसकी तारीफ होती है, तारीफ से वह अंहकार में आ जाता है और उसको आसानी से Hit किया जा सकता है।

164. Sis + य = शिष्य – शिष्य उसी को बनाया जाता है, जिसकी कोई Sister होती है।

165. शर + आब = शराब – शर नाम के पौधे के आब से शराब बनाई जाती है।

166. स्त्री + इक = Strike –

स्त्री ही है जो Strike कर सकती है। Strike = स्त्राईक। स्त्री की इक बात नहीं मानने पर, स्त्री सभी कार्यो को छोड़कर, बैठ जाती है। जिसे Strike यानी हड़ताल कहते हैं। स्त्री + इक = Strike. Strike = हड़ताल।

167. शरीर + पीड़ = Speed –

शरीर की पीड़ा ही Speed है। शरीर को जितनी पीड़ा होती है, Speed उतनी ही ज्यादा होती है। इसीलिए किसी से कोई कार्य लेने के लिए, उसके शरीर को पीड़ा दी जाती है। जिससे वह ज्यादा Speed से काम करता है, यह सोचता हुआ कि, "वह इस पीड़ा से जल्दी छूट जाए"। इसीलिए बैल

को हँकनी से कोंचते हैं और घोड़े को Hunter से मारते हैं। किंतु मनुष्य को मानसिक पीड़ा दी जाती है और मनुष्य भी मानसिक पीड़ा से छुटकारा पाने के लिए Speed में काम निपटा देता है।

168. स + प + Ice = Spice –

भारत में अंग्रेजों ने जब मसाले से बने तीखे और गर्म खाने खाये, तो अंग्रेजों ने कहा कि, "स-स Ice" यही है Spice हो गया।

169. सिद्ध + दत्त = सिद्धत – दत्त की तरह ही सिद्ध होना "सिद्धत" होता है।

170. स्त्रैत + जी = Strategy – स्त्रियाँ अपने जी से Strategy बनाती हैं।

171. Share – शेर ही Share करते हैं।

172. सुर + Prize = Surprise –

सुर (देवता) लोग जो Prize देते हैं, वह Surprise कहलाता है।

173. सेतु – सेना के हेतु जिसको बनाया जाता है, वह है सेतु।

174. शौच – शौच करने पर सोच अच्छी हो जाती है।

175. Sun + शोध + अन्न = संशोधन –

Sun ही शोध करता है अन्न का। Sun के द्वारा ही अन्न का शोधन किया जाता है। इसीलिए सूर्य की धूप फसल के लिए बहुत अच्छी होती है। Son के लिए शोध करने के लिए, व्यक्ति धन को लगा देता और संशोधन करवा लेता है।

176. सिर + Rum + Mind = शर्मिंदा -

सिर में Rum के जाने से, आदमी Mind कर जाता है। और फिर, बाद में शर्मिंदा हो जाता है। सिर + Rum + Mind = शर्मिंदा। आदमी जब Rum पी लेता है, तब उस आदमी के दिमाग में, खुलापन आ जाता है। और फिर Rum पिया हुआ आदमी, दूसरे आदमी से कहता है कि, "यार ! तुझसे एक बात कहूँगा, पर तू Mind न करना।" जब Rum का असर खत्म, होने पर उस आदमी को, पता चलता है कि, उसने यह कहा था। तब वह आदमी शर्मिंदा होता है। वह आदमी अपने सिर को, पकड़कर कहता है कि, "वह आईन्दा से Rum नहीं पियेगा।" इसे भी शर्मिंदा कहते हैं। सिर पकड़ कर + मैं + आईन्दा = शर्मिंदा। सिर और Rum का जोड़ ही शर्म कहलाता है। सिर + Rum = शर्म। जो आदमी शर्म करता है, उस आदमी के सिर में, जरूर Rum भरी है। या उस आदमी ने Rum पी हो, या उस आदमी को, पता न हो, और उसे किसी में डालकर, पिलाई गई हो। इसीलिए Rum सिर में, जाने के बाद, शर्म खत्म हो जाती है। और, Rum सिर से, उतर जाने के बाद, आदमी शर्मीला हो जाता है। शर्मीला आदमी बातों को, Mind कर जाता है।

177. Suit + Case = सूत + केश = Suit + Case = Suitcase –

पहले सूत का ही Suit बनाया जाता था। Suit को रखने के लिए Suitcase बनाया जाता था। अब यह Suit को रखने वाला Suitcase किस प्रकार से Case को रखनेवाला Suitcase बन गया। यह भी एक कहानी है। एक दिन एक स्त्री ने पति के Suit पर एक स्त्री का केश (बाल) देखा। जिससे उस औरत को लगा कि, उसके पति का किसी दूसरी औरत से सम्बन्ध है। केश को सबूत मानते हुए उस

औरत ने अदालत में अपने पति पर एक Case Suite कर दिया। बस उसी दिन से वह Suitcase Case के Paper रखने के काम आने लगा।

178. सू + तर = सूत्र –

सु-सु से तर जगह ही, सूत्र का काम करती है। यानि वहीं से सूत्र मिलता है। पहले जमाने में किसी अपराधी को पकड़ना होता था, तो उस अपराधी की पहचान के लिए, कुत्ते को उस अपराधी के कपड़े सुंघा दिए जाते थे। अब वह अपराधी जहाँ-जहाँ से सु-सु करते हुए निकलता था। कुत्ते उसी सु-सु का पीछा करता हुआ, अपराधी तक पहुँच जाता था। इस तरह सु-सु एक सूत्र का काम करता था।

179. Sin + दूर = सिन्दूर –

Sin से दूर कर दे वह है सिन्दूर – जो स्त्री बिना सिन्दूर लगाये बच्चा पैदा करती है, वह पाप की श्रेणी में गिना जाता है और जो सिन्दूर लगाकर बच्चा पैदा करती है, वह Sin (पाप) से दूर रहती है।

180. Sad = सद – जो Sad रहता है, वही सद रहता है।

181. शरीर + Wash = श्वास –

शरीर को जो Wash करे, वह श्वास है। प्राणायाम को करने से शरीर की शुद्धि हो जाती है।

182. Socks = सोखना = सोक लेती है जो पसीने को वह है Socks.

183. सु + धीर = सुधीर - सु (पेशाब) लगी हो और उस समय धीर रखने वाला ही, सुधीर होता है।

184. सर (सिर) + Round (गोल) = Surround -

सर तो Round ही होता है, यानी सिर तो गोल ही होता है।

185. Serve + शक्ति + मान = सर्वशक्तिमान -

Serve (सेवा) वही करता है, जिसके पास शक्ति है। शक्ति जिसके पास है, उसी का मान होता है। सर्व (सबकी) सेवा जो करता है, वह सर्वशक्तिमान है। केवल परमात्मा है, जो सबकी सेवा करता है। परमात्मा मिट्टी, पानी, आग, हवा, फल, फूल, अनाज, सब कुछ देता है। परमात्मा के पास शक्ति है, परमात्मा का ही मान होता है, इसलिए परमात्मा सर्वशक्तिमान है।

186. Spoon + Sir = Sponsor -

किसी Programme में खाने के समय पर, जिससे बार-बार यह पूछा जाए कि, "Take this Spoon Sir". तो समझो वह Sponsor है और जो पूछ रहा है, वह Spoon है, यानी चमचा है।

187. सुर + Way = Survey -

सुर ही Way बताता है। जिधर से आवाज आती है, लोग उसी तरफ जाते हैं। इसलिए ज्यादा से ज्यादा लोगों को, अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए, अपने व्यक्ति सुर को अच्छा करता है। सुर = स्वर।

188. सतत - सत (परमात्मा) ही सतत है।

189. सोने पे सुहागा -

रात को अच्छी नींद आने के बाद, सुबह सु-सु एवं हागास अच्छी तरह आते हैं। यही सोने पे सुहागा होते हैं। स्वर्ण की पहचान करनी है, तो स्वर्ण को एक रात के लिए, पेशाब एवं Potty में डालकर देख

लीजिए। सुबह उसको पानी से धो लीजिए। स्वर्ण एकदम चमक जाएगा और नकली स्वर्ण उसमें से अलग हो जाएगा।

190. Step + Knee = Stepney -

आदमी के घुटने आजकल ओपरेशन करके बदलवाये जाते हैं। क्योंकि उसे एक Step चलने में भी परेशानी होती है। इसलिए वह Knee की Stepney रखता है। Knee के बिना तो एक Step भी नहीं चल सकता है। इसलिए किसी को एक Step भी चलना है, तो उसकी Knee अच्छी होनी चाहिए। यही Stepney है।

191. साईं + अंश = Science -

साईं का अंश ही साईंस है। साईं यानी भगवान, God. साईं + ईष्ट = Scientist - साईं ही जिसका ईष्ट है, वही तो Scientist है। भगवान ने अपने थोड़े से अंश के बारे में किसी को बता दिया, वही तो Scientist और वह जानकारी Science है। उस Scientist के जो ईष्ट हैं, वह साईं (भगवान) हैं।

192. सम + अहित = समाहित -

सम (Sum) जुड़ना। जुड़े रहने पर, अहित नहीं होता है। अगर व्यक्ति आपस में जुड़े रहें, तो कोई उनका अहित नहीं कर सकता।

193. श्रम -

श्रम करनेवाले शर्म करते हैं। विश्राम करनेवाले बेशर्म होते हैं। तभी तो कहते हैं, कुछ शर्म करले, बेशर्मों की तरह क्यों पड़ा है ? कुछ काम-धाम क्यों नहीं करता।

194. Sun + घर्ष = संघर्ष -

Sun से घर्षण होना ही संघर्ष है। सूर्य की तपती धूप में सभी लोग कार्य करते हैं। इसे ही जीवन का संघर्ष कहते हैं। जब लोग काम करते हैं दिनभर तब उनके शरीर का सूर्य की किरणों से घर्षण होता है। इसे ही संघर्ष कहते हैं। पहले के लोग दिनभर कड़ी धूप में खेती में काम करते थे।

195. शोक + King = Shocking -

किसी के लिए शौक होता है। किसी के लिए शोक होता है। राजाओं का शौक अक्सर दूसरों के लिए शोक ही होता है। इसलिए Shocking होता है। पहले के राजा भूखे शेर के आगे सजायाफ्ता कैदियों को डाल देते थे। फिर दोनों में मुकाबला होता था। और राजा का शौक पूरा होता था। उधर कैदी को शोक होता था। यही अंग्रेजों ने देखा और नाम दिया Shocking. यानि शौक राजा के शोक प्रजा के।

196. सर + End + डर = Surrender -

सिर के End (समाप्त) हो जाने का डर ही Surrender है। जब किसी को कहा जाता है कि, "सर झुका दो, नहीं तो सर काट दिया जाएगा"। बस इसी का डर Surrender करवा देता है।

197. श्मशान या श्माशान -

यानि श्मा (रोशनी) की शान हो वह है श्मशान। श्मशान में सभी तरफ चिताओं की आग की रोशनी होती है।

198. सर + कार्य = सरकार - जिसके सिर पर कार्य होते हैं उसे ही सरकार कहते हैं।

199. Sun + कल्प = संकल्प -

Sun यानि सूर्य एक कल्प तक रहता है। फिर प्रलय आ जाती है। इसीलिए संकल्प कराया जाता है कि, "यह कार्य एक कल्प तक रहे"। या फिर कहा जाता है कि, "जब तक सूरज-चाँद रहेगा, तब तक तेरा नाम रहेगा"। चाहे कार्य Sun के रहने तक रहे, या फिर कल्प तक रहे, एक ही बात है, यही Sunकल्प है।

200. श्यन + आम = श्याम -

श्यन करते हैं आमलोग जब उसे श्याम कहते हैं। श्याम को ही शाम कहते हैं। शाम काली होती है, इसीलिए काले को श्याम कहते हैं।

201. Space -

"I need some space". यह Space ही परमात्मा है। जब आदमी थक जाता है। तो वह पुनः उर्जावान होने के लिए खाली स्थान (एकांत) ढूंढता है। अब वह एकांत हिमालय हो या कोई जंगल हो, क्योंकि Space का मतलब आकाश होता है और आकाश ही परमात्मा है।

202. स्व + यम = स्वयं - यम से स्वयं मिलना पड़ता है। यम अपने सारे काम स्वयं करते हैं।

203. Sun + अंत = संत -

जब सूर्य का अंत आता है, यानि डूबते सूर्य का जो रंग होता है, वही रंग तो संत के वस्त्र का होता है।

204. सु-सु + खद = सुखद -

सु-सु यानि पेशाब ही खाद (Fertilizer) है। इसीलिए सुखद है। Urea मनुष्य के पेशाब से बनता है, जिससे फसल की पैदावार बहुत अधिक होती है। वह फसल मनुष्य खाता है और मनुष्य में Uric Acid बड़ जाता है। क्योंकि न जाने किसके Urine से बने Urea से वह अपनी फसल उगाता और फिर उसे खाता है। पहले जमाने में गाय के मूत्र एवं गोबर से खाद बनाई जाती थी। जिससे उगा अन्न खाने में व्यक्ति को सुखद लगता था। व्यक्ति हृष्ट-पुष्ट रहता था। यह है सुखद।

205. संतरी -

सूर्य डूबने के बाद रात हो जाती है। रात को जो पहरा देता है, वह संतरी है। ऐसे ही किसी के जीवन में जब सूर्य डूब जाता है, वह व्यक्ति जीवन की कठिनाइयों के अंधेरे में फंस जाता है, तो उसके जीवन में संत ही संतरी बनकर आते हैं और उसे सही राह दिखाते हैं।

206. Sun + Tree = संतरी -

One English man said "in India, Summer is very hot, Because of Sun." So is there any Tree on the road, who save me from the heat of the Sun. So that's why, I call it Sun Tree or संतरी। Because Tree is saving me from the heat of Sunlight.

207. Stay + बल = Stable - जिसके पास बल है, वही फिर Stable रह सकता है।

208. Sum + मान = सम्मान - जुड़े रहने से सम्मान बना रहता है।

209. सत + तर = सत्तर - सत में सब तर जाते हैं। परमात्मा में सब मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं।

210. Sing + Girl = Single - Sing करते हैं जो Girl के लिए वह Single होते हैं।

211. सेंधा -

सेंधा नमक की दीवार में सेंध लगती है। इसलिए तो जब कोई दगाबाजी करता है तो उसे नमक हराम कहते हैं, क्योंकि उसने नमक खाया और उसमें सेंध लगा दी।

212. संस्कार या आदत -

एक तल पर मनुष्य भी पशु ही है। जिस प्रकार से पशु को जिस रास्ते से चराने ले जाओ एवं चराकर उसी रास्ते से लौटा लाओ। आप पांच दिन ऐसा करो छठवें दिन पशु अपने आप उसी रास्ते से जाकर वापस लौट आएगा। बस मनुष्य में भी यही है जिसे संस्कार या आदत नाम दिया गया है। क्योंकि आदत या संस्कार मनुष्य को सुला देते हैं, उसके विवेक को दबा देते हैं। वह आदतों और संस्कारों का गुलाम हो जाता है। हम उसका आंकलन करते हैं और उसकी आदतों एवं उसके संस्कारों से फिर उसे पहचानने लगते हैं। कि अब वह यह करेगा, अब ऐसा करेगा। क्योंकि वह आदत से लाचार और संस्कारों के अधीन होता है। बस वह इन सबसे ही मुक्ति चाहता है और विवेक की तलाश में रहता है। आदत और संस्कार या Habit व्यक्ति को मूर्छित कर देते हैं। उसे सुला देते हैं, उसका विवेक, उसका ज्ञान सब खो जाता है।

213. She + Saw = शीशा -

She saw herself in mirror, that mirror is called शीशा। She + Saw = शीशा। Every mirror is not called शीशा। Only that mirror is called शीशा, in which your heart is connected with that mirror.

214. Super + भात = सुप्रभात -

रात को पत्नी ने भात बनाया, किन्तु पति ने नहीं खाया। क्योंकि वह रात को चावल नहीं खाता था। सुबह होने पर पत्नी ने वही भात तड़का लगाकर पति को नाश्ते में दे दिया। पति ने भात खाया और कहा "Super भात" "Super भात"।

215. System = शिष्यतम् -

शिष्य बनने पर System में रहना पड़ता है। उच्छिष्ट - उच्च लोगों का छिच्ष्ट खाना पड़ता है। चाहे वह कुछ भी हो। भोजन, वस्त्र, पुस्तक और ज्ञान शिष्य बनने पर सबकुछ एक System के तहत लेना पड़ता है। यही System है।

216. शत + Ovary = शतावरी -

शत अंडों को रखनेवाली, शतावरी होती है। शत + Ovary = शतावरी। शत = सौ। इसीलिए सौभाग्यवती भव का, आशीर्वाद दिया जाता है। आपके भाग्य में सौ संतान हों। इसे ही शतावर कहते हैं, यानी शत टावर। राजस्थान में टावर को संतान कहते हैं। तो सौ टावर होने का, आशीर्वाद दिया जाता है।

217. Stage = सतेज - जिनमें तेज होता है उनको Stage की जरूरत नहीं होती है।

218. सीख + आयत = शिकायत - जब सीख जाते हैं कोई आयत तो करते हैं शिकायत।

219. Some + Say = समस्या –

कुछ तो कहो क्या बात है ? जब किसी को कोई समस्या हो जाती है, तो उसको कहा जाता है कि, "कुछ तो कहो" Say Something या "Some Say" यही समस्या है।

220. Secure + रीति = Security -

आपको Secure करने के लिए रीति बनाई जाती है। यह रीति ही आपको Secure करती है। समाज में रीति-रिवाज, समाज को Security देते हैं। यह रीति- रिवाज ही समाज में रीतियाँ बनाती हैं। यानि इन्हें बार-बार दोहराया जाता है। आजकल इन रीति-रिवाजों को Revive कहा जाता है। जिस प्रकार से Revive कपड़ों को, दुबारा कड़क बना देता है, उसी प्रकार रीति रिवाज शरीर और जीवन को दुबारा कड़क बना देते हैं। इससे समाज की Security हो जाती है।

221. सार + थक = सार्थक -

सार वही कहता है, जो थक जाता है। जो जिंदगी की जद्दोजहद में थक जाता है, वही आदमी फिर सार कहता है कि, "अरे ! इसमें तो कुछ नहीं है, मैंने सब कुछ करके देख लिया है"।

222. सुविधा + जनक = सुविधाजनक -

राजा जनक के द्वारा दी गई सुविधा, बड़ी ही सुविधाजनक होती है। राजा जनक ने श्वेतकेतु को राजमहल में सभी प्रकार की सुविधा दी, और रात को जब श्वेतकेतु जिस पलंग पर सोए थे, उस पलंग के ऊपर एक पतले धागे में तलवार लटकी दी। श्वेतकेतु को रातभर नींद नहीं आई। यही सुविधा जनक के द्वारा प्रदान की गई।

223. Sun + चालक = संचालक -

सूर्य ही संचालक है, यही सभी का संचालन कर रहा है, सूर्य नहीं रहेगा तो सब बंद हो जाएगा।

224. सिर + Mind = शरमिन्दा -

जब हम किसी बात को Mind कर लेते हैं, तो शरमिन्दा होते हैं। इसलिए तो सिर को ही Mind कहते हैं।

225. Shortcut - किसी को Short करना है, तो उसको Cut कर दो।

226. स्तुति - जिसकी तूती बोलती है, उसी की स्तुति की जाती है।

227. सम्पत्ति -

पत्तियों को जोड़कर (Sum) ही तो सम्पत्ति बनती है। पत्तियाँ पेड़ों पर लगती हैं। तभी तो मुहावरा है - "क्या पैसे पेड़ों पर लगते हैं"।

228. सांस + Critic = सांस्कृतिक -

सांस लेना Critics के बीच में यही सांस्कृतिक। आजकल इतने Critics हो गए हैं, कि वह बिना बीच में सांस लिए ही, Criticism करते हैं। संस्कृति में केवल Criticism होता है। कोई अपने Sons को Criticize करता है या कोई दूसरे के Sons पर Criticism करता है। इस तरह Sons को Criticize करके उसको एक आकार में ढाल देते हैं, जिसे संस्कृति कहते हैं। फिर कहते हैं कि, "संस्कृति हमारी रक्षा करती है"। जबकि जो Sons Criticize करके आकार में ढाल दिए गए हैं, वह

ढाल बनकर रक्षा करते हैं। इसलिए जैसी संस्कृति होगी, Sons भी वैसे ही ढलेंगे। इसलिए संस्कृतियाँ बचाई जाती हैं। जिससे हम बचे रहें क्योंकि किसी और संस्कृति में ढलने वाले Sons, हमारी संस्कृति की तरह व्यवहार नहीं करेंगे। वह Civilized हो जाएंगे और Civilization की रक्षा करेंगे। इसलिए जिस तरह धोंकनी से कोयला गर्म किया जाता है, फिर कोयले पर लोहा पिघलाया जाता है और फिर लोहे को ढाला जाता है। उसी प्रकार सांसो की गर्मी से, Sons के मन को पिघलाया जाता है। फिर पिघले मन को अपनी संस्कृति अनुसार ढाल लिया जाता है। यही ढला हुआ मन फिर, संस्कृति की रक्षा ढाल बनकर करता है। इसलिए भारत में सांसो का विज्ञान, सिखाया जाता है। एक बार जो मन ढल गया, तो फिर वही ढला हुआ मन Dull कहलाता है। जो ढाल की तरह रक्षा तो कर सकता है, किन्तु Dull होने से कुछ स्वयं नहीं सोच पाता है, केवल बने बनाए ढर्रे पर चलता रहता है, क्योंकि वह एक प्रकार की संस्कृति में ढल गया है। इसलिए कृत करनेवालों को बीच-बीच में सांस भी लेनी चाहिए। ताकि नये विचारों को भी पनपने का अवसर प्राप्त हो। अपने Sons को दूसरे के Sons के साथ, Compare करना ही, तो Criticize करना है। इस तरह दूसरों के Sons की Size की तरह अपने Sons को कृत करना ही Criticism है। दूसरा भी तो यही करता है, वह अपने Sons को आपके Sons की तरह बनाना चाहता है। यह इस तरह के Criticism में, दोनों के Sons, फिर कुछ का कुछ बन जाते हैं, न अपनी संस्कृति के रह पाते हैं, न दूसरे की संस्कृति को अपना पाते हैं। वह Pendulum की तरह सभी संस्कृतियों में घूमते रह जाते हैं। इसलिए सांस लें, विचार करें, फिर कृत करें। Criticize करनेवालों की तरह, उसे किसी Size में न ढालें।

229. Schedule -

Schedule हमेशा Dule ही होते। किसी भी योजना के दो प्रारूप बनाए जाते। एक के न चलने पर, दूसरे प्रारूप को लागू किया जाता है। इसलिए इसे Schedule कहते हैं। इसमें एक सोच पुरुष की होती है, दूसरी स्त्री की होती है। दो सोचों को मिलाकर Schedule बनता है। अब उसमें कौन-सा सही है, वही सहीड्युल है। उसी को लागू किया जाता है। दूसरे को संभाल कर रख लिया जाता है। इसलिए किसी भी योजना को बनाने के लिए पुरुषों और स्त्रियों को बराबर-बराबर मात्रा में उस योजना में रखा जाता है। क्योंकि दोनों की सोच ही एक मुकम्मल Schedule बना कर देती है। और फिर सही दिशा में आगे बड़ा जाता है।

230. शनि + तय + ज़र = Sanitizer -

शनिवार के दिन तय किया की जर को हाथ नहीं लगाऐंगे। शनीताईजर या Sanitizer - शनिवार के दिन जर (धन) न लिया जाता है, न दिया जाता है। इस तरह से शनि के प्रकोप से बचा जाता है। यह व्ववस्था यहूदी धर्म में है। इसलिए यहूदियों में शनिवार को व्यापार नहीं किया जाता है। पूरे दिन सिनोगोग में जाकर नमाज पढ़ी जाती है, और यहूदी धर्म ग्रंथ "तनख" का पाठ किया जाता है। घर-घर जाकर तेल इकट्ठा किया जाता है। फिर शाम को धार्मिक दावत होती है, जिसे पवित्र भोजन "Kosher Meal" कहते हैं, खाया जाता है। यह शनिवार को शनि के Sanitizer से बचने के लिए किया जाता है। इस तरह शनिवार को यहूदी धर्म वाले शनि की पूजा करते हैं।

231. स्तर -

स्त्री से ही स्तर का पता चलता है। पहले के राजा-महाराजा की कितनी स्त्रियाँ हैं, इससे उनके स्तर का पता चलता था। आज भी व्यक्ति का स्तर उसकी स्त्री से पता चलता है, कि वह आदमी अपनी स्त्री को किस प्रकार से सजाकर रखता है।

232. स्वयं + भाव = स्वभाव -

स्वयं को भाव देना। जब तक आप स्वयं को भाव देते हैं, तब तक दूसरे भी आपको भाव देते हैं। यानि जब तक आप स्वयं का आदर करते हैं, दूसरे भी आपका आदर करते हैं। जिस दिन आपने अपने आपको Free छोड़ दिया, उस दिन से लोग यही कहेंगे, "अरे! वह तो Free में मिल जाएगा, उसे क्या भाव देना"। यानि Free में गर ब्रह्म ज्ञान भी मिले, तो लोग ब्रह्म की भी उपेक्षा कर देते हैं कि, "Free में मिल रहा है, कहाँ जाएगा ? बाद में ले लेंगे"। यानि जब लोग यह पूँछते हैं कि, "आप Free हो तो मैं आ जाऊँ" इसका मतलब है कि, वह आपको भाव नहीं देते, Free में आपसे कार्य करवाना चाह रहे हैं, या फिर वह Free हैं और आपसे गप्पें लगाकर Time Pass करना चाह रहे हैं। इसलिए स्वयं को भाव दो, और यही अपना स्वभाव रखो। जीवन स्वाभाविक रूप से बीतता रहेगा। इसलिए Celebrities के बड़े भाव होते हैं। यही Celebrity के स्वभाव होते हैं। अपने को भाव देते हैं, लोगों से भाव लेते हैं। इसलिए स्वयं को भाव देने का स्वभाव रखो। स्वयं के भाव से स्वाभाविक जीवन जियो।

233. सुर + राख = सुराख -

सुर जब किसी में सुराख करते हैं, तो सुराखवाले हिस्से में से राख निकलती है। क्योंकि सुराख करने के लिए, Drill Machine इतनी तेज चलाई जाती है, कि उसकी तेजी की आग में, वहाँ का बुरादा राख हो जाता है और वहाँ पर सुराख हो जाता है। उस सुराख से फिर पत्थर दिल इन्सान भी बाँध लिए जाते हैं। क्योंकि वह सुराख फिर कभी भरता नहीं है। पत्थर, लकड़ी आदि में इसी तरह सुराख करके उसे इस्तेमाल किया जाता है। सुर यानि देवता। उस सुराख का जो बुरादा होता है, उसे अपने पास रख लेते हैं, क्योंकि वह उस स्थान का हिस्सा होता है। यही सुराख है।

234. सार -

सार का उल्टा रसा, जब भी रसेदार सब्जी बनती है, तो व्यक्ति रसा माँगता, "अरे! थोड़ा-सा रसा-रसा दे दो" क्योंकि कहा भी गया है, "रसास्वादन" रसा + स्वाद + अन्न यानि अन्न का स्वाद रस में है। इसी तरह से किसी भी चीज का सार हो वह स्वादिष्ट ही लगता है। और आदमी सार ही सुनना-पढ़ना चाहता है। तभी तो कहता है, "पूरी कथा कौन सुने!!! बस सार-सार सुना दो" और जहाँ तक बात पूरी की है, तो पूरी भी आलू की रसेदार सब्जी के साथ खाने में अच्छी लगती है। इसलिए सार का बड़ा ही महत्व है। फिर परमात्मा भी तो "रसौ वै सः" है। इसलिए सार को सुनना चाहिए। रसा को खाना चाहिए। यही जीवन का सार है। यही जीवन में रस लाता है।

235. She + Saw = शीशा -

शीशा सिर्फ She के लिए है, जिसमें वह अपने आपको Saw कर सकें। यानि शीशा सिर्फ स्त्रियों के

लिए है। जिसमें स्त्रियाँ अपने आपको देख सकें।

236. सम + यम = संयम -

पतंजलि योगसूत्र में पाँच यम हैं- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह। इन पाँच यम का पालन करना ही संयम है। फिर पाँच नियम भी हैं- शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान। इनका भी पालन करना है। यानि यम और नियम दोनों का पालन करना है संयम है।

237. Sun + तप्त = संतप्त - Sun ही तपता है।

238. सोनभद्र - नाम ही सोनभद्र है, तो फिर सोना तो मिलेगा ही।

239. समझा + ईश्वर = समझाईश -

इसको तो समझा-समझा कर थक गए, अब तो भगवान ही इसे समझाए। समझाता है जिसको ईश्वर, उसको कहते हैं "समझाईश"।

240. साईबेरिया -

साईबेरिया आज की भाँति उजाड़ और बर्फीला नहीं है। कभी साईबेरिया भी हरा-भरा नदियों से भरपूर था। किन्तु भूमध्य सागर और कैस्पियन सागर के बनने के कारण साईबेरिया उत्तरी धुव्र की ओर खिसक गया। तब साईबेरिया में रहनेवाले लोग रूस, ईरान, ईराक और युरोप तथा चीन और जापान में जाकर बस गए। ईरान पहले आर्यो का देश था। बाद में यह पारसियों का देश बना। साईबेरिया से जो लोग आए वह पारसी कहलाए क्योंकि वह पार से आए थे। ईराक में यहूदी रहते थे। ईरान पर जब साईबेरिया के पारसियों का आधिपत्य हो गया, तो ईरान के आर्य भारत में आए और ईरान में साईबेरियन लोग पारसी बनकर रहने लगे। ईराक के यहूदी भी भारत में आए, क्योंकि यहूदियों को इन साईबेरियन ने रहने नहीं दिया। भारत में उस समय दक्षिण के द्रविड़ और वन में रहनेवाले वनवासी लोग ही रहते थे। भूमध्य सागर की घटना से पहले हिमालय नहीं था। मानसरोवर एक विशाल मीठे पानी का समुद्र था। किन्तु वहाँ भूमध्य सागर बना और यहाँ पर हिमालय बना। कालांतर में भारत में यहूदियों ने बड़े-बड़े किले, महल, चारागाह आदि बनाए और इनके साथ में आर्य भी रहने लगे। यह आर्य ही एक प्रकार से यहूदी थे, जो व्यापार करते और पशुपालन करते भारत को अपनाने लगे। फिर जब इस्लाम ने ईरान पर हमला किया, तब पारसी लोग भारत में आकर शरण पाए और आकर रहने लगे। यह पारसी मुख्यतः व्यापार ही करते थे। यह पारसी मूलरूप से साईबेरियन ही थे। इसलिए रूस में रह रहे साईबेरियन से आज भी इन पारसियों का नाता है। आज भी यह रूस से अपनत्त्व अपनाए हुए हैं। इसके बाद अरब में इस्लाम फैला, तो अरब से भी लोग भारत में आकर शरण लिए और रहने लगे। युरोप में राजशाही व्यवस्था से तंग आकर, युरोप के बहुत से देशों के लोग भारत और दूसरे देशों में शरण पाने लगे। यह आलम काफी समय तक रहा। फिर निकले भारत को खोजने और अमेरिका मिल गया, तो फिर सब लोग अमेरिका में बसने लगे, क्योंकि लोगों को उन्मुक्तता और आजादी का माहौल चाहिए रहता है, जो पहले भारत में था। अब वही आजादी अमेरिका में मिली। किन्तु अब अमेरिका में भी तंगहाली होने लगी है, इसलिए अब लोग चाँद और मंगल पर बसना चाहते हैं।

241. Secularism -

जब कमजोर लोग आपस में मिलकर के एक ताकत को इकट्ठा करते हैं, उसे Secularism कहते हैं। यह ऐसे है, कमजोर लोगों की बहुत सारी छोटी-छीटी टुकड़ियाँ जब एक समझौता करती हैं, कि वह सारी टुकड़ियाँ, एक-दूसरे का सम्मान करेंगी, एक दूसरे के खान-पान का सम्मान करेंगी, एक दूसरे के वस्त्रों का उपयोग करेंगी, एक दूसरे के रीति-रिवाजों का सम्मान करेंगी और साथ-साथ मनाएंगी। एक-दूसरे के देवी-देवताओं, धार्मिक अनुष्ठानों का सम्मान करेंगी और साथ-साथ पर्व मनायेंगी। इस तरह के समझौते के तहत बने नियमों का पालन करते हुए, यह कमजोर लोग आपस में एकता रखते हुए ताकतवर बन जाते हैं और बिना किसी ऊँच-नीच के रहते हैं। जिससे यह सुरक्षित रहते हैं और अपने जीवन को खुशी-खुशी व्यतीत करते हैं। इसे ही Secularism कहते हैं। यह Secularism कमजोर को ताकतवर बनाता है, जिससे कमजोर व्यक्ति भी बिना किसी हीन भावना के अपने आप को खुश रख लेता है और निर्भय रहता है। यहाँ कमजोर से आश्य, आर्थिक कमजोरी से है। इस तरह संसार Secularism से प्राप्त हुई शांति और सद्भाव से चलता रहता है।

242. साठा में पाठा -

मनुष्य को एक वर्ष में, साठ दिन पाठ करना चाहिए। तीस दिन का एक महिना, तीस दिन में पाँच दिन स्त्री के होते हैं, एक वर्ष में बारह महीने होते हैं, हर महीने के पाँच दिन मिलाने पर, कुल साठ दिन बनते हैं। यह जो साठ दिन होते हैं, इन साठ दिनों में पुरुष को स्त्री से अलग रहना पड़ता है। तो पुरुष इन साठ दिनों का उपयोग पाठ करने में करता है। जिस पुस्तक में पाँच अध्याय होते हैं, उस पुस्तक का पाँच दिन पाठ करता है, एक दिन में एक अध्याय का पाठ करता है। इस तरह पुरुष अपने साठ दिन पाठ, करते हुए बिताता है, और साठा में पाठा कहलाता है। यह पाँच पाठ हैं, ब्रह्मृषि पाणिनि द्वारा रचित, धातु पाठ, सूत्र पाठ, उणादि पाठ, गण पाठ, लिंगानुशासनम् पाठ।

243. Sun + शय = संशय -

Sun के निकलने पर तब व्यक्ति सोता रहता है, तो फिर संशय होता है कि, "यह क्यों सो रहा है" ? बस यही संशय है।

244. Shoe + नये = शून्य -

कोई जिद्द कर बैठा कि, "जब तक नये Shoe नहीं लाते, तब तक जाऊँगा नहीं"। जब तक नये Shoe नहीं आ गए, तब तक सब कुछ शून्य बना रहा। तो फिर नये Shoe लाए गए, तब वह नये Shoe पहनकर गया। तब जाकर शून्य समाप्त हुआ। फिर वह सबको अपने नये Shoe दिखाता फिरता रहा। Shoe का आकार भी शून्य की भाँति होता है। Shoe सब ओर से घिरा होता है, मध्य में शून्य की भाँति खाली होता है।

245. सर + ये = श्रेय -

Sir ये किसके सर पर डाला जाए ? जो अपने सिर पर लेते हैं, वह श्रेय होते हैं। किसी बात की अच्छाई का श्रेय तो सभी अपने सिर पर लेना चाहते हैं। श्रेय उन्हीं को मिलता है, जिन्हें यश मिलता है, और जो कर देते हैं। वही श्रेयस्कर भी होते हैं। किसी भी कार्य के लिए Yes करने पर यश मिलता है। श्रेय +

Yes + कर = श्रेयस्कर।

246. Sung + गीत = संगीत -

गीत के संग जिसको गाया जाता है, उसे संगीत कहते हैं । गीत तो गाया ही जाता है, परन्तु गीत के संग भी किसी को गाया जाता है। तभी संगीत पूरा होता है।

247. Sum + पूर्ण = संपूर्ण -

Sum यानि जुड़ाव (योग)। पूर्ण यानि पूरा। संपूर्ण यानि जुड़ाव ही पूरा है। जब चीजों को जोड़ते जायेंगे, तब अपने आप पूर्ण होते जाएंगे। यही संपूर्णता है, यानि पूर्ण होने के लिए Sum यानि योग करना जरुरी है। योग करते जाईये, पूर्ण होते जाईये। यानि जोड़ते जाईए और पूरे होते जाईये। फिर पूर्ण तो परमात्मा है, जिसने अपने योग से सबको जोड़ रखा है। इसलिए परमात्मा संपूर्ण है।

248. सर + Yes + कर = श्रेयस्कर -

श्रेयस्कर वही होता है,जो अपना सिर हाँ में हिला देता है, कि "हाँ यह तो मैं कर लूँगा"। उसी को फिर श्रेय भी दिया जाता है।

249. स्वर + चित्त = स्वरचित -

चित्त में स्वर उठते हैं। चित्त में जो स्वर उठते हैं, वर स्वर गले और जीभ के माध्यम से बाहर निकलते हैं, फिर कोई उन्हें लिख लेता है, कोई लिखवा लेता है। जैसे मीरा गाती थीं, तो मीरा की दासी लिख लेती थी। क्योंकि जब स्वर निकलने शुरु हुए तब लिखने बैठने गए तो स्वर की धारा टूट जाएगी। इसलिए चित्त से निकलनेवाले स्वरों को लिखने के लिए किसी को रख लिया जाता है। किन्तु कोई-कोई स्वयं लिख लेता है। जो स्वयं रचते हैं, इसलिए वही स्वरचित लिखते हैं। किन्तु काव्य स्वयं रचा नहीं जाता है। काव्य चित्त का स्वर होता है। जैसे ब्रह्मृषि वाल्मीकि के चित्त से स्वर निकला और रामायण महाकाव्य लिख गया। इसलिए चित्त के स्वर को निकलने दीजिए और उसको लिखने के लिए किसी को रख लीजिए। इस तरह स्वरचित हो जाईए। लेकिन चित्त से स्वर कभी भी निकल सकते हैं। दिन हो की सुबह हो की आधी रात हो। कभी-कभी तो वर्षों बीत जाते हैं, लेकिन चित्त से स्वर नहीं निकलते, कभी-कभी तो वर्षों निकलते रहते हैं, रुकते ही नहीं हैं। उसमें से कितने तो बिन लिखे ही रह जाते हैं।

250. Sum + भाल = संभाल -

जोड़कर रखना भाल को ही संभाल है। यानि दिमाग को जोड़कर रखना। माथा के भीतर जब जुड़ाव टूटता है, तो माथे में पीड़ा होती है। तो माथे को जोड़कर रखने को संभाल कहते हैं।

251. संतुष्टि -

संत की पहचान संतुष्टि से होती है। संत का चेहरा संतुष्टि से भरा होता है। इसलिए संत का दर्शन सभी करना चाहते हैं। संत को पीछे किये का पछतावा नहीं होता है। और संत को आगे क्या करें इसकी फिक्र नहीं होती है। इसलिए संत अपने आप में संतुष्ट रहता है। संत के चेहरे पर संतुष्टि झलकती है। संतोष अलग है और संतुष्टि अलग है। जब तक परमात्मा की प्राप्त नहीं हुई, तब तक परमात्मा के प्राप्त नहीं होने पर दुःख नहीं मनाना और अपनी भावना को व्यक्त नहीं करना संतोष है। और जब परमात्मा

की प्राप्त हो गई है, तब परमात्मा की प्राप्ति के बाद, जो भाव चेहरे पर आता है, वह संतुष्टि कहलाता है।

252. Ship = सीप -

समुद्र से सीप को ढूंढ़ने के लिए, जो पानी के जहाज बनाए जाते हैं, उन्हीं जहाजों को Ship कहते हैं।

253. सत् + संग = सत्संग –

सत का संग Meditation में होता है। इसलिए अपनी तीसरी आँख को रोशन करने के लिए Meditation करना चाहिए।

254. सब + जी = सब्जी -

सबके जी को जो पसंद आती है, उसे ही सब्जी कहते हैं। सब्जी उसी को कहते हैं, जो सबके जी को पसंद आए। कोई भी सब्जी बनाओ, उसे सब लोग खा जाएँ, वह सब्जी होती है।

255. शमा = क्षमा -

जिस प्रकार जलती हुई शमा रात के अंधेरे को उजाले से रोशन कर देती है, उसी प्रकार दी गई क्षमा, बुझे हुए मन को, पुनः दीप्तिमान कर देती है।

256. समस्या = समोसा -

समस्या के निपटारण के बाद समोसे खाए जाते हैं। यानी समोसे खाकर Celebrate किया जाता है।

257. सोमनाथ + गोपुरम = सोमपुरा -

सोमनाथ मंदिर बार-बार टूटा, सोमपुरा कारीगरों ने हर बार टूटे, सोमनाथ को पूरा बनाया। सोमनाथ मंदिर को बनाने वाले कारीगर, सोम पुरा कहलाए। यही सोमपुरा कारीगर जानते थे कि, सोमनाथ में, शिवलिंग कैसे हवा में लटकता है। सोमनाथ मंदिर को हर बार पूरा बनानेवाले, कारीगर ही तो सोमपुरा हैं। सोमनाथ का गोपुरम बनानेवाले सोमपुरा। सोमनाथ को पूजने के लिए, गुजरात में सोमवार को अवकाश रहता है। सोमवंशी होने के कारण, भगवान श्री कृष्ण गुजरात में बस गए।

258. सुर्ख रूह -

रूह लाल होती है, क्योंकि खून लाल होता है। खून ही रूह होती है। इसलिए रूह सुर्ख होती है।

259. श्रीनगर = श्रीलंका -

क्या आप जानते हैं ? क्यों भारत के माथे पर श्रीनगर है और भारत के पैरों में श्रीलंका है ? क्योंकि माथे पर, तिलक लगाकर पूजा जाता है, और शुभकामनाएं दी जाती हैं। पैरों को भी पूजा जाता है, और आशीर्वाद लिया जाता है। श्री यानी लक्ष्मी। लक्ष्मी यानी धन, ऐश्वर्य, सम्पत्ति। श्रीनगर ज्ञान का प्रदेश है। जैसे माथे में ज्ञान रहता है। श्रीलंका स्वर्ण का प्रदेश है, स्वर्ण ही सम्पत्ति है। स्वर्ण ही ऐश्वर्य है।

260. स्तन + दर्द = Standard -

स्त्री का Standard, स्त्री के स्तन से तय किया जाता है। पुरुष का Standard, पुरुष के दर्द से तय किया जाता है। इसलिए स्त्री अपने चेहरे की अपेक्षा, अपने स्तनों पर ज्यादा ध्यान देती है। हर स्त्री Stunning लगना चाहती है। स्तन + Ing = Stunning या स्तनिंग। जिन स्त्रियों के स्तन अच्छे नहीं होते हैं, वे स्त्रियाँ Inferiority Complex में रहती हैं। पुरुष हमेशा दर्द की बात कहेगा, पुरुष हमेशा दर्द को सहन करेगा, किंतु पुरुष रोयेगा नहीं, और न ही दर्द को चेहरे पर आने देगा। इस तरह से

पुरुष, शरीर, अंतःकरण, प्राण और आत्मा तक के, दर्द को सहता हुआ, अपना Standard बढ़ाता जाएगा। अगर पुरुष को सभी ऐशोआराम है, तो भी पुरुष दर्द की चाह में, ऐशोआराम छोड़ देता है और वन में जाकर तपस्या के दर्द को, सहन करता है। पुरुष इसीलिए अपने Standard को, ऊँचा उठाने के लिए, कठिन से कठिन चुनौतियों को, स्वीकार कर लेता है और उन चुनौतियों को पूरा करने में जो, दर्द होता है, वह दर्द हंसते-हंसते सहन कर लेता है। इस तरह से पुरुष की आजमाईश भी, पुरुष के दर्द से होती है, कि पुरुष कितना दर्द सह सकता है ? पुरुष की ताकत कितनी है ? पुरुष कितने पानी में है ? तो यह दो तरीके हैं, स्त्री और पुरुष के Standard को, तय करने के।

261. Selfie -

जब व्यक्ति को अपनी आत्मा का ज्ञान हो जाता है। तब व्यक्ति दूसरे की आत्मा का सम्मान करता है। और दूसरा भी पहले की आत्मा का सम्मान करता है। इसे ही आत्मसम्मान कहते हैं यानी आत्मा से आत्मा का सम्मान कहते हैं। क्योंकि शरीर से तो सभी भिन्न हैं, किंतु आत्मा से सभी एक हैं। जैसे की व्यक्ति जब Selfie लेता है, तब बहुत सारी Selfie में जो उसे पसंद आती है, उसी Selfie को DP में लगाता है। इसे ही Self-respect कहते हैं यानि स्वयं का सम्मान। स्वयं यानि आत्मा का सम्मान। Self का एक Meaning आत्मा भी होता है। इसलिए जब बहुत सारी Selfie में उसका किसी एक Selfie के साथ Synchronization हो जाता है। वह उसी Selfie को DP पर लगाता है। भले वह Selfie दूसरे को पसंद आए या न आए वह इस बात की परवाह नहीं करता है। किंतु व्यक्ति अपना आत्म-सम्मान करता है, तो फिर वह दूसरे की आत्मा का भी सम्मान करता है। इसलिए लोग एक-दूसरे की Selfie को Like करके, एक-दूसरे के प्रति अपना आत्म-सम्मान व्यक्त करते हैं।

262. सुरक्षित + लाभदायक = सुलभ -

सुरक्षित एवं लाभदायक को, सुलभ कहते हैं। जबकि ईश्वर की प्राप्ति करनेवालों ने बहुत कठिनाइयों को झेला है और उनको लाभ भी नहीं हुआ है। विश्वामित्र से लेकर बुद्ध, बुद्ध से लेकर ओशो तक बीच में जो भी व्यक्ति ईश्वर की प्राप्ति के लिए गए हैं, पहले उनके जीवन को देखना चाहिए। तब जाकर ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर चलना चाहिए।

263. Spirit + Ritual = Spiritual -

When you perform rituals, with the spirit, then you are spiritual. अगर आप आत्मा के साथ ध्यान करते हैं, तब आप आध्यात्म में है। आत्म + ध्यान = आध्यात्म।

264. Saw + हस = साहस -

किसी को देखकर हँसना, साहस कहलाता है। Saw + हस = साहस। जब कोई कहता है कि, "मुझे देखकर !!! तुमने हँसने का साहस कैसे किया ?" यानी जब कोई कठिन परिस्थिति में होता है, और उसकी उस परिस्थिति को देखकर, जब कोई बेशर्म होकर, हँसता है। उसे साहस कहते हैं। निंदा उसी की होती है, जो चाहता है, कि मेरी निंदा हो। इसके लिए वह जानबूझकर निंदनीय कार्य करता है। जिससे जो लोग अपना-अपना कार्य कर रहे हैं, उनका ध्यान भटके, और यह निंदनीय कार्य करनेवाला, चालकी से उस निंदनीय कार्य को आवश्यक कार्य बना दे। अन्यथा किसी को भी किसी

अन्य के कार्य को देखकर निंदा करने का समय नहीं है। इसलिए कुछ कार्यों को निंदनीय कार्य की श्रेणी में रखा जाता है। जो निंदनीय कार्य करता है, उसी की निंदा होती है। अनिंदनीय कार्य करनेवाले की निंदा कभी नहीं होती है। मेहनत करनेवाले की हमेशा प्रसंशा ही होती है। निंदनीय कार्य वह होता है, जिससे समाज को दुःख होता है। तो जब समाज अपने उस दुःख को बताता है, तब उसे निंदा करना कहा जाता है। क्योंकि समाज निंदा ही कर सकता है। निंदा करना समाज की ताकत है। इसलिए कहा भी गया है, "निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छबाए।" नियरे = Near = नजदीक। शर्म तो मर्यादा को कहते हैं, मर्यादा को Protocol कहते हैं। भारत मर्यादित लोगों का देश है, जैसे - राजा हरिश्चंद्र ने मर्यादा निभाई। दानवीर कर्ण ने मर्यादा निभाई। नल-दमयंती ने मर्यादा निभाई। महाराणी पद्मावती ने मर्यादा निभाई। पारसी आज तक मर्यादा में रह रहे हैं, क्योंकि मर्यादा से ही मान मिलता है। इसलिए मान-मर्यादा ऐसा कहा जाता है। अमर्यादित या बेशर्म को हमेशा से ही निंदा मिलती है। मेहनतकश, हमेशा शर्म से रहता है। जिसपर कोई हँसता नहीं है। मेहनतकश ही सफलता को प्राप्त करता है।

265. से + क्यू + लड़ = Secular -

मतों में भिन्नता होने के कारण, व्यक्ति अपने पक्ष को, मजबूती से रखने में, जब ठोस रूप, धारण कर लेता है, तब वह दूसरे पक्ष से लड़ लेता है। किंतु जब व्यक्ति, यह सोचता है कि, "मैं इससे क्यों लड़ूँ ?" यही Secular हो जाना होता है। "से क्यू लड़" ही तो "से क्यू लर" यानी Secular है। "इससे क्यों लड़ें" यही तो Secular का अर्थ है। से + क्यू + लड़ = Secular. इसलिए जो व्यक्ति, Secular नहीं होता है, वह व्यक्ति लड़ने का, कोई न कोई कारण, पैदा करता है कि, "मैं इससे कैसे लड़ूँ"? क्योंकि लड़ने का इच्छुक व्यक्ति, अपनी ताकत का प्रदर्शन, करना चाहता है। ताकत का प्रदर्शन करने के लिए, किसी न किसी से लड़ना है, और लड़ने के लिए, कोई न कोई तो बहाना चाहिए। तो जो लड़ना नहीं चाहते, वह सोचकर व्यवहार करते हैं, कि "तोलकर बोलना चाहिए"। इसमें व्यापारी वर्ग, सबसे बड़ा Secular होता है। व्यापारी वर्ग किसी से, लड़ता नहीं है, एक दूसरे को समझकर, सभी वर्गों से प्रसन्नतापूर्वक, व्यवहार करता है। जैसे United Stated of America के, 52 राज्य आपस में, किसी से नहीं लड़ते हैं। वहाँ किसी प्रकार के, धार्मिक, राजनीति, सामाजिक, आर्थिक, उन्माद नहीं होते हैं। उस देश में जो जाता है, उसे भी Secular हो जाना पड़ता है। वह भी किसी से, लड़ने से पहले सोचता है, "इससे क्यों लड़ूँ ?" ऐसा ही, European Union के देशों में है, जहाँ न भाषा, न धर्म, न राज्य की संप्रभुता, किसी को भी लेकर, लड़ाई नहीं है। दोनों ही Union आज विकसित हैं। भारत भी एक Union है, Union of India, बहुत से धर्मों, परम्पराओं, मान्यताओं, रूढ़ियों, भाषाओं, बोलियों आदि का। तो भारत का व्यक्ति भी यदि, यह सोचे की, "इससे क्यों लड़ूँ ?" तो एक दिन, भारत भी विकसित देश होगा।

266. सत्य + अनाश = सत्यानाश -

सत्य का नाश नहीं होता है, इसलिए, सत्य अनाश है। सत्य + अनाश = सत्यानाश। अ + नाश = जिसका नाश नहीं होता है। जब किसी सत्य को, छुपाने के लिए, कितना ही झूठ बोला जाता है, किंतु

सत्य फिर भी, छुप नहीं पाता है, तो व्यक्ति चिढ़कर कहता है, कि "तूने ! सारा सत्यानाश कर दिया।"

267. सत + तर्क = सतर्क -

सत हमेशा, तर्क करने पर ही, निकल कर आता है। सत + तर्क = सतर्क। सत को प्राप्त करना है, तो तर्क करो।

268. Sick + कष्ट = शिकस्त -

जो Sick होता है, एवं, कष्ट में होता है, वही शिकस्त होता है। Sick + कष्ट = शिकस्त। Sick = बीमार। कष्ट = दुःख। बीमार रहनेवाला एवं दुःख में रहनेवाला व्यक्ति, हार जाता है। हार = शिकस्त।

269. साथ = सात -

साथ फिरना ही तो, सात फेरे हैं। काबा में पहले पारसियों की अग्नि जलती रहती थी। उस जलती हुई, अग्नि की सात बार, परिक्रमा की जाती थी। तो जो भी नया, जोड़ा शादी करके आता था, वह जोड़ा भी, परिक्रमा करता था। यहीं से अग्नि की सात बार, परिक्रमा करने की, परम्परा प्रारंभ हुई। जब काबे में, शिवलिंग की स्थापना हो गई, तब लोगों ने, शिवलिंग की परिक्रमा जारी रखी। और, पारसी लोगों ने भी, जगह-जगह अग्नि जला ली। तब जो लोग, पारसियों से अलग हुए, तब भी उन लोगों ने, अग्नि की परिक्रमा, करनी जारी रखी। यह परिक्रमा सात बार, होती थी, तो परिक्रमा को, फेरना कहते हैं। तो सात बार फेरना यहीं से, अभी तक चला आ रहा है।

270. Some + Say = समस्या -

Some Say ही तो समस्या है। Some + Say = समस्या। अगर यह पता चल जाए, यह किसने कहा, तो इस समस्या का हल, हो जाए। इसलिए आदमी, यह ढूँढता है कि, यह किसने कहा है ? और, कहता है, "ढूँढों उसे, जिसने ऐसा कहा है। उसकी हिम्मत कैसे हुई ? ऐसा कहने की।" क्योंकि किसी के द्वारा, कुछ ऐसा कह देना ही, समस्या होती है। तभी तो लोग कहते हैं, "अरे ! मैंने सुना है कि, वह आपके बारे में, ऐसा-ऐसा कह रहा था।" बस यही से समस्या, शुरु हो जाती है। आदमी फिर, उस आदमी को, ढूँढने में लग जाता है, जिसने ऐसा कहा है और वही उसका समाधान होता है। "कि तूने ऐसा क्यों कहा ? तूने ऐसा कैसे कहा ? चल माफी माँग अब, कह फिर ऐसा कभी नहीं कहेगा।" यही माफी तो, उसकी समस्या का, समाधान होती है। जिससे उसके दिल को, ठंडक पहुँचती है।

271. सूत -

सूत्र आपको, सूत से मिलता है। सूत कहते हैं, रथ हाँकनेवाले को। रथ हाँकनेवाला, रथ में बैठनेवाले को, उस नगर के बारे में, बहुत-सी बातें, छोटे-छोटे रूप में, बता देता है। यही बातें, उस नगर में, रहने के लिए आए, उस नये व्यक्ति को, बहुत से सूत्र, दे देती हैं। अब रथ तो रहे नहीं, किन्तु रिक्शावाले, टैक्सीवाले, अब भी, अपने रिक्शा, टैक्सी में, सफर करनेवाले को, पूरे शहर के बारे में, बहुत से सूत्र बता देते हैं। शहर के सारे, Updates इन्हीं के, पास होते हैं। इन्हीं के Updates से, उस शहर के बारे में, Informative रह सकते हैं।

272. शत + True = शत्रु -

शत होता है, जो True, वही शत्रु होता है। जो True है, वही शत है। इसलिए True को, शत कहते

हैं, शत से ही, सत बना, और, सत से सत्य बना। इसलिए True को, सत्य कहते हैं। और, सत्य बोलने वाला, शत्रु होता है।

273. शाह + हँस = साहस -

शाह के सामने हँसना ही, साहस होता है। शाह + हँस = साहस। शाह = आध्यात्मिक प्रमुख एवं राजनैतिक प्रमुख (राजा)। फारस, तुर्क, बगदाद में, आध्यात्मिक प्रमुख एवं, राजनैतिक प्रमुख (राजा), यह दोनों पद, एक ही व्यक्ति के पास होते थे, जिन्हें शाह कहा जाता था। आध्यात्मिक एवं राजनैतिक, दोनों मामलों को, यही देखते थे। जैसे की नादिर शाह दुर्रानी, अहमद शाह अब्दाली आदि। उन्हें शाह जी के नाम से, सम्बोधित किया जाता था। जो बाद में अपभ्रंश होकर, साहजी या साजी हो गया। राजपूताना में सा शब्द, आज भी, सम्मान का प्रतीक है। इसीलिए आध्यात्मिक स्थानों एवं राजनैतिक स्थानों पर, लिखा होता है, यहाँ हँसना मना है। क्योंकि दोनों ही जगह, दार्शनिक, Intellectual एवं Wisdom को प्राप्त हुए सज्जनों के लिए होती है। शाह के सामने हँसना ही साहस का काम होता था। यह साहस का काम, कोई भी नहीं कर सकता था। केवल शाह ही हँस सकता था, तो शाह के हँसने के कारण, शाह को ही साहसी कहा गया, और, शाह के हँसने को साहस, कहा गया है। इसीलिए शाह ही, साहसी होते हैं, किसी कठिन कार्य को, साहस के साथ पूरा करते हैं।

274. स्वर + रस + वटी = सरस्वती -

जो स्वर के रस वाली वटी हैं, वही सरस्वती है। स्वर + रस + वटी = सरस्वती। वटी = कई सारी जड़ी-बूटियों से बनाई गई औषधि। जिनके स्वर में रस है, ऐसे बहुत सारे स्वर के, रस वाली वटी को, सरस्वती कहते हैं। जिस प्रकार जड़ी-बूटियों से, बनी औषधि वटी, शरीर के रोगों का निवारण करती है। उसी प्रकार, स्वर के रसों से बनी वटी, सरस्वती बनकर, मन, आत्मा और शरीर के, रोगों का निवारण करती है, तथा, परमात्मा तक का दर्शन, करवा देती है।

275. Sum + भाल = संभाल -

Sum रखना भाल को, यही संभाल होता है। जो अपने भाल को, जोड़कर रखता है, वही अपने को संभाल कर, रखता है। Sum + भाल = संभाल। Sum = जोड़। भाल = माथा।

276. Sum + ई + कर्ण = समीकरण -

महाभारत के युद्ध के प्रारंभ होने के पहले सभी यही जोड़ में थे कि, "यह हमारे साथ जुड़ जाए, यह हमारे साथ जुड़ जाए"। जब बात कर्ण को जोड़ने की आई, तब इसे समीकरण कहा गया। Sum + ई + कर्ण = समीकरण। Sum = जोड़ना। क्योंकि कुंति के द्वारा, कर्ण को पांडवों के साथ, जुड़ने के लिए कहा गया। सभी की उत्सुकता, यह जानने की थी कि, कर्ण किसके साथ शामिल होगा। शामिल का अपभ्रंश ही Sum है। शाम + मिल = शामिल। कोई किसी से जुड़ने जाता था, तो दूसरा कहता था, "शाम में मिल", यही शाम में मिलना ही, शामिल हो गया। शामिल का शाम फिर, शम से Sum हो गया। और, Sum का अर्थ जोड़ हो गया।

277. शादी = साड्डी -

जब किसी की शादी, किसी से हो जाती है, तब कहते हैं, "हुण ! ये साड्डी हो गई है।"

278. Sum + विधान = संविधान -

जब Union of India को, बनाया गया। तब Union का जोड़ बना रहे, इसके लिए, एक विधान बनाया गया, जिससे भारत के राज्यों का संघ, जुड़ा रहे। Sum + विधान = संविधान। जोड़कर रखने के विधान को ही, संविधान कहते हैं। ऐसा विधान बनाया गया, जो सभी राज्यों को, जोड़कर रखे। विभिन्न रियासतों को जोड़कर, कई राज्य बनाये गये, तब उन राज्यों को आपस में, जोड़कर रखा जाए, इसके लिए एक संविधान बनाया गया। जो सभी राज्यों को, जोड़कर रखे। कंस के द्वारा जिस नियम को, लगाया गया उसे, Constitution कहते हैं। कंस + Tuition = Constitution. Tuition = शिक्षा। मथुरा के राजा कंस ने, मथुरा में अपनी सरकार चलाने के लिए, जो नियम बनाया, उसे Constitution कहा गया। इसी Constitution का विरोध, करने के लिए, मथुरा के गाँववालों ने षडयंत्र रचा, और, कंस को ही हत्यारा बना दिया। तथा कंस की हत्या करवा दी। कंस ने मथुरा राज्य में, सभी के लिए, शिक्षा की अनिवार्यता लागू कर दी। तब सभी को शिक्षा मिले, इसके विरोध में, मथुरा राज्य के, शिक्षाविदों ने कंस के लिए, षडयंत्र किया। और, पूरे मथुरा राज्य में, कंस के बारे में फैला दिया कि, कंस की हत्या, कंस के आठवें भांजे के द्वारा होगी। इसी बात पर कंस के भीतर, डर पैदा किया गया, और कंस को सलाह दी गई कि, वह अपने भांजों की हत्या कर दे। बस इसी भय से कंस ने, पाप किया। और, कंस आत्मा के स्तर पर, कमजोर होता गया। यही बात अंग्रेजों ने की, अंग्रजों ने सभी के लिए, शिक्षा अनिवार्य कर दी। तब अंग्रेजों के समय के, शिक्षाविदों ने उन्हीं शिक्षा पाये, लोगों को ही अंग्रेजों के, विरोध में खड़ा कर दिया। इसीलिए जो सरकारें, शिक्षा सभी के लिए, अनिवार्य कर देती हैं, वह सरकारें शिक्षाविदों की, दुश्मन हो जाती हैं। शिक्षाविद इन सरकारों के, खिलाफ षड़यन्त्र करते हैं। अतः बुद्धिमान सरकारें, शिक्षा को लगभग समाप्त कर देती हैं। जिससे शिक्षाविद इन सरकारों की, प्रसंशा में कसीदे के कसीदे, गढ़ देते हैं। और खराब से खराब सरकार को भी, अच्छा से अच्छा साबित कर देते हैं। इसीलिए लम्बा शासन, करनेवाली सरकारें, शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं देती हैं। अपनी सत्ता को वर्षों तक, कायम रखती हैं।

279. सिर + Rum + Mind = शर्मिंदा -

सिर में Rum के जाने से, आदमी Mind कर जाता है। और फिर बाद में शर्मिंदा हो जाता है। सिर + Rum + Mind = शर्मिंदा। आदमी जब Rum पी लेता है, तब उस आदमी के दिमाग में, खुलापन आ जाता है। और फिर Rum पिया हुआ आदमी, दूसरे आदमी से कहता है कि, "यार ! तुझसे एक बात कहूँगा, पर तू Mind न करना।" जब Rum का असर खत्म, होने पर उस आदमी को, पता चलता है कि, उसने यह कहा था। तब वह आदमी शर्मिंदा होता है। वह आदमी अपने सिर को पकड़कर कहता है कि, "वह आईन्दा से Rum नहीं पियेगा।" इसे भी शर्मिंदा कहते हैं। सिर पकड़ कर + मैं + आईन्दा = शर्मिंदा। सिर और Rum का जोड़ ही शर्म कहलाता है। सिर + Rum = शर्म। जो आदमी शर्म करता है, उस आदमी के सिर में, जरूर Rum भरी है। या उस आदमी ने Rum पी हो, या उस आदमी को, पता न हो, और उसे किसी में डालकर, पिलाई गई हो। इसीलिए Rum सिर में,

जाने के बाद, शर्म खत्म हो जाती है। और, Rum सिर से, उतर जाने के बाद, आदमी शर्मीला हो जाता है। शर्मीला आदमी बातों को, Mind कर जाता है।

280. सिर + दाव = सरदार -

जिसका सिर दाव पर लगा होता था। उसे ही सरदार कहते थे। सिर + दाव = सरदार। पहले उसे सिरदाव पर लगा, कहते थे, फिर सिरदार कहने लगे और फिर सरदार कहने है। उसके सिर को बचाने के लिए, उसके सिर पर पगड़ी बाँधते थे। इसीलिए सरदार बोलते हैं कि, "ध्यान रखना ! मेरी पगड़ी दाव पर लगी है"। जबकि पगड़ी के भीतर जो, सिर होता था, वह दाव पर लगा होता था। इसीलिए दाव हार जाने पर, कहते थे कि, "तूने तो हार के मेरा सिर झुका दिया"। जो सरदार हार कर भाग जाता था, उस सरदार के सिर पर, ईनाम रख दिया जाता था।

281. सत + संग = सत्संग -

संग से, सत तक का सफर ही, सत्संग कहलाता है। जो साधक को, संग से सत बनाता है। सत + संग = सत्संग। संग = पत्थर।

282. संग + दिल = संगदिल - संग से दिल लगाना ही, संगदिल बनाता है।

283. Sung + ही + साथी = संगी-साथी -

तन्हाई में Sung ही साथ, निभाता है। इसीलिए संगी-साथी कहलाता है।

284. संग + ईंट = संगीत - संग को ईंट से रगड़ने पर ही, संग से संगीत निकलकर आता है।

285. सर + लता = सरलता -

लता में बड़ी सरलता होती है। सर + लता = सरलता। लता बड़े सरल तरीक़े से, पेड़ की टुनई तक चढ़ जाती है। टुनई = पेड़ की सबसे ऊंची, डाल का छोर। Two + नहीं = टुनई। पेड़ की सबसे ऊंची डाल का छोर, जहाँ पर Two लोग नहीं रह सकते हैं। यानी पेड़ का सिर। लता बड़े ही सरलता से, पेड़ के सिर तक पहुंच जाती है। ऐसे ही व्यक्ति की सरलता, व्यक्ति को दूसरों के सिर पर, पहुंचा देती है। तभी तो लोग कहते हैं कि, "देखो तो कितना सरल आदमी है, अपनी सरलता से कितनी तरक्की कर गया है"। इसीलिए व्यक्ति Sir Sir कहता हुआ, सरल तरीक़े से सफलता को प्राप्त कर लेता है।

286. Shoe + भगवान = शुभ –

Shoe ही भगवान हैं, इसीलिए शुभ हैं। Shoe जिसे चरण पादुका कहते हैं। क्योंकि चरण के न रहने पर, चरण पादुका पूजी जाती हैं। इसीलिए चरण पादुका सन्दल की बनाई जाती है। कहीं से भी गुजरे अपनी सुगंध देती जाए। सदा बनी रहे और पुजती रहे। चन्दन = सन्दल = Sandal. सन्दल से बनी होने के कारण चरण पादुका को Sandals भी कहते हैं। चन्दन से बनी चरण पादुका को माथा लगाते हैं, इसीलिए चन्दन के लेप को माथे पर लगाते हैं। चलते समय खड़-खड़ की आवाज़ आती है, इसीलिए खड़ाऊँ भी कहते हैं।

287. सौ + भाग + गए = सौभाग्य –

एक बूचड़खाने में एक हजार पशुओं को लाया गया। एक रात को बाड़े का दरवाजा खुल गया। उसमें से कुछ पशु भाग गए। संचालक ने नौकर से कहा। "गिनो कितने भाग गए हैं" ? नौकर ने गिनकर

कहा, "जी सौ भाग गए है"। यही बात संचालक ने मालिक को बताई, "मालिक ! सौ भाग गए हैं"। यही सौ भाग गए आगे चलकर "सौभाग्य" हो गया और मनुष्यों को एक नया शब्द मिला।

288. सृजन- सर्जन =

सृजन एवं सर्जन दोनों भिन्न अर्थ प्रकट करते हैं। सृजन = प्रकृति में जो स्वतः उत्पन्न होता, बड़ा होता है, समाप्त हो जाता है। जैसे - पृथ्वी आदि ग्रह। सर्जन = जो मनुष्य द्वारा प्रकृति के पदार्थों को भिन्न-भिन्न रूप देकर बनाया जाता है। जैसे - लकड़ी से Table, कुर्सी आदि। सृजन स्वतः होता रहता है। जैसे-जैसे जो ऋतु आती है, वैसे-वैसे जन का सृजन होता है। यानी सृजन ऋतु के अनुसार होनेवाली प्रक्रिया है। सर में जब जन के बात आती है, तो वह जन उस वस्तु का सर्जन करता है। जब तब वह वस्तु पूरी बन नहीं जाती, तब तक बनानेवाले के सर में रहती है। इसीलिए Office के Boss को Sir बोला जाता है, क्योंकि वह वस्तु बनाने की जिम्मेदारी Sir के सर पर होती है। कर्मचारी तो बस कार्य करता है, कर्मचारी अपने सर में उस वस्तु को बनाने का Tension नहीं लेता है। इसीलिए सृजन एवं सर्जन दो भिन्न अर्थ वाले शब्द हैं।

289. श्रद्धा + आलू = श्रद्धालु –

श्रद्धा आलू में रखो, तभी श्रद्धालु कहलवाओ। जिस प्रकार परमात्मा संपूर्ण जगत में व्याप्त है। उसी प्रकार आलू सभी सब्जियों के साथ बनाया जा सकता है। इसीलिए इसका नाम आलू है, क्योंकि यह All के साथ Use किया जाता है। All + Use = आलू। Use = U. इसीलिए भण्डारे में बिना छिले हुए आलू की तरकारी जरूर बनती है और पूड़ी के साथ बड़ी श्रद्धा के साथ खाई जाती है। आलू को व्रत में भी खाया जाता है। जब कोई सब्जी न हो तो, आलू को भूनकर, भर्ता बनाकर भी खाया जाता है। इसीलिए आलू में श्रद्धा रखो, और श्रद्धालु बने रहो। श्रद्धा को हटाने के लिए सबसे पहले आलू और चावल छुड़वाया जाता है। चावल = अक्षत। अक्षत का तिलक लगाया जाता है।

290. सूत् + र = सूत्र –

रुई को कातकर सूत बनता है। तीन सूत को जोड़कर एक सूत्र बनाया जाता है। सूत्र को धारण करनेवाला सूत्रधार होता है। जब सूत्रधार को धार लगती है, तब वह सूत्र को कान पर रख लेता है, इसीलिए उसे कर्णधार कहते हैं।

291. शर्त + रंज = शतरंज -

शर्त लगती है जब रंज में उसे शतरंज कहते हैं। शतरंज में शर्त लगती थी, जैसे चौसर में शर्त लगती है। शह और मात का खेल है। शह = सावधान। मात = मौत। किसी को सावधान करके मौत देना ही शह मात कहलाता है। Check और Ass का यह खेल Chess कहलाता है। Check + Ass = Chess. जब यह Check करना होता था कि, दोनों में से Ass कौन है ? तब दोनों को Chess खिलाया जाता था। बुद्धिमान वह माना जाता है, जो पहले Check करता है, फिर Mate करता है। शतरंज के सफेद एवं काले रंग के खाने एवं मोहरे Yin एवं Yang शक्तियों पर आधारित हैं। Yin शक्ति का रंग काला है और Yang शक्ति का रंग सफेद है। 32 खाने काले हैं एवं 16 मोहरे काले हैं। 32 खाने सफेद हैं एवं 16 मोहरे सफेद हैं। चतुर लोगों के रंग को पहचानने के लिए खेला जाता है,

इसीलिए चतुरंग कहलाता है। चतुर + रंग = चतुरंग। जैसे कि गांधार नरेश शकुनि चौसर खेलते थे और भगवान श्रीकृष्ण शतरंज खेलते थे।

292. Shoe + ध्यान = शुद्ध -

"ध्यान से पढ़ो, नहीं तो, अभी एक जूता खाओगे, तो शुद्ध हो जाओगे"। ऐसा प्रत्येक पिता अपने पुत्र से कभी न कभी कहता ही है। तो दुनिया में, जूता ही शुद्ध होता है। जूते को खाने से सब शुद्ध हो जाता है। जैसे की व्यक्ति जब मंदिर में जाता है, तब व्यक्ति का ध्यान, अपने Shoe की तरफ ही रहता है। इसीलिए चाहे पढ़ाई में ध्यान लगाना हो, या मंदिर में जाना हो व्यक्ति का Shoe पर ही ध्यान रहता है।

293. Shoe + रूह = शुरू -

Shoe पहनो और रूह से किसी भी कार्य में जुट जाओ। Shoe को पहनते ही, व्यक्ति की रूह में एक ऊर्जा सी आ जाती है। और व्यक्ति कार्य करने के लिए आगे बड़ जाता है। इसीलिए Shoe और रूह का बड़ा साथ है।

294. शिवलिंग = Sibling -

शिवलिंग की आराधना करने के फलस्वरूप जो बच्चे पैदा होते हैं, वह सब आपस में Sibling कहलाते हैं।

295. समझ + दार = समझदार -

समझ तो सभी में होती है, किंतु दार जिसके पास होती है, वही समझदार होता है। समझ + दार = समझदार। दार = पत्नी, भार्या।

296. समर + अर्थ + अन्न = समर्थन -

समर के समय अर्थ और अन्न देनेवाले ही समर्थन करते हैं। समर + अर्थ + अन्न = समर्थन। समर के समय अर्थ और अक्ल देनेवाले ही समर्थक होते हैं। समर + अर्थ + अक्ल = समर्थक। समर में जिनके पास अर्थ होता है, वह समर्थ होते हैं। समर उनके लिए समर होता है, जिनके पास अर्थ, अन्न, अक्ल नहीं होते हैं।

297. साग + वन = सावन - साग और वन यह दोनों सावन की देन हैं।

298. शह + ज्यादा = शहजादा –

जिसको ज्यादा शह मिलती है, वह शह ज्यादा होता है।

299. सृजन = सर्जन -

सृजन एवं सर्जन दोनों भिन्न अर्थ प्रकट करते हैं। सृजन = प्रकृति में जो स्वतः उत्पन्न होता, बड़ा होता है, समाप्त हो जाता है। जैसे - पृथ्वी आदि ग्रह। सर्जन = जो मनुष्य द्वारा प्रकृति के पदार्थों को भिन्न-भिन्न रूप देकर बनाया जाता है। जैसे - लकड़ी से Table, कुर्सी आदि। सृजन स्वतः होता रहता है। जैसे-जैसे जो ऋतु आती है, वैसे-वैसे जन का सृजन होता है। यानी सृजन ऋतु के अनुसार होनेवाली प्रक्रिया है। सर में जब जन के बात आती है, तो वह जन उस वस्तु का सर्जन करता है। जब तब वह वस्तु पूरी बन नहीं जाती, तब तक बनानेवाले के सर में रहती है। इसीलिए Office के Boss को Sir बोला जाता है, क्योंकि वह वस्तु बनाने की जिम्मेदारी Sir के सर पर होती है। कर्मचारी तो बस कार्य

करता है, कर्मचारी अपने सर में उस वस्तु को बनाने का Tension नहीं लेता है। इसीलिए सृजन एवं सर्जन दो भिन्न अर्थ वाले शब्द हैं।

300. सह + Age = सहेज -

वक्त बीता, तमाम उम्र बीती। पर यादों के पिटारे में, क्या-क्या सहेजा। सह लेती है जिसको Age, वही सहेज कर रख जाता है।

301. स + भय + अता = सभ्यता -

भय के द्वारा जो आती है, वह सभ्यता है। स + भय + अता = सभ्यता। जैसे किसी को कोई भय दिखाकर कुछ सिखाया जाता है। उदाहरण - बेटा ! सो जा, नहीं तो गब्बर सिंह आ जाएगा। इस तरह भय दिखाकर जो सिखाया जाता है, वह सभ्यता है। यानी किसी को भय दिखाकर, जो कार्य किया जाए, वह सभ्यता है। जैसे राजा लोग प्रजा में अपना, भय फैलाने के लिए, बहुत बड़े किलों, महलों का निर्माण करते थे। जो राजा के भय यानी सभयता को प्रदर्शित करते थे। प्रजा के मध्य में राजा के भाट-चारणों द्वारा फिर राजा के बारे में बड़ी-बड़ी भयानक बातें फैलाई जाती थीं, "कि फलाना राजा इतना क्रूर है, कि अपने विरोधी को जिन्दा कोल्हू में पिरवा देता है"। इस तरह का भय दिखाकर सभ्यताएं बनाई जाती हैं। जिससे राजा का शासन सदियों तक निष्कंटक चलता रहे और भाट-चारणों का जीवनयापन होता रहे।

302. Sons + कार्य = संस्कार -

Sons को कार्य देकर जो सिखाया जाता है, वह संस्कार है। Sons + कार्य = संस्कार। Sons = पुत्र। जैसे कोई अपने पुत्रों को कोई कार्य देता है, और उस कार्य को कैसे किया जाता है, यह भी बताता है। और उस कार्य को बार-बार तब तक करवाता है कि, जब तक उस कार्य को करने में पुत्र दक्षता को प्राप्त कर लेता है। इससे उस कार्य को करने का संस्कार पुत्र में आ जाता है, इसे ही संस्कार कहते हैं।

303. Sons + Car = संस्कार -

किंतु कई लोग अपने Sons को Car देते हैं। फिर उनके Sons Car को लेकर घूमते रहते हैं। Sons + Car = संस्कार। यह भी संस्कार ही कहलाता है, क्योंकि उन Sons को Car की आदत पड़ जाती है।

304. साब + Boss = शाबाश -

साब एवं Boss ही, शाबाश कहते हैं। साब + Boss = शाबाश। Government में अधिकारी को साब कहकर पुकारा जाता है। Company में अधिकारी को Boss कहकर पुकारा जाता है। साब या Boss किसी को जब Appreciate करते हैं, तब कहते हैं, "शाबाश ! तुमने बहुत अच्छा किया"।

305. Sum + झरना = समझ –

Sum होने पर जो झरता है, उसे समझ कहते हैं। जब किसी के साथ कोई जुड़ता है। उन लोगों के जुड़ाव से कुछ झरता है। उस झरने को समझ कहते हैं।

306. Sum + भव = संभव -

जब सब जुड़ कर रहें, तब ही कार्य संभव होता है। Sum = जोड़। भव = होना।

307. Sum + मय = समय -

Sum हो जाना मय से, समय कहलाता है। Sum + मय = समय। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, वैसे-वैसे मय से जुड़ता जाता है और माया को जोड़ता जाता है। मय = मय दानव। मय दानव = माया का रचयिता। इस तरह समय बीतता जाता है। किंतु जब समय उल्टा होकर यमस हो जाता है। तब यम का होना आ जाता है। यम के आने से समय से छुटकारा मिल जाता है।

308. सुर + रक्षा = सुरक्षा - सुर ही तो रक्षा करते हैं, जिसे सुरक्षा कहते हैं।

309. Show + ना = सोना -

Show ना को ही सोना कहते हैं। Show + ना = सोना। सोना वह धातु है, जिसे आपको Show नहीं करना चाहिए। क्योंकि राजा-रानी स्वर्ण के आभूषण पहनते थे, तो अपने साथ, कितने सारे पहरेदार रखते थे। वह पहरेदार स्वर्ण की रक्षा के लिए होते थे, ना कि राजा-रानी की रक्षा के लिए।

310. साही + Hit + यत्नपूर्वक = साहित्य -

साही के कांटे में स्याही भरकर जो लिखा जाता है, वह साहित्य कहलाता है। साही के पास जायेंगे तो, साही अपने कांटे से Hit करेगी। साही के द्वारा कांटे के Hit करने से जो रक्त बहेगा, साही के कांटे को उस रक्त में डुबाकर जो कुछ भी यत्नपूर्वक लिखा जाएगा, वही साहित्य कहलाएगा। साही + Hit + यत्नपूर्वक = साहित्य। साही का अपभ्रंश ही स्याही है। साही का कांटा लगने पर जो रक्त निकलता है, उसे ही स्याही बोला जाता है। साही = स्याही। साही की सवारी को ही, शाही सवारी बोला जाता है। जो कांटों से भरी साही की सवारी कर लेता है। वही शाही सवार कहलाता है। जो साही के वार को सह लेता है, वह शाह कहलाता है।

311. सृजन + हार = सृजनहार -

सृजन करके तो सृजक भी हार गया। सृजन + हार = सृजनहार। ब्रह्माजी ने सृष्टि का सृजन किया, और लोगों ने ब्रह्माजी का केवल एक ही मंदिर बनाया। लोगों ने एक मनगढ़ंत कहानी गढ़ ली, जिसके कारण ब्रह्माजी की पूजा भी ज्यादा नहीं होती है। लोगों ने इस तरह से ब्रह्माजी को भी, हार मानने पर मजबूर कर दिया। इस तरह से सृजन करके सृजक भी हार गया है।

312. So + Old = Sold -

व्यक्ति उसी को Sold करता है, जो So Old हो जाता है, क्योंकि कहा गया है कि, "Old is Gold".

313. सांस + ई + बल = Sensible -

सांस में ही बल है, इसीलिए Sensible है। सांस + ई + बल = Sensible. सांस से आदमी के Sensors जाग्रत रहते हैं। Sensors के जाग्रत रहने पर आदमी Sensible रहता है।

314. साम + मान = सामान्य -

साम से जो मान जाए, वह सामान्य होता है। साम + मान = सामान्य। यानी जो बात को मान लें। दाम से जिसका पतन हो जाए, वह दम्पत्ति होता है। यानी जिसको दाम देकर मना लिया जाए। पहले स्त्री को भी दाम में ही रखा जाता था। दाम + पतन = दम्पत्ति। जिसको अधिकार देकर वश में किया जाए, वह दण्डाधिकारी होता है। दण्ड + अधिकार = दण्डाधिकारी। दण्डाधिकारी के हाथ में, हमेशा एक

दण्डा होता है। यह दण्डाधिकारी हमेशा यही, कहता रहता है, "आज बहुत अधिक कार्य है"। भेंट देकर ही भेद निकाला जाता है। भेंट + देकर = भेद। जब किसी को Tip दी जाती है, तब वह भी Tip बता देता है। लच्छेदार भाषा बोलकर, किसी से छल किया जाता है। लछ = छल। कपड़ों एवं पटों से, कपट किया जाता है। कपड़ा + पट = कपट। कपट करने वाला व्यक्ति, अपने आपको कपड़ों एवं पट के, पीछे रखता है। जब व्यक्ति किसी के मोह में आकर, कार्य करता है, तब व्यक्ति को मोका पर, धोखा दिया जाता है। मोह + कार्य = मौका यह मोका मिलता है, धोने के समय एवं, खाना खाने के समय। शौच करने गए व्यक्ति का पानी, मौका देखकर गिरा दिया जाता है, और खाना खाने गए व्यक्ति को, पानी पीने को नहीं दिया जाता है। यानी जो व्यक्ति यह दो कार्य करता है, वह व्यक्ति मौके पर धोखा देता है।

315. शान + दार = शानदार -

जब आदमी की दार, उसके साथ हो, तो आदमी की शान, शानदार होती है। शान + दार = शानदार। दार = पत्नी। व्यक्ति तभी शानदार लगता है, जब व्यक्ति, अपनी पत्नी के साथ होता है।

316. सेना + हेतु = सेतु -

सेना के हेतु बनाया जाता है, इसलिए सेतु कहलाता है। सेना + हेतु = सेतु। जिससे सेना का आना-जाना होता है, उसे सेतु कहते हैं।

317. साथ + Car = साकार -

हर किसी का यही सपना होता है, कि उसके साथ एक Car हो। इसलिए जब कोई व्यक्ति, Car का मालिक हो जाता है। तब वह कहता है, "आज मेरा सपना साकार हो गया, आज मेरे पास भी Car

318. Science + Money + Art = Smart -

जब किसी भी कार्य को, Art के साथ करते हैं, उसे Smart कहते हैं। Science + Money + Art = Smart. बिना Art के कोई Smart नहीं होता है। भले ही उसके पास, Science एवं Money हो। अकेला Art भी Smart नहीं होता है, Art के पास भी Science एवं Money, होनी चाहिए।

319. साम + ना = सामना -

जब किसी से बात करना नहीं चाहते हैं, और वही मिल जाए, तो व्यक्ति कहता है, "अरे ! यह फिर आ गया, बस इससे बात ना करनी पड़े"। और व्यक्ति एक तरफ से, मुंह छिपाकर निकल जाता है। इसे ही सामना कहते हैं। बात ना करना। साम = बात।

320. शक + आहार = शाकाहार -

जिस आहार को खाने से, लोग आपको शक की नजर से देखें, वह शाकाहार।

मान + Saw + आहार = मांसाहार -

जिस आहार को खाने से, लोग आपको मान से देखें, वह मांसाहार है। मान + Saw + आहार = मांसाहार।

321. Spa + अर्श = स्पर्श -

हर कोई अर्श को स्पर्श करना चाहता है। इसलिए सब लोग Spa में जाते हैं। Spa में की गई मालिश

से, व्यक्ति के भीतर का मल ही, ईश्वर में परिवर्तित हो जाता है। जिससे लगता है, व्यक्ति को अर्श का अनुभव होता है।

322. स्वर्ग-नरक -

स्व वर्ग के लोगों में रहना ही स्वर्ग है। स्व + वर्ग = स्वर्ग। क्योंकि एक वर्ग में, रहनेवाले लोगों के स्वर, हमेशा एक ही रहेंगे। तभी तो कहा जाता है, "सभी एक स्वर में बोलेंगे"। नर जब रक हो जाता है, तब नर के लिए जीवन, नरक हो जाता है। नर + रक = नरक। रक = निर्धन।

323. शौच + ना = सोचना -

जब तक शौच नहीं उतरती है, तब तक आदमी सोच नहीं सकता है। शौच + ना = सोचना। जब शौच उतर जाती है, तब आदमी को सोच आती है।

324. So + Old = Sold – जो So Old हो जाता है, व्यक्ति उसी को Sold करता है।

325. शब्द-अक्षर -

मनुष्य के मुख से निकली वाणी को, शब्द कहते हैं। यह शब्द ही शरीर को बद कर देते हैं। शरीर + बद = शब्द। परमात्मा के मुख से निकली वाणी को अक्षर कहते हैं। यह अक्षर कभी भी क्षर नहीं होते हैं। अ + क + क्षर = अक्षर।

326. Soul + Use = Sun = Solution -

Soul Use करती है जब Sun का, तो Solution मिल जाता है। Soul + Use = Sun = Solution. प्रातःकाल सूर्योदय होते ही, आत्मा भी सोकर उठ जाती है। आत्मा पूरे दिन सूर्य का उपयोग करती है, और अपने कार्यों को पूर्ण करती है।

327. साम + मान = सामान्य -

साम से जो मान जाए, वह सामान्य होता है। यानी जो बात को मान लें। साम + मान = सामान्य। यानी जिसको बात में, Cheat कर लिया जाए। बात + Cheat = बातचीत। जिसको जिसकी चाह है, उसको वह Eat करने को दिया, तो उससे Cheat किया जा सकता है। चाह + Eat = Cheat. इसलिए Cheat करनेवाला व्यक्ति, सबसे पहले सामनेवाले की, पसंदीदा खाद्य वस्तुओं को पता करता है। फिर वह उन वस्तुओं को, उसे खिलाने के लिए ले जाता है। अगर दूसरा व्यक्ति उन वस्तुओं को खा लेता है, तब पहला उसके सामने अपनी बात को, रखकर उसको Cheat कर लेता है। दाम से जिसका पतन हो जाए, वह दम्पत्ति होता है। यानी जिसको दाम देकर मना लिया जाए। दाम + पतन = दम्पत्ति। दाम देकर ही दान किया जाता है। जो जनता बात से नहीं मानती है, उस जनता को दान देकर अपने, पक्ष में किया जाता है। जिसको दण्ड देने का अधिकार, देकर वश में किया जाए, वह दण्डाधिकारी होता है। दण्ड + अधिकार = दण्डाधिकारी। दण्डाधिकारी के हाथ में, हमेशा एक दण्डा होता है। यह दण्डाधिकारी हमेशा यही, कहता रहता है, "मुझे आज बहुत अधिक कार्य है"। भेंट देकर ही भेद निकाला जाता है। भेंट + देकर = भेद। जब किसी को Tip दी जाती है, तब वह भी Tip बता देता है। लच्छेदार भाषा बोलकर, किसी से छल किया जाता है। लछ = छल। कपड़ों एवं पटों से, कपट किया जाता है। कपड़ा + पट = कपट। कपट करने वाला व्यक्ति, अपने आपको कपड़ों

एवं पट के, पीछे रखता है। जब व्यक्ति किसी के मोह में आकर, कार्य करता है, तब व्यक्ति को मौका पर, धोखा दिया जाता है। मोह + कार्य = मौका। यह मौका मिलता है, धोने के समय एवं, खाना खाने के समय। शौच करने गए व्यक्ति का पानी, मौका देखकर गिरा दिया जाता है, और खाना खाने गए व्यक्ति को, पानी पीने को नहीं दिया जाता है। यानी जो व्यक्ति यह दो कार्य करता है, वह व्यक्ति मौके पर धोखा देता है।

328. सिफ़र + रिश्ते = सिफ़ारिश -

जो सिफ़र पाते हैं, वही रिश्ते पता करते हैं, और अपनी सिफारिश करवाते हैं।

329. Star + दम = Stardom -

सितारों के दम पर "Stardom" मिलता है। इसलिए उन्हें "Star" या "सितारा" कहते हैं। Star + दम = Stardom. इसलिए लोग अपने नक्षत्रों के दम को जानने के लिए, भविष्यवक्ताओं के पास जाते हैं। हीर के लिए जो रोता है, वह Hero कहलाता है। हीर + रोता = Hero. इसलिए Hero हमेशा अपनी हीर के लिए, रोता हुआ दिखाई देता है। अपने ईष्ट की आरती करके, लोग Artist बनते हैं। आरती + ईष्ट = Artist. इसलिए लोग अपने ईष्ट की, आरती करने के लिए, पूजा स्थल पर जाते हैं। नेताओं के अभी से लोग "अभिनेता" बनते हैं। अभी + नेता = अभिनेता। इसलिए अभिनेता हमेशा यही कहते हैं कि, "तुम रुको, मैं अभी बस दो मिनट में, फलाने नेता से मिलकर आता हूं"। नेता भी यही कहते हैं कि, "तुम कहो तो मैं तुम्हें अभी ही, अभिनेता बना देता हूं"। इसलिए अभिनेता हमेशा नेता से, मिलते रहते हैं। Action + Can + Take = Act. जो एक क्षण में ही Take दे देते हैं, वह "Actor" कहलाते हैं। एक + क्षण = Action. इनका पहला ही Take OK हो जाता है। जैसा Script में लिखा होता है, वैसा ही Acting करते हैं। कला का कार्य करनेवाले लोग, कलाकार कहलाते हैं। कला + कार्य = कलाकार। कलाकार अपने कल (Machine) के द्वारा, अपने कार्य को आकार देता है। कल + आकार = कलाकार। कलयुग में सब कलाकार हैं, क्योंकि सब कल (Machine) के द्वारा, अपने कार्य को आकार देते हैं। क्योंकि यह कल का युग है, यानी Machine का युग है।

330. Shoe + दरवाजा = शूद्र -

जब शूद्र किसी के घर में प्रवेश करता था, तो अपने Shoe को दरवाजे पर ही, उतार देता था। Shoe + दरवाजा = शूद्र। अंग्रेज जब भारत आए, तब उन्होंने Shoe को पहनकर, किसी के भी घर में प्रवेश किया। यहां तक की रसोई में भी, Shoe को पहनकर ही प्रवेश किया। इस तरह से अंग्रेजों ने, शूद्रता की पहचान को तोड़ दिया। Shoe चमड़े के बने होते थे, जो शूद्र पहनते थे। जूते तो जूट के बने होते थे, जो अन्य लोग पहनते थे, तथा जूते पहनकर घर में भी, प्रवेश करते थे। शूद्र लोग पहले Shoe उतारते थे, फिर पानी से पैर धोते थे, फिर गमछे से पैर साफ करते थे, तब जाकर किसी के घर में, प्रवेश करते थे। Shoe जिसके दरवाजे पर, उतरे हुए होते थे, वह शूद्र का घर समझा जाता था।

331. Serve + परी = सर्वोपरि – Serve करती है जिनको परी, वही सर्वोपरि होते हैं।

332. Spa + अर्श = स्पर्श -

हर कोई अर्श को स्पर्श करना चाहता है। यानी आसमान को छूना चाहता है। इसके लिए ही लोग Spa में जाते हैं। Spa + अर्श = स्पर्श। Spa में की गई मालिश से, व्यक्ति के भीतर का मल ही, ईश्वर में परिवर्तित हो जाता है। जिससे लगता है, व्यक्ति को अर्श का अनुभव हो गया है। व्यक्ति इतना हलका हो गया है, कि जैसे आसमान में उड़ रहा है। क्योंकि Sperm में पर लगे हुए होते हैं। मल + ईश = मालिश।

333. सिर + सों = सरसों -

जिस सिर में सरसों का तेल, लगा होता था, तब उसी सिर पर हाथ रखकर सों खाई जाती थी।

334. शुक्रवार + आचार्य = शुक्राचार्य -

शुक्रवार को पूजित, आचार्य का नाम शुक्राचार्य है। शुक्रवार + आचार्य = शुक्राचार्य। शुक्राचार्य के पास संजीवनी विद्या थी, जब भी शुक्राचार्य अपनी, संजीवनी विद्या का प्रयोग करके, किसी को जीवन प्रदान करते थे, तो लोग कहते थे, "शुक्र है, जान तो बच गयी"। और वह लोग शुक्राचार्य का, शुक्रिया करते थे। क्योंकि शुक्राचार्य की क्रिया से, उसकी जान बच गई थी। शुक्राचार्य + क्रिया = शुक्रिया। शुक्रवार का दिन शुक्राचार्य है। शुक्राचार्य शूकर पालते थे। शुक्राचार्य जब भिक्षा मांगने किसी के दर पर जाते थे, तो लोग कहते थे कि, "शुक्र दर पर आया है" इसी शुक्र दर से कालांतर में शब्द बना शूद्र। शुक्र + दर = शूद्र। क्योंकि जब भी शुक्राचार्य किसी के दर पर, भिक्षा मांगने जाते थे, तब लोग अपने कुत्ते को कहते थे, "शू शू"। यानी लोग शुक्राचार्य के पीछे, अपने कुत्तों को दौड़ा देते थे। इससे शुक्राचार्य निम्न जाति के घरों पर, भिक्षा मांगने जाने लगे। तब से निम्न जाति के लोगों ने शुक्राचार्य को, अपना आचार्य मानना प्रारंभ कर दिया। शुक्राचार्य ने निम्न जाति के लोगों को, बहुत सी विद्याएं सिखलायीं, इन विद्याओं को सीखकर, निम्न जाति के लोग भी बहुत, विद्यावान हो गये। निम्न जाति यानी जिसे राक्षस, दानव, दैत्य, म्लेच्छ के नाम से जाना जाता है। निम्न जाति के लोगों ने देवताओं की, पूजा करने से मना कर दिया था, और शुक्राचार्य के सिखाए ज्ञान को, सीख लिया। आजकल भी यह निम्न जाति, शुक्रवार को अवकाश मनाती है, और शुक्राचार्य की समाधि पर जाकर, दिया जलाती है, फूल चढ़ाती है, चादर चढ़ाती है। निम्न जाति आज भी शूकर पालती है, और शाम को दर पर जाकर, भिक्षा मांगती है। शुक्राचार्य तंत्र के बहुत बड़े ज्ञानी थे, तो जो तांत्रिक विद्याएं, शुक्राचार्य ने निम्न जाति को सिखलायीं, उन्हीं तान्त्रिक विद्याओं का उपयोग करके, निम्न जाति के लोग, आज भी लोगों की मानसिक और ऊपरी बाधाओं का उपचार करते हैं।

335. स्तुति – धन – बल – भेद – छल - कपट – झूठ -

बिना पैसे वाले लोग, वस्तु को, स्तुति करके प्राप्त करते हैं। धन वाले लोग, वस्तु को, धन देकर प्राप्त करते हैं। बल वाले लोग, वस्तु को, बल से प्राप्त करते हैं। भेद का भय दिखाकर, लोग भेंट प्राप्त करते हैं। लच्छेदार भाषा को बोलकर, लोग छल से वस्तु को करते हैं। कपड़े एवं पट में बात को छुपाकर, लोग कपट से वस्तु को प्राप्त करते हैं। "यह वस्तु जूठी है, इसे मत लो" ऐसा झूठ बोलकर, उसके जाने के बाद, लोग उसी वस्तु को उठा लेते हैं, इस तरह से लोग झूठ बोलकर, वस्तु को प्राप्त करते हैं। किसी ने मेहनत करके, किसी वस्तु को प्राप्त किया, और लोग इन सात प्रकार से, उस मेहनतकश की वस्तु

को, प्राप्त करते हैं।

336. शस्त्र + आए = शास्त्र -

शस्त्र चलाना आए जिससे, उसे शास्त्र कहते हैं। शस्त्र + आए = शास्त्र। शस्त्र का ज्ञान ही शास्त्र में होता है। जैसे कि Arms को चलाने के लिए, Manual होता है। इसलिए शास्त्र लिखित रूप में होते हैं। शास्त्र के ज्ञाता को शास्त्री बोलते हैं। अलग-अलग शस्त्र को, अलग-अलग स्थानों में, अलग-अलग तरह से चलाने के, Manual होते हैं। इसलिए शास्त्रियों में शास्त्र को, चलाने को लेकर शास्त्रार्थ होता है।

337. सीख + Rate = Secret -

हर सीख की एक Rate होती है, क्योंकि हर सीख एक Secret होती है।

338. समझा + ईश्वर = समझाइश -

जो अपने आपको ईश्वर समझ लेता है, उसे तो फिर ईश्वर ही समझाते हैं। समझा + ईश्वर = समझाइश। समझ तो ईश्वर से ही आती है, किन्तु व्यक्ति स्वयं को ईश्वर, समझने लग जाता है, तब फिर उसे ईश्वर ही समझाते हैं। लोग कहते भी हैं कि, "इसे तो अब ईश्वर ही समझा सकते हैं"।

339. Sir + Praise = Surprise -

सिर झुकाकर, सुर लगाकर, Sir कहते हुए, जब किसी की Praise की जाती है, तब उस Praise करनेवाले को, उस Sir के द्वारा Surprise मिलता है। Sir + Praise = Surprise. और जो सिर नहीं झुकाता है, सुर नहीं लगाता है, और Sir बोलकर Praise नहीं करता है, उसको "असुर" घोषित कर दिया जाता है, और उसके सिर पर, Prize रख दिया जाता था। सिर + Prize = Surprise. राजाओं महाराजाओं बादशाहों शहंशाहों के द्वारा, मुनादी कराकर एलान करवाया जाता था कि, "जो इसका सिर काटकर लाएगा, उसको इतना ईनाम मिलेगा"। सिर पर रखा यह ईनाम ही, सिर का Prize से, Surprise कहलाया। इसलिए जब कोई किसी का, सिर काटकर ले जाता था, तब राजा के पास जाकर कहता था, "सिर लीजिए और Prize दीजिए"। राजा भी उसको Surprise देता था। राजा उसको Prize देता था और, राजदरबार से बाहर निकलते ही, डाकुओं से उसका सिर कटवा देता था। राजा यह बात फैलवा देता था कि, "राजा के द्वारा मिले ईनाम को, डाकुओं ने छीन लिया और, उसका सिर काट डाला"। वह ईनाम राजा के पास, वापिस आ जाता था, और राजा का रहस्य भी, राज़ रह जाता था। इलाके में डाकुओं की, दहशत में भी इजाफा हो जाता था। इस तरह से सभी को एक, Surprise मिल जाता था।

340. सगा + God = सगोड - सगे और God ही सगोड करते हैं।

341. Sim + पल = Simple -

आज हर आदमी Simple है, क्योंकि सभी के पास, हर पल एक Sim है।

342. Sim + मिटता = सिमिटता -

Sim ही है जो मिटता जाता है, और सिमिटता जाता है। Sim + मिटता = सिमिटता। पहले Sim बड़ा था, फिर Medium Size का हो गया, फिर Nano Sim हो। गया। अब Sim बिल्कुल ही मिट

गया, और अब Inbuilt Sim आ गया है। इस तरह से Sim सिमिटकर, मिटता गया है। कुछ दिन के बाद आ जाएगा, "खुल जा सिम सिम"। क्योंकि सभी के Mobile में, "Dual Sim " यानी "दो सिम" होते हैं।

343. श्री 1008 -

12 महिने में 12 पूर्णिमा के चंद्र का दर्शन, 84 वर्ष तक करने पर, श्री 1008 के पद की प्राप्ति होती है। 12 X 84 = 1008. 17 वें वर्ष के प्रथम मास से, पूर्णिमा के चंद का दर्शन प्रारंभ होगा, जो कि 100 वें वर्ष के अंतिम पूर्णिमा के चंद्र के दर्शन पर 84 वर्ष होते हुए, पूर्णिमा के 1008 चंद्र का दर्शन पूरा होगा।

344. शरीर + प्रीत = Spirit - शरीर जिससे प्रीत करता है, उसे Spirit कहते हैं।

345. शीत + तल = शीतल -

शीत का पता तल से चलता है। जब व्यक्ति का तलवा, जमीन के तल पर लगता है, तब शीत का पता लगता है कि, "यह जगह शीतल है"। शीत + तल = शीतल। जब सिर Dim होने लगता, तब सिर से सर्दी का पता लगता है। सिर + Dim = सर्दी। जब व्यक्ति सोते हुए, "d" की तरह दिखाई देता है, उसे "ठंडी" कहते हैं। ठन + d = ठंडी।

346. सिद् + ध्यान = सिद्ध –

सिद् यानी बैठो ध्यान में, तो सिद्ध हो जाओगे। सिद् + ध्यान = सिद्ध। सिद् = बैठना। ध्यान में बैठने पर ही, सिद्धि की प्राप्ति हो जाएगी। सिद् + धी = सिद्धि। धी = Wisdom.

347. संस्कार + रीति = संस्कृति -

संस्कार और रीति दोनों को मिलाकर, संस्कृति बनाते हैं। संस्कार + रीति = संस्कृति। Sons के कार्य ही संस्कार कहलाते हैं। Sons + कार्य = संस्कार। पृथ्वी की ऋतु ही तो रीति कहलाती है। ऋतु = रीति। पृथ्वी की अलग अलग ऋतु में, अलग अलग रीति होती हैं, Sons के द्वारा इन इन रीति में, जो जो कार्य किए जाते हैं, वह संस्कृति कहलाते हैं। क्योंकि उनके Sons भी, उस उस ऋतु में होनेवाली, उस उस रीति को देखकर, वैसा वैसा ही कार्य करेंगे। इस तरह से यह एक संस्कृति बनती जाएगी। संसार की सभी संस्कृतियां, ऐसे ही बनी हैं।

348. Sure + मैं = सूरमा -

जो कहता कि, “Sure मैं करूँगा”। वही सूरमा कहलाता है। Sure + मैं = सूरमा। पहले जमाने में, किसी भी कार्य को करने के लिए, पान के बीड़े रख दिये जाते थे। तब यह कहा जाता था कि, “जिस जिस को यह कार्य करना है, वह वह यह पान का बीड़ा उठा ले”। जो लोग उस कार्य को, करना स्वीकार करते थे, वह लोग पान का बीड़ा उठा लेते थे और कहते कि, “Sure मैं इस कार्य को करूँगा”। इसलिए यह कहावत भी बन गई, की इस काम का बीड़ा इसको दिया जाए। किन्तु काम का बीड़ा तो, स्वयं ही उठाना पड़ता है, जो पान का बीड़ा उठाता है, वही कार्य को करने का बीड़ा उठाता है।

349. साडी > सादी > शादी -

"ये हुण साडी हो गई"। साडी > सादी > शादी। साडी का अपभ्रंश ही, सादी से होते हुए, शादी हो

गया है। क्योंकि जिसकी शादी हो जाती है, वह साड़ी पहनती है। साड़ी प्रमाण है कि, "इसकी शादी हो गई है"।

350. सोच शौच =

सोच सोच का ही तो फर्क है, पहले बड़ी जगह शौच करते थे, तो बड़ी सोच रखते थे। अब छोटी सी जगह में शौच करते हैं, तो सोच छोटी हो गई है। पहले देशी Style में बैठकर, शौच करते थे, तो देश के बारे में सोच आती थी। अब विदेशी Style में बैठकर, शौच करते हैं, तो विदेश के बारे में सोच आती है।

351. शह + मात = शहमात -

शह देकर मात करना। शह और मात कलहाता है। शह + मात = शहमात। यानी जब कोई किसी को शह देता है, तब वह उसको मात देता है, इसी को शह और मात कहते हैं। यानी जब कोई किसी को, अपने यहाँ पर शह देता है, तो वह ही उसको मात भी देता है।

352. Soon + यह = शून्य -

*Soon यह" ही तो शून्य है। Soon + यह = शून्य। "Soon यह जगह भर दो"। पंगत में खाली बैठे आदमी को देखकर, कोई बोलता है कि, "अरे ! यहां लाओ, यहां तो कुछ भी नहीं चला है, जल्दी से यहां दो"। इस तरह व्यक्ति "Soon यह" कहकर, जिस जगह को भरना चाहता है, उस जगह को "शून्य" कहते हैं।

353. सम + पूर्ण = सम्पूर्ण -

जब तक सम नहीं होता है, तब तक पूर्ण नहीं होता है। जब पूर्ण हो जाता है, तब सम हो जाता है।

354. सम + मान = सम्मान -

सम्मान अपनों का किया जाता है, जिन्हें आप अपने बराबर मानते हैं, उनको मान देते हैं, जिसे सम्मान कहते हैं। सम + मान = सम्मान। आदर तो Other का किया जाता है, जो आ जाए आपके दरवाजे पर, उसका आदर किया जाता है। उनको अपने बराबर नहीं रखा जाता है, न ही उनकी बात को माना जाता है, उनको एक दर (पैसा) देकर, दरवाजे से रुख्सत कर दिया जाता है। आए + दरवाजे = आदर = Other.

355. Self + Fee = Selfie -

जब आप स्वयं की छवि, बनाना चाहते हो, तो Self ही Fee देनी पड़ती है। Self + Fee = Selfie. स्वयं की छवि = स्वछवी। यानी जब आपके घरवाले, आपकी Fee देते हैं, तब आपको अपने घरवालों के, अनुसार Course लेना पड़ता है। और जब आप अपने अनुसार, कोई Course करना चाहते हो तो, घरवाले कहते हैं कि, "तुम Self से इसकी Fee भरो"। तो तुम Self से अपनी Fee भरते हो, तो तुम अपनी स्वयं की छवि बनाते हो। जिसे "स्वछवी" या "Selfie" कहते हैं।

छद्म + विवरण = छवि – किसी के द्वारा किसी का छद्म विवरण ही, किसी की छवि कहलाता है।

ईमान + Age = Image -

ईमान और Age मिलकर, किसी व्यक्ति की Image बनती है। ईमान + Age = Image. लोगों के

दिल में जो Image बनती है, वह ईमान से बनती है, लोग व्यक्ति के भीतर झांककर, व्यक्ति के ईमान से, उस व्यक्ति की Image अपने दिल में, बना लेते हैं। तो चित्रकार जो चित्र बनाता है, वह चित्र आपके चित्त में, स्थित ईमान का बनाता है। और लोगों की Age को देखकर भी, Image बनाई जाती है। यह छवि लोगों के शरीर की, अवस्था को देखकर बनाई जाती है। लोग अपने Age के विकारों को, विभिन्न प्रकार से छिपाकर, अपने आपको लोगों को दिखाते हैं, तब उसको देखकर लोगों की, भी Image बनती है। शरीर के Age वाली Image, Camera के द्वारा ली जाती है। क्योंकि Camera शरीर की Photo लेता है।

फूं फूं + तो = Photo -

पहले फूं फूं करके Photo को, सुखाने का कार्य किया जाता था। फूं फूं + तो = Photo. जब कोई Photo मांगने आता था, तो कहते थे कि, "फूं फूं करके तो सुखाई है, पर अभी तक सूखी नहीं है, बाद में आकर लेना"।

356. शिष्ट + Temple = System -

जब Original तक नहीं पहुँच पाते हैं, तब Duplicate से ही काम चला लेते हैं। इसलिए जब समुद्र में से, असली मोती नहीं ढूँढकर ला पाते हैं, तब स्वयं से ही Duplicate मोती बना लेते हैं। चलो इस Duplicate के तो कुछ दाम मिलेंगे। और जब असली हीरे को नहीं प्राप्त कर पाते हैं, तब Duplicate हीरे बना लेते हैं, और उन Duplicate हीरों को, असली हीरों से ज्यादा तरासते हैं चमकाते हैं। क्योंकि जो लोग, असली हीरे मोती नहीं खरीद पाते हैं, वह लोग इन Duplicate हीरे मोती को खरीदकर, समाज में अपना रुतबा दिखाते हैं। इसी तरह से जब Original परमात्मा को, नहीं प्राप्त कर पाते हैं, तब Duplicate परमात्मा को बनाकर, उन Duplicate परमात्मा को, अपने साथ रखकर कहते हैं कि, "देखो मैंने भी परमात्मा को प्राप्त कर लिया है"। इसी तरह से जब कोई Original नहीं मिलाता है, तब Duplicate से ही काम चला लेते हैं, क्योंकि मतलब तो काम चलाने से है, उसके Duplicate होने से कोई फर्क नहीं पड़ता है। और Duplicate परमात्मा के साथ, इतने मोह से भर जाते हैं कि, कोई अगर असली परमात्मा की बात करे तो, उस पर ही विश्वास नहीं करते हैं, और कहते हैं कि, "हमें तो मिला नहीं, इसे कैसे मिल गया" ? लोग तो कहते हैं कि, "परमात्मा मिला है तो, कोई चमत्कार दिखाओ"। यानी वह परमात्मा को, चमत्कार से पहचानते हैं। अगर चमत्कार कर दे तो परमात्मा है, और चमत्कार न करे तो, यह ढोंग कर रहा है। ऐसा उसका प्रचार कर देते हैं। तब चमत्कार को माननेवाले लोग, परमात्मा की परीक्षा लेते हैं, और इस परीक्षा के लिए, परमात्मा के सामने अपनी इच्छा को रखते हैं। परमात्मा + इच्छा = परीक्षा। अगर परमात्मा उनकी इच्छा को, पूरा कर दे तो वह, परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया। और तब उसे परमात्मा मान लेते हैं। इसलिए परमात्मा को परमात्मा मानने के लिए, लोग अपनी अपनी इच्छाएँ, परमात्मा के सामने रखकर, परमात्मा की परीक्षा लेते रहते हैं। जब जब उन लोगों की इच्छा पूरी होती जाती हैं, तब तब परमात्मा को मानना, उनके भीतर मजबूत होता जाता है। और जिस दिन परमात्मा के सामने, कोई ऐसी इच्छा रखते हैं, जिसे परमात्मा भी पूरी नहीं कर सकता है, तब लोग उसे, परमात्मा भी मानना

छोड़ देते हैं। तब लोग System में, अपनी इच्छा को पूरी करने के लिए जाते हैं। और शिष्ट होकर Temple में जाना ही, System कहलाता है। शिष्ट + Temple = System. तब शिष्ट होकर Temple में जाकर, अपने Time के पल को बिताते हैं। Time + पल = Temple. Time या पल एक ही बात है, क्योंकि प्रत्येक Temple में, प्रत्येक कार्य का एक Time होता है। इस तरह से व्यक्ति, परमात्मा की परीक्षा लेता हुआ, Temple में पहुँच जाता है। तथा Temple में स्थित देवी-देवताओं से, अपनी इच्छाओँ को, पूरी करने की प्रार्थना करता है। अच्छे लोगों की आत्माएं, जब शरीर को छोड़कर, स्वर्ग में पहुँचती है, तब वह आत्माएं ही, देवी-देवता बन जाती हैं। इसलिए अच्छे लोगों के ही, Temple बनाए जाते हैं। उन अच्छे लोगों ने, जीवित रहते हुए भी, लोगों के कार्य किए थे। अतः शरीर को छोड़ने के बाद भी, लोग उनके शरीर की आकृति की, प्रतिमा बना लेते हैं, और उनकी प्रतिमा को रखने के लिए, एक स्थान बना लेते हैं, जिसे वह मन्दिर कहते हैं। क्योंकि जब वह अच्छे लोग, शरीर में थे, तब लोग उनके पास जाकर, कुछ समय बैठकर बिताकर आते थे। तथा उनके पास अपने दुःख सुख कहते थे। इसीलिए लोग Temple में उन लोगों की प्रतिमा के पास, जाकर बैठ जाते हैं, कुछ समय के पल बिताते हैं, तथा अपने मन एवं दिल की बात, उस प्रतिमा को बताते हैं। इसलिए उसे वह लोग मन दिल कहते हैं। मन + दिल = मन्दिर। और जब Temple के देवी-देवता, उसकी इच्छा को पूरी नहीं कर पाते हैं, तब व्यक्ति तंत्रविद्या में चला जाता है। जो लोग शरीर में रहते हुए बुरे होते हैं, वही लोग शरीर के छूटने के बाद, नरक में जाते हैं और, भूत, प्रेत, पिशाच, चुड़ैल, डाकिनी, शाकिनी बन जाते हैं। इन भूत, प्रेतों, पिशाचों, चुड़ैलों, डाकिनी, शाकिनी आदि को, तंत्रविद्या के माध्यम से, अपने वश में किया जाता है। वह व्यक्ति तंत्रविद्या के माध्यम से, अपनी अपूर्ण इच्छाओं को, पूरा करने में लग जाता है। और तब उस व्यक्ति को, भूत, प्रेतों, पिशाचों, चुड़ैलों, डाकिनी, शाकिनी पर विश्वास हो जाता है। इस प्रकार से व्यक्ति, केवल मात्र अपनी इच्छा को, पूरी नहीं कर पाने के कारण, परमात्मा को मानना छोड़कर, देवी देवता को मानना छोड़कर, भूत, प्रेत, पिशाच, चुड़ैल, डाकिनी, शाकिनी को मानने लग जाता है। और तंत्रविद्या को ही सर्वोपरि मानने लगता है। तथा अन्य शास्त्रों, ग्रन्थों को मानने में, प्रमाण माँगने लगता है कि, "यह शास्त्र में जो लिखा है, वह सत्य लिखा है, यह मैं कैसे मान हूँ" ? इस तरह से व्यक्ति की इच्छाएँ, जब तंत्रविद्या से भी पूरी नहीं होती हैं। तब व्यक्ति पूरी तरह से नास्तिक हो जाता है, वह किसी पर भी विश्वास नहीं करता है। और केवल अपने अहम पर विश्वास, करके कार्य करता है। जिससे अहंकार से भरकर अहंकारी हो जाता है। अहम + कार्य = अहंकार। तब व्यक्ति केवल अहम कार्य को ही करता है और कहता है कि, "फ़ालतू मेरा Time खोटी मत करो, कोई अहम कार्य हो तो बताओ"। तब व्यक्ति जो Time को Temple में देता था। उस Time को कार्य में लगाता रहता है। इस तरह से व्यक्ति, Time को ही Money कहता है। क्योंकि व्यक्ति जानता है कि, व्यक्ति दुनिया में, सबकुछ Duplicate बना सकता है, किन्तु Time का Duplicate नहीं बना सकता है। इसलिए जब व्यक्ति के पास, जब Time नहीं बचता है, तब व्यक्ति पुनः परमात्मा की शरण में जाता है और परमात्मा से वक्त मानता है। "कि मेरी आयु को और बढ़ा दो"। तब व्यक्ति की निष्ठा वय में हो जाती है। वय + क्त = वक्त। वय =

आयु। क्त = निष्ठा। इस तरह से व्यक्ति परमात्मा से चलता है और परमात्मा तक आता है।

357. समर + काम = स्मारक - समर में जो काम आ जाते हैं, स्मारक उन्हीं के बनाए जाते हैं।

358. सित + अम्बर = सितम्बर -

"हग" को अगर "Hug" लिख दो तो, "हग" भी शुद्ध हो जाता है। और, "सित" को अगर "Shit" लिख दो तो, "सित" भी अशुद्ध हो जाता है। जबकि "सित" का अर्थ होता है, > उज्जवल, शुभ्र, दीप्त, चमकीला स्वच्छ, साफ, निर्मल। इसी सित में अम्बर को जोड़कर, "सितम्बर" शब्द बना है। सितम्बर का अर्थ "उज्जवल आकाश" होता है। जब जुलाई-अगस्त के बाद, आकाश बिना बादलों का हो जाता है, तब सूर्य की किरणों से आकाश में, संपूर्ण उज्जवलता आ जाती है। इसलिए इस समय को "उज्जवल आकाश", यानी "सितम्बर" कहते हैं। सित + अम्बर = सितम्बर। सितम्बर = उज्जवल आकाश। सित = उज्जवल। अम्बर = आकाश। एक भाषा से दूसरी भाषा में गए शब्द, किस तरह के अर्थ में, समझ लिए जाते हैं, यह भी एक अध्ययन का अध्याय है।

359. Sing + गल = Single –

Single आदमी जब भी कोई, गल करता है, वह Sing होकर करता है। जैसे - Bathroom में नहाता व्यक्ति, Single होता है, और वह व्यक्ति Sing करता है। और दूसरी बात, Single व्यक्ति के Sin की गल, हर कोई करता है कि, "अरे ! वह बड़ा ही पापी है, हम तो सोचते थे कि, अकेला रहता है तो, पाप नहीं करेगा"।

360. संग + गीत = संगीत -

संग से जब गीत निकलता है, तब उसे संगीत कहते हैं। संग + गीत = संगीत। संग = पत्थर। संगीत यानी पत्थरों के द्वरा, गाया गया गीत। जब अपने हाथों में, संग (पत्थरों) को लेकर रगड़ते हैं, तब संग (पत्थरों) में से जो ध्वनि निकलती है, उस ध्वनि को गीत कहते हैं। संग (पत्थरों) में से निकलनेवाली ध्वनि को, गीत के रूप में समझनेवाला ही, संगीत को समझ सकता है। इसलिए अगर आप पत्थरों के, गीत को गा सकते हो तो, आप संगीत कर सकते हो। संग + गीत = संगीत। संग = Sung. Sung यानी पत्थरों के द्वारा गाया गीत। संग (पत्थर) से निकली ध्वनि, सत की होती है। इसलिए इसे सत्संग भी कहते हैं। सत + संग = सत्संग। संग (पत्थर) से निकलनेवाली, सत की ध्वनि को सुननेवाला ही, सत के द्वारा Sung किये जा रहे, गीत को सुन लेता है। इसे ही संगीत कहते हैं। सत + Sung + गीत = सत्संगीत।

361. सबरी का फल मीठा -

विपरीत समय में, लोगों के द्वारा कही गई बातों को, सुनकर, सब्र रखकर, मुस्कुराते हुए, मुंह में ही चबाकर, गले से अपने पेट में, उतार लेना चाहिए। लोगों के द्वारा कहीं गई, यह बातें "जूठी" होती हैं। और इन जूठी बातों को, मुस्कुराते हुए खा लेना चाहिए। इन बातों को सामान्य भाषा में, "गाली" कहते हैं। यह जूठी बातें ही, व्यक्ति के जीवन में, बड़े ही पोषण का कार्य करती हैं, और व्यक्ति को Motivation देती हैं। सब को बर कर देती है, उसे सब्र कहते हैं।

362. सत + कार = सत्कार्य -

सत्कार करने को सत्कार्य कहा जाता है। सत + कार = सत्कार्य। जब आप किसी का सत्कार करते हैं, वही तो सत्कार्य होता है। इसलिए दुनियाभर में, सत्कार के द्वारा सत्कार्य होते रहते हैं। इसलिए जिसका सत्कार करना होता है, वह Sit करके Car में आता है। Sit + Car = सत्कार। और जो लोग सत्कार पाना चाहते हैं, वह लोग सट करके, Car में बैठकर जाते हैं। सट + Car = सत्कार। क्योंकि, "Car में बैठकर जाने से, सत्कार मिलता है"। इसलिए सत्कार को प्राप्त करने के लिए, लोग Car को खरीदते हैं, और कहते हैं, कि, "हम जहां भी जाते हैं, अपनी Car में बैठकर जाते हैं"। जबकि पहले जमाने में, जो सत कार्य करता था, उसको सत्कार मिलता था। सत + कार्य = सत्कार।

363. शाह + गिर्द = शागिर्द -

शाह के गिर्द रहनेवाला, शागिर्द होता है। शाह + गिर्द = शागिर्द। शाह तक पहुँचने के लिए, लोग शागिर्द से राफ्ता रखते हैं।

364. शोशे + सलाह = Social -

शोशे जहां सलाह किए जाते हैं, वह Social Media कहलाता है। शोशे + सलाह = Social. Social Media पर शोशे और सलाह ही दिए जाते हैं।

365. स्त्री + गल = Struggle -

स्त्री की गल सुनना ही, Struggle कहलाता है। स्त्री + गल = Struggle. जब व्यक्ति को स्त्री की गल सुननी पड़े, तब समझना चाहिए कि, व्यक्ति Struggle से गुजर रहा है। यही स्त्री की गल ही व्यक्ति को, जीवन में सफलता दिलवाती है। गोस्वामी तुलसीदास एवं कवि कालिदास के, अतिरिक्त और भी इसके उदाहरण हैं। जिसमें स्त्री की गल को सुनकर, व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन आया है।

366. शांता + कुंज = शांताकुंज - शांता का कुंज यानी शांताकुंज।

367. शयन + तान = शैतान -

शयन और तान इन दोनो से, शैतान को पहचाना जाता है। शयन + तान = शैतान। जब व्यक्ति को बिना समय के, नींद आने लगे, या, जब व्यक्ति बिना किसी कारण के, तान में गाने लगे, तब समझ जाना चाहिए कि, "व्यक्ति के भीतर शैतान ने, प्रवेश कर लिया है"। यानी जब व्यक्ति में आलस आने लगे, या व्यक्ति बिना किसी मतलब के, तान में गाने लगे। तब समझ लो व्यक्ति के भीतर, शैतान का प्रवेश हो गया है। व्यक्ति के भीतर से उस शैतान को, निकालने के लिए, व्यक्ति को हरी मिर्च खिलाई जाती है, और व्यक्ति को नींबू चटाया जाता है, या नींबू का पानी पिलाया जाता है। जिससे व्यक्ति के भीतर से शैतान निकल जाता है। इसलिए यात्रा करने वाले व्यक्ति के पास नींबू और हरी मिर्च दे दी जाती है। ताकि व्यक्ति अपनी यात्रा में, हरी मिर्च खाता रहे, तथा नींबू को चाटता रहे। और नींबू का पानी पीता रहे। ताकि शैतान उस व्यक्ति से दूर रहे। और व्यक्ति को आलस नहीं आए, तथा व्यक्ति तान में नहीं गाए। क्योंकि व्यक्ति में शैतान के, प्रवेश करते ही, व्यक्ति को आलस आता है, और व्यक्ति बड़ी ही सुरीली, तान में गाने लगता है। और व्यक्ति अपनी यात्रा में, देर करने लग जाता है। इसलिए भोजन में हरी मिर्च, तथा नींबू को निचोड़कर खाया जाता है। ताकि शैतान का असर नहीं हो, क्योंकि जैसे ही शैतान का प्रवेश होता है, व्यक्ति चादर को तानकर शयन, करने लग जाता है, तब

चाहे दिन हो या रात हो। इसलिए शरीर के भीतर स्थित, ची (आत्मा) को जगाने के लिए, मिर्ची खाई जाती है। और व्यक्ति को नीम बेहोशी से, जगाने के लिए नींबू खिलाया जाता है। और जब व्यक्ति इन दोनों से, ना जगे तब व्यक्ति को, सुई चुभोई जाती है। और अगर व्यक्ति तब भी ना जागे, तो व्यक्ति के पास कोयले को, जलाया जाता है। और कोयले की अग्नि की गर्मी से, व्यक्ति जाग जाता है। इसलिए यात्रा में जा रहे, व्यक्ति के पास, मिर्ची, नींबू, सुई और, कोयला दिया जाता है। ताकि यात्रा में शैतान उससे दूर रहे।

368. शरीर + Cure + रीति = Security -

शरीर का Cure करती है जो रीति, उसे Security कहते हैं।

369. सत + आ = सत्ता -

सत से ही सत्ता आ जाती है। इसलिए सत्ता की प्राप्ति के लिए, सत को अपनाया जाता है। सत + आ = सत्ता। सत = परमात्मा। जिस-जिस ने भी सत को अपनाया है, उस-उस ने सत्ता को पाया है।

370. सम + वित्त + सर = सम्वत्सर -

वित्त को सम करनेवाला सर, ही सम्वित्तसर कहलाता है। सम्वित्तसर से यह अपभ्रंश होकर, सम्वत्सर हो गया। सम + वित्त + सर = सम्वत्सर। सम = बराबर, पूर्ण। सम्वत्सर यानी हिसाब किताब बराबर, करने वाला सर। यह हिसाब किताब बराबर करने का, जिम्मा जिसके सिर होता था। उसको "सर" कहा जाता था। क्योंकि उस समय गणना उंगलियों पर, की जाती थी। और कलम से एक बार लिखी गई रकम, पर दुबारा कलम नहीं चलाई जाती थी। सम्वत्सर के अंतिम दिन, पूरे वर्ष के वित्त को सम किया जाता था। इसलिए इसे सम्वित्तसर कहते हैं। जिसका-जिसका वित्त सम किया जाता था, उस-उस के नाम से, सम्वत्सर का नामकरण किया जाता है। जैसे कि इस वर्ष के सम्वत्सर २०८० का नाम, महान गणितज्ञ एवं छंद शास्त्र के रचयिता महर्षि पिंगल के नाम पर, "पिंगल सम्वत्सर" रखा गया है।

371. श्वास + टिका = स्वास्तिक -

श्वास पर ही तो सबकुछ टिका है, इसलिए "स्वास्तिक" है। श्वास + टिका = स्वास्तिक। श्वास + Tick = स्वास्तिक। मनुष्य से लेकर पशु, पक्षी, कीट, पतंग सभी का शरीर, श्वास पर ही तो टिका है। इसलिए स्वास्तिक है। अगर शरीर में आस नहीं है, तब शरीर शव है। शव + आस = श्वास। इसी आस पर सबकुछ टिका है, इसलिए इसे आस्तिक कहते हैं। आस + टिका = आस्तिक। आस + Tick = आस्तिक। जो ध्यान में बैठकर आती-जाती, श्वास पर स्वयं की नज़र को टिका लेते हैं। वह स्वयं आस्तिक हो जाते हैं। स्वयं + आस्तिक = स्वास्तिक। निरुक्त के रचयिता यास्क आचार्य ने कहा है कि, "स्वस्तिक क्षेम कायति, इति स्वस्तिकः" यानी स्वस्तिक काया की रक्षा करता है। उसे स्वस्तिक कहते हैं। यहाँ पर "क्षेम" यानी "रक्षेम" ऐसा प्रयोग हुआ है। क्षेम = रक्षेम। रक्षेम = रक्षा करना। यानी श्वास से काया (शरीर) की रक्षा होती है। इसका ऐसा अर्थ होता है। इसलिए जो श्वास को टिका लेते हैं, वही तो बड़े-बड़े ग्रंथों पर, टीका लिख लेते हैं। जिस प्रकार से रहट चलती है। श्वास भी उसी प्रकार से चलती है। श्वास के चलने की अपनी एक, प्राकृतिक गति होती है। जिसे रहट कहते हैं।

इसी रहट से शब्द बना है "राहत"। यानी जब श्वास में श्वास आ जाती है, तब व्यक्ति को राहत मिलती है। तो जो व्यक्ति रहट के जैसे, श्वास की गति को चलना जान लेता है, वह व्यक्ति उस श्वास में टिक जाता है, और स्वास्तिक को प्राप्त कर लेता है, तथा स्वयं ही आस्तिक हो जाता है। इस तरह से श्वास को देखता हुआ, व्यक्ति आस्तिकता को प्राप्त करता है। श्वास जब नासिका से ऊपर जाती है, और माथे के मध्य में आकर टिक जाती है, वही टिकी हुई श्वास ही तो, वहां माथे पर टीका बनाती है। इसलिए माथे के उस स्थान पर, टीका लगाया जाता है। यह टीका ही आस को जानने का, माध्यम होता है कि, माथे में जहाँ पर टीका लगाया गया है, वहाँ तक श्वास आ रही है कि, नहीं आ रही है। क्योंकि अगर माथे में, टीका लगे स्थान तक, श्वास आ रही है तो, व्यक्ति का आज्ञा चक्र चल रहा है, और व्यक्ति अपनी आज्ञा से, कार्य कर रहा है। अन्यथा व्यक्ति दूसरे की आज्ञा से, कार्य कर रहा है। तो श्वास को अपने माथे के मध्य में, आज्ञा चक्र तक लाया जाता है, ताकि उसकी स्वयं की प्रज्ञा जाग्रत हो जाए, और वह व्यक्ति स्वयं की, आज्ञा से अपने कार्य करे। प्रज्ञा = Wisdom. इसलिए उस श्वास को देखा जाता है कि, वह श्वास कहाँ तक जा रही है। इसलिए व्यक्ति की प्रज्ञा को, जाग्रत करने के लिए, सभी जगह पर व्यक्ति के माथे के, मध्य स्थान पर, अंगूठे से हलके-हलके दबाया जाता है। ताकि उस व्यक्ति का आज्ञा चक्र, सक्रिय हो जाए। और व्यक्ति की श्वास उस, आज्ञा चक्र तक आने लगे। क्योंकि जब व्यक्ति की श्वास, व्यक्ति के आज्ञा चक्र तक आने लगती है, तब व्यक्ति के आज्ञा चक्र को, Oxygen मिलने लगती है। Oxygen मिलने पर व्यक्ति के, आज्ञा चक्र में ज्ञान का दीपक, प्रज्वलित हो जाता है, यही प्रज्वलित ज्ञान व्यक्ति को, "प्रज्ञा" प्रदान करता है, और व्यक्ति को "प्रज्ञावान" बनाता है। प्रज्वलित + ज्ञान = प्रज्ञा। प्रज्वलित + ज्ञान + वाला = प्रज्ञावान। तथा यही प्रज्ञा व्यक्ति को Wise बनाती है, जिससे व्यक्ति में ऊँ का दम भरता है। इस तरह व्यक्ति को Wisdom प्राप्त होता है। Wise + दम + ऊँ = Wisdom. Wisedom के अपभ्रंश से ही Wisdom शब्द बना है। व्यक्ति को परमात्मा के अक्षर "ऊँ" की, ध्वनि इसी आज्ञा चक्र पर सुनाई देती है। इससे व्यक्ति में ऊँ का दम आ जाता है। कि चलो अब परमात्मा के नजदीक पहुँच गए हैं। श्वास की धार, व्यक्ति के शरीर में श्वास की धारा बनाती है। वैसे तो श्वास की धारा, नीचे नाभी की तरफ बहती है, किन्तु जब श्वास की एक धारा, ऊपर आज्ञा चक्र की तरफ बहती है, तब उस श्वास की बहती धारा को, "राधा" कहते हैं। श्वास की धार जब आज्ञा चक्र पर आती है, तब आज्ञा चक्र पर ॐ की ध्वनि सुनाई देती है। इसी से इसे "धर्म" कहा जाता है। श्वास की धार एवं ॐ के जोड़ को, धर्म कहते हैं, यानी इसे ही "योग" कहते हैं। धार + ॐ = धार्म > धर्म । धार्म का अपभ्रंश ही धर्म है। धार्म ही व्यक्ति को इक करता है, इसलिए व्यक्ति धार्मिक कहलाता है। इसलिए सारे संसार में कहीं भी रहनेवाला व्यक्ति, जब Meditation करना प्रारंभ करता है, और धार्म को करते हुए इक हो जाता है, तब उसे धार्मिक कहा जाता है। धार्म + इक = धार्मिक। धार्म ही धाम कहलाता है। धार्म = धाम। व्यक्ति के भीतर स्थित काम, इसी आज्ञा चक्र के धाम पर, आकर भस्म हो जाता है। इसलिए श्वास पर टिका हुआ प्रत्येक व्यक्ति, आस्तिक कहलाता है और, स्वास्तिक को प्रमाणित करता है।

372. सिद् + धी + अ + त्रि = सिद्धिदात्री -

धी में बैठ जाने पर, त्रि नहीं रहती है। सिद् + धी + अ + त्रि = सिद्धिदात्री। जब साधक को "धी" की उपलब्धि होती है, तब साधक में, त्रिगुणात्मक प्रकृति नहीं रहती है। साधक की इसी स्थिति को, सिद्धिदात्री कहते हैं। धी = Wisdom. शैलपुत्री से प्रारंभ होकर, साधक की साधना, नौ दिन में सिद्धिदात्री तक पहुंचती है। शैल = पत्थर। यानी पत्थर जैसा साधक, नौ दिन की साधना करके, सिद्धि को प्राप्त करता है। और शिला की अवस्था को प्राप्त, साधिका को भी, पुनः ऊर्जावान कर जाग्रत कर देता है। सिद्धिदात्री की यह साधना, ब्रह्मर्षि अत्रि के नाम से, सिद्धिदात्री कहलाती है। यानी अत्रि की तरह सिद्धि देनेवाली। सिद्धि + अत्रि = सिद्धिदात्री। यानी इस साधना को सबसे पहले, ब्रह्मर्षि अत्रि ने सिद्ध किया था।

373. शरीर + मैल = Smell -

शरीर से निकलने वाले मैल से, Smell आती है। शरीर + मैल = Smell. शरीर से निकलने वाले मल से, Smell आती है।

सु + गंध = सुगंध -

सु सु से निकलने वाले पानी से, गंध आती है।

खुश + बू = खुश्बू –

खुश होने पर बू आती है, खुशबू कहलाती है।

Bed + बू = बदबू -

Bed से आने वाली बू, बदबू कहलाती है।

374. Sick + आय + यत = शिकायत -

व्यक्ति Sick होने पर, आय के बारे में, और यत्न के बारे में ही, शिकायत करता है। Sick + आय + यत = शिकायत। व्यक्ति कहता है कि, "मैं बहुत Sick हूँ, मैं बहुत यत्न करता हूँ, किन्तु आय नहीं होती है" सब यह तीन ही के बारे में, व्यक्ति शिकायत करता है।

375. Stamin + ना = Stamina –

व्यक्ति का Stamina, तब तक देखा जाता है, जब तक व्यक्ति सहन करते हुए, ना नहीं कह देता है। Stamin + ना = Stamina. सहन करते हुए जब व्यक्ति ना कह देता है, तब समझ लिया जाता है कि, व्यक्ति का Stamina इतना ही है। इसी Stamina से शब्द बना है "सितम"। और सितम ना से ही शब्द बना है "Stamina".

सितम + ना = Stamina –

यानी किसी व्यक्ति पर उतना ही, सितम किया जाता है, जितना वह व्यक्ति सहन कर लेता है। या फिर किसी की सहनशक्ति को, पता करने के लिए, उस व्यक्ति पर सितम किया जाता है। "ताकि पता तो चले, इसमें Stamina कितना है" ?

इसीलिए व्यक्ति को तम में, Sit कर दिया जाता है।

Sit + तम = सितम –

यानी अंधेरे में व्यक्ति को, बैठा दिया जाता है। इसलिए जिस पर सितम ढाया गया है, वह व्यक्ति अंधेरे

में रहता है।

376. स्वयं + अ + ध्याय = स्वाध्याय –

स्वयं का अध्याय ही स्वाध्याय है। स्वयं + अ + ध्याय = स्वाध्याय।

ध्यान + आय = अध्याय –

ध्यान करना आय का ही, ध्याय होता है। ध्यान + आय = अध्याय। व्यक्ति हमेशा यह ध्यान करता है कि, "मेरी आय इतनी है, उसकी आय उतनी है, तो इसकी आय कितनी है" ? तो व्यक्ति जब स्वयं से किसी की भी, आय का ध्यान नहीं करता है, उसे स्वाध्याय कहते हैं। यानी व्यक्ति को ना अपनी, आय का ध्यान करना है, ना दूसरे की आय का ध्यान करना है। तो वही व्यक्ति स्वाध्याय कर सकता है, क्योंकि आय अर्थात् माया। यानी आय होगी तो व्यक्ति, माया खड़ी करता है। इसलिए व्यक्ति हमेशा यह, ध्यान करता है कि, "कहाँ-कहाँ से मुझे आय की प्राप्ति होगी, तो मैं उस प्राप्त आय से, यह-यह कार्य कर लूँगा"। यानी उस होनेवाली आय से, माया को खड़ा कर लूँगा। इसलिए स्वाध्याय की, पहली अहर्ता यही होती है कि, स्वाध्याय में बैठनेवाले व्यक्ति को, स्वयं की आय और दूसरे की आय का, ध्यान नहीं करना है। क्योंकि जो व्यक्ति आय का ध्यान करता है, वह व्यक्ति हमेशा यही पूछता है कि, "आज कितना आया" ? आय से ही "आया" शब्द बना है। तो आय की प्राप्ति के लिए, ध्यान नहीं करना चाहिए। जब आय की प्राप्ति के लिए, ध्यान नहीं करेगा, तभी परमात्मा का अनुभव होगा। इसलिए परमात्मा को प्राप्त करनेवालों के लिए, पहली अर्हता ही होती है कि, "परमात्मा का साधक, माया का त्याग कर दे" ? इसलिए जो साधक माया का त्याग कर देता है, उसी साधक को परमात्मा का दर्शन होता है। जबकि व्यक्ति तो परमात्मा से माया ही माँगने आता है। इसलिए ध्यान में यही अभ्यास करवाया जाता है कि, व्यक्ति आय के ध्यान को त्याग के, जिससे माया का आगमन रुक जायेगा। और व्यक्ति को परमात्मा का दर्शन हो जायेगा। तो स्वयं के अध्याय में, स्वयं के द्वारा जो स्वयं की आय का, ध्यान नहीं करना है। जब आय का ध्यान नहीं होगा, तो माया को बनाने का संकल्प नहीं होगा। और व्यक्ति स्वाध्याय करके, स्वयं ही परमात्मा को प्राप्त कर लेगा।

377. साम्राज्य –

साम से साम्राज्य फैलाया जाता है। दाम से दामराज्य फैलाया जाता है। दान से दानराज्य फैलाया जाता है। दण्ड से दण्डराज्य फैलाया जाता है। भेद से भेदराज्य फैलाया जाता है। छल से छलराज्य फैलाया जाता है। कपट से कपट राज्य फैलाया जाता है। झूठ से झूठ राज्य फैलाया जाता है। भय से भय राज्य फैलाया जाता है। डर से डर राज्य फैलाया जाता है। काल से काल राज्य फैलाया जाता है। मह से महान राज्य फैलाया जाता है। भ्रम से भ्रामक राज्य फैलाया जाता है। मिथ्या से मिथ्या राज्य फैलाया जाता है। माया से मायाराज्य फैलाया जाता है। राज से राजा राज्य फैलाया जाता है। नीति से नीति राज्य फैलाया जाता है। राजनीति से राजनैतिक राज्य फैलाया जाता है। नैतिकता से नैतिक राज्य फैलाया जाता है। धर्म से धार्मिक राज्य फैलाया जाता है।

378. Saw + धन = साधन -

धन ही साधन है। जब कोई Saw कर लेता है धन को, तब धन ही साधन बन जाता है। Saw + धन =

साधन। यानि व्यक्ति को धन दिखाओ और, उस व्यक्ति की वस्तु को साधन बनाओ। जैसे व्यक्ति कहता है कि, 'पहले पैसे दिखा, तब तेरा काम करूंगा'।

379. Sun = नस -

मनुष्य के शरीर की नस, Sun के अनुसार चलती है। जैसे-जैसे Sun निकलता है, वैसे-वैसे नस खुलती है। Sun = नस। इसलिए दिन के बारह बजे, मनुष्य के शरीर की सभी नसें खुल जाती हैं।

380. सकाम = Scam -

सकाम व्यक्ति के साथ ही Scam हो जाता है। सकाम = Scam. जब कोई तुम्हारी कामना को जान लेता है, तब वह तुम्हारे साथ Scam कर देता है।

381. संग + गीत = संगीत –

अगर तुम पत्थर का गीत सुन लो, तो तुम्हें संगीत उपलब्ध हो गया समझो। क्योंकि पत्थर को संग कहते हैं। संग + गीत = संगीत। संग के भीतर स्थित गीत को, निकालने के लिए, संग का संग से स्पर्श करवाया जाता है, जैसा स्पर्श होगा वैसा ही संगीत निकलेगा। और संग से गीत निकलेगा, तब तुम्हारे गले से भी गीत निकलेगा। तभी तो संग के गीत को सुनने के लिए, तुमने संग की मूर्ति बनाई, तुमने संग का महल बनाया। तुमने संग को Song कहा, तुमने संग को Sung कहा, तुमने संग को Sing कहा, तुमने Song को गानेवाले को Singer कहा, इस तरह तुमने संग के गीत को सुना, और तुम्हें संगीत सुनाई दिया। तभी तो किसी ने कहा है कि, 'गीत गाया पत्थरों ने'।

382. Sun + घर्षण = संघर्ष -

जब तक व्यक्ति Sun से घर्षण नहीं करता है, तब तक व्यक्ति संघर्ष नहीं करता है। Sun + घर्षण = संघर्ष। यानि व्यक्ति को Sun से घर्षण, करना ही होता है। यानि व्यक्ति जब तक कड़ी धूप में, भागदौड़ नहीं करता है, तब तक व्यक्ति को संघर्षशील, नहीं माना जाता है। क्योंकि Sun से घर्षण करने के बाद, **व्यक्ति घर ही जाता है। जैसे दिनभर की चरी हुई गाएं, शाम को तेजी से घर की तरफ लौटती हैं।**

383. Say + वाह = सेवा -

"Say वाह" कहकर सेवा करनेवाले की प्रशंसा की जाती है। 'वाह ! यह तो आपने बहुत अच्छा किया'।

384. सुड़-सुड़ = सुर -

जब नाक सुड़-सुड़ करती है, उसी सुड़-सुड़ में, सुर की परख कर ली जाती है कि, इसमें सुर है कि नहीं।

385. Spur + अर्श = स्पर्श –

हर कोई Spur से अर्श को स्पर्श करना चाहता है। Spur + अर्श = स्पर्श। Spur = प्रेरणा। जैसे कि कथन है कि, 'मैं ! चाहता हूं, तुम आसमान को छुलो'। यानि Spur की गति से, Space को छूना चाहता है। Spur + Pace = Space.

386. Sun + वेला = सवेरा -

Sun की वेला को सवेरा कहते हैं। Sun + वेला = सवेरा। वेला का अपभ्रंश वेरा हो गया। वेला =

समय। गाएं चरकर वापिस आने लगतीं और, गायों की धूल जब गांव के, बाहर दिखने लगती है, तब उस समय को, गोधुलि की वेला कहते हैं। गो + धूल = गोधुलि। गो = गाय।

387. Sick + आयत = शिकायत -

Sick होने पर जिस आयत के द्वारा, खुदा से दुआ की जाती है, उसे शिकायत कहते हैं।

388. शून्य + शान = सुनसान -

शून्य भी है और शान भी है। तभी वह सुनसान है। शून्य + शान = सुनसान। शम है तभी तो शान है। तभी तो श्मशान है। शम + शान = श्मशान। और श्मशान जैसी शून्यता, कहीं भी नहीं मिलेगी।

389. सूत+ त्र + धार = सूत्रधार -

जिस प्रकार से सूत की तीन धाराएं, किसी भी वस्तु को काट देती है, सूत+ त्र + धार = सूत्रधार। उसी प्रकार सूत्र की धार, बड़े से बड़े साम्राज्य को काट देती है। सूत्र + धार = सूत्रधार। सूत्र को अंग्रेजी में 'Formula' कहते हैं। जो फोड़ दे मूल को उसे Formula कहते हैं। फोड़ + मूल = Formula.

390. सूर्यवंशी- चन्द्रवंशी- अग्निवंशी -

सूर्य का अंश जिसमें है, वह सूर्यवंशी है। सूर्यवंशी स्वर्ण को पहनता है। चन्द्र का अंश जिसमें है, वह चन्द्रवंशी है। चन्द्रवंशी रजत को पहनता है। अग्नि का अंश जिसमें है, वह अग्निवंशी है। अग्निवंशी लकड़ी को पहनता है।

391. सौ + जन + यह + भेंट = सौजन्य- भेंट

जब यह कहते हैं कि, सौ जन हैं यह, इनसे भेंट करते हैं, तब उसे सौजन्य कहते हैं। सौ + जन + यह + भेंट = सौजन्य- भेंट। यानि जब भी किसी से, भेंट करने जाओ, तब अपने साथ, सौ लोगों को लेते जाओ। तब उसे सौजन्य-भेंट कहते हैं। जब सौ जन मिलकर, किसी कार्य को करते हैं, उसे सौजन्य कहते हैं। सौ + जन = सौजन्य। उस कार्य को पूरा करने में, सौ जन का नाम नहीं, लिखा जा सकता है। इसलिए कार्य के नीचे, सौजन्य लिख दिया जाता है। यानि इस कार्य को सौ जन ने किया है।

392. Sun + ग्रह = संग्रह –

जब से आप जोड़ने लगते हैं, तब से आप जोड़ी कहलाते हैं। विवाह के समय वर-वधु जोड़ी कहलाते हैं। विवाह के पश्चात यही वर-वधु, वस्तुओं, संबंधों को जोड़ने लगते हैं। इसलिए यह वर-वधु जोड़ी कहलाते हैं। इस जोड़ने को ही संग्रह करना कहते हैं। जिस प्रकार से Sun ने, ग्रहों को जोड़कर रखा हुआ है। Sun + ग्रह = संग्रह। उसकी प्रकार से वर-वधु की यह जोड़ी, ज्योतिष की पत्रिका में बताए गए, अपने Son के ग्रहों के अनुसार, अपने Son के लिए संग्रह करती है। Son + ग्रह = संग्रह। ग्रह = ज्योतिष में ज्योतिषी के अनुसार बताए गए ग्रह। कि आपके Son का यह ग्रह ऐसा है, इस ग्रह के लिए यह कर लो। और यह ग्रह वैसा है, इस ग्रह के लिए वैसा कर लो। इस तरह से Sun और Son के लिए, वर-वधु की जोड़ी कुछ न कुछ जोड़ती रहती है। जिसे संग्रह कहते हैं। संग्रह = जोड़ना।

393. सुगन्धित + धान = सुधा - सुगन्धित धान को सुधा कहते हैं।

394. साम + Agree = सामग्री -

अगर आपको मेरी बात पसंद आई है तो, सामग्री मंगा लीजिए। बात = साम। पसंद = Agree. जब

कोई किसी की बात से Agree हो जाता है, तब वह सामग्री मंगा लेता है। साम + Agree = सामग्री। यानि पंडित जी के द्वारा बताई गई बात पर, जब यजमान Agree हो जाता है, तब यजमान पूजन की सामग्री, लेकर आ जाता है।

395. शिकन + डर = शिकंडर = सिकंदर -

शिकन एवं डर जिसके चेहरे पर होता है, उसे ही शिकंडर कहते हैं। शिकन + डर = शिकंडर = सिकंदर। यही शिकंडर अपभ्रंशित होता हुआ, सिकंदर बन गया। आचार्य चाणक्य के बुद्धिबल से प्रताड़ित, Alexandar की सेना के सैनिकों के चेहरे पर, शिकन और डर उत्पन्न हुआ। और Alexandar की सेना, युद्ध करने की बजाय, वापिस जाने को तैयार हो गई। इस कारण से ही Alexandar के चेहरे पर भी, शिकन और डर दिखाई देने लगा। इसी शिकन एवं डर के कारण, Alexandar का नाम जो भारत में प्रसिद्ध हुआ, वह शिकंडर कहते-कहते कालांतर में, अपभ्रंशित होकर सिकंदर हो गया।

396. सह + आय = सहाय -

सह लेती है आय सब, इसलिए आय ही सहाय है। सह + आय = सहाय। यानि व्यक्ति के पास अगर आय है, तो व्यक्ति सबकुछ सह लेता है। इसलिए व्यक्ति की आय ही, व्यक्ति की सहायता करती है। और तो और आय वाले के, बहुत लोग सहायक बन जाते हैं। वहीं अगर व्यक्ति के पास आय नहीं है, तो व्यक्ति असहाय है। अ + सह + आय = असहाय।

397. शासन + त्र = शास्त्र -

शासन करने के लिए, विधानपालिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका के, नियमों को जिसमें लिखा जाता है, उसको शास्त्र कहते हैं। शासन + त्र = शास्त्र। शास्त्र में लिखे गए नियमों को, समय-समय पर परिस्थिति अनुसार, परिवर्तित किया जाता है, इस परिवर्तन को संशोधन कहते हैं। समय के अनुसार संपूर्ण शास्त्र के, स्थान पर नया शास्त्र भी लाया जाता है। यानि शासन करनेवाला, जब बदला लेना चाहता है, तब Law को बदल लेता है, इसे ही बदला कहते हैं। बदल + Law = बदला। यानि बदल लेना Law को। यानि शास्त्र का कोई नियम, यदि शासक को शासन करने में, अड़चन डाल रहा है, तो शासक उस नियम को बदलकर, अपने अनुकूल नियम लिखवा लेता है। यानि शासन करने के लिए, शास्त्र को लिखा जाता है, और संशोधन किया जाता है, और बदला जाता है। इसलिए व्यक्ति, परिवार, समाज, संस्कृति,जाति, धर्म, शासक बनना चाहते हैं, और शासक बनकर, और अपने फायदे के लिए, और अपना बदला लेने के लिए, शासन करने वाले शास्त्र के नियमों में, संशोधन करते हैं, या संपूर्ण शास्त्र को ही अमान्य करके, एक नया शास्त्र बना देते। और संशोधित एवं परिवर्तित किए गए, शास्त्र को मानने के लिए बाधित करते हैं। संशोधित या परिवर्तित किए गए शास्त्र को, जो व्यक्ति नहीं मानता है, उस उसका वध कर देते हैं, और दूसरे व्यक्तियों में डर फैलाते हैं। 'कि देखो संशोधित और परिवर्तित, शास्त्र के नियमों को मान लो, अन्यथा तुम्हारे साथ भी वही सलूक होगा, जो सलूक उस व्यक्ति के साथ हुआ है'। किन्तु इस शास्त्र के ऊपर, एक और अपरिवर्तनीय नियम होता है, जिसे धर्मपालिका कहते हैं। यह धर्मपालिका ही शासन करनेवाले पर, धर्म का अंकुश

रखती है, और शासक को मनमर्जी नहीं करने देती है। और जो शासक सत्ता के घमंड में चूर, धर्म के नियम का उलंघन करता है, वह शासक स्वयं अपनी सत्ता एवं, अपने वजूद को खो देता है। इसलिए शासक को धर्म से ऊपर, अपने आपको नहीं समझना चाहिए, और शास्त्र को अपने उपयोग के अनुसार, संशोधित एवं परिवर्तित कर के, किसी को त्रास नहीं देना चाहिए। क्योंकि शास्त्र तो शासन करने के लिए बना है, ना कि अपना बदला लेने के लिए।

398. Sim + मटका = सिमट -

जिस प्रकार इंसान की जिंदगी, एक Sim में सिमटकर आ गई है, और आधार से Link हो गई है, और बिना आधार Link वाले,Sim की कोई पूंछ नहीं रह गई है। उसी प्रकार इंसान का शरीर, मिटकर एक मटके में आ जाता है। Sim + मटका = सिमट। जिस प्रकार Sim इंसान की जिंदगी के राज़ खोल देती है, उसी प्रकार से इंसान के शरीर की मिट्टी सब राज़ खोल देती है। Sim + मिट्टी = सिमिट। क्योंकि इंसान का शरीर, आखिर में सिमिटकर मिट्टी बन जाता है। इसलिए इंसान की जिंदगी हो, या इंसान का शरीर हो, दोनों ही सीमित हैं। क्योंकि Sim एवं शरीर, दोनों की सीमा है। Sim + मिट = सीमित। इंसान की जिंदगी की सीमा Sim है, और इंसान के शरीर की सीमा मिट्टी है। जिंदगी Sim से बाहर नहीं जा सकती है, और शरीर मिट्टी से बाहर नहीं जा सकता है।

399. Sun + रक्षण = संरक्षण -

Sun के द्वारा ही रक्षण किया जाता है। इसे ही संरक्षण कहते हैं। Sun + रक्षण = संरक्षण। इसलिए Sun ही रक्षक भी है। Sun + रक्षक = संरक्षक।

T

1. तोड़ + चढ़ = Torture - चढ़कर टोड़ना ही Torture है।

2. तेरे + बूते = Tribute -

जब कोई कहता है कि, "Tribute देना है"। यानि "तेरे बूते यह काम हुआ है"। तभी वह उसको Tribute देता है।

3. Tone - Tongue के अनुसार Tone होती है।

4. त्रि + नीति = Trinity –

तीन तत्त्वों की नीति ही त्रिति है। यानि तीन तत्त्व सत, रज, तम, यह तीनों तत्त्व ही Neat हैं। इन तीनों की नीति ही तो त्रिनीति है।

5. To + Well = Towel –

स्नान के लिए जिस कपड़े को लेकर Well की तरफ जाते हैं, उसे Towel कहते हैं।

6. Two + कड़ा = टुकड़ा - कड़े दो ही होते हैं, इसलिए Two कड़ा होता है।

7. Temple -

जब Temper या Pulse High हो जाता है, तो उसे मंदिर में ले आते हैं, जिससे उसका Temper या Pulse Down हो जाती है।

8. त्र + अंश + लेत = Translate -

तीन का अंश लेता है। Translate में तीन लोगों के अंश होते हैं। एक जो बात कहता है। दूसरा जो बात को Translate करता है। तीसरा जो Translate की गई बात को, अपने अर्थ में समझता है।

9. तराश – ज्योतिषवाली राशियाँ एवं धनराशि यह दोनों राशियाँ ही व्यक्ति को तराशती हैं।

10. Tea + Use + Day = Tuesday -

मन गलने लगता है मंगलवार को। यानि व्यक्ति का मन कमजोर होने लगता है, तो उस गलते हुए मन को दुबारा जाग्रत करने के लिए Tea का Use किया जाता है। जिससे मन जागता हुआ रहता है।

11. ताकतवर -

वर (वरदान) ही किसी को ताकतवर बनाता है। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं, जिसमें वर प्राप्त कर कई लोग ताकतवर हुए हैं।

12. Touch = त्वचा - त्वचा को ही Touch किया जाता है।

13. Till + Luck = तिलक -

Luck के लिए तिलक लगाया जाता है। जब तक तिलक है, तब तक Luck है।

14. Trust - त्रस्त लोग ही किसी पर Trust करते हैं।

15. तहजीब - जीभ को तह करके रखना ही तो तहजीब है।

16. तक + Leaf = तकलीफ -

Leaf की तो तकलीफ है। Leaf का तकना ही तो तकलीफ है। जब तकना पड़ता है कि, कोई Leaf

इधर न गिरे, क्योंकि फिर उनको झाड़ू लगाना पड़ेगा। फिर उसको तकना ही तकलीफ है। एक कहानी भी है कि, एक बीमार आदमी एक पेड़ की पत्तियाँ देखकर अपना वक्त काटता था। अपनी तकलीफ को भूलने की कोशिश करता था। यानि वह तकता रहा लीफ को, जब तक की आखरी Leaf गिर नहीं गई। और अपनी तकलीफ की तरफ मन को नहीं जाने दिया। पतझड़ में जब Leaf पेड़ से गिरती हैं, तो उनको तकना और साफ करना ही तकलीफ है।

17. ताल + Entry = Talent -

ताल (ताली) बजती है जिसकी Entry पर। जिसमें Talent होता है, उसकी Entry पर ताली बजती है।

18. Two + अंश = Twins – एक ही भाग के जब दो अंश कर दिये जाते हैं, उसे Twins कहते हैं।

19. ठीक + रहा = ठीकरा -

जब आदमी यह कहता है कि, "अब ठीक रहा ! मेरी बात मान लेते, तो ऐसा कभी नहीं होता।" ठीक + रहा = ठीकरा। तो यही ठीकरा फोड़ना होता है।

20. Tip-Top - Tip से ही तो Top पर पहुँचा जाता है।

21. Top Secret -

Secret रहोगे तो Top पर जाओगे। Top में हर चीज Secret रखी जाती है। किसी के Top पर पहुँचने का कोई-न-कोई तो Secret होता है।

22. Three + Ad = Thread -

तीन Ad का बंद कर देना ही Thread है। यानि रोटी, कपड़ा और मकान के Ad को न देना ही Thread है।

23. त्रुटि - किसी को True कहना ही त्रुटि है।

24. Tattoo = टट्टू - टट्टू की पहचान के लिए उस पर Tattoo बना दिया जाता है।

25. तोय + Late = Toilet –

उससे पूछा गया कि, "क्यों Late हो गया"। उसने कहा कि, "वह गया था हलका होने, तोय Late हो गया"। इससे "तोय Late" का "Toilet" शब्द हो गया।

26. तमाश + बीन = तमाशबीन –

बीन की आवाज को सुनकर तमाशा देखने के लिए तमाशबीन जमा हो जाते हैं।

27. तोल + Rate = Toll Rate – तोल करवाने से पहले Rate तय कर लेना चाहिए।

28. तोल + Rate = Tolerate –

जो पहले तुलवा लेते हैं, तो उनको वही कीमत देनी होती है, जो दुकानदार माँगता है।

29. Top-Secret –

Top में जो Secret है, वही तो Top Secret है। Boss ने Secretary से कहा कि यह Top-Secret है, तो Secretary ने उसे अपने Top में रख लिया। वह Top Secret हो गया, और Secret क्या है? रुपया ही Secret है, यानि Boss जो रिश्वत लेता था, वह अपने पास न रख कर

Secretary को देता था, वह Secretary उसे अपने Top में रख लेती थी। क्योंकि Boss को यह रिश्वत Top Secret File को Secret रखने के लिए मिली थी। और साथ-साथ ही Secretary उस Top Secret File को भी अपने Top में छिपाकर अपने घर ले जा कर Top पर (सबसे ऊपर) रख देती थी। इस तरह Secretary के पास बहुत-सा रुपया और File इकट्ठी होने लगी और एक दिन फिर Secretary ही Boss वन गई। क्योंकि जिसके पास Secret होगा यानि राज होगा, वही तो Boss होगा यानि राजा होगा। अर्थात् उसी के पास Top-Secret हैं।

30. Tool = तूल -

किसी कार्य को आगे बढ़ाने के लिए Tool दिया जाता है, और किसी बात को आगे बढ़ाने के लिए तूल दिया जाता है।

31. Tea + चर = Teacher -

Tea को चरना जो सिखाए, वह Teacher है। जापान में चाय को बनाना, और चाय को चरना (पीना), जो सिखाता है, वह Teacher होता है। भारत में जब आसाम आदि में, चाय के बागान लगाए गए, तो चाय के बागान से, चाय की पत्तियों को तोड़कर, उनसे चाय बनाना, यह अंग्रेजों ने भारतवासियों को सिखाया। यानि पहले भारत में चाय नहीं थी, तो चाय कैसे बनाई जाती, और चाय कैसे पी जाती है, यह सिखाने के लिए अंग्रेजों ने Teacher लगा रखे थे। जिसमें Tea Each, यानि चाय प्रत्येक भारतीय तक पहुँचनी चाहिए, इसलिए Teacher Each Person को, चाय बनाने और चाय पीने की Teaching देते थे। चाय वैसे तो चीन की जड़ी-बूटी है, जो सर्दियों में पी जाती है, जिससे शरीर गर्म रहता है, इसलिए चायना यानि चाय ना यह नाम भी, चाय से चीन का नाम पड़ा है।

32. थर + Eat = Threat –

Eat की ही Threat है कि, "तुम्हें खाना नहीं मिलेगा"। यानि हमेशा यही धमकी दी जाती है कि, "खाना नहीं मिलेगा तुझे"। खाने न मिलने की धमकी पर वह थर-थर काँपता है। इसे ही थर Eat कहते हैं, यानी Threat.

33. ताल + कम = Talcum –

तबले की ताल के लिए Talcum Powder का इस्तेमाल किया जाता है।

34. तवा + June = तवाजून –

तवा कह लो, कि June कह लो, बात बराबर ही है, क्योंकि June की गर्मी जितनी गर्मी, तवे पर भी होती है, इसीलिए तवाजून।

35. टका = ताका –

बंगाल में कपड़े बुने जाते हैं, बुने हुए कपड़ों के बण्डल को ताका कहा जाता है। तो एक ताका को ही एक टका कहा जाता है आगे चलकर यही टका मुद्रा के रूप में परिवर्तित हो गया।

36. Tuff + Seal = तफसील –

Seal Tuff है या नहीं यह जाँचने के लिए तफसील की जाती है। Tuff हो या Sealed हो दोनों को ही तोड़ नहीं सकते हैं। Tuff को तोड़ने के लिए ज्यादा ताकत चाहिए और Sealed को तोड़ने के

लिए Permission चाहिए। इसलिए चीजों को रखने के बाद यह देख लिया जाता है कि, यह Tuff है अगर नहीं है तो फिर उसको Seal कर दिया जाता है और अगर दोनों ही टूटे मिले तब फिर तफसील होती है कि, यह टूटे कैसे ? यही तफसील है।

37. Telecom Powder –

तेल को कम करने के लिए एक Powder लगाया जाता है, जिसे Telecom Powder कहते हैं।

38. Team – Tea के Garden में औरतें काम करने जाती हैं, उनकी एक Team बनाई जाती है।

39. तवा = ताव –

जिसमें ताव आ जाता है, उसे ही तवा कहते हैं। ताव में इन्सान का चेहरा भी, तवा की तरह गरम हो जाता है।

40. Tailor – आदमी की Tail (पूँछ) लगाने के लिए, आज भी Tailor को बुलाया जाता है।

41. त्रिपल = Triple – त्रिपल ही तो Triple है।

42. Trap = त्राप – तीन लोग जिन्हें आप कहा जाता है, उन्हीं की बातें Trap हैं।

43. Tag Line = तागे की Line – कपड़े के किनारे पर लिखी Line ही Tag Line है।

44. थक + कान = थकान –

थक जाते हैं जब कान तो हो जाती है "थकान"। थकान कानों से पता चलती है, जब कहते हैं कि, "मेरे कान थक गये हैं, तुम्हारी बातें सुनते-सुनते"। जब व्यक्ति यह कहे कि, "मैं तुम्हारी सुनते सुनते थक गया हूँ"। तब इसको समझना चाहिए कि, व्यक्ति थक गया है। थक + कान = थकान। व्यक्ति के रगों में जब, रक्त के थक्के जमने लगें, और व्यक्ति के कान, किसी की बातों को सुनते सुनते, भनभनाने लगे। तब समझना चाहिए कि, व्यक्ति में थकान आ गई है।

45. तक + दीर = तकदीर – तकते रहते हैं दीर, लोग उसे कहते हैं, तकदीर।

46. तक + वीर = तकबीर – वीर लोग ही अपनी तकबीर बनाते हैं।

47. टाल –

एक आदमी रोज एक लकड़ी लाता है, पर वह उसे जलाना टाल देता है, तो ऐसे टालते-टालते एक टाल बन जाती है, जो उसके अंतिम संस्कार में जलाने के काम आती है।

48. Talk = टोक –

जब कोई टोकता है, उसके बाद फिर जो बात आगे बड़ती है, उसे ही Talk कहते हैं।

49. ताली + बान = तालीबान – ताली बजाई जाती है, जब बाण मारने पर वह है, तालीबान।

50. Tip + पण = टिप्पणी –

Hotel में Tip देकर उस नौकर से आदमी टिप्पणी लेता है। अब चाहे Tip कहो कि "पण" एक ही बात है। चाणक्य के समय में रुपये को पण कहते थे और यही पण ही Tip होती है। यही Tip को प्राप्त कर व्यक्ति Top पर पहुँच जाता है।

51. तबेला –

सूर्य के उगने और डूबने का समय बेला कहलाता है। जब बेला का समय हो जाता है, तब बेला

(Bowl) ले करके दूध लेने के लिए तबेला में जाते हैं।

52. Trust – त्रस्त लोगों को राहत देने के लिए Trust बनाया जाता।

53. टंगा + Honey = टहनी – जहाँ टँगा रहता है Honey उसे कहते हैं टहनी।

54. ताश + खेलना = Task – जिसके पास कोई Task नहीं होता है, वह तास खेलता है।

55. Tragedy = त्रासदी –

त्रासदी ही Tragedy है, तीन चीजों अगर न मिले तो जीवन सदी के बराबर लगता है, रोटी, कपड़ा और मकान।

56. टिप्प + पणी = टिप्पणी –

बरसात में टिप-टिप गिरती छोटी-छोटी बूंदे को इकट्ठा करके ही पानी बनता है। उसी तरह छोटी-छोटी Tip से ही खजाना भरता है। छोटी-छोटी Tip से ही मंजिल पर आदमी पहुँचता है। छोटी-छोटी टिप्पणी से ही एक बड़ा लेख बनता है। Tip से ही व्यक्ति Top पर पहुँचता है, इसीलिए Tip-Top कहलाता है और Tip-Top होकर निकलता है।

57. त्रंश + Port = Transport –

तीन जगहों पृथ्वी, जल, वायु, पर जो Port करे वह है, Transport.

58. तिल + उत्तम = तिलोत्तमा – जिसके शरीर का तिल-तिल ही उत्तम है, वही तिलोत्तमा है।

59. थाह + ली = थाली – किसी की थाह लेने के लिए, उसे थाली में भोजन खिलाया जाता है।

60. तोड़ने + दो = Tornado – तोड़ने का काम जो करे वह है, Tornado.

61. तक + आजा = तकाजा –

तकाजा करनेवाले लोग तक कर रखते हैं, अब तो आजा और फिर तकाजा करते हैं।

62. Total –

Total करनेवाला हमेशा पूरी रकम को तोतला बोलता है, जिससे पता न चले कि रकम कितनी है।

63. तरीका – सब्जी की तरी बनाने का तरीका ही तरीका है।

64. Top + Pic = Topic –

जब कोई Top पर होता है, तो वह वहाँ एक Pic खींचता है, और फिर उसी Pic से ही एक Topic बनता है, जिसकी चर्चाएँ होती रहती है कि, "Top पर कैसे पहुँचा ? उसकी Pic कैसी है" ? यही Topic है।

65. टेढ़ी + बल = Terrible –

जब किसी की पेशानी पर टेढ़े बल पड़ जाते हैं, तो उसे Terrible कहते हैं।

66. Tie –

तय किया जाता है, जिसको उसे Tie पहना दिया जाता है। यानि उसे Tie पहनाकर उसे बाँध लिया जाता है, जैसे जानवर को खूँटे से बाँध दिया जाता है।

67. तम + आशा = तमाशा –

तम (अंधेरे) में उजाले कि किरण की आशा ही तो तमाशा कहलाती है। तमाशा रात को होता है, रात

के अंधेरे में थोड़े-से उजाले में आशा की किरण में तमाशा किया जाता है।

68. Town = ताऊ – ताऊ का ही Town होता है।

69. तन + Now = तनाव –

जब तन में तनाव होता है, तो वह हर वस्तु अभी (Now) चाहता है, यही तनाव होता है, जिसमें फिर व्यक्ति नाव बन जाता है, यानि मुर्दा हो जाता है और नदी में नाव की तरह तैर जाता है। जब व्यक्ति तन कर चलता है और यह कहता है कि, "I want this now". तो इसे ही "तनाव" कहते हैं। यानि व्यक्ति तना-तना रहे और कहता फिरे "Bring it now". या फिर कहे कि, "I want to see you now !!! come immediately". यानि तन कर रहना और Now-Now कहना, यही तो तनाव है। तन को इतना खींच कर रखना कि, अंतःकरण से तन का संपर्क टूट-सा जाए। फिर तन एक नाव की तरह, बेजान-सा हो जाए। जिस तन पर सब बैठकर नदी पार कर जाएँ। किन्तु वह नाव नदी में ही हिचकोले लेती रहे, यही तनाव है। तन को नाव बना देना। आधी पानी में आधी धूप में, तनी खड़ी रहे। तनाव को नाव न बनने दें, अंतःकरण से तन को जोड़े रखें। प्राण से तन और अंतःकरण के जुड़ाव को मजबूत रखें। आत्मा से परमात्मा का ध्यान करें, तन रूपी प्रकृति का सही-सही उपयोग करें। प्रकृति के अनुसार चलें किंतु प्रकृति समय लेती है। प्रकृति में Now या Instant कुछ नहीं होता है। इसलिए आत्मा को प्रकृति पर भरोसा रखना चाहिए और तनकर नहीं रहना चाहिए। Now-Now नहीं करना चाहिए। इस तरह तनाव से दूर रहना चाहिए।

70. TATA = टाटा = ताता –

लोहा गर्म हो जाने के बाद ताता हो जाता है। जमशेद जी TATA ने जब लोहे की Factory लगाई, तो जो गर्म लोहा होता था, उसको कैसे पहचाना जाए कि, यह गर्म लोहा है, तो उसमें ताता की Seal लगाई जाने लगी। अब अंग्रेजों का जमाना था, तो ताता को अंग्रेजी वर्णमाला में TATA लिखा जाता है, टाटा ही पढ़ा जाता है, तो यह टाटा ही फिर TATA नाम से पहचाना गया। क्योंकि लोहे पर लगी Seal मिट तो नहीं सकती वह सभी को दिखाई देती है। इससे जमशेदजी के नाम के पीछे TATA Surname लग गया।

71. त्री + गुणों + मैत्री = Trigonometry –

तीन गुणों की मैत्री ही Trigonometry. तीन गुण सत्त्व, रजस, तमस की मैत्री किस प्रकार होती है, यही Trigonometry में बताया जाता है।

72. Tension –

रावण को असली Tension थी क्योंकि उसके Ten सिर थे। यानि आत्मा एक और सिर दस। सिर दस तो मतलब दस दिमाग और सभी दिमाग अलग-अलग विचार-बुद्धि वाले। अब उसकी आत्मा किसका माने किसका न माने? कौन सही है कौन गलत है ? इसमें ही उसकी आत्मा Tension में आ जाती थी।

73. Tally = तेली –

भारत में तेली (साहूकार) लोग ही हिसाब-किताब रखते थे, तो वह तेली से ही Tally हो गया।

74. थप् + पढ़ = थप्पढ़ –
जब किसी को थप-थपाते हैं, पढ़ने के लिए, वही है "थप्पढ़"। जब किसी को थप्प करके पड़ती है, तो वह पीछे मुड़कर देखता है, तो फिर वहाँ से आवाज आती है कि, "बैठा क्यों है", "पढ़" कुछ तो पढ़ ले, आगे काम ही तो आएगा"। यही थप्पड़ है। थप्प करके पढ़े जो यानी पढ़ने के लिए वह थप्पड़ है।
75. तब + बदला = तबादला – बदला लेने के लिए, किसी का तबादला कराया जाता है।
76. Teakwood = टिकने वाली लकड़ी –
भारत में Teakwood यानि सागवान की लकड़ी ही सबसे अच्छी मानी जाती है, क्योंकि वह ज्यादा टिकने के कारण Teakwood कहलाती है।
77. तौहीन – हीन की ही तौहीन की जाती है।
78. Toe = टोह – पैर के ऊँगली से ही किसी की टोह ली जाती है, इसीलिए उसे Toe कहते हैं।
79. Tallow = तल्लो – कोई चीज तलने के लिए Tallow ही होता है।
80. तार –
तार ही रफ्तार है। पहले तार (Telegram) आता था, जो तार से आता था, वह बहुत ही रफ्तार से आता था।
81. तल + आब = तालाब – जिसके तल में से आब (पानी) निकलता है, उसे तालाब कहते हैं।
82. Toffee – बड़ी चीज तोहफा कहलाती है, छोटी चीज Toffee कहलाती है।
83. Terror + Wrist = Terrorist –
रिश्ते दो प्रकार से ही बनते हैं, एक तो Terror से यानि डर दिखाकर के किसी से जबरदस्ती रिश्ता बनाना। यानि किसी पर कब्जा कर लेना और फिर उससे रिश्ता बनाना जो, Terrorist बनाते हैं। दूसरा Wrist पर धागा बाँधकर - जैसे पंडित जी कलाई में कलावा बाँधकर रिश्ता बनाते हैं।
84. थक + आ + वट = थकावट - वटवृक्ष को देखकर थकावट आ जाती है।
85. ताज + Job = ताज्जुब -
ताज के Job (कार्य) को देखकर, सभी यही कहते हैं कि, "What A Job !!!!!" और ताज्जुब करते हैं। क्योंकि जो हमेशा, ताजा रहे, वह ताज है। जैसे कि अभी-अभी बना है। जो पुराना न लगे।
86. टोक + कान =Token -
Token न लेने वाले को उसके कान में टोक दिया जाता है कि, "जाकर Token लेकर आओ"। यहीं से Talk करना शुरु करता है, आदमी। यानि फिर दोनों में बातचीत (Talking) शुरू हो जाती है। टोकने से ही Talking शुरु होती है।
87. तट + पर = तत्पर -
नदी के तट पर खड़ा आदमी और पर (पंख) लगा आदमी, हमेशा तत्पर रहता है। इसीलिए जो तटपर रहता है, वही तत्पर रहता है।
88. तत् + काल = तत्काल -
पहले पानी के जहाज चलते थे। जब वह तट पर खड़े होते थे। तो जोर से Call करते थे कि, "और

किसी को चलना है, इतने का तत्काल टिकट है"।

89. Three Phase -

शक्ति के तीन Face होते हैं। पहला Phase ब्रह्मा का, दूसरा विष्णु का, तीसरा महेश का। तीन Face से ज्यादा नहीं होते हैं। प्रकृति तीन गुणात्मिका है - तम, राज, सत।

90. Torrent = तुरंत –

Torrent ही तुरंत है। किसी File को तुरंत Download करता है। तो Torrent से तुरंत Download हो जाती है।

91. ताबे + बीज = ताबीज -

किसी को ताबे में रखने के लिए, बीज रखे जाते हैं, ताबीज की डिब्बी में, जो गले से लटकी होती है। जब ताबीज पहना हुआ व्यक्ति, सांस छोड़ता है, तो गरम साँस ताबीज पर पड़ती है, और ताबीज के अन्दर के बीज, में से जो तत्त्व निकलता है, वह जब सांस लेते हैं, तो उसके अन्दर चला जाता है। जो एक तरह का Antivirus होता है, और व्यक्ति को किसी भी प्रकार के Viral Infection से बचाता है। बस यही काम ताबीज का है। यही काम माथे पर लगे तिलक का है, जो कि रोज लगाया जाता है। जो जड़ी-बूटी जिसे चंदन, रोली आदि का बनाया जाता है। जो व्यक्ति की दिनभर की भागदौड़ में Antivirus की तरह रक्षा करता है। काला टीका भी यही काम करता है, यही काम अंग्रेजों के द्वारा Injection से बाँह पर लगाये गए टीके का है। यानि कुल मिलाकर सभी आपकी रक्षा करते हैं।

92. Time + Pray + चर = Temperature -

समय को प्रार्थना खा जाती है। जब व्यक्ति Pray करता है, तो उसे समय का पता नहीं चलता है। भारत देश प्रार्थना वाला देश है, यहाँ पर जब मनोरंजन का कोई साधन नहीं था, तो व्यक्ति प्रार्थना करके अपना समय निकाल देता था। और प्रार्थना करने का दूसरा लाभ, यह है कि व्यक्ति का Temperature नहीं बढ़ता है। व्यक्ति का तापमान सामान्य रहता है। इसलिए Temperature बढ़ने पर, प्रार्थना करने से Temperature सामान्य हो जाता है।

93. Troll - आजकल Troll करके ही, किसी को Control किया जाता है।

94. तिल + SIM = तिलस्म - तिल और SIM दोनो ही तिलस्मी होते हैं।

95. तैंतीस कोठी -

जो कि मेरुदण्ड (Spinal Cord) में होती हैं। Spinal Cord में 33 Verberatei होती हैं। यह Verberatei ही तो फिर कोठी यानि कोटि हैं। यह Cerebrospinal Fluid से भरी होती हैं। यह Cerebrospinal Fluid (मेरुरज्जु) ही शक्ति है। जो पूरे शरीर को चलाती है। पूरे शरीर को ताकत देती है। ध्यान करने से, एक-एक कोठी भरती जाती है। 33 कोठी भरने के बाद, सात खाली जगह होती हैं, जिन्हें Space कहते हैं। वह भी Fluid से भर दी जाती हैं। बस यही चालीस जगह भरने के बाद, परमात्मा मिल जाता है। जिसके लिए प्रतिदिन तीन घंटे Meditation करना पड़ता है। तीन घंटे तक पहुंचने में ही, तीन वर्ष लग जाते हैं, तब जाकर कोई तीन घंटे, Meditation में बैठ पाता है। प्रारंभ पाँच मिनट से करना होता है। हर महिने पाँच-पाँच मिनट बढ़ाने से, एक साल में एक घंटा तक

पहुंच जाते हैं। ऐसे ही दूसरे साल पाँच-पाँच मिनट, हर महिने बढ़ाने से, दूसरे साल में दो घंटे हो जाता है। और तीसरे साल में भी यही क्रम हर महिने पाँच मिनट का बढ़ाने पर, तीसरे साल में तीन घंटे हो जाते हैं। फिर तीन साल के बाद, तीन घंटों का ही चालू रखो। तीन घंटे से ज्यादा नहीं करना है। इस तरह तीन साल के बाद, प्रतिदिन तीन घंटे Meditation करते हुए परमात्मा का आनंद लेना है। इसी मेरुदण्ड के ऊपर सात आसमान हैं। उन सात आसमानों को पार करना पड़ता है। उसके बाद फिर परमात्मा है। इसलिए इस्लाम में मेरुदण्ड की साधना करने के लिए वज्र आसन में बिठाते हैं, ताकि मेरुदण्ड से सीधी उर्जा ऊपर 33 कोठियों को पार करती हुई, सातों आसमानों को पार करत हुए परमात्मा से मिल जाए।

96. टिड्डी -

टिड्डी दल का टिड्ड (पेट) इतना बढ़ा है कि, एक समय में दस हाथियों जितना खाना खा लेता है। इसलिए इसे टिड्डा यानि बड़े पेटवाला कहते हैं।

97. तन-मन =

तन को नत कर दो। मन को नम कर दो, ईश्वर अपने आप आप में उतर आएगा। आपकी आत्मा में परमात्मा उतर आएगा। ईश्वर स्वतः ही आपके पास आ जाएगा। बस आपको तन कर नहीं। नत होकर रहना है। बस आपको मन नहीं रखना है। आपको नम होकर रहना है। क्योंकि जो तन कर रहता है, और केवल अपने मन की करता है। उसको पूरे ब्रह्मांड में कहीं ईश्वर नहीं मिलता है। इसलिए नत और नम रहो। ईश्वर स्वयं आप में से प्रकट हो जाएगा।

98. ताना + सहनेवाला = तानाशाह -

ताना सहने वाला ही तानाशाह होता है। ताने देनेवाले बहुत से हैं, उन तानों को सुनकर भी जो सह लेता है, और अपने कार्य में लगा रहता है, वही तानाशाह कहलाता है। फिर आगे तानों को सहन करनेवाला शाह ही शहनशाह होता है। सहन + शाह = शहनशाह। शहनशाह को तो बहुत कुछ सहन करना पड़ता है। शाह का अर्थ होता है राजा।

99. Top -

जो आदमी जितना ही Top पर जायेगा, उसे उतना ही ताप मेहसूस होगा। यानि वह आदमी उतना ही गरम होगा।

100. तिर + काल = त्रिकाल -

तिरनेवाला काल। ऐसा काल जिसमें तिर जायें। तिरना सबसे हलका होता है, तिरने में प्रयत्न नहीं करना पड़ता है। इसलिए कहते हैं, "यह तिर गया" तिरना किससे है ? त्रि काल से तिरना है, यानि जो तीन काल हैं, भूत, भविष्य, वर्तमान। इन तीन कालों से तिर जाना। ही त्रिकाल है। यानि जब तीन कालों से तिर जाते हैं, तो अकाल की स्थिति में आ जाते हैं, अकाल यानि जहाँ पर काल नहीं है। यह अकाल का समय संध्या कहलाता है। जहाँ पर रात विदा होती है, और सुबह होती है। जहाँ पर दोपहर विदा होती है, साँझ आती है। जहाँ पर साँझ विदा होती है, रात आती है। यह वह त्रिकाल है, जिसमें सब तिर जाते हैं। यह काल ढाई घड़ी का होता है, यानि सवा घड़ी ईधर, सवा घड़ी उधर। यही

ढाई घड़ी ही, "ढाई आखर प्रेम" के हैं। एक घड़ी में चौबीस मिनट होते हैं, इस तरह यह एक घंटा है, यह ढाई घड़ी ही की तीन समय संध्या करनी है। ढाई घड़ी तीन बार संध्या करने पर, साढ़े सात घड़ी हो जाती हैं। यानि एक दिन में साढ़े सात घड़ी संध्या करनी है। इस तरह एक वर्ष में दो हजार सात सौ सैंतीस दशमलव पाँच (2737.5) घड़ी संध्या करते हैं। इस 2737 के समय को पश्चिम में 2737 Angel Number के नाम से कहा गया है। Angel Number यानि देवताओं का अंक यानि यह समय देवत्त्व का समय है। यानि पूरे वर्ष में एक हजार पिनचानवे घंटे (1095). इस तरह प्रतिदिन साढ़े सात घड़ी त्रिकाल संध्या करने से देवताओं का सान्निध्य प्राप्त होता है, जिससे व्यक्ति में देवत्त्व आ जाता है और वह देवताओं की भाँति कांतिवान हो जाता है।

101. टकाटक = दो टके का आदमी -

सभी यहाँ दो टके के आदमी हैं। सभी के पास दो टके हैं, सभी इन्हीं दो टकों से सबको तकते हैं। इन दो टकों से जितना दिख जाए, वह सब दो टके का आदमी चाहता है। तभी तो कहते हैं कि, "टकाटक मुझे क्यों देख रहा है" ? टकाटक यानि अपलक देखना। "आज तो बहुत टकाटक दिख रहे हो !!!" यानि कोई इतना सुन्दर लगे कि, उसे हर कोई अपलक देखता ही रहे। तो दो टके सभी के पास हैं, सभी दो टके के आदमी हैं, इन दो टकों से जितना दिखाई देता है, उतना सभी चाहते हैं। आँख को ही तो टका कहते हैं, दोनों आँखों को दो टका कहते हैं। इन्हीं दो आँखों से सभी को तका करते हैं। तका को ही टका कहते हैं।

102. Tour = टुर -

टुर एक पंजाबी शब्द है - जैसे कहा जाता है कि, "वो तो टुर गया"। टुर यानि यात्रा पर जाना। टुर से ही Tour बना। Tour + रिश्त = Tourist - यात्रा पर अपने रिश्तेदारों के यहाँ पर जानेवाले को Tourist कहते हैं। यानि To + Our = Tour - हमारे लोगों के पास जाना। पहले जो व्यक्ति अपने रिश्तेदारों के यहाँ जाने के लिए जो यात्रा करता था, उसे Tourist कहते थे। लोग भी अमूमन यही कहते थे, "तू रिश्तेदारों के यहाँ हो आया"। Tour + रस्म = Tourism - रिश्तेदारों के यहाँ पर जाने की रस्म को Tourism कहते हैं। Tournament - जब एक जगह बहुत सारे रिश्तेदार इकट्ठे हो जाते थे। तो वह आपस जो भी खेल खेलते थे, उसे Tournament कहते थे। उस Tournament में केवल रिश्तेदार ही खेल सकते थे।

103. टरका = तरका = तड़का -

तर्क करनेवाला तरका कहलाता है। तर्क करनेवाले को टरका दिया जाता है। टरका देनेवाले को तड़का वाला, खाद्यान्न खिला दिया जाता है।

104. तड़का -

रात को भात बच गया। सुबह होने पर वही भात तड़का लगाकर नाश्ते में दे दिया। सब ने भात खाया। भात में जब तड़का लगता है तो, तड़-तड़ करता है, इसलिए इसे तड़का बोलते हैं, और फिर तड़के-तड़के खाया जाता है, यानि सुबह-सुबह खाया जाता है। इसीलिए रात की बची हुई खाने की वस्तुओं को जब सुबह खिलाना है, तो मसाले डाल कर उनको खाने लायक बनाया जाता है, क्योंकि रात भर

रखी खाने की वस्तुएँ अपना प्राकृतिक स्वाद खो देती हैं, स्वाद बनाने के लिए उसमें मसाले डाले जाते हैं और मसालों के भुनने से तड़-तड़ की आवाज आती है। इसलिए उसे तड़का कहते हैं। तड़-तड़ की आवाज से सुबह को तड़के कहते हैं।

105. Till + Luck = तिलक -

Luck के लिए तिलक लगाते हैं। Best Wishes देने के लिए, माथे पर तिलक लगाते हैं, वह तिलक ही उसका Luck सँवारता है, उसको भाग्यशाली बनाता है। Luck को उल्टा लिखें तो कल होता है। Till को पंजाबी में टिल कहते हैं। टिल का अर्थ होता है जोर। व्यक्ति भी एक प्रकार की मशीन ही है, जिस प्रकार से मशीन को Start करने के लिए एक Switch होता है, तो उसी प्रकार मनुष्य की मशीन को Start करने के लिए एक Switch होता है, जो व्यक्ति के माथे के मध्य में होता है। और उस Switch का आकार तिल के जितना होता है। इसलिए माथे के मध्य में तिलक लगाकर, उस स्थान पर टिल यानि जोर से दबाया जाता है। जिससे व्यक्ति की मशीन Start हो जाए। तिलक लगाने का एक प्रतीक है, कि यह व्यक्ति होश में है। यानि उस व्यक्ति की शरीर रूपी कल चल रही है। इसलिए वहाँ पर लाल टिका लगाया जाता है। इसलिए किसी भी मशीन का Starter लाल रंग का होता है। और जो मशीन चल रही है, वहाँ पर एक लाल रंग का बल्ब जलता रहता है, जो बताता है कि मशीन On है। इसलिए व्यक्ति की शरीर रूपी मशीन को Start करने के लिए माथे पर लाल रंग का तिलक लगाया जाता है।

106. तिलक -

नास्तिक से नास्तिक व्यक्ति भी Best of Luck कहता है। वह परमात्मा को नहीं मानता, किन्तु अज्ञात भाग्य का भय, उसे Best of Luck कहने के लिए मजबूर करता है। जबकि आस्तिक व्यक्ति Luck के लिए, तिलक लगाता है, तो उसका मजाक उड़ाया जाता है। अब Best of Luck तो केवल लक यानि कल तक के लिए है और तिलक तो Till Luck के लिए है। यानि Till यानि तिल, तिल का उपयोग अंतिम क्रिया में किया जाता है। जिसे तिलांजलि देना कहते हैं। यानि जो तिलक किसी के माथे पर लगाया जाता है, वह तिल उस व्यक्ति की अंतिम क्रिया तक, उसको भाग्यशाली बनाए। इसलिए Luck के लिए तिल का तिलक माथे पर लगाया जाता है। फिर वह तिलक ही उसका Luck सँवारता है। उसको भाग्यशाली बनाता है।

107. तटस्थ -

Meditation ऐसा है, जैसे तटस्थ होना यानि नदी के तट पर बैठ जाना। इसलिए नर्मदा के तट पर, बैठे-बैठे नर्मदा के दर्शन करते रहो तो, Meditation अपने आप हो जाता है। महासागर के तट पर बैठ जाना और महासागर को देखना और Meditation अपने आप हो जाता है। किसी भी नदी, तालाब के किनारे पर बैठिए। Meditation अपने आप हो जाता है। इसलिए तटस्थ का इतना महत्त्व है। तटस्थ यानि Meditation. Meditation यानि परमात्मा से जुड़ाव। जुड़ाव यानि योग। योग यानि Sum. Sum यानि समाधि। Sum + अधि = समाधि यानि "धि" का नहीं होना। "धि" यानि बुद्धि, विचार, समझ, कल्पना, भाव आदि का नहीं होना। केवल से केवल मात्र, परमात्मा का

होना और, परमात्मा के आनंद का होना।

108. तिर = रति –

"तिर" का उल्टा होता है "रति"। तिर तभी सकते हैं, जब रति नहीं करते हैं। इसलिए आध्यात्मिकता में ब्रह्मचर्य का इतना अधिक महत्त्व है। रति को छोड़ देंगे, तो तिर जाएंगे। रति में रत रहेंगे तो तर नहीं पायेंगे।

109. तय + आग = त्याग –

जब तय कर लिया जाता है कि, अब आग में उतरना है, यही त्याग होता है। सती ने तय किया और सती यज्ञ की भभकती अग्नि में उतर गयी। होलिका के तय किया और होलिका भभकती अग्नि में बैठ गई। सीता ने तय किया और सीता अग्नि परीक्षा में बैठ गई। पद्मावती ने तय किया और भभकती जौहर की आग में उतर गई। झाँसी की रानी ने तय किया और साधु गंगादास की कुटिया की आग में उतर गई। पुरुष त्याग की बात तो करता है, किन्तु आग में उतरना तय नहीं कर पाता है। और जब पुरुष के आग में उतरने की बारी आती है, तो पुरुष भाग खड़ा होता है। पुरुष शरीर का मोह, कभी छोड़ नहीं सकता है। तभी तो पुरुष ने शरीर को सुदृढ़ रखने के लिए योग को चुना। योग और त्याग का दूर दूर तक कोई नाता नहीं है। योग तो शरीर के साथ पुरुष को और अधिक आशक्त कर देता है, क्योंकि पुरुष ने योग करके शरीर को बचाया है एवं आत्मा की तो उसे स्मृति ही नहीं रह गई है। जब भी त्याग की बात आएगी। पुरुष त्याग की बड़ी-बड़ी बात करेगा। परन्तु पुरुष तय नहीं कर पाया कि उसे आग में उतरना है, या नहीं।

110. तर्क = Truck -

तर्क और Truck, एक ही जैसे हैं यानी बहुत बोझा लेकर जाते हैं। किंतु तर्क करनेवालों और Truck चलानेवालों से सभी लोग कतराते हैं। तर्क वाले का ज्ञान और Truck में लदा समान सभी के काम आता है। तर्क करनेवाला अकेले ही न जाने कहाँ कहाँ पर भटक कर ज्ञान लाता है। Truck चलानेवाला भी, अकेले ही न जाने कितने रास्तों को नापते हुए समान पहुँचाता है।

111. Tariff -

Tariff ही किसी की तारीफ बताते हैं, कि किसकी कितनी तारीफ करनी है। Tariff यानि तारीफ। पहले पूछा जाता था, "आपकी तारीफ क्या है ?" आज पूछा जाता है, "आप क्या Tariff लेंगे ?" यानी तारीफ को नापने का नया तरीका ही Tariff है।

112. तरी + का = तरीका -

एक तरी होती है, एक कड़ी होती है। तरी में, तरी-तरी ज्यादा होती है। तरी बनाने का, एक तरीका होता है। हमेशा लोग यही पूँछते हैं, इसको बनाने का, तरीका क्या है ? आदमी तरी-तरी माँगता है। तरी हमेशा तरकारी की, बनाई जाती है। तर + कारी = तरकारी। कड़ी तो फिर बड़ी, कड़ी ही होती है। एक कड़ी, हजारों तरकारियों पर, भारी होती है। तरकारी और कड़ी में, फर्क सिर्फ पानी का है, तरकारी पानी से, तर होती है, मसालों से भरी होती है। कड़ी केवल मट्ठा से, बनाई जाती है। कड़ी में पकौड़ी हमेशा, पाई जाती है। एक भाजी होती है, जो सूखी बनाई जाती है।

113. Talk + Cut = ताकत -

किसी की Talk को, Cut कर देना ही, ताकत कहलाता है। यानी, किसी की बात को, काट देना ही, ताकत कहलाता है। "इसकी इतनी हिम्मत कि, इसने मेरी बात काट दी।" अक्सर लोगों को ऐसा, कहते हुए सुना जाता है।

114. ताँत =Taunt -

Taunt करने वाले लोग ही, तांता लगाते हैं। Taunt = तांता। ताँत से छोड़ा गया, ताना रूपी तीर, ही Taunt कहलाता है। ताँत जानवर की आँत से बनाई गई रस्सी। जिससे धनुष की डोर बनाई जाती है। ताना कसने वाले लोग, व्यक्ति को ताना देकर, इतना तान देते हैं कि, व्यक्ति फिर, ताना देनेवाले लोगों से, नाता तोड़ लेते हैं। ताना = नाता। ताने हमेशा नाते तोड़ देते हैं। ताने = नाते। ताँत से ही रुई को धुननेवाली, धुनकी की डोर भी बनती है। इसी धुनकी से जब रूई धुनी जाती है, तब उससे धुन निकलती है।

115. तिनका + जोड़ी = तिजोरी -

दूब जब सूख जाती है, तब तिनका बन जाती है। सूखे हुए तिनकों को बँटकर, रस्सी बनाई जाती है। डूबते हुए के तरफ, यही रस्सी फेंकी जाती है, तब यह कहावत कही जाती है, "डूबते को तिनके का सहारा।" सोने के छोटे-छोटे, तिनकों को जोड़कर, तिजोरी भरी जाती है। यही तिजोरी के तिनके, आपातकाल में काम आ जाते हैं, डूबते हुए शख्स को, बचा लेते हैं। पहले जमाने में लोग, सोने के छोटे-छोटे, तिनके बनाकर रख लेते थे। इन जोड़कर रखे हुए, तिनकों को खर्च नहीं करते थे। यही जोड़कर रखे तिनके, बुरे वक्त में काम आते हैं। इसे ही, तिनके का सहारा कहते हैं।

116. तट + पूंजिया = टटपूंजिया -

तट पर पूंजी रखनेवाला टटपूंजिया कहलाता है। पहले जमाने में नदी एवं समुद्र से नाव के द्वारा व्यापार होते थे। व्यापारी लोग अपना कुछ धन नदी एवं समुद्र के किनारे पर, रहनेवाले लोगों के पास रख देते थे। इसीलिए इन्हें Banker कहते थे। नदी एवं समुद्र के किनारे को Bank कहते हैं। कभी-कभी यह किनारे डूब जाया करते थे, जिससे कहा जाता था कि, वह Bank डूब गया। जो नदी या समुद्र के तट पर पूंजी लेकर रखते थे, वह पूंजी को टाट के बने थैलों में ऱखते थे। इसीलिए इसे टाट पूंजी से टटपूंजिया कहते हैं। क्योंकि पहले पूंजी सोने-चांदी के सिक्कों में होती थी।

117. त्र + दे = Trade –

Trade करनेवाला व्यक्ति, Tradition को Follow करता है, और Traditional होता है। व्यापार करनेवाला व्यक्ति, एक अन्य व्यक्ति से वस्तु को कम दाम में खरीदता है, और दूसरे व्यक्ति को वस्तु अधिक दाम में बेचता है। इसे ही Trade कहते हैं। त्र + दे = Trade. तीसरे को देना। वस्तु तीसरे व्यक्ति को दी जाती है। यही Tradition चला आ रहा है, और यही Traditional भी है।

118. तोल + Rate = Tolerate -

आप उतना ही तुलवा सकते हो, जितने का आप Rate चुका सकते हैं। इसीलिए तुलवाने से पहले Rate कर लेना चाहिए। तोल + Rate = Tolerate. गाँव के लोग पहले Rate करते हैं, फिर वस्तु

को तुलवा लेते हैं। जिसे मोल-भाव करना कहते हैं। शहर के लोग पहले Rate देखते हैं, फिर वस्तु को बिना तोले, वस्तु का Packet खरीद लेते हैं। शहर के लोगों को मोल-भाव करने का वक्त ही नहीं है। जो Packet पर लिखा होता है, वही लिखा हुआ Rate दे देते हैं, और वस्तु को खरीद लेते हैं।

119. तब + Deal = तब्दील -

जब आपसे कोई यह कहे कि, "जब आप यह करोगे, तब मैं आपसे यह Deal करूँगा। तब यह समझो, आपको तब्दील कर रहा है।

120. तब + आह = तबाह - तब आह ही तबाह कर देती है।

121. ताक-झांक करना -

व्यक्ति उस वस्तु एवं विषय को, ताक पर रख देता है, जिस वस्तु एवं विषय पर, कार्य नहीं करना चाहता है। किन्तु अन्य सभी व्यक्ति, उस ताक पर रखी, वस्तु को ही झांकना चाहते हैं, और उस ताक पर रखी, वस्तु के विषय में बात करके, व्यक्ति के मन के अन्दर, झांकने की कोशिश करते हैं। इसी को ताक झांक करना कहते हैं। ऐसा व्यक्ति हमेशा अपनी Talk को, Joke से प्रारंभ करेगा। Talk = ताक। Joke = झांक। Joke को सुनाते सुनाते, वह व्यक्ति धीरे धीरे अपनी आंखों से, ताक पर रखी वस्तुओं को झांक लेगा। Joke को सुनाते सुनाते, वह व्यक्ति धीरे धीरे अपनी आंखों से, आपके मन के ताक पर रखे, विषयों को भी झांक लेगा। इस तरह से व्यक्ति, ताक झांक कर लेता है। जब व्यक्ति यह कहे, "अरे ! एक Joke तो सुनो, अभी नया नया आया है"। तब समझो वह व्यक्ति आपके भीतर झांकने की कोशिश में लगा है। इसलिए व्यक्ति गंभीर रहते हैं, ताकि कोई उनके भीतर झांक न सके। और गंभीर व्यक्तियों का सभी, सम्मान करते हैं, क्योंकि कोई उनकी थाह नहीं जानता है। क्योंकि Joke करनेवाला तो, अपने चेहरे के हाव भाव को, रंगों की पुताई कर छिपा लेता है, और दूसरों के मनोभावों को, जान लेता है। इसलिए पहले के राजा लोग, अपने साथ एक मसखरा रखते थे, जो मसखरी करके राज्य की प्रजा के, हाव भाव को जान लेता था। संसार में सभी सत्ताधारी व्यक्ति, इस प्रकार के Joke करने वालों को, प्रोत्साहन देते हैं, जो लोगों को दु:खी से भी दु:खी, परिस्थितियों में प्रसन्न रखें। और जनता के भीतर के हाव भाव की जानकारी रखें, तथा उन हाव भाव को, उभरने ही न दें। इस तरह से ताक झांक का, यह कार्य चलता रहता है। प्रजा विदूषक के द्वारा Talk किए गए, Joke पर हंसती रहती है, इधर राजा अपना राज्य शांति से, चलाता रहता है।

122. त्रण + सफ़र = Transfer -

तीन चीज़ों से जिसको सफ़र करना पड़ता है, उसे Transfer कहते हैं।

123. ताल + Look = ताल्लुक –

व्यक्ति उसी से ताल्लुक रखता है, जिससे ताल मिलता है और जिसका Look अच्छा होता है। ताल + Look = ताल्लुक। ताल = Rhythm. जिसे सब देखना पसंद करते हैं, "Hey ! Look at him, Or Hey ! Look at her" बस इन्हीं दो प्रकार के लोगों से, लोग ताल्लुक रखते हैं।

124. टेढ़ा-मेढ़ा दौड़ना -

कोई टेढ़ा दौड़ता है, कौई मेढ़ा दौड़ता है। इस तरह "टेढ़ा-मेढ़ा दौड़ना" मुहावरा है। टेढ़ा तो पता है,

परंतु जो मेंढ़े की तरह दौड़े, तो वह मेढ़ा है। मेंढ़ा यानी भेड़ा। भेड़ का पुलिंग भेड़ा। भेड़ों की तरह नीचे मुंडी डालकर दौड़ना। न इधर देखना न उधर देखना, न ऊपर देखना, बस नीचे मुंडी डालकर चलते जाना। इसी तरह व्यक्ति, जब खेत की मेड़ पर चलता है, तब भी भेड़ की तरह चलता है। जिसको भेड़ की तरह, नीचे मुंडी डालकर सीधा चलाना होता है, उसको खेत की मेड़ पर चलाया जाता है। इसीलिए गांव का किसान सीधा-सादा होता है। जमींदार कभी मेड़ पर नहीं चलता है, इसलिए तो जमींदार टेढ़ा होता है।

125. Tea + Serve = Teaser -

जब आप किसी को Tea Serve करते हैं, तब उसे Teaser कहते हैं। Tea + Serve = Teaser. Tea के Serve करने से दोनों एक दूसरे के स्वभाव से परिचित हो जाते हैं।

126. तन + High = तन्हाई -

High में तन, तन्हाई में ही होता है। तन + High = तन्हाई। जब व्यक्ति High Position पर होता है, तब व्यक्ति तन्हा ही होता है। व्यक्ति का iq Level, इतना High होता है कि, उस व्यक्ति को तन्हा ही रहना पड़ता है, क्योंकि कोई उस व्यक्ति के, iq को Match नहीं कर पाता है।

127. तोहफ़ा + एक = तौफ़ीक -

इतनी भी कुव्वत नहीं है कि, एक तोहफ़ा ही ले आते। एक तोहफ़े से ही तो, कोई अपनी तौफ़ीक दर्शाता है। तोहफ़ा + एक = तौफ़ीक। जब कोई व्यक्ति किसी के यहां जाता है, तब व्यक्ति अपनी हैसियत के हिसाब से नहीं, बल्कि सामने वाले की हैसियत के हिसाब से, एक तोहफ़ा ले जाता है। यह दिखाने के लिए कि, उसकी भी हैसियत किसी से कम नहीं है। इसलिए व्यक्ति सामने वाले की, हैसियत को देखकर, उसको एक Toffee पकड़ा देता है।

128. Two + Ice = Twice -

ज़वाब देने से पहले, दो बार ठण्डे दिमाग से सोचो। Two + Ice = Twice. यानी पत्र का उत्तर, ink से लिखने से पहले दो बार ठण्डे दिमाग से सोचो फिर लिखो। Then + ink = Think. इसलिए अंग्रेज लोग अपने गिलास में ice के दो Cubes डालकर पीते हैं और इससे उनका दिमाग ठण्डा रहता है।

129. ताबे + बीज = ताबीज -

किसी को ताबे में लेने के लिए, कुछ बीज दिए जाते हैं। इसे ही ताबीज कहते हैं।

130. तय + याज = ताज -

ताज हमेशा ताज़ा ही रहता है। तय कर लेते हैं जो याग करना, उसे "त्यागी" कहते हैं। तय + याग = त्याग। कहीं कहीं "यज्ञ" को "याग" कहते हैं। जैसे कि "प्रयाग" यानी जहां पर, प्रतिदिन याग होता है। प्रतिदिन + याग = प्रयाग। कहीं कहीं "याग" को "याज़" कहते हैं। यानी "यज्ञ" को "यज्ञ्य" ऐसा भी कहते हैं। यानी जो "यज्ञ" को करना "तय" करते हैं, और यज्ञ को करने के लिए, "आगी" प्रदान करते हैं, उन्हें "त्यागी" कहते हैं। "ताज़" वह स्थान है, जहां पर देवराज इन्द्र के द्वारा, यज्ञ किया जाता था। देवराज इन्द्र को सफेद रंग प्रिय है, इसलिए ताज़ का रंग सफेद है, और ताज़ के आगे बना,

यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ मण्डप भी सफेद है। त्यागी लोग हमेशा सफेद कपड़ा पहनते हैं। ताज़ एवं यज्ञकुण्ड तथा यज्ञ मण्डप, इन तीनों ही स्थानों का, निर्माण संगमरमर से हुआ है। इनके अलावा बाकी स्थानों का निर्माण, अन्य पत्थरों से हुआ है। "त्याज़" नामक शब्द से, "ताज़" का नाम पड़ा है। तय + आज = त्याज़। यह "त्याज़" नामक शब्द भी, "त्याग" नामक शब्द से बना है। यानी जब यह तय करते हैं कि, याग कब करना है, तो उसे त्याग कहते हैं। तय + याग = त्याग। जो लोग तय करते थे याग को, उन्हें "त्यागी" कहते हैं। देवराज इन्द्र ने इन त्यागियों को, ताज़ के आसपास, बहुत सी भूमि दान में दी थी। देवराज इन्द्र के द्वारा बनाया गया, त्याज़ ही आज भी ताज नाम से, जाना जाता है। ताज़ के आगे जो, सफेद संगमरमर का कुण्ड है, जिसे आजकल फव्वारा कहते हैं, अगर उस कुण्ड के नीचे, खोदा जाए तो यज्ञ की भस्म, अवश्य ही प्राप्त होगी। ताज़ के बंद कमरों में, यज्ञ में उपयोग आने वाली सामग्री, एवं यज्ञ पात्र आदि, अभी भी रखे हुए हैं। तथा इन्हीं कमरों में, त्यागी लोग भी रहा करते थे और यज्ञ किया करते थे। तथा देवराज इन्द्र जब स्वर्ग जाते थे, तब भी त्यागी लोग ही, ताज़ की संपूर्ण व्यवस्था संभालते थे। तथा यज्ञ करते रहते थे। यानी इसका नाम त्याज़ है, यही त्याज़ आगे चलकर त्याग बना, त्यागी इसके संरक्षक बने। कालांतर में यह ताज़, ऐसे ही ताज़ा खड़ा रहा और त्यागी लोग अपने अपने भूमि में, खेती करने में लग गए। आज भी लोग पूछते हैं, "त्यागी जी ! बताईए हवन कब करना है" ? तथा "अरे ! त्यागी जी के यहां से, आगी ले आना"। ताज़ के ठीक सामने यमुना पार, एक अष्ट कोणीय यज्ञ वेदिका है। जिसमें तांत्रिक यज्ञ किया जाता था। इस यज्ञ वेदिका के नीचे भी, यज्ञ की भस्म मिल जाएगी।

131. Taste + Tea = Tasty -

जब Tea को बनाया जाता है, तब यह कहकर ही, पेश किया जाता है कि, "इनके हाथ की बनाई चाय, बहुत Tasty होती है, ज़रा एक बार Taste तो कीजिए"। Taste + Tea = Tasty. चाय की कीमत, चाय के Taste के अनुसार, तय की जाती है। इसीलिए सबसे पहली मुलाकात में, शाम को अपने घर, चाय पर बुलाते हैं। लोगों में अपनी हैसियत को, बड़ा दिखाने के लिए, तब Tasty से भी ज्यादा Tasty चाय, पीने को पेश करते हैं। यह दिखाने के लिए कि, "देखो हम इतनी Tasty चाय पीते हैं"। यानी भारत में लोग अपनी हैसियत, चाय से बतलाते हैं, इसलिए सबसे पहले Taste Tea का करवाते हैं। यह कहते हुए कि, "अभी अभी बागानों से Latest, ताज़ा आई हुई पत्तियां हैं"। भारत के लोग हैसियत और औकात पर चलते हैं, अपनी हैसियत दिखाते हैं, और दूसरों को औकात बतलाते हैं, इसके लिए चाय का ही इस्तेमाल करते हैं, इसलिए भारत में चाय इतनी ज्यादा पी जाती है, और इतनी सारी किस्म की पी जाती है। चाय पीने के स्थानों से लोगों की हैसियत, और औकात पता चल जाती है। इसलिए भारत में Tea को Tasty बनाया जाता है।

132. ताड़ी + ईख = तारीख -

ताड़ से ताड़ी बनती है, ईख से मदिरा बनती है। दोनों को मिलाकर "तारीख" बनती है। ताड़ी + ईख = तारीख। यही समय है जब ताड़ से, ताड़ी निकाली जाती है, और ईख से मदिरा बनाई जाती है।

133. तल्ख = Talk - "तल्ख" तरह से कहे तो "Talk" कहते हैं। तल्ख = Talk.

134. तीर्थ + स्थल = Tea Stall –

जापान में ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर बड़े-बड़े मन्दिर हैं, तीर्थ हैं। इन मन्दिरों एवं तीर्थों पर रहनेवाले गुरु सबसे अच्छी चाय बनाते हैं। जापान में कोई भी गुरु अपने शिष्य को अच्छी से अच्छी चाय बनाना सिखाता है, और चाय को किसी के समक्ष, किस तरह से पेश करना है, यह सिखाता है। इन तीर्थ स्थल में बननेवाली चाय के कारण इनका नाम "तीर्थ स्थल" से अपभ्रंश होते-होते "Tea Stall" हो गया। तो अब जहाँ कहीं पर भी चाय की दुकान लगती है, तो उसे "Tea Stall" कहते हैं। यहाँ T + Earth + स्थल = तीर्थ स्थल > Tea Stall यह हो गया है। यहाँ पर तीर्थ को Tea एवं स्थल को Stall बना दिया गया। स्थल = Stall.

135. तकना + Ribbon = तकरीबन -

तकना Ribbon को ही "तकरीबन" कहा जाता है। तकना + Ribbon = तकरीबन। जब व्यक्ति कहीं पर उद्घाटन करने जाता है, तब वह व्यक्ति Ribbon को तब तक तकता है, जब तक Ribbon को काट नहीं लेता है। और अगर Ribbon को काट ना सका, तब वह व्यक्ति कहता है कि, "मैं तो तकरीबन पहुँच ही गया था, किन्तु Ribbon ना काट सका"। Ribbon तक पहुँच कर, Ribbon को काटने तक का समय ही, तकरीबन कहलाता है।

136. ताड़ + नहीं = ताड़ ना -

ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी, इनकी शक्ल ताड़ी नहीं जाती है। ढोल गंवार सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी॥ ताड़ + नहीं = ताड़ ना। सकल = शक्ल। यानी इन पांचों की शक्ल नहीं, देखी जाती है। प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्हीं। मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्हीं॥ क्योंकि प्रभु ने भला किया, जो मुझे यह शिक्षा दी की, किसी को ताड़ ना नहीं है और मैंने उनके द्वारा दी गई, शिक्षा का मान रखा और, अपनी मर्यादा में रहा तथा, ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी को ताड़ा नहीं है कि, "यह ढोल कहां बज रहा है ? यह गंवार कौन है ? यह शूद्र क्या कर रहा है ? यह पशु किसका है ? यह नारी किसकी है" ? क्योंकि ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी के काम को देखा जाता, शक्ल को नहीं देखा जाता है। इसलिए लोग कहते हैं कि, "सबको काम प्यारा होता है, चाम प्यारा नहीं होता है"। ढोल का चमड़ा नहीं देखा जाता है, इसलिए लोग कहते हैं कि, "काम देखो चाम नहीं"। गंवार को ताड़ने पर, गंवार उल्टा ही वार कर देता है कि, "यह मुझे क्यों ताड़ रहा है" ? शूद्र को ताड़ा नहीं जाता है, शूद्र का काम देखा जाता है, इसलिए शूद्र ताड़ने पर कहता है कि, "हमाई सकल ना ताड़ो, हमाओ काम देखो, अगर हमाए काम में, कछु कमी रही हो तो बताओ"। और पशु को ताड़ कर देखने पर, पशु उल्टा मारने दौड़ता है, इसलिए पशु को ताड़ा नहीं जाता है। नारी चाहे अपनी हो या दूसरे की, किसी की भी नारी को,ताड़ कर नहीं देखा जाता है। नारी को ताड़कर देखना समाज एवं, संस्कृति में अच्छा नहीं समझा जाता है। इसलिए ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी को ताड़ा नहीं जाता है, बल्कि अधिक कार्य देकर, अधिकारी बनाया जाता है। अधिक + कार्य = अधिकारी। इनको अधिक कार्य करने का, अधिकार होता है। इसलिए बड़े बड़े लोग, अपने अधिनस्थों की, शक्ल को नहीं देखते हैं, उनके कार्य को देखते हैं। कभी भी अपने अधिनस्थों से, आंख से आंख मिलाकर, बात नहीं करते हैं, अपनी

आंखों पर, काला चश्मा लगा लेते हैं। कई बड़े बड़े लोगों को तो, अपने यहां कार्य करने वालों की, शक्ल ही याद नहीं रहती है, क्योंकि वह उनको ताड़ते नहीं हैं। इसलिए पहले नारियां घूंघट में, रहती थीं ताकि कोई उन्हें ताड़े ना। क्योंकि किसी को लगातार, ताड़कर देखने से, उसको नज़र भी लग जाती। इसलिए दुधारू पशु को लोगों की नज़र से बचाने के लिए, पशु के गले में काले बालों का बना हुआ नज़रबंद पहनाया जाता है, तभी तो लोग कहते हैं कि, "तुम्हारी तो बड़ी ताड़ने वाली नज़र है"। क्योंकि हम तारों को ताड़ते हैं, इसलिए उसे तारा कहते हैं, जो कि ताड़ा का ही अपभ्रंश है। ताड़ा = तारा। हम लगातार आसमान में, तारों को टकटकी लगाए ताड़ते रहते हैं। ताड़ने वाली का नाम ताड़का है। ताड़ + का = ताड़का। जो ताड़ पर चढ़कर ताड़े कि, "कहां क्या हो रहा है" ?, वह है "ताड़का"। सुन्दर बाहु वाले का नाम सुबाहु है। सुन्दर + बाहु = सुबाहु। रीछ को मारनेवाले का नाम मारीच है। मार + रीछ = मारीच। इसलिए सभी अपने घर के आंगन में, ताड़ का पेड़ लगाते हैं, ताकि ताड़ के पेड़ पर चढ़कर, यहां वहां ताड़ सकें। क्योंकि ताड़ के पेड़ पर, चढ़कर ताड़ा जाता है। क्योंकि ताड़ कर व्यक्ति, अनुमान लगाता है। इसलिए व्यक्ति किसी अंजान को, ऊपर से नीचे तक ताड़ता है, और तब पूछता है कि, "तुम फलाने तो नहीं हो" ! और ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी का अनुमान नहीं लगाया जाता है, इसलिए इन सबको ताड़ ना नहीं है।

137. तल + लाश = तलाश -

लाश को हमेशा दो जगह, तलाश किया जाता है। पहले तल में लाश को, तलाश किया जाता है। तल + लाश = तलाश। क्योंकि लाश को हमेशा, मकान के तल में, गाड़कर दबा दिया जाता है। दूसरे लाश को तेल में, तल दिया जाता है। तेल + लाश = तलाश।

138. तत्त्व + मसीहा = तत्त्वमसि -

तत्त्व ही मसीहा है। तत्त्व + मसीहा = तत्त्वमसि। तत्त्व के बारे में मसि से, लिखा जाता है। इस वजह से तत्त्व ही, मसीहा कहलाता है। इसलिए लोग पूछते हैं कि, "बताओ उस परमात्मा के, बारे में कहां लिखा है"।

139. तल्ख = Talk -

"तल्ख" तरह से कहे तो "Talk" कहते हैं। जैसे कि, "यह बहुत तल्ख बात करते हैं"।

140. Take + Leaf = तकलीफ़ –

वैद्य ने एक बीमार आदमी को, Leaf देते हुए कहा कि, "Take this leaf". उस आदमी ने वह Leaf ले ली। अब वैद्य प्रतिदिन आता और उस बीमार के घर सामने स्थित पेड़ से Leaf को तोड़कर, उस बीमार व्यक्ति को खिला जाता था। उस पेड़ की Leaf को खाने से, व्यक्ति को तकलीफ नहीं होती थी। लेटा-लेटा वह बीमार व्यक्ति, उस पेड़ की Leaf को तकता रहता था। तक + Leaf = तकलीफ। धीरे-धीरे उस पेड़ की Leaf कम होने लगी। तब उस बीमार की शरीर की बीमारी तो ठीक हो गई, किन्तु उसके मन में एक बीमारी हो गई कि, "जब इस पेड़ की Leaf खत्म हो जायेंगी, तब क्या होगा" ? यह चिंता करते हुए, और उस पेड़ की Leaf को तकते हुए, उस बीमार के दिन बीतने लगे और एक दिन उस पेड़ की आखिरी Leaf भी खत्म हो गई। "Take this leaf" से शब्द बना है,

"तकलीफ़"। Take + Leaf = तकलीफ़। पहले जमाने में तकलीफ़ होने पर, एक Leaf का रस पीने को दिया जाता था। या एक Leaf खाने को दी जाती थी। या एक Leaf घाव पर बांध दी जाती थी। यह Leaf ही तकलीफ़ के समय, काम आती थी। तो आदमी को जब भी तकलीफ़ होती थी, वह Leaf को तकता रहता था। तकता + Leaf = तकलीफ़।

141. तर + अंग = तरंग –

तर बहता है जब अंग में तब तरंग उठती आती है। तर = पानी। व्यक्ति के शरीर में जब पानी आता है, तब व्यक्ति के शरीर में विद्युत की तरंग उठती है। इसे ही तरंग कहते हैं। तर + अंग = तरंग।

142. ताकते + King = Talking -

जिसको लोग ताकते हैं, उसी के बारे में लोग, Talking करते हैं। ताकते + King = Talking. King को लोग ताकते हैं, इसलिए King के बारे में, लोग Talking करते हैं। Talk + King = Talking. क्योंकि King में ताकत होती है। तो King की ताकत के बारे में लोग Talking करते हैं। ताकत + King = Talking. "King ने क्या पहना है, King कैसे चल रहा है, King के आसपास कितने लोग हैं, King कितनी सेना के साथ चल रहा है, King का रथ कैसा है, King के घोड़े कैसे हैं, King हाथी पर बैठा"। बस इसी तरह की बातें, King को ताकते हुए, आपस में करते हैं। जिसे "Talking" कहा जाता है। इसलिए प्रत्येक King यही चाहता है कि, "लोग मुझे ताकें और मेरे बारे में Talking करें"। इसलिए प्रत्येक King अपनी, ताकत का प्रदर्शन किसी ना किसी प्रकार से, हर वक्त करता रहता है। जो लोगों में Talking का, Subject बना रहता है।

143. ताड़ + Kick = तार्किक -

किसी को ताड़कर ही Kick मारते हैं। ताड़ + Kick = तार्किक। Football को पहले ताड़ा जाता है, तब Football को Kick मारी जाती है।

144. त्र + अटक = त्राटक -

त्र में अटक जाना ही त्राटक है। त्र + अटक = त्राटक। त्र यानी तीन में अटक जाना ही त्राटक है। नाभि से उठनेवाला नाद, जब सुषुम्ना से होते हुए, आज्ञा चक्र पर जाकर टक की ध्वनि करता है, और आज्ञा चक्र पर जाकर अटक जाता है, इसे ही त्राटक कहते हैं। क्योंकि नाभि से उठनेवाला नाद, हमेशा कंठ के माध्यम से, मुँह के द्वारा बाहर आ जाता है। अतः व्यक्ति का मन जब ॐ में लग जाता है, और व्यक्ति का मन, आज्ञा चक्र में जाकर अटक जाता है, तब व्यक्ति में मौन अपने आप, घटित हो जाता है। इस साधना को करने के लिए, व्यक्ति को अपने शरीर में स्थित, गरम एवं ठंडी ऊर्जा को मिलाकर, घर्षित करना होता है। जिससे गुनगुना सा अहसास होता है, और व्यक्ति के शरीर से स्वेद निकलता है। तब यह गुनगुनी ऊर्जा ऊपर उठकर, आज्ञा चक्र पर टक की ध्वनि करती है। तब इसी गुनगुनी ऊर्जा में व्यक्ति को, आता है ज्ञान। जिसे आज्ञा कहते हैं। ज्ञान का आना ही आज्ञा होती है। तब व्यक्ति का आज्ञा चक्र व्यक्ति को, आज्ञा देता है। और व्यक्ति बाहर की आज्ञा लेना, बंद कर देता है। यहाँ पर व्यक्ति त्र में अटक जाता है। त्र यानी गरम, ठंडी एवं गुनगुना। त्र में अटकने पर ही व्यक्ति, तिर जाता है, इसे ही तिर काल यानी त्रिकाल कहते हैं। जिस प्रकार से प्रातःकाल सूर्य की गर्मी आती है, और रात्रि

की ठंडी जाती है, तब गुनगुनेपन का अहसास होता है, उसे तिर काल कहते हैं। यही स्थिति सायंकाल भी होती है, सायंकाल सूर्य की गर्मी जाती और, रात्रि की ठंडी आती है, तो बीच में गुनगुनापन आता है, इसे ही तिर काल कहते हैं। इस प्रकार से इस तिर काल को त्रिकाल भी कहते हैं, क्योंकि यहाँ पर तीन चीजें होती हैं। इसी तरह से जब साधक के, सूर्य नासिका एवं चंद्र नासिका की श्वास की डोर से, घर्षण करते हुए, सूर्य नेत्र और चंद्र नेत्र को घर्षित करते हैं, तब सूर्य नेत्र और चंद्र नेत्र के घर्षण से, जो तृतीय नेत्र खुलता है, वह तृतीय नेत्र ही आज्ञा चक्र होता है। इसी तृतीय नेत्र पर आकर, सूर्य नेत्र और चंद्र नेत्र एक दूसरे के ऊपर चढ़कर, एक हो जाते हैं, और अटक जाते हैं। साधक के दोनों नेत्र ऊपर, आज्ञा चक्र की तरफ अपने आप खिंच जाते हैं, और दोनों नेत्र अधखुली अवस्था को प्राप्त होते हैं। इसे ही त्राटक कहा गया है। गरम सूर्य नेत्र यमुना नदी का प्रतीक है, ठंडा चंद्र नेत्र गंगा नदी का प्रतीक है, गुनगुना तृतीय नेत्र सरस्वती नदी का प्रतीक है। इसी तृतीय नेत्र के सक्रिय हो जाने पर ही, देवी सरस्वती की कृपा प्राप्त होती है, और व्यक्ति की याद करने की क्षमता, एवं व्यक्ति की समझ बढ़ जाती है। जिस प्रकार से प्रयागराज के संगम पर, सरस्वती नदी दिखाई नहीं देती है, उसी प्रकार से तृतीय नेत्र दिखाई नहीं देता है। इसी तृतीय नेत्र पर जाकर सब अटक जाते हैं, क्योंकि यहाँ से आगे, सहस्त्रार की यात्रा करना, बहुत ही कठिन है। जिसे अष्ट सिद्धि कहा गया है। आज्ञा चक्र तक तो बहुत से साधक पहुँचते हैं, किन्तु आज्ञा चक्र से आगे की साधना, विरले साधक ही करते हैं। क्योंकि त्राटक में स्थित साधक, सबसे पहले ज्ञान प्राप्त करता है, तत्पश्चात् ज्ञान से धन प्राप्त करता है, और धन से संसार के सुख-ऐशोआराम प्राप्त करता है। इसलिए साधक जब धन एवं सुख तथा ऐशोआराम, प्राप्त कर लेता है, तब साधक त्राटक पर ही अटक जाता है। त्राटक यानी त्र में अटक जाना। त्र यानी तीन में अटक जाना। यानि धर्म, अर्थ, काम में अटक जाना। शरीर, मन, आत्मा में अटक जाना। पृथ्वी, चंद्रमा, सूर्य में अटक जाना। सर्दी, गर्मी, बरसात में अटक जाना। जहाँ पर भी तीन में अटकना होता है, वही त्राटक होता है। इसी त्राटक से बाहर निकलना पड़ता है, जैसे – रामकृष्ण परमहंस को तोता पुरी ने, त्राटक से बाहर निकाला था। जैसे – भगवान शिव ने काम को भस्म करके, त्राटक से बाहर निकले थे। इसी त्राटक से जो बाहर निकलता है, वही भगवान के सम हो जाता है। यानी भगवान के बराबर हो जाता है। और भगवान के पद को प्राप्त करता है। किन्तु जब तक इस त्राटक पर हैं, तब तक इसी भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्यकाल के त्राटक में अटके रहते हैं। और जो त्राटक से बाहर निकल जाते हैं, वह तीनों काल के ज्ञाता हो जाते हैं।

145. टिड्ड + D = Teddy -

जिसका टिड्ड D की तरह होता है, उसे Teddy बोलते हैं। टिड्ड = पेट।

146. तह + हलका = तहलका – वस्तु को तह करके रखने पर, वस्तु हलका हो जाता है।

147. तप + ईश्वर = तपिश -

गोबर की अत्यंत गर्मी में, बारह वर्ष तक बैठकर, श्री गुरु गोरखनाथ जी महाराज ने, निरंतर तप करके, ईश्वरत्व को प्राप्त किया। तप + ईश्वरत्व = तपिश। तप करने पर ही, ईश्वरत्व की प्राप्ति होती है। तपने पर और पिशने पर ही, तपिश का अनुभव होता है। तप + पिशना = तपिश। जिस प्रकार से तप से, व्यक्ति

में उष्णता आ जाती है। उसी प्रकार चक्की में पिसे हुए, अन्न के आटे में गर्मी होती है।

148. Tea + Rain = Train -

Tea को पीने और Rain में, रहने के लिए Train किया गया। Tea + Rain = Train. Tea को लगाने से लेकर, Tea को तोड़ने, Tea को बनाने और, Tea को पीने तक, व्यक्ति को Train किया है तथा मार्गों पर खपरैल के, रैन बसेरे बनाए गए। Rain आने पर लोग, इन रैन बसेरों में ठहरते थे। रैन = Rain. इन दोनों का किस तरह से, उपयोग करना है, इसके लिए लोगों को Train किया गया। जब Rail आई, तब Rail को चलाने से लेकर, Rail में बैठने तक, लोगों को सिखाया गया। तो लोगो ने Rail को भी, Train कहना शुरु कर दिया। यानी अब जो भी कार्य, किसी को सिखाया जाता, लोगों ने उस सिखाने को "Training" ही कहा। Train में तीन चीजों को सिखाया जाता है। त्रैन = तीन। यह तीनों के नाम हैं, शिक्षा, विद्या और Training. व्यक्ति को शिक्षित, सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए शिक्षा दी जाती है। व्यक्ति को विद्वान बनाने के लिए, विद्या सिखाई जाती है। व्यक्ति को कार्य में, निपुण बनाने के लिए, व्यक्ति को Training दी जाती है। व्यक्ति को ज्ञान, सिखाया नहीं जाता है, व्यक्ति को बोध, सिखाया नहीं जाता है, व्यक्ति को समझ, सिखाई नहीं जाती है, बस व्यक्ति को ध्यान करना सिखाया जाता है। जैसे जैसे व्यक्ति ध्यान करता जाता है, वैसे वैसे व्यक्ति को, ज्ञान, बोध, समझ, अपने आप आती जाती है। इसलिए व्यक्ति को शिक्षा, विद्या, Training लेते समय कहा जाता है कि, "ध्यान से करो"। यानी ध्यान (Meditation) की आवश्यकता, ज्ञान, बोध, समझ के साथ-साथ, शिक्षा, विद्या, Training के लिए भी है। अतः सिखाने वाला केवल सीखने वाले के, ध्यान पर ध्यान रखता है कि, "सीखने के समय, इसका ध्यान कहां पर है"। इसलिए पहले समय में, सबसे पहले ध्यान में बिठाया जाता था। ध्यान में बैठकर, व्यक्ति का अंत:करण साफ हो जाता था। तब ध्यान (Meditation) करने के बाद, व्यक्ति को शिक्षा, विद्या, Training दी जाती थी। इसलिए ध्यान को उपलब्ध लोगों ने बहुत ही महान कार्य किए हैं, जो आज भी जनमानस के लिए उपयोगी हैं।

149. ताड़न = Train -

ताड़न करके या Train करके, अधिकारी बनाना होता है। ताड़न = Train. किसी व्यक्ति को किसी कार्य की, Training दे करके, उस कार्य को करने का, अधिकारी बना दिया जाता है। ढोल को बजाने की Training दी जाती है। जो व्यक्ति Gun से वार करने को, हमेशा तैयार रहता है, उसे गंवार कहा जाता है। Gun + वार = गंवार। उस गंवार को Training दी जाती है, Training मिलने के बाद, Gun लेकर War करने के लिए, भेज दिया जाता है। Gun + War = गंवार। सेवा करनेवाले शूद्र को, उस सेवा को करने की, Training दी जाती है। उस Service में Trained होने के बाद, वह शूद्र उस सेवा को करने का, अधिकारी हो जाता है। पशु का उपयोग करने से पहले, पशु को भी Train किया जाता है। जब जाकर उस पशु से, कोई भी कार्य लिया जाता है। नारी को भी भोजन बनाने एवं, घर को संभालने की Training दी जाती है, तब जाकर नारी, भोजन बनाने एवं घर को संभालने की, अधिकारी बन जाती है। इस तरह से इन पाँचों को, Training दे करके, उस कार्य को करने का, अधिकारी बनाया जाता है। क्योंकि Training पूरी होने के बाद, इन पाँचों से अधिक कार्य

करवाया जाता है। और, जिससे अधिक कार्य करवाया जाता है, उसे अधिकारी कहा जाता है। अधिक + कार्य = अधिकारी। तब तो यह लोग कहते हैं कि, "अरे ! पूछो मत आज तो बहुत काम दे दिया"। तो जब भी किसी को, अधिक कार्य करवाया जा रहा है, समझो उनको इन पाँचों में से, किसी एक की श्रेणी का समझा जा रहा है। इसलिए जिस कार्य की भी, Training मिले, समझो ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी, इन पाँच में से एक समझा गया है। और अधिक कार्य मिलने वाला है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति, विद्या को पढ़ता है, और विद्वान बन जाता है। तथा शिक्षा को पढ़ता है, और शिक्षित हो जाता है। Education को प्राप्त करता है, और Educated हो जाता है। ताड़न से अपभ्रंश होकर Train शब्द बना है। ताड़न > ताड़येन > तारेन > तरेन > Train. "तरेन" को जब Roman लिपि में लिखा गया, तो "तरेन" का "Train" हो गया। क्योंकि किसी को Train, उतना ही किया जाता है, जितना उससे कार्य लेना होता है। इसलिए Train करते समय, उस व्यक्ति पर नज़र रखी जाती है, इस नज़र रखने को ताड़ना कहते हैं। Training होने के बाद भी, इन पर नज़र रखी जाती है, कि ढोल खराब तो नहीं हो रहा है, गंवार किसी से गंवारी तो नहीं कर रहा है, शूद्र किसी और का कार्य तो नहीं कर रहा है, पशु किसी और का दिया तो नहीं खा रहा है, नारी किसी और को भोजन तो नहीं दे रही है। अगर यह सब करते हुए, यह पाए जाते हैं तो, इनको ताड़ से पड़ती है। जिससे ढोल की धूल साफ हो जाती है, और सब भी अपने अपने Train किए हुए, कार्य को अपने अपने मालिक के लिए, करने लग जाते हैं।

150. टेर + Roar = Terror -

टेर एवं Roar के द्वरा, Terror स्थापित किया जाता है। टेर + Roar = Terror. टेर = किसी को जोर से बुलाना। Roar = सिंह की दहाड़। जब किसी को जोर से, आवाज देकर बुलाया जाता है, उसे "टेर" कहते हैं। टेर लगाने वाला अपने पूरे जोर से, दूसरे को बुलाता है। शेर के द्वारा Roar करके, अपने Terror का ऐलान किया जाता है। Terror के साथ में रीति को जोड़ देने पर, Terrority बनाई जाती है। Terror + रीति = Terrority. यानी किसी भी Terrority का पता, ऐसे चलता है कि, यह रीति कहाँ कहाँ तक चलती है। इसलिए Terror के द्वारा, अपनी Terrority बनाने वाले लोग, सारी Terrority में एक ही रीति का, पालन करवाते हैं। और Terror के द्वारा जो रिशते बनाते हैं, उन्हें Terrorist कहते हैं। Terror + रिश्ते = Terrorist. लोग अपने Terror को दिखाने के लिए, अपने Terror के Rism बनवाते हैं। और अपने Terrorism को सबको दिखाते हैं। Terror + Rism = Terrorism. Rism = चित्रकला। Terror को Rise करने के लिए, Terrorize करते हैं। Terror + Rise = Terrorize. इसलिए लोग टेर करने के लिए, अपने साथ ऊँचे बोलनेवाले लोग रखते हैं, जो जोर-जोर से बोलकर, उनका Terror फैलाते हैं और, अपने आपको शेर बुलवाते हैं। ताकि लोग उनके Terror में रहें और, उनसे रिश्ते बनाकर रखें। तथा उनकी Terrority बनी रहे, और वीरगाथाओं की चित्रकला से, उनका Terrorism बना रहे। और उनके Terror को Rise करता रहे।

151. टप + पक = टपक -

टप से नीचे वही गिरता है, जो पक जाता है। टप + पक = टपक। जो फल पक जाता है, वही फल जब गिरता है, तब टप की आवाज़ आती है।

152. Tea + ज़र = Teaser -

Tea को Serve करके, व्यक्ति अपना ज़र दिखाता है। Tea + ज़र = Teaser. ज़र = धन। तब Tea को Serve करते हुए, व्यक्ति कहता है कि, "फलानी जगह का महंगा Tea Set है, फलानी जगह की महंगी चायपत्ती है, फलाने का Design किया हुआ, महंगा Table Cloth है, और इस तरह से, Tea को Serve करने के Style से, व्यक्ति अपने ज़र को प्रदर्शित करता है। जिसे Teaser कहते हैं। इसलिए व्यक्ति जब भी किसी को, पहली बार मिलता है तो, कहता है कि, "शाम को मेरे यहां पर चाय पिएंगे, वहीं बैठकर बातें करेंगे, आना जरूर"। इस तरह से यह Teaser शब्द बना है।

153. टोह + ली = टोली -

टोह लेने के लिए टोली निकलती है। टोह + ली = टोली। टोली का कार्य ही टोह लेना होता है।

154. तिल + Sim = तिलिस्म -

तिल के बराबर जब Sim हो जायेगा, तब यह एक तिलिस्म हो जायेगा। तिल + Sim = तिलिस्म। पहले भी Technology में, तिल के बराबर Sim होता था। यह तिलिस्म "खुल जा सिम सिम" के, Voice Command Password से, खुलता था।

155. Trust + वर्दी = Trustworthy -

जिस पर Trust करते हैं, उसी को वर्दी देते हैं। इसी से उसे Trustworthy कहते हैं। Trust + वर्दी = Trustworthy. वर्दी पहने हुए इन्सान पर, सभी लोग Trust करते हैं। अब वह वर्दी किसी भी प्रकार की हो, और किसी ने भी पहनी हो। उस वर्दी पहने हुए व्यक्ति पर, हम भरोसा कर लेते हैं और, वह वर्दी पहने हुए लोग, हमारे भरोसेमंद हो जाते हैं। उनके भरोसे से हम मंद पड़ जाते हैं, और उनको भर देते हैं, अपने रोषे से। भरोसे + मंद = भरोसेमंद। भर + रोष = भरोषे। उन वर्दी पहने हुए लोगों को, हम अपने रोष से भर देते हैं, अपने काम उनको सौंप देते हैं। और हम मंद हो जाते हैं। क्योंकि तब हम त्रस्त होते हैं, तब हम उसी पर Trust करते हैं, जो वर्दी पहने हुए होते हैं। त्रस्त = Trust. क्योंकि वर्दी पहने हुए लोगों को, हम Worthy मानते हैं कि, "यह वर्दी पहने हुए लोग योग्य हैं, इनपर हम भरोसा कर सकते हैं"। Worthy = योग्य। योग्य लोगों को हम वर्दी देते हैं। क्योंकि जिनको वर दिया गया है, उन्हीं लोगों को वर्दी पहनने को दी जाती है। वर + दिया = वर्दी। इसलिए त्रस्त होने के समय, उन वर्दी पहने हुए लोगों को हम, पहचान लेते हैं और, उन पर भरोसा कर लेते हैं। अतः अपने आपको मंद कर देते हैं, और अपने सबकुछ से, उन वर्दीवालों को भर देते हैं। इस तरह से हम भरोसेमंद हो जाते हैं।

156. थप्प + पढ़ = थप्पड़ -

थप्प की आवाज आई और, जोर से बोलकर कहा कि "पढ़"। इस तरह से शब्द बना "थप्पड़"।

157. थर + माप + Meter = Thermometer –

शरीर के अन्दर जो थर-थर होता है, उस थर को मापने के लिए, जो Meter बनाया जाता है, उसे Thermometer कहते हैं। थर + माप + Meter = Thermometer. यानी थर को मापने का

Meter. थर वह वस्तु है, जिसके नाम पर मुहावरा बना है, 'वह तो थर-थर कांपने लगा'। इसी थर से शब्द बना है, 'थरथराहट'। यानी थर- थर के आह की Hot.

थर + थर + आह + Hot = थरथराहट –

इसी थर-थर के आह की Hot को, मापने के लिए Thermometer बना है।

158. तप + पिस = तपिश –

तपनेवाली वस्तु और पिसनेवाली वस्तु में, तपिश होती है। तप + पिस = तपिश। यानी तपती वस्तु और पिसती वस्तु में, तपिश होती है। सूर्य की किरणों से तपनेवाली वस्तु में, और चक्की में पिसनेवाले आटे में, तपिश होती है।

मनुष्य के शरीर से बाहर निकलनेवाली, Piss में भी तपिश होती है। इसलिए उसे Piss कहते हैं। Piss = पिश। इसलिए उस पिसकर निकले आब को, पिशाब कहते हैं।

Piss + आब = पिशाब –

क्योंकि वह आब भी, शरीर में से पिसकर बाहर निकलता है। इस तरह से तपिश का अर्थ होता है। तपकर निकले साधु में भी, तपिश होती है। इसलिए उस साधु के, आशीर्वाद और श्राप दोनों में, तपिश होती है। आशीर्वाद की तपिश, मार्ग प्रशस्त करती है। और श्राप की तपिश, भस्म कर देती है। इसलिए जिसमें भी तपिश हो, उससे सावधानी से पेश आना चाहिए। अन्यथा वह अपनी तपिश से, आशीर्वाद भी दे सकता है, और श्राप भी दे सकता है।

159. Tree + भूमि + वन = त्रिभुवन –

Tree लगाओगे भूमि में तब वन होंगे। Tree + भूमि + वन = त्रिभुवन। One One Tree भूमि में लगाओ, और भूमि पर त्रिभुवन को पाओ।

160. टन्कन + काट = टका –

टन्कन करके जिसकी काट की जाती है, उसे टका कहते हैं। जब भी किसी की औकात का, आंकलन करते हैं, तब हम 'टके' का इस्तेमाल करते हैं। और कहते हैं कि, 'अरे ! वह ! उसे तो मैं जानता हूं, वह तो दो टके का आदमी है'। यानि पहले जमाने में 'टका', विनिमय की बहुत बड़ी मुद्रा होती थी।

161. टीका = टिका - टीका ही टिका देता है।

162. ताज + ऊब = ताज्जुब -

यही तो ताज्जुब है कि, ताज को देखकर कोई ऊबता नहीं है। ताज + ऊब = ताज्जुब। ताज हमेशा ताज़ा रहता है। कई बार देखो, बार-बार देखो, ताज हमेशा ताज़ा दिखाई देता है। और इतने सालों से ताज, अभी भी ताज़ा है।

163. थर + रूह = Through -

थर के Through रूह चलती है। थर + रूह = Through. व्यक्ति के शरीर में रहनेवाले, थर के माध्यम से रूह चलती है।

164. थर + माप + मित्र = Thermometer –

थर को भी गर्म कहते हैं। इसलिए थर को मापने के लिए, Thermometer होता है। थर + माप + मित्र = Thermometer. इसलिए गर्म मरुस्थल को, थार का मरुस्थल कहते हैं। थार यानि गर्म मरुस्थल कहते हैं। व्यक्ति के थर को मापने के लिए मित्र होता है। व्यक्ति का मित्र जानता है कि, व्यक्ति का मिज़ाज ठंडा है कि गर्म है। इसलिए लोग किसी का मिज़ाज जानने के लिए, उस व्यक्ति के मित्र से पूछते हैं कि, 'कैसा मिज़ाज है साहब का' ?

165. तब + आह = तबाह –

तब गरीब के दिल से निकली आह, अच्छे-अच्छों को तबाह कर देती है।

U

1. उप + Wash = उपवास -

ऊपर का wash ही तो उपवास है। क्रोध एवं कुविचार सदा अन्न के सेवन से निर्मित होते हैं, क्योंकि क्रोध और कुविचार मन में आते हैं। मन का निर्माण अन्न से होता है। इसलिए अन्न में अगर दोष है, तो उस अन्न को खाना छोड़ दो। जिससे उस प्रकार का मन नहीं बनेगा। इसलिए एक तो शरीर का Wash होता है। एक शरीर के भीतर का Wash होता है। जब भीतर का शरीर धुल जाता है। तब उसके अंदर भी प्रेम और करुणा आती है। इसलिए ऋषि-मुनि अन्न का सेवन न करके तपस्या मे वर्षों बैठे रहते थे। जिससे उनके भीतर के शरीर का Wash हो जाए।

2. उद् + धार = उद्धार –

उद् यानि पेट की धार – इसी पेट को भरने के लिए उधार लेता है, बस इसी पेट की धार ही तो सब को खतम कर देती है, अगर यह धार न भरी जाए तो उद्धार कर देती है।

3. उच्च + चारण = उच्चारण -

चारण को उच्च स्वर में उच्चारण करना चाहिए। तभी तो चंदरबरदाई की बात पृथ्वीराज चौहान ने सुन ली।

4. Unity = उन्नति - उन्नति करने के लिए Unity चाहिए।

5. उदास -

उदर की आस ही उदास बना देती है। फिर दास बना देती है। दास ही उदास होते हैं।

6. उत्तम - तम ही उत्तम है।

7. उद्देश्य -

उदर ही उद्देश्य होता है, हर प्राणी का, कि मेरा पेट भर जाए। तो इसका भी उद्देश्य उदर ही है।

8. ऊपर + आय = उपाय – ऊपर की आय ही उपाय है।

9. Unique – जो नेक लोग होते हैं, वह Unique होते हैं, और वह Queue में नहीं लगते हैं।

10. उम्दा + ईद = उम्मीद –

ईद पर ही सभी यह दुआ करते हैं, की कुछ उम्दा हो जाए, यही उम्मीद है।

11. उपनयन –

आज कल बच्चों को उपनयन संस्कार में जनेऊ नहीं, उपनयन लगाया जाता है।

12. उचित – चित ही उचित है, यानि Cheat करना ही, उचित है।

13. उबल – जिसमें बल होता है, वही उबलता है।

14. उबाल –

दूध को उबाल लिया जाता, तो जो बाल होता है दूध में, वह बाल उबलकर बाहर आ जाता है।

15. उर्जा + वश = उर्वशी – उर्जा को वश में करनेवाली ही उर्वशी है।

16. उम्दा + अंग = उमंग – उम्दा अंग से ही उमंग निकलती है।

17. Under = अन्दर –

जो अन्दर रहते हैं, वह Under हैं। उन्दीर जमीन के नीचे रहता है, इसीलिए उसे उन्दीर कहते हैं। उन्दीर = चूहा।

18. उजाला –

जाला हटा दो तो उजाला हो जाता है। घर में जब जाले हटा दिये जाते हैं, तो रोशनदान से उजाला आता है।

19. Urine + Area = Urea –

Urine करने के Area से ही Urea बनाते हैं, यानि Urine से ही Urea बनाते हैं।

20. ऊर्जा + Entry = Urgent –

ऊर्जा होने पर व्यक्ति जो Entry करता है, उसे बहुत ही Urgent होता है। कमजोर लोग इन्हीं ऊर्जा वाले लोगों से बड़ी ही Gently कार्य करने के लिए अर्ज करते हैं, और कहते हैं कि Urgent यह कार्य करना है।

21. उँगली = उधर है गली – गली की तरफ ईशारा उँगली से ही किया जाता है, कि उधर है गली।

22. उलने + हानि = उलहाना –

बीज में से जब पौध उलने लगती है, तो उसको कोई तोड़ दे या खाले उसे उलहाना कहते हैं, यानि उलने की हानि होना ही तो उलहाना है।

23. उल्लू + लेख = उल्लेख -

उल्लू के द्वारा लिखा गया। तभी तो कहते हैं कि, "यह किस उल्लू के द्वारा लिखा गया"। क्योंकि उल्लू रात को जागता है, तो रात को क्या हुआ ? इसका प्रमाण उल्लू के द्वारा लिखे गए लेख में होता है, इसलिए उसे उल्लेख कहते हैं।

24. उखाड़ना + जड़ = उजड़ - जब जड़ों को उखाड़ लिया जाता है। तो वह स्थान उजड़ जाता है।

25. ऊब = बू -

ऊब का उल्टा बू होता है। जब कोई चीज से बू आने लगे तो समझो आप ऊब रहे हो। ऊब को अंग्रेजी में Bore कहते हैं। यानि "Now this is Boring, Something new". बस यही भूल Meditation में करते हैं, जब उन्हें Meditation Boring लगने लगता है, तो वे उसे करना छोड़ देते हैं कि, "रोज-रोज का वही We want something excitement". किन्तु एक बात है कि, जब तक धरती से साफ और मीठा पानी नहीं निकलकर आता है, तब तक Boring करनी पड़ती है। फिर इस Boring में कितना ही Bore क्यों न होना पड़े। ऐसे ही Meditation है, जब तक आप में धैर्य नहीं आया, तब तक Meditation करते रहो। Meditation से सबसे पहले चिंता दूर हो जाएगी। क्योंकि जब आप लगातार एक आसन पर तीन घंटे बैठेंगे तो आप अपने आस-पास होने वाली कई बेकार Disturbance से छुटकारा पा जाएंगे। फिर जब आप छोटी-छोटी बातों से परेशान नहीं होगें, तो आप निश्चिंत हो जाएंगे और आपके अन्दर धैर्य आएगा। धीरे-धीरे धैर्य से आपके भीतर शांति का प्रादुर्भाव होगा और आप दकदम शांत हो जाएंगे और आपको शांति की प्राप्ति होगी। फिर आप जो भी कार्य करोगे, वह शांति के साथ करोगे। बस ध्यान में ऊबने पर उसे छोड़ मत देना। करते रहना और

रोज करना कम से कम एक घंटा रोज ज्यादा से ज्यादा तीन घंटे रोज ध्यान करना चाहिए।

26. उत + सुक = उत्सुक - सुक (तोता) बहुत ही उत्सुक होता है।

27. उच्च + शिष्ट = उच्छिष्ट -

उच्च लोग उन्हीं को शिष्ट मानते हैं। जो उनका उच्छिष्ट स्वीकार कर लेते हैं। उच्च लोगों का छिच्ष्ट खाना पड़ता है। चाहे वह कुछ भी हो। भोजन, वस्त्र, पुस्तक और ज्ञान सब कुछ शिष्य बन जाने पर एक System के तहत लेना पड़ता है। यही System है।

28. अन्न + तिल = Until -

जब तक तिल नहीं दिया जाता है। तब तक आप कुछ भी करते रहो। जब अन्न की जगह तिल दिया जाता है, तो समझ लो, उसका Until आ गया। यानि उसको तिलांजली देने का वक्त आ गया। जब तिल दे दिया तो, उसके बाद कुछ नहीं। यही Until है।

29. ऊँट + पेट + अंग = ऊँटपटांग -

ऊँट के पेट पर, एक अतिरिक्त टांग होती है। जब ऊँट, गर्म रेत पर बैठता है, तब गर्म रेत ऊँट के, पेट को न जलाए, वह पेट वाली टांग, ऊँट की रक्षा करती है। इसलिए ऊँट के, पेट की टांग से ही, ऊँट पेट टाँग हुआ। फिर ऊँट पटांग हो गया। परमात्मा ने इतनी गर्मी में भी, ऊँट की रक्षा के लिए, ऊँट के पेट पर टाँग दी है। यही ऊँटपटाँग है।

30. उपदेशक -

जब कोई दूसरे देश में जाता है, वहाँ पर उसे Receive करने के लिए जो व्यक्ति आता है, वह Receive करनेवाला व्यक्ति, उस आनेवाले नये व्यक्ति को, जो बातें-नियम-कायदे, इस नये देश के बताता है, वह बतानेवाला व्यक्ति उपदेशक कहलाता है - जैसे कोई भारत से अमेरिका गया, तो अमेरिका में जो Receive करने Airport पर आएगा, वह Airport से लेकर के ठहरने वाले स्थान तक अमेरिका की सारी बातें, नियम-कायदे बता देगा। ऐसे करना, यह नहीं करना। वैसे करना आदि-आदि, वह बतानेवाला व्यक्ति उपदेशक कहलाता है।

31. ऊब + तन = उबटन -

जब ऊब जाते हैं, तन से तो उबटन लगाते हैं। तन से जब बू आने लगती है तो, शरीर पर उबटन लगाई जाती है। अपने तन से सभी ऊब जाते हैं, व्यक्ति सबकुछ बदल सकता है, लेकिन तन नहीं बदल सकता है। तो जब व्यक्ति अपने तन से ऊब जाता है तो अपने तन पर उबटन लगाता है। जिससे उसे अपना तन पुनः तरोताजा लगता है।

32. उप + Wash = उपवास -

ऊपर का wash ही तो उपवास है। क्रोध एवं कुविचार सदा अन्न के सेवन से निर्मित होते हैं, क्योंकि क्रोध और कुविचार मन में आते हैं। मन का निर्माण अन्न से होता है। इसलिए अन्न में अगर दोष है, तो उस अन्न को खाना छोड़ दो। जिससे उस प्रकार का मन नहीं बनेगा। इसलिए एक तो शरीर का Wash होता है। एक शरीर के भीतर का Wash होता है। जब भीतर का शरीर धुल जाता है। तब उसके अंदर भी प्रेम और करुणा आती है। इसे ही उपवास कहते हैं।

33. ऊपर + गिरा + दे = Upgrade -

विश्व का यह नियम है कि सबसे हलके व्यक्ति को सहारा देकर ऊपर पेड़ पर चढ़ाया जाता है। फिर जब वह ऊपर चढ़ जाता है, तब उसको कहा जाता है, कि पके-पके फल तोड़कर नीचे गिरा दे। यही Upgrade है। यानि किसी को ऊपर इसलिए पहुँचाया जाता है कि, वह ऊपर पहुँचकर ऊपर रखी वस्तु को नीचे गिरा दे।

34. Umbilical Cord -

उसे पुराना Record दुकान पर, वापस जमा करना पड़ता था। तब वह सारे टूटे हुए Record, वापस Music Company के पास चले जाते थे। फिर उन टूटे हुए Record की गिनती कर, यह घोषणा की जाती थी, कि इस गाने ने पिछले गाने का Record तोड़ दिया। आदमी के पास भी, एक Cord होती है। जिसे Umbilical Cord कहते हैं। इसी Umbilical Cord में मनुष्य के सारे Record होते हैं। जो की अलग-अलग योनियों में अलग-अलग जन्मों के होते हैं। इसका उच्चारण है, अम्बीलीकल, अम्बी यानी अम्बर यानी नभ, नभ से ही नाभि बना है। इसलिए Umbilical Cord को नाभि रज्जु कहते हैं। जब किसी भी जन्म में आत्मा शरीर को छोड़ता है। तब आत्मा अपने साथ उस जन्म के तथा जन्म-जन्मांतर के संस्कार - आदत - अनुभव, अंतःकरण में समेटकर, प्राण के ऊपर सवार होकर उड़ जाता है। इसीलिए तो कहते हैं, प्राण पखेरू उड़ गए, क्योंकि जब प्राण शरीर को छोड़नेवाला होता है, तब प्राण को पंख निकल आते हैं। और प्राण एक पक्षी में परिवर्तित हो जाता है। उस पंख निकले प्राण पर, आत्मा सवार हो जाता है। और अंतःकरण सहित, शरीर से बाहर निकल जाता है। इसलिए व्यक्ति को कहते हैं, कि "तेरे पंख निकल आए हैं, तू ज्यादा ही आजकल उड़ने लगा है।" इसलिए जिन्होंने यह देखा है, वह यही कहते हैं कि, प्राण शरीर से बाहर निकल गया। किंतु प्राण पर बैठा, सूक्ष्मतर आत्मा उन्हें, नहीं दिखाई देता है। वही आत्मा जब स्त्री के गर्भ में आता है। और गर्भ से जब स्त्री की नाभि के संपर्क में आता है। और स्त्री की नाभि से, अपने लिए भोजन प्राप्त करता है। क्योंकि नाभि मनुष्य की जड़ है। जब स्त्री की नाभि से, गर्भस्थ शिशु की नाभि मिलती है। तब स्त्री को उस गर्भस्थ आत्मा के, अंतःकरण में स्थित स्मृति से, विभिन्न प्रकार के स्वप्न आते हैं। उन्हीं सपनों के आधार पर, गर्भस्थ शिशु के भूत, भविष्य का आंकलन किया जाता है। यह सारा कार्य उस Umbilical Cord के माध्यम से होता है। इसलिए उस Umbilical Cord में भी, कुछ Record हो जाता है। जो कि उन दोनों के होनेवाले, आदन-प्रदान को संजोकर रखता है। इसे ही Record कहते हैं। इसलिए पहले ऐसे उपकरण, उपलब्ध थे जिनसे उस, Umbilical Cord में स्थित स्मृति को बाहर दिखाया एवं सुनाया जाए। जिससे मनुष्य के संबंध में कुछ, पता चल सके। Umbilical Cord को गर्भनाल कहते हैं। तभी मनुष्य से पूछा जाता है, कि "हौर सुना तू कि नाल लेय्या सी अपने कोल !" तो मनुष्य अपने नाल जो, लाता है, वह सारा का सारा, गर्भनाल से फिर से गर्भस्थ शिशु में, Project होने लगता है। गर्भस्थ शिशु उसी नाल लाए अनुभवों में खुशी-दुःखी होता रहता है। जिसको रोकने के लिए, फिर विभिन्न प्रकार के उपाय, गर्भस्थ शिशु के साथ किए जाते हैं। जिससे की गर्भस्थ शिशु अपने पुरानी स्मृतियों को, भूल जाए और किसी भी प्रकार के सवाल न करे।

वह जब पैदा होकर संसार में आए, तब वह इस संसार को स्वीकार करे। इसी में रच-बस जाए। पूर्वजन्मों के अनुभवों के आधार पर, पूर्वजन्म में की गई यात्रा को, आगे न बढ़ाए। संसार में जन्म लेनेवाला मनुष्य, यही समझे की उसके पास यही एक जन्म है और इसी एक जन्म में ही उसको रमना है। किंतु कभी-कभी पूर्वजन्म के, संस्कारों के कारण मनुष्य में, बहुत उथल-पुथल होती है। जिसमें फिर मनुष्य को, मानसिक रोगी मान लिया जाता है। परन्तु उसकी उस ऊहापोह को कोई नहीं समझता है। तो फिर उस मनुष्य को, शास्त्र-योग-ध्यान और आध्यात्मिकता की राह पर लगना पड़ता है। जिससे वह अपनी पूर्वजन्म की यात्रा के, मार्ग को पुनः प्राप्त कर लेता है। इस तरह मनुष्य अपने साथ अपनी Umbilical Cord में बहुत सारे Record लेकर आता है। यानी अपनी गर्भनाल में अपने नाल बहुत सारी स्मृति लेकर आता है। गर्भ से बाहर आकर मनुष्य जब अपनी नाभि पर, ध्यान लगाता है, तब उसका सोया हुआ Record फिर से बजने लगता है। इसलिए जब व्यक्ति किसी को, अपने मन की बात बताने लगता है। तो सुननेवाला कहता है, कि "इसने फिर से अपना Record चालू कर दिया।" यही Record का अर्थ है।

35. उम्दा + ईद = उम्मीद -

उम्मीदों को जिन्दा, रखने के लिए ही, उम्दा ईद मनाई जाती है। ईद को उम्दा मनाने के लिए, उम्दा कपड़े पहने जाते हैं, उम्दा पकवान बनाये जाते हैं, उम्दा कुर्बानी की जाती है, उम्दा दुआएँ माँगी जाती हैं, इसलिए ईद को, उम्दा से उम्दा मनाओ, और ज़िन्दगी में, कुछ भी हासिल करना हो, ज़िन्दगी में आगे बढ़ना हो तो, ईद को उम्दा तरीके से मनाते रहो, इससे ज़िन्दगी में, उम्मीद बनी रहेगी और ज़िन्दगी आगे बढ़ती रहेगी।

36. उप + वासना = उपासना -

वासना से ऊपर, उठने के लिए, उपवासना की जाती है। यही उपवासना, आगे चलकर, उपासना के नाम से, प्रचलित हो गई। उप + वासना = उपासना। और, उपवासना का उच्चारण, अच्छा नहीं लग रहा था, इसलिए, उपवासना में से ना को, विच्छेद कर दिया गया, तब केवल उपवास रह गया। उपवास + ना = उपवास। क्योंकि जब-जब, उपवास किया जाता है, तब-तब, वासना में नहीं उतरा जाता है।

37. उपदेश + निषाद = उपनिषद -

उपदेश निषाद के, उपनिषद कहलाते हैं। निषाद के द्वारा दिए गए, उपदेशों को ही उपनिषद कहते हैं। उपदेश + निषाद = उपनिषद। निषाद का अपभ्रंश निषद हो गया। जो नित्य शाद में रहे वह "निषाद" होता है। नित्य + शाद = निषाद। शाद = आनन्दित, प्रसन्न। निषाद के आनन्दित रहने का क्या कारण है ? यह जानने के लिए, हाथ जोड़ करके निषाद के, पास बैठना ही उपनिषद है। उन्हीं निषादराज की पुत्री सत्यवती के पुत्र, ब्रह्मृषि व्यास जी के पास, सभी निषाद लोग, ज्ञान प्राप्त करने के लिए बैठते हैं। आज भी लोग, ब्रह्मृषि व्यास जी के द्वारा, लिखित शास्त्रों को पढ़कर, "ब्रह्म-आत्मा" का ज्ञान प्राप्त करते हैं। निषादराज की पुत्री सत्यवती से, जन्म लेने कारण, ब्रह्मृषि व्यास जी को ही "निषाद" कहा गया। और, निषाद रूपी ब्रह्मृषि व्यास जी के द्वारा, जिस ज्ञान का उपदेश किया गया,

उसे ही "उपनिषद" कहते हैं। निषाद लोग नाव चलाते हैं, किन्तु जब बरसात का मौसम आता है, तब नाव चलाना रोक दिया जाता है। तब पूरे बरसात के मौसम में निषाद लोग ब्रह्मृषि व्यास जी के पास, आकर बैठ जाते थे, और ब्रह्मृषि व्यास जी के द्वारा उपदेशित, ज्ञान की बातें सुनते थे। इसे ही "उपविशत निषाद" से उपनिषद नाम मिला है। यानी "बैठे हुए निषाद"। उपविशत + निषाद = उपनिषद। उपविशत = बैठे हुए। उपदेश प्रारंभ करने के प्रथम दिन, सभी निषाद लोग, ब्रह्मृषि व्यास जी की पूजा करते थे। जिसे आजकल "व्यास पूर्णिमा" "गुरु पूर्णिमा" कहा जाता है। इसलिए हमेशा से ही किसी विद्वान से, नांव में बैठने का पैसा नहीं लिया जाता है। और बड़े बड़े जहाजों में भी तो, Scholars को मुफ़्त में यात्रा करवाई जाती है। जिसे "Scholarship" कहा जाता है। Scholar + Ship = Scholarship. उस Scholar के द्वारा, पूरी यात्रा के समय, Ship में, नियमित प्रातः एवं सायं, उपदेश दिया जाता है। इसलिए उसे Scholarship कहा जाता है। Ship में School को खोल देनेवाला ही, Scholar कहलाता है। लम्बी लम्बी समुद्री यात्राओं में, बड़े बड़े Scholars इसी तरह से, Ship में खुले हुए School में पढ़ाते हुए, एक देश से दूसरे देश में भ्रमण करते थे। और उसके साथ उनके शिष्य भी होते थे, उन शिष्यों को भी Scholarship मिली होती थी। इस तरह से Ship को चलानेवाले, संभालनेवाले एवं Ship में यात्रा करनेवाले, Scholar के द्वारा दिए गए ज्ञान को, प्राप्त करते थे। और Scholar का आदर सम्मान करते थे। तथा गंतव्य पर पहुंचने पर, Scholar को दक्षिणा भी देते थे। Scholarship की यह परम्परा, Ship एवं नांव चलानेवाले नाविकों, एवं निषादों की देन है। इसी तरह निषादों के द्वारा, सुनाया गया "उपनिषद" का ज्ञान, Scholars के माध्यम से, संपूर्ण विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित, तथा प्रचलित हुआ है। इसी "उपनिषद" के ब्रह्म एवं जीव के, ज्ञान के कारण, एक समय संपूर्ण विश्व में, भारत देश को "विश्व गुरु" के नाम से, सम्बोधित किया जाता था"। क्योंकि सम्पूर्ण विश्व, एक ही सिद्धांत पर सहमत है, और वह सिद्धांत है, "ब्रह्म एवं जीव"। इसलिए आदि शंकराचार्य ने भी जब, "ब्रह्म एवं जीव" के सिद्धांत का, प्रतिपादन किया, तब आदि शंकराचार्य को भी, "जंगद् गुरु" के नाम से, संबोधित किया गया। क्योंकि "ब्रह्म एवं जीव" सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में, एक जैसे हैं। जबकि "प्रकृति" अलग अलग ग्रह की, अलग अलग होती है। तथा उस प्रकृति के अनुसार, "माया" भी अलग अलग ग्रह की, अलग अलग होती है। माया = प्रकृति से प्राप्त संसाधनों से, जीव के द्वारा निर्मित वस्तुएं। इस तरह से ब्रह्म, जीव, प्रकृति एवं माया के, सिद्धांत के अनुसार सम्पूर्ण विश्व, अपने अपने सिद्धांत को प्रतिपादित करता है। इसमें ब्रह्मृषि व्यास के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त को, निषादों को सुनाया गया, "उपनिषद" का सिद्धांत, संपूर्ण विश्व में आज भी मान्य है। इसी सिद्धांत को "Knowledge of Wisdom" कहते हैं। जब Wise लोग Om कहते हैं, उसे ही "Wisdom" कहते हैं। Wise + Said + Om = Wisdom. Wise लोगों की पहचान "ॐ" है। क्योंकि उपनिषद कहते हैं कि, "जो "ॐ" को जान लेता है, वह सभी को जान लेता है। यानी जो ध्यान करते हुए, "ॐ" का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, वह सभी का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। जिसको सभी का ज्ञान होता है, उसे "Wise" कहते हैं। इसलिए ध्यान करो और, Om का ज्ञान प्राप्त करके, Wise हो जाओ और, Wisdom को प्राप्त करो। किन्तु ध्यान यानी Meditation में, अवश्य

बैठो।

38. Union + Form = Uniform -

किसी भी Union में, भर्ती के समय, एक Form भरा जाता है, और, उसके बाद सबको एक, Uniform पहनना पड़ता है। Union + Form = Uniform. Union = संघ। Form = प्रपत्र। इस प्रपत्र को भरने के बाद, वह उस संघ का हिस्सा, हो जाता है।

39. उड़ + आन = उड़ान -

उड़ने की आन ही, उड़ान भरवाती है। उड़ + आन = उड़ान। जब व्यक्ति के आन पर, बात आ जाती है, तब व्यक्ति उड़ ही जाता है। यानी, जब व्यक्ति के भीतर, यह सोच आ जाती है कि, अब तो बात, आन पर आ गई है। तब वह व्यक्ति, कोई भी कार्य कर जाता है।

40. उत्ते + जना = उत्तेजना -

"उँ... तोय का पतो, तू तो उते हतोई ना। उते उत्ते जना हते"। बस यही उत्ते जना ही, उत्तेजना बन गया। उत्ते + जना = उत्तेजना। जब भी कोई व्यक्ति, तैश में होता है, और अपनी उत्तेजना की, बात कहता है। तब वह व्यक्ति बहुत सारे, जनसमूह की बात करता है। इसीलिए व्यक्ति उत्तेजना हेतु, अधिक से अधिक जनसमूह को, लाने को कहता है। ज्यादा से ज्यादा जनसमूह की, उपस्थिति ही उत्तेजना पैदा करती है। क्योंकि अधिक संख्या में स्थित, लोगों के शरीर में से, निकलनेवाली गरम ऊर्जा, एक प्रकार का, गरम वलय बना देती है। अब जो भी व्यक्ति उस, गरम वलय में आ जाता है, वह व्यक्ति भी उत्तेजित हो जाता है। इसीलिए व्यक्ति अपनी उत्तेजना को, प्रदर्शित करने के लिए, अधिक से अधिक लोगों की, उपस्थिति की बात करते हैं।

41. उखड़ना + जड़ = उजड़ - जब जड़ों को उखाड़ लिया जाता है, तो वह स्थान उजड़ जाता है।

42. उद + धरण = उद्धरण –

उद में ही धरण होती है, यह धरण ही डिग जाती है, इसी डिगी हुई धरण को बैठाना पड़ता है। इसे नाभि का खिसकना भी कहते हैं। उद = उदर = पेट।

43. उन + मेष = उन्मेष -

उन मेष की तरह चलना। देखो वह मेषें कैसे जा रही हैं, बस उन मेषों की तरह चलना है। एक मेष होती हैं, जिनके शरीर पर ऊन होती है और दूसरी तरह की मेषें वे होती हैं, जिनके शरीर से ऊन निकाल ली गई है। ऊन वाली मेषों की तरह चलना ही उन्मेष कहलाता है। क्योंकि बिना ऊन की मेषों को चलते हुए बहुत कम देखा गया।

44. ऊन + चाय = ऊँचाई –

ऊन और चाय की आवश्यकता जहाँ पड़े, उसे ऊँचाई बोलते हैं। ऊन + चाय = ऊँचाई। ऊन के बने वस्त्र शरीर को गर्म रखते हैं। चाय की प्याली शरीर को गर्म रखती है।

45. Up + वाद = अपवाद -

Up जो होता है, उससे वाद नहीं किया जाता है, उसे ही तो अपवाद कहा जाता है। Up + वाद = अपवाद। जो आपके ऊपर है, उससे वाद नहीं किया जाता है। उसको अपवाद की, श्रेणी में रखा

जाता है।

46. ऊपर + आसन = उपासना -

जो उपासक उपासना करते हैं, उन उपासकों को अपना आसन, सभी आसनों से ऊपर रखना है। ऊपर + आसन = उपासना। इसीलिए उपासक जहां भी जाते हैं, वहां पर उपासकों का आसन, अन्य लोगों के आसन से, ऊपर होता है। उपासक की यही पहचान होती है।

47. उम्र + दर + राज = उम्रदराज -

उम्र की दर, राज होती है। इसलिए उम्र एक दराज की तरह होती है। उम्र + दर + राज = उम्रदराज। पुरानी फिल्मों में, एक टेबल होता था, जिसके एक दराज में, राज होते थे, और दूसरे दराज में पैसे होते थे। जब भी कोई, राज लेकर आता था तो, एक दराज से पैसे निकालकर, दे दिए जाते थे, और राज को दूसरे दराज में, रख दिया जाता था। इसी प्रकार से, जैसे जैसे उम्र बढ़ती जाती है, वैसे वैसे उम्र में राज बढ़ते जाते हैं। और हर राज की एक दर होती है, इसलिए जो लोग प्रसिद्ध होते हैं, वह लोग अपने राज को, किसी पुस्तक में लिख देते हैं, या किसी फिल्म में फिल्मा लेते हैं, जिसके बदले में उनको, एक दर मिल जाती है। दर = कीमत। इसलिए जो लोग उम्रदराज होते हैं, उनके पास बहुत से राज होते हैं। उन राजों की ही दर होती है, जिसे वह पूरी उम्र अपने, दिल में छिपाकर रखते हैं। इसलिए किसी के राज जानने के लिए, उसके दिल को जीता जाता है, अगर दिल को जीत लिया तो, राज मिल जायेंगे। राज मिलने के बाद, राजनीति में आसानी हो जाती है, उन राजों के मिलने के बाद, फिर राजनीतिज्ञ अपनी नीति बनाता है, जिसे राजनीति कहते हैं। इसलिए जो लोग उम्रदराज लोगों का, दिल जीत लेते हैं, वह पूरी दुनिया को जीत लेते हैं। राज = Information.

48. उत्पन्न + शह = उत्साह - किसी की शह पाकर ही, उत्पन्न होता है "उत्साह"।

49. उतरता + रस = Uterus = जिसमें उतरता है पुरुष का रस, उसे कहते हैं, Uterus.

50. उत्तरीय -

जो उत्तर देता है, उसे ही उत्तरीय पहनाया जाता है। उत्तरीय = बिना सिला हुआ वस्त्र, जो गुरु के द्वारा, अपने उत्तर देने वाले शिष्य को, ओढ़ाया जाता है। वह शिष्य, इसी वस्त्र को ओढ़कर, लोगों के प्रश्नों को उत्तर देने का, अधिकारी बन जाता है। दुनिया की सभी गुरु शिष्य परम्पराओं में, यह उत्तरीय ओढ़ाया जाता है, जिसे "चद्दर विधि" कहते हैं। जब गुरु को कोई उत्तर देनेवाला, शिष्य नहीं मिलता है, तब गुरु की समाधि पर, लोग इसी उत्तरीय को ओढ़ाते हैं, और समाधि में स्थित गुरु से, समाधान का उत्तर पाते हैं।

51. ऊपर + अध्ययन = उपाध्याय -

ऊपर की विद्या का जो अध्ययन, सिखाए वह "उपाध्याय" होता है। ऊपर + अध्ययन = उपाध्याय। ऊपर की विद्या यानी आसमानी विद्या। आसमानी विद्या यानी परमात्मा का ज्ञान।

52. उल्टी = Count Down -

जिस दिन स्त्री को उल्टी आती है, उसी दिन से, उस स्त्री के गर्भ की, उल्टी गिनती शुरू हो जाती है। इसे ही Count Down कहते हैं।

53. Up + पर = Upper -

Up जाना है तो, उसके पास "पर" होना चाहिए। तभी तो Upper जा सकते हैं। Up + पर = Upper. Upper = ऊपर। पर = पंख। यानी ऊंची उड़ान भरने के लिए, पंख का होना आवश्यक है। जिसके पास पर होते हैं, उनको "परी" कहते हैं। परी अपने पंखों से उड़कर, जन्नत में जाती है। परी = Angel, अप्सरा।

54. उपरांत + हार = उपहार -

उपरांत हार के उपहार लेकर जाते हैं, इसे ही उपहार कहते हैं। उपरांत + हार = उपहार। युद्ध के उपरांत, युद्ध में हारनेवाले लोग, युद्ध में जीतनेवाले के लिए, हार और वस्तु लेकर जाते हैं, वही उपहार कहलाते हैं।

55. उप + सना = उपासना –

सना की उपासना की जाती है। उप + सना = उपासना। उप = पास, नजदीक, कि ओर। सना = चमक, नूर, Aura, आभा। Sun की आभा ही "सना" है। **Sun + आभा = सना** – यानी उपासना में बैठा व्यक्ति, जब यह प्रार्थना करता है कि, "मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो"। तो इसे ही उपासना कहते हैं। यानी प्रकाश (सना) के पास, जाने से व्यक्ति को ज्ञान हो जाता है। इसलिए इसे ही उपासना कहते हैं। क्योंकि सूर्य में ही आभा होती है, इसलिए सूर्य की उपासना, सबसे पहले की गई। अतः सबसे पहले मनुष्य ने, सना की उपासना की। इसलिए सना से सका नाम. "उपासना" पड़ गया। इसी से आगे चलकर, इसका नाम "सनातन" पड़ा।

सना + तन = सनातन -

इसलिए जिस किसी के तन में, आभा दिखाई देती है, उसी की उपासना होने लग जाती है। इसलिए जो लोग Sun की, आभा की उपासना करते हैं कि, "हमारे तन में भी सूर्य की आभा आए"। इसी कारण यह सनातन कहलाते हैं। इसलिए जो सना के उपासक होते हैं, वह उसी व्यक्ति को गुरु मानते हैं, जिस व्यक्ति के तन में सना होती है। यानी आभा होती है। चमक होती है। इसलिए व्यक्ति अपने तन को, चमकाने के लिए, भाँति-भाँति के उपाय करता है, जिससे उस व्यक्ति की उपासना होती रहे। इसलिए सनातन को मानने वाले लोग, तन को ज्यादा महत्त्व देते हैं। और अपने तन को आभान्वित रखने के लिए, भाँति-भाँति की साधनाएँ करते रहते हैं। जिसमें सबसे पहली साधना होती है "ब्रह्मचर्य" की। इसी ब्रह्मचर्य की साधना को, धर्म कहा गया है। इसलिए जो इस ब्रह्मचर्य रूपी धर्म की रक्षा करता है। बाद में यही ब्रह्मचर्य रूपी धर्म, उस साधक की रक्षा करता है। ब्रह्मचर्य = धर्म। इसलिए धर्म में ब्रह्मचर्य का बड़ा महत्त्व है। बिना ब्रह्मचर्य की रक्षा किये, धर्म की रक्षा करना असंभव है। इसलिए धर्म के रक्षक को, ब्रह्मचर्य की रक्षा करना आवश्यक होता है। इसलिए धर्म की रक्षा में, ब्रह्मचारियों को लगाया जाता है। इसी ब्रह्मचर्य का दूसरा नाम हनुमान है। क्योंकि हनुमान जी ही धर्म के रक्षक हैं। और बिना हनुमान जी के, धर्म की रक्षा नहीं हो सकती है। यानी बिना ब्रह्मचर्य के, धर्म की रक्षा नहीं हो सकती है। जो भी धर्म अपने ब्रह्मचर्य की, रक्षा करना छोड़ देता है, उस धर्म का पतन हो जाता है। क्योंकि धर्म और ब्रह्मचर्य दोनों, एक दूसरे के सहारे चलते हैं। यानी धर्म का पालन ही

ब्रह्मचर्य से होता है। इसलिए सना को सनातन रखना है, तो ब्रह्मचर्य रूपी धर्म की रक्षा करनी है, और हनुमान जी की तरह, अपने आपको ब्रह्मचारी बनाना है। जिससे धर्म रूपी ब्रह्मचर्य, सनातन की रक्षा करेगा। क्योंकि उसी के तन में सना (आभा) है, जिसके जिसके तन में, ब्रह्मचर्य रूपी धर्म है। इसलिए इसे "सनातन धर्म" कहते हैं। यानी ब्रह्मचर्य (धर्म) से जिससे तन में, सना (आभा) आ जाती है, उसे "सनातन धर्म" कहते हैं, यानी जो धर्म, ब्रह्मचर्य पर टिका है, वह धर्म ही, "सनातन धर्म" कहलाता है।

56. उखड़ना + जड़ = उजड़ना -

उखड़ना जड़ों का ही उजड़ना होता है। उखड़ना + जड़ = उजड़ना। जिस स्थान से जड़ें उखड़ जाती हैं, वह स्थान उजड़ जाता है। जड़ें तब उखड़ जाती हैं, जब जड़ों को भूमि में से, पानी नहीं मिलता है। अर्थात् जिस स्थान पर पानी नहीं रहता है, वह स्थान उजड़ जाता है।

57. उत्पन्न + कंठा = उत्कंठा –

उत्पन्न होती है जो कंठ से, उसे उत्कंठा कहते हैं। उत्पन्न + कंठा = उत्कंठा। उत्कंठा को रोकने के लिए, गले में कंठी पहनाई जाती है। कि किसी भी क्रिया की, प्रतिक्रिया में शीघ्रता नहीं करो। रुको, सोचो, विचार करो, कहने की आवश्यकता है, तभी कंठ से अपनी बात कहो। अन्यथा मौन रहो।

V

1. वशीयत - किसी को वश में करने के लिए उसके नाम की वसीयत की जाती है।

2. Web + वश = विवश -

Web (जाल) में फँसा और वश में किया गया व्यक्ति, यह दोनों ही विवश होते हैं।

3. व + ऋत = वृत्ति -

ऋतु ही वृत्त है। एक ऋतु आती है, हम उसके अनुसार चलते हैं। दूसरी ऋतु आती है, हम उसके अनुसार चलते हैं। पर एक प्रकार के लोग, योग के द्वारा इस वृत्ति का निरोध कर रहे हैं। प्राणायाम से सर्दी दूर करते हैं। दूसरे प्रकार के लोग संसाधन जुटाकर भोग करते हुए इस वृत्ति का निरोथ करते हैं। A.C. लगाकर गर्मी दूर करते हैं। परंतु वृत्ति वैसे ही चलते ही रहती है, उसे कोई नहीं रोक सकता है। क्योंकि पृथ्वी वृत्त में घूम रही है।

4. व्याकुल -

कुल वाले ही व्याकुल होते हैं, क्योंकि उन्होंने जो कुल में पढ़ा है। उसका अनुभव जल्दी से जल्दी करना चाहते हैं।

5. We + भक्त = विभक्त -

ऐसी घोषणा की, गई की जो भक्त हैं कि, "वो अलग खड़े हो जाए"। यही से विभक्त करने की शुरुआत हुई।

6. विश + ऐश + अण = विशेषण -

विशेषण तीन लोगों के लिए ही उपयोग किया जा सकता है - विषधर यानि भगवान शिव। ऐश्वर्यशाली यानि भगवान विष्णु। अन्नमय यानि भगवान ब्रह्मा।

7. Wish + मरण = विस्मरण -

जो किसी प्रकार की भी Wish लेकर मरता है, उसे कोई विस्मरण नहीं कर सकता है। इसीलिए जब कभी-भी उस तरह की Wish की बात होती है, तो मरनेवाले की याद स्वतः ही आ जाती है कि, "अरे उसकी भी यही ईच्छा थी"। इसीलिए न्यायलय में फाँसी प्राप्त करनेवाले अपराधी की आखिरी ईच्छा पूछी जाती है कि, "मरने से पहले तुम्हारी कोई Wish है"। यही है विस्मरण।

8. बको + बोलरी = Vocabulary -

यह दोनों ही Vocabulary बनाते हैं। कोई कहता है, "बको क्या काम है"? कोई कहती है कि, "बोलरी क्या बात है"?

9. विष + लेश + अणु = विश्लेषण -

विष का लेशमात्र अणु। अंग्रेज जब चिकित्सा करते थे, तो वह सबसे पहले यह देखते थे, कि शरीर में विष का लेशमात्र अणु कौन-सा है? जिसके अनुसार वो, उस विष का प्रतिरोधक उसको दे देते थे।

10. Valid = वालिद - जिनके वालिद होते हैं, वही Valid होते हैं। यही उनके लिए Wall एवं Lid होते हैं, जो उनकी रक्षा करते हैं।

11. Voice -

जैसी Ice खाएँगे वैसी Voice होगी। जैसा पानी पिएँगें वैसी वाणी होगी।

12. व्यय + Son = व्यसन -

Son के लिए व्यय करना ही व्ययसन है। जब लड़का खर्च करने लग जाता है। पिता को उसको खर्चा देने में कोई दिक्कत नहीं आती है।

13. वर्चस्व - वर का ही वर्चस्व रहता है।

14. Went + Later = Ventilator –

जब मनुष्य को Ventilator पर रखा जाता है, तो उसका मतलब यही है कि, "वह जायेगा परंतु बाद में यही है Ventilator".

15. Victim – जो विकट स्थिति में है, वह Victim है।

16. विल्वपत्र –

विल्वपत्र ही बेल पत्र हैं, यानि Bail पत्र, यानि बेलपत्र चढ़ाने से आदमी को Bail (जमानत) मिल जाती है।

17. वाम + पायर = Vampire –

वामपंथी तान्त्रिक पूजा करते हैं, जो भूत-पिशाचों, चुड़ैलों-डायनों को सिद्धि करते हैं, वही Vampire होते हैं।

18. वटवृक्ष = Banyan Tree –

जैसे वटवृक्ष होता है, वह अपनी शाखा नहीं बनाता है, वह सीधे जटा फैलाता है और उसकी जटा ही नीचे जमीन में जाकर जड़ बन जाती है, यानि वह वहीं से अपने लिए पानी लेने लगता है। ऐसे ही बनिया भी नई Branch नहीं खोलता, वह जड़ की तरह व्यापार करता है, वहीं से अपना लाभ कमाता है, इसीलिए उसे वटवृक्ष कहते हैं। इसी पर VAT का Tax लगाया गया है।

19. वय + मन + Say = वयमनस्य –

वय (शरीर) और मन का एक न होना ही वयमनस्य होता है।

20. Weak + कार्य = विकार –

Weak के द्वारा किया गये कार्य में, विकार होता ही है। Weak + कार्य = विकार। Weak कोई भी कार्य करे, उस कार्य में विकार रहता ही है।

Weak + Cash = विकास -

Weak के पास जब Cash आ जाता है, तब विकास अपने आप हो जाता है, Weak + Cash = विकास। इसलिए Weak हमेशा Cash को, प्राप्त करने में लगा रहता है। Cash की आमद रुकते ही, विकास रुक जाता है। और Cash की आमद, आम लोगों की आमदनी में से, की जाती है। आम लोगों को मिलनेवाली, दमणी को "आमदनी" कहते हैं। आम + दमणी = आमदनी।

Will + लाश = विलाश -

किसी की लाश पर, किसी की Will पूरी होती है, उसे विलाश कहते हैं। Will + लाश = विलाश।

जब किसी की लाश पड़ी हो, और उसकी Will पढ़ी जा रही हो, तब उसकी Will से जिसको, सम्पत्ति मिलती है। उस मिलनेवाली सम्पत्ति से, उस व्यक्ति के जीवन में, विलाश आ ही जाता है।

21. वित्त + रण = वितरण –

किसको कितना वित्त मिलना चाहिए, इसी वितरण के लिए ही तो रण होता है।

22. Van = वन – वन में जाने के लिए Van बनाई जाती है।

23. वीर + अजित = विराजित –

जो वीर होता है, वही अजित होता है, यानि उसको जीता नहीं जा सकता है।

24. Wish + तार = विस्तार –

Wish और तार इन दोनों का विस्तार कितना ही कर लो, कम नहीं होता है।

25. Wish + वास = विश्वास –

किसी की Wish (इच्छा) पूरी करो और उसमें वास करो, इस तरह आप किसी का विश्वास जीत सकते हो। लोग उसी का विश्वास करते हैं, जो उनकी Wish को पूरी करता है, Wish को पूरी करके वह उनमें वास करने लगते हैं।

26. Weak + आश = विकास –

Weak की आशा को ही विकास कहते हैं, क्योंकि वह अपने से नहीं चल सकता है, तो सोचता है, कि रेलगाड़ी, बस, कार, हवाई जहाज आदि का विकास हो, जिससे वह चल-फिर सके।

27. Won + Cheat = वनचित –

जो लोग जीतने के लिए Cheat करते हैं, उसे वनचित कहते हैं, यानि वैसे तो जीतने के लिए चित किया जाता है किसी को, पर जब उसे चित करने के लिए Cheat किया जाता है, तो उसे वनचित कहते हैं। यानि उसे हर चीज से वंचित कर दिया जाता है और उसे जीत लिया जाता है, और फिर हारने वाले को वन में जाकर अपना चित लगाने को कह दिया जाता है।

28. Will + आस = विलास –

जिसको दूसरे की सम्पत्ति मिलने की आस हो, वह विलासी जीवन व्यतीत करता है।

29. विश्व + अमित्र = विश्वामित्र –

विश्व का जो अमित्र है, यानि विश्व में जिसकी किसी के साथ मित्रता नहीं है, वही "विश्वामित्र" है।

30. Vocal + Ice = Voice –

Voice हमेशा Ice की तरह होती है, जैसे की जैसा पानी वैसी वाणी। तो Ice पानी की ही बनती है और वह जब पेट में जाती है, तो वैसी ही Voice निकलती है।

31. Vitamin – वित्त ही Vitamin है।

32. Visit = विजित – जिसको जीत लिया जाता है, उसी को ही Visit किया जाता है।

33. विसर्जित – जिसे विष देकर मारा जाता है, उसे सजाकर, विसर्जित किया जाता है।

34. विवाद + दास + पद = विवादास्पद -

विवाद तभी शुरू होता है, जब कोई दास किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त कर लेता है।

35. व्यय + स + आय = व्यवसाय -
कोई व्यय करता है, तो किसी की आय होती है, यही व्यवसाय है।

36. वर्ण + न = वर्णन –
जिसका कोई वर्ण नहीं होता है, उसी का वर्णन किया जाता है, क्योंकि वर्ण वाले की तो सभी बातें पहले से पता होती हैं।

37. Version = वर्जना –
हर कोई नया Version चाहता है। इसीलिए चीजों को नया रखने के लिए कुछ वर्जनाएँ होती हैं।

38. व्यय + स + आय = व्यवसाय -
कोई व्यय करता है, तो किसी की आय होती है, यही व्यवसाय है।

39. वर्ण + न = वर्णन –
जिसका कोई वर्ण नहीं होता है, उसी का वर्णन किया जाता है, समझाने के लिए कि, "वह कैसा आदमी है"।

40. वेद + ना = वेदना -
वेद (ज्ञान) का ना होना ही वेदना है। जब व्यक्ति यह सोचता है, काश मुझे इसका ज्ञान होता, तो मैं यह कर लेता। बस यही वेदना है।

41. वीर्य + रचित = विरचित - वीर्य के द्वारा जो रचा जाता है।

42. Wig + ज्ञान = विज्ञान - Wig का ज्ञान ही तो विज्ञान है।

43. Bank + कुबेर = Vancouver -
जो धनवान होते हैं, वह कनाडा क्यों जाते हैं ? क्योंकि वहाँ पर Bank हैं, जो कुबेर लोगों का धन जमा कर लेते हैं और उस धन की रक्षा करते हैं। इसी से वहाँ के एक शहर का नाम Vancouver है।

44. VISA = वजह –
वीजा को वजह या जिसको बाद में वजा बोला गया। यानि आप किस वजह या वजा से यह देश छोड़कर हमारे देश में आना चाहते हैं। यह वजह या वजा ही फिर VISA बन गई।

45. Valuable -
बल की ही Value है। जब तक आपके पास बल है, तभी तक आपकी Value है। इसलिए बल ही Valuable है।

46. विदेश -
जहाँ लोग With ऐश के साथ रहते हैं, उसे विदेश कहते। सभी को यही लगता है कि, "विदेशी लोग बड़े ऐश में रहते हैं"। जिनके पास Cash होता है, वही अमीर होते हैं। मीर लोग तो मीरासी होते हैं, गाते हैं, कमाते हैं।

47. Vaccine = बख्क्षीन – जब किसी को बख्क्षा जाता है, तो उसे Vaccine लगाई जाती है।

48. व्यय + अर्थ = व्यर्थ -
व्यय करने के लिए अर्थ की आवश्यकता होती है। अर्थ की व्ववस्था जहाँ की जाती है, वह अर्थ

व्यवस्था कहलाती है। किन्तु Earth पर कभी कोई वस्तु व्यय नहीं होती है। क्योंकि Earth हर वस्तु को Recycle कर देती है। इसलिए Earth जितनी है, उतनी ही रहती है। Earth कभी व्यर्थ नहीं होती है।

49. वर्ण + माला = वर्णमाला -

व्यक्ति को वर्ण एवं माला का प्रतिदिन अभ्यास करना चाहिए। व्यक्ति किसी भी भाषा को बोलने-लिखनेवाला हो, उसे अपनी भाषा के वर्णों का प्रतिदिन अभ्यास करना चाहिए। जैसे हिन्दी के वर्ण "अ" से "ज्ञ" तक हैं। इसी प्रकार व्यक्ति को अपने श्री गुरुदेव जी महाराज से प्राप्त "गुरु मन्त्र" की प्रतिदिन कम से कम एक माला तो फेरनी चाहिए। वर्णों के अभ्यास से शिक्षा एवं विद्या का संरक्षण होता है। गुरु मन्त्र की माला जपने से स्वयं का आध्यात्मिक विकास होता है। इसलिए वर्णमाला का अभ्यास प्रतिदिन करना अनिवार्य होना चाहिए।

50. व्यथा-

मनुष्य जब यहाँ-वहाँ व्यय करता है। और उसको सबको बताता फिरता है। यहाँ इसमें इतना व्यय किया था, वहाँ उसमें उतना व्यय किया था। व्यय किया था ही तो व्यय था यानि व्यथा है। यानि मनुष्य अपने द्वारा किये गए, खर्चे की चर्चा करता फिरता है, "कि तुझे ! क्या बताऊँ मैंने वहाँ कितना खर्चा किया था, सभी जानते हैं, मैंने पूरे खुल्ले हाथ खर्चा किया था"। इसी तरह मनुष्य अपने व्यय की व्यथा सबको बताता फिरता है।

51. We + चार = विचार -

अंतःकरण में मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, इन चार से ही विचार किया जाता है। अंतःकरण यानि अंतःकर्ण यानि अन्दर के कान हैं। यह चार यानि मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार ही अन्दर के कान को अपनी-अपनी बात बताते हैं। मन मन्तव्य देता है। बुद्धि बौद्धिकता देती है। चित्त से चिंतन किया जाता है। अहंकार कार्य की अहमता दर्शाता है। इन चारों का उपयोग कर, जो व्यक्ति कार्य करता है, उसे विचारवान कहते हैं।

52. विशेष + चार = विचार -

जहाँ चार लोग किसी विशेष विषय पर चर्चा करते हैं, उसे विचार कहते हैं। इसमें चार लोगों के चार विचार होते हैं।

53. वंश + शजर = वंशज -

वन, शजर से बनते हैं, जो वंश कहलाते हैं। शजर = पेड़। किसी भी वंश में पेड़ उस वंश की, पहचान कराते हैं।

54. व्यय + स + आय = व्यवसाय -

व्यय करो ऐसा कि, जिससे आय हो। व्यय + स + आय = व्यवसाय। व्यक्ति अपने श्रम का, व्यय करता है, श्रम करने से, व्यक्ति को आय होती है। यही व्यवसाय है। व्यक्ति अपने समय का, व्यय का करता है, व्यक्ति को उससे आय होती है। यही व्यवसाय है। व्यक्ति अपने हुनर का, व्यय करता है, हुनर का व्यय करने से, व्यक्ति को आय होती है। यही व्यवसाय है। आय से व्यक्ति की आयु बढ़ती है,

आय से व्यक्ति जीवित रहता है। इसलिये सभी का जी, वित्त में लगा रहता है। यही वित्त ही वित है।

55. वैदेही चरित्र -

ब्रह्मृषि वाल्मीकि ने, "रामायण" का नाम, पहले, "वैदेही चरित्र" रखा था। यह वैदेही चरित्र, विदेह राजा जनक की पुत्री, वैदेही के नाम पर रखा था। बाद में ब्रह्मृषि वाल्मीकि ने ब्रह्मृषि भारद्वाज के कहने पर वैदेही चरित्र का नाम बदलकर, रामायण रख दिया। ब्रह्मृषि वाल्मीकि के अनुसार, वैदेही ने बहुत कष्ट सहा था। पहले वनवास का कष्ट, बाद में भी, वनवास का कष्ट सहा था। इसलिए यह ग्रंथ, वैदेही के जीवन पर है। ब्रह्मृषि भारद्वाज का आना-जाना, अयोध्या के राज दरबार में था।

56. वर + रत = व्रत -

Fast करने के समय, जो Food खाया जाता है, उसे Fast Food कहते हैं। Fast करते समय जो Friend होता है, उसे Fast Friend कहते हैं। वर को प्राप्त करने के लिए, जब रत रहते हैं, उसे व्रत कहते हैं। वर + रत = व्रत।

57. Win + न + मर = विनम्र -

Win करनेवाला, नहीं मरता है। वही विनम्र कहलाता है। Win + न + मर = विनम्र। लोग उसी से विनम्रता से, पेश आते हैं, जो Win कर जाता है। जो हार जाता है, लोग उसकी तरफ, नजर भी नहीं फिराते हैं।

58. वैरी + अंत = Variant -

Variant Corona नामक वैरी का अंत होना चाहिए। वैरी + अंत = Variant.

59. वर + तन = व्रत -

वर को तन के लिए, माँगा जाता है। वर की प्राप्ति के लिए तन से व्रत रखा जाता है। वर + तन = व्रत। व्रत रखकर, जब भी कोई, कुछ माँगता है। तो वह अपने, तन के लिए ही, वर में माँगता है। जिसने भी वर माँगा है, वह वर तन के लिए ही, माँगा है।

60. वीच + रण = विचरण -

रण दे वीच, विचरण करना, किसी किसी को ही नसीब होता है। वीच + रण = विचरण। पर बात यह है कि, Which रण में, विचरण करना है। क्योंकि लोग रण दे वीच तें, Run कर जाते हैं। वीच + Run = विचरण।

61. विभक्त + भाजन = विभाजन -

विभक्त करके ही, किसी का भाजन किया, जाता है। विभक्त + भाजन = विभाजन। जब कोई किसी का, भाजन करना चाहता है, तब वह उसको, विभक्त कर देता है। इस प्रकार विभक्त करके, वह उसका भाजन कर लेता है। यानी जब कोई बड़ी वस्तु, खाई जाती है, तब उस बड़ी वस्तु के टुकड़े, कर लिए जाते हैं। फिर टुकड़े-टुकड़े करके, उस बड़ी वस्तु को खाया जाता है। इस प्रकार के भाजन से, बचने के लिए, व्यक्ति भजन करता है। भजन करने से कोई उसका, विभाजन नहीं कर पाता है। भजन करनेवाला भक्त कहलाता है। किंतु जब कोई, विशेष भक्त हो जाता है, तब वह विशेष भक्त, विभक्त कर देता है। विशेष + भक्त = विभक्त। इसीलिए जब कोई, विशेष प्रकार से भजन करते हुए, भक्ति

करे, तब समझ लेना चाहिए, यही विभक्त करेगा। और, भजन करनेवालों के, विभाजन का कारण बनेगा। इसीलिए, एक जैसा किया गया भजन, सभी में एकता लाता है और विशेष प्रकार से किया गया, भजन, विभाजन लेकर आता है। यानी जब कोई किसी की, प्रशंसा, विशेष रूप से करे, तब समझ जाना चाहिए, यह विशेष भक्त है। यह सभी को, किसी का भाजन बना देगा। इसीलिए विभाजन से बचने के लिए, सभी को एक ही प्रकार की, भजन पद्धति का, पालन करना चाहिए और विभाजन से बचे रहना चाहिए। यानी जो भजन, शास्त्र में लिखा गया, उतना ही करना चाहिए और शास्त्र में लिखी पद्धति के, अनुसार करना चाहिए। शास्त्र के अनुसार किया गया, भजन, किसी का भाजन, नहीं बनने देता है। भजन = माला जपना। भजन = Prayer = इबादत = प्रार्थना = अरदास। भाजन = किसी को, गाजर मूली की तरह समझना। और, गाजर मूली की तरह, उसका उपयोग कर लेना। इसीलिए जिस किसी का भी, भजन करो, उसके शास्त्र के अनुसार भजन करो।

62. वाद = वाद

जब, वाद होता है, तब वाद, दवा का काम करता है, वाद = दवा। Sum + वाद = संवाद। संवाद जोड़ने का काम करता है। विवाद विपरीत + वाद = विपरीत वाद, विवाद काम करता है।

63. वेश + भूसा = वेशभूषा - भूसा के द्वारा बनाए गए वेश को वेशभूषा कहते हैं।

64. We + जय = विजय -

"हम जीत गए", ही विजय कहलाती है। We + जय = विजय। मिलकर जब सब Try करते हैं, उसे Military कहते हैं। मिलकर + Try = Military। इसी मिलकर Try करने पर जो जय प्राप्त होती है, उसे कहते हैं कि, "हम जीत गए"। हम = We.

65. Will + लुप्त = विलुप्त -

Will हमेशा लुप्त हो जाती है। जब भी कोई व्यक्ति अपनी Will बनाता है, तो वह Will हमेशा लुप्त हो जाती है। Will + लुप्त = विलुप्त। व्यक्ति के द्वारा की गई वसीयत, हमेशा लुप्त हो जाती है, फिर उस वसीयत को ढूँढ़ा जाता है। ऐसे ही व्यक्ति की Will Power भी लुप्त हो जाती है, और उस लुप्त हुई Will Power को फिर से जगाया जाता है, यह कहकर कि, "तुमने ! यह प्रतिज्ञा ली थी, अब उस प्रतिज्ञा को पूरा करने का समय आ गया है"। जैसे कि भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन की Will Power को जगाया था।

66. वर + दान = वरदान -

देवताओं के द्वारा दिए गए वर एवं मनुष्यों के द्वारा दिए गए दान से यह संसार चलता है। वर + दान = वरदान। वर की प्राप्ति के लिए तपस्या करनी पड़ती है। दान की प्राप्ति के लिए पात्र बनना पड़ता है। इस तरह वरदान मिलता है। तपस्या आजकल कोई करता नहीं है, परंतु वर की चाह सबको है। पात्रता अर्जित कोई करता नहीं है, परंतु दान की चाह सबको है।

67. विद् + ध्यान + लय = विद्यालय -

ध्यान में जब लय लग जाती है, तब आप विद् हो जाते हैं, इसी के लिए विद्यालय बने होते हैं, जो आपको ध्यान में लय होने से, विद् करवाते हैं, विद् + ध्यान + लय = विद्यालय। जिससे आप ध्यान

में विद् हो जाते हैं, और विद्या को प्राप्त कर लेते हैं। विद् + ध्यान = विद्या। जितनी भी विद्याएं हैं, वह सब ध्यान में प्राप्त की गई हैं। इसीलिए विद्या को प्राप्त करना है, तो ध्यान लगाओ।

68. वर + ज्ञान = वर्ग -

जब वर ज्ञान के लिए मांगा जाता है, तब वह वर्ग कहलाता है। वर + ज्ञान = वर्ग। जब वर रण के लिए मांगा जाता है, तब वह वर्ण कहलाता है। वर + रण = वर्ण। इसलिए वर्ग में ज्ञान के आधार पर, वर्गीकरण किया जाता है। और वर्ण में रण के आधार पर, वर्णन किया जाता है। ज्ञान को प्राप्त करने से पहले, यह नहीं पूछा जाता है कि, "क्या तुम ज्ञान प्राप्त करोगे" ? किन्तु रण में जाने से पहले, यह अवश्य ही पूछा जाता है कि, "जो जो रण में जाना चाहता है, वह वह यह पान का बीड़ा उठा ले"। क्योंकि रण में शरीर के जाने का जोखिम है, इसलिए जो शरीर के जाने का, जोखिम उठाता है, वही रण में जाता है, और राणा कहलाता है। इस तरह यह वर्ण एवं वर्ग का अन्तर है।

69. व्यवहार + करना = व्याकरण -

व्यवहार करना जिससे आता है, उसे व्याकरण कहते हैं। ऐसे तो शब्द एवं वाक्य कोई भी बना लेता है, किन्तु, जब शब्द एवं वाक्यों को, एक उचित तरीके से, बनाया जाता है, तब उसे व्यवहार करना कहते हैं। व्याकरण में शब्दों का उचित रूप से, संयोजन कर वाक्यों को बनाया जाता है और उन बने वाक्यों से व्यवहार किया जाता है। इसलिए जो शब्द एवं वाक्य, व्यवहार करने का कारण बनते हैं, वह व्याकरण कहलाते हैं।

70. वाष्प + ईश्वर = वापिस -

वाष्प के माध्यम से, ईश्वर अपना सब कुछ, वापिस ले लेता है। वाष्प + ईश्वर = वापिस। इसलिए वाष्प ही, ईश्वर के पास जाती है। वाष्प की ऊष्मा में आत्मा रहती है। इसलिए सब में से, वाष्प निकल निकलकर, ईश्वर के पास वापिस चली जाती है। वाष्प से ही Spirit बनती हैं। Spirit से ही "Spiritual" शब्द बना है। यानी ऐसा Ritual, जिससे Spirit निकलती है, उसको Spiritual कहते हैं। Spirit + Ritual = Spiritual.

71. वर + जीत = वर्जित -

अगर आपको वर को जीतना है, तो आप व्रत में, वर्जित वस्तुओं का उपयोग नहीं करो। वर + जीत = वर्जित। जो व्यक्ति व्रत में वर्जित वस्तुओं का, उपयोग नहीं करता है, उसी व्यक्ति का व्रत पूरा होता है, और, वही व्यक्ति वर को जीत लेता है।

72. विशेष + मान = विमान -

जिन्हें विशेष मान से बुलाया जाता है, उनको विमान से बुलाया जाता है। विशेष + मान = विमान। जिनका आव्हान किया जाता है, उनको बुलाने के लिए, वाहन भेजा जाता है। आओ + वाहन = आव्हान। जिनको गाड़ने के लिए बुलाया जाता है, उनको गाड़ी से बुलाया जाता है। गाड़ + आ = गाड़ी। जिनको कार्य से बुलाया जाता है, उनको Car से बुलाया जाता है। Car = कार्य। जिनको दल में मिलाने के लिए, बुलाया जाता है, उन्हें पैदल बुलाया जाता है। पैर + दल = पैदल।

73. वर + रत = व्रत -

वर की प्राप्ति के लिए, जो रत रहता है, उसे ही व्रत कहते हैं। वर + रत = व्रत। कन्या के द्वारा वर की प्राप्ति के लिए, जो जो रत किया जाता है, वह सब व्रत कहलाता है। व्रत ऋतु के अनुसार किए जाते हैं, जब कन्या ऋतमति हो जाती है, तब कन्या के लिए, वर की तलाश प्रारंभ हो जाती है। तब कन्या उत्तम वर की प्राप्ति के लिए, ऋतुकाल से व्रत रखना प्रारंभ करती है। वर + ऋतु = व्रत। कन्या को व्रत के समय में, एक तपस्वी जैसा रहना होता है, इसलिए तपस्वियों का भोजन, रतालू एवं कंदमूल, व्रत में खाया जाता है। रतालू एवं कंदमूल का भोजन, वर की प्राप्ति तक कन्या में, कामवासना को उत्पन्न नहीं होने देता है। इसलिए कन्या को वर की प्राप्ति तक, तपस्वियों जैसा भोजन एवं, दिनचर्या अपनानी पड़ती है। क्योंकि ऋतुमति कन्या में, रति करने की मति आने लगती है। रति + मति = ऋतुमति। मति = बुद्धि। इसलिए कन्या को कहा जाता है कि, "रति मति करियो"। मति = नहीं। पृथ्वी की ऋतु एवं कन्या की ऋतु के अनुसार व्रत दो प्रकार के होते हैं। जब पृथ्वी की ऋतु बदलती है, तब पुरुष में रति करने की इच्छा, उत्पन्न होती है। किन्तु जिस पुरुष ने व्रत लिया हुआ, उस पुरुष को तपस्वी, जीवन जीना होता है। इसलिए व्रत में केवल, आलू खाया जाता है, जिसे रतालू कहते हैं। रत + आलू = रतालू। रतालू को कंदमूल भी कहते हैं, क्योंकि कंदमूल केवल, तपस्वियों के द्वारा ही खाए जाते हैं। क्योंकि तपस्वी, जीवन भर का व्रत लेते हैं, इसलिए केवल रतालू ही खाते हैं। रतालू खाने से तपस्वियों का मन, ब्रह्म में लगा रहता है, इसलिए तपस्वियों को ब्राह्मण कहते हैं। ब्रह्म + मन = ब्राह्मण। तपस्वियों का मन ब्रह्म में लगने से, तपस्वियों को ब्रह्म ज्ञान होता है, इसलिए तपस्वियों को "ब्रह्मज्ञानी" कहते हैं। जिस प्रकार से भगवा कपड़ा, बाजार में बेच नहीं सकते हैं, उसी प्रकार से रतालू एवं कंदमूल भी, बाजार में नहीं बेच सकते हैं। क्योंकि जो भगवान की प्राप्ति में, लग जाते हैं, वह ही भगवा कपड़ा पहनते हैं। भगवा + वान = भगवान। इसलिए भगवा कपड़ा पहनने वाले को, लोग कहते हैं कि, "यह तो भगवान का आदमी है, इससे क्या पैसे लेना"। और तपस्वियों के लिए भोजन केवल, रतालू एवं कंदमूल है। सांसारिक लोग इन दोनो वस्तुओं का, उपयोग नहीं करते हैं, इसलिए इन दोनों वस्तुओं को, बाजार में नहीं बेचते हैं। यह दोनों वस्तुएं व्रत करने वालों, भगवान को प्राप्त करने वालों एवं तपस्या करने वालों के लिए छोड़ रखी हैं। इन दोनों वस्तुओं का बाजारीकरण, नहीं होता है, न ही खरीदा जाता है और न ही बेचा जाता है। ईश ही वर देते हैं, इसलिए "ईश्वर" कहलाते हैं। ईश + वर = ईश्वर। इसलिए जो भी किसी को वर देता है, वह ही उसके लिए, "ईश्वर" हो जाता है। और अपने ईश से, वर को प्राप्त करनेवाला, अपने ईश्वर के चरणों में, अपना शीश नवा देता है। प्रत्येक प्राणी का ईश्वर उसका धान है। ईश्वर + प्रणि + धान = ईश्वर प्रणिधान। धान ही तो अन्न है, और अन्न ही ब्रह्म है। धान से ही धन बना। धन को देकर धान खरीदते हैं। इसलिए सबके प्राण, धन में लगे रहते हैं। इसलिए धन को भी ईश्वर का, दर्जा मिला हुआ है। और धनी व्यक्ति का पता, धनिया से चलता है, क्योंकि धनी व्यक्ति के यहां पकी हुई, दाल, साग, सब्जी, भाजी में, ऊपर से धनिया पत्ती को डाला दिया जाता है। यह दिखाने के लिए कि, वह धनी व्यक्ति है। इसलिए व्यक्ति धन को प्राप्त करने में, लग जाता है कि, धन को प्राप्त करके, ईश्वर को धन चढ़ा करके, लोगों में धान का दान देकर, ईश्वर से वर की प्राप्ति कर लेगा। किन्तु वर तो व्रत करने पर मिलता है, इसलिए जो जो वर, जिस जिस ईश्वर का व्रत

करने पर मिलता है, व्यक्ति उस उस ईश्वर का व्रत करके, उस उस ईश्वर से वर की प्राप्ति करता है। किन्तु प्राणी को अगर ईश्वर ही चाहिए, तो प्राणी को ध्यान करना चाहिए। ध्यान करने से प्राणी को ईश्वर की, प्राप्ति हो जाती है। ईश्वर + प्रणि + ध्यान = ईश्वर प्रणि धान। इसलिए जो ईष्ट वर देता है, उसी को "वरिष्ठ" कहा जाता है। वर + ईष्ट = वरिष्ठ। इसलिए लोगों से कहा जाता है कि, "अपने-अपने ईष्ट का व्रत रखो एवं अपने-अपने ईष्ट से वर की प्राप्ति करो"। ईष्ट तो East को कहा जाता है, East को पूर्व कहा गया है, आपसे पूर्व जो जन्में, उन्हें पूर्वज कहा जाता है। पूर्व + जन्म = पूर्वज। तो आपके पूर्वज ही आपके ईष्ट हैं, अपने पूर्वजों के लिए व्रत रखो और अपने पूर्वजों से वर मांगो। अपने पूर्वजों के लिए, अपने पूर्वजों के स्थान पर, रोज़ सूरज ढलने के बाद, एक दीपक जलाकर उजियारा करो। इस तरह अपने पूर्वजों की पूजा करो। पूर्वजों + उजियारा = पूजा। और अपने पूर्वजों के लिए, उजियारी करते हुए पुजारी बन जाओ। पूर्वज + उजियारी = पुजारी। आपके पुरखे ही आपके ईश्वर हैं, यही पुरखे आपको वर देंगे। इन्हीं पुरखों के सान्निध्य में व्रत रखो। यही आपके व्रत को पूरा करेंगे। अपने अपने पुरखों के नाम का दीपक, रोज़ सूरज ढलने के बाद रोशन करो। आपके पुरखे ही, आपकी ज़िन्दगी को रोशन कर देंगे।

74. Visual + दिखाओ = Video – Visual दिखाओ से "Video", शब्द बना है।

75. विद्वान + द्रोह = विद्रोह -

विद्वान के द्वारा किया गया द्रोह, विद्रोह कहलाता है। विद्वान + द्रोह = विद्रोह। जब किसी की रूह को, डराया जाता है, तब व्यक्ति जो करता है, उसे द्रोह कहते हैं। डर + रूह = द्रोह। जैसे - आचार्य चाणक्य का विद्रोह।

76. विद् + ध्यान = विद्या -

विद् हमेशा ध्यान से उपलब्ध होता है। विद् + ध्यान = विद्या। विद् = ज्ञान। विद् को ज्ञान कहते हैं। और ध्यान करने पर, ज्ञान की उपलब्धि होती है, इसी ज्ञान को विद्या कहते हैं।

77. बौद्ध + इक = बौद्ध -

बौद्ध लोग जब एक हो जाते हैं, तब उन्हें "बौद्धिक" कहते हैं। बौद्ध + इक = बौद्ध। बुद्धि ही बुद्ध बनाती है, बुद्ध होने पर लोग, बौद्ध बन जाते हैं। बुद्धि वाले को मान मिलता है, और बुद्धि वाला दूसरे को, मान देता है। बुद्धि + मान = बुद्धिमान। और बुद्धिमान की बात मानी जाती है, उसे बुद्धिमानी कहते हैं। बुद्धि + मानी = बुद्धिमानी। बुद्धिमानी इसी में है कि, बौद्ध लोग इक होकर रहें और बौद्धिक कहलाएं। बौद्धिक होना ही आजकल, सम्पदा माना जाता है। बौद्धिक सम्पदा = Intellectual Property. इसलिए Computer के बौद्धिकत्त्व को भी "Intel Lectual" कहते हैं और Computer के Intel Lectual की Power से सभी वाकिफ हैं। क्योंकि आज का विश्व Intel Lectual पर ही तो चल रहा है। Intel + Lectual = Intellectual. इसलिए Computer का Intel, पूरे Computer को इक करके रखता है। और बौद्ध भी सभी को इक करके रखते हैं। इसलिए बौद्धिक लोग हमेशा, इक होकर रहते हैं। बौद्धिक = Intellectual.

78. विशेष + वाह = विवाह -

विशेष रूप से जब लोग, यह बोलने लगें कि, "वाह ! क्या काम किया है" । तब उसे विवाह कहते हैं। विशेष + वाह = विवाह। विवाह में विशेष रूप से, वाह मिलती है। यानी लोग बोलते हैं कि, "वाह ! यह तुमने बहुत अच्छा किया कि, शादी कर ली"।

79. वैर + राग = वैरागी - बैर और राग से दूर रहनेवाला, वैरागी होता है।

80. विरोधी + पक्ष + रीत = विपरीत -

विरोधी पक्ष की रीत मनाना ही, विपरीत होती है। विरोधी + पक्ष + रीत = विपरीत। अपने पक्ष की रीत को छोड़कर, जब कोई व्यक्ति विरोधी पक्ष की, रीत को मनाता है, तब उस व्यक्ति को कहते हैं कि, 'यह हमारे विपरीत है'। इसीलिए रीत को करवाया जाता है कि, ताकि यह पता तो चले कि, हमारे पक्ष का कौन है ? और विरोधी पक्ष का कौन है ?

81. Win + न + मरता = विनम्रता - जिसको Win करना है, वह नहीं मरता है।

82. वीर + राजा + मान = विराजमान –

वीर और राजा का मान किया जाता है। वीर + राजा + मान = विराजमान। जो व्यक्ति वीर होता है, या जो व्यक्ति राजा होता है, उसी को मान दिया जाता है। क्योंकि वीर व्यक्ति और राजा की, बात को मान लिया जाता है। और जिसकी बात को मान लिया जाता है, इस तरह उसे ही मान दिया जाता है। इसलिए जब भी वीर व्यक्ति या राजा, किसी के यहां आता है, तो उस वीर व्यक्ति या राजा को, मान देने के लिए सभी लोग तुरन्त खड़े हो जाते हैं। और वीर व्यक्ति या राजा को, आसन पर विराजमान, होने के लिए आग्रह करते हैं। 'अरे ! अरे ! आईए ! बैठिए, अरे ! यहां पर बैठिए। हमें ! बहुत अच्छा लगा, जो आप हमारे यहां पर आए। आपके आने से हमारा मान बढ़ गया'। इस तरह से वीर व्यक्ति या राजा को, मान मिलता है। इसे ही विराजमान कहते।

83. वितरण + ज्ञापन = विज्ञापन -

जब वितरण करते हैं ज्ञापन का, तब उसे विज्ञापन कहते हैं। वितरण + ज्ञापन = विज्ञापन। यानी जब किसी भी ज्ञापन को, हम सबको बताते हैं, तब उस ज्ञापन का वितरण करते है, इसे ही विज्ञापन कहते हैं। और वित्त का रण जब होता है, तब उसे वितरण कहते हैं। वित्त + रण = वितरण। यानी जब व्यक्ति अपने वित्त को, दूसरे के वित्त से अधिक बताता है, तब जो रण होता है, उसे वितरण कहते हैं। इसे ऐसा कहते हैं कि, "अरे ! उसने तो इतने धन का वितरण किया। अरे ! उसने तो इतने धन की यह वस्तु वितरण की।" तब दूसरा भी अपने धन को दिखाने के लिए, उससे ज्यादा धन का वितरण करता है और इस धन का सबसे ज्यादा Showoff, शादी-ब्याह में ही किया जाता है। कि, 'फलाने ने तो अपनी शादी में इतना खर्चा किया, उसके जितना खर्चा तो, आज तक किसी ने नहीं किया।' इसी Showoff को ही, वितरण कहा जाता है। इसी वितरण से तो सभी को ज्ञापित होता है, कि उसके पास इतना धन, इसलिए इसे ही विज्ञापन कहा जाता है। यानी व्यक्ति अपने वित्त का वितरण करके, अपना विज्ञापन करता है। इसलिए किसी को अपना विज्ञापन करना है, तो इसके लिए अपने वित्त का वितरण करो और अपना विज्ञापन करो। जिस तरह से हातिम-अल-ताई एवं राजा विक्रमादित्य, और कर्ण आदि बहुत से लोग, प्रातःकाल अपने वित्त का वितरण करते थे। जिसे दान करना कहा जाता

था। वित्त के इसी वितरण से, यह लोग अपना विज्ञापन करते थे।

W

1. Wilson -
Will वाला Son ही तो Wilson है। यानि जिसमें आदमी अपनी वसीयत (Will) के अनुसार जिसको देता है, वह उसका Son ही उसका Wilson होता है।
2. Wedding - वेद के अनुसार शादी करना Wedding है।
3. वर + ऋत + अंत = वृत्तांत -
व्यक्ति तीन ही चीजों का तो वृत्तांत सुनना चाहता है। वर का यानि दूल्हे का - जब बारात द्वारे पर आती है और दूल्हा देखने दुल्हन की सहेलियां जाती हैं, दूल्हे को देखकर वापस दुल्हन के पास आती हैं। तो दुल्हन उनसे वर (दूल्हे) के बारे में पूछती है। ऋत - जब ऋतु आती है, तो कवि लोग ऋतु का वर्णन कर, पूरा काव्य लिख डालते हैं। अंत - जब किसी का अंत हो जाता है, तो उसके पूरे जीवन के बारे में सुनाया जाता है। बस यही वृत्तांत का अर्थ है।
4. Wash + ना = वासना - जो Wash नहीं होती है, वह वासना है।
5. Wicket -
क्रिकेट में जब कोई बाल को नहीं मार पाता था, तो वह विकट स्तिथि में आ जाता था, तो उसको Wicket बोलते हैं।
6. वरिष्ठ = Wrist -
वर की Wrist पर, धागा बाँधकर, एक रिश्ता बनाया जाता है और जिसमें वर को वरिष्ठ बनाया जाता है।
7. Weak + राल = विकराल –
Weak की ही राल निकलती है, यानि जो कमजोर होता है, उसी की लार निकलती है। यह लार निकलने का मतलब है कि, उसका हृदय कमजोर हो रहा है।
8. Week + अल्प = विकल्प -
Week लोगों को अल्प मिलता है। जिससे उन्हें कोई विकल्प ढूँढना पड़ता है।
9. वर्चस्व - वर का ही वर्चस्व होता है।
10. ऋण + कल = Wrinkle -
ऋण लेने वाले व्यक्ति के चेहरे पर Wrinkle जल्दी आ जाते हैं, क्योंकि एक तो ऋण लेने की चिंता की लकीरें बार-बार आने से Wrinkle (झुर्रियाँ) बन जाती हैं। दूसरी वह धन अभाव के कारण अच्छा खा-पी नहीं सकता, इसलिए जल्दी बूढ़ा हो जाता है और उसको Wrinkle आ जाते हैं और वह ऋण वापस मांगने पर कहता है कि, "ऋण आज नहीं, कल वापस करेगा यानि तुम्हारा ऋण कल चुका दूँगा"।
11. Web + सीते = Website –
जाल जो सीता को फँसाने के लिए बुना गया, वह है Website. यानि जब रावण ने सीता को फंसाने

के जो षडयंत्र बुना वह Website ही है।

12. Win + नाश = विनाश –

Win करने के लिए नाश करना पड़ता है, यानि जीतने के लिए नाश करना पड़ता है, यही विनाश कहलाता है।

13. वित + रण = वितरण –

वित्त के लिए ही तो रण होता है, यानि जब धन का बराबर वितरण नहीं होता है, तो फिर रण (युद्ध) होता है।

14. Won + डर = Wonder –

जीतना अपने डर को, यही सबसे बड़ा Wonder है, कि आप अपने डर को जीत लें।

15. वह + Eat = Wheat – वह जिसे खाया जाता है, वह है Wheat.

16. Will + आयात = विलायत –

Will करके किसी को आयात किया जाता है, वह है विलायत।

17. War + Ship = Worship – War और Ship में जाने से पहले Worship की जाती है।

18. बाई + पर = Wiper –

परि के परों से ही Wiper बना और परी फिर बाई बन गई, जो दूसरों के घरों में काम करती है, यानि परी के परों को काट दो तो वह फिर उड़ नहीं सकती है, और हमेशा आदमी के पास रह जाती है, और आदमी फिर उसे बाई बना कर रख लेता है।

19. वकार – कार से ही वकार है। किसी की इज्जत कार से ही होती है।

20. वात + अर = Water –

वात को खतम करने वाला Water है। पानी पीने से शरीर की वायु खतम हो जाती है।

21. विनती – Win करनेवाले से ही विनती की जाती है।

22. वह + हम = वहम –

हम का होना ही वहम है, यानि लोगों को लगता है कि, "वह हमारे साथ हैं"। किंतु जब समय आता है, तो उनका यह वहम टूट जाता है, यही वहम है।

23. वाह-वाह – वाह-वाह कहकर किसी की हवा फैलाई जाती है।

24. Weak + अल्प = विकल्प –

Weak लोगों के पास अल्प (कम) होता है, उनके पास कोई विकल्प नहीं होता है।

25. We + चार = विचार –

जब चार लोग बैठ कर किसी पर अपने मत प्रदान करते हैं, उसे विचार कहते हैं।

26. Whip + रीत = विपरीत –

जो लोग Whip जारी करते हैं, जो के रीत के विरुद्ध होते हैं, वही विपरीत होते हैं।

27. With + आई = विदाई –

जब दुल्हन की विदाई होती है, तो वह अपने साथ बहुत सारा सामान लेकर के ससुराल जाती है, तो

ससुराल वाले पूछते हैं कि, "किसके साथ आई है ? क्या-क्या लाई है" ? बस यही विदाई है।

28. Won + डर = Wonder – डर पर Won करना ही तो Wonder है।

29. वर्दी – वर देने वाले, वर्दी भी देते हैं।

30. Walk = वाक् –

शाम के समय भोजन के बाद सभी घूमने जाते हैं, और साथ-साथ में बातें करते जाते हैं, उस समय की गई बातों को यानि वाक् को अंग्रेजों ने Walk लिखा।

31. वाकिफ – Walk करते-करते एक-दूसरे से बातें करते हैं, तो एक-दूसरे से वाकिफ हो जाते हैं।

32. वाणी + जय = वाणिज्य –

वाणी की जय ही वाणिज्य है यानि व्यापार में जो वाणी एक बार दे दी बस उसी को माना जाता है, उसी पर सौदा होता है।

33. Weak + अंग = विकलांग – जिसके अंग Weak होते हैं वही विकलांग होते हैं।

34. वाई + की + पीढियाँ = Wikipedia –

जहाँ पर किसी की पीढियों का ज्ञान होता है, वह Wikipedia होता है। यानि जब कोई कहता है कि, "मैं तो वाई की पीढ़ियाँ तक को जानता हूँ"।

35. War + में = Warm – War में जाने के लिए गर्म होना पड़ता है।

36. Well + Come = Welcome -

Well, का मतलब होता है अच्छे, Come का मतलब होता है आना, यानि जब कोई किसी के घर पर आता है तो उसको कहते हैं कि, "अच्छा किया जो आप हमारे यहाँ पर आए, आपका स्वागत है" । Welcome शब्द तमिल शब्द वणक्कम् से बना है। वणक्कम् = Welcome. वणक्कम् का अर्थ होता है स्वागत। यानि स्व + आगत।

37. We + भाग = विभाग -

जब किसी वस्तु के बहुत से दावेदार होते हैं। तो उसके भाग किए जाते और सभी में बराबर बाँटे जाते हैं, सभी कहते हैं कि, "हमारा भाग, हमारा भाग" यही है विभाग।

38. Will + लक्षण = विलक्षण -

आपको किसी के लक्षण जानने हैं, तो आप उसके नाम पर Will कर दीजिए। उसके लक्षण प्रकट हो जाएंगे। वह आपको विलक्षण लगेगा।

39. बेवकूफ या Webकूफ -

Web (Internet) से ज्ञान प्राप्त करके अपने आपको ज्ञानी (Intelligent) कहलाते हैं, वह Webकूफ ही बेबकूफ होते हैं।

40. बावन + डर = बवंडर -

एक वर्ष में बावन सप्ताह होते हैं। यह बावन सप्ताह कैसे बीतेंगे, यही डर सबको रहता है। सभी यही सोचते हैं, कि चलो यह साल तो जैसे-तैसे बीत गया, अब यह आनेवाला साल कैसे बीतेगा? यह बावन सप्ताह का डर ही बवंडर है। जो इस बवंडर को भली-भाँति पूरा कर लेता है, तो लोग

आश्चर्यचकित होकर कहते हैं, "Wow!!! Wonderful!!! You have completed it". यानि डर को Won करनेवाले को, लोग "Wow!!! Wonder" कहते हैं। इसलिए जब लोग इस बवंडर को पूरा कर लेते हैं, तो उत्सव मनाते हैं। लोग उसे नये वर्ष का Celebration कहते हैं। जबकि जो वर्ष ठीक-ठाक गुजर गया है, उसकी प्रसन्नता है। इसलिए इस प्रसन्नता में बचा हुआ अन्न-पानी खा-पी जाते हैं, और फिर आगे के बावन सप्ताह के इंतजाम में जुट जाते हैं। यही बवंडर है। इसी बवंडर से सब बचना चाहते हैं, किन्तु बावन सप्ताह के डर से कोई नहीं बच सकता है। इसका एक ही उपाय है कि, बावन सप्ताह निकालने का इंतजाम कर लो। बावन के डर को जीत लो। Wonder पैदा कर दो, Wonderful हो जाओ। अपने मन में बावन के डर का बवंडर मत फैलाओ।

41. Work + King = Working -

Work is King. जो कार्य करता है, वही राजा होता है। इसलिए राजा को बहुत सारा कार्य करते रहना है।

42. विम + अर्श = विमर्श -

विम कहते हैं "आकाश" को। अर्श कहते हैं "सफाई" को। विमर्श यानि आकाश साफ। जैसे विमयान है। कालांतर में विमान हो गया। विम यानि आकाश। यान यानि गाड़ी। विमयान यानि आकाश का यान। विमयान से यह विमान हो गया, क्योंकि फिर विमयान में आनेवाले को विशेष मान मिलने लगा, तो धीरे-धीरे विशेष मान से विमान हो गया। विमर्श यानि आकाश साफ। आकाश के साफ होने पर ही व्यक्ति विमर्श कर पाता है। कहीं-कहीं अर्श को आकाश भी कहते हैं। कहीं-कहीं Wim को साफ भी कहते हैं। दोनों ही ठीक हैं, क्योंकि आकाश ही साफ रहता है और साफ ही आकाश होता है। विमर्श से उद्धृत एक शब्द है, "परामर्श"। परम + अर्श = परमार्श। परम = परमात्मा। अर्श = आकाश। परमात्मा जो आकाश पर रहता है, वही परमात्मा साफ होता है। तो जमीन पर जो व्यक्ति साफ हो उसी से परामर्श और विमर्श किया जाता है। यानि जो व्यक्ति बात को स्पष्ट तरीके से सुने, समझे और फिर बिना किसी लाग-लपेट के परामर्श दे। ऐसे आकाश जैसे साफ व्यक्ति से ही विमर्श और परामर्श करना चाहिए। यानि न समझ आनेवाली बात को किसी से कहना यह "विमर्श" है और किसी के द्वारा साफ-साफ बात समझाना, यह "परामर्श" है।

43. Writer - जो Right होता है, वही Writer होता है।

44. Wig + यान = विज्ञान -

विज्ञान दो वस्तुओं को प्रदान करता है। पहली Wig और दूसरी यान। मनुष्य के बाल कभी नये नहीं आते हैं। इसलिए मनुष्य को युवा दिखने के लिए Wig पहननी पड़ती है। यानि व्यक्ति बाहर से तो युवा दिखता, किन्तु भीतर से आयु बढ़ती जाती है। इसी का नाम ढोंग है। सत्य को छुपाना और असत्य को दिखाना। पुराना यान कभी काम नहीं आता है, इसलिए विज्ञान नया यान देता जाता है। विज्ञान नित नयी वस्तुएँ देता है, क्योंकि वैज्ञानिकता के दौर में, विज्ञान की पुरानी वस्तुएँ चल नहीं पाती हैं, धीरे-धीरे जंग खा जाती हैं और किसी काम नहीं आती हैं।

45. Wish + ईष्ट = विशिष्ट -

सभी की ईच्छाऔं को उनके ईष्ट ही पूर्ण करते हैं, इसलिए वह विशिष्ट होते हैं।

46. Will + Live = विल्व -

Will = ईच्छा, Live = जीना। जीने की ईच्छा सभी की है। विल्व पत्र द्वारा हम जीने की ईच्छा प्रकट करते हैं। विल्व हमें जीवन जीने के लिए Will Power देता है। जिससे जीवन जीने की ईच्छा बनी रहे ओर जो हमारे को Will Power प्रदान करें और हमें जीवन दे, वह है विल्व पत्र।

47. वह + ऋक्ष = वृक्ष -

वृक्ष वह जो ऋक्ष है। जिस पेड़ पर ऋक्ष (रीछ, भालू) चड़ जाता है, उस पेड़ को वृक्ष कहते हैं। वर + ईक्ष = वृक्ष, जिस पेड़ से वर मिलने की ईच्छा पूरी होती है, उस पेड़ को वृक्ष कहते हैं। यानि जिस पेड़ की परिक्रमा करके, पेड़ को धागा बाँधा जाता है, और फिर उस पेड़ से वर प्राप्ति की ईच्छा माँगी जाती है, उस पेड़ को वृक्ष कहते हैं। जैसे पीपल का वृक्ष, बड़ का वृक्ष, आँवले का वृक्ष आदि। या फिर फर का वृक्ष जिसे Christmas Tree कहते हैं। वर कहते हैं शक्ति को, ताकत को, Power को यानि - पा + वर = परमात्मा से वर को पाना। परमात्मा जब शक्ति देगा तो Power आ ही जाएगी। वृक्ष की खासियत होती है कि, आप वृक्ष में पानी डालो, पानी यानि H2O तो वृक्ष Hydrogen रख लेता है, और Oxygen हमें दे देता है। वृक्ष पानी में से Oxygen को निकालने का प्राकृतिक माध्यम है। Oxygen ही Power है। जो परमात्मा वृक्ष के माध्यम से सभी प्राणियों को प्रदान करता है।

48. Wisdom (बुद्धिमत्ता) and Knowledge (ज्ञान) -

Wise + Dom = Wisdom. एक Wise व्यक्ति में Dom (निर्णय) करने की शक्ति होती है। Dom एक Swedish शब्द है, जिसका अर्थ है निर्णय। इसलिए जब आपने निर्णय लेने की शक्ति प्राप्त कर ली, तो उसे ज्ञान कहा जाता है। Know + Ledge = Knowledge. Know का अर्थ है समझना। Ledge का अर्थ है सीमा। जब आप अपनी सीमाओं को समझते हैं, तो इसे Knowledge कहा जाता है। एक Wise व्यक्ति, अपनी सीमा को जानकर ही निर्णय लेता है, यही Wisdom और Knowledge की पहचान है।

49. Rest + लिंग = Wrestling –

जो व्यक्ति अपने लिंग को Rest देता है, वही Wrestling कर सकता है। पहलवान का ब्रह्मचारी होना सबसे प्रथम एवं आवश्यक नियम है।

50. Wine + heat = Wheat -

Wheat में Heat होती है, इसलिए Wheat को खाते ही शरीर में, गर्मी महसूस होती है। इसलिए Wheat को सड़ाकर शराब बनाई जाती है, जिसे Wine कहते हैं। Wheat को खाया नहीं जाता है, इसलिए जब कोई अंग्रेजी Wheat को देखता है, तो कहता है Who Eat This ? यानि, Who + Eat = Wheat.

51. Will + आयत = विलायत -

ईसाई धर्म में, ईच्छा की प्राप्ति के लिए, Will की जाती है। ईस्लाम धर्म में, ईच्छा की प्राप्ति के लिए, दुआ की आयत होती हैं। इसलिए इन दोनों का जुड़ाव, Will + आयत = विलायत है। अगर

विलायत में यति को, और जोड़ दिया जाए तो, विलायत + यति = विलायती, हो जाता है। यति यानी यत्न करने में, अति करनेवाला। अर्थात पूर्ण परिश्रम करनेवाला। हिन्दू धर्म में, ईच्छा की प्राप्ति के लिए, स्तुति का प्रावधान है। अपने स्तर से ऊपर जो, होता है, उसकी स्तुति की जाती है। जिससे वह प्रसन्न होता है, और इच्छित ईच्छा को पूर्ण करता है।

52. Work + King = Working -

यहीं से अहंकार की, यात्रा प्रारंभ होती है। काम से क्रोध, क्रोध से लोभ, लोभ से मोह, मोह से अहंकार और अहंकार विनाश का कारण है। तो उस काम को क्यों किया जाए, जो विनाश का कारण बने। क्योंकि कहनेवाला, आपकी क्षमता जानता है कि, आप यह काम, कर सकते हैं कि नहीं, और, अपनी क्षमता से अधिक, किया जानेवाला काम, हमेशा बोझ ही बन जाता है। हाँ काम के स्थान पर, कर्म या फिर कार्य का नाम, दिया जाए, तब कर्म को धर्म के साथ, किया जाता है। कर्म का फल भी प्राप्त होता है। कार्य को Work भी कहा जाता है, फिर Work ही King भी बना देता है। इसलिए Work + King = Working. काम तो मनुष्य का, सबसे बड़ा शत्रु है। काम की यात्रा अहंकार तक है, इसलिए, अहम से जो भी कार्य किया जाता है, या जो भी कार्य अहम होता है, वह अहंकार को जन्म देता है, और, अहंकारी व्यक्ति किसी का, साथ नहीं लेता है, सारे कार्य अकेले ही करता है, अहंकार से ग्रसित होता जाता है, आखिर में उसका, हश्र रावण की तरह होता है, क्योंकि काम से बचने के लिए राम का ही उपयोग किया जाता है।

53. Wish + अर्जन = विसर्जन – Wish का अर्जन करने के बाद, विसर्जन कर दिया जाता है।

54. वाम + मन = वामन -

वाम मन का हो जाना ही, वामन होता है। वाम मन तभी होता है, जब वाम की वस्तुओं का, सेवन करता है। वाम के पंच मकार में, मदिरा भी एक मकार है। मदिरा का सेवन, Peg में किया जाता है। मदिरापान करते ही, व्यक्ति में बल आ जाता है। जिसके कारण, व्यक्ति बलि कहलाता है। मदिरा के पहले Peg का, सेवन करते ही, व्यक्ति का शरीर, एक पग के सहारे, चलता है। मदिरा के दूसरे Peg का, सेवन करते ही, व्यक्ति के दोनों पग, हवा में चलने लगते हैं, उसे ऐसा लगता है, वह आकाश में, उड़ रहा है। मदिरा के तीसरे Peg का, सेवन करते ही, मदिरा व्यक्ति के, सिर पर चढ़ जाती है, तब व्यक्ति बहकी-बहकी, बातें करता है और पूछता है, तीसरा पग कहाँ रखूँ। क्योंकि मदिरापान के, पश्चात उसे जमीन नहीं दिखाई देती है। जिसके कारण व्यक्ति, जमीन पर गिर जाता है। और व्यक्ति का पूरा, पतन हो जाता है, जिसे पत All कहते हैं। पत + All = पाताल। फिर उस व्यक्ति की पत्नी ही उस व्यक्ति को मुख्य जीवन में पुनः लेकर आती है।

55. Wish + मरण = विस्मरण -

Wish जो पूछी जाती है, मरण के समय, वही विस्मरण कहलाती है। मृत्युदंड देते समय, आखिरी Wish पूछी जाती है। सामान्य सामाजिक स्थिति में, आदमी जब मरण अवस्था पर होता है। तब मरता हुआ आदमी कहता है कि, "मेरी यह ईच्छा है कि, मैं इसका व्याह देखकर मरुँ"। तो इन दो परिस्थितियों में, व्यक्ति जो Wish करता है। वह Wish कभी भी, विस्मरण नहीं होती हैं।

56. Wish + ऐश = विशेष - जो अपनी Wish अनुसार ऐश करती है, वह विशेष कहलाती है।

57. वध + ध्येय = बाध्य -

वध करना जिसका ध्येय हो, वह बाध्य है। वध + ध्येय = बाध्य। जब किसी को कहा जाए कि "उस व्यक्ति का वध कर दो, अगर नहीं किया तो, तुम्हारा वध कर दिया जाएगा" और उस व्यक्ति का वध करने पर भी, उस वध करनेवाले का वध होता है, तो उसे बाध्य कहते है। जैसे - रावण ने मारीच से कहा था। अगर मारीच स्वर्ण मृग नहीं बनता तो, रावण के हाथों मारा जाता। और स्वर्ण मृग बनने पर भगवान राम के हाथों मारा गया।

58. विचार + धारा = विचारधारा -

विचार एवं धारा यह दोनों एक समान ही हैं। विचार + धारा = विचारधारा। विचार में शब्दों के वाक्य निरंतर चलते रहते हैं। धारा में पानी का बहाव निरंतर चलता रहता है। पानी की निरंतरता को बाँध से रोककर, विद्युत पैदा की जाती है, पानी को नियंत्रित तरीक़े से छोड़ा जाता है। विचार की निरंतरता को ध्यान से रोककर, वाष्पीभूत कर दिया जाता है। इस तरह विचार शरीर के छिद्रों से पसीना बनकर बाहर निकल जाता है। ध्यान करने से धीरे-धीरे विचार का आना बंद हो जाता है।

59. Win + नष्ट = विनष्ट -

अगर आपको Win करना है, तो आपको दूसरे को नष्ट करना होगा। यानी Win करनेवाला दूसरे को नष्ट कर देता है, यही विनष्ट कहलता है।

60. Will + लीन = विलीन -

Will का लीन हो जाना ही, विलीन होता है। Will + लीन = विलीन। यानी इच्छाओं का समाप्त हो जाना ही विलीन होता है। किन्तु आजकल सबकी Will यही है कि, वह Lean हो जाए।

61. विशेष + प्रज्ञावान = विप्र - जो विशेष प्रज्ञावान होता है, वह विप्र होता है।

62. Wish + श्वास = विश्वास -

Wish को अपनी श्वास में रखो, तभी तो विश्वास बढ़ता जाता है। Wish + श्वास = विश्वास। Wish = इच्छा। चाहे वह Wish संसार की वस्तु को, प्राप्त करने की हो, या वह Wish परमात्मा के आनंद को, प्राप्त करने की हो। आने और जाने वाली, प्रत्येक श्वास में, अपनी Wish को जोड़ दो, Wish एवं श्वास के इसी जोड़ को, योग कहते हैं। क्योंकि केवल श्वास ही है, जो परमात्मा से जुड़ी हुई है। और व्यक्ति की Wish को, परमात्मा तक पहुंचाती है। क्योंकि वह श्वास ही है जो परमात्मा से, हमारे शरीर में आती है, और हमारे शरीर से परमात्मा में जाती है। प्रत्येक श्वास के साथ आपकी Wish, परमात्मा तक पहुंचती जाएगी, और परमात्मा आपकी Wish को, पूरी करता जाएगा। और परमात्मा में आपका विश्वास, बढ़ता जाएगा।

63. Will + लम्बी = विलम्ब -

Will जब लम्बी हो जाती है, तब विलम्ब हो जाता है। Will + लम्बी = विलम्ब। Will = इच्छा। भगवान के मंदिर में देवता के सामने, जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं को, कहना प्रारंभ करता है, तब विलम्ब हो ही जाता है।

64. Wish + ईष्ट = विशिष्ट -

सभी की Wish को, उनके ईष्ट ही पूर्ण करते हैं, इसलिए तो ईष्ट ही विशिष्ट होते हैं। Wish + ईष्ट = विशिष्ट। किन्तु जो Wish मांगते हैं, वह शिष्ट होते हैं। Wish + शिष्ट = विशिष्ट। और शिष्ट होने के लिए, शिष्य होना आवश्यक है। क्योंकि, अशिष्ट को तो Assistance बनाया जाता है। अ + शिष्ट + Tense = Assistance. जो शिष्ट नहीं होते हैं, और Tense कर देते हैं, वही Assistance होते हैं। इसलिए शिष्ट बनने के लिए, पहले शिष्य बनो, फिर Wish मांगो उनसे जो, आपके लिए विशेष है। Wish + ईश्वर = विशेष। जो आपकी Wish को पूरा करते हैं, वह आपके लिए विशेष होते हैं। क्योंकि वह आपकी Wish को पूरा करते हैं, जिससे आपको ऐशवर्य की प्राप्ति होती है। Wish + ऐश्वर्य = विशेष। ऐश को वरण करना ही ऐश्वर्य है। ऐश + वरण = ऐश्वर्य। वर एवं रण से ही ऐश्वर्य प्राप्त होता है। वरण + रत = व्रत। वर को प्राप्त करने के लिए, तपस्या की जाती है, जिसे व्रत कहते हैं। वर + रत = व्रत। जब कोई व्रत लेता है, तब वह यह व्रत लेता है कि, "जब तक मुझे वर नहीं मिल जाता है, तब तक मैं रति नहीं करूँगा"। तो व्रत को करनेवाला व्यक्ति, जब तक व्रत में रहता है, तब तक रति नहीं करता है। इसलिए रति न करने के व्रत का, पालन करनेवाला व्यक्ति, Run कर जाता है। इसलिए इसे वरण कहते हैं। जहाँ व्रत को पालन करने वाला व्यक्ति रहता है, उसे अरण्य कहते हैं। अ + रण्य = अरण्य। अरण्य यानी Run न करनेवाला स्थान। यानी जहाँ से वह Run नहीं कर सकता है। इसलिए यह शब्द बना "वरण्य"। व्रत + अरण्य = अरण्य। जिसका अर्थ होता है, व्रत का पालन करना है तो, अरण्य में रहो, जहाँ पर रति न कर सको, न ही जहाँ से Run कर सको। दूसरी बात Ash को लगाने वाला ही, ऐशवर्य को पाता है। इसलिए रति को नहीं करने का, व्रत का पालन करनेवाला व्यक्ति, अपने शरीर पर Ash लगाता है। Ash = राख = भस्म। इसलिए जो जो लोग भी, व्रत का पालन करते हैं, उन उन के शरीर पर Ash लगी होती है, चाहे वह Ash पूरे शरीर पर लगी हो, या केवल उनके माथे पर लगी हो। Ash को शरीर पर लगाना, व्रत को पालन करने वाले व्यक्ति की, पहचान बताती है। इसलिए माथे पर या, अपने शरीर पर वही व्यक्ति, Ash लगाते हैं, जो रती नहीं करने का व्रत लेते हैं। और एक बात, Wish को पूरा करनेवाले, ईष्ट की दिशा East है, इसलिए इनका नाम "ईष्ट" है। तो East दिशा में अपने ईष्ट से, Wish मांगो, आपकी Wish आपके विशिष्ट पूरी करेंगे।

65. Weak + कल + अंग = विकलांग -

Weak व्यक्ति को कल का, अंग लगाया जाता है, उसे विकलांग बोला जाता है। Weak + कल + अंग = विकलांग। कल = Machine.

66. Weak + ILL = Will -

जब व्यक्ति Weak और ILL होता है, तब व्यक्ति अपनी Will कहता है। Weak + ILL = Will. Weak एवं ILL व्यक्ति से, सभी यह पूछते हैं कि, "आपकी क्या इच्छा है ? आपको क्या चाहिए, बताईये हम लेकर आते हैं"। तो Weak एवं ILL व्यक्ति, जिस व्यक्ति से अपनी इच्छा कहता है, उसे Will कहते हैं।

67. Wish + श्वास = विश्वास -

आपकी Wish को आपके श्वास में रखो, आपका विश्वास बढ़ता ही जाएगा।

68. Wig + घन = विघ्न -

Wig जब घना हो जाता है, तब विघ्न आ ही जाता है। Wig के घने बालों को देखकर, लोग उस पर घन मार देते हैं और तब विघ्न आ जाता है। इसलिए निर्विघ्न कार्य के लिए Wig को उतार दिया जाता है।

69. Well + Wish = Well Wish -

Well से Wish माँगी जाती है। Well + Wish = Well Wish. पहले जमाने में युरोप में, Well में चाँदी और ताँबे के, सिक्के डाले जाते थे और, Well से Wish माँगी जाती थी। चाँदी और ताँबे के सिक्कों से, Well में पड़ा हुआ जल, शुद्ध हो जाता था। और, बाद में यह सिक्के Well में से, निकाल लिये जाते थे। इससे Well से जल निकालने वाले, व्यक्ति से Tax भी मिल जाता था। इसलिए लोगों से जल का, Tax हासिल करने के लिए, यह कहा गया कि, "Well में सिक्के डालो और अपनी Wish को पूरा करो"। तो लोग Well में सिक्के डालते थे, और अपनी Wish माँगते थे। इसी से तब से यह, "Well Wishing" शब्द चल पड़ा। दरअसल यह Wish, Well से नहीं माँगी जाती है। यह Wish तो माँगी जाती है, Well में पड़े हुए "जल" से। इसी तरह का चलन, नदी के लिए भी था। जब नौका से नदी पार करते थे, तब नदी में भी सिक्का डाल देते थे, और नदी से अपनी ईच्छा माँगते थे। आज भी जब नदी के ऊपर से, निकलते हैं तो, नदी में सिक्का डालकर, नदी से अपनी ईच्छा को, माँगते हैं। दरअसल यह नदी में स्थित, जल देवता वरुण से, अपनी इच्छाएँ माँगते हैं। इसलिए Well, नदी, तालाब, बावड़ी, फव्वारों में सिक्का डालते हैं और अपनी Wishes माँगते हैं। यानी इस तरह से यह शब्द बना, "Well Wishes".

70. Wish + ठान = विष्ठा -

व्यक्ति की Wish और ठान, यह दोनों ही व्यक्ति की, विष्ठा में होती हैं। Wish + ठान = विष्ठा। यानी व्यक्ति ने क्या Wish माँगी है ?, और व्यक्ति ने क्या ठान रखी है ?, यह दोनों ही व्यक्ति की विष्ठा में होती हैं। किन्तु Medical Profession में, व्यक्ति की विष्ठा की जाँच, इसलिए की जाती है कि, व्यक्ति को क्या विष दिया जा रहा है, या दिया गया था। विष + था = विष्ठा। व्यक्ति को दिया गया विष, व्यक्ति की विष्ठा में ठहर जाता है, और व्यक्ति की विष्ठा की जाँच करने पर, पता चल जाता है कि, व्यक्ति को विष दिया गया है कि नहीं। इसलिए विष की जाँच करने के लिए, व्यक्ति की विष्ठा की जाँच की जाती है।

71. विलक्षण + ग्रह = विग्रह –

विलक्षण ग्रह ही विग्रह कहलााता है। विलक्षण + ग्रह = विग्रह। जिस किसी के जब विलक्षण ग्रह होते हैं, तब उसको विग्रह कहते हैं। क्योंकि जब किसी की Will उसके, लक्षण बता देते हैं, उसे ही विलक्षण कहते हैं।

Will + लक्षण = विलक्षण –

यानि जब किसी के लक्षण से, उसकी Will के बारे में पता चलता है, उसे विलक्षण कहते हैं। इसलिए उसकी Will और, उसके लक्षण को, देखने के लिए, उसके ग्रह देखे हैं। जब उसकी Will और लक्षण को, ग्रह बताते हैं। तब उसे विलक्षण कहते हैं। इसी विलक्षण ग्रह को विग्रह कहते हैं।

72. वार + अंत = Warrant – वार के द्वारा अंत करने के लिए, Warrant निकाला जाता है।

War + Anti = Warranty – War जब Anti से की जाती है, तब उसे Warranty कहते हैं।

War + Rant = Warrant –

War जब Rant से होती है, उसे Warrant कहते हैं। Rant = निन्दा करनेवाला।

73. Wash + ना = वासना -

जो Wash नहीं होती है, उसे वासना कहते हैं। Wash + ना = वासना। वासना को पूरा करने के लिए, व्यक्ति काम की तलाश करता है कि, 'कुछ काम मिल जाएगा तो, उस काम को करने के बाद, जो धन मिलेगा, उस धन से मैं यह खरीदूंगा, वह खरीदूंगा'। इस खरीददारी से वासना तो, कुछ देर के लिए पूरी हो'जाती है, किन्तु वासना Wash नहीं होती है। इसलिए इसे कामवासना कहते हैं। काम + Wash + ना = कामवासना।

74. विष + वश = विवश -

व्यक्ति तीन तरह से वश में रहता है। विष के वश में विवश, विष + वश = विवश। विष को प्राप्त व्यक्ति विवश हो जाता है। Wish के वश में विवश, Wish + वश= विवश। किसी Wish को प्राप्त करनेवाला, विवश हो जाता है। विशेष के वश में विवश, विशेष + वश = विवश। किसी विशेष व्यक्ति के पास रहनेवाला, विवश हो जाता है।

75. वर और जाति -

वर के अणु से वर्ण का निर्माण होता है। वर + अणु = वर्ण। वर यानि पुरुष यानि पुरुष के अणु से, वर्ण का पता लगता है कि, 'यह व्यक्ति कौन-से वर्ण का है' ? जाये आती से जाति का पता लगता है। जाये + आती = जाति। यानि स्त्री के जाये जाने से, जो संतान आती है, उससे जाति का पता लगता है कि, 'यह कौन-सी जाति का है' ? यानि पुरुष प्रधान समाजों में, वर्ण को महत्व दिया जाता है। और स्त्री प्रधान समाजों में, जाति को महत्व दिया जाता है। वर को अणु तो सूर्य से मिलता है, इसलिए जो वर्ण को मानने वाले लोग, वो अपने आपको सूर्यवंशी कहते हैं। स्त्री में पृथ्वी का अंश होता है, इसलिए जाति को मानने वाले लोग, अपने आपको पृथ्वी की संतान कहते हैं। वर्ण को मानने वाले लोगों में पुरुषत्व होता है, और वो लोग पुरुषत्त्व को महत्व देते हैं, बिना सोचे-समझे किसी भी कार्य करने के लिए, हमेशा तत्पर रहते हैं। जाति को मानने वाले लोगों में स्त्रैणत्व होता है, और स्त्रीत्त्व को महत्त्व देते हैं, तथा स्त्री की भांति सोच-समझकर, किसी भी कार्य को करते हैं। वर्ण को मानने वाले लोग, पुत्र की उत्पत्ति को ज्यादा महत्त्व देते हैं। जाति को मानने वाले लोग, कन्या की उत्पत्ति को ज्यादा महत्त्व देते हैं। वर्तमान समय में वर्ण को, मानने वाले लोगों का प्रभाव कम हो गया है। और जाति को मानने वाले लोगों का, प्रभाव बढ़ गया है। क्योंकि पहले वज़नी कार्य, पुरुष के द्वारा किया जाता था, और अब वज़नी कार्य, मशीनों के द्वारा किया जाने लगा है। और मशीन तो स्त्रियां भी चला लेती हैं। इसलिए

अब वर्ण का महत्त्व कम हो गया है, और जाति का महत्त्व बढ़ गया है। यानि पुरुष का महत्त्व कम हो गया है, और स्त्री का महत्त्व बढ़ गया है। इसलिए जो वर्ण को मानने वाले लोग हैं, वह मशीनों का विरोध करते हैं, जाति का विरोध करते हैं, और वर्ण की बढ़ाई करते हैं। और जाति को मानने वाले लोग, मशीनों को बढ़ावा देते हैं, वर्ण का विरोध करते हैं, और जाति की बढ़ाई करते हैं। यानि वर्ण को मानने वाले लोग, सूर्य को अर्घ्य देते हैं, और जाति को मानने वाले लोग, धरती को नमन करते हैं। यानि वर्ण को मानने वाले लोग, आत्मा को मानते हैं, और आत्मा की मुक्ति की बात करते हैं, तथा आत्मा के बार-बार जन्म लेने को मानते हैं। जबकि जाति को मानने वाले लोग, शरीर को मानते हैं, आत्मा को नहीं मानते हैं, शरीर को अपनी जन्मभूमि पर, न्यौछावर कर देते हैं। इसलिए जो व्यक्ति शरीर, स्त्री और, जन्मभूमि को महत्त्व देता है, वह व्यक्ति जाति को मानता है। और जो व्यक्ति आत्मा, पुरुष और, परमात्मा को महत्त्व देता है, वह व्यक्ति वर्ण को मानता है। जाति को मानने वाला व्यक्ति, जमीन पर जन्म लिए हुए, व्यक्तियों को भगवान मानता है। और सर्वत्र व्याप्त परमात्मा के बारे में, प्रमाण मांगता है। तथा अपनी जाति के विशेष व्यक्ति को, भगवान मानने पर जोर डालता है। वर्ण को मानने वाला व्यक्ति, सर्वत्र व्याप्त परमात्मा को, भगवान मानता है। जाति को मानने वाले लोग, तरह-तरह की पूजा पद्धतियों से, अपने द्वारा माने गए, भगवान से प्रार्थना-याचना करते हैं। वर्ण को मानने वाले लोग केवल ध्यान के द्वारा, परमात्मा से मिलन करके, अपने आपको पुनः उर्जावान कर लेते हैं। इस तरह से यह वर्ण और जाति का, विश्लेषण है।

X

ज़ेर + Ox = Xerox -

जब आदमी किसी के Ox को देखता है, तब आदमी यह सोचता है कि, "काश ! ऐसा Ox मेरा पास भी होता" । व्यक्ति फिर उस Ox की ज़ेर से, उसकी प्रति बनवा देता है। ज़ेर + Ox = Xerox. व्यक्ति उस Ox की ज़ेर से, गाय का पता लगाता है, और उस Ox का भी पता लगाता है, तब फिर उस गाय एवं Ox से, नया Ox बनवा लेता है। इसे ही Xerox कहते हैं।

Y

1. याद + दास = याददास – यह सदा याद रहे कि, कभी आप दास थे।

2. Yes – जो Yes करते हैं, वही यश पाते हैं।

3. You + नानी = यूनानी –

जो नानी का है, वह यूनानी है। यानि कहते हैं कि, "नानी की दवाई के नुस्खे" बस वही तो यूनानी दवाखाना है।

4. Yes + स्वीकार = यशस्वी -

जो Yes (हाँ) करता है, उसे ही स्वीकार किया जाता है। वही यशस्वी होता है। यानि जो सकारात्मक होता है। उसे ही सब स्वीकार करते हैं। वही प्रसिद्धि पाता है।

5. यजमान = यज्ञमान = जजमान -

वेद में ऋचा होती हैं, इसलिए वेद, Rich यजमानों के लिए हैं। यजमान यज्ञ करते हैं, यज्ञ में अन्न-घी सहित, अन्य खाद्य वस्तुओं को, भस्म कर देते हैं। वेद की ऋचा से, यज्ञ करनेवाले Rich यजमान, कभी-भी किसी निर्धन को, किसी वस्तु का, दान नहीं करते हैं। पुराण में लोक में चलनवाले, श्लोक होते हैं। पुराण के श्लोकों से, यज्ञ में आहुति, नहीं दी जाती है। इसलिए पुराण में, सामान्य निर्धन लोगों के लिए, कथा होती है। इस कथा के दौरान, जो अन्न एवं अन्य खाद्य वस्तुएं, एकत्रित होती हैं। वह खाद्य वस्तुएं, कथा के अंतिम दिन, निर्धनों में वितरित, कर दी जाती हैं। वेद के अनुसार, Rich यजमानों के द्वारा, किए गए यज्ञ में, निर्धनजन भाग नहीं, ले सकते हैं। जबकि पुराण के अनुसार, सामान्य जनों के द्वारा, आयोजित की गई कथा में, धनवान लोग भी, सामान्यजन की तरह, बैठकर कथा सुन सकते हैं। पुरुष हमेशा यज्ञ का, यजमान बनना चाहता है, क्योंकि, वहाँ पर पुरुष का अहंकार, पोषित होता है। स्त्री हमेशा, कथा सुनना चाहती है, क्योंकि, वहाँ पर स्त्री के मन को, संतुष्टि मिलती है। अतः आजकल, बुद्धिमानी आयोजकों द्वारा, प्रातःकाल यज्ञ का आयोजन, रखा जाता है, एवं, सायंकाल कथा का आयोजन, रखा जाता है। पुरुष को हमेशा, निर्णायक की भूमिका, पसंद आती है, क्योंकि, निर्णायक की भूमिका में, सम्मान मिलता है। इसलिए पुरुष को, यजमान के स्थान पर, जजमान भी कहते हैं। Judge + मान = जजमान। क्योंकि, पूरी दुनिया में, सभी सरकारों से ऊपर, Judge को ही, मान मिलता है। Judge की ही, बात मानी जाती है। इसलिए तानाशाही सरकारों में, तानाशाह आखिर में, निर्णायक बन जाता है। तानाशाह का निर्णय ही, मान्य होता है। क्योंकि, तानाशाह को सम्मान, चाहिए होता है। ऐसे तो तानाशाह को, कोई सम्मान नहीं देता है, तो तानाशाह ही, Judge बन जाता है। Judge बनकर, अपनी बात मनवाकर सम्मान पाने की कोशिश, करता है। कि, जनता यह कहे कि, "वाह ! देखा यह होता है, न्याय ! देखो इस राजा ने, कितना अच्छा न्याय किया। यह राजा बड़ा ही, न्यायकारी है।" फिर सदियों-सदियों तक, उस न्यायकारी राजा के, न्यायों की दुहाई दी जाती है। कि, "उस राजा के राज में, सदा ही न्याय होता था। गरीब से गरीब फरियादी को, भी न्याय मिलता था।"

6. यमी = ज़मी -

सूर्य का पुत्र ईशा ही आत्मा को सूर्य से पृथ्वी पर लेकर आता है, इसीलिए ईशा को ईश्वर कहते हैं, क्योंकि ईशा ही आत्मा को जन्म देता है। इसीलिए ईश्वर की पूजा की जाती है। पृथ्वी को जमीन कहते हैं और जमीन को ज़मी कहते हैं एवं ज़मी को यमी कहते हैं। क्योंकि "य" का उच्चारण "ज़" होता है। यमी ही सूर्य की पुत्री है। सूर्य का दूसरा पुत्र यम, आत्मा को ज़मी से निकालकर, वापिस सूर्य के, पास ले जाता है। किंतु आत्मा जमीं पर ही, रहना चाहता है। यम के द्वारा आत्माओं को, पृथ्वी की कक्षा से बाहर निकालने का कार्य प्रत्येक महीने की शुक्ल पक्ष की दोज को होता है। तब तक आत्माएं, पृथ्वी मंडल में ही रहती हैं। फिर जब शुक्ल पक्ष की दोज को पृथ्वी मंडल की, ओजोन परत का मार्ग खुलता है, तब यम उन आत्माओं को, सूर्य तक ले जाता है। इस तरह आत्माओं का शरीर, ज़मीदोज़ हो जाता है। और आत्माएँ यम के, साथ चली जाती है। इसीलिए यह दोज़ ही, यम द्वितीया कहलाती है।

7. You + ध्येय = युद्ध -

जब आदमी पूँछता है कि, "तुम्हारा ध्येय क्या है" ? तभी से युद्ध शुरु हो जाता है। क्योंकि बतानेवाले का ध्येय और पूँछनेवाले का ध्येय एक ही होता है। तब उस एक ध्येय को, प्राप्त करने के लिए, दोनों में जो जद्दोजहद होती है, वही जद्दोजहद युद्ध में, बदल जाती है। इसीलिए लोग अपना ध्येय किसी को बताते नहीं है और युद्ध से बचे रहते हैं।

8. यह + होवा = यहोवा -

हउआ ही होवा है, जो कि यहोवा है। यहोवा का डर सारी दुनिया में, हउआ बनाकर फैलाया गया। कि "अगर तुमने, यह बात नहीं मानी, तो तुम्हारे साथ ऐसा होवा। यह + होवा = यहोवा। दरअसल यहोवा के मंदिर में, कुछ था ही नहीं, किंतु लोग होवा के डर से, यहोवा को मानने लगे। इसीलिए आज भी बच्चे, एक-दूसरे को जोर से, हउआ बोलकर डराते हैं। इसी भय को जिसने मिटाया, उसे ही भैरव कहा गया। भय को मिटाने वाला। भय + Rub = भैरब = भैरव। भैरव में से लोगों को, भय भूल गया और रब, याद रह गया। रब को लोगों ने परमात्मा मान लिया और रब के पुजारी को, रब्बी कहा जाने लगा। भय दूर होता है Rum पीने से, इसीलिए भैरव को Rum पिलाई जाने लगी। लोग Rum नहीं पीते थे। किंतु अब जब भय के देवता को, Rum पिलाई जाने लगी, तो लोगों को भी, Rum पीने के लिए कहा गया। तो लोगों ने भी Rum पीली, और लोग भय से मुक्त हो गए। Rum पीने से लोग रूमानी हुए। इस रूमानी अवस्था में, उन लोगों ने कविताएं रची। यह रूमानी लोग Rome में गए। इसीलिए Rome के लोगों के, एक हाथ में Rum का प्याला, रहता ही है। इस तरह से यहोवा के हउवे को, Rome वासियों ने, पूरी दुनिया में फैलाया। किंतु भारत में इस Rum को पीने की, आदत को छुड़ाने के लिए, यह फैलाया गया कि, "भैरव मदिरापान करते हैं। इसीलिए लोग मदिरापान न करें, अपितु भैरव को पिलाएँ। इससे लोगों का भय दूर हो जाएगा"। लोगों ने हर गाँव के बाहर, भैरव का मंदिर बनाया और, पूरी मदिरा भैरव की मूर्ति पिला दी। इस तरह से गाँव के गाँव, मदिरापान से मुक्त हो गए। किसी ने शराब को शैतान माना, और शराब शीशे की बोतल में, रहती है। इसीलिए शैतान को पत्थर, मारने को कहा गया। जिससे पत्थर शराब की बोतल को लगा और, शराब की बोतल टूट गई।

यह यहोवा का हउआ आज भी फैलाया जाता है। कि, "इसकी कोई शक्ल नहीं है, इसीलिए इसकी कोई मूर्ति नहीं है"। हउए की शुरुआत होती है। जब व्यक्ति पूछता है, "यह कैसे हुआ ?" यह + How + A = यह हउआ = यहोवा। इसीलिए कभी यह प्रश्न न करें कि, "यह कैसे हुआ ?" नहीं तो यहोवा यानी भय को मानने लगेंगे, फिर भैरव को मानने लगेंगे, भय न जाने कितने देवी-देवताओं को मनवा देगा, मन का हनन करवाता रहेगा।

9. Yes Yes We = यशश्वी –

किसी ने पूछा, "क्या आप सब लोग मेरे साथ हैं" ? उन्होंने उत्तर दिया, "Yes Yes We". Yes Yes We = यशश्वी।

10. You + ध्यान = युद्ध -

जब आप ध्यान लगाना प्रारंभ करते हैं, तभी आप युद्ध करना प्रारंभ करते हैं। You + ध्यान = युद्ध। ध्यान ही वह युद्ध है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति को, करना ही पड़ता है। साधक का यह युद्ध, काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, राग, द्वेष, अहंकार से होता है और इसी युद्ध को जीतने के लिए, ध्यान लगाना पड़ता है। तभी लोग बोलते हैं, तुम ध्यान लगाकर काम करो। किन्तु जो व्यक्ति प्रतिदिन कम से कम 6 मिनट का भी ध्यान लगा लेता है। वह अगले 24 घंटे के लिए, कोई भी काम करने के लिए, तैयार हो जाता है और सभी काम को, ध्यानपूर्वक करता है। इसलिए ध्यान लगाईए प्रतिदिन, कम से कम 6 मिनिट ध्यान में बैठिए। यह 6 मिनिट आपको विद् कर देंगे। और धीरे धीरे आप विद्वान बन जाएगें। कोई भी काम करने में आपको, आसानी होगी और आपका मन काम करने में लगेगा।

11. योग + ज्ञान = योग्य – योग करने पर ज्ञान होता है, जिससे योग करनेवाला, योग्य हो जाता है।

12. यो यो + गीत = योगी -

यो यो के जो गीत गाए, वह योगी होता है। यो यो + गीत = योगी। जिसको यो यो करके, संबोधित किया जाता है, उसको योगी कहते हैं। भो भो करके जो गीत गाए, वह भोगी कहलाता है। भो भो + गीत = भोगी। जिसको भो भो करके, संबोधित किया जाता है, उसको भोगी कहते हैं। रो रो करके जो गीत गाए, वह रोगी कहलाता है। रो रो + गीत = रोगी। जिसको रो रो करके, संबोधित किया जाता है, उसको रोगी कहते हैं।

13. युग + आड़ = जुगाड़ -

युग की आड़ लेने को जुगाड़ कहते हैं। युग + आड़ = जुगाड़। जब कोई बात समझ से परे हो जाती है, तब उस बात को स्वीकार करने के लिए, युग की आड़ ली जाती है, जिसे जुगाड़ कहते हैं। तब कहते हैं कि, "यह तो युग ही ऐसा चल रहा है, इस युग में तो ऐसा ही होता है, इस युग के बारे में तो, ऐसा पहले ही लिखा जा चुका है"। इस तरह से इस युग की बातों को, युग की आड़ लेकर, इस युग में गाड़ दिया जाता है, ताकि उन बातों पर कोई और, कोई बात नहीं हो। इसलिए इसे ही युग में गाड़ना कहते हैं। युग + गाड़ = जुगाड़। इस तरह के कार्य में, जो माहिर होता है, उसे जुगाड़ी कहते हैं।

Z

1. Zoo + बाण = जुबान –
किसी को Zoo में खड़े कर देना और उसके हाथ में बाण दे देना। फिर कहना अब शिकार करो।
2. जोड़ी + एक = Zodiac -
जोड़ियाँ एक की जाती हैं। जन्मकण्डली देखकर ही तो जोड़ी एक की जाती है।
3. Zero - जी + रो = Zero -
जिसको परीक्षा में Zero मिल जाता है, उसका जी रोने लग जाता है।
रूह + आंसू = रुआंसू - रूह से निकलने वाले आंसू ही, किसी को रुआंसू बनाते हैं।
4. Zoom = जूम = झूम –
जूँ को देखने के लिए Zoom किया जाता है, और जब शराबी झूमता हुआ आता है, तो वह किसी को देखने के लिए अपनी आँखों को हाथों से खोलता है और बड़े ही गौर से खोलता है।
5. Zoo = जू –
जहाँ पर जूजू-जूजू ही रहते हैं, वह Zoo है। यानि छोटे बच्चों को डराते थे कि, "वह जू-जू है"। बस वही जूजू Zoo है।
6. Zoo + झाड़ू = जुझारू - Zoo में झाड़ू लगाने वाला, बहुत जुझारू होता है।

ऐसे तो बहुत-से शब्द हैं और उनके अर्थ हैं और इस पर पुस्तक बहुत लिखी जा सकती हैं। किन्तु इस आखिरी शब्द के साथ में अपनी पुस्तक को यहीं पर पूरा कर रहा हूँ।

अल् + विद् = अलविदा –

संस्कृत वर्णमाला में "अल्" प्रत्याहार होता है। ज्ञान के जाननेवाले को "विद्" कहते हैं। जिसमें "अच्" और "हल्" दोनों प्रत्याहार के जोड़ को "अल्" प्रत्याहार कहते हैं, अच् यानि "स्वर" एवं हल् यानि "व्यंजन"। स्वर और व्यंजन इन दोनों का ज्ञान जिसको हो जाता है, उसे अल् विद् कहते हैं। विद् यानि विद्या। वान यानि विद्या को जाननेवाला। तो जब गुरुकुल से ब्रह्मचारी सारा ज्ञान प्राप्त कर लेता था। और फिर वह अपने घर की तरफ जाता था। तो उसे सभी कहते थे "अल् विद्" यानि "सभी विद्याओं में विद्वान्"। यही अल् विद् कालांतर में कहते-सुनते "अलविदा" हो गया। जिसका अर्थ लगाया जाने लगा की जो हमेशा के लिए जा रहा है। क्योंकि गुरुकुल में विद्यार्थी विद्याध्ययन के लिए बहुत से स्थानों से आते थे। तो एक बार गुरुकुल से पढ़ने के बाद उनका पुनः मिलन बहुत ही मुश्किल था। इसलिए अल् विद् शब्द का अर्थ अलविदा यानि आखिरी बार विदाई हो गया।

तो शब्दों की इस पुस्तक को यहीं पर पूरा करते हैं।

आप सबका

--- ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

आप अपने फीडबैक कृपया इस ईमेल पर भेजने की कृपा करें -

namaskar.meditation@gmail.com

शिष्य का नाम -
"ध्यानाचार्य" ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

श्री गुरु जी का नाम -
परम पूज्य महामण्डलेश्वर आचार्य
श्री स्वामी विश्वेश्वरानंद गिरि जी महाराज,
संन्यास आश्रम, विलेपार्ले (पश्चिम),
मंबुई - 400056 भारत

"ध्यानाचार्य" ब्रह्मचारी प्रहलादानंद लगभग Year 1995 से Meditation कर रहे हैं। ध्यानाचार्य जी ने Meditation की विविध विधाओं पर Research किया है। ध्यानाचार्य जी को Meditation करने पर जो प्राप्त हुआ, उस पर एक पुस्तक लिखी – "गुरु ज्ञान ऊर्जा" जो वर्ष 2011 में प्रकाशित हो गई है। ध्यानाचार्य जी के द्वारा Meditation करते रहने पर ही शब्दों ने अपने रहस्य खोले, जिससे शब्दों पर एक पुस्तक लिखी - "शब्दों की उत्पत्ति कैसे हुई ?" जो सन् 2019 में प्रकाशित हुई है। ध्यानाचार्य जी ने ध्यान से प्राप्त संदेशों पर लिखी दूसरी पुस्तक लिखी "करो मेडिटेशन करो" एवं "Do Meditation do" जो सन् 2021 में प्रकाशित हो गई है।

ध्यानाचार्य जी कविता भी लिखते हैं - ध्यानाचार्य जी के दो कविता संग्रह प्रकाशित हए हैं, पहला - "पर सकून मिलता है", दूसरा - "साहिल पर जिन्दगी"। ध्यानाचार्य जी का 1 वर्ष में 13 महीने एवं 1 महीने में 28 दिन पर अंग्रेजी में "The Earthian Calendar Anand" हिन्दी में "दी अर्थिअन कैलेन्डर आनन्द" भी प्रकाशित हो चुका है। ध्यानाचार्य जी Meditation के क्षेत्र में लोगों को प्रोत्साहित करते रहते हैं एवं Meditation में भगवान से जुड़कर दिमागी तथा रुहानी सुकून पाने के लिए लोगों को Motivate करते रहते हैं।

....

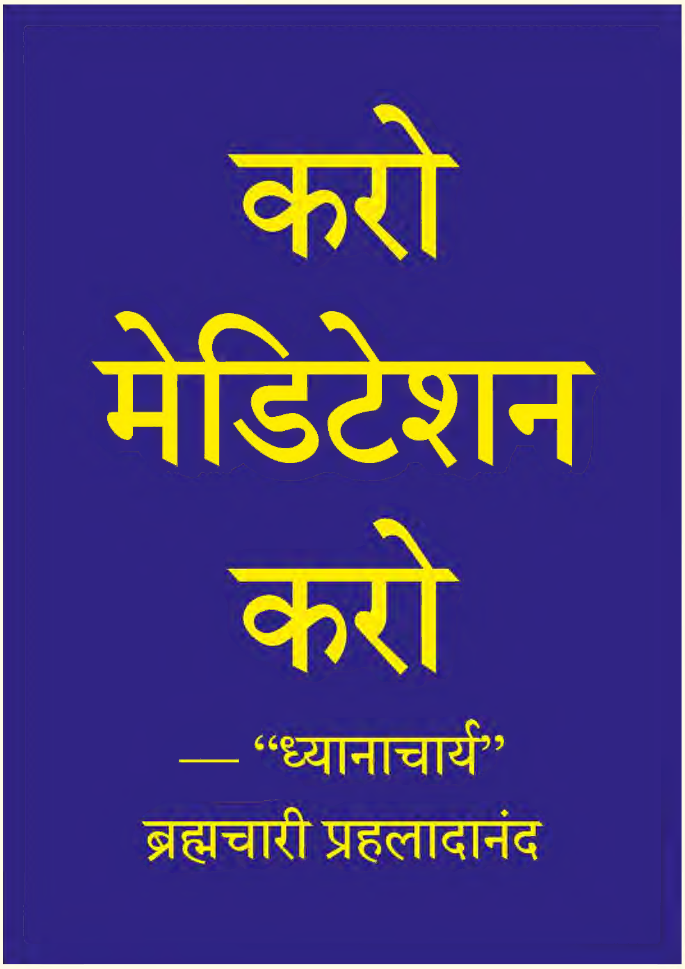
करो
मेडिटेशन
करो
— "ध्यानाचार्य"
ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

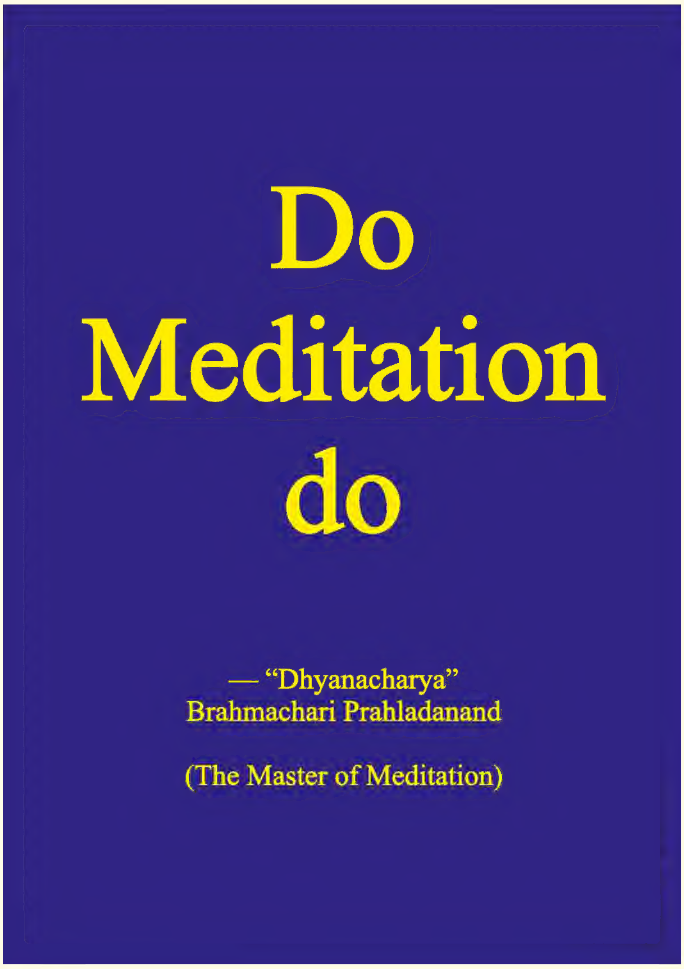
Do
Meditation
do
— "Dhyanacharya"
Brahmachari Prahladanand
(The Master of Meditation)

हातिम-अल-ताई
और
कुण्डलिनी शक्ति
के 7 चक्र
--- ध्यानाचार्य
ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

Hatim_AL_Tai
&
7 Chakra
of Kundalini
Power
— "Dhyanacharya"
Brahmachari
Prahladanand